077689

दीदी जनवरी १९५५

072689

COMPILED

Stock Verification-2024

दीदी

र्षाङ्क
५५

COMPILED
गुरुकुल पत्रिका
COMPILED
42226
23-5-89
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

In Public Domain ... Haridwar

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

—श्रीराधारानी [धारावाहिक पौराणिक उपन्यास] ४
२—चम्पाकली [श्रीमती रजनीपनिकर एम०ए०] ६
३—शुभ दृष्टि [श्रीमती अमिता कुमारी बोस] १६
४—टेनिस का बल्ला [श्री निशीथकुमार राय,
५—शकुन ब्याह [श्री कैलाश कल्पित] ३२
६—मुँह बनाना [श्री भारतीय] ... ४१
७—दादी माँ [श्रीमती वसन्त प्रभा] ... ४४
८—दो लड़कियों का त्याग [श्रीमती शांतिशीला तेलङ्ग, वर्धा] ५४

लेख

१—मुख महिमा २
२—स्तनों के रोग [श्री बुद्धिसागर वर्मा 'विशारद' बी० ए० यल-टी०] ... १३
३—पेरिस का बाजार ! [श्रीमती विमला गुप्ता (लन्दन से) ... २२
४—टमाटर [डाक्टर एम० पी० रञ्जन, एल० एम० पी०] २८
५—कष्ट रहित शिशु-जन्म [डाक्टर मिसेज चन्द्रावती] ३८
६—कढ़ाई की कला सीखिये [कुमारी सुशीला कुमारी ५०

कविताएँ

१—गीत [श्रीमती तारा पांडे] ... १
२—स्नेह-याचना [कुमारी कीर्तिप्रभा मुंगेर] १५
३—गीत [कुमारी उर्मिला द्विवेदी 'ज्योति'] २१
४—गीत [श्रीमती स्वर्णलता 'अम्बष्ट'] ४३

फुटकर

१—विद्यार्थियों का अशिष्ट व्यवहार ... १२
२—कलई करना सीखिये [कु० विष्णुकुमारी वर्मा] २७
३—किसानों की गृहणियों को ट्रेनिंग ... ३७
४—बच्चों की उलटी [चन्द्रवती श्रीवास्तवा] ४३
५—घरेलू इलाज [विद्युत्तमा मिश्र] ... ४८

स्तम्भ

१—रसोंई ५३
२—आपको कुछ पूछना है ?... ... ५६
३—सामयिक साहित्य ... ५७
४—अपने विचार ५६

दीदी

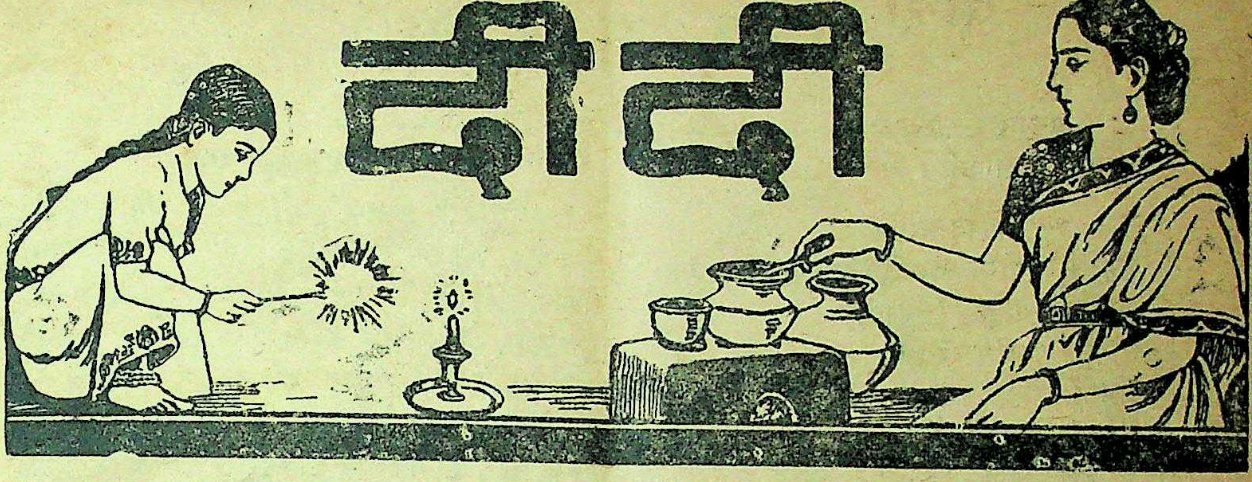

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १६ } इलाहाबाद, जनवरी १९५५ { संख्या १

077689

गीत

लेखिका, श्रीमती तारा पांडे

मेरे प्राणों में मधु भर दो!

गाऊँ मैं नित नव मधुर गान,
हों अमर जगत के प्राण-प्राण,
नव जन्म मिले, हो नव विहान,
तन-मन को मधुर-मधुर कर दो!
मेरे प्राणों में मधु भर दो!

भर उठें प्यार से सब अन्तर,
मन भी हों सुख-दुख से ऊपर,
तब स्वर्ग उतर आवे भू-पर,
मेरे सपनों को सच कर दो।
मेरे प्राणों में मधु भर दो

वीणा गाती अति मधुर गीत,
सुन पशु, पक्षी बन गये मीत,
यह जग भी बन जाये पुनीत,
मन की सब बाधाएँ हर दो!
मेरे प्राणों में मधु भर दो!

सूखे अधरों में मधु भर दो,
खारे आँसू मीठे कर दो,
शिर पर निज वरद-हस्त धर दो,
मैं अमर बनूँ मुझको वर दो!
मेरे प्राणों में मधु भर दो!

—:o:—

077689

मुख महिमा

१—अण्डाकार मुख

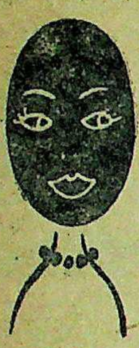

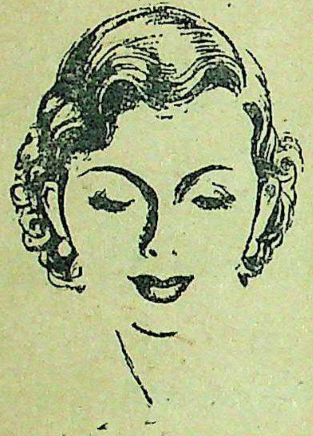

अण्डाकार मुखाकृति सौंदर्य की दृष्टि से सर्वोत्तम है। इस प्रकार के मुख वाली स्त्री चाहे जिस प्रकार बाल सँवारे, वह सदैव सुन्दर दीखेगी। पर मुखाकृति को उभारने के लिये बगल से माँग काढ़े और बालों को लहरदार बनाते हुए आकृति को उभारें। शृङ्गार के समय चेहरे पर सब जगह हल्की परत का बराबर पाउडर लगावें और होठों पर स्पष्ट लाली जमावें। भौंहों को एक हल्की बक्र-गति दें ताकि मुखाकृति के साथ उसका सुन्दर मेल बैठे।

२—पाननुमा मुख

पान नुमा मुखाकृति भी अनूठी होती है। बाल सँवारने में इसको थोड़ा उभार दिया जाय तो मुख और भी सुन्दर हो उठता है। आपकी ऐसी मुखाकृति हो तो बाल ठीक इसी तरह सँवारें जैसा कि यहाँ चित्र में दिखाया गया है। इसमें पाउडर या लाली हलके हाथों गालों के केवल उस भाग पर लगावें जो उभरा हुआ हो। अपनी भौंहों पर निरन्तर ब्रश फेरें जब तक कि वे बक्र न हो जायें।

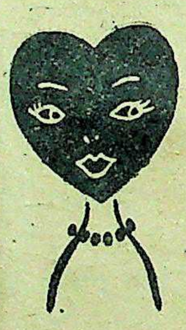

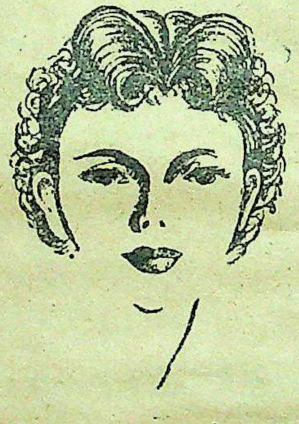

३—वृत्ताकार मुख

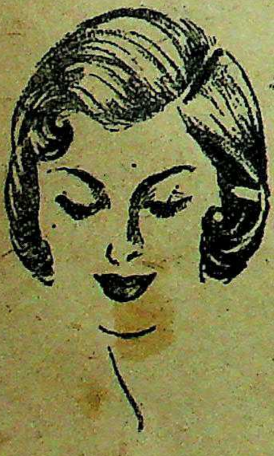

वृत्ताकार मुखाकृति हो तो बालों को मस्तक के बीचो-बीच में एक लहर के समान ऊपर को उठाते हुए इस तरह सँवारें कि मुख बजाय गोल के लम्बा प्रतीत हो। इसमें चेहरे पर पाउडर सामने दोहरा और बगली भागों में इकहरा लगावें और दोहरा उभार ठुड्डी की ओर क्रमशः घटाती जायं जिससे यह जान पड़े कि चेहरा चौड़ा कम और लम्बा अधिक है।

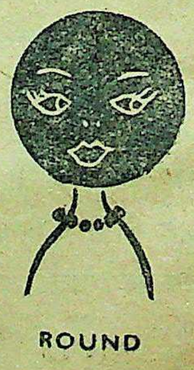

ROUND

मुख-सौंदर्य स्त्री के लिये सदैव ही गर्व की वस्तु रहा है। मुख की आकृति के अनुसार बाल सँवारने से मुख सौंदर्य की श्री वृद्धि की जा सकती है और यदि कुछ दोष हों तो वे छिपाये जा सकते हैं। यहाँ कुछ सुझाव चित्रों के सहित दिये जा रहे हैं:—

४—त्रिभुजाकार मुख

इस प्रकार की मुखाकृति में माथे पर बीचोबीच में सुचिक्कन उभार, ऊपरी दोनों छोरों पर मृदु लहरें और अगल-बगल काफी नीचे तक बालों का बेल की शकल में शृङ्गार, सौंदर्य में बड़ी वृद्धि करता है और ऊपरी चौड़ाई छिप जाती है। शृङ्गार करते समय यह ध्यान रखें कि लिप-स्टिक पतली न हो और मुख के किनारों तक चली जाय।

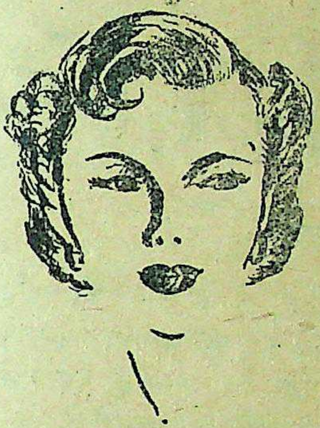

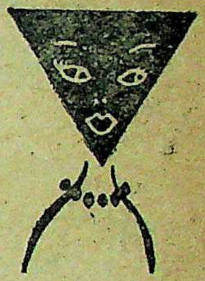

५—लम्बा मुख

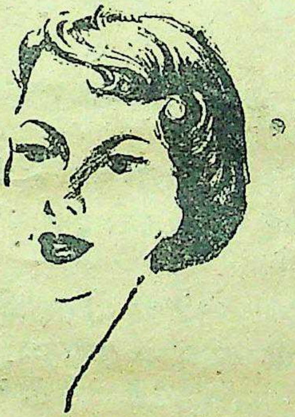

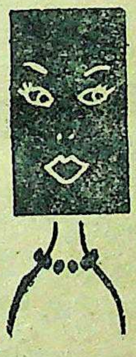

लम्बा मुख हो तो बाल इस प्रकार न सँवारना चाहिए कि वह और भी लम्बा प्रतीत हो। इसमें बालों को हलकी बक्रता के साथ माथे पर से ले जाना चाहिए जिससे लम्बाई कुछ कम प्रतीत हो और बाकी बालों को एक तरफ का कान ढकते हुए चेहरे के अन्दर की तरफ से उठाते हुए सँवारना चाहिए। लम्बे मुख में पाउडर लगायें तो गालों पर फैला कर जोरदार लगायें और ठुड्डी की तरफ जोर कम करें। इससे लम्बी मुखाकृति खिल उठेगी।

६—वर्गाकार मुख

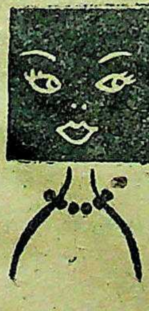

वर्गाकार मुख के लिये मोहक केश-न्यास है, बगली लहरों को ऊपर की ओर उठाना और माथे पर एक ऊँची उठी लहर स्थापित करना। इससे दाढ़ के पास की चौड़ाई कुछ घटी-सी प्रतीत होने लगती है। इस अवस्था में शृङ्गार विधि यह है कि नाक के आस-पास पाउडर कुछ चटक लगाइये और फिर उसको कानों की तरफ बढ़ाते हुए हलका करती जाइए। भौंहों को पतला मत कीजिये, बल्कि मास्कारा के प्रयोग से उन्हें और चटक कर दीजिये।

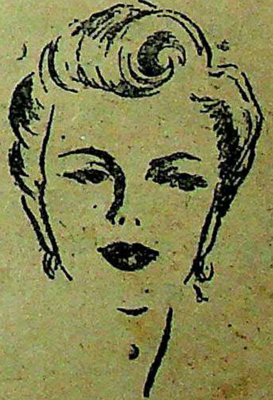

धारावाहिक पौराणिक उपन्यास

श्रीराधारानी

जन्म

आश्रमों से विद्यार्थियों के वेद-पाठ की ध्वनि आ रही है। यह इस बात का प्रमाण है कि रात का पिछला पहर है। शीघ्र ही वेद-पाठ से भी अधिक मधुर ध्वनि गोपा के श्रवणों से टकराने लगी। यह थी चूड़ियों की खनक के साथ दधि से भरे भारी मटकों में गोपियों द्वारा मथानी फिराने की ध्वनि। पास-पड़ोस के घरों से जब ये ध्वनियाँ उठकर एक में मिलीं तब गोपा को जान पड़ा जैसे समुद्र गर्जन कर रहा हो।

ऐसे में कौन सोता है और फिर वह तो गोपी थी। गोपा उठी। गृहाङ्गण में सुप्त यज्ञ वेदी के ऊपर से राख हटाई, अरुण वर्ण सूर्य के समान आभापूर्ण अङ्गार के दर्पण में उसने अपना मुख देखा। एक विचित्र लोहित प्रकाश उसकी कुटीर में फैल गया। पास ही एक अरवे से वह एक मुट्ठी धूप ले आयी और अङ्गार पर उसे डाल दिया। अग्नि प्रज्जलित हो उठी। उससे एक दिन पूव के गरमाये हुए ताजे घृत से भरा दीप लेस कर उसने दीवट पर धर दिया। एक सप्ताह पूर्व धौरी ने जो बछड़ा जना था, वह उठ कर खड़ा हो गया और अँगड़ाई लेने लगा। गोपा निहाल हो गयी। प्रातःकालीन गृह-दीप के प्रकाश में गो वत्स का दर्शन, दीप में जलते हुए ताजे घृत की सुगन्ध, पास-पड़ोस के घरों में उमड़ते हुए दधि-सिन्धु का गर्जन! उसके नेत्र, नासिका और श्रवण तीनों भगवान को धन्यवाद देने लगे। इससे अधिक और गोपी को क्या चाहिए? यही सब सोचती हुई वह गृह-कार्य में लग गयी।

तभी बाहर से आवाज आई, गोपा! आज दधि बेचने न जाना।

'कौन?'

'मैं हूँ, वृषभानु?'

'कुशल तो है?'

'सब कुशल ही है। उद्धव आ रहे हैं। तुम्हारे अतिथि होंगे?'

उद्धव और मेरे अतिथि? मेरी चले तो मैं सम्पूर्ण व्रज में इनका प्रवेश निषिद्ध करा दूँ।'

'कारण?'

'कारण पीछे बताऊँगी। पहले यह तो बताओ, कीर्तिदा कैसी हैं? मैंने तो समझा था, कुछ हुआ? और तुम जन्मोत्सव का निमन्त्रण देने आये हो?

और तुम भी लगे करने उद्धव की बात! उनसे बात करना जीवन के बहुमूल्य क्षणों को नष्ट करना है।'

'अच्छा! मैं समझा? पर वे तो अतिथि रूप में आ रहे हैं। अतिथि का सत्कार भी तो अपना एक धर्म है। सो दधि बेचने न जाना और…।'

'बहुत ठीक! मैं समझ गयी और भगवान ने कीर्तिदा की गोद आज ही सजाई तो उद्धव से सब दिनों के आतिथ्य की कसर भी निकाल लूँगी।'

'सो कैसे?'

श्री राधारानी की जो कथा ब्रह्मवैवर्त पुराण में दी हुई है, वह उनके और स्वयम् भगवान् कृष्ण के प्रति बड़ा अन्याय है क्योंकि उसमें उनकी बड़ी छीछालेदर की गयी है। इस पुराण की रचना हुए मुश्किल से ४०० वर्ष हुए होंगे। वह दासता और शृङ्गारी साहित्य का युग था अतएव उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अतिरिक्त और किसी पुराण में, यहाँ तक कि श्री मद्भागवत में भी श्री राधा का उल्लेख नहीं है। तब प्रश्न उठता है कि राधा थीं भी या नहीं? और थीं तो इतनी पूज्य क्यों हुईं? इस प्रश्न का उत्तर भी इसी कथा में गूढ़ रूप में छिपा हुआ है। इस उपन्यास के लेखक ने राधा कृष्ण सम्बन्धी उपलब्ध समस्त साहित्य का पिछले २० वर्षों से अध्ययन करके श्री राधारानी की वास्तविक कथा को मालूम कर लिया है। वही पुनीत कथा 'दीदी' के द्वारा हिन्दी पाठकों के समक्ष प्रथम बार उपस्थित की जा रही है। लेखक एक साधारण सज्जन हैं। इसी से अपना नाम भी प्रकट नहीं करना चाहते। पर तो भी श्री राधारानी के प्रति आदर के कारण, उन्हें आशा है, पाठक प्रेम से यह उपन्यास पढ़ेंगे। इसी से लिखने को उद्यत हुए हैं।

'कीर्तिदा के शिशु के ग्रह नक्षत्र का निर्णय उद्धव से ही करवाऊँगी। मुफ्त का चारों तरफ खाते फिरते हैं। आज इनसे काम भी लूँगी।'

'शिशु क्यों कहा? पुत्र होने में क्या तुम्हें सन्देह है?' यह यशोदा की आवाज थी।

'आओ नन्द रानी! तुम कैसे इधर निकल आयीं?'

'कल वे मथुरा गये थे। अभी तक नहीं लौटे। गायें दुहने को पड़ी हैं सो बृषभानु को बुलाने आई हूँ। वहाँ ज्ञात हुआ कि तुम्हारे घर गये हैं सो सीधे यहीं चली आयी।'

'इतने गोप गोपी छोड़ कर तुम बृषभानु से ही गायें दुहाती हो सो क्या बात है?'

'गोप तो सब दुहेंगे ही। पर गो-दोहन के समय किसी सयाने व्यक्ति की उपस्थिति भी तो चाहिए?'

'ठीक कहती हो यशोदा! तब तो मैं बृषभानु को एक क्षण के लिये भी न रोकूँगी। पर हाँ सुनो! उद्धव जी आज मेरे यहाँ पधार रहे हैं। उनको आज अच्छी तरह समझा देना है कि वे गोपों को न बहकावें और अपना यह माया-जाल अन्यत्र फैलावें।'

'पर वे समझें तब न!'

'उन्हें समझना पड़ेगा। मेरी उनकी आज हार जीत की बाजी लगेगी?'

'सो कैसे?'

'मेरी बाजी स्पष्ट है। बृषभानु के पुत्र हो तो उनकी जीत मानी जाय और वे ब्रज में रहें। परन्तु यदि कन्या हो तो मेरी जीत हो। और वे ब्रज छोड़ दें।'

यशोदा को हँसी आ गयी—'अच्छा, इसलिए तुम्हें कीर्तिदा के पुत्र उत्पन्न होने में सन्देह है?'

'सन्देह की बात नहीं। मैं भविष्य वाणी करती हूँ। कीर्तिदा के कन्या होगी और यदि उद्धव ब्रज छोड़ न देंगे तो मैं ऐसा मन्त्र पढ़ूँगी कि ब्रज में सब कन्याएँ ही कन्याए पैदा होंगी।'

'कन्याएँ ही क्यों? कन्या व पुत्र दोनों का जन्म रुक जायगा।' बृषभानु ने हँसते हुए कहा—'परन्तु कितना काम करना है। इस प्रसंग को उद्धव के आने ही पर छेड़ा जाय।'

तभी उद्धव जी ने वहाँ प्रवेश किया—'बृषभानु! तुम्हारे मुख से यह मैं क्या सुन रहा हूँ।'

'क्षमा करें गुरु देव! यह हम गोपों के आपस की चर्चा है। इसका शाब्दिक अर्थ न लें। पर आप तो सूर्योदय के पश्चात् आने वाले थे।'

'अवश्य ? परन्तु कुछ पहले मैं यह सूचना देने आ गया कि आज ही ब्रज में करभाजन, शृङ्गी, गर्ग एवम् दुर्वासा भी पधार रहे हैं। सभी गोपा के अतिथि होंगे।'

पधारें।' गोपा ने कहा।

'धन्य भाग हमारे जो एक साथ इतने ऋषि पधार रहे हैं।' वृषभानु यह कहने भी न पाये थे कि उद्धव उलटे पांव लौट गये।

'क्यों ? डर गये न उद्धव से !' गोपा बोली—'अब जरा अपनी बात का सांकेतिक अर्थ तो बताओ।'

'सांकेतिक अर्थ है, उद्धव बड़े ज्ञानी हैं, हमें उन की बात माननी चाहिए ?'

'मानोगे ?'

'मानना ही पड़ेगा ?'

'पुत्र होगा तो उन्हें दे दोगे ?'

'देना ही पड़ेगा।'

'कीर्तिदा के पुत्र नहीं होगा ? कन्या ही होगी।' मैं कहती हूँ।

'ऐसा होगा तो मैं तुम्हारे मुख में माखन मिश्री मेलूँगी, गोपा ?' यशोदा बोली।

'तैयार होकर आना ?'

वृषभानु यशोदा के साथ चले गये और गोपा खड़ी-खड़ी बिसूरती रही। ये ऋषि मुनि भी क्यों हैं ? स्वयम् ब्याह करके पुत्र उत्पन्न करने में लज्जित होते हैं। पर गृहस्थों से उनके पुत्र छीनने में इन्हें लज्जा नहीं आती। माताएँ मानों इसीलिये गर्भ धारण करती हैं कि उनके पुत्र हों तो इन्हें दे दें और ये उन्हें तपस्या की धूप में सुखा कर लकड़ा बना दें। कितना बड़ा अनर्थ ये कर रहे हैं। राजा भी इनसे डरते हैं। तब इन पर रोक कौन लगावे ? अच्छा हुआ मैं विधवा हो गई। नहीं तो मेरे पुत्र होता तो मेरे शीलवान स्वामी इन्हें माँगने से अवश्य ही दे देते। तब तो मैं पुत्र वियोग से मर ही जाती।

भावावेश में गोपा की आँखों में अश्रु विन्दु उमड़ आये। अञ्चल के छोर से उन्हें पोंछती हुई वह अपनी कुटी के भीतर लौट गई। बछड़े को इस प्रकार चूमा मानों उसका पुत्र हो पर ऋषियों की कुदृष्टि से बचने के लिये गो-वत्स बन गया हो।

अब प्रकाश हो गया था। घृत दीप को उसने प्रणाम किया। फिर अञ्चल की हवा करके उसे विदा दी।

एक कलस लेकर वह दौड़ी हुई यमुना के तट पर गयी और स्वच्छ जल ले आयी। उसमें गोबर घोल कर उसने कुटी की अतिथि शाला को लीपा, दधि और चावल से चौके पूरे और कुशासन बिछा दिये।

धौरी के दो थन दुहकर और दो बछड़े के लिये छोड़ कर उसे बछड़े समेत ढील दिया और कहा—'धौरी! सन्ध्या समय चली आना। मैं खोजने न आऊँगी। हाँ, और बछड़ा आज पहली बार जा रहा है। इसे साथ रखना। हाँ, मुझे चिन्ता-ग्रस्त न होना पड़े। ऋषियों को अपने आतिथ्य से मैं तुष्ट करूँगी। तुम बेफ़िक्र जाओ।'

धौरी कुछ बोली नहीं। पर बछड़े समेत इस तरह चल पड़ी जैसे सब समझ गई हो।

गोपा दूसरा कलस लेकर पुनः यमुना की ओर भागी। गहरे पानी में डुबकी लगा-लगा कर स्नान किया। वरुण, विष्णु, इन्द्र, शिव का ध्यान किया और स्वच्छ यमुना जल से भरा कलस सिर पर धारण किये पुनः अपनी कुटी में पहुँची।

क्या देखती है कि स्वच्छ लिपे हुए चौकों से पूरित अतिथि शाला में उसके रखे हुए कुशासनों पर उद्धव समेत चारों मुनि बैठे हैं।

गोपा ने उस जल से भरे कलस को एक ओर छठवें मुनि की भाँति स्थापित करते हुए कहा—'मैं अपना धन्य भाग्य मानती हूँ जो ऐसे मुनि आज मेरी कुटी में पधारे हैं। मैं आज कृतकृत्य हो गयी।

फिर उसने एक-एक करके उन चारों ऋषियों के चरणों के निकट ले जाकर अपना मस्तक भूमि पर रखा और अन्त में उद्धव को प्रणाम करके अत्यन्त श्रद्धा विनय पूर्वक बैठ गयी।

'हम लोग क्यों आये हैं ? गोपा ! जानती हो ?' करभाजन ने प्रश्न किया ।

'वृषभानु की पत्नी कीर्तिदा रानी के आज कन्या उत्पन्न होने वाली है, उसी के ग्रह-नक्षत्र का निर्णय करने ?'

'कन्या से हमसे कोई प्रयोजन नहीं ?' शृङ्गी ऋषि बोले ।

'हम व्रजवासियों को तो है ।' गोपा ने विनयपूर्ण स्वर से कहा ।

'यह तो ठीक है । परन्तु क्या तुम लोग चाहते हो कि योगाभ्यास की क्रिया और विद्या का अन्त हो जाय ?' गर्ग ने पूछा ।

'हमें योग से कोई प्रयोजन नहीं ।' गोपा का संक्षिप्त उत्तर था ।

'तुम स्त्री हो न ? तुम्हें योग से प्रयोजन न होना चाहिए । पर हम पुरुषों को तो है ?' दुर्बासा बोले ।

'तब पुरुष से पुरुष क्यों नहीं उत्पन्न कर लेते ? स्त्रियों से उनके दुध मुंहे बच्चों का क्यों अपहरण करने आते हो ?' गोपा बोली ।

'अपहरण !' उद्धव बोले—किसी से कोई वस्तु दान में लेना अपरण नहीं है । वृषभानु ने मुझसे कहा था कि उनकी पहली सन्तान पुत्र होगी तो वे मुझे देंगे । मैंने साधना की । ब्रह्मा को प्रेरित किया कि उन्हें सन्तान दे ।'

'कितने स्वर्थी हैं आप ?'

बृषभानु ने हमसे एक वादा किया था, उसके पूरा करने का समय आया तो हम स्वार्थी हैं ? धन्य है, गोपा !'

'विवाद हम नहीं चाहते ?' करभाजन बोले—'गोपा हम यह चाहते हैं कि वृषभानु के पुत्र उत्पन्न हो और वे हमें दें तो तुम बाधा मत डालना ।'

'स्वीकार है ? परन्तु यदि कन्या उत्पन्न हो ।'

'हम उसे आशीर्वाद देकर चले जायेंगे ।' दुर्बासा ने कहा ।

'धन्य हो मुनि ! धन्य हो ।' गोपा उन सब के चरणों के निकट बार बार मत्था टेकने लगी ।

फिर वह उठी और दौड़ी हुई दूसरे कक्ष में गई, दूध दधि, घृत, मिश्री, मेवा सबको एक में मिला कर पंचामृत बना लाई और काठ के पात्रों में उन सब के सम्मुख उपस्थित किया ।

परन्तु यह क्या ? वे चारों ऋषि उद्धव समेत इस प्रकार ध्यान मग्न हो गये थे जैसे निर्जीव प्रतिमाएँ हो ! गोपा को लगा कि उनके शरीर मात्र उसकी कुटी में रह गये है और उनकी आत्मा ब्रह्मलोक में चली गई हैं ।

मुनिवरो यह योग विद्या का दुरुपयोग हैं । तुम ब्रह्मा को इस बात के लिए प्रेरित करने गये हो कि वह बृष भान को पुत्र ही दे ! अच्छा योग तो मैं नहीं जानती । पर मैं भी एक सती नारी हूँ । मेरी टेक है कि वृष भानु पत्नी कीर्तिका के गर्भ से कन्या ही उत्पन्न हो । प्रभो ! मेरी टेक रखो । प्रभो मेरी टेक रखो ! प्रभो मेरी टेक रखो । वह अपने कुटीर के आँगन में खड़ी होकर शून्य आकाश को देखती हुई जोर-जोर से पुकारने लगी ।

इस प्रकार घंटों बीत गये ।

सहसा गोपों के डफ मृदङ्ग और करताल बज उठे । यह मधुर ध्वनि कानों में पड़ी तो वह दौड़ी हुई वृषभानु के भवन की ओर गयी ।

'कन्या ही ने जन्म लिया है न ?', वह द्वार पर से ही चिल्लाई ।

भीतर जाकर देखा कि कीर्तिदा देवी पलंग पर लेटी हैं । बगल में नव विकसित अरुण कमल दल के समान उस नव जात कन्या को वात्सल्य भरी दृष्टि से देख रही हैं । सिर हिला कर, मन्द स्मित के साथ उन्होंने संकेत किया जिससे गोपा समझ गई कि कन्या ने ही जन्म लिया है ।

सारे ब्रज में यह समाचार फैल गया और चारों तरफ से दौड़ते हुए गोप गोपी बृषभानु को बधाई देने के लिये आने लगे ।

परन्तु इस हर्षोल्लास की मधुर घड़ी में गोपा वहाँ खड़ी भी न सकी । उसके घर में पूज्य अतिथि जो विराजमान थे । वह दबे पांवों उनके समीप

आई। देखा कि वे अपने-अपने आगे कठौतों में रखा पंचामृत ग्रहण कर रहे हैं।

गोपा मोर पङ्ख लाकर उन्हें झलने लगी।

पंचामृत खाकर ऋषियों ने आचमन किया और अपने आसन पर पुनः बैठने ही जा रहे थे कि देखा कुटीर के द्वार पर हाथ जोड़े वृषभानु खड़े हैं?

'अन्दर आइये वृषभानु जी?' उद्धव ने कहा।

'गुरुदेव हमें अन्दर न बुलावें। द्वार पर बहुत से लोग जमा हैं। सबकी इच्छा है कि आप मुनिवरों के सहित वहीं पधारें और कन्या को आशीर्वाद दें।

'हाँ, यह काम तो हमें करना ही है।' करभाजन ने कहा और वे उठकर खड़े हो गए। उनके पश्चात् शृङ्गी, गर्ग, दुर्वासा और उद्धव उठे।

वृषभानु के द्वार पर ढोल पखावज, कर्ताल, डरू बज रहा था गोप गोपियाँ नृत्य गान में तल्लीन थे।

मुनिवरों के पहुँचते ही नृत्य संगीत एक ताल के साथ बन्द हो गया।

'महामुनि करभाजन, शृंगी, गर्ग और दुर्वासा पधार रहे हैं।' गोप चिल्लाती हुई आगे बढ़ रहीं थी। नृत्य गान से शिथिल गोप गोपियों ने दो कक्षों में विभक्त होकर उन्हें रास्ता दिया और एक स्वर से उनकी जय जय कार करने लगे।

'वृषभानु ने पहले से निश्चित आसन पर उन्हें बैठाला। कीर्तिदा ने स्वयं उनके समीप आकर उन्हें प्रणाम किया और कन्या उनके सामने एक नीला वस्त्र खंड बिछाकर उस पर लिटा दी। ऐसी सुन्दर नवजात मानव शिशु गोप गोपियों ने तो क्या उन ऋषियों ने भी कभी न देखा था। उसकी सुन्दरता का वर्णन हम क्या करें?

करभाजन ने कहा—'आज सोमवार भाद्रपद शुक्ल पक्ष है। कन्या के जन्म के समय सूर्य मध्याकाश में थे। ज्योतिष की दृष्टि से कन्या जन्म के लिये यह सर्वोत्तम मुहूर्त है।'

गोपा ने पूछा—'महामुने यह कन्या किसका औतार है?'

करभाजन बोले—'यह स्वयं परमात्मा का एक रूप है, इससे अधिक हम और क्या कहें? मानव के इतिहास में आज तक ऐसी कन्या उत्पन्न नहीं हुई और थोड़ा ध्यानावस्थित होने के बाद बोले कदाचित न होगी।

'इसका भविष्य?'

'उज्जवल है।' शृंगी ऋषि बोले।

चारों ऋषियों ने अपने खुले कर्तलों से कन्या के ऊपर छाया सी करके उसे आर्शीबाद देकर जाने लगे तभी रानी कीर्तिदा ने एक प्रश्न कर दिया—

'भगवन? इसका नाम क्या रखूं?'

'कीर्ति कुमारी।' गोपों में से कोई बोल उठा पर ऋषियों में से किसी ने उधर ध्यान नहीं दिया। वे कन्या के भावी गुण और कर्म के अनुसार उसका नाम सोच रहे थे।

बहुल सोच विचार करने बाद उन्होंने 'राधा' नाम रखने की सलाह दी, राधा इसलिए कि राकार दान वाचक है और धा निर्वाण का बोधक है। इस नाम को माता पिता ने स्वीकार कर लिया।

यह दो अक्षर का छोटा सा नाम गोपों को भी बहुत पसन्द आया। और उन्होंने ऋषियों की एक बार फिर जय जयकार की।

इसके बाद ही ऋषि गण चले गए। उनके जाते ही गोपों ने अपना नृत्य गान फिर प्रारम्भ किया।

इस बार गोपियाँ बड़े बड़े कलसों में वृषभान के घर से दूध भर कर निकलीं और नाचती गाती हुई यमुना की ओर चलीं। कलस उनके सिरों पर इस तरह रखे थे जैसे उनके शरीर के अङ्ग हों। वे उनके हाथों का सहारा न पाने पर भी न छलकते थे न गिरते थे। श्यामल हरियाली के बीच से होती हुई एक के पीछे एक वे इस तरह चली जा रही थीं जैसे श्यामघन में विद्युत की चंचल रेखा खिंचती जा रही हो। उनके हाथ कभी दोनों एक में मिलकर प्रणाम

[शेष पृष्ठ ४६ पर देखिये]

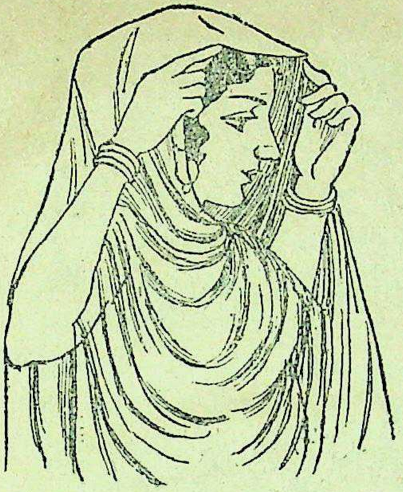

चम्पाकली

लेखिका, श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०

एक शरणार्थी स्त्री की कहानी

[१]

समाज में रह कर समाज वालों का मुँह बन्द नहीं किया जा सकता । किसी भी वस्तु को लेकर कोई भी जो मन में आये कह सकता है । व्यक्ति की निजी अनुभूतियाँ क्या होंगी । वह कैसा अनुभव करता है । इसकी कोई परवाह नहीं करता ।

लोगों के घृणित विचारों को व्यक्त करने के लिए छोटी से छोटी घटना काफी है । चन्द्रनाथ बाबू को ऐसे लग रहा था, मानो चारों दिशाओं में लोग अट्टहास कर रहे हैं । सेठी का कहकहा, उस का नीच किस्म का आँख का इशारा, चन्द्रनाथ ने देख लिया था । सूर्यभान के होंठ एक अजीब अदा में सिकुड़ गये थे । बिना बात के एक इतना बड़ा स्कैण्डल बन गया था ।

सूर्यभान की साली, पिछले चार वर्ष से उसके घर में रहती है । कोई ऐसा नहीं, जो उसके मुख पर तमाचा मारे । सिन्हा की पत्नी पढ़ी-लिखी नहीं । वह तो रोज ही नयी-नवेली लिये घूमते हैं । चन्द्रनाथ बाबू क्लब में से निकले तो उनकी टाँगें काँप रही थीं । उनके कानों में अभी भी वह कहकहे गूँज रहे थे । ओह ! कैसे घृणित हैं यह लोग । सबके सब कुएँ में डालने योग्य हैं । चन्द्रनाथ ने जेब से सिगरेट-केस निकाल कर सिगरेट जला लिया ।

चन्द्रनाथ सोच रहे थे, यह लोग बड़ी-बड़ी नौकरियों पर काम करते हैं । पढ़े-लिखे हैं, फिर भी इनके विचार कितने छोटे हैं । हृदय कितना संकीर्ण है ।

चम्पाकली को किराये की पत्नी कहते हैं । किराये की पत्नी ! छिः ! वह सीधी-सी, साँवली-सी, सिमटी-सी, प्रौढ़ा, खिचड़ी बाल, उनकी कलावती की जगह ले सकती है, सो बात नहीं । कलावती चन्द्रनाथ की पत्नी थी, जिसकी मृत्यु हुए दो वर्ष हो चुके थे । चन्द्रनाथ उसे बीस वर्ष की आयु में व्याह कर लाये थे, वह सोलह वर्ष तक उनके साथ रही । फिर एकाएक एक छोटी-सी बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई । चन्द्रनाथ का कोई बच्चा नहीं था । पति पत्नी में अटूट प्रेम था । कला को ही पता रहता—चन्द्रनाथ के कमीज के कफों में लगाने के बटन कहाँ हैं ? चन्द्रनाथ की दफ़्तर की फाइल कहाँ है । बूट पालिश से ले

कर दफ़्तर जाते वक्त तक का पान कला उन्हें अपने हाथ से खिलाती।

घर में कोई भी अन्य प्राणी न था। चन्द्रनाथ का जीवन कला पर निर्भर था। सिनेमा वह साथ जाती। क्लब केवल अकेले जाते। परन्तु घर आते तो कला खाना लिये बैठी मिलती। ऐसी पत्नी की एकाएक मृत्यु से चन्द्रनाथ बाबू लड़खड़ा गये थे। कई रातें उन्हें नींद नहीं आयी थी।

[२]

पत्नी की मृत्यु के छः मास उपरान्त ही उन्होंने अनुभव किया, 'बिना गृहिणी घर भूत का डेरा' वाली उक्ति यथार्थ रूप में उनके सामने आ गयी है। वह शीघ्र ही एक गृहिणी की खोज में निकले और चम्पाकली को शरणार्थी आश्रम से ले आये। जैसा उनका अनुमान था, चम्पाकली बड़ी बुद्धिमती निकली। उसने आते ही घर सम्भाल लिया था। चन्द्रनाथ बाबू ने उसके साथ तनख्वाह भी नहीं ठहरायी थी। केवल इतना कहा था—'तुम हमारे यहाँ काम करोगी ?'

चम्पाकली ने सिर हिला कर स्वीकार कर लिया था। एक बार भी यह नहीं पूछा—'क्या काम करना होगा, कहाँ जाना होगा, वेतन क्या मिलेगा ?'

चन्द्रनाथ बाबू ने उसे एक बार पूरा घर दिखला दिया। बर्तन, भण्डार, रसोई, बैठक अपना कमरा आदि। घर में एक छोटा-सा छोकरा नौकर था। उसने नयी बीबी जी को देखा तो यह नहीं समझा कि यह मालकिन हैं या दासी।

चम्पाकली स्नान करके जब निकलती तो उसका रङ्ग जरा निखरा-सा लगता। चन्द्रनाथ बाबू के सामने आते ही, वह सिर पर कपड़ा खिसका लेती और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर अपना काम देखती। सुबह छः बजे वह उन्हें चाय बिस्तर में आकर दे जाती, यदि वह न उठे होते तो धीरे से कह देती—'उठिये लीजिये ! चाय लाई हूँ।'

इससे अधिक बात नहीं हुई। कभी नहीं हुई। गत डेढ़ वर्ष से चम्पाकली चन्द्रनाथ बाबू के घर में रहती है, कुछ गिने-चुने शब्दों के अतिरिक्त उनमें कभी बात नहीं हुई। कमीज में बटन चम्पाकली लगाती है। स्नान करने से पहले स्नानागार में तौलिया, साबुन तेल, धुले हुए कपड़े वह स्वयम् ही रख देती है। उनके नहाने के उपरान्त वह कफों में टाँकने वाले बटन लिये खड़ी रहती है। बूट पालिश हुए पास ही रक्खे रहते हैं, साबूत मोजों का जोड़ा भी कुरसी पर रक्खा हुआ चन्द्रनाथ को मिल जाता है, उन्हें कभी किसी बात की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। महीने की दो तारीख को वह वेतन लाकर चम्पाकली के हाथ पर रख देते हैं, वह घर का खर्च कैसे चलाती है, उसकी सूचना चन्द्रनाथ को नहीं रहती, अपने बटुए में उन्हें रुपये मिल जाते हैं, खर्च के लिये चम्पाकली से उन्हें रुपये माँगने की आवश्यकता नहीं रहती।

चम्पाकली स्वयम् एक उजली-सी साड़ी पहनती है। कभी उसने अपनी तनख्वाह के लिये पैसे नहीं माँगे, कभी अपने खर्च के लिये पैसों का तक़ाज़ा नहीं किया। जब वह नयी तनख्वाह लाकर देते हैं, तो चम्पाकली पिछले महीने के रुपयों में से बचे हुए रुपये लाकर चन्द्रनाथ के हाथ पर रख देती। यह बैंक में भेज दीजिये। कला भी इसी तरह रुपये उन के हाथ पर रख दिया करती थी।

[३]

चन्द्रनाथ ने चलते-चलते अनुभव किया वह अपने घर की ओर न जाकर शहर के पार्क की ओर जा रहे हैं।

मेहता ने कैसा घृणित इशारा किया था—'यार तुमने दूसरा ब्याह भी नहीं किया; फिर भी पत्नी तुम्हारे घर में है।'

सूर्यभान ने कहा था—'किराये के मकान सुने थे—पर पत्नी नहीं।'

सेठी ने हँस कर कहा था—'चन्द्रनाथ जी नया उदाहरण हमारे सामने रखा है, हम में से कोई चाहे तो उस पर चल सकता है।'

तिस पर सबके सब हँस दिये। चन्द्रनाथ जी इतनी देर से चुप बैठे थे, गरज कर बोले—'तुम लोग कैसी नीच बातें करते हो, चम्पाकली मेरी नौकरानी है।'

सबने फिर एक और कहकहा लगा दिया—'क्यों नहीं! क्यों नहीं, यार हम कब कहते हैं, वह तुम्हारी मालकिन है। मालिक तो तुम खुद हो वह तो……।'

सेठी क्रोध से बोला—'नीच हम हैं, गुलच्छर्रे तुम उड़ाओ! एक वर्ष हो गया है हम लोगों का मुँह बन्द है। ताला आज भी न खुलता यदि तुम भक्त बनने का स्वांग न रचते।'

चन्द्रनाथ ने क्रोध से उबलते हुए उसी समय कहा—'शटअप!' ताश के पत्ते, चाय का प्याला, वहीं छोड़ कर चन्द्रनाथ क्लब से बाहर निकल आये।

चन्द्रनाथ की बीमारी में चम्पाकली ने बड़ी सेवा की है, परन्तु एक बार भी आँख ऊँची करके उसने उनकी ओर नहीं देखा, उसका उदास पीला मुख सदैव उदास ही रहा। किसी क्षण उस पर हँसी की रेखा चन्द्रनाथ ने नहीं देखी। एक दिन भी चन्द्र नाथ ने उससे यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि उसका संसार में कोई और सगा सम्बन्धी है। वह वेतन कितना चाहती है। वेतन की बात न उसने पूछी है और न ही चन्द्रनाथ ने बतलाई है। डेढ़ वर्ष में एक बार भी उसने नहीं कहा कि वह कहीं रुपया भेजना चाहती है। यह विचित्र-सी परिस्थिति है दोनों की।

पार्क में चन्द्रनाथ एक बेंच पर बैठ गये। उनके मस्तिष्क में कुछ भार सा था। यह समाज भी क्या है? लोग एक दूसरे में इतनी दिलचस्पी लेते हैं। काश! उतनी दिलचस्पी वह स्वयम् अपने आप में लेते। मेहता तो एक एंग्लो इण्डियन छोकरी के पीछे पागल था, मैंने कभी उससे कुछ नहीं कहा। सूर्यभान अपनी साली को घर में रखे हुए है। पत्नी और साली में नित्य झगड़ा रहता है। चन्द्रनाथ ने तो तब भी कभी इस बात को बातों में नहीं उठाया? वह तो सदैव उस पर पर्दा डालता आया है यदि कभी किसी ने क्लब में यह बात उठाई भी है तो।

चन्द्रनाथ के मन में संकल्प-विकल्प ने घर कर लिया था। चम्पाकली के साथ मैंने व्याह नहीं किया, तब भी लोग ऐसा कहते हैं, व्याह कर लूँगा शायद फिर भी कहेंगे। व्याह चम्पाकली से? नहीं! यह कैसे हो सकता है, कला के स्थान पर। चन्द्रनाथ ने निजी सुख के लिए चम्पाकली को घर में बुलाया, जैसे कला उसकी देख भाल करती थी वैसे ही कोई और करे। चम्पाकली ने भी उसे किसी तरह का दुःख नहीं दिया। सदैव उसकी सुविधा का ध्यान रखा है। यहाँ तक की खाना भी उसकी इच्छानुसार बनाती रही है। डेढ़ वर्ष में एक बार भी वह घर से बाहर नहीं गई। कभी पड़ोस से भी उन के घर में कोई नहीं आया।

वह अपनी परिस्थिति के कारण ही तो नहीं जा पाती। शायद वैसे ही न जाती हो। पढ़ी लिखी है चम्पाकली, सदैव कुछ न कुछ पढ़ती रहती है।

कैसा अत्याचार है, बिचारी पर। घर में कोई दूसरा प्राणी नहीं। केवल वह छोकरा; जब नाथ घर जाता भी है तो वह मौन रहता है। चम्पाकली से उसने कभी बात नहीं की। जाने वह चम्पाकली को नारी न समझ कर मशीन क्यों समझता है। नहीं……मशीन नहीं; वह नारी ही समझता है। चमकता हुआ साफ घर, स्वाद भरा गरम भोजन, प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर व्यवस्थित! चम्पाकली का कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं हो रहा। चन्द्रनाथ उसे वेतन भी नहीं देता। फिर ऐसा त्याग? चन्द्रनाथ की वह आयु भी नहीं जब रंगीनी और रोमांस के सहारे मनुष्य जीवित रहता है। जब स्वपनों की दुनिया में और कुछ अच्छा ही नहीं लगता। चम्पाकली से वह आज अपने अत्याचारों के लिए क्षमा मागेंगा।

× × × ×

चन्द्रनाथ ने तांगा लिया। शीघ्र ही घर पहुँच गया। चम्पाकली, रसोई में बैठी हिन्दी समाचार पत्र पढ़ रही थी। चन्द्रनाथ ने जाते ही कहा—'चम्पाकली मुझे क्षमा करो। मैंने तुम्हारे साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है।'

चम्पाकली को बड़ा अचम्भा हुआ। साहस बटोर कर पूछा—'कैसा अन्याय?'

'तुम जानती हो; लोग क्या कहते हैं?'

'मैं कैसे जान सकती हूँ। घर में बन्द जो रहती हूँ।'

'सच कहती हो चम्पाकली तुम कैसे जान सकती हो? लोग तुम्हें किराये की पत्नी कहते हैं।'

चम्पाकली का साँवला मुख काला पड़ गया। जैसे एकाएक वह अचानक पीड़ा से कराह रही हो।

'क्यों तुम्हें क्या हुआ?

'मुझे इसी बात का भय था।'

'तुम तो घर में रहती हो, भय किस बात का?

'घर छिन जाने का!'

चन्द्रनाथ ओह! कह कर धम से बैठ गए। कुछ देर उसी अवस्था में बैठे रहे। चम्पाकली न गिड़गिड़ाई न किसी प्रकार की प्रार्थना की।

उस के मुख पर एक दृढ़ता थी। चन्द्रनाथ को लगा जैसे यह दृढ़ता उन्हें किसी भयानक कार्य करने पर प्रेरित कर रही है।

एकाएक वह बोले—'तुम चिन्ता मत करो? मैं किसी की बातों की परवाह नहीं करता। कल मैं कोर्ट में जाकर सिविल मैरिज के लिये प्रार्थना पत्र दे दूँगा।'

चम्पाकली स्तब्ध थी। यह भी ब्याह की नींव है? न जात, न पात। कहाँ से है, कौन है? कुछ पता नहीं। घर सम्भालती हूँ; केवल इनका?

——

विद्यार्थियों का अशिष्ट व्यवहार

मथुरा के पशु-चिकित्सा विज्ञान तथा पशु-पालन कालेज के १२ विद्यार्थियों को अनैतिक व्यवहार करने तथा नागरिक अनुशासन का गम्भीर उल्लंघन करने के अपराध में कालेज से १ वर्ष तक के लिये निकाल दिये जाने से लेकर ३ माह तक के कठोर शारीरिक परिश्रम का दण्ड दिया गया है।

यह घटना गत २१ अगस्त को हुई थी। कहा जाता है कि रात को लगभग ८॥ बजे प्रथम चार विद्यार्थी मथुरा के श्री द्वारिकाधीश मन्दिर के पास स्थित एक जौहरी की दूकान पर गये जहाँ उस समय कुछ औरतें भी खरीददारी कर रही थीं। प्रिन्सिपल महोदय की रिपोर्ट के अनुसार ये लड़के उन औरतों के बराबर में ही खड़े हो गये और शो केस में रखी हुई अँगूठियों को दिखाने के लिये दूकानदार से कहा लेकिन दूकानदार ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। क्योंकि वह महिलाओं को चीजें दिखा रहा था। दूकानदार ने लड़कों को वहाँ से चले जाने के लिये कहा। क्योंकि वह महिला ग्राहकों की उपस्थिति में लड़कों का दूकान में रहना कदाचित् पसन्द नहीं करती थीं।

इस पर विद्यार्थी उत्तेजित हो गये और उन्होंने उसे अपना अपमान समझा जिसके फलस्वरूप दोनों ओर से गर्मागर्मी होने लगी। विद्यार्थियों ने दूकान से अँगूठियों के डिब्बे को जबरदस्ती उठा लिया। दूकानदार ने विद्यार्थियों के इस व्यवहार पर आपत्ति की जिस पर वहाँ लड़ाई शुरू हो गयी। जिसमें एक विद्यार्थी के सेर में चोट आई। उस जौहरी की मदद के लिये पास-पड़ोस के दूकानदार भी आ गये जिन्हें देख कर विद्यार्थी वहाँ से भाग गये। प्रिसिपल की रिपोट में आगे कहा गया है कि वे विद्यार्थी बहुत से अन्य विद्यार्थियों के साथ रात को दस बजे के करीब फिर उस दूकान पर आये और उनका इरादा स्पष्टतः दूकानदार से अपना बदला लेना था।

——

स्तनों के रोग

लेखक, श्री बुद्धिसागर वर्मा 'विशारद' बी० ए० यल-टी०

सुप्रसिद्ध लेखक श्री बुद्धिसागर वर्मा पिछले ३० वर्षों से स्त्रियों को स्वास्थ्य और सौंदर्य के विषय में बहुमूल्य सलाहें देते आ रहे हैं। इन्हीं समस्याओं को लेकर आप एक नवीन ग्रन्थ की रचना में लगे हैं। प्रस्तुत लेख उसी ग्रन्थ का एक अध्याय है।

स्तनों में भी नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं। यह एक सुकुमार अङ्ग है, इसलिये इस सम्बन्ध में प्रायः सभी रोग बहुत कष्ट देते हैं। उनका उपचार शीघ्र होना चाहिए। लज्जा अथवा सङ्कोच-वश इन रोगों का छिपाना बड़ी भूल है। यदि रोग कठिन और अधिक कष्ट-दायक हो, तो किसी अनुभवी चिकित्सक या लेडी डाक्टर की शरण लेनी चाहिए। कुछ साधारण उपाय यहाँ भी बताये जाते हैं।

फोड़े-फुन्सियाँ

प्रायः गर्भावस्था में स्तनों की ऊपरी खाल फट जाती है और फोड़े फुन्सियाँ भी हो जाती हैं। इसके लिये गर्भावस्था के शेष दिनों में स्तनों को 'एडिक्लोन', लेवेण्डर या बराण्डी में समभाग पानी मिला कर अथवा 'कैलण्डुला' लोशन से दिन में २–३ बार धोने से खाल मजबूत हो जाती है।

प्रायः निर्बल स्तनों में सर्दी-गर्मी पहुँचने, दूध जम जाने, दूध पीते बच्चे के सिर या दाँतों की चोट, अथवा अन्य किसी प्रकार की चोट लग जाने आदि कारणों से सूजन आ जाती है। स्तन लाल हो जाते हैं। कभी-कभी कठिन पीड़ा और दाह होने लगती है। और मवाद भी पड़ जाता है। लटके हुए स्तनों में पीड़ा और भारीपन अधिक मालूम होता है। कभी-कभी ज्वर भी आ जाता है। ऐसी दशा में कचनार की छाल या इन्द्रायण की जड़ पानी में पीस कर लेप करना चाहिए। टिंचर आयडीन लगाना, अलसी की पुलटिस घी में बनाकर सेंक करना, अथवा अतीस और कारी जीरी पीस कर लेप करना भी लाभदायक है। सोंठ, बाबूना और पुनर्नवा को पीस कर गरम करके लेप करने से भी बहुत लाभ होता है। गरम जल में अफीम घोलकर उसमें कपड़ा भिगोकर सेंक करना, अथवा 'यक्स्ट्रेक्ट बेलाडोना' ग्लेसरीन में मिलाकर लेप करना या 'बेलाडोना' प्लास्टर लगाना भी उत्तम है। छाती को हर दम पट्टी से बाँधे रहना चाहिए। यदि पीव पड़ जाय तो चीर कर उसे निकाल देना चाहिए। पीव को सुखाने के लिये नीचे लिखी एलोपैथिक औषधि की ३–४ मात्रा चार-चार घंटे बाद दिन में दिया करें—लाइकोर हैड्राज परक्लोराइड ३० बूँद, पुटाश आयोडाइट ५ ग्रेन, टिंचर सिन-

कोना २० बूँद, डिकाक्शन हिमी डिसमिस १ औंस यह एक मात्रा है।

जो स्त्रियाँ अपने शरीर और विशेष कर स्तनों को सुन्दर और सुडौल रखने के लिये दूध रहते हुए भी बच्चों को नहीं पिलातीं, उनकी छातियों में दूध सूख कर स्तन अधिक कड़े पड़ जाते हैं और पीड़ा भी होने लगती है। इस दशा में शलजम उबाल कर उसमें थोड़ा-सा गुलाब का इत्र मिला कर खूब मसल डालें और उसे दिन में दो बार बाँधे, तो शीघ्र लाभ होगा।

प्रायः गर्भावस्था में भी स्तनों में पीड़ा होने लगती है। उस समय स्तनों को गरम पानी से धोकर चमेली के तैल या गुलरोगन को मालिश करनी चाहिए। स्तनों की साधारण पीड़ा में नीचे लिखे प्रयोग उत्तम हैं:—

(१) घी में मोम गलाकर चुपड़ना।

(२) सुहागा २ तोला, गेहूँ का सत ७ तोला पीस छान कर मालिश करना।

(३) अरबी गोंद १ तोला, फिटकरी ५ रती महीन पीस कर लगाना।

थनैला रोग

थनैला रोग भी भयङ्कर होता है। इसे एक प्रकार का स्तनों का फोड़ा कहना चाहिए। यह प्रायः बात, पित्त और कफ के बिगाड़ से अथवा दबाव चोट या किसी चीज की कड़ी रगड़ से हो जाता है। प्रायः पहिलौठी स्त्री के और किसी-किसी के हर बार सन्तानोत्पत्ति के बाद यह रोग हो जाता है। स्तन लाल हो जाते हैं और दाह युक्त कठिन पीड़ा भी होती है। ज्वर लगातार बना रहता है और छूने से स्तन गरम जान पड़ते हैं। इस रोग में नासूर हो जाने का बड़ा भय रहता है, खास कर जब फोड़ा स्वयम् फूट जाय। यदि शीघ्र उपचार न किया जाय, तो घाव बढ़ते-बढ़ते सारे स्तन को गला देता है। अतः बड़ी होशियारी से इसका इलाज कराना चाहिए। साधारण अवस्था में नीचे लिखे उपचार उत्तम होंगे।

एक छटांक मूँग की खिचड़ी १॥ या २ लोटा पानी में पकायें। पक जाने पर पानी दूसरे बर्तन में निकाल लें। जब सहने योग्य हो जाय, तो उसी से कठोर और पीड़ा युक्त स्थान को दिन में ५-७ बार धोवें। अथवा सुहागा, खड़िया मिट्टी, अर्क गुलाब को शराब में मिलाकर स्तन धोवें। ऊपर से नीचे लिखे उपचारों में से किसी एक का प्रयोग करें—

(१) माजूफल १ तोला, पिपरमेण्ट का तेल १० बूँद पानी में पीस कर लेप करें।

(२) अतीस पानी में पीस कर लेप करें।

(३) सहजन के पत्ते पीस कर लेप करें।

(४) घी कुवांर के पट्ठे पर हल्दी का चूर्ण डाल कर लेप करें।

(५) कत्था और कपूर मिलाकर घाव पर छिड़कें। इससे घाव सूख जाता है।

यदि स्तनों पर फोड़े निकल आयें तो निम्नलिखित प्रयोगों से काम लें:—

(१) नागर मोथा और मेथी बकरी के दूध में पीस कर लगावें।

(२) अरण्डी के पत्ते के रस में कपड़ा भिगोकर बार-बार रक्खें।

(३) सहजने के पत्ते पीस कर लेप करें।

(४) गुलाब के पत्ते, सेव के पत्ते, मेंहदी के पत्ते, अनार के पत्ते सम भाग पानी में पीस कर गरम करके दिन में ३-५ बार लगाये। तुरन्त चैन पड़ जाता है।

(५) हल्दी, दारु हल्दी तगर, लालचन्दन, नेत्रवाल; बड़ी इलायची मुलेठी, कूट, नटामासी, सिरस की छाल १-१ तोला लेकर जल में पीस ले और घी मिलाकर गरम लेप करें। पीड़ा नष्ट होती है और हर प्रकार का स्तन-फोड़ा बैठ जाता है।

यदि भिटनी (चूची) पक जाय तो सिन्दूर और रसौत घी में मिलाकर लगाना चाहिये और बच्चे को स्तन-पान कराना बन्द कर देना चाहिए।

गुरुकुल पत्रिका

स्तनों का सूखना

किन्हीं स्त्रियों के स्तन सूखते चले जाते हैं। उन से दूध नहीं निकलता। गिल्टें (ग्लैंड) सूख जाती हैं और भिटनी मुरझा जाती है। यह दशा प्रायः नीचे लिखे कारणों से होती है। (१) शरीर की निर्बलता (२) स्वाँस अथवा दमे का रोग (३) कफ का प्रकोप (४) तपेदिक (क्षयी) (५) शरीर में रक्त का न बनना (६) विषम ज्वर ऐसी दशा में किसी अनुभवी चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए। काली मिर्च बड़ी पीपल, तगर, सेधा नमक, कटेरी के फल, अपामार्ग (लटजीरा) की जड़, काले-तिल, कूठ, जौ, उरद सरसों, असगंध, समभाग कूट पीसकर उपटन की भाँति बना लें। नित्य स्तनों पर मलते रहने से वे बढ़ जाते हैं। साथ ही असली कारण को दूर करने का प्रयत्न भी करना चाहिये।

स्तनों का अत्यधिक बढ़ना

जब गर्भाशय विकारयुक्त होता है अथवा जब स्त्रियों चर्बी उत्पन्न करने वाले पदार्थों का अधिक सेवन करती हैं, तो स्तन परिणाम से अधिक बढ़ जाते है। उनमें दूध भी अधिक आता है। थोड़ी २ सरसराहट मालूम होती है और स्तन मोटे हो जाते हैं। यह रोग प्रायः उसी समय अधिक होता है जब गोद में दूध पीता बच्चा हो अथवा स्त्री गर्भिणी हो। कभी-कभी तो स्तन इतने बढ़ जाते हैं कि बड़ी तकलीफ होने लगती है। कुछ उपचार नीचे दिये जाते हैं।

१) छुई मुई बूटी, शहद, और अफीम को सिरके में घोल कर लगावें।

(२) जैतून का तैल और बारीक पीसी हुई फिटकरी मिला कर इसकी धूनी दें।

(३) छाछ और जौ का आटा पुराने सिरके में घोट कर ३ दिन तक लेप करना चाहिए।

बहुधा स्तनों पर छोटे २ दाने पोस्ते के दानों के समान हो जाते हैं। इनमें बड़ी खुजली होती है। कभी-कभी दाने फूट जाते में और जहाँ उनका पानी लगता है, दूसरे दाने पड़ जाते हैं। इस दशा में सफाई रखने की बड़ी जरूरत है। उचित इलाज शीघ्र होना चाहिए। इसके कारण प्रायः निम्नलिखित हुआ करते हैं।

(१) रक्त विकार, (२) छूत के रोग, (३) दाद का पानी लग जाना, (४) रज का लग जाना, (५) असावधानी से खुजाते समय नख विकार आदि-आदि।

स्नेह-याचना

लेखिका, कुमारी कीर्तिप्रभा, मुंगेर

बहन, स्नेह के मधु प्रकाश से
मेरे उर की व्यथा हरो री!
आज प्यार की घूँघट डाले,
छलती है वासना विश्व को।
खींच लिये जा रही नरक की
ओर कलुष कामना विश्व को।
आज अहिंसा की गर्दन पर,
चकमक हिंसा की कटार है।
फूल न खिलते हैं बहार में,
सुलगा करता अब अङ्गार है।
धो दो उर का दुर्विकार यह,
पावन-पुण्य-प्रदान करो री!
जन-जन में जो प्रीति-भाव
दर्शावे वह भावना जगा दो।
सत्य-धर्म पहचान सके जो,
प्राणों में चेतना जगा दो।
सत्य-शिवं-सुन्दर मानवों के
जीवन का चरम मन्त्र हो।
उद्घाटित जो करे उन्नति का द्वार,
हाथ में एक यन्त्र हो।
अन्तर का यह तिमिर हरे जो,
अन्तर में वह ज्योति भरो री!
बहन, स्नेह के मधु प्रकाश से
मेरे उर की व्यथा हरो री!

* * * *

शुभ दृष्टि

लेखिका, श्रीमती अमिता कुमारी बोस

* * * *

सुमित्रा परम सुन्दरी कन्या थी। परन्तु पिता गरीब थे। अतएव लालच में आकर उन्होंने उसे जमींदार के अन्धे बेटे से ब्याह दिया। और तब......

[१]

वृद्ध जमींदार मनोहरराव अपने इकलौते पुत्र की शादी के लिये विशेष चिन्तित हो गये बहुत-सा इनाम पाने की आशा से घटक लोग बहू की तलाश करने लगे। किन्तु जितनी लड़कियों के सम्बन्ध आये उनमें से एक भी मनोहर राव को पसन्द नहीं आयी। मनोहर राव रायपुरा के जमींदार थे। उनकी विस्तृत जमींदारी का भावी स्वामी उनका एक मात्र पुत्र आनन्द राव था।

आनन्द राव जन्मांध थे। जन्म के दस बारह दिनों के बाद ही शिशु आनन्द के आँखों पर एक पर्दा-सा पड़ने लगा था। बहुत डाक्टरों ने चिकित्सा की मगर कुछ भी नहीं हुआ। जो सुन्दर बड़ी-बड़ी आँखें शिशु के मुख के सौन्दर्य को बढ़ा रही थीं वे ही आँखों की दृष्टि चिरकाल के लिये नष्ट हो गई थीं।

मनोहर राव और उनकी पत्नी गम्भीर दुःख से कातर हो गये। बहुत प्यार का लड़का था, इसीलिये उसका नाम आनन्द रखा था। मन के दुःख से आनन्द की माँ स्वास्थ्य हीन होकर आनन्द को मातृहीन कर परलोक सिधार गयी। मातृहीन शिशु आनन्द मनोहर राव को प्राणों से भी प्यारा था। उन्होंने उसे बहुत यत्न से पाल-पोष कर बड़ा किया, उसकी शिक्षा के लिये अजस्र अर्थ व्यय किया। आज वही आनन्द पचीस वर्ष का एक रूपवान युवक बन गया है। उसका देह सुगठित परन्तु बलिष्ठ, रङ्ग स्वर्ण की तरह उज्ज्वल, मुख श्री अति सुन्दर किन्तु चांद के कलङ्क की तरह यही सुन्दर मुख का कलङ्क है उसकी दृष्टिहीन आँखें।

दुलहिन पसन्द नहीं आती और लड़के की अन्धेपन की बात सुनकर सम्बन्ध टूट जाते। एक दिन एक घटक ने मनोहर राव को सूचना दी कि एक बहुत ही सुन्दर कन्या है किन्तु उसके पिता एक आफिस में साधारण कर्मचारी हैं। मनोहर राव का आदेश पाकर उसी गरीब गृहस्थ के पास विवाह सम्बन्ध जोड़ने गया।

कन्या सुमित्रा के लिये बड़े घर से सम्बन्ध आया जानकर गरीब माता-पिता बहुत ही आनन्दित हुए किन्तु जब घटक ने कहा कि दूल्हा दृष्टिहीन है तब वे एक दम चौंक उठे। उसकी माँ कह उठी—'हम गरीब हैं तो क्या लड़की की शादी एक अन्धे के साथ करेंगे? विपुल ऐश्यर्य भी हुआ तो किस काम का, यदि वर-वधू की शुभ दृष्टि ही न हो।'

गरीब दम्पिति ने विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। घटक निराश हो लौट गया। परन्तु मनोहर राव निराश न हुए। एक दिन वे घूमते हुए दूर से छिप कर कन्या को देख आये। कन्या अपरूप सुन्दरी थी। मनोहर राव ने उसे ही अपनी पुत्र वधू बनाने का निश्चय किया। उन्होंने घटक को

आशातीत पुरस्कार दिया और उससे किसी भी तरह से यह सम्बन्ध जोड़ देने के लिये कहा।

अबकी बार घटक यह सम्बन्ध जोड़ने के लिये जी जान से प्रयत्न करने लगा। उसने लड़की के माता-पिता से कहा—'तुम इतने रूपवान और गुणवान पात्र से अपनी लड़की की शादी क्यों नहीं कर रहे हो, समझ में नहीं आता। केवल इतने से दोष के लिये? इस विपुल जमींदारी का मालिक आनन्दराव है। मनोहर राव की जो पुत्र वधू होगी वही इस अगाध ऐश्वर्य की अधिकारिणी होगी। लड़का अन्धा है परन्तु मूर्ख नहीं। उसे 'ब्रेल' पद्धति द्वारा शिक्षा दी गई है। वह गाना भी बहुत सुन्दर गाता है। उसकी जमींदारी का कार्य ठीक रीति से चलाने के लिये बहुत से कर्मचारी भी नियुक्त हैं। ऐसे रूपवान, गुणवान और अर्थवान लड़के को, इस छोटे-से दोष के लिये ठुकराना ठीक नहीं।'

अपने पड़ोसी सज्जनों ने कन्या के पिता को बहुत समझाया। ऐसा घर वर फिर नहीं मिलेगा। हाथ की लक्ष्मी पैर से न ठुकराओ। यहाँ शादी कर दो, लड़की सुखी रहेगी। पहले तो लड़की की माँ खूब रोयी-धोयी परन्तु बाद में राजी हो गयी। जब भाग्य में यही लिखा तब लड़की उसी के साथ रह कर सुखी होगी। क्या गांधारी ने अन्धे पति के साथ सारा जीवन नहीं बिताया?

[२]

बहुत ही धूम-धाम के साथ जमींदार ने सुमित्रा के साथ अपने लड़के की शादी कर दी। रूपवान दूल्हे को देख कर कन्या के माता-पिता बहुत खुश हुए। अपने अश्रुओं को पोंछते हुए कन्या को विदा किया। किन्तु सात दिन के पश्चात् जब सुमित्रा हीरे-मोती, जवाहरात के झलमल गहने पहने हुई डोली से नीचे उतरी तो माँ की खुशी का पारावार न रहा। उसका सलज्ज हँस-मुख देख कर माँ के मुख पर हँसी तथा आँखों में पानी आ गया। उसने उसे अपनी छाती से लगा लिया।

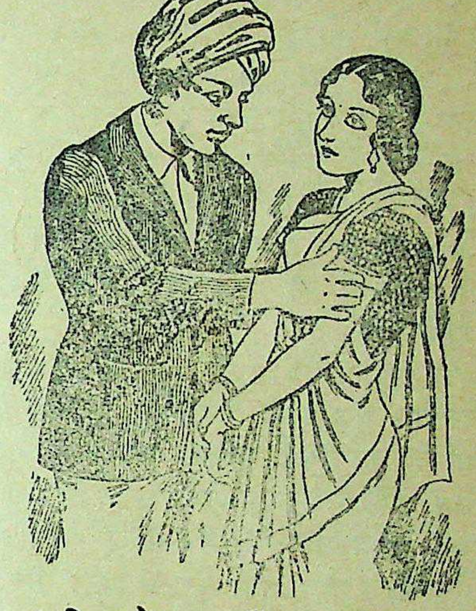

'सुमित्रा मैं अन्धा हूँ; तुम मुझे घृणा तो न करोगी?'

सुमित्रा इतने बड़े जमींदार की बहू होकर बिना सास के घर में गृहिणी बन गयी। वृद्ध मनोहर राव वधू को गृह संसार के सारे काम-काज सिखाने लगे। सितार सिखाने के लिये एक शिक्षक नियुक्त कर दिया ताकि अवसर मिलने पर वधू आनन्द को सितार सुना सके। उसके अन्धे पुत्र के लिये वधू को दुःख न हो, इसका जमींदार बहुत ख्याल रखने लगे।

शादी की रात में युवक आनन्दराव अपने पास बैठी हुई सुमित्रा के दोनों हाथों को अपने हाथ में लेकर कहने लगा—'सुमित्रा मैं अन्धा हूँ. इस कारण तुम मुझे घृणा तो न करोगी? अपने को दुर्भाग्यवती न समझोगी? सुना है तुम बहुत सुन्दरी हो। किन्तु तुम्हारा यह सुन्दर मुख देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं है। मैं बहुत अभागा हूँ।'

उज्ज्वल आलोकित कक्ष में शोड़षी सुमित्रा ने अपना सिर का अवगुन्ठन उठा कर अन्धे पतिदेव की ओर देखा, पति का इतना सुन्दर और करुण

मुख देख कर तथा उसकी व्यथा पूर्ण बातें सुन कर सुमित्रा का मन कोमल हो गया। समवेदना से उसका हृदय भर गया। वह कहने लगी—'मैं बहुत भाग्यवती हूँ। तुम मुझे नहीं देख सकोगे तो क्या हुआ, मैं तो तुम्हें देख सकूँगी। आप मेरी आँखों से सब कुछ देख सकेंगे।' बुद्धिमती सुमित्रा ने मीठी बातों से दो ही दिन में अपने पति का मन मोह लिया। वह छाया की तरह अपने पति के साथ-साथ रहने लगी।

अन्धे आनन्दराव अपने महल के सब कक्षों से परिचित थे। एक हल्की लाठी की सहायता से वे सीढ़ियाँ चढ़ कर दूसरे मञ्जिल पर आ जाते थे तथा सब कमरों में घूम-फिर सकते थे। उनका अधिकांश समय लायब्रेरी रूम में ही कटता था। पिता मनोहर राव ने ब्रेल पुस्तकों द्वारा लायब्रेरी सजा रखी थी।

कभी-कभी सुमित्रा निःशब्द चल कर अपने पति के पास जाकर खड़ी हो जाती थी। वह आश्चर्य में पड़ जाती जब आनन्द कह उठता, सुमित्रा तुम आ गई? सुमित्रा का मुख लज्जा से लाल हो उठता। वह कहती—'तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं आई हूँ मैं तो बहुत धीरे से आई।'

आनन्द कहता—'तुम नहीं जानती हो, अन्धे की घ्राण तथा स्पर्श शक्ति कितनी प्रखर होती है। तुम्हारा पद-शब्द मेरा अति परिचित तथा प्रिय हो गया है। अतः तुम मुझे छल नहीं सकती हो।'

पति के प्रेम और आदर से सुमित्रा आनन्द विह्वल हो जाती थी। कभी-कभी पति की सुन्दर आँख देख कर उसका मन दुखी हो जाता, आँखें भर जातीं। आइने के सामने खड़ी होकर जब वह बाल सँवारती तो यह ध्यान हो आता—यह सब किसके लिये? जो देख कर प्रशंसा करते वही आज दृष्टि हीन है। फिर व्यर्थ ही शृङ्गार क्यों करना। उसके मन में एक प्रकार वैराग्य की भावना उठती थी। कभी-कभी वृद्ध ससुर कह उठते—'बहू तुम ज्यादा गहने क्यों नहीं पहनती। केवल दो-चार ही पहन रखे हैं। रङ्गीन साड़ियाँ क्यों नहीं पहनतीं। क्या तुम्हें पसन्द नहीं आयी?'

सुमित्रा लज्जित हो कह उठती—'नहीं पिता जी बहुत पसन्द आई हैं। आपने तो बहुत-सी साड़ी गहने खरीद दिये हैं, कितने पहनूँगी।'

वृद्ध ने म्लान मुख से कहा—'बहू, मैंने तुम्हें इस घर में लाकर पाप तो नहीं किया? सच-सच बताओ क्या तुम वास्तव में सुखी हो?'

ससुर की बातें सुन कर सुमित्रा की आँखें भर गयीं। ससुर को प्रणाम कर बोली—'पिता जी मैं बहुत सुखी हूँ। आप ये सब बातें याद कर दुःखी मत होइये।'

सुमित्रा अन्धे पति की सेवा जी-जान से करने लगी। आनन्द की सेवा के लिये जो नौकर सदा साथ-साथ रहते थे उन्हें हटा कर उनका काम स्वयं करने लगी। अपने मन में कभी कभी व्यथा उत्पन्न होती। उसे भूलने के लिये वह अपने आपको कामों में लगा रखती थी। सुमित्रा ने बहुत सुन्दर सितार बजाना सीख लिया था। वह रोज सितार बजा कर आनन्द का मन बहलाती थी। आनन्द भी कभी-कभी सितार के साथ गाना गाता था। वृद्ध मनोहर राव कभी-कभी आकर दोनों का गीत वाद्य सुनते थे।

[३]

एक दिन वर्षा की सन्ध्या में सुमित्रा सितार बजाने बैठी। अविराम वर्षा की धारा और सितार की करुण झङ्कार ने सुमित्रा का मन उदास कर दिया। उसने पास बैठे हुये आनन्द की ओर देखा; वह तन्मय होकर सितार सुन रहा था और उसकी ओर एक टक देख रहा था मानो वह अपनी दृष्टि-हीन आँखों की समस्त शक्ति द्वारा सुमित्रा को देखने की व्यर्थ चेष्टा कर रहा था।

आनन्द की ओर देख कर सुमित्रा की दोनों आँखें सजल हो गईं। उसने सितार एक ओर रख दिया। फिर आनन्द की गोदी में सिर रख कर सिसक-सिसक कर रोने लगी। आनन्द उसके सिर

पर सस्नेह से हाथ फेरते हुए व्यथित कष्ट से कहने लगा—'सुमित्रा मैं जानता हूँ क्यों तुम्हारी आँखों से आँसू बह रहे हैं। मैं अभागा एक बार भी तुम्हें न देख सका। एक बार भी तुमसे मेरा दृष्टि विनिमय नहीं हुआ। तुम्हारी आवेग पूर्ण दृष्टि मेरी दृष्टि हीन आँखों से मिलने के लिये बार-बार दौड़ती हैं मगर उन्हें हताश होकर लौट जाना पड़ता है। मेरा मन व्यथा से हाहाकार कर उठता है, मैं तुम्हें कैसे समझाऊं? मैं एक प्रकार से जन्मांध हूँ। मैंने सितारों भरा नीलाकाश नहीं देखा। उर्म्ममुखर समुद्र तट पर बैठ कर समुद्र का स्पर्श अनुभव किया है, उसके तरङ्गों का उच्छवास सुना है परन्तु उसके रूप की कल्पना न कर सका। मैंने कभी पुष्पोद्यान नहीं देखा है। जो पुष्प प्रेमिक-प्रेमिकाओं की काव्य की वस्तु है; उसका केवल सुवास ही पाया है। उस का अतुल रूप मैं नहीं जानता। सूर्य, चन्द्र, दिन और रात में क्या भेद है यह मेरे समझ में नहीं आता है फिर भी मुझे इतना मर्मान्तिक दुःख नहीं हुआ जितना अब होता है, तुम्हारा रूप लावण्य भरा सुन्दर मुख दिखाई न पड़ने पर।'

आनन्द सुमित्रा का मुख अपने छाती पर रख कर आवेग पूर्ण कण्ठ से बोला—'सुमित्रा मुझे माफ़ कर दो। मैं बहुत स्वार्थी हूँ। मैं तुम्हें केवल दुःख देने के लिये ही शादी कर लाया हूँ। किन्तु तुम्हें सुखी न कर सका। किन्तु मैं खुद कितना सुखी हूँ यह तुम नहीं जानती। तुम्हारे न होने से इस अन्धे का जीवन कैसे बीतता भगवान ही जानता है।'

आनन्द की दृष्टिहीन आँखों से टप-टप कर अश्रु गिर पड़े सुमित्रा के सिर पर। उन पवित्र अश्रुओं ने पति पत्नी के बन्धन को और दृढ़ कर दिया।

सुमित्रा आंतरिक सुखी हो उठी। पति के प्रेम और स्नेह से उसका जीवन मधुर हो गया। तितली जैसे रंगीन दिन स्वप्न की तरह बीतने लगे। सुमित्रा अब माँ बनेगी। आनन्द और सुमित्रा मधुर आशा कल्पना से भावी सन्तान के आगमन के दिन गिनने लगे। किन्तु दोनों के मन में एक आतङ्क घर कर रहा था जिसे वे एक दूसरे से प्रकट नहीं करते थे।

एक मनोरम प्रभात में सुमित्रा की गोद में एक सुन्दर शिशु कन्या ने जन्म लिया। अन्धे आनन्द राव के मन में आशा, निराशा, भय, उत्कण्ठा सब मिल कर एक विचित्र भाव का उदय हो रहा था। वे अधीर होकर बरामदे में घूमने लगे। पारिवारिक डाक्टर ने बाहर आकर कहा—'आनन्द, घबराने की कोई बात नहीं है। माँ और शिशु दोनों स्वस्थ हैं और शिशु की दृष्टि बिलकुल साफ़ है।'

वृद्ध मनोहर राव ने शिशु को देखा। सुमित्रा ने शिशु की आँखों में देखा। सुन्दर उज्ज्वल दृष्टि थी। मनोहर राव आनन्द राव और सुमित्रा ने शान्ति का श्वांस छोड़ा, भगवान के पास कृतज्ञता प्रकट की। माता-पिता के रूप में मिला कर शिशु उत्पन्न हुआ जैसे ज्योत्स्ना की एक झलक। दादा बाबा माँ उसे प्यार से पुकारने लगे कुन्दकली। रूप सी कन्या शशिकला की तरह बढ़ने लगी। वृद्ध मनोहर राव काले घुँघराले बालों से, सुसज्जित कमल मुख में दो स्वप्नालस आँखों की ओर अनिमेष नयन से देखते हुए कुछ चिन्ता करते थे। सुमित्रा कभी-कभी शिशु को आनन्द की गोद में देती थी। आनन्द अपने शिशु को बड़े प्यार से छाती से लगा लेते और एक दीर्घ श्वांस छोड़ते। सुमित्रा अपनी लड़की की आँखों की ओर देखती और सोचती—यदि उसके पति की आँखें अच्छी होती तो शायद वे भी इसकी आँखों की तरह मद-भरी होतीं।

धीरे-धीरे सुमित्रा की गोद में दो शिशु पुत्रों ने जन्म लिया। बहुत दिनों के बाद जमींदार का प्रासाद तुल्य भवन तीनों शिशुओं की कल काकली से मुखरित हो उठा।

[४]

चौवालिस वर्ष बाद। आनन्द राव सत्तर वर्ष और सुमित्रा साठ वर्ष की वृद्ध वृद्धा। जमींदार गृह

में तीन युग के भीतर कितने ही जन्म मृत्यु और उत्सव हुये। बृद्ध जमींदार की मृत्यु हो गयी थी। लड़के बच्चों की शादी हो चुकी थी। नाती नातिनों की सख्या भी काफी थी। छुट्टियों में इन लोगों के आगमन से विशाल भवन मुखरित हो उठता था और चले जाने पर शून्य पूजा मण्डप की भाँति हो जाता था। वृद्ध वृद्धा के वैचित्र हीन जीवन पूजा अर्चना में बीत जाते।

एक दिन गाड़ी बरामदे में एक मोटर आकर रुकी। एक युवक कूद कर सीधे भीतर जाकर पुकारने लगा—'नानी ओ नानी!' सुमित्रा ने आकर देखा—कन्या कुन्द का लड़का उसका नाती शङ्कर आया है। उसका विवाह निश्चित हो गया है अतः वह अपनी नानी और दादा को बुलाने आया है। आनन्द राव और सुमित्रा खुशी से लड़की के घर गये। बहुत दिनों के बाद अपने माता-पिता को पास पाकर कुन्द बहुत आनन्दित हुई।

धूम-धाम से शादी का उत्सव समाप्त हुआ। सुमित्रा को जमींदारी के जरूरी काम से शीघ्र ही लौट आना पड़ा। कुन्द ने पिता को अपने पास रखने की इच्छा प्रकट की। शङ्कर बड़ा डाक्टर हो कर आया था। अतः उसी के जिम्मे अन्धे आनन्द को रख कर निश्चिन्त हो सुमित्रा घर लौट गयी।

विदेश से आँखों का विशेषज्ञ हो, शङ्कर देश लौट आया था। जब-जब वह अपने दादा की अन्धी आँखों को देखता, तब-तब उसके मन में यह जागृत होती कि वह अपने दादा की आँखों का आपरेशन कर उन्हें अच्छा कर दे। एक दिन आनन्द ने दादा की दोनों आँखों की अच्छी तरह जांच कर बोला—'दादा मैं तुम्हारी आँखों का आपरेशन करना चाहता हूँ।'

आनन्द राव हो-हो कर हंस उठे। कहने लगे—'तू बहत्तर साल के बुड्ढे की आँखों का आपरेशन करना चाहता है? इन आँखों को अच्छा करने के लिये पिता जी ने दोनों हाथों से बहुत खर्च किया किन्तु कोई भी डाक्टर आराम न कर सका और तू कल का छोकरा डाक्टर मेरी आँखों का आपरेशन करना चाहता है।'

शङ्कर कहने लगा—'दादा, वर्तमान युग में चिकित्सा शास्त्र की बहुत उन्नति हुई है। असम्भव भी सम्भव हो जाता है। आप घबराइये नहीं। दादा न घबराओ। हम परसों तुम्हारी आँखों का आपरेशन करेंगे। नानी को खबर भी नहीं भेजेंगे।'

आनन्दराव प्रलोभन में पड़ गये। आशा, निराशा के द्वन्द में अन्त में वे राजी हो गये। निर्दिष्ट दिन में आपरेशन हो गया। डाक्टर सफलता की खुशी में आनन्दित हो उठे। आनन्दराव बहत्तर वर्ष की उम्र में दृष्टि शक्ति पा गये। खुशी से नाती को अपनी छाती से लगा लिया। आनन्दराव जो कुछ देखते वही उनको विचित्र लगता। अपूर्व विस्मय से आनन्दराव नर नारियों और बालकों को देखने लगे। बहत्तर वर्ष का बृद्ध शिशु नयी पृथ्वी को देखने लगा। उसके विस्मय का अन्त नहीं। कितना सुन्दर है यह तारों भरा नीलाकाश, कितनी सुन्दर है चन्द्रमा की ज्योत्स्ना और कितना अच्छा है सूर्य का तीव्र आलोक। हाथ में गुलदस्ता लेकर उसके फूलों को देखते और खुशी से शिशु की तरह चञ्चल हो उठते।

आइने के सम्मुख खड़े होकर आनन्द राव सफेद पके बाला से सुशोभित अपने मुख को घुमा-फिरा कर देखने लगे। गाल में झुरियां पड़ गई थीं। हाथ की मांस-पेशी कड़ी नहीं पर ढीली पड़ गई थी। शङ्कर को देख कर वे सोचने लगे यौवन में वे भी शङ्कर के समान सुन्दर युवक थे। वे अपने आप कहने लगे—'सुमित्रा न जाने कैसी होगी। राह में सुन्दरी तरुणी का मुख कल्पना की सुमित्रा सोच कर अपने पास खड़ा कराते पर बृद्ध के पास तरुणी अच्छी नहीं लगती। सुना था सुमित्रा बहुत सुन्दरी है। देखने में नाती बहू के समान सुन्दर होगी। न जाने वह कैसी है। इस प्रकार मन ही मन वे कल्पना की मूर्ति-सी गढ़ने लगे। शेष मूर्ति को देख कर आनन्द ने तृप्ति का श्वांस छोड़ा।

077 684
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

शङ्कर की चिट्ठी न मिलने से सुमित्रा बहुत घबड़ा गई। सारे जीवन में वियोग का यह पहला अवसर था। नाती शङ्कर के भरोसे में अन्धे पति को दूर देश में रख आना सुमित्रा के लिये शांतिप्रद नहीं हुआ। अपने पति से दूर रहना कितना कष्ट दायक होता है अब सुमित्रा समझ गयी थी। सोलह वर्ष की उम्र में सुमित्रा आनन्द के ससार में आई थी और आज वह साठ वर्ष की विवाहित जीवन के पूरे चौवालिस वर्ष बीत चुके हैं। आनन्द के प्रेम और स्नेह से उसका जीवन एक माधुर्य में बीत गया है किन्तु अब वियोग के दिन आ गये हैं। एक न एक दिन एक को पहले जाना ही पड़ेगा। यह चिन्ता अब उसे असह्य हो गयी। चिन्ता करते-करते वह स्नान कर पूजा करने बैठ गयी। सुमित्रा जब बहुत देर के बाद पूजा घर से बाहर निकली तब देखा कि माली तार लिये खड़ा है। उसने जल्दी से तार पढ़ा। उसमें लिखा था कि नाती शंकर आनन्द राव सहित शाम को आ रहे हैं। खुशी से सुमित्रा का मुख उज्ज्वल हो गया। दीवान जी को स्टेशन पर ठीक समय पर कार ले जाने का आदेश दिया। नौ बजे, एक घंटा और बाकी है। सुमित्रा गाड़ी बरामदे में धैर्य से बैठी रही और उत्सुक हो रास्ता देखने लगी।

हठात् मोटर का हार्न बजा। मोटर द्रुतवेग से फाटक के भीतर से घुसी। सुमित्रा जल्दी से बरामदे की सीढ़ी पर आकर खड़ी हो गई। उसने पट्टवस्त्र पहना था, भीगे बाल कन्धे और पीठ पर फैले हुए थे, दो-चार काले बालों के बीच आजस्र रूपहले बाल झिलमिला रहे थे। कपाल पर बड़ा सिंदूर शोभा दे रहा था। स्निग्ध सौष्ठवपूर्ण देह, यौवन-तरङ्ग से उच्छ्वासित नहीं, अपूर्व सुखमा मण्डित मातृ मुख दोनों आँखों में उत्कण्ठा और ममता भरी दृष्टि।

कार धीरे-धीरे पुष्पोद्यान के पास आ गयी। आनन्दराव शिशु की तरह उच्छ्वसित हो नाती शंकर से कहने लगे—'क्या यही मेरा शौकीन फूल बाग है? प्रासाद तुल्य भवन को देख कर कहा—क्या यही मेरा आजन्म का नीड़ है? कितना सुन्दर ओह! कार गाड़ी-बरामदे में आकर रुक गई। कार रुकते न रुकते आनन्दराव खुद दरवाजा खोल कर उत्तर पड़े। बालक की तरह सीढ़ियाँ चढ़ने लगे सुमित्रा ने अवाक् होकर देखा आनन्दराव की आँखें अब अन्धी नहीं हैं बल्कि उनमें उज्ज्वल दृष्टि है। आधे रास्ते में आकर आनन्द रुक गये। सामने एक नारी मूर्ति खड़ी थी। आनन्द धीरे-धीरे सामने आकर विस्मित हतवाक् सुमित्रा के पास खड़े हो गये। चौवालिस साल बाद सुमित्रा की विस्मित दृष्टि के साथ आनन्द की उज्ज्वल दृष्टि का विनिमय हुआ। आनन्द ने सुमित्रा का हाथ अपने हाथ में लेकर धीरे से पुकारा—'सुमित्रा!'

——

गीत

लेखिका, कुमारी उर्मिला द्विवेदी 'ज्योति'

भार न बन आधार बनो तुम :
युग की गति में पैर मिलावो,
अबला बन कर मुंह न छिपावो।
दीन हीन दासी अब तक थीं।
अब चिर शोषित शीश उठावो!
जाग उठो धरती की बेटी,
भंवर न बन पतवार बनो तुम! भार न बन...
संगी पुरुष संगिनी नारी।
दोनों ही श्रम के संसारी,
पर स्वारथ के वशीभूत हो।
छल करते छल के व्यापारी,
छलना के इस अन्धकार में,
घृणा न बन हुंकार बनो तुम। भार न...
करो स्वयम् जीवन की रचना,
वरो मुक्ति होगा जग अपना।
अधिकारों के दिये जला कर,
देखो जाग रहा है सपना॥
आदि रूप सृष्टा नारी तुम
पतझर मिटा बहार बनो तुम—भार न०...

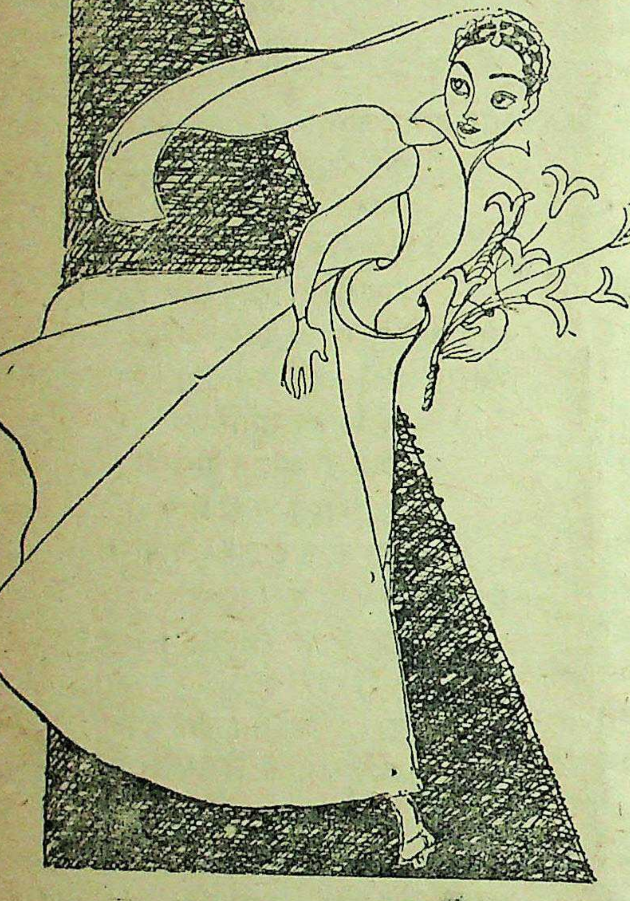

पेरिस का बाजार!

जिसमें फैशनेबल स्त्रियाँ घूमती हैं

लेखिका,
श्रीमती बिमला गुप्ता (लन्दन से)

हाल ही में एक सप्ताह के लिये मुझे 'पेरिस' जाना पड़ा। मेरे साथ कुमारी उषा राय भी थीं जो यहाँ प्रशिक्षण शास्त्र का विशेष अध्ययन करने के लिये आई हुई हैं।

भारत में हम दोनों ने पेरिस के फैशनों की बड़ी चर्चा सुन रखी थी सो निश्चय किया कि पेरिस का फैशन देखा जाय।

दरियाफ्त करने से मालूम हुआ कि पेरिस का फैशन देखने के लिए हमें एक खास बाजार में जाना चाहिए, जहाँ केवल स्त्रियाँ दूकान लगाती हैं। उसी स्थान पर पेरिस की स्त्रियाँ नये से नये शृङ्गार करके प्रति रविवार को जाती हैं। सो आगामी रविवार को हम भी उस बाजार में गये।

जैसे अपने यहाँ भारतवर्ष में देहातों में खुले मैदान में बाजार लगते हैं बस वैसे ही यह बाजार खुले में लगता है। पर यह भारत के बाजारों से सर्वथा भिन्न है। फ्रांसीसी भाषा में यह बाजार 'मार्ची औक्स पूसेस' के नाम से विख्यात है। अँग्रेज यात्री इसे 'पेरिस जंक मारकेट' कहते हैं। मैदान में लगने वाला ऐसा बाजार संसार में दूसरा नहीं है। फ्रांस के पुराने किलों के खंडहरों में कई एकड़ भूमि में इसका फैलाव है। इस बाजार में पहुँचने पर आपको प्रतीत होगा कि आप वास्तविक फ्रांस में आ गये।

इस बाजार में प्रत्येक स्टाल अपना पृथक् व्यक्तित्व रखता है। किसी एक स्टाल में आप कोई एक

चीज दे और सौदा न पटे तो यह नहीं हो सकता कि वही चीज आपको दूसरे स्टाल पर मिल जाय। विविध आभूषण, चित्र, पहनावे की अन्य वस्तुएँ इस तरह सजा कर रखी जाती हैं कि देखने वाला मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। फ्रांस की पुरानी से पुरानी वस्तु आपको यहाँ देखने को मिल जायगी। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि यदि श्री कृष्ण भगवान फ्रांस में पैदा हुए होते, तो उनका मोर मुकुट इस बाजार में ढूँढ़ने से अवश्य मिल जाता।

इस बाजार में दूकानें रखने वाली प्रायः सभी स्त्रियाँ होती हैं। देखने में वे ग्रामीण महिलाओं-सी प्रतीत होती हैं परन्तु वे बहुत ही चतुर होती हैं। उनकी प्रत्येक चेष्टा और बात-चीत विनय से भरी प्रतीत होती है।

यहाँ पर किसी वस्तु का मूल्य निश्चित नहीं है। दूकान वाली स्त्रियों का लक्ष्य केवल एक ही दिशा की ओर रहता है। अधिक से अधिक आप क्या देखते हैं? कौड़ी की वस्तु के यहाँ लाखों दाम लग जाते हैं।

यदि आप कुछ दाम घटाने को कहें तो वे मुस्करा कर कहती हैं—'अच्छा आपका मान रखने के लिए कुछ घटा दूंगी, पर पहले बतावें तो कि आप क्या दे सकती हैं?' इस तरह वे ग्राहक के मन को टटोलती हैं। अधिकांश चीजें तो इतनी धूल-धूसरित और पुरानी दिखती हैं कि इसे गुदड़ी बाजार कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। 'ये अमुक राजा के बूट हैं।' 'यह अमुक रानी का कंघा है।' इसी प्रकार किसी योद्धा की तलवार, किसी चित्रकार का ब्रश और प्रत्येक पीढ़ी के स्त्री पुरुषों के चित्र और उनके प्रयोग की वस्तुएँ आदि इस बाजार की विशेषता है। प्रत्येक वस्तु प्राचीन इतिहास में झांकने की एक खिड़की-सी प्रतीत होती है। सुनने में आता है कि जब से अमरीकन लोग 'डालर' के साथ इस बाजार में आने लगे तब से प्रत्येक वस्तु का मोल बहुत बढ़ गया है।

रविवार को प्रातः काल यह बाजार चमक उठता है। स्त्रियाँ इसमें जाने के लिए विशेष रूप से शृङ्गार करती हैं। विदेशों के यात्री फ्रांस की इन्हीं महिलाओं के पहनावे देखने को उस समय खास तौर से आते हैं। विख्यात कलाकार, कवि, लेखक, अभिनेता अभिनेत्रियाँ यहाँ दूकान लगाने वाली स्त्रियों से गपशप करते नजर आते हैं। क्योंकि इन्हीं स्त्रियों की सहायता से वे अपने गृहों के सजाने में सफल होते हैं। सारा पेरिस इसमें उमड़ता प्रतीत होता है।

ये स्त्रियाँ ग्राहक को फँसाने में कोई बात बाकी नहीं लगा रखतीं? दाम पूछ बैठने पर फिर खरीदना ही पड़ता है। कुछ नहीं तो इन्हें हाथ दिखा कर ही कुछ देना पड़ता है। ये सभी मानों हस्त-रेखा विज्ञान विशारद हैं। आपको अपनी दूकान के पीछे ले जायेंगी और हाथ देख कर आपका भविष्य बतावेंगी।

प्राचीन युग के रत्नाभूषण इस बाजार में काफी दिखाई पड़ने लगे हैं। कितने ही तो नये फैशन में दाखिल हो गये हैं।

इस बाजार में पग-पग पर दिल बहलाव होता है और ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। विदेशी यात्री कदाचित् इसे फैशन का बाजार इसलिए कहते हैं कि इसमें प्रति रविवार को पेरिस की सुन्दरियाँ अपना पृथक् व्यक्तित्व प्रकट करने वाली श्रेष्ठतम वेष-भूषा में आती हैं। सम्भवतः इस बाजार में आने से पूर्व वे काफी समय अपने शृङ्गार में लगाती हैं। वे इसकी आदी हैं परन्तु विदेशी यात्रियों के लिये यह बाजार अभूतपूर्व नज्जारा है।

पेरिस का फैशन-रहस्य

श्रीमती विमला गुप्ता लिखित 'दीदी'
के आगामी अङ्क में छपेगा।

जासूसी कहानी

लेखक,
श्री निशीथकुमार राय बी० ए० एल-एल० बी०

टेनिस का बल्ला

श्री निशीथ कुमार राय जासूसी कहानियाँ लिखने में बेजोड़ हैं। गत वर्ष इनकी कहानियां छापने का श्रेय एक मात्र 'दीदी' को रहा। इस वर्ष की इनकी यह पहली कहानी है।

[१]

उदय प्रति दिन की तरह प्रातः स्नान करने के पश्चात् पूजा पर बैठा ही था कि एक बहुत बड़ी सी मोटर-गाड़ी उसके बंगले की बरसाती में आ रुकी। उदय का मित्र तथा सुयोग्य सहकारी मानसिंह ने आगन्तुक का स्वागत किया और आदर सहित गोल कमरे में ले जाकर बैठाला। वह जानता था इस समय उदय कदापि नहीं उठ सकता चाहे कोई भी हो।.... आगन्तुक रिटायार्ड कलक्टर नसीर खाँ थे। नामी आदमी थे।

उदय ने पूजा समाप्त करके जब कमरे में प्रवेश किया तो आगन्तुक की जो चीज उनकी निगाहों पर पड़ी—वह थी खेजाब लगी हुई दाढ़ी। उसने देखा एक प्रौढ़ सज्जन सोफा पर बैठे मानसिंह से बातें कर रहे थे। उनकी शक्ल से शराफत टपक रही थी। आभिजात्य की भी स्पष्ट छाप उनके चेहरे पर थी। उदय ने उन्हें नमस्कार करके अपने आने में विलम्ब के लिए क्षमा प्रार्थना की। उसके बाद उनकी ओर प्रश्न सूचक दृष्टि से ताका। वे गम्भीर स्वर में बोले, 'मि० चौहान' मैं बड़ी मुसीबत में पड़ कर आप के पास आया हूँ।

'यह तो मैं जानता हूँ। मेरे पास लोग निराश होकर ही अधिकतर आते हैं।'

'जी हाँ; मैं भी ना उम्मीद होकर ही आप के पास आया हूँ' थोड़ी देर रुक कर वे बोले—'आपने सुना होगा, खानबहादुर आफताब हुसेन का हाल में कत्ल हो गया है।'

'जी हाँ, मैंने सुना है।' उदय ने स्वीकार किया। आज ही सुबह उसे एस० पी० ने चुपके चुपके जाँच करने का अनुरोध किया था। मगर प्रकाश्य में उसने और कुछ न कहा।'

आफताब मेरे बचपन के साथी थे और होने वाले समधी भी। उनके भतीजे से मेरी लड़की की शादी हाल में होने वाली थी......मगर इस मामले के हो जाने से पुलीस का शुबहा मेरे होने वाले दामाद शमशाद पर जा पड़ा है। मैं नहीं जानता पुलिस वालों का क्या इरादा है। चाहे कैसे भी प्रमाण उनके पास हो—मेरे पास भी ऐसा प्रमाण

है जिससे यह साबित हो जायगा कि शमशाद ने आफताब का कत्ल नहीं किया है। आखिरकार शमशाद आफताब को क्यों मार डालता' आफताब ला वल्द थे। शमशाद ही उनका वली था। उन्ही ने उसे पाला पोसा था।......अचानक ऐसे चाचा को मारने का इरादा शमशाद क्यों करता? पुलिस ने यह कोशिश नहीं किया कि कोई नीयत साबित करे!

'इसके बाद उन्होंने थोड़ी देर बातें और की' और जब उदय ने उनके 'केस' को लेने का वायदा कर लिया तो वे चले गये।

[२]

दरोगा अम्बिका प्रसाद से उदय की बातें हो रही थीं। उदय ने पूँछा, 'अम्बिका, शमशाद पर तुम्हारा शुबहा क्यों हुआ?

'मेरे पास इस बात को साबित करने के लिए काफी प्रमाण है कि शमशाद के साथ नसीर खाँ की लड़की अमिना की जो शादी तै थी उसे उन्होंने तोड़ दिया था और शमशाद उस लड़की को अत्यधिक प्यार करता था।.....इससे शमशाद के लिए चाचा को राह से हटाने की इच्छा पैदा होना अस्वाभाविक न था।.....इसके अलावा खान बहादुर से इस शादी के टूट जाने के बारे में शमशाद का झगड़ा हुआ था।'

खान बहादुर के जीते जी उनकी जायदाद व रुपये पैसे पर शमशाद हाथ नहीं लगा सकता था, मगर उनके मरने के बाद एकाएक सारी सम्पत्ति शमशाद के हाथ लगी—क्या यह काफी नहीं है। जर-जेवर और जमीन—इन्हीं तीन में से किसी न किसी सिलसिले में बाबा आदम के जमाने से आज तक कत्ल होता चला आ रहा है।

'कौन-कौन-सा प्रमाण तुमने अब तक हासिल किया है?' उदय ने पूछा।

'उद्देश्य तो बता चुका हूँ। झगड़ा भी जिन नौकरों ने देखा था, वे बयान देंगे। कतल का प्रत्यक्ष प्रमाण तो नहीं है मगर सांकेतिक प्रमाण है और ऐसी शहादत जज आसानी से मान लेते हैं।'

'शव व्यवच्छेद का नतीजा मालूम हुआ?'

'जी हाँ, पीछे से सर पर किसी कुन्द आला मसलन लाठी से मारा गया था। दिमाग को सदमा पहुँचने से मौत हुई है। मृतक के खून आलूद कपड़ों को मैंने सील मुहर कर लिया है।'.....

वहाँ से उठ कर उदय सीधे घटना स्थल पर जा पहुँचा। आफताब टेनिस 'लान' के पास रक्खे हुए बेंच पर बैठे थे, जब उन्हें वह चोट पहुँचाई गयी थी। पास ही उनका रैकट (टेनिस का बल्ला) पड़ा था। टेनिस खेल कर आराम करते वक्त कातिल ने मारा था। बेंच पर खून के छींटे थे।'

नौकर चाकरों से पूछने पर मालूम हुआ कि रोज नसीर खाँ, शमशाद, महलूक (यानी आफताब) और अमीना टेनिस खेला करते थे। कतल के दिन शमशाद ने नहीं खेला था क्योंकि झगड़ा हो गया था। कतल के चन्द मिनट पहले अमीना और नसीर खाँ वहीं से टेनिस खेल कर लौट रहे थे कि आवाज सुन कर दोनों दौड़े और वहाँ जाकर मृतक को मरा पाया। ठीक उसी समय अपने कमरे की ओर शमशाद दौड़ता हुआ जाता नजर आया और नौकरों का कहना था कि शमशाद बेहद परेशान था।

उदय ने सबसे पहले शमशाद से मुलाकात करना ठीक समझा। शमशाद जेल में था। उदय को देख कर नहीं बोला। उदय ने जब अपने आने का कारण व्यक्त किया तो उसने और भी चुप्पी साध ली। सिवा 'मैं बेगुनाह हूँ' कहने के उसने और कुछ भी नहीं कहा। उदय ने स्पष्ट अनुभव किया कि वह कोई बात छुपाने की कोशिश कर रहा है। उदय ने कहा—'शमशाद, तुम मुझसे सब कुछ स्पष्ट बता दिये होते तो अच्छा होता। क्योंकि यह बच्चों का खेल नहीं है, इसमें तुम्हें फाँसी की भी सजा मिल सकती है। तुम्हारे खिलाफ काफी सुबूत है।'

'मैंने सब कुछ बता दिया है। मुझे और कुछ नहीं मालूम है। मैं बिलकुल बेगुनाह हूँ। इस पर भी अगर मुझे सजाये मौत मिलती है तो मैं लाचार हूँ।'

'तुमने बहुत कुछ छुपाया है। खैर यह तो बताओ—तुम उस दिन जब बाग की ओर से आते नजर आये थे तो क्यों घबराये हुए थे ?'

'मैं घबराया हुआ नहीं था।' छोटा-सा जवाब देकर वह चुप रहा।

'तुम तीन में से ही किसी ने कतल किया होगा, फिर बोला उदय आखिरकार किसी ने तो कतल किया ही है।'

'क्या मतलब ?' पूछा शमशाद ने—'यानी आप अमीना पर भी शुबहा करते हैं ?'

'क्यों नहीं। उसके खिलाफ तो मेरे पास काफी प्रमाण हैं।' बोला उदय।

उसने शमशाद को चौंकते देखा। शमशाद का चेहरा फक पड़ गया। वह घबरा गया था। उसके माथे पर पसीने के बूँद चमक आये थे। उदय कहता गया—'अमीना और नसीर खाँ खेल रहे थे।... नसीर से अधिक आसान था अमीना के लिये यह काम करना। महलूक को भी शुबहा नहीं हुआ होगा।'

उसकी बातें सुन कर उसका चेहरा दयनीय हो उठा। वह हकला कर बोला—'आप गलत कह रहे हैं उदय जी, अमीना बिलकुल बेगुनाह है।'

'और नसीर खाँ नहीं ?' उदय हँस उठा। चौंक कर शमशाद चुप हो गया।......

वहाँ से उदय पहुँचा अमीना के पास। नसीर खाँ कहीं गये हुए थे। उसको देखते ही अमीना ने स्वागत किया और ड्राइङ्ग रूम में बिठाला। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद उदय ने पूछा—'अच्छा अमीना बेगम, आप जिस वक्त कराहने की आवाज सुन कर दौड़ गयीं तो किसी को देखा था ?'

'जी हाँ ! जी नहीं—मैंने किसी को वहाँ नहीं पाया।' वह बेहद घबरा गयी।

'आप बराबर नसीर खाँ के साथ थीं—अलग तो नहीं हुईं ?'

'जी नहीं, मैं बराबर अब्बाजान के साथ थी।' जरूरत से ज्यादा जोर देकर वह बोली।

'आपको तो आफताब पर बड़ा गुस्सा आया होगा, जब उन्होंने शादी तोड़ दी।'

'जी हाँ ! मुझे बहुत बुरा लग रहा था।'... अमीना बोली।

'तो अब आबको तसल्ली मिल गई होगी ?'

'क्या मतलब ?' उदय की बातों से घबरा कर उसने पूछा।

'मतलब बहुत सीधा है—और आप समझ भी गई होंगी।'

नसीर खाँ आये और नसीर खाँ से भी उदय की मुलाकात हुई। उन्होंने तो आओभगत का हद कर दिया। बड़ी खातिर की।

'नसीर साहब, वक़ूये के चन्द मिनट बाद ही जब आप पहुँचे ...।'

'जी नहीं, अमीना मुझसे पहिले पहुँची थी। उसी के पीछे-पीछे मैं पहुँचा और साथ ही साथ नौकर माली भी आ पहुँचे थे।'...

'वहाँ किसी को देखा था ?'

'अजी यही तो मुसीबत है। शमशाद मियाँ शामद के मारे, जाने क्यों आफताब के पास आ रहा था—किस्से को देख कर घबरा कर भागा।'

'तो क्या उसने कतल होते देखा था ?' उदय ने पूछा।

'वह तो कहता है कि उसने कुछ नहीं देखा।'

[३]

शाम हो रही थी। आफताब ने उदय और मानसिंह को चाय पिलाया और फिर उदय ने कहा 'आइये जरा टेनिस खेल लिया जाय।'

'जरूर जरूर।' आफताब ने फौरन रैकट मगवाया और एक खुद लिया और दूसरा उदय को देते हुए बोले, 'आप मेरा रैकट लीजिये। बहुत ही उमदा रैकट है।' उदय ने लिया। रैकट पुराना था। मगर पकड़ने वाले मुट्ठे पर नया चमड़ा चढ़ा था।

रात के ग्यारह बजे अगर कोई उदय को नसीर खाँ के मकान में मदाखलत बेजा बनीयत सरका रैकट करते देखता तो आश्चर्य्यान्वित होता परन्तु मानसिंह ने ताज्जुब नही माना।

सुबह उदय भी नसीर साहब के घर पहुँचा और पुलिस कप्तान भी। नसीर हसे। बोले, 'उदय तुम्हें इस मामले में लपेट कर मैंने वही काम किया मानो नहर काट कर अपने घर घड़ियाल ले आया। रैकट चोरी जाते ही मैं समझ गया था कि मैं बच नहीं सकता। मगर इतनी जल्द आप दोनों के आ धमकने की उम्मीद न थी। मैं जुर्म से एकबाल करता हूँ। मेरी लड़की बेगुनाह है। मैंने ही रैकट से आफताब का कत्ल, उसे अपनी लड़की के सुख की राह से हटाने के लिए किया था। उस दिन तीन ही आदमी रहने से कारण सिर्फ मैं और आफताब 'सिंगिल' खेल रहे थे। अमीना थोड़ी देर रुक कर लौट रही थी कि कराहने की आवाज सुनकर दौड़ आई। उसी के जरिये खून आलूद रैकट मैंने भिजवा दिया। शमशाद मियाँ ने अमीना को घबड़ाई हुई खून आलूद रैकट लेकर घर भागते देखकर गलत समझा और इसीं लिए चुपकी साध लिया। मैंने भी मामला गड़बड़ देखकर शमशाद पर ही सब कुछ ढकेला। आखिरकार जान सब को प्यारी होती है। मैंने एक और गलती की थी। वह है रैकट को जाया न करना। पुराने रैकट के मोह में मैंने सुबूत रख छोड़ा था।.....मुझसे शादी के बारे में बात चीत हुई और आफताब के जिद से मेरा दिमाग खराब हो गया था।.....खैर मुझे इस दुःख में सिर्फ इस बात की खुशी है कि अपने पाप का फल लेकर मैं फाँसी पर लटकूँगा। मेरी बच्ची तो सुख की जिन्दगी बसर करेगी।

कलई करना सीखिये

लेखिका, कु० विष्णुकुमारी वर्मा

आज-कल बाजारों में रांगे के स्थान पर जस्ते की कलई की जाने लगी है। यह कलई जल्दी काली हो जाती है। और स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। और महँगी भी पड़ती है। अतएव आवश्यक है, गृहिणियाँ अपने हाथ से अपने बर्तनों पर कलई करें। यह काम कुछ मुश्किल नहीं।

कलई करने के सबसे पहिले निम्न सामान अपने पास रख लें। (१) रांगा, (२) नौसादर, (३) ठंडा पानी, (४) रुई, (५) अँगीठी में आग, (६) एक चिमटा या सन्सी, औसत १ छटांक रांगा लगभग ४-५ बर्तनों के लिये पर्याप्त है। नौसादर छटांक आध पाव अपने पास रखिये।

जिन बर्तनों पर आपको कलई करनी हो उन्हें खूब साफ कर लें। एक बर्तन में रांगा डाल कर अँगीठी पर चढ़ा दें, थोड़ी देर में आँच लगने पर रांगा गल जायगा, इस रांगे में अगर मैल दिखाई दे तो दो चुटकी नौसादर डाल दो। मैल कट कर अलग हो जायगी। अब इस बर्तन से रांगा निकाल लो। ठडा होने पर जम जायगा, यह शुद्ध हो जाता है। अब जिस बर्तन पर कलई करनी हो उसे आग पर चढ़ा दो। जब खूब गरम हो जाय तब रुई में नौसादर लगा कर बर्तन में फिरा दो, इसके बाद तत्काल रांगा के टुकड़ों को बर्तन पर छुवाइये। रांगा पिघलने लगेगा। ५-६ सेकण्ड बाद अब रुई से रांगा को बर्तन पर फैला दीजिये। तत्काल ही बर्तन चमचमाने लगेगा। अगर कलई ठीक न हुई हो तो इसी क्रिया को पुनः कीजिये। बड़े बर्तन में कई बार करना ही पड़ता है क्योंकि यह एक साथ गरम नहीं होता। जैसे ही कलई हो जाय बर्तन को तुरन्त ठडे पानी में डाल दीदिये।

नोट—यदि बर्तन कहीं खुरदरा रह जाय तो पुनः अँगीठी पर चढ़ा कर नौसादर लगाकर रुई फिरा कर कलई बराबर की जा सकती है।

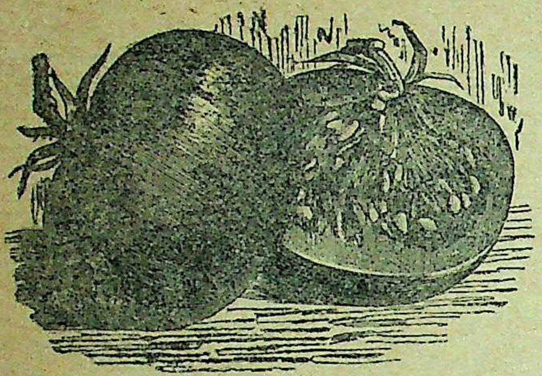

टमाटर

इस लेख में टमाटर का इतिहास, गुण-दोष और उसके विविध पकवानों की विधियाँ पढ़िये...।

लेखक, डाक्टर एम० पी० रञ्जन, एल० एम० पी०

[साहित्य भूषण, पुराणरत्न, हिन्दी प्रेमी, गीता-पुराण-व्याकरण शास्त्री, सञ्चालक–आरोग्य मन्दिर'
एवम् 'रञ्जन हेल्थ क्लिनिक' सम्पादक–'कुशवाहा क्षत्रिय बन्धु', लहेरिया सराय]

परिचय

हमारे देश में अत्यन्त प्रचलित शाक-भाजियों में टमाटर का स्थान आज-कल प्रमुख है। सच पूछिये तो इन दिनों शाक-भाजियों में आलू के बाद इसी का नम्बर आता है। अब तो इसका प्रचार ससार के कोने-कोने में हो गया है। विशेष कर अमेरिका में तो यह खाद्य-रूप में ही व्यवहृत होता है। चूँकि हमारे देश के प्रायः सभी व्यक्ति अब इसके बारे में कुछ न कुछ जानकारी रखते हैं, अतः इस सम्बन्ध में विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

निःसन्देह अन्य तरकारियों की अपेक्षा हमारे देश के लिये यह अभी भी एक नयी फसल समझी जाती है। चूँकि इसका पौधा बैंगन की भाँति होता है, अतः इसे हम बोल-चाल की भाषा में 'विलायती बैंगन' कहते हैं। अँग्रेजी में इसे 'टोमैटो' कहते हैं जिसका अपभ्रंश 'टमाटर' हो गया है। इसकी गणना फल और तरकारी दोनों में की जाती है। आरम्भ में फल हरे-हरे होते हैं जो आगे चल कर पकने पर लाल-लाल हो जाते हैं।

वस्तुतः यह एक अत्यन्त गुणकारी पदार्थ है। पूर्व मिथ्या धारणा के सर्वथा विपरीत यह एक परम निर्दोष भोज्य फल है जिसके निरन्तर सेवन से भी किसी रोग के सम्प्राप्ति की आशङ्का नहीं रहती। अपनी सुन्दर और आकर्षक आकृति, विशेष महक तथा विटामिनों का प्रचुर भण्डार होने के नाते अब तो यह बहुत ही लोक-प्रिय वस्तु बन गया है फिर भी कारण विशेष से यह निरामिषों को नापसन्द है।

इतिहास

खाद्य जगत में सच पूछिये तो इसकी उत्पत्ति एवम् विकास का इतिहास बड़ा ही मनोरञ्जक है। प्राचीन मैक्सिकन इसे बड़े चाव से खाते थे। 'टोमाटो' नाम उन्हीं का दिया है।

वस्तुतः इसका प्रचार काल अनुमानतः ४०० वर्षों से भी कम है। सर्व प्रथम अमेरिका के उष्ण प्रदेशों में, मक्का के खेतों में इसकी खेती की जाती थी। सन् १७८१ ईसवी में टमाटर वहाँ पहले पहल पैदा किया गया। सन् १७८८–८६ ईसवी के स्वाधीनता संग्राम में इसका प्रथम व्यवहार सेना के राशन के रूप में किया गया। उसके पचास वर्ष बाद तो इसका प्रचार आहार रूप में व्यापक रूप से होने लगा। इसके प्रचार की पराकाष्ठा सन् १८१२ ईसवी में हुई।

सन् १६३८ ई० में सर वाल्टर रैले को यह फल अमेरिका में रौलको नामक द्वीप में मिला था।

वहाँ के निवासी इसे जहरीली चीज समझते थे किन्तु दक्षिण अमेरिका में इसका प्रचलन उन दिनों भी था। सर वाल्टर रैले ने वहाँ से लौटने पर तत्कालीन इङ्गलैण्ड की महारानी एलिजाबेथ को टमाटरों का उपहार बड़े अभिमान के साथ भेंट किया था।

टामस वैफर्सन (सन् १७४३–१८२६ ई०) ने इसे वर्जीनिया में पैदा किया। अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में समस्त इटली में इसकी खेती व्यापक रूप से की जाने लगी।

भारतवर्ष में आज से ९० वर्ष पूर्व इसका प्रचार विदेशियों द्वारा हुआ। कैंसर और उपदंश-जनक होने की मिथ्या धारणा के कारण पहले लोग इसका व्यवहार नहीं करते थे परन्तु शीघ्र ही यह भ्रम निर्मूल सिद्ध हुआ। फलतः इसका समावेश भी धीरे-धीरे भोज्य पदार्थों में किया जाने लगा। विगत २५ वर्षों से इसका प्रचलन हमारे देश में अधिक बढ़ गया है।

इस सम्बन्ध में एक बात स्मरणीय है कि सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब यह योरोप में लाया गया था तो खाने के बजाय लोग इसे शोभा और सुन्दरता की भावना से बागों में लगाते थे। उन दिनों इसका नाम उन्होंने प्यार से 'लव एपेल' दे रक्खा था। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक इसका उपयोग योरोप में सिर्फ सजावट के लिये होता था।

रासायनिक विश्लेषण

१—पानी	९२.८ प्रतिशत
२—कार्बोहाइड्रेट	४.५ ,,
३—प्रोटीन	१.९ ,,
४—खनिज पदार्थ	०.७ ,,
५—स्टार्च	०.०१ ,,
६—कैल्शियम	०.०२ ,,
७—फास्फोरस	०.०४ ,,
८—लोहा	२.४ मिलिग्राम
९—विटामिन 'ए'	३२० प्र० मि०
१०— ,, 'बी'	२३ ,, ,,
११— ,, 'सी'	३१ ,, ,,
१२—साइट्रिक एसिड	प्रचुर मात्रा में
१३—आक्जेलिक एसिड	नाम मात्र।
१४—सैलिक एसिड	,, ,,

विशेषता

मानव शरीर के पालन-पोषण एवम् रक्षा के लिये जिन आवश्यक तत्वों की आवश्यकता रहती है, प्रायः वे सभी तत्व इसमें पाये जाते हैं। अकेले इस फल में ही पाँच प्रकार के विटामिन (खाद्योज) मिलते हैं। विटामिन ए०, बी० और सी० का तो यह प्रचुर भण्डार है ही। इसका खट्टापन 'आक्जेलिक एसिड' वाला नहीं बल्कि 'साइट्रिक एसिड' वाला होता है जो कि दाँतों और मसूढ़ों के लिये बड़ा हितकारी है। इसके अतिरिक्त इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें पाये जाने वाले विटामिन साधारण ताप से भी नष्ट नहीं होते। प्रयोगों से सिद्ध हुआ है कि जो विटामिन ताजे टमाटरों में मिलते हैं, वे ही सूखे तथा डब्बों में बन्द आचार, मुरब्बे चटनी या जेली के रूप में सुरक्षित भोज्य-पदार्थों में भी! अतः इसकी उपयोगिता निर्विवाद है! यहीं नहीं, लोहा, कैल्शियम, प्रोटीन, पोटाशियम, फास्फोरस, गन्धक, क्लोरिन एव मैग्नेशियम आदि खनिज लवण भी अधिक परिमाण में मिलते हैं।

गुण

स्वाद में यह कुछ खट्टा, मिठा, रुचिवर्धक, अग्निदीप, पाचक एव कान्तिप्रद है। यह थकावट मिटा कर भूख बढ़ाता और पाचन शक्ति को तीव्र करता है।

यह स्नायुओं का रसायन है। खून साफ करता है, कब्ज को मिटाता है तथा दांतों को मजबूत बनाता है। हल्का होने के कारण ज्वर, उपवास और मधुमेह में व्यवहृत होता है।

शरीर स्थूलता, उदर रोग, अतिसार, अपेडिसाइटिस (अन्त्र पुच्छ प्रदाह), बेरी-बेरी, गठिया,

सूखा रोग, हृदय दौर्बल्य, पाण्डु रोग, (रक्ताल्पता) एक्जिमा, यकृत एवं वृक्क रोगों में हितकारी है।

विशेष प्रयोग

(१) मधुमेह—विशेष लाभकारी। इस रोग में इसकी तुलना में कोई भी पदार्थ अधिक गुणकारी नहीं। मूत्र में शक्कर की मात्रा घटाने में अद्वितीय है।

(२) रक्तविकार—टमाटर के रस में ज्वर जन्य रक्तविकार एवं अन्य उपद्रवों को शान्त रखने की असीम शक्ति है। नियमित सेवन से शरीर में पैदा होने वाले हानिकारक पदार्थों की उत्पत्ति बन्द हो जाती है।

(३) नेत्र-विकार—बिटामिन 'ए' की पर्याप्त कमी से ही रतौंधी तथा अल्प-दृष्टि जैसे नेत्र रोगों का प्रादुर्भाव होता है किन्तु इसके सेवन से वे विकार शीघ्र दूर हो जाते हैं।

(४) चर्म-विकार—पके हुये लाल २ टमाटर का रस दो तोला दिन में चार बार देने से दांतों या मसूड़ों से खून बहना, त्वचा पर लाल २ चट्टों का उठना, मुंह का सूज जाना तथा 'स्कर्वी' रोग का समूल नाश हो जाता है। 'एक्जिमा' के लिए तो यह 'रामबाण' ही सिद्ध हुआ है।

(५) जीभ पर मैलापन या सफेदी छा जाने पर एक या दो टमाटर सेंधे नमक के साथ अवश्य सेवनीय है। बड़ा ही चमत्कादिक प्रभाव दिखलाता है।

दोष

बात प्रधान या बात-पित्त प्रधान व्यक्ति के लिये हानिकारक है। यह खुजली भी पैदा करता है। विशेष कर उन लोगों के लिये बड़ा हानि प्रद है जो इसे बेसन के साथ मिला कर अथवा तैल में छौंक कर पका कर खाते हैं। बवासीर से पीड़ित रोगियों के लिये भी यह कष्ट प्रद है।

सेवन-विधि

छोटे छोटे गोल टमाटर उतने गुण कारी नहीं होते, अतः टमाटर हमेशा बड़ी जाति के और सुडौल देख कर खरीदें।

उबाल कर खाने से इसमें निहित विटामिनों के नष्ट होने की सम्भावना बनी रहती है। अतः यथासम्भव कच्चे टमाटरों का उपयोग करना विशेष लाभप्रद है। अतः रोगियों को तो हमेशा लाल २ टमाटरों का ही ताजा रस देना चाहिए। कमजोर बच्चों को भी इसका रस बखूबी दिया जा सकता है।

विविध व्यंजन

(१) सलाद—(रायता) अच्छा ताजा लाल २ कतरा हुआ टमाटर, पालक साग का पत्ता, अदरख पातगोभी, गाजर, चुकन्दर तथा प्याज ले ले। बढ़िया से साफ धो, छील और काटकर एक में मिला ले। ऊपर से भुना, पिसा हुआ जीरा, नीबू और नमक का रस मिला दे। उम्दा रायता बन जायगा। बड़ा ही स्वादिष्ट होता है! प्रति दिन सुबह शाम तीन से चार छटांक तक, जाड़ों में अवश्य सेवन करे। इसे 'अद्भुत रसायन' समझिये।

(२) चटनी—बढ़िया लाल २ टमाटरों के बीज निकाल कर छोटे-छोटे टुकड़े कर ले। उपरान्त चाय वाली चम्मच से एक २ चम्मच शक्कर और पिसी हुई लाल मिर्च डालकर सिरके में छोड़ दे। 'बस' चटनी तैयार है।

(३) चटनी—सामग्री—टमाटर एक सेर; बड़े बड़े सेव आठ अदद, पिसी हुई मिर्च, काली मिर्च, नमक और चीनी दो दो चम्मच।

बिधि—टमाटरों और सेवों को धो, छील कर बारीक टुकड़े कतर ले। उन्हें किसी कांच के वर्तन में रख कर रात भर छोड़ दे। सुबह सबको मिला कर सिरका से भरे हुए बोतलों में रख दे।

(४) चटनी—सामग्री—अच्छे अच्छे लाल टमाटर चार सेर, गन्ने का रस पाव भर, चीनी

एक छटांक अदरख आधा सेर, बादाम आधा सेर, किशमिश पाव भर, इमली एक सेर, लाल मिर्च आध पाव, नमक और सिरका अन्दाज से।

विधि—टमाटरों को बढ़िया से धो कर दो दो टुकड़े कर ले। फिर पतीली में रख का बिना पानी डाले तेज आंच पर चढ़ा दें। खूब खौल जाने पर महीन पतले कपड़े में छान कर छिल्के फेंक दे और पतीली में रख कर मन्द आंच में पकाये। पानी जल कर गाढ़ा हो जाने पर बाकी सब चीजें मिला दे। सब मसालों और नमक को सिरके में पीस ले। इमली को भी थोड़े पानी में भिगो कर कपड़े में छान ले। उपरान्त सब को किसी कांच के बर्तन में रख कर एक महीने तक धूप में छोड़ दे। जब-तक उसे हिला दिया करे।

(५) जेली—सामग्री—टमाटर चार सेर खट्टे सेब आठ सेर, चीनी डेढ़ सेर; नीबू का रस तीन छटांक।

विधि—सेब और टमाटर को साफ से धो कर सुखा ले। उनके छोटे छोटे टुकड़े काट कर गुठली और बीज सावधानी से निकाल दे। बिना पानी डाले गूदे को पतीली में डाल कर मन्द आंच में पकाये। खूब गल जाने पर साफ महीन कपड़े में छान ले। चीनी की चाशनी तैयार कर नीबू का रस मिला दे। तैयार चाशनी में गूदा डाल कर बोतलों में भर ले। जेली तैयार है।

(६) पौष्टिक बर्फी—सामग्री—ताजे पके हुये लाल २ टमाटर एक सेर चीनी आधा सेर छोटी इलायची चार अदद मेवा इच्छानुसार।

विधि—किसी कलईदार बर्तन में, सफेद बारीक कपड़े में छिले हुए टमाटरों का रस निचोड़ ले। रस को चूल्हे पर औटा कर खोवा सा बना डाले। फिर चीनी की चाशनी में टमाटर का खोवा और मेवे इलायची डाल कर भली-भांति मिला दे। चूल्हे से उतारने पर, एक थाली में थोड़ा सा घी लगा कर चासनी मिश्रित सामग्री फैला दे। जमने पर इच्छानुसार टुकड़ों में काट ले।

(७) शीरा — सामग्री — बड़े आलू छ, पके हुए टमाटर चार, प्याज के टुकड़े दो, धनिया की हरी पत्ती थोड़ी सी, पिसी हुई धनिया आधी चम्मच, हल्दी एक चम्मच, घी नमक और हल्दी अन्दाज से।

विधि—टमाटरों को साफ पानी में धोकर दो २ टुकड़े कर ले। आलुओं को भी धो छील कर काट ले। मसालों को जरा सा पानी में पीस ले। घी में प्याज तल ले। लाल २ हो जाने पर मसाले डाल कर खूब चलाये। पक जाने पर आलू के साथ २ दो प्याले पानी और नमक अन्दाज से छोड़ दे। आलुओं के सीझ जाने पर टमाटर डाल दें। दस मिनट बाद उतार ले।

(८) काश्मीरी शीरा — समाग्री — टमाटर का गूदा दो प्याले (पतले २ टुकड़े किये हुए) प्याज ५, हरी मिर्च ६ (पतले २ कटे हुए) बेसन आधी छटांक घी आधी छटांक नमक अन्दाज से।

विधि—प्याज को घी में लाल होने तक तल ले। बाद में टमाटर का गूदा मिला कर नमक और मिर्च छोड़ दे। गूदा पक जाने पर आध प्याले ठंढे पानी में बेसन घोल कर डाल दे। अच्छी तरह चलाते रहे। पूरा पक जाने पर उतार ले बस, काश्मीरी शीरा तैयार है।

उपसंहार

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि टमाटर एक अत्यन्त उपयोगी एवं सस्ता खाद्य पदार्थ है। सबके लिये समान रुप से हितकारी होने के कारण इसे रसोई में स्थान अवश्य मिलना चाहिए।

रूमालों पर काढ़िये !

ये फूल एक या सब एक साथ रूमालों पर काढ़िये।

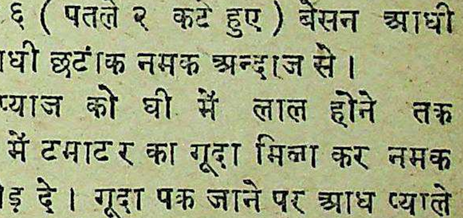

शकुन का ब्याह

लेखक, श्री कैलाश कल्पित

[१]

'चन्दर के विवाह में ४०००) रु० से तो कम मैं ले ही नहीं सकता। लड़का कोई हाई स्कूल है क्या ? एम० ए० तक पढ़ाया है मैंने। गाढ़े पसीने की कमाई व्यय की गयी है उस पर। मैंने तो कह दिया ४०००) रु० नगद और बाकी सामान। हाँ सामान के लिये मुझे कोई नियुक्ति नहीं देनी है। संक्षेप में यों समझ लीजिये, विवाह 'स्टैन्डर्ड' का होना चाहिए। मैं ज्यादा कुछ नहीं कहता—एक सोफा सेट, टेबिल फैन, एक डबल बेड, एक या दो टेबिल लैम्प, एक रैले सायकिल, एलेक्ट्रिक कुकर और आयरन-तो खैर होना ही चाहिए। रेडियो आप जो चाहें सो खरीद कर दीजिये, हाँ फिलिप्स या हिज मास्टर वायस रहे तो अच्छा है और मैं आपसे कुछ नहीं चाहता।

'आधुनिक युग में आप यह जानिये कि रोलेक्स रिस्ट वाच और शेफर्स पेन तो पढ़े-लिखे घरों के लिये आवश्यक वस्तु हैं, सो उसके लिये भी कहा जाय यह मुझे और आपको दोनों को शोभा नहीं देता। बाकी आप स्वयम् समझ सकते हैं। शादी विवाह में एक आधे दर्जन सूट तो भेंट-लोग करते ही हैं। गर्मी का मौसम है सिल्केन सूट अच्छे रहेंगे और अब मैं आपसे क्या कहूँ ? मुझे तो लम्बी-चौड़ी बातें करनी आती नहीं है, मुन्शी जी। आप तो जानते हैं। करार की शादी से मैं नफरत करता हूँ, यह तो मोटा हिसाब है, बता दिया। आपने इतनी जिद पकड़ी, नहीं तो मैं तो इतनी किसी से बात भी नहीं करता। लोग तो टके में मुर्गी हलाल करना चाहते हैं और मुँह बाये चले आते हैं।'

'वाह ठाकुर साहब वाह, आपने भी कमाल कर दिया, ऐसी ऐसी वस्तुएँ मांगी हैं जिनको इस १५०) रु० के मुन्शी के बाप ने भी नहीं देखी हैं। भला बतलाइये ४०००) रु० कहाँ से हम कर सकते हैं। जिन्दगी भर की कमाई एक ही सन्तान को दे देंगे तो फिर आगे क्या करेंगे ?'

'देखिये मुन्शी जी आप फिर वही हीला-हवाला करने लगे। मैंने तो पहले दिन ही आपसे कह दिया था कि ४०००) रुपिये से कम बात करनी हो तो फिर कष्ट न करियेगा। ठाकुर साहब तो मुझे अभी से आप कहने लगे किन्तु उचित माँग भी देना नहीं चाहते।'

'चाहता तो था देना और यही सोच कर आज चौथी बार आपके पास आया भी था; लेकिन आपने तो आज और पैर फैला दिया।'

'क्या कहा, पैर फैला दिया ? जरा कायदे से बात करिये। लड़के वाला हूँ ! लड़के वाला !! किसी के दरवाजे पर धरना देने थोड़ी जाता हूँ।'

'माफ करियेगा, आपको मेरे शब्द यदि बुरे लगे हों तो मैं वापस लेता हूँ, किन्तु ठाकुर साहब अब आप दया करें। ४०००) रु० की बात तो मैं पूरी करने को तैयार हूँ। मैं ४०००) रु० की शादी करूँगा। आप जैसे भी कहें मैं चार हजार आपको दे दूँ। लोटा, थाली बेंच कर दूँगा। बीमे की पालसी लिख दूँगा। किन्तु ४ हजार से ऊपर चाहियेगा तो पेन्शन बेचने की नौबत आ जायगी।'

'कोई हर्ज नहीं...।'

'ठाकुर साहब ! मेरी इज्जत उतरवाने पर आप लगे हैं क्या ? लड़की का बाप होने के अर्थ यह नहीं हैं कि मैं अपना गला अपने हाथ से घोंट लूँ। चार हजार रुपिये की बात थी सो तो मैं पूरी कर रहा हूँ, लेकिन यह सोफा सेट, यह पङ्खा, यह रेडियो और यह सायकिल फिर घड़ी कहाँ से दी

जाय। रोटी पर परथन सबको शोभा देता है किन्तु आप पूड़ी पर परथन चाहते हैं। आपने पहले खुल कर इतनी सब बातें क्यों नहीं कह दी थीं। आज मैं कमर कस कर और चारों तरफ से मुख मोड़कर अपनी लड़की के सुख के लिये जब आपकी माँग पूरी करने आया हूँ तो आप तीन हजार का सामान अलग से माँग रहे हैं। क्या यही आपका बड़प्पन है। एम० ए० तक की पढ़ाई का खर्च सूद ब्याज सहित आप वसूल करना चाहते हैं और मैंने अपनी लड़की को इन्टरमीजियट करा दिया है सो उसका कोई मूल्य ही नहीं। मैं किससे इसका बदला लूँ। मुझे लड़की के पालने में जो व्यय करना पड़ा है उस के बदले क्या मिलेगा ?'...

'मिलेगा पढ़ा-लिखा नव जवान दामाद, कन्या का वर। जीवन-उद्धारक !'...

'अर्थात् कन्या को ही वर की आवश्यकता है। वर को तो कन्या की आवश्यकता है ही नहीं। मानों ! ६०००) रुपये का एक लड़का खरीदूँ !!'

'मुन्शी जी' वकील साहब रोष में आते हुए बोले—'आप लड़ने आये हैं या लड़की की शादी करने ? मुझे आपकी दीक्षा नहीं लेनी है। आपको मेरी शर्तें स्वीकार नहीं तो अन्य कहीं जाइये।'

'मुझे नहीं स्वीकार है, मेरे बूते के बाहर है वकील साहब ! मुझे धोखा हो गया था, भूले से ठाकुर साहब बना बैठा था। जाता हूँ अभी जाता हूँ। नमस्ते।'

[२]

'शकुन की माँ, मैंने कहा कुछ सुना तुमने ?'

'क्या हुआ ?'

'हुआ क्या, इस लौंडिया की तकदीर ही न जाने कैसी है। जहाँ जाता हूँ सफलता दिखाई ही नहीं देती। वकील साहब ने आज जवाब दे दिया है। चार हजार की गठरी देने को कह दिया तो ३०००) रुपये का सामान अलग से माँगने लगे।'

'यह बात, लड़के वालों के जैसे मिजाज ही नहीं मिलते। लड़के जैसा लड़का होता तो बात भी थी। हड्डी पर मांस नहीं। चेहरे पर आँख नहीं। चश्मा लगाता है। रङ्ग है तो वह भी साँवला। किन्तु मिजाज आसमान पर हैं। न करें तो, न करें क्या धरती पर लड़के ही नहीं हैं। मेरी शकुन को देखो, गुलाब-सी खिली धरी है। पृथ्वी का स्वर्ग है। जिस घर जायगी लक्ष्मी आरती उतारेगी उस घर की।'

'क्यों नहीं, पहला थाल तो मैं ही दूंगा, लेकिन जब वर मिले तब तो। बीसियों घर झाँक आया हूँ, सीधे मुँह कोई बात ही नहीं करता। लड़की की जात है दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती जाती है। कल को फिर इसके उम्र के लड़के ही न मिलेंगे।'

'भगवान जब सुनेंगे तभी काम बनेगा। संस्कार जब होगा तब होगा। चिन्ता की क्या बात है।'

'हाँ संस्कार होगा तो लड़का लड़की से खूँटी में बछड़े की तरह अलादीन के चिराग की मदद से बँध जायगा।'

'आप तो झुँझलाये जाते हैं, धैर्य्य से काम लीजिये। शरबत बनाये देती हूँ, पीकर कहीं घूम आइये। तबीयत बदल जायगी।'

'लाओ, बना दो। यह लड़के वाले यों अकड़ते हैं मानो... मेरे तो लड़का है ही नहीं। बब्बू को बड़ा तो होने दो, लोगों को नाकों चने न चबवा दिये तो नाम नहीं। पूरा बदला लूँगा...।'

'किन्तु किससे बाबू जी...।'

'कौन शकुन ! तुम !! तुम कहाँ से बोल पड़ीं ? दस बार समझाया, बड़ों के बीच में नहीं बोलते। आजकल की लड़कियों को लज्जा तो रह ही नहीं गयी है। चटर-चटर बोले जाती हैं ...।'

'आप भी बब्बू के विवाह में किसी मुन्शी की नाक रगड़वा लीजियेगा और वकील साहब भी कहीं नाक रगड़ जाने का बदला आपसे ले रहे हैं।'

'क्या मुश्किल है, लड़कियाँ पढ़-लिख कर पड़ाके की तरह बोलने लगती हैं। एफ० ए० तक पढ़ क्या लिया है, चुप रहना जानती ही नहीं। यह भी क्या प्रोफेसर का क्लास है, खबरदार जो अब बोली।'

शकुन्तला चुपचाप अपने भाभी के कमरे में खिसक गयी। शकुन्तला की माँ शरबत का गिलास भर कर लायी और मुन्शी जी ने पूरा गिलास गले के नीचे उतारते हुए कहा—'जाऊँ जरा घूम ही आऊँ।'

[२]

'भाभी, सुनी तुमने बाबू जी की बात, वहाँ का क्रोध मुझ पर उतारने लगे।'

'क्या करें वे भी। परेशान रहते हैं। कहीं विवाह तय ही नहीं होता। कोई चित्रलोक की परी चाहता है तो कोई कुबेर का पेड़। दुनियाँ अपने दाँव में लगी है। दूसरे के आशय पर स्वार्थान्ध हो जाती है।'

'लेकिन मैं तो कहती हूँ कि मैं विवाह ही नहीं करूँगी। मैं अपने बाबू जी की शान में बट्टा नहीं लगने देना चाहती।'

'भावुक बनने से वास्तविक जीवन की समस्याएँ नहीं हल होतीं बीबी रानी।' भाभी ने समझाते हुये कहा और फिर चुटकी लेती हुई बोली—'हृदय में बसन्तागमन की कोयल जो बोल रही है वह क्या बौर से ही सन्तुष्ट हो सकती है। जरा अपने सीने पर तो हाथ रक्खो।'

'हटिये भी! आप भी मजाक करती हैं। मुझे आवश्यकता ही क्या है। इस साल टीचर्स ट्रेनिङ्ग सर्टीफिकेट ले लूँगी। किसी न किसी बालिका विद्यालय में अध्यापिका हो जाऊँगी।'

'तुम्हारी व्यवस्था से जग चले तो सृष्टि में विराम ही लग जाये। प्रकृति को कोई जीत सका है? कितने दिन काट सकती हो ऐसे? बड़ी कठिन बात है। वाल्मीक और शङ्कर जैसे तपस्वी कामदेव के आगे नत हो गये।'

'पुरुषों की बात और है किन्तु...!'

'किन्तु नारियों को कौन ठौर है? मक्कार और स्वार्थी पुरुष तुम्हीं को उभाड़ेंगे और तुम्हीं पर उँगली उठायेंगे।'

'हो सकता है, किन्तु भाभी जी! यह लड़के और लड़के वालों का गर्व मैं सहन नहीं कर सकती, सबेरे से शाम तक लड़कियों की ठेला गाड़ी के चारों ओर चक्कर लगाने वाले, स्कूलों में नाम रहित प्रेम-पत्र लिखने वाले, दूकानों में अवसर पाकर मीठी-मीठी बातें और फिर व्यङ्ग कसने वाले, फिल्म अभिनेत्रियों के चित्र पलंग के चारों ओर जड़ने वाले, सिनेमा में हीरोइन की अदाओं पर मर कर ब्लैक से टिकट खरीदने वाले नव जवान विवाह बन्धन के समय ऐसे मिजाज दिखावें, मैं तो सहन नहीं कर सकती। भाभी, सच मानों चन्दर जैसे बारह लड़कों को मैं अपने आँचल में कभी की बाँध चुकी होती, यदि मैं चाहती। आज मेरा यह उपहास! मेरे बाबू जी का यह अनादर! कैसे सहा जाय? मैंने चन्दर को देखा है। एक रत्ती मुझे नहीं सुहाता। क्रिश्चियन कालिज में मुझसे तीन कक्षा आगे पढ़ता था। मैं नवें में पढ़ती थी और वह १२वें में।'

'यह बात है, तो तुमने उसे देखा है।' भाभी ने फिर चुटकी लेते हुए कहा—'मन मन भावे, मूड़ हिलावे। राधा जी के हृदय में कृष्ण-सा साँवरा बिराजमान है। मगर अब वह सुनता ही नहीं तो!'

'भाभी! मेरा तिरस्कार मत करो, मेरा मजाक मत उड़ाओ; मैं सच कहती हूँ। बाबू जी के कारण मैं चुप थी। सोचा था, उनको मेरी ओर से . किन्तु नहीं, अब नहीं। अब मैं अपना विवाह नहीं करूँगी।'

'और करोगी तो फिर उससे जो मेनका की भाँति तुम्हारे आगे अपने को समर्पण करेगा।'

शकुन्तला मुस्करा उठी और बोली—हूँ, हूँ, हूँ! मैं किसी से कम हूँ क्या।'

शकुन्तला भाभी के कमरे से भाग गई और भाभी हस पड़ीं।

[४]

'पापा जी की बात मुझे एक दम अच्छी नहीं लगती। जिस दिन से मैंने एम० ए० कर लिया है, शादी-शादी की रट लगा रक्खी है।'

'तो बेटा शादी तो करनी ही है। आज नहीं तो कल। दुनिया की चलन है। मैं भी बुड्ढी हो चली हूँ। जीवन भर चूल्हा फूँकते दिन कटे हैं। बहू आ जायेगी तो कुछ मुझे भी सहारा मिल जायगा।'

'लेकिन पापा जी तो मुझे नीलाम पर चढ़ाये बैठे हैं। जो भी आता है उससे रुपिये की ही बात करते हैं। मैं बिलकुल अयोग्य हूँ क्या, जो ससुराल के पैसे से जीवन काटूँगा। मेरे बाहुबल है और बुद्धि है। पैसा मैं पैदा कर सकता हूँ। पापा जी ने लड़की के विषय में आज तक किसी से बात ही नहीं की। काली-पीली, लूली-लँगड़ी जैसी भी हो उनको कोई मतलब नहीं, वे तो हजारों के चक्कर में पड़े हैं और मैं कहे देता हूँ कि मेरी शादी १) रुपये पर होगी बस।'

'एक रुपये पर ?'

'हाँ केवल एक रुपये पर। वह रुपिया चाहे बाबू जी लें और चाहे पंडित की मेहनत हो।'

'यह तू क्या कह रहा है ? बिरादरी भर में हसी करायेगा क्या ? समाज तुझे भला आदर देगा ?'

'समाज तो अपनी धोती में ही छेद कर अपनी नग्नता पर हँसता और रोता है। एक ओर यही समाज के ठेकेदार किसी की इज्जत उतरवा कर अपनी शोभा बढ़ाते हैं और दूसरी ओर जब अपनी इज्जत उतरने का सवाल आता है तो मञ्च पर खड़े होकर दहेज प्रथा के विरोध में आदर्श बनते हैं। माता जी ! मेरा मस्तिष्क प्रगतिशील विचारों से पूर्ण और रूढ़िवाद से अछूता है। ताली सदैव दोनों हाथों से बजती है। स्त्री को यदि पुरुष की आवश्यकता है तो पुरुष को भी स्त्री की आवश्यकता है। समाज, मानव समाज ही नहीं अखिल विश्व का सम्पूर्ण प्राणी समाज एक नहीं दो प्राणियों के सङ्गम से ही जीवित है।'

'चन्दर यह पंडिताई की बातें युनिवर्सिटी के के दर्जे में बैठ कर किया करो। मुझे अच्छा नहीं लगता। रही लड़की देखने की बात सो मैं मानती हूँ। मेरे घर में सुशीला बहू ही आयेगी। मैंने तो तुम्हारे पापा जी से कह दिया था कि अबकी जब मुन्शी रामलखन जी आवें तो विवाह की स्वीकृत दे देना, क्योंकि उनकी लड़की के विषय में मैंने सुना था कि वह देखने में अच्छी है किन्तु कल उन्होंने उन्हें जवाब दे दिया। बेचारे ४०००) रुपये दे रहे थे। ३०००) रुपये का सामान जब तुम्हारे पापा ने माँगा तो वे विवश होकर चल दिये।'

'केवल रुपये के पीछे उन्हें लौटा दिया। मैं पापा जी की यह बातें नहीं सहन कर सकता। माता जी ! मैं बाहर जाता हूँ पापा जी से कह देना कि चन्दर अब अपना विवाह मुन्शी जी की लड़की से ही करेगा।'

'हाँ क्यों नहीं।'- चन्दर की माता जी मुस्कराते हुए धीरे से बोलीं—'सुन लिया है न ! लड़की सुन्दर है।'

[५]

'शकुन की माँ, कहाँ हो तुम।'

'कहो क्या कह रहे हो।'

'कह क्या रहा हूँ, वही शकुन के विवाह की बात। जरा कमरे से बाहर तो निकलो। आज बड़ी अच्छी खबर लाया हूँ।'

शकुन की माँ खिले हुये चेहरे से आकर दालान में पड़ी चौकी पर बैठ गई और बोलीं—'कहीं तय हो गई क्या।'

'नहीं। लेकिन अशोक, तुम्हारा भतीजा कहता है कि वह वकील साहब के बहनोई को बड़ी अच्छी तरह से जानता है। वह उनका पूरा जोर वकील साहब पर डलवा सकता है। अशोक की बहू को

बुलाओ कहाँ है वह । शकुन अपनी भाभी को भेजना जरा ।'

शकुन की भाभी तुरन्त आ गई । शकुन की माँ ने पूछा; 'तुम लोग उनके बहनोई को कैसे जानती हो ?'

'बुआ जी वह तो इनके सहपाठी रह चुके हैं । हम लोगों को अभी तक पता ही नहीं था कि वकील साहब के प्रकाश जी बहनोई हैं । कल कानपुर से जब ये आये तो मुझसे बोले शकुन का विवाह वकील साहब के यहाँ मैं कराऊँगा । मैंने पूछा कैसे ? तो बोले प्रकाश जी के वकील साहब साले लगते है और प्रकाश से जो मैं कहूँगा सो वह टाल नहीं सकता ।'

'यहीं बात तो मुझसे अभी अशोक ने बाहर कही है ।' मुन्शी रामलखन जी बोले, 'बात बननी है तो यों बनती है ।

'किन्तु बुआ जी ।'

'हाँ ।'

'शकुन्तला बीबी ने तो कसम खा ली है कि वह अब बड़े आदमियों के लड़कों से विवाह ही नहीं करेंगी ।'

'यह कैसी बात'

'ऐसी ही बात है । कल शाम को ही तो उन्हीं ने कहा कि वह किसी चपरासी से विवाह कर लेगी किन्तु धन के लोभी और दम्भी पुरुष से बात नहीं करेगी ।'

'उसका मस्तिष्क खराब हो गया है ।' मुन्शी जी बोले । 'दुनिया में कभी ऐसा भी हुआ है, पढ़ी लिखी लड़की गँवार को व्याही जाय ।'

'हानि ही क्या है इसमें' शकुन्तला सब के बीच में आती हुई तेजी से बोली' 'हजारों समझदार पुरुषों ने बड़ी से बड़ी डिग्रियाँ और पद लेकर गँवार से गँवार महिलाओं के साथ जीवन व्यतीत कर दिया और उन्हें अपना जैसा बना लिया अब यदि पढ़ी लिखी युवतियाँ अपने से ऊपर के कन्धे पर हाथ रखने की लालस न रख कर यदि अपने से सम अथवा पिछड़ों को अपनावें तो क्या हानि है ? मनुष्य सभ्य और समझदार होना चाहिये बस बाकी गृहस्थी की गाड़ी दोनों जने मिलकर सरलता से चला सकते हैं । क्या आवश्यकता है अपनी स्थिति से बाहर जाने की । जिन धनवानों के यहाँ मनुष्यता और शिक्षा का मूल्य नहीं, जिन्हें अपने सुख के आगे अपने सम्बन्धियों की कठिनाईयों की चिन्ता नहीं उनसे मोह करना व्यर्थ है ।'

'उफ शकुन' मुन्शी जी क्रोध में आते हुये बोले, तेरी इतनी हिम्मत । पढ़ लिख कर उद्दण्ड होना सीखा है अथवा और कुछ । हट जा मेरे सामने से मार बैठूँगा । बड़ी भारी प्रगतिगामी बनती है । तेरे बिचार तो हम लोगों की नाक न रहने देंगे ।

'बाबू क्षमा करियेगा । समय बदल रहा है अब मध्यम वर्ग की अधिक पढ़ी लिखी लड़कियों को कुछ ऐसे ही संस्कार करने पड़ेंगे । तभी समस्या हल होगी ।'

'टर टर बोले जाती है ।' मुन्शी जी को बहुत क्रोध आया और वे शकुन्तला को मारने दौड़े किन्तु इसी बीच अशोक बाहर से आ गया और उसने अपने फूफा जी को दौड़कर पकड़ लिया । शकुन्तल भाग कर कमरे में गई और फूट फूट कर रोने लगी । शकुन्तला की भाभी उसे मनाने चली गई और अशोक ने फूफा जी से क्रोध का कारण पूछा । मुन्शी बड़बड़ते हुये घर के बाहर चले गये और फिर अशोक की बुआ जी ने शकुन्तला की बात अशोक से बताई ।

अशोक ने कहा, 'कहती तो ठीक है कुछ अंश में । किन्तु अब उसकी बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं अभी वकील साहब के घर से ही आ रहा हूँ ।'

'वकील साहब के घर से ?'

'हाँ उन्हीं के घर से । प्रकाश जी का नाम लेना ही वहाँ परियाप्त हो गया । वकील साहब तो पहले मिले नहीं, उनका लड़का चन्दर ही मिला । मैंने धीरे धीरे उसी से बातें शुरू की । वह तो बड़ा सीधा है और लेने देने के बहुत विरुद्ध भी है । उसने तो बात की बात में अपनी अनुमति दे दी ।

मैं उससे बात कर ही रहा था कि वकील साहब आ गये। मैंने उठकर प्रणाम किया और फिर फूफा जी का हवाला देते हुये उनके बहनोई प्रकाश जी से अपना सम्पर्क और व्यवहार बताया इतनी ही बात के साथ मैंने यह भी कह दिया चन्दर जी ने तो अनुमति दे दी है। अब आप और...मेरा इतना कहना था कि वकील साहब बोले जब सुपुत्र ही हामी भर चुके हैं तो फिर ठीक ही है। अब तो मैं रुपिये पैसे के लिये भी नहीं कहता। मुन्शी जी से कहना, जितनी इच्छा हो दें। न इच्छा हो न दें लड़कों का जमाना है। अब बड़ों को पूछता ही कौन है।'

'वाह अशोक। वकील साहब को तो पानी की तरह तरल कर दिया।' बुआ बोलीं।

'मैंने नहीं बुआ जी, उनके लड़के ने। आज के नव जवान चाहें तो मिनट भर में यह दहेज की प्रथा और लड़कों का निलाम रुक सकता है'

'यही बात मेरी शकुन कह रही थी। उसने भी तो १२ दरजे पढ़ कर कुछ सीखा है। चलो बड़ा अच्छा हुआ। अब तो रुपये भी कम देने पड़ेंगे।'

'बस बुआ जी, यहीं पर तो बुराई की उत्पत्ति है। जितना आप दे सकती है और देने की तैयारी थीं उतना तो आप को देना चाहिए। सामर्थ्य भर करने से कोई कुछ नहीं बोलेगा किन्तु यदि उसमें चालाकी करी और फिर अपनी सन्तान से ही तो फिर दूसरा आप से अधिक चालाक बनेगा और फिर ससस्या जैसी की तैसी खड़ी हो जायगी।'

'ठीक, ठीक, ठीक मैं समझी। लो अशोक तुम्हारा मुँह मीठा करा दें, बुआ जी ने कहा और शकुन्तला को आवाज देकर कटोरदान से भैइया के लिए मिठाई लाने को कहा। शकुन्तला कमरे की खिड़की पर खड़ी सुनती रही किन्तु बाहर न निकली और थोड़ी देर में उसकी भाभी मिठाई की तश्तरी लिये बाहर आई। इसी क्षण मुन्शी जी भी बाहर से पुनः आते दिखाई दिये और शकुन्तला की माँ ने खिले हुये आनन से कहा,—'सुना आपने मेरा अशोक बाजी जीत लाया है। शकुन्तला का विवाह वकील साहब के यहाँ स्वीकार हो गया है। जाइये बजार से ४ सेर मिठाई ले आइये। आज यह लोग रात की गाड़ी से अपने घर जा रहे हैं।,

मुन्शी जी का चेहरा खिल उठा। दौड़ कर अशोक के पास आये और उसकी पीठ ठोकी। मुन्शी जी बाहर से ५ सेर मिठाई लाये और तीन सेर मिठाई अशोक के साथ में बाँधते हुये बोले, 'बेटा अब मैं सब बात पक्की कर लूँगा। वकील साहब से विवाह की तारीख आदि तय करने के बाद तुम्हें लिखूँगा। आना जरूर।'

'अवश्य आऊँगा फूफा जी, अच्छा प्रणाम।'

'जीते रहो बेटा, बुआ और फूफा ने साथ साथ आशीर्वाद दिया।' ——

किसानों की गृहणियों को ट्रेनिंग

देहाती क्षेत्रों में महिलाओं को विशेषतया किसानों की गृहणियों को गृह-विज्ञान तथा देहाती जीवन के अन्य पहलुओं के सम्बन्ध में ट्रेनिंग देने के लिये केन्द्रीय सरकार देश के २० राज्यों में वर्तमान २५ प्रसार प्रशिक्षण केन्द्रों में गृह अर्थशास्त्र विभागों की स्थापना करने का विचार कर रही है।

इस योजना के अनुसार प्रत्येक गृह अर्थशास्त्र विभागों में २० ग्रामीण महिलाओं को ग्रामीण गृह अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में ट्रेनिंग दी जायगी। २० महिलाओं को प्रशिक्षण काल में ५० रु० मासिक की छात्रवृत्ति मिलेगी।

गृह अर्थशास्त्र में भोजन बनाना तथा उसे सुरक्षित रखना, पोषक तत्वों की जानकारी, परिवार के लिये कपड़े तैयार करना, कपड़ों तथा विस्तरों आदि की रक्षा करना, जच्चा-बच्चा की देखभाल, स्वास्थ्य रक्षा सुधार, रोगियों की परिचर्या, गाँव की स्वच्छता समुन्नत गृह निर्माण, परिवार तथा गाँव का मनोरञ्जन, परिवार की आय का बुद्धिमानी पूर्वक व्यय, प्रौढ़ साक्षरता, साधारण दस्तकारियों तथा घरेलू उद्योग-धंधे आदि के विषय सम्मिलित हैं।

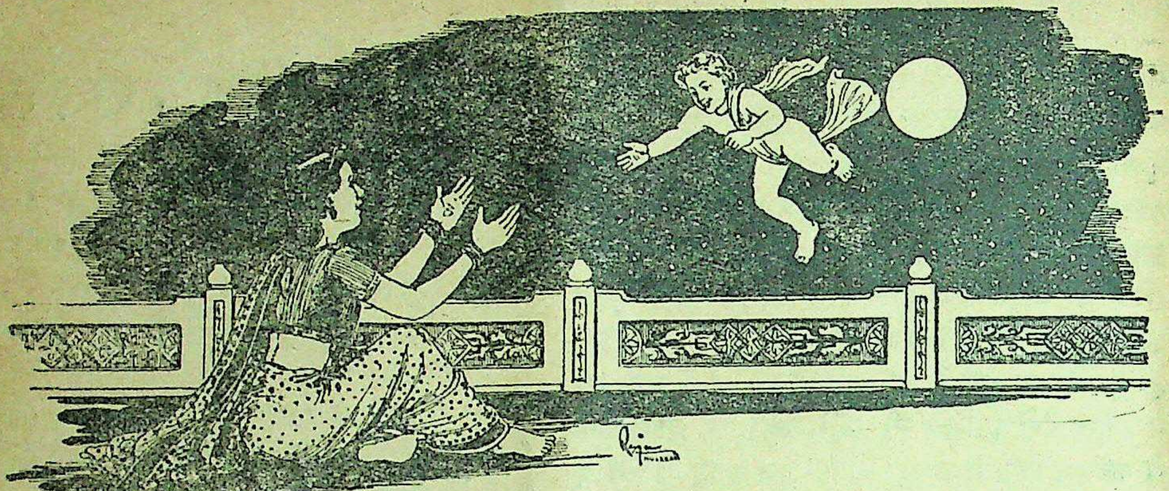

कष्ट रहित शिशु-जन्म

लेखिका, डाक्टर मिसेज चन्द्रावती

स्त्री-जीवन की सबसे बड़ी साध यह है कि शिशु-जन्म के समय उसे जरा भी कष्ट न हो। गर्भवती स्त्रियाँ मुझसे अक्सर सलाह लेती रहती हैं। जो प्रथम बार प्रसव के लिए आती हैं, पूछती हैं—'डाक्टरनी जी, मुझे बहुत कष्ट तो न होगा?' और उनके चेहरे से लगता है, जैसे वे फाँसी पर चढ़ने जा रही हों।

सच पूछिये तो उनका यह मनोभाव ही उन्हें अधिक कष्ट पहुँचाता है। इस मनोभाव के कारण पहले ही से वे अपने स्नायुओं को जकड़ लेती हैं जिससे उन्हें बहुत कष्ट होता है। यदि वे मन में ठान लें कि शिशु-जन्म एक प्राकृतिक घटना है और अपने शरीर को ढीला छोड़ दें तो उन्हें जरा भी कष्ट न हो।

एक बार मैं एक रानी को देखने गई। वह बड़ी नाजुक मिजाज थीं और बहुत डरी हुई थीं। मुझे देखने पर पहला सवाल यही किया—'क्यों डाक्टरनी साहबा, लोग कहते हैं, जिस स्त्री के बड़ी उम्र में सन्तान होती है उसे बहुत कष्ट होता है?'

मैंने कहा—'हाँ होता है पर आप चिन्ता न करें। मैं आपको कष्ट न होने दूँगी।'

'कैसे?' वे उत्सुकता से पूछ बैठीं।

मैंने कहा—'मैं आपको एक दवा पिला दूँगी। वह अद्भुत है। बिलकुल नयी ईजाद। खयालीपुर की महारानी को वह दवा पिलाई गई थी। उन्हें कुछ कष्ट नहीं हुआ।'

'अवश्य पिलाइये डाक्टरनी महोदया।' वे धीरज छोड़ती हुई बोलीं।

मैंने उन्हें तैयार करके १ चम्मच वह दवा पिला दी।

'बड़ी मीठी है।' वे बोलीं।

'जी!' मैंने कहा—'इसमें जादू का असर है और स्वाद भी।' फिर तो उन्होंने अपने आपको मेरे हवाले कर दिया। जैसा मैं आदेश देती गई वैसा वे करती गयीं। वे बड़ी पीर की प्रतीक्षा ही कर रही थीं कि उन्हें शिशु-जन्म हो गया।

दो घंटे बाद जब 'शिशु' नहला-धुला कर उन की बगल में लिटा दिया गया, उन्होंने कहा—

'अद्भुत दवा थी डाक्टरनी साहबा, भला इसका नाम व दाम क्या है ?'

मैंने उत्तर दिया—'नाम शरबत है और दाम: आप जो दे दें।'

वे मुस्कुराईं—'किस चीज का शरबत।'

'मैंने तो आपको ग्लूकोस का शरबत दिया था, पर मामूली चीनी का भी उतना ही लाभ करता और सादा पानी भी उतना ही लाभ करता।'

'तो आपने मुझे ठग लिया।' वे बोलीं।

'हाँ।' मैंने कहा। यदि आपसे मैं कहती—'बहुत कष्ट होगा तो आप घबरा जातीं। अपने स्नायुओं को जकड़ लेतीं और सचमुच कष्ट पातीं।'

दूसरे शिशु के जन्म के समय उन्होंने मुझे फिर बुलाया और इस बार उन्हें और भी कम कष्ट हुआ।

इस प्रकरण को यहाँ बिस्तार के साथ मैंने इसलिए लिखा कि गर्भिणी महिलाएँ इस तथ्य को समझ लें और प्रसव की पीड़ा को सहनीय समझ कर उसका स्वागत करें। उन्हें जरा भी कष्ट नहीं होगा।

प्रथम अवस्था

प्रसव प्रारम्भ होने के दो लक्षण हैं। एक लक्षण तो यह है कि लाल-सा स्राव बाहर आवेगा, और दूसरा लक्षण यह है कि प्रसव-वेदनाएँ आरम्भ हो जायँगी, सच्ची प्रसव वेदनाएँ एक निश्चित (१५ से ३० मिनट के) अन्तर से होती है। परन्तु ज्यों-ज्यों प्रसव समीप आता जाता है, इन वेदनाओं का अन्तर घटता जाता है यहाँ तक कि ये एक-एक दो-दो मिनट के अन्तर से होने लगती हैं।

वेदनाओं के प्रारम्भ में माता चाहे तो बैठ सकती है या लेट सकती है। परन्तु जब दर्द तेज रूप में होने लगे, तब माता को चाहिये कि बिस्तर पर लेट जाय, और टाँगो को सिकोड़ कर मोड़ ले। इस समय खड़े होने या बैठने की प्रथा खतरनाक है, इससे माता को चोट पहुँचने की सम्भावना है। साथ ही इस स्थिति में हम बच्चे को पूर्ण रूप से स्वच्छ नहीं रख सकते। हाँ, दर्दों के आरम्भ में, माता चाहे तो लेट कर सो सकती है (केवल रात में) और चाहे तो काम-काज भी करती रह सकती है। पीड़ा के बढ़ने में अक्सर (प्रथम शिशोत्पत्ति-में) १९ घण्टे तक लग जाते हैं। यदि इस समय में स्त्रियाँ अस्पतालों में चली जाया करें तो वहाँ उनकी अच्छी तरह सेहत हो सकती है, परन्तु हमारे देश में इसके बजाय दाइयाँ घर पर बुलाई जाती है, जो स्वयम् इसके बारे में अधिक ज्ञान नहीं रखतीं।

द्वितीय अवस्था

इसमें बच्चे का शिर गर्भाशय के फैले हुए मुख में आ अड़ता है। शिर के आगे तरल की थैली है। थैली तरल के दबाव को जब नहीं सह पाती तो फट जाती है और जिस समय यह थैली (जरायु) विदीर्ण होगी, उस समय पानी आयेगा, और साथ ही बच्चे का सिर बाहर आता दिखाई देगा। झिल्ली के फट जाने से जरा-सा रक्त भी निकलता है।

इस प्रकार सिर के बाहर निकलने पर एक दो मिनट के लिये माता को आराम मिल जायगा। इस थोड़े से विराम के समय में माँस-पेशियाँ ढीली बन जाती हैं और फिर अन्य शरीर बाहर आता है।

बच्चे के इस संसार में आते ही यह अवस्था समाप्त हो जाती है। यह पहली अवस्था से कहीं कम समय के लिये होती है, प्रथम शिशु में दो घन्टे लग जाते है।

द्वितीयावस्था में लेट रहना एक साधारण भूल है और इससे प्रसव में समय कम लगने के बजाय अधिक लगता है। इस समय में तो सख्त मेहनत करनी चाहिये और शारीरिक जोर लगाना चाहिए ताकि जल्दी से इस मुश्किल का सामना हो जाय। गहरी साँसें लेना भी लाभ कर है।

पीड़ा और औषधि

यह स्वभाविक ही है कि जिस स्त्री के प्रथम शिशु होने वाला है वह यह जानने के लिये चिन्तित रहती

है कि यह कार्य कितना पीड़ा कर होगा। इस प्रश्न का उत्तर सही-सही देना कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति को भिन्न प्रकार का श्रम करना पड़ता है, और हर एक के पीड़ा के प्रति भाव अलग-अलग होते हैं।

बहुत सी स्त्रियों के दर्द इस प्रकार उठते हैं कि पहले धीरे-धीरे पीठ की तरफ से शुरू होते हैं और आगे की ओर को घूमते हैं। ये किसी भी अन्तर से हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में बहुत सी औरतें यह चाहती हैं कि उन्हें कोई ऐसी दवा मिल जाय जिससे उन्हें नींद आ जाय और उनकी बेहोशी में ही प्रसव हो जाय; अन्य यह चाहती है कि दवा बिना बेहोशी बुलाये ही उन्हें आराम दे दे।

गैस और हवा

आज कल बहुत सी भिन्न-भिन्न प्रकार की दर्द दूर करने वाली दवाएँ मिलती है, इङ्गलैण्ड में गैस व हवा की मशीन सब से मशहूर है। इससे बेहोशी भी नहीं आती और आराम भी मिल जाता है। १९४६ से वहाँ की दाइयों के लिये यह अनिवार्य कर दिया गया है कि वे इसका प्रयोग सीखें। हमारे देश में भी इसका रिवाज थोड़ा-थोड़ा चल पड़ा है।

बहुत सी औरतें इसके इस्तेमाल से हिचकती हैं। उनके लिये मैं यह बता देना चाहती हूँ कि बड़े-बड़े डाक्टरों और इसको प्रयोग करने वालों की राय है कि यदि यह पहले से ही उचित रीति से प्रयोग में लाई जाय तो अवश्यमेव ८० फीसदी आराम मिल जाता है। यह उनका दावा है।

यह एक मजेदार बात है कि शिशु-जनन में दर्द को दूर करना केवल १०० वर्ष पूर्व से चला है, क्योंकि १८४७ में सिम्पसन ने प्रथम बार बेहोशी लाने वाली एक दवा का प्रयोग किया था।

आप को ऐसी खोज से क्या आशा हो सकती है। अवश्य ही यह तरीका ऐसा था जिससे बिल्कुल भी पीड़ा का अनुभव न होता; परन्तु इसे एक अच्छी चीज समझने के बजाय लोग इसका तिरस्कार करते थे और सिम्पसन पर कुदरत के नियमों का उल्लङ्घन करने का दोषारोपण करते थे।

एक बार महारानी विक्टोरिया के एक बच्चा होने को था। वह बेहोशी की दवा इस्तेमाल करने पर राजी हो गई। उन्हीं की देखा-देखी इसका रिवाज चल पड़ा, बर्ना इससे कहीं अधिक समय तक सिम्पसन के इस बड़े कार्य के प्रति लोगों की असहानुभूति रहती।

आधुनिक प्रसव-तत्परा स्त्री को अपने को धन्य समझना चाहिए क्योंकि वह पहले से कहीं अच्छे युग में रहती है। वर्तमान डाक्टरों के पास बहुत सी मार्के की औषधियां रहती है, परन्तु इस लेख को समाप्त करने के पूर्व पुनः यही कहूँगी कि किसी प्रकार की कृत्रिम सहायता के बिना भी बहुत अच्छी तरह आप इसे सहन कर सकती हैं। यह कदापि असम्भव नहीं है। इस क्रिया से घबड़ाना ही कष्टों को बढ़ाना है। इसे एक मामूली सी घटना समझ कर हँसी-खुशी दिन बिताना, चलते-फिरते रहना व्यायाम करना ही इसे सफलता पूर्वक सह लेने की कुन्जी है।

वर्तमान युग में किसी माता का शिशु-जन्म की वेदना के विषय में घबड़ाने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। यदि उसको वेदना होती है तो बहुत सन्तोष पूर्वक दूर की जा सकती है, परन्तु मैं समझती हूँ कि मैंने आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान और शिक्षा के आधार पर यह दिखा दिया है कि वह इसे असह्य होने से रोकने के लिये स्वयम् ही बहुत कुछ कर सकती है।

भूतपूर्व देशी नरेशों को निजी खर्च

लोक सभा में प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने बताया कि भूतपूर्व देशी नरेशों को निजी खर्च के लिये प्रतिवर्ष कुल ५ करोड़ ४० लाख रुपया दिया जाता है। कुछ नरेश अपने निजी खर्च की राशि का कुछ भाग स्वेच्छा से अपने राज्य के विकास-कार्यों में खर्च करने के लिये तैयार हो गये हैं। बहुतों ने राष्ट्रीय योजना ऋण में भी काफी रुपया दिया है। उन्होंने कहा कि ये मामले अभी विचाराधीन हैं।

श्री भारतीय एम० ए० प्रेमचन्द की पीढ़ी के कहानी लेखकों में हैं। इन के पात्र इतने सजीव होते हैं कि पढ़ने वालों के मन पर दीर्घ काल तक अंकित रहते हैं। यह आपकी नवीनतम कहानी है।

मुँह बनाना

लेखक, श्री भारतीय

[१]

मुँह बनाना भी एक कला है, और इस कला का अभ्यास मैंने एकान्त में, आइने के सामने किया। अपने अवकाश के समय अपने कमरे को बन्द कर आईने के सामने खड़े होकर मैं तरह-तरह का मुँह बनाया करता। कभी मर्कट मुख कभी घोटक, कभी बाराह, कभी व्याघ्र, कभी गर्दभ, कभी कुक्कुट, कभी काक चंचु, कभी कुछ, कभी कुछ।

कहने का तात्पर्य यह कि कुछ दिनों में ही मुझे अपने मुख पेशियों पर ऐसा अधिकार हो गया कि क्षण भर में जब चाहूँ जैसी आकृति का निर्माण कर दूँ और क्षण भर में एक मुद्रा से दूसरी मुद्रा में उसे परिवर्तित कर दूं। परन्तु इस कला को मैंने अपने ही तक गुप्त रखा। उसका अभ्यास पहले मैंने एकान्त के क्षणों को काटने के लिये आरम्भ किया था। अब उसमें कुशलता प्राप्त कर लेने पर उसका आनंन्द भी मैं ही एकान्त में लिया करता था। जब कभी अकेले बैठे-बैठे जी ऊबने लगता तो मैं आइने के सामने जा खड़ा होता और फिर तो भर पेट तरह-तरह के मुँह बनाता और फिर भर पेट हँसा करता। मुझे अब न कभी एकान्तवास खलता और न किसी हँसाने वाले मित्र की आवश्यकता ही पड़ती। ऐसी सुन्दर कला में पारंगत होकर मैं अपने मन ही मन फूला न समाता।

परन्तु एक दिन जाने कैसे भूल हो ही गयी और मैं उस कला के सार्वजनिक प्रदर्शन का दोषी बनते बनते बच गया। फिर तो उस दिन से मैंने कान पकड़ा कि अब इस कला का नाम भी न लूँगा। बात यों हुई थी—

एक दिन मैं संध्या के पूर्व ही सभ्य पुरुष की भाँति सुसज्जित होकर सिविल लाइन्स की ओर टहलता हुआ निकल गया। मेरी आदत है—पुस्तकों की दूकान पर जा डटना और फिर तरह-तरह की पत्रिकाओं और पुस्तकों को उलट-पुलट कर देखते रहना। इतने अल्प समय में अधिक से अधिक नवागन्तुक पुस्तकों से मैं परिचित होना चाहता हूँ कि सिवा उनके मुख पृष्ठ, चित्रों और विषय सूची से अधिक मेरी दृष्टि पटल पर आ ही नहीं सकते। लेखक वा शीर्षक से मुझे वास्ता नहीं रहता। हाँ यदि किसी प्रकाशन ने विवश किया तो उसे कभी-कभी खरीद लेता हूँ। उस दिन उस 'पुस्तकागार' में पहुँच मैं किस 'नवीना-पत्रिका' में कुछ लीन-सा

हो गया था। एकाएक मेरा ध्यान किसी के जूतों की खट-पट ने अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। देखा, सामना तो दिखाई न पड़ा। केवल पीछा ही दृष्टि के सामने आया। एक भद्र महिला की सुन्दर आपाद बाणी रेशमी साड़ी के भीतर से साँप की तरह बल खाती दिखाई पड़ी। वह भद्र महिला एक छोटी-सी प्यारी-प्यारी संकोच शील लड़की को घसीटती हुई दूकान की सीढ़ियों पर खट-खट चढ़ती एक तरफ खड़ी हो गई थी। मैंने फिर उधर से निगाह हटा कर पत्रिका के पृष्ठों पर गड़ा दी। किसी कहानी के 'चरम' पर मैं पहुँच रहा था। इसी बीच मेरे कानों में आवाज आयी—'माँ! माँ।'

मैंने देखा वह छोटी लड़की अपनी माँ के हाथ खीचती हुई कुछ कहना चाहती थी पर उसकी माँ दूकानदार से उलझी हुई थी। न जाने वह क्या चाहती थी। और न जाने दूकानदार उसे क्या नहीं दे पा रहा था। परन्तु वह अपनी खरीदारी में इतनी व्यस्त थी कि उस लड़की की ओर उसे ध्यान देने की फुर्सत न थी, उसने फिर आग्रह किया 'मां? माँ'।

मेरा ध्यान फिर उसकी ओर जा पड़ा। देखा तो उसके भोले भाले चेहरे पर कुछ खिजलाहट दिखाई पड़ी। पता नहीं कैसे क्या हुआ कि मेरा मुख तुरन्त 'काक चोंच' की आकृति का हो गया मुझे क्या इसका पता चलता। पता तो तब लगा जब उसका प्रतिविम्ब प्रतिक्रिया से प्रेरित उस बालिका के मुखड़े पर झलक पड़ा। मुझे अपने अपराध का ज्ञान तो हुआ पर अनायास ही मैंने दूसरी मुद्रा बना दी। संभवतः यह अष्टा वक्र मुद्रा थी। उस बालिका को अवश्य बुरा लगा। उसने अपनी 'ममी' की उगली पकड़ कर उसका ध्यान मेरे अपराध की ओर आकृष्ट किया। मैंने कानों से सुना—क्योंकि मैं उसके पूर्व ही पूर्ण सभ्य पुरुष बन कर अपनी पत्रिका में ध्यान मग्न हो चुका था।

माँ ने उस बच्ची को प्यार से झिड़कते हुए कहा—मैंने अपने कानों सुना—'ना, ना बुरी बात ऐसा नहीं कहना!'

उस बेचारी ने फिर दोहराया, 'माँ यह मुझे मुँह चिराता है।'

'चुप, चुप बुरी बात' माँ ने डाटा था। और मैंने कंखियों से आंख बचा कर देखा वह भद्र महिला फिर अपने खरीदारी में व्यस्त हो गई। और लड़की, अब अपने को निस्सहाय पाकर, मुझ से अकेले मोरचा लेने पर विवश हो गई।

उसने मेरी ओर देखा—मैंने उसकी ओर—पहले देखा देखी हुई आँखों से शरारत की इशारे बाजी, एकाएक मैंने मकाऊँ की मुद्रा दिखाई। उसने तुरन्त इसका उत्तर दिया उसी प्रकार नकल कर—मैंने मर्कट की आकृति बनाई उसने उसी क्षण उसे दोहराया। फिर तो हम दोनों प्रति स्पंधा में ऐसे लीन हो गये कि पता नहीं कब तक हम दोनों एक दूसरे को परास्त करने में व्यस्त रहे हम। दोनों मुख की पेशियों की अनेक भंगिमा दिखाते रहे, अनेक आकृतियों का स्वाँग रचते, एक दूसरे से बाजी मार ले जाना चाहते थे। हम दोनों में से कोई हारने वाले न थे। मैं मर्कट, तो वह बिड़ाल, मैं काक तो वह क्रौंच, मैं व्याघ्र तो वह नृसिंह, मैं शृगाल तो वह श्वान, मैं लम्ब वरण तो वह अश्व मुख सारांश यह कि उस दिन फिर मैंने अपनी कला का दिल खोल कर प्रदर्शन किया पर वह छोटी सी बच्ची भी मुझ से आगे नहीं तो पीछे भी नहीं रही।

इतने में उसकी माँ शायद अपनी खरीदारी समाप्त कर चुकी थी क्योंकि वह उसे घसीटती हुई दूकान की सीढ़ियों से खट-खट करती नीचे उँतर चली। वह बालिका यद्यपि मां के साथ घसिटती जा रही थी पर मेरी तरफ मुख फेरे चलते चलाते मुख बनाये ही जा रही थी। हमारा उसका मुँह बनाना तब तक जारी रहा जब तक वह आँखों से ओझल न हो गई।

उसके अन्तर ध्यान होते ही मेरी दृष्टि ठीक सड़क के उस पार पान वाले की दूकान पर लगे आईने पर जा पहुँची। मैं ने तभी अपने मुख की अन्तिम मुद्रा को देखा। तब मुझे होश आया। मैंने देखा, उसी आईने को देखते हुए कुछ

बच्चों की उलटी

लेखिका, चन्द्रवती श्रीवास्तवा, प्राकृतिक चिकित्सक

साधारणः बच्चे बदहजमी के कारण दूध उलट देते हैं। कुछ बच्चे बड़ी जल्दी कभी कभी हर बार दूध पीने के बाद उलट देते हैं और इससे कोई हानि उन्हें होती प्रतीत नहीं होती है। इससे इतना तो अनुमान लगाया ही जा सकता है कि या तो बच्चा अधिक दूध पी गया है या दूध बहुत गाढ़ा या बहुत पतला है। यदि बच्चा जमा हुआ दूध उलटता हो तो यह समझना चाहिये कि पेट में अम्ल अधिक हो गया है। यदि बिना फटा दूध उलटता हो तो समझना चाहिये कि पेट में हज्म करने की शक्ति नहीं है। दूध उलटने के कुछ मुख्य कारण नीचे दिये जाते हैं :—

(१) दूध पिलाने के तुरन्त बाद बच्चे को कुदाया जाय तो दूध उलट जाता है।

(२) दाँत निकलने के कारण बच्चे दूध उलट देते हैं।

(३) कभी कभी कसे कपड़ों के कारण बच्चे दूध उलट देते हैं।

(४) यदि माता अति शोक, क्रोध, भय, चिन्ता आदि के समय बच्चे को दूध पिलाती है तो प्रायः दूध उलट जाया करता है।

(५) दूध उलटना कभी कभी आने वाले रोगों की सूचना मात्र (पूर्व रूप) होता है। जैसे खसरा चेचक, टाइफाइड तथा अन्य प्रकार के त्वचा के दानों के निकलने के पूर्व अवश्य उलटी होंने लगती है।

(६) अक्सर कुकुर खाँसी में हर दौरे के साथ में उलटी होती है।

(७) यदि उलटी हो जाने के साथ में सख्त कब्ज हो तो समझना चाहिये कि आँत फँस गई है या सूज गई है ऐसी अवस्था में तुरन्त किसी अनुभवी चिकित्सक को दिखलाना चाहिये।

(८) आकस्मिक तथा तुरन्त उलटी हो जाने का कारण अक्सर यह होता है कि बच्चे भोजन का कोई टुकड़ा या कागज आदि का बड़ा टुकड़ा खा जाते हैं, जो गले में फँस जाता है। उलटी को भली प्रकार देखने से मालूम हो जावेगा।

(९) बच्चों को प्रायः गलत भोजन से या सर्दी लगने से या दाँत निकलने के कारण दस्त भी आने लगते हैं।

सज्जन शायद मेरी इस मुख भंगिमा का प्रदर्शन देख हँसते हँसते लोट रहे थे। उन्हें अब अपनी ओर देखते देख मैंने चुपके से पत्रिका दूकान पर रखी और पूर्ण 'भद्र पुरुष' की मुद्रा धारण करते हुए चुपके से घर की राह ली

उस दिन से मैंने अपने इस चिर अभ्यस्त—एकान्तिक कला को सर्वदा के लिए तिलांजलि दे दी। आप ही कहिए इसमें जोखिम है वा नहीं।

गीत

लेखिका, श्रीमती स्वर्णलता 'अम्बष्ट'

तुम मेरे हृत् - आँगन में,
देश लिये कुछ आते।
मेरे मानस - मन्दिर में,
कविता गुनगुन कर जाते।
कुछ विरह - व्यथा के दीपक,
आरती सजा कर लाते।
अक्षत, रोली आहों के,
जीवन - नैवेद्य चढ़ाते।
कुछ नयी भावनाओं के,
गजरे गूँथ कर ले आते।
फिर स्नेह - दक्षिणा देकर,
पूजन समाप्त कर जाते।

दादी माँ

लेखिका, श्रीमती वसन्त प्रभा

श्रीमती वसन्त प्रभा देहली की प्रमुख कहानी लेखिकाओं में हैं। 'दीदी' में इनकी यह प्रथम रचना है जो हमें श्रीमती रजनी पनिकर के सौजन्य से प्राप्त हुई है।

दुखान्त कहानी

[१]

हम अभी नाश्ता करने बैठे ही थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई। मैं भुनभुनाती हुई उठी और उनकी ओर देख कर बोली—'नौकर के बिना तो इस घर में रहना भी मुश्किल हो गया है। सारा दिन दरवाजा खोलते और बन्द करते ही बीतता है। दो मिनट भी तो चैन से नहीं बैठा जाता ? घर तो नहीं सराय है यह ?'

और मैं पाँव पटकती हुई दरवाजा खोलने को गयी। लेकिन मैं हड़बड़ा-सी गयी—'यह सुबह-सुबह तार कैसा ? ईश्वर करे खैरियत हो और हाँ; कानपुर से तार आखिर किसका हो सकता है। साहस करके मैंने जल्दी से लिफाफे को फाड़ा और उसे पढ़ते ही मैं दबी जबां में चीख पड़ी। क्या ? दादी मर गयीं। ओह ! लेकिन आखिर उसे हुआ क्या ? तार दादी के भाई का दिया हुआ था ? सो सन्देह की कोई गुञ्जायश नहीं थीं।'...

और उसी रात मैं कानपुर को रवाना हो गई; सुबह जब गाड़ी स्टेशन पर पहुँची तो पिता जी के मामा का लड़का मुझे लेने आया हुआ था। स्टेशन से दो मील का कच्चा रास्ता हमने इक्के पर बैठ कर तय किया। संड़क ऊबड़-खाबड़ और धूल से भरी हुई थी, सड़क के दोनों ओर कांटों भरी झाड़ियाँ घिरी हुई थीं। जिन पर असावधानी से बैलों के पाँव पड़ रहे थे और तभी एक अप्रत्यक्ष-सी दर्द भरी आवाज पहियों के घर्र-घर्र में विलीन हो जाती थी लेकिन इतने पर भी साईस की छड़ी उन बेजबान बैलों पर जोर से पड़ जाती, बैल तड़प कर दूने जोर से गाड़ी हांकने लग जाते। इस लाचारी में भी इतना उत्साह ? मेरा मन पसीज गया...ओफ़ !

और उधर जो दादी के मरने की बात थी वह क्षण भर में क्रोध और झुँझलाहट में परिवर्तित हो गयी—'दादी को मरना भी यहीं था।'

वास्तव में मैंने बैलगाड़ी की सवारी कभी नहीं की थी। यह मेरा पहिला ही अवसर था। बैलों पर मार किस तरह से पड़ती है यह मैंने अनेक बार देखा था, लेकिन उस दिन यह मार मेरे ही कारण उन पर पड़ रही थी। यह सोच कर मुझे अत्यन्त ग्लानि का अनुभव हुआ और मैंने जगन से पूछा—

'तुम लोग बड़े बेरहम हो जो इस तरह की मार पड़ते देख कर भी यह सवारी करते हो; क्या यहाँ सवारी का कोई और इन्तजाम नहीं हो सकता।'

जगन ने मेरी बात को न सुना हो यह मैं नहीं जानती, लेकिन जैसे उसका उत्तर देना आवश्यक नहीं था। इसी तरह से उसने दाहिनी ओर के खेत की ओर उंगली उठाते हुए कहा—'यह खेत बुआ मेरे नाम लिख गई है यहाँ ईख और कपास की फसल खूब होती है।'

'हूँ ! तो अब तुम्हीं इस खेत के मालिक हो।' कहते-कहते मुझ में एक घृणा-सी व्याप्त गई। दादी हमारी थी लेकिन जिनका आश्रय लेकर उसने बुढ़ापे के दिन काटे थे श्रेय उन्हीं को था। परन्तु फिर भी जैसे यह विचार सहज में पचने वाला नहीं था सो इसी से ईर्ष्या-वश मैं बोली—'तो शायद

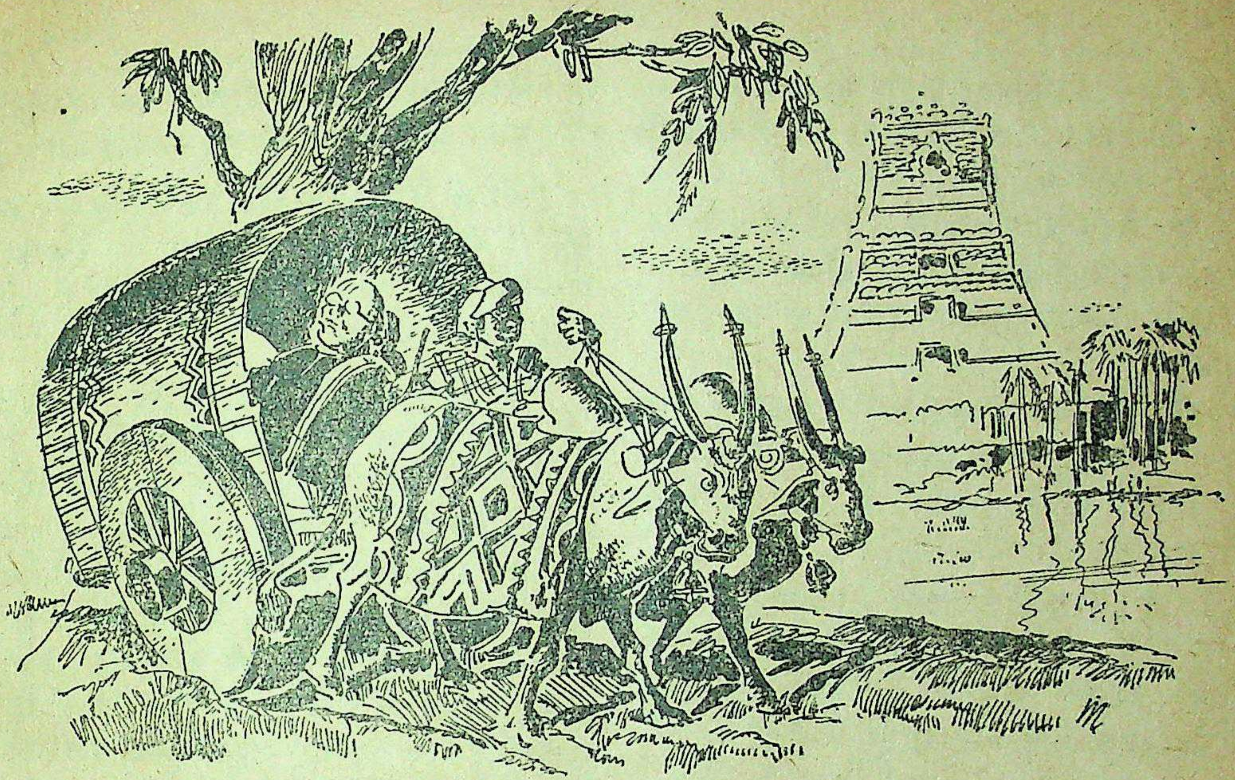

इसी भय से कि हम कहीं तुम्हारे खेतों को छीन न लें, इसी से उनकी बीमारी की खबर हमें नहीं दी।'

'वह बीमार ही कल हुई थीं। अभी परसों ही तो इसी खेत में बीज दिलाने आई थीं।'

'तो हुआ! क्या ? जैसे यह बात अनायास ही मेरे दिमाग में आई हो...दादी मर गई है; बस मुझे जैसे यही जानना था, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।' अपनी भूल से मैं स्ययम् ही क्षुब्ध हो उठी। बोली—'तो क्या हुआ था उन्हें ?'

जगन ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप मेरी ओर देखता हुआ बोला—'माँ से पूछ लेना, मैं नहीं जानता।'

करीबन नौ बजने को थे, जब हम दादी के निवास स्थान पर पहुँचे। घर में किसी तरह का कोई कोलाहल नहीं था। एक शून्यता से भरी हुई उदासी-सी सारे मकान पर छा रही थी। बीच वाले कमरे में मामी और उसकी पड़ोसिन बैठी थी और उधर एक कोने में जमीन पर कुछ सफेद चद्दर में छिपा हुआ था। मैंने उस ओर देखते हुए कुछ पूछना चाहा लेकिन मामी शायद जवाब देने के लिए पहिले ही से तैयार थीं, बोलीं—'शव को अभी जलाया नहीं गया।'

मैं आश्चर्य से चीखती हुई बोली, 'क्या ?'

'हाँ।' मामी ने कहा—'बीबी जी का कहना था कि उसके शव को आग तुम्हारे पिता ही लगायें! नहीं तो ?...

'नहीं तो क्या यह लाश यों ही पड़ी रहेगी ?' मैंने पूछा—'तुम्हारे पिता जी को कल ही तार कर दिया था। अभी तक वह नहीं आये। शायद शाम तक आ जायेंगे।'

'और अगर न पहुँचे तो ?' मामी ने उत्तर दिया।

'कैसे नहीं आयेंगे। माँ के मरने की खबर पा कर भी नहीं आयेंगे ?...नहीं-नहीं! यह नहीं हो सकता। मेरा मन कहता है, वह जरूर आयेंगे।'

लेकिन मामी के कहने पर मुझे विश्वास कैसे होता ? जिस माँ ने अपने लड़के को अपनी आँखों से दूर करने के लिए ही अपना बंसेरा अपने भाई को

यहाँ बना रखा था अब वह बात भूलने की थी।... और पिता जी !...पिता जी अपनी प्रतिज्ञा से कभी पीछे हटने वाले नहीं थे।...

घर छोड़ते समय उन्होंने भी कहा था—'आज से इस गाँव में जीते जी मैं कभी नहीं पांव रखूँगा।' और आज...आज मामी कहती है--'वह जरूर आयेंगे।'

लाश को इतनी देर तक घर पर रखने से क्या कमेटी वाले कुछ एतराज नहीं करेंगे।' मैंने पूछा।

मामी ने कहा—'इसीलिये तो अभी तक किसी को खबर तक नहीं दी गयी ... ।'

ओह ! तो दादी के मरने की बात अभी तक छिपी हुई है। तभी इतनी बड़ी जमीन की मालकिन की मृत्यु पर कोई अफसोस प्रकट करने को ही नहीं आया। मामी ने कहा—और हम करते ही क्या ?

शव के चारों ओर बर्फ के ढेले रखे हुए थे। लेकिन फिर भी एक हल्की-सी सील भरी दुर्गन्ध उस कमरे में फैल गई थी। मैंने इधर-उधर निगाह डाल कर कहा—'बाहर वाले बरामदे में क्यों नहीं बैठ जातीं। मामी यहाँ तो... ?'

इसके आगे वाली बात कहते-कहते मैं रुक गई, मामी बोली—'शव को अकेले नहीं छोड़ना चाहिए और तभी उन्हें ख्याल आया कि मैं दूर से रात का सफर करके आई हूँ, थकावट के मारे मेरा सिर चकरा रहा था सो इसीलिए वहाँ एक मिनट भी खड़ा होना मुश्किल-सा हो रहा था। मामी ने साथ वाली स्त्री से मुझे अपने घर ले जाने को कहा और मैं उसी के साथ ही चली आयी।

[२]

शाम को ठीक सात बजे इक्का द्वार के पास आकर रुका, देखा उसमें से पिता जी उतर रहे थे, मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। क्या पिता जी ने अपने वचनों को तोड़ दिया। लेकिन उससे भी अधिक मुझे आश्चर्य इस बात का हुआ कि पिता जी घर के भीतर आते ही बिलख-बिलख कर रो पड़े। मैं मुँह बाये पिता जी की ओर देख रही थी। उधर मामा जी पिता जी को चुप करा रहे थे।

पिता जी ने सुबकियाँ लेते हुए दादी के मुँह से चद्दर खींची और उस जर्द चेहरे को देख कर करुणा से आर्द्र होकर बोले—'मुझे माफ कर दो माँ; मुझे माफ कर दो।'

पिता जी माफी माँग रहे हैं आखिर किससे ? दादी नहीं हैं लेकिन यह जैसे उन्हें मालूम ही न हो रहा हो। इस तरह वह घुटने टेक कर माँ की ओर टकटकी बांधे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं सोच रही थी। पिता जी दादी के लिए रो रहे हैं क्योंकि वह उनकी माँ थीं। लेकिन जब मेरी माँ मरी थी तब दादी की आँखों में एक बूँद भी आँसू नहीं। पिता जी के लिये पत्नी से अधिक माँ महत्व रखती है। पिता जी के लिये क्या वह अपमान कोई मानी नहीं रखता ?

दादी ने माँ के साथ जो बुरा व्यवहार किया था। क्या वह सब भुलाया जा सकता है? नहीं कभी नहीं ? मां का दुःख एकाएक मेरे सामने सजीव हो उठा। उसकी रुग्ण अवस्था और उसका भय ग्रस्त पीला चेहरा मेरी आँखों के सामने घूमता रहा, मां क्यों मर गई ? माँ की मृत्यु की जिम्मेदारी क्या दादी पर नहीं थी ? जिसने कभी भी उसे चैन से बैठने नहीं दिया था ? मुझे लगा जैसे घूमता हुआ मां का चेहरा मुझमें प्रतिकार की भावना भरता जा रहा है और मुझ में घृणा द्वेष की ज्वाला भड़क उठी। मैंने जल्दी से पिता जी की बाहें खीचते हुए कहा—

'उठिए यहाँ से जल्दी उठिए ! देखिए तो कैसी दुर्गन्ध आ रही है...अभी...तो इस लाश पर कीड़े चुल बुलायगें, पिताजी ने रोषपूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा और एक झटके से मुझे पीछे हटाते हुए बोले एक तरफ हो जाओ। मैं आवेश में भी और कुछ बोलने को ही थी कि मेरी आँखें दादी के चेहरे की ओर घूम गईं...ओह ? क्या यह दादी, वही दादी

है ? क्या यह वहीं चेहरा है जिसकी ओर भय से देखा भी नहीं जा सकता था।...

दादी का भय मुझे हर समय किस तरह बेचैन करता था जब मैं मां के साथ कभी कभी दादी के पास आकर रहती थी। दादी ने कभी भूल कर भी प्यार किया हो याद नहीं।

लेकिन हां मार उसकी जरूर याद है। मैंने फिर एक बार उसी चेहरे की ओर देखा...इस बार वह इतना असहाय और नम्रता से भरा हुआ प्रतीत हुआ कि मैं उसकी दीनता को देख कर कांप गई। मृत्यु ने उसी दादी को कितना असहाय बना दिया है...दादी के चेहरे के खामोश भाव मुझे ऐसे लगे जैसे चारों ओर की क्षमा याचना सिकुड़ कर उस चेहरे में व्याप गई हो।

'क्या दादी ने मरते वक्त उन सब से क्षमा याचना न की होगी जिनको उसने अपनी जिन्दगी में हँसने का अवसर तक नहीं दिया ? इसका उत्तर कौन देता, लेकिन जैसे ही मैंने उसी चेहरे की ओर फिर दृष्टि पात किया तो मुझे लगा जैसे मृत्यु स्वयम् दीनता का प्रति रूप बन गई हो...मेरे मुंह से बरबस एक चीख निकल गई···पिता जी ने उठ कर मुझे सम्भाला। बोले—'जो होना था, हो गया चलो यहाँ कुछ नहीं बचा, बेटी कुछ नहीं बचा। मेरा मन एक अदृश्य करुणा से भर गया और मैं जी भर कर रोई। उसी दादी के लिए जिससे मैंने हमेशा ही घृणा की थी।

[३]

आस-पास के सभी आ गये थे। शव को उठाया गया और तब मुझे लगा जैसे उस घर से एक बहुत बड़ी प्यारी चीज उठ गई है। घर की एक एक चीज रोती सी दिखाई देने लगी। पढ़ोसिन की लड़की ने मुझे बताया। 'मरने के दो दिन पहिले दादी तुम्हारा नाम ले लेकर तुम्हे बहुत याद करती रही है। और हां तुम्हारे पिता जी के लिए तो वह लड़ती थी।

'रूठ गया है, मेरा बच्चा···हूँ वह नहीं आयेगा ? फिर अपने आप ही हँस कर कहती—'भला कैसे नहीं आयेगा ? मैं देखूँगी वह कैसे नहीं आता।'

तो यह सब बातें उन्होंने तुमसे की थी, मैंने पूछा—

'अरे ! क्या तुम्हें मालूम नहीं है। वह तो पागल हो गई थी, पागल ! हर समय उसी बड़े कमरे में चक्कर करती रहती थी और बोलती रहती थी। कभी तुम्हारे लिए कभी तुम्हारे पिता जी के लिए ?

आह ! मैंने दुःखी हो कर कहा—

'क्या तुम्हें नहीं मालूम दीदी ? लड़की मुझे उँगली से इशारा करते हुए एक आले की ओर ले गई। उसके आगे एक झीना परदा लटका हुआ था। उस परदे को हटा कर मैंने देखा नन्हीं नन्हीं रंग बिरंगी साड़ियों में लिपटी हुई अनेकों गुड़ियां पड़ी हुई थी। मैंने आश्चर्य से उस लड़की से पूछा 'यह सब किस लिए ?

तुम्हारा नाम ले लेकर तो वह इन्हीं गुड़ियों से प्यार करती थी। यह सब उसने मुझसे ही तो बनवाई थी और 'हाँ वह कहती थी एक दिन मेरी रानी जरूर यहाँ आयेगी तब इन सब गुड़ियों को वह अपने ससुराल ले जायेगी।

उस लड़की के मुँह पर हाथ रख कर मैं एकदम चीखती हुई बोली, 'बस अब बन्द करो। और नहीं सुना जायेगा।'

मालूम नहीं मैं कितनी देर तक रोती रही, दादी के प्रति जो कभी की ईर्ष्या थी उसकी जग अब करुणा भर गई थी। मैं बार बार सोचती और मानती—

दादी हमसे प्यार करती थी। खूब प्यार करती थी; लेकिन बड़पन और अभिमान ने उसे हम से प्यार नहीं करने दिया। अगर यह हमसे कभी भी अपना प्यार प्रगट कर लेती तो उस प्यार में वह पागल न हो उठती ? और हम हमने भी तो कभी भूल कर उनसे प्रेम नहीं किया अचानक ही मुझे अपना दोष अनुभव होने लगा। मैंने सोचा कि क्या बात थी जिससे हमने दादी का प्यार जीते

गुरुकुल पत्रिका

जी महसूस नहीं किया ? और वह कैसी कमी थी जिससे हम उनका मन जीत नहीं सके ? मनुष्य मनुष्य से क्या प्रेम के बदले ही प्रेम कर सकता है ? ऋण को पाकर क्या प्रेम नहीं किया जा सकता ? ओह यदि मैं चाहती, मैं चाहती तो दादी का प्यार जीत सकती थी लेकिन। और यह बात मुझे पहिले सूझ गई होती ? दादी को मैं प्यारी थी, पिता जी भी लेकिन बुरी, बुरी तो केवल माँ थी जिसके कारण वह हमें भी जीते जी बहला न सकी। जाने कितनी देर तक मैं दादी की बात सोचती रही। उस सोच में उनकी कोई भी बुराई शामिल नहीं थी। लगता था जैसे दादी की आत्मा उतनी पवित्र थी जितनी एक माँ की अपने बच्चे के लिए होती है। बहुत देर तक मैं अपनी गीली आंखों से उन गुड़ियों को देखती रही।

तभी पिता जी की उपस्थिति ने मेरी तन्द्रा को भंग किया। उन्होंने एक लिफाफे को मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा—'तुम्हारी दादी ने यह सब तुम्हारे लिए रख छोड़ा था।'

मैंने लिफाफे को खोल कर देखा। उसमें वसीयत नामा था। दादी की इतनी बड़ी जायदाद की केवल मैं मालिक थी और लिखा था—'हाँ खेत जगन के नाम कर दिये हैं। उससे मेरा तुम जैसा ही स्नेह था। कागज को हाथ में थमाये मैं कितनी देर तक गुमसुम खड़ी तभी पिता जी की आवाज ने मुझे सचेत किया। उनकी ओर देखकर मैं रो पड़ी। बोला—'मुझे क्षमा कर दो, पिता जी।'

घरेलू इलाज

लेखिका, विद्वत्तमा मिश्र

डाढ़ के कीड़े की दवा—आक के पीले पत्तों को गरम कर हाथों से मसल डालें, करीबन तीन माशा रस निचोड़ लें। उसमें थोड़ी-सी हींग मिला कर जिस तरफ की डाढ़ में दर्द हो उसी तरफ के कान में डालें। तो डालते ही दर्द बन्द हो जावेगा।

दाद की दवा—गरी का तेल १।। छटांक, लहसुन का रस १।। छटांक दोनों को मिला कर आग पर चुराओ। जब केवल तेल रह जाय। तब चूना बिना बुझा हुआ आधी छटांक मिलाकर खूब फेंट कर दाद पर लगा दें। तीन या चार बार के लगाने से दाद दूर हो जावेगी।

दाँत का मन्जन—चिकनी सुपारी, बादाम के छिलकों का कोयला, बबूल का गोंद भुना हुआ, रूमी मस्तगी, माजूफल भुना हुआ, इन सबको सम भाग लेकर खूब बारीक पीस छान कर दाँतों पर मन्जन करें। तो दाँत स्वच्छ व सफेद हो जायंगे और मजबूत भी होंगे।

सर्दी व बादी के दर्द पर सेंक—यदि शरीर में कहीं पर दर्द हो तो सेंधा नमक को पीस कर एक कपड़े में पोटली बांध कर गर्म तवा पर बार-बार रख कर दर्द की जगह घन्टे तक सेंकें तो सर्दी या बादी से हुआ शरीर का दर्द अवश्य ही अच्छा हो जावेगा।

मोच की दवा—अच्छी चिकनी मिट्टी को महीन कूट कर चलनी से छान ले और उस मिट्टी को आटे के तरह गूँध ले। मिट्टी गूँधने में कड़ी रहे। अब उस गुँधी हुई मिट्टी में साबुत चने दो मुट्ठी लेकर मिला लो। अब जिस स्थान पर मोच हो रोटी की तरह पोकर उस स्थान पर चिपका दो। ऊपर से कस कर पट्टी बांध दो। शाम को बाँध कर सो जाओ और सुबह को मोच निकल जायेगी। तत्पश्चात् उस स्थान पर यदि कुछ सूजन रह गयी हो तो रेंड़ी का तेल लेकर उसमें पिसा हुआ सेंधा नमक मिला कर आँच पर गर्म कर लीजिये और गरम-गरम तेल से उस स्थान पर मालिश कीजिये। अब रुई का फाहा लेकर उस स्थान पर पट्टी बाँध दीजिये सूजन भी दूर हो जायेगी।

—०—

—श्री राधारानी—

[पृष्ठ ८ का शेषांश]

की मुद्रा बनाते थे, कभी भूमि का स्पर्श करते थे, कभी गगन में उड़ते पक्षी के पंख के समान फैल जाते थे और कभी दीप शिखाओं की भाँति उपर को उठे प्रतीत होते थे। पैर जैसे पृथ्वी पर पड़ते ही न थे।

यमुना के किनारे पहुँच कर वे उसी प्रकार नृत्य करती गहरे जल में धँसती गईं और दूध से भरे घड़ों को ताल और लय के साथ यमुना जल में उड़ेलने लगीं। नील सलिला यमुना की धार में श्वेत दूध फैलकर इस तरह बह चला कि प्रयाग में गंगा यमुना के संगम का स्मरण दिलाने लगा।

प्रत्येक शुभ अवसर पर यमुना में इसी प्रकार घड़ों दूध चढ़ाया जाता था परन्तु आज तो इसका ठिकाना न था। राधा के जन्म पर इतना हर्ष मनाया गया कि इतना बृज में पहले किसी पुत्र या कन्या के जन्म पर न मनाया गया था।

इसी आनन्दोतस्व में शाम हो गई और यह कार्य समाप्त हुआ। गोपा अपने घर आई। देखा उद्धव बैठे हैं।

'आप नहीं गए?'

'आज तो जाने का विचार नहीं है?'

'परन्तु मुनिवर? रात्रि में मेरी कुटी में आप कैसे रह सकते हैं?'

'क्यों क्या हुआ?' आज रात भर जाग कर मैं तुम से योग की बात करना चाहता हूँ।'

'महाराज एक तो मुझे योग से रुचि नहीं है। दूसरे रात्रि में पर पुरुष को मैं अपनी कुटी में स्थान नहीं दे सकती।'

'मैं साधक ब्रह्मचारी हूँ गोपा और तुम महासती हो।'

'सो तो ठीक है। पर हमारा लोक व्यवहार स्त्री को पर पुरुष के साथ इस प्रकार एकान्त निवास की आज्ञा नहीं देता।'

'यह सब मैं भी समझता हूँ गोपा। परन्तु तुमने मेरा जो अनिष्ट किया है, मैं चाहता हूँ तर्क से तुम्हें उसका ज्ञान कराऊँ और तुम मुझसे क्षमा माँग लो।

'नहीं तो?'

'मेरे मन में कुभाव बना रहेगा और तुम्हें श्राप दूँगा।'

'बड़े आए श्राप देने वाले?'

'अच्छा तो मैं तुम्हें श्राप देता हूँ। तुम्हारा सतीपन का गर्व चूर होगा और तुम्हारा बड़ा उपहास होगा।'

'अपनी हार का तुम इस प्रकार बदला लेना चाहते हो?'

'कैसी हार?'

वृषभानु के पुत्र होगा? कहते थे न? हुआ?'

'यह तो संयोग की बात है। दो में एक तो होता ही? मुझे इससे दुख नहीं।'

'पर बाजी तो हार गए? अब तुम्हें व्रज छोड़ना है?'

व्रज?'

'हाँ'

'व्रज तो मैं अभी नहीं छोड़ सकता?'

'खैर, मेरी कुटी तो छोड़ो।'

'इस समय नहीं छोड़ सकता?'

'तो मर्यादा का उपाय बताओगे?'

'यह विचारणीय है। अच्छा तो लो। रात भर के लिए मरा जाता हूँ।'

उद्धव का शरीर भूमि पर इस प्रकार लुढ़क गया जैसे बाण लगने से मनुष्य गिर जाता है। गोपा दौड़ी हुई आई। अरे! उद्धव तुमने यह क्या किया? उनकी नाड़ी स्पर्श की। बन्द थी। हृदय पर हाथ रखा। गतिहीन था। नासिका दबाई। स्वांस का नाम न था।

'हाय अब मैं क्या करूँ? किसको बुलाऊँ।' गोपा बड़े सोच में पड़ गई।

—

कढ़ाई की कला सीखिये—८

लेखिका, कुमारी सुशीला कुमारी

कढ़ाई की कला में सबसे सुन्दर गठीले टांके माने जाते हैं। उनका वर्णन इस लेख में पढ़िये!

गठीले टाँके

कढ़ाई के समस्त टाँकों में सब से अधिक लोकप्रिय गठीले टाँके हैं। यह टाँके इस प्रकार डाले जाते हैं कि गांठे पड़ती जाती हैं जिससे वस्त्र पर उभरे हुए चित्र बनते हैं। इन टाँकों में 'फ्रेंच नाट' और 'बुलियन नाट' बहुत प्रसिद्ध हैं।

फ्रेंच नाट

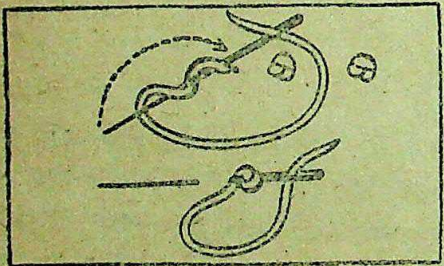

चित्र नं० १

वस्त्र पर जिस जगह गांठ डालनी हो उसके नीचे से सुई निकालिये। और तागे को मजबूती से बाएँ हाथ के अगूठे और पहली अगुली से पकड़िये और उसी समय वस्त्र को बाएँ हाथ की दूसरी और तीसरी अगुली से दबाए रहिए! सुई को तब दो या तीन बार तागे से जैसा कि यहाँ दिए गए चित्र की ऊपरी आकृति में दिखाया गया है लपेटिये। और तब तागे को उसी प्रकार पकड़े हुए इन फेरों को सुई पर करीब करीब कस लीजिए। फिर सुई की नोक को जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, गोलाकार घुमाइए और उसे जहाँ निकाला था उस जगह के पास ही दिखाए हुए बिन्दु पर चुभोइए। सुई को तब इन घेरों के बीच से होते हुए वस्त्र के नीचे से खींचिये। या नहीं तो यदि गांठों को एक पंक्ति में काढ़ना है, सुई को वाँछनीय स्थान पर निकालिए। और उसे एक गति में उस तरह खींचिए जैसा कि इसी चित्र में नीचे वाली आकृति में दिखाया गया है। बहुत सी महिलाएँ इन टाँकों को सही सही बनाने में कठिनाई का अनुभव करती हैं। इसकी सफलता का रहस्य सुई की मरोड़ और तागे के कसाव में है। फ्रेंच नाटों का प्रयोग फूलों के केन्द्रों के भराव, बुन्दों के निर्माण या कहीं भी जहाँ केवल एक बिन्दु दिखाना हो जैसे कि आंखों आदि के लिए, किया जाता है।

बुलियन नाट

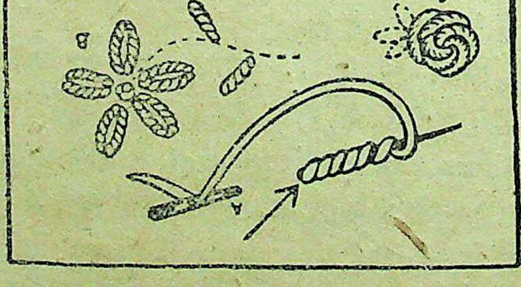

चित्र नं० २

यह फ्रेंच नाट की अपेक्षा कहीं अधिक सुविकसित नाट है और इसके बनाने में हाथों की सफाई बाजीगरी की हद तक दरकार है। पहले सुई को वस्त्र पर उस जगह निकालिए जहाँ तार का चिन्ह

बना है। सुई को फिर पीछे की ओर टांके की वाँछित लम्बाई के अनुसार ले जा कर दाहिनी ओर बिन्दु A पर चुभोइए। और इसे पुनः तीर के स्थान पर चुभोइए। सुई को बिलकुल मत खींचिये बल्कि उसे वस्त्र पर इसी तरह रहने दीजिए और तागे को सुई के चारों तरफ बार बार लपेटिये और जहाँ से सुई निकाला है उसके निकट तक लपेटिए। छः या सात फेरे काफी होंगे, परन्तु यह वांछित लम्बाई के अनुसार कम या अधिक भी हो सकते हैं। बाएँ अँगूठे को इन फेरों पर रखिए। और सुई और तागों को सावधानी के साथ वस्त्र और फेरों के बीच से खींचिए। अब सुई और तागे को विपरीत दिशा में खींचिए। तब छल्लों के इस लघु समूह को अपने उचित स्थान पर ठीक तरीके से जम जाने के लिए वाध्य होना पड़ेगा। काढ़ने वाले धागे को और खींचिये जिससे यह कस जाए। तब A बिन्दु पर सुई को वस्त्र के नीचे से खीच लीजिए। बुलियन नाट के बनाने में सफाई यह है कि उसका सिरा इसी बिन्दु पर पहुँचे। यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि सुई पर उतने फेरे डाले जायें जितने इस स्थान को भरने के लिये काफी हो सकते हैं, बुलियन नाट सुन्दरता के साथ बनाई जा सके इसके पहले थोड़ा अभ्यास आवश्यक है। और इन्हें महीन धागे से बनाने का प्रयत्न न करना चाहिये जब तक इन्हें मोटे धागे से बनाने का अभ्यास न हो जाय, इसके लिये अपेक्षाकृत मोटी सुई जिसकी आंख पतली हो, का प्रयोग कीजिए जिससे कि यह फेरों के बीच आसानी से खींची जा सके। यह फूलों की पंखुड़ियां बनाने में, जैसा कि चित्र में B पर दिखाया गया है, प्रयुक्त होती हैं। ऐसी कढ़ाई के लिए और छोटे फूलों के लिए यह सर्वथा उपयुक्त है।

गुलाब की कली (चित्र २ बिन्दु C)

यह आकृति सर्वथा बुलियन नाटों से इस तरह बनाई जाती हैं कि गुलाब की एक छोटी कली बन जाये। इसके लिए नाट को सीधा स्थापित न करके थोड़ा घुमाव के साथ स्थापित करते हैं। यह चोली आदि पर सजावट के लिये प्रयुक्त होती है।

कोचिंग स्टिच

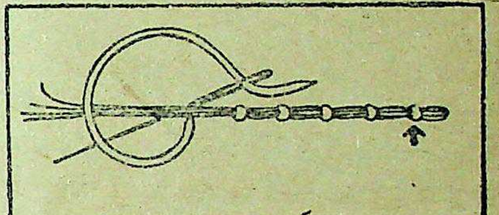

चित्र नं० ३

यह एक विशेष प्रकार की स्टिचें हैं जो कि विशेष प्रकार की कढ़ाइयों में प्रयुक्त होती हैं। इनके दो नमूने जो बड़े सुन्दर हैं, यहाँ दिये जाते हैं। यह बड़े ही आकर्षक ढङ्ग से कहीं भी काढ़े जा सकते हैं।

कोचिंग स्टिच का अर्थ आपको यहाँ दिये गये चित्र से समझ में आ जायगा। इसमें चार काले धागे एक साथ वस्त्र पर सफेद धागे से बाँध कर लिटाये जा रहे हैं। यह कोचिग स्टिच का अति सरल रूप है, ये चारों धागे वस्त्र पर जिस रेखा को ढकना है उसके दाहिनी तरफ से निकाले गये हैं और तब उन्हें एक के बाद एक वस्त्र पर लिटा दिया गया है। इनको बाएँ हाथ के अँगूठे से दबा कर सफेद धागा, तीर द्वारा अंकित स्थान पर, निकालिये और एक छोटा-सा टांका इन काले धागों के ऊपर से डालिये और सुई को उस स्थान पर निकालिये जहाँ दूसरा टांका डालना हो। जो धागे लिटाये गये हैं उनको मजबूती के साथ पकड़े रहिये जिससे वे टेढ़े-मेढ़े न होने पावें। यह बाँधने वाले टांके दृढ़ हों और दूर-दूर न हों। इसी प्रकार एक मोटा धागा भी लिटाया जाता है। यह किनारा या बाह्य रेखा बनाने में प्रयुक्त होता है।

रूमानिया कोचिंग

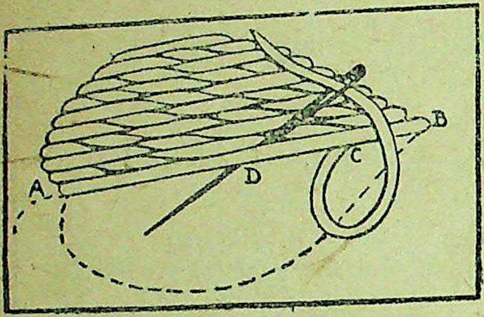

चित्र नं० ४

सर्वथा भिन्न प्रकार की कढ़ाई है। इसमें जो तागा बाँधा जाता है वह जिससे बाँधा जाता है वह और दोनों एक ही होते हैं। यह तरीका बड़े स्थानों और पत्तियों को भरने में प्रयुक्त किया जाता है।

जिस स्थान को भरना होता है उसकी पूरी नाप में पहले एक स्टिच बनाई जाती है। जैसे (चित्र देखिये) सुई आकृति के बायीं ओर बिन्दु A पर निकाली गयी और उसके पार ले जाकर बिन्दु B पर चुभोई गई। तब यह लम्बा तागा तिरछी और ढीली स्टिचों से बाँधा जाता है जैसा कि आकृति D में दिखाया गया है। इन स्टिचों को कस कर न खींचना चाहिए। और ये इतनी तिरछी होनी चाहिए कि जिसको बाँध रही हों उससे सर्वथा भिन्न प्रतीत हों।

टिप्पणी

जिस प्रकार पेवन्द (पैच वर्क) सब प्रकार की वस्त्र-कतरनों को काम में लाने के लिए किया जाता है, वैसे ही ये कढ़ाइयाँ शेष बचे तागों को काम में लाने के लिए की जाती हैं।

नोट—आगामी अङ्क से दूसरी लेख-माला प्रारम्भ की जायगी जिसमें कढ़ाई की अलग-अलग जातियों और नमूनों का वर्णन किया जायगा।

बच्चों के लिये जूता

लेखिका, कुमारी शकुन्तला शाही

जूते के लिये तीन प्लाई का आधा औंस ऊन और नौ नम्बर की सलाई।

१४ फन्दे सलाई पर चढ़ाओ।

पहली—एक सीधा।

दूसरी लाइन—एक सीधा हर एक लाइन के अन्त में बढ़ाओ जब तक कि २२ फन्दे न हो जायँ, अब दोनों सिरों पर एक-एक फन्दा घटाती जाओ, तब तक कि १४ फन्दे सलाई पर न रह जायँ। यह तलुए के लिये फन्दे हैं। आखिर में पाँच फन्दे एड़ी के लिये बढ़ाओ। अब यह उन्नीस फन्दे के तरफ से सीधा-सीधा बुनती जाओ और दूसरी तरफ हर दूसरी सलाई में एक-एक फन्दा बढ़ाती जाओ जब तक पैर की अँगुली के लिये २४ फन्दे न हो जायँ। अब एड़ी की तरफ से १३ फन्दे बन्द कर दो। और ११ फन्दे तेरह लाइन तक सीधी-सीधी बुनो। इसके बाद जिस तरफ घटाये हैं उस तरफ एड़ी के लिये १३ फन्दे बढ़ाओ। इसे भी एड़ी की तरफ सीधी-सीधी बुनो। और पैर की अँगुली की तरफ हर बाद वाली सलाई में एक-एक फन्दा घटाती जाओ। जब तक कि १६ फन्दे न रह जायें।

अब सब फन्दे बन्द कर दो। और एड़ी के तरफ सिलाई कर दो। और तलुये में जोड़ दो।

फिर १० फन्दे सलाई पर बढ़ाओ और १२ फन्दे एड़ी की तरफ से बढ़ाओ और बीच में बराबर से बीन कर उठा लो फिर १० फन्दे चढ़ाओ।

पहली लाइन—सब सीधा।

दूसरी लाइन—दो-सीधा-आगे ऊन करके एक जोड़ा, आखिर के चार फन्दे छोड़कर सब सीधा आगे ऊन करके एक जोड़ा, दो सीधा।

तीसरी लाइन—सब फन्दे बन्द कर दो जूता तैयार हो जायेगा।

रसोई

पनतुआ

घरों में प्रायः दूध फट जाता है। अगर उसका सदुपयोग किया जाय तो एक स्वादिष्ट मिठाई बनाई जा सकती है।

सामग्री—अगर डेढ़ सेर दूध फटा हो। कुछ इलायची दाने। पानी आधा सेर। चीनी आधा पाव।

विधि—उस फटे दूध को निचोड़ लें और उस का पानी फेंक दो। फिर उस छेने की छोटी-छोटी लोई काट लो और उस लोई में एक इलायची दाना पीठी की तरह भर कर उसकी गोली बना लो। फिर उसको किसी बर्तन में रख दो। बाद को चीनी पानी मिला कर उसका शीरा बना लो और गरम शीरे को उतार कर किसी चौड़े मुँह के बर्तन में उँडेल लो और फिर उसमें गोलियों को डाल दो और ढक कर रख दो। ठण्डा होने पर खाओ। स्वाद में रसगुल्ले की तरह का होता है।

—कुमारी इन्दुबाला शर्मा, बनारस

गुजराती आलू

सामान—आलू, बुका हुआ धनिया, गरी, मिर्चा बुका हुआ, बुकी हुई हल्दी; नमक, छोटी-सी इमली, धनिया की पत्ती, गुड़, हरा मिर्चा, हींग, थोड़ी-सी सरसों, घी या तेल।

विधि—हर एक आलू को चार टुकड़ा करके काटो। हल्दी, धनिया, मिर्चा बुका हुआ एक साथ मिला दो। थोड़े पानी में इमली को घोलो। गरी के छिलके को दूर कर, कूट लो। धनिया की पत्ती को बारीक काट लो। हरी मिर्च को भी काटो। हींग और सरसों को बघार दो। जब देखो कि सरसों लाल हो गयी है तो बुका हुआ मसाला के साथ आलू को छोड़ दो और ५ मिनट तक भूनो। इसके बाद खूब पानी डालो और जब तक आलू गल न जायँ तब तक पकाओ। गल जाने के बाद इमली का पानी, गरी, धनिया की पत्ती, हरी मिर्च, नमक, गुड़ मिला कर उतार लो।

नोट—आलू की तरकारी लटपट हो। ज्यादा पानी न रहने पावे और सब मसाला अपने अन्दाज से लो।

—कुमारी उमादेवी, पवई

छाछ के खट्टे मीठे दोसे

सामग्री—चावल, छाछ, गुड़, नमक; हल्दी, मेथी, खोपरा।

विधि—सुबह आधा सेर चावल धो के, आधा सेर छाछ में भिगो देना। उसमें आधा चम्मच हल्दी, डेढ़ चम्मच मेथी डाल के रख देना। रात को उसे पीस के रखना। ध्यान रहे कि उसमें पानी ज्यादा न डालना। अगर चावल पीस के छाछ रह जाय तो उसी छाछ से आटा पतला करना। फिर उसमें रुचि के अनुसार आधा पाव गुड़ डालना, थोड़ा-सा नमक और थोड़ा-सा नारियल का खोपरा डाल के रख देना। सुबह (तवे पर उल्टे चीलों की भाँति) दोसे बनाना। ये बहुत स्वादिष्ट बनते हैं।

—कुमुदिनी कामत, बेंगलोर

पूरी को खीर

दूध को कढ़ाही में औटाइये। जब दूध एक चौथाई शेष रहे पूरी को बारीक करके उसमें डाल दीजिये। तत्पश्चात् मसाले (बादाम के टुकड़े, किशमिश) डाल दो। आवश्यकतानुसार शक्कर डाल दीजिये। गाढ़ा हो जाने पर उतार लीजिये। प्लेटों में परोसिये। कसी हुई गरी से सजाइये। अत्यन्त स्वादिष्ट होगी।

श्रीमती कुन्तल, अम्बिकापुर

दो लड़कियों का त्याग

लेखिका, श्रीमती शांतिशीला तेलङ्ग, वर्धा

महाकात्यायन उज्जयनी के चंडप्रद्योत राजा के पुरोहित का लड़का था। उसकी कांति सुवर्ण थी इसलिये उसका नाम कांचन रखा था। परन्तु वह कात्यायन गोमके नाम से ही प्रसिद्ध हुआ। बेद वेदों मैं पारंगत हुआ इसलिये पिता के देहान्त के बाद जवानी में ही उसको पुरोहित का स्थान मिला। उसी समय बुद्ध की कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी। चंडप्रद्योत बुद्ध के दर्शन के लिये बहुत उत्सुक था। लेकिन वह राज्य मर्यादा छोड़ कर बाहर नहीं जा सकता था। सब लोगों ने मनसूबा किया कि पुरोहित को भेज कर बुद्ध को उज्जयनी लाया जाय। कात्यायन ने कहा मुझे दीक्षा लेने की इजाजत मिले तभी मैं जाऊंगा। राजा को उनकी बात मन्जूर करनी पड़ी। अपने साथ ज्यादा आदमी ले जाना उचित नहीं, ऐसा सोच कर खास चुने हुए सात आदमी साथ में लेकर वह बुद्ध के पास गया। भगवान बुद्ध का उपदेश श्रवण करके उन सातों आदमियों के साथ उसने अर्हतपद प्राप्त किया।

निर्वाण पद प्राप्त करने के बाद महाकात्यायन ने उज्जइनी जाना अच्छा होगा, ऐसा भगवान से निवेदन किया। भगवान समझ गये। अपनी जन्म भूमि को जाने की महाकात्यायन की इच्छा है। भगवान ने कुछ कारण से वहाँ जाना उचित नहीं समझा ? लेकिन काल्यायन को जाने के लिये इजाजत दी। भगवान अपना निर्णय नहीं बदलेंगे यह कात्यायन जानता था। जिसलिये उसने भगवान को ज्यादा आग्रह नहीं किया। वह अपने सातों साथियों के साथ उज्जइनी के लिये निकल पड़ा। रास्ते में तेलप्पनकी नाम का छोटा शहर आया।

उस शहर में एक गरीब बेपारी की लड़की रहती थी। उसके मां बाप बचपन में ही गुजर गये थे इसलिये उसकी दाई ने अपनी बेटी की तरह कष्ट से उसका पालन पोषण किया। शहर में उसके सौंदर्य की और खास कर बालों की ख्यात थी। एक धनिक लड़की के बाल छोटे थे। इसलिए उस गरीब लड़की के बाल के लिये तीन हजार कालपिणतक देने के लिये तैयार हुई। परन्तु नैसर्गिक आभरण द्रव्य लेकर बेचने के लिये वह कभी भी कबूल नहीं हुआ। परन्तु इतने बड़े शहर में महाकात्यायन जैसे भिक्षुको भिक्षा तक नहीं मिली यह देखकर उसको बहुत दुःख हुआ। उसने उस शहर की इज्जत रखने के लिये अपने बाल अपने हाथ से काट कर दाई के हाथ उस रईस लड़की के पास बेचने के लिये भेजे। बाल कपड़े से ढककर एक हाथ से अश्रु पोछते और दूसरे हाथ से बाल और दुःखी दिल को संभालते हुई वह धनी लड़की के पास गई।

बाल देखकर धनी लड़की ने अपने मन में सोचा कि मैंने उसको कितना द्रव्य देने के लिये कबूल किया। फिर भी उसने बाल नहीं दिये। अब तो सही दाम में ही मिलेंगे। दाई के हाथ में आठ कालपिण रखकर उसने कहा तू कहीं भी ले जायेगी तो तुझे इस बालों के आठ कालपिण ही मिलेंगे। बेचारी दाई कुछ भी नहीं बोली। कालपिण लेकर घर लौटी। गरीब लड़की ने वह कालपिण खर्च करके महाकात्यायन आदि को भिक्षा दी।

महाकात्यायन जब उज्जयनी आया। तब प्रद्योत ने बड़ी धूम धाम से उसका आदर सत्कार किया। रास्ते में जो घटना घटी थी कात्यायन ने राजा को सुनाई। अपने मन्त्री को उस गरीब लड़की

हमारा धनिक समाज जैसे दो हजार वर्ष पहले गिरा था वैसा ही आज भी गिरा है। यह कहानी पढ़िये !

के पास भेज कर राजा ने बड़े आदर से उसको उज्जयिनी बुलवाया और अपनी महराणी किया।

× × ×

नेपोलियन ने सारा युरोप जीत लिया था। एक बार सिलेशिया देश पर उसने चढ़ाई की। वहाँ के लोग देशाभिमानी थे। देश को बचाने के लिये हर एक आदमी सब कुछ देने के लिये तैयार हुआ।

एक आठ नौ साल की लड़की थी। उसने सोचा मैं तो छोटी हूँ। मैं अपने देश के लिये क्या दूँ? थोड़ी देर तक वह सोचती रही। बाद में नाई के पास गई और बाल काटने के लिये कहा। पहले नाई संकोच करने लगा तब लड़की ने कहा मैं अपने देश के लिये बाल कटवाती हूँ। नाई ने उसके बाल काट कर दो डालर में मोल लिया। बालों के उसने कंगन बनाये। लोगों को यह बात मालूम हुई। वे नाई के पास गये और ज्यादा दाम देकर कंगन मोल लिये। लड़की और लोगों की देश भक्ति देख देख कर नाई ने वे सब पैसे देश की सेवा में दे दिये।

+ + +

पूरब और पश्चिम की यह दो कहानियाँ हैं। एक इ०स० पूर्व की कहानी है और दूसरी दो हजार साल के बाद वाद की है। हम लोग पूर्व की संस्कृति का हमेशा गौरव करते आये हैं। लेकिन यह कहानियाँ क्या कहती हैं? जहाँ तक लड़कियों का सवाल है दोनों ने निःस्वार्थ त्याग किया। इसमें भी दो हजार साल पहले की लड़की का त्याग ऊँचा था। क्योंकि उसे जनता में प्रसिद्ध मिलने की आशा भी नहीं थी जब कि सिलेशिया की लड़की ने देश के लिये कटवाती हूँ ऐसा कहकर बाल कटवाये और वह बात तुरन्त देश भर में फैलने वाली थी। परन्तु समाज ने दोनों कहानियों में किस तरह जवाब दिया है वह देखने की बात है और एक तरह से हमारा और पश्चिम का जो स्वभाव है वह ये कहानियाँ बताती हैं। सिलेशिया के नाई ने बाल के अच्छे दाम दिये, लोगों ने उससे भी ज्यादा दाम दिये और उस पर तुरा यह कि नाई ने सबके सब पैसे देश के लिये दे दिये।

त्याग की यह परम्परा देखिये और इधर हमारे देश की धनिक की लड़की अपना सौंदर्य बढ़ाने के खातिर बालों के तीन हजार कालपिण तक देने को तैयार थी पर उसने उन बालों के मौका पाकर आठ ही कालपिण दिये जब कि वह गरीब की लड़की सारे गाँव की इज्जत रख कर पुण्य कार्य करने के लिये अपनी प्यारी चीज का बलिदान कर रही थी। अगर उस धनिक की लड़की ने तीन हजार के बदले दस हजार कालपिण दिये होते तो उसका भी गौरव ही होता। लेकिन हमारे देश में वह चीज है ही नहीं। हर एक अपना तुच्छ स्वार्थ देखता है, समाज का और देश का हित नहीं देखता। आज भी गरीब और दीनों को चूसने की हमारी नीति मिटी नहीं है। उस गरीब लड़की ने तो निष्काम भाव से और त्याग की भावना भी मन में न लाकर पुण्य-कार्य किया और भगवान ने उसका फल भी दिया लेकिन उस धनिक लड़की जैसा हमारा समाज कब सुधरेगा?

ज्ञातव्य बातें

१९५३–५४ से परिचारिकाओं (नर्सों), स्वास्थ्य निरीक्षकों और दाइयों की प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या बढ़ कर ९६९ और शिक्षार्थियों की ९,०४० हो गयी। १९५०–५१ में संस्थाओं और शिक्षार्थियों की संख्या क्रमशः ४१८ और ३,८१० थी।

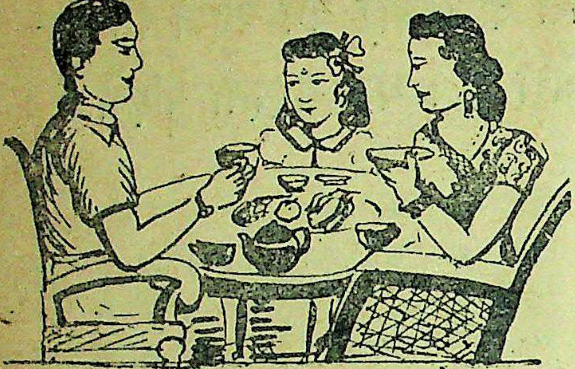

'दीदी' का ध्येय प्रत्येक मामले में पाठिकाओं को व्यक्तिगत सलाह देना भी है। इसलिये पाठिकाओं से निवेदन है कि यदि आपके सामने कोई ऐसी समस्या हो तो उत्तर के लिये =) के स्टाम्प से युक्त अपने पते का लिफाफा भेजें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार गुप्त रखे जाते हैं। श्यामाबाई मार्फत 'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद—२

आपको कुछ पूछना है ?

मुख-सौंदर्य

प्रश्न—क्या आप कृपा पूर्वक कोई ऐसी औषधि बता सकती हैं जिससे मेरा चेहरा गोरा और सुन्दर हो जाय।

उत्तर—यदि आपके सम्पूर्ण शरीर के त्वचा की रंगत साँवली है तो केवल मुख को गोरा बनाने से क्या लाभ हो सकता है। मुख का भाग शरीर के अन्य अङ्गों की अपेक्षा अधिक खुला रहने के कारण उस पर गर्द आदि जमती रहती है जिससे त्वचा मैल से भर जाती है और रूखड़ हो जाती है। अतएव मुख-सौंदर्य का रहस्य यह है कि चेहरे की त्वचा साफ, सुचिक्कन और मुलायम दीखे। इसके लिये निम्नलिखित उपचार कीजिये—

१—रात को सोने से पहले सम्पूर्ण चेहरे और गले में सरसों के तैल की मालिश कीजिये। इस तैल में ऐसी शक्ति होती है कि यह त्वचा के अदृश्य छिद्रों में गहराई तक पहुँच जाता है। (देखिये चित्र नं० १)

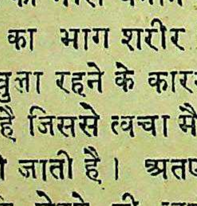

२—अब थोड़ा और यही तैल चेहरे की सम्पूर्ण त्वचा और गले पर लगा दीजिये। आप स्वयम् देखेंगी कि आपकी त्वचा कितनी मुलायम हो गयी है। इस तैल की झार से आँखों को बल मिलता है और नासिका के द्वार पर एकत्रित हुए जुकाम आदि के कीटाणुओं को भी यह मार देती है। (देखिये चित्र नं० २)।

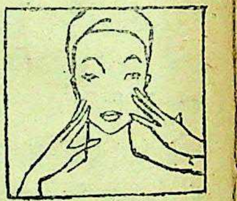

३—अब अपनी किसी पुरानी और बेकाम पर मुलायम वस्त्र वाली साड़ी से कोई छोटा-सा वस्त्र खण्ड फाड़ लीजिये और उससे मुलायमियत के साथ चेहरे और गले में लगा सम्पूर्ण तैल पोंछ डालिये। आप देखेंगी की तैल के साथ ही त्वचा के छिद्रों में जमी गहराई तक की मैल निकल आई है। (देखिये चित्र नं० ३)।

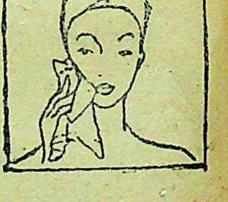

बस अब सो जाइये। सबेरे उठने पर आइने में अपना मुख देख लीजिये। आपको बड़ा फरक और ताजगी का अनुभव होगा। यह क्रिया आप जारी रखेंगी तो दीर्घ वृद्धा अवस्था तक आपका मुख स्वच्छ और सुन्दर बना रहेगा।

सामयिक साहित्य

कलकत्ता की छात्रा अमरीका जायगी

कलकत्ता की १७ वर्षीया छात्रा कुमारी उषा थडानी शीघ्र ही अमरीका को रवाना हो जायगी। वह वहाँ हाई-स्कूलों के छात्रों और छात्राओं के लिए न्यूयार्क हैरल्ड ट्रिब्यून पत्र द्वारा आयोजित ६ वीं वार्षिक गोष्ठी में भारत की प्रतिनिधि की हैसियत से भाग लेगी। यह गोष्ठी संयुक्तराष्ट्र-संघ के न्यूयार्क-स्थित भवन में मार्च, १९५५ में होगी।

कुमारी उषा कलकत्ता के लोरेटा कालेज में बी० ए० के तृतीय वर्ष में पढ़ती है। कुमारी उषा को सारे भारत में से इसलिए चुना गया क्योंकि वह पढ़ने-लिखने आदि में बहुत कुशल है और शिक्षा मन्त्रालय की ओर से की गई निबन्ध प्रतियोगिता में सर्व प्रथम आई थी। इस प्रतियोगिता का विषय था, 'हम संसार में क्या चाहते हैं ?'

अगले कुछ ही दिनों में ३४ देशों के ३४ छात्र अमेरिका पहुँच जायंगे और छात्र-गोष्ठी में भाग लेने से पहले १२ सप्ताह तक अमेरिकी छात्रों के घरों में अतिथि बन कर रहेंगे। इन का चुनाव उन देशों के स्कूल-अधिकारियों और सरकारों ने किया है। न्यूयार्क में विभिन्न देशों के स्कूली छात्रों व छात्राओं का यह सम्मेलन अब हर साल ही होने लगा है और उसे बड़ा पसन्द किया जाता है।

कुमारी उषा नई दिल्ली में डाक और तार महकमे के चीफ इंजीनियर श्री एच० आर० थडानी की पुत्री है। वह अच्छी वक्ता होने के साथ साथ खिलाड़ी भी है। वह बास्केटबाल और रिंग खेलती है। उसे कसीदाकारी और कढ़ाई-बुनाई का भी शौक है। वह प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें भी खूब पढ़ती है।

कुमारी उषा अमेरिका में ३ महीने के अपने प्रवास-काल में अमेरिकी हाई स्कूलों की, अपनी ही आयु की ५ छात्राओं के यहाँ रहेगी और उनके साथ स्कूलों में भी पढ़ा करेगी। इस व्यवस्था से उसे कई अमेरिकी परिवारों को अच्छी तरह से जानने तथा अमेरिकी शिक्षा संस्थाओं और उनकी शिक्षा-पद्धति को सामान्य रूप में समझने का अच्छा मौका रहेगा।

गंगा नहर की कहानी

गंगा नहर शताब्दी समारोह के सिलसिले में हरद्वार में सिंचाई इन्जीनियरिंग प्रदर्शनी का जो आयोजन किया जा रहा है उस अवसर पर उसको देखने वाले लोग एक ऊँचे मन्च पर गलमुच्छे वाले एक अंग्रेज की संगमरमर की बनी मूर्ति पायेंगे। इस मुखाकृति के सम्बन्ध में बहुतों को जानकारी न होगी। यदि यह शताब्दी समारोह न होता तो अब भी लोग इससे अपरिचित ही रहते एक अंग्रेज..., जिसे स्वतंत्र भारत के एक राज्ज सरकार द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी में इस प्रकार एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है, की मूर्ति को पाकर लोग उलझन में भी पढ़ सकते हैं, परन्तु यह अंग्रेज गंगा नहर का निर्माता है। इसीलिए इसे विशेष महत्व दिया जा रहा है।

१०० वर्ष से भी अधिक हुआ कि यह अंग्रेज मि० कौटले गंगा नदी से एक नहर निकालने के सिलसिले में इस नदी की जांच के लिए हरद्वार गये थे। वे नदी के धार में होकर नाव द्वारा जा रहे थे। ज्योंही उन्होंने घाटों को पार किया, उन्होंने देखा कि एक पतली नाली घाटों की ओर गयी है और यह नदी के प्राकृतिक मार्ग से खोद कर निकाली

गयी है। पूछे जाने पर साथ के आदमियों ने उन्हें बताया कि कभी कभी नदी के पानी का स्तर इतना नीचे चला जाता है कि घाट सूख जाते हैं। इसलिए नगर के लोगों ने उस नाली को खोदा है जिससे कि हर की पेड़ी के पवित्र घाटों से होकर नदी का पानी सदा बहता रहे।

बस इसी बात से उस सैनिक इन्जीनियर के मस्तिष्क में हरद्वार से एक नहर शाखा निकालने का विचार पैदा हुआ।

टेकनिकल समस्याओं के अतिरिक्त कौटले लोगों की धार्मिक भावनाओं की ओर से भी सजग था। अतः सर्वप्रथम कौटले ने जनता की धार्मिक भावनाओं को अनुकूल करने के लिये मायापुर रेयुलेटर के पास सप्लाई की चैनेल पर एक पक्का घाट बनाया और हिन्दू रीति के अनुकूल अपने बड़े कार्य के प्रारम्भ करने के पूर्व इस विदेशी ने गणेश पूजन के प्रतीक रूप में इस घाट का नाम गणेश घाट रखा।

कौटले ने जो कार्य किया वह बाद में प्राप्त की गयी सफलताओं की तुलना में केवल प्रारम्भ स्वरूप था। उसने रेगूलेटर, पानी निकालने के फाटकःस्लूस ग्रेट्सः और पुलों का जो निमांण किया वे उसकी इन्जीनियरिंग योग्यता और कलापूर्ण दृष्टिकोण के द्योतक है। उसकी डिजाइनों में न तो कोई पुनरावृत्ति हुई और न उसके कार्य में कोई त्रुटि निकली।

अफीमची अस्पतलों में रखे जाँयगे

सनू १९६० तक अफीम की बिक्री का पूरी तरह रोक देने की अपनी रीति के अनुसार राज्य में अफीमचियों को चिकित्सा की सुविधायें प्रदान करने के उद्देश्य से उन्हें अस्पतालों में रखने की एक योजना के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश सरकार बिचार कर रही है।

इस योजना के अनुसार सभी जिलों में प्रत्येक अफीमची का रजिस्टेशन किया जायगा और अस्पतालों तथा चिकित्सालयों में उनके उपचार की विशेष व्यबस्था की जायगी और जहाँ कहीं आवश्यकता होगी उनकी देखभाल के लिये विशेष रूप से आवश्यक डाक्टर नियुक्त किये जायेंगे। इन लोगों का उपचार मनोवैज्ञानिक आधार पर भी किया जायगा।

१९५७ में क्या होगा ?

श्री चमन लाल द्वारा योगिराज श्री अरविन्द स्थापित पांडचेरी के आश्रम की वर्तमान अध्यक्ष श्री माँ से प्रश्नोत्तर—

प्रश्न—'क्या आप ऐसा नहीं समझती कि निकट भविष्य में भारत को गम्भीर संकटका सामना करना है और रूस और अमरीका के बीच युद्ध अनिवार्य है ?'

उत्तर—'हाँ, मैं ऐसा अनुभव करती हूँ कि रूस और अमरीका के बीच युद्ध की गहरी सम्भावना है। युद्ध को रोकने के हमारे प्रयत्नों के बावजूद यदि वह आता है तो हमारा आध्यात्मिक कार्य समाप्त हो जायगा।

प्रश्न—'पर क्या आप ऐसा नहीं समझती कि बम वर्षा के अड्डे के रूप में अपना इस्तेमाल होने देकर पाकिस्तान गलती कर रहा है और इस तरह वह अपने लिए आफत का बुलावा देगा।,

उत्तर—'जब भारत का विभाजन हुआ तब मैंने श्री अरविन्द से पूछा था कि पाकिस्तान के भविष्य के बारे में आप का क्या विचार है ? मैंने उससे पूछा था कि पाकिस्तान कितने दिन तक बना रहेगा। बिना किसी हिचक के श्री अरबिंद ने कहा था—दस साल।'

श्री मां ने 'बिना किसी हिचक' शब्दावली पर विशेष रूप से जोर दिया। श्री अरविन्द की भविष्य वाणी पर उनको पक्का विश्वास है। उन्होंने आगे कहा—'१७५७ और १८५७ की तरह १९५७ भारतीय इतिहास का अत्यन्त महत्वपूर्ण वर्ष होगा। इसी साल पाकिस्तान का अन्त होगा और भारत

[शेष पृष्ठ ६३ पर]

अपने विचार

श्री सम्पूर्णानन्द जी

आज, जब कि हम ये पंक्तियां लिख रहे है, श्री सम्पूर्णानन्द जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश राज्य के इतिहास में एक नया अध्याय प्रारम्भ हो रहा है। अब इस राज्य का शासन सूत्र श्री सम्पूर्णानन्द जी के हाथो में है जो एक मँजे हुए कर्मठ और साधक पुरुष हैं और जिन पर इस प्रदेश के नागरिकों को भरोसा और गर्व है। इस राज्य के मुख्य मन्त्री के रूप में हम श्री सम्पूर्णानन्द जी का स्वागत करते है और उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं।

स्वागत सन् ५५

सन् १९५५ पधारो ! हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। तुम हमारे सामने एक विचित्र समुद्र के समान लहरा उठे हो जिसके पार हमें 'दीदी' की नौका को खे कर ले जाना है। तुम्हारी इस काया में कहाँ चट्टाने हैं, कहाँ गहराई है, कहाँ उथला पन है, कहाँ लहरें और आँधी है, कहाँ शान्ति विराजती है, यह यह हम नहीं जानते। हम तो उस नवीनता पर मुग्ध हैं जिसको लेकर तुम उपस्थित हुए हो। पर तुम्हारी इस नवीनता में कुछ ऐसा आकर्षण है जो पिछले वर्षों में नहीं था। अतएव हम निश्चिन्त होकर यह कागज की नैया तुम्हें सौंपते हैं, इस विश्बास के साथ कि तुम हमें अपने लुभावने दृश्यों को दिखाते हुए उस प्रदेश में पहुँच जाओ जहाँ सुख और शान्ति विराजती है।

दीदी पिछले कई वर्षों से जीवन के लिये संघर्ष करती आ रही है। कोई कोई वर्ष उसके लिये बड़े ही निर्दय और निठुर रहे पर तो भी हम उनके बड़े कृतज्ञ हैं क्योंकि कठिन परीक्षाएँ लेने के बाद अन्त में उन्होंने हमें आगे बढ़ने दिया। इस प्रकार कठिनाइयों को पीछे छोड़ते हुए आज तुम्हारे सम्मुख उपस्थित होने में हमें अपार हर्ष हो रहा है। तुम दीदी के लिए, उसके पाठक-पाठिकाओं के लिए, उसके सहयोगियों और शुभ चिन्तकों के लिए मङ्गल मय हो।

नए वर्ष में दीदी के नये आर्कषण

दीदी नए आकर्षणों के साथ इस नये वर्ष में प्रवेश कर रही है।

सब से बड़ा आर्कषण है, श्री राधारानी की कहानी जिसको पिछले ४०० वर्षों से लोग भूले हुए थे और जो अब प्रथम बार दीदी के पृष्ठों में इस नव वर्षाङ्क से हिन्दी पाठकों के सम्मुख उपस्थित की जा रही है।

दूसरा आकर्षण है श्रेष्ठ और मौलिक कहानियाँ जो दीदी का सदैव लक्ष्य रहा है। आधुनिक हिन्दी के श्रेष्ठ कहानी लेखकों में निम्नलिखित बे जोड़ हैं:—

(१) श्री भारतीय एम० ए० (मनोवैज्ञानिक)
(२) श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए० (समस्या प्रधान)
(३) श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी० (जासूसी)
(४) श्रीमती अमिता कुमारी बोस (पारिवारिक)
(५) श्री कैलास कल्पित (सामाजिक)

इन सब की और इनके समान अन्य प्रतिभा शाली कहानी लेखक-लेखिकाओं की कहानियाँ 'दीदी के इस नव वर्षाङ्क में हम प्रकाशित कर रहे हैं और इस वर्ष क्रमशः प्रकाशित करेंगे।

अन्य आकर्षण हैं—कढ़ाई-बुनाई, गृह प्रबन्ध, स्वास्थ्य और सौंदर्य समस्या, शिशु पालन, रसोई, प्रश्न पिटारी आदि स्तम्भ जो दीदी की अपनी विशेषता हैं। इस वर्ष इन विषयों पर संसार भर के विशेषज्ञों के अपटू डेट सुझाव और टिप्पणियाँ क्रमशः प्रकाशित की जायँगी। छपाई-सफाई की ओर भी ध्यान दिया जायगा।

दीदी का आवरण पृष्ठ

दीदी के इस नव वर्षाङ्क का आवरण पृष्ठ श्रीमती श्यामलता ने अंकित किया है। ये प्रसिद्ध चित्रकार श्री केदार नाथ शर्मा (बनारस) की पुत्री हैं और इन्होंने बम्बई के आर्ट स्कूल से चित्र कला में उच्च शिक्षा प्राप्त की है। चित्र में उन्होंने मीरा को हाथों में विष, जो उन्हें कृष्णमय दीख रहा है, का प्याला लिए हुए अंकित किया है। भाव यह है कि यदि हम अपने आप को मीरा की भाँति परमेश्वर को समर्पित कर दें तो हम जीवन के समस्त त्रासों से मुक्ति पा जायँ।

'दीदी' का एक गीत

एक पाठक लिखते हैं:—

'......दिसम्बर की 'दीदी' के दर्शन हुए। मेरी दृष्टि एक 'गीत' पर पड़ी और एक सांस में उसके दो पद्य पढ़ गया। मेरे मन में बार-बार यह भाव उठने लगे कि क्यों कवि बन कर हम अपनी हँसी उड़ाते हैं, तथा पाठकों का समय नष्ट करते हैं। परन्तु तीसरा पद्य पढ़ते ही मैं इतना प्रभावित हुआ कि मेरा रोम-रोम प्रफुल्लित हो उठा और आत्म विभोर हो गया। कैसे ऊंचे भाव और उद्गार हैं—

'आज करने दो मुझे उत्सर्ग जीवन दूसरों पर,
कौन जाने कल किसी के काम यह आये न आये।'

बहुत दिन हुए जब मैंने नीचे लिखा दोहा एक कवि का सुना था, उसकी छाप मेरे हृदय पर अब तक लगी हुई है। उसी प्रकार का यह गीत 'दीदी' में पढ़ कर प्रसन्नता हुई। अब मेरे हृदय कोष में दो रत्न संग्रह हो गये यह मुझे प्रसन्नता है।

अशोक वाटिका में जगत जननी महारानी जनक नन्दनी रावण के बन्धन में और श्री रामचन्द्र जी के स्मरण में उदास बैठी हैं, उसी समय ऊपर अशोक वृक्ष से पवन पुत्र रामजी के नामांकित अँगूठी माता की गोद में गेर कर अदृश्य हो जाते हैं, अब सुनिये कवि की उक्ति और माता सीता के उद्गार—

श्री पुर में, वन मध्य में, मगतैं करी अनीति।
है, मुँदरी! युवतीन की, को करि है परतीति॥

उस अँगूठी को देख कर उसे सम्बोधित कर माता जी कहती हैं कि अयोध्या में लक्ष्मी ने श्री रामचन्द्र जी को छोड़ दिया, वन में मैं छोड़ आई और मार्ग में तूने उनका साथ छोड़ दिया। अब बता स्त्री जाति का कौन विश्वास करेगा?

श्रद्धा से मस्तक नत हो जाता है, प्रेम के आंसू उमड़ आते हैं। माता जी को अपने दुख और अपमान का ध्यान नहीं, ध्यान है केवल देश का स्त्री समाज का। इसी को आदर्श कहते हैं, इसी को देश सेवा! यही कविता है ऐसे ही कवि अमर हैं।

—शारदाप्रसाद, कोसी (मथुरा)'

आशा है, हिन्दी के कविगण इस पर विचार करेंगे।

दीदी कर्ज कोष

दीदी कर्ज कोष की योजना में, जैसा कि हम इन पृष्ठों में पहले भी लिख चुके हैं, बुरी तरह असफल हुए हैं। न तो हम कर्ज की रकमें ही अदा कर सके हैं और न पिछले कई वर्षों से व्याज ही भेजने में समर्थ हुए हैं।

सब मिला कर कर्ज का बोझा इतना बड़ा है कि वर्तमान स्थित में उससे मुक्ति पाना असम्भव है। परन्तु चाहे जैसा हो और चाहे जब तक मैं हो, हम कर्ज की पाई पाई रकम व्याज सहित चुकाने का इरादा रखते हैं। उनके सब के पास कर्ज की स्थिति के विषय में हम विस्तार के साथ पृथक डाक से एक छपा पत्र भेज रहे हैं। आशा है वे उस पर विचार करेंगे और हमें उपाय बतायेंगे कि हम कैसे ऋण-मुक्त हों।

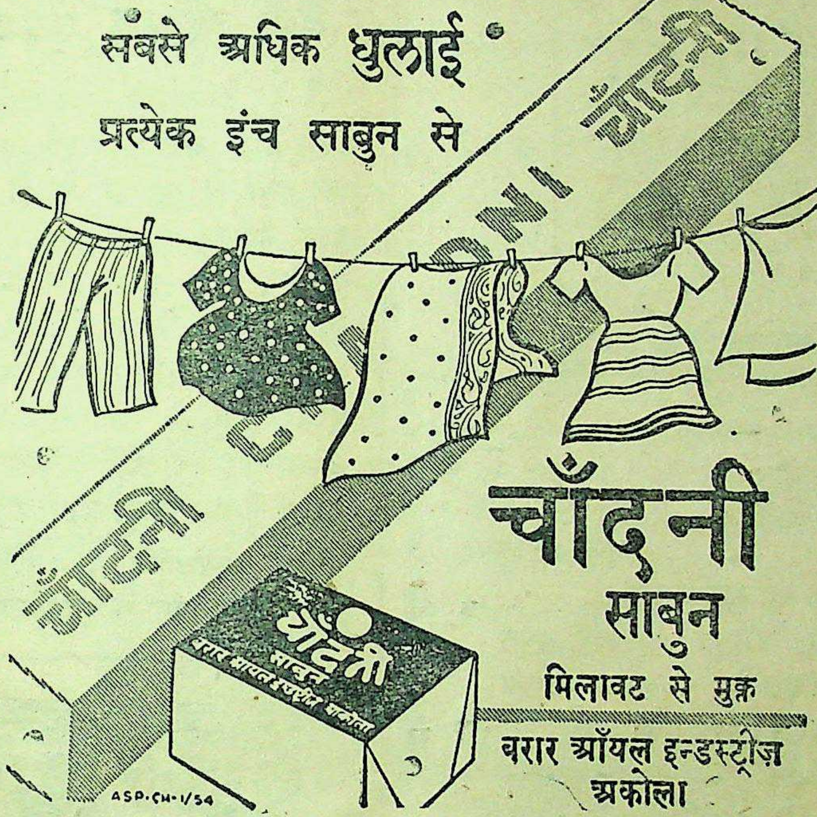
चाँदनी
चाँदनी साबुन बरार ऑयल इन्डस्ट्रीज़ अकोला
ASP-CH-1/54

सबसे अधिक धुलाई
प्रत्येक इंच साबुन से

चाँदनी
साबुन
मिलावट से मुक्त
बरार ऑयल इन्डस्ट्रीज़
अकोला

नये क्षेत्रों के लिए स्टाकिस्टों की आवश्यकता है।

दीदी की फाइल

दीदी की सन् १९५३ व १९५४ की बारहों
मास की पूर्ण फाइलें
प्रत्येक ६) रुपये में प्राप्त कीजिये।

मैनेजर दीदी कार्यालय
इलाहाबाद—२

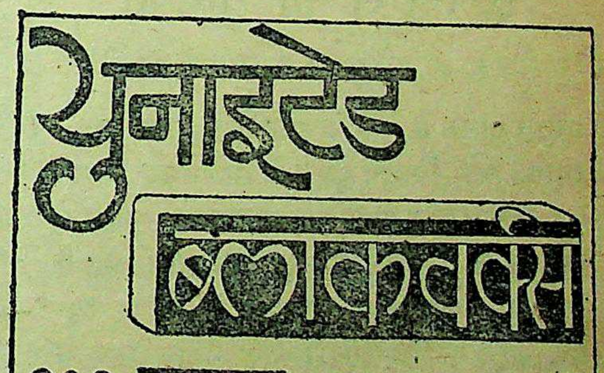

युनाइटेड
ब्लाकवर्क्स
७०७ कटरा
इलाहाबाद

रामचन्द्र वैद्य शास्त्री की मीठी
बाल रक्षा घुटी
एजेंसी लीजिये
बाल रोगों तथा दन्तविकारों का नाश कर बच्चों को स्वस्थ पुष्ट करती है। बड़ी शीशी ॥=) छोटी ।≡), पांच सज्जनों के नाम पते लिखें, सुन्दर उपन्यास मुफ्त लें
सुधावर्षक औषधालय अलीगढ़

सफेद कोढ़ की पेटेंट दवा मूल्य ५) रुपया
विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।
वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

सुख-दुःख का झमेला
लेखक, श्री हरिचरण लाल वर्मा शास्त्री
प्रस्तुत पुस्तक में देश के प्रतिष्ठित सन्त महात्माओं और विद्वान् पुरुषों के भिन्न-भिन्न विषयों पर विचारणीय लेखों का उपयोगी सङ्कलन है जो जीवन में उत्कर्ष तथा सामञ्जस्य लाने के लिये, मानव हृदय में मानवता के विचार उद्बुध करने के लिए गिरते हुए नैतिक स्तर में चारित्र्य बल लाने के लिये लोक हित की पावन भावनाओं से ओत-प्रोत सुखद बल-प्रद प्रेरक भावनाओं से युक्त है! पुस्तक सभी के काम की चीज है। मूल्य १) पता—साधना कार्यालय, इलाहाबाद नं०-२

दैवी औषध एवम् कवच
मैं देव देवियों के साथ बातें करती हूँ एवम् उनसे प्राप्त औषधि एवम् कवच द्वारा सब व्याधियों को अच्छा करती हूँ। चक्षु रोग, बात, बसन्त, भगन्दर, स्त्री रोग, यक्ष्मा, बच्चों के रोग, धात, सुजाक इत्यादि रोगों को ६≡) पूजा निमित्य भेजना होगा। कुष्ट, बहरापन, गूँगा और पागलपन ६ महीने में आराम होगा, पूजा के लिये २२≡) भेजना होगा। देवता-गण दवा देने के लिये स्वीकार न करें रुपया वापस किया जायगा।
श्रीमती कल्याणीदेवी, मार्फत दीजोपद चक्रवर्ती
खेजुरडांगा पुरुलिया, मानभूम

अलकपरी—
केशों को बढ़ाने वाला केशतैल
'अलकपरी' का कोर्स
पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।
६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।
मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एकमहीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्
अलकपरी
नया कटरा इलाहाबाद

प्रफुल्लता देनेवाली
'जय' की सुगन्ध आपको बहुत पसन्द आयगी

TJ. 643

मखमल-जैसी सुकोमल स्पर्श-भावना और रोम-रोम में सिहरन पैदा करनेवाली सुगन्ध का अपूर्व आनन्द लूटने के लिए टाटा के 'जय' साबुन का प्रयोग कीजिए। 'जय' का स्वच्छताकारक घना फ़ेन उसे समुचित मूल्य पर मिलनेवाला एक रईसाना साबुन बना देता है। इसका प्रयोग कीजिए और आनन्द लूटिए।

A TATA PRODUCT

जय नहाने का साबुन

टाटा का उत्पादन

भारतीय पूँजी से भारतीयों की व्यवस्था के अन्तर्गत भारत में ही बनाया जाता है।

दी टाटा ऑइल मिल्स
कंपनी लिमिटेड

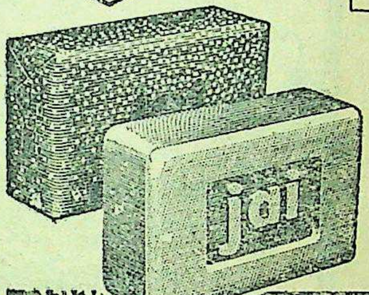

—सन् १९५७ में क्या होगा ?—

को लेकर रूस तथा अमरीका के बीच युद्ध की गहरी आशंकाएँ हैं। कई राजनीतिज्ञ मार्च १९५० में युद्ध की सम्भावना करते थे। वे श्री अरबिन्द के पास आये और इस सम्बन्ध में उसने कहा। पर श्री अरबिन्द ने विश्वास नहीं किया। एक बार जब मैंने पूछा तब उन्होंने निश्चित रूप से कहा—'संकट १९५७ में ही आयेगा।' श्री माँ का ऐसा निश्चय है कि १९५७ में कुछ अवश्य होगा।

प्रश्न—'यदि युद्ध न हुआ तो पाकिस्तान का विघटन किस प्रकार सम्पन्न होगा ?'

उत्तर—आन्तरिक गड़बड़ी या अस्तव्यस्तता में ऐसा हो सकता है।'

श्रीनाथसिंह-लिखित पुस्तकें

उपन्यास और कहानियाँ

नयन तारा १।।)

अनेक समालोचकों की राय है कि हिन्दी में श्रेष्ठ और रोचक कहानियाँ लिखने में श्री श्रीनाथ सिंह बेजोड़ हैं। यह उन्हीं की १६ चुनी हुई कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी ऐसी है कि आप शुरू करने पर बिना पढ़े न छोड़ेंगे।

अपहृता ।।)

इस पुस्तक में उन वीर नारियों की साहसपूर्ण कहानियाँ हैं जिन्हें पाकिस्तानी अपने अधीन नहीं कर सके और जो अन्त में भारत पहुँचने में समर्थ हुईं।

प्रजामण्डल २)

यह अनोखी घटनाओं से भरा एक उपन्यास है जिसमें दो स्त्रियों के अद्भुत साहस की कहानी है जिन्होंने कि एक भारतीय महाराजा से अपनी रक्षा ही नहीं की, सम्पूर्ण प्रजाजनों को भी बन्धनमुक्त किया। सन् १९४२ में बिहार की सरकार ने यू० पी० की सरकार से इस पुस्तक को जब्त करने की सिफारिश की थी। परन्तु यू० पी० के एक सहृदय अधिकारी ने इसकी रक्षा की। यह बहुत ही रोचक उपन्यास है।

'दीदी' के ग्राहकों को डाक व्यय माफ

पता—मैनेजर 'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद—२

बालोपयोगी

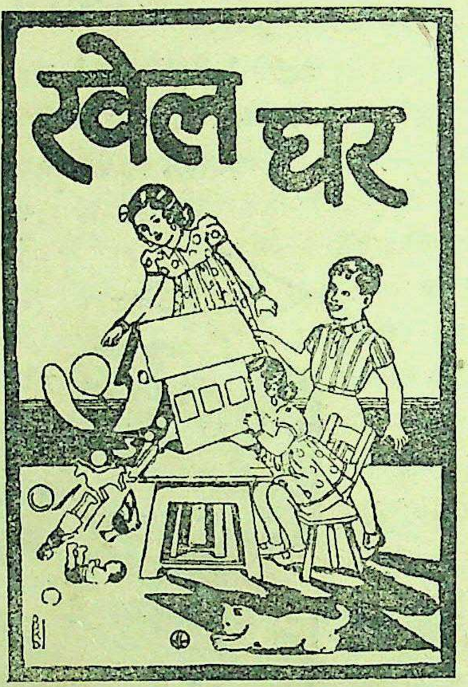

खेल घर ... ... १)

अनोखी कविताओं, मजेदार कहानियों दिल लुभाने वाले चित्रों और बहुतेरी अन्य रचनाओं का खजाना।

बालगीत ... ... ।)

बहुत ही छोटे बच्चों के लिये मोटे टाइप में छपी मजेदार सचित्र तुकबन्दियाँ। प्रत्येक पृष्ठ सचित्र है।

तीन दुमकटों की कहानी ... ।)

शिक्षाप्रद और हँसाने वाली कहानियाँ।

गाँधी जी ... ... ≡)

इसमें महात्मा गाँधी की संक्षिप्त जीवनी, बहुत ही सरल छन्दों में वर्णित है।

अनोखी यात्रायें ... ... ।=)

ज्ञान वर्धक मजेदार सचित्र कहानियाँ।

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	"
३—कुमारी कमल सहाय, आरा	"
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया	"
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	"
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग	"
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१२८)
९—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता	१००)
१०—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई	"
११—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	"
१२—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	"
१३—श्रीमती निर्मला गोविल, आगरा	"
१४—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर	"
१५—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	"
१६—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	"
१७—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	"
१८—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	"
१९—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	"
२०—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	"
२१—श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून	"
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता	"

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ॥) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मंगावें। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

मुन्ना ने कहा—'अम्मा ! इस बार, वर्ष गांठ पर मैं 'बालबोध' अवश्य लूँगा ।'

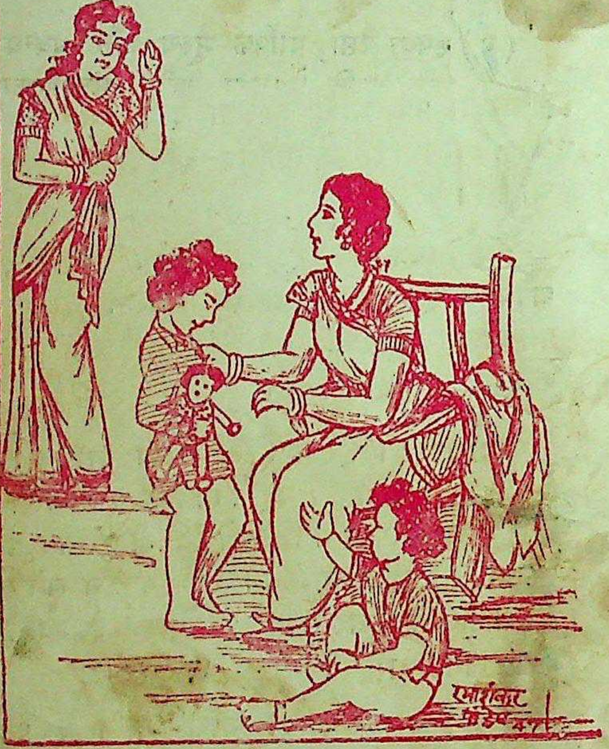

अम्मा बोली—'वर्ष गांठ तो तेरी अभी दूर है बेटे ! पर 'बालबोध' का वार्षिक मूल्य ३) मैंने मनिआर्डर से भेज दिया है। अतएव बालबोध तुझे इसी जनवरी से मिलने लगेगा। पर हाँ, वर्ष गांठ पर कोई और चीज न माँगना।'

'विश्वास रखो अम्मा !! और कुछ नहीं मागूँगा।'

मुन्ना हर महीने बालबोध पढ़ता है और दिन पर दिन बुद्धिमान होता जा रहा है। आप के घर में भी छोटे बच्चे हों तो उनके लिए बालबोध अवश्य मँगावें।

बालबोध छोटे बच्चों का मासिक पत्र है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ और ज्ञान-विज्ञान के विविध लेख आदि इस प्रकार छाप दिये जाते हैं कि छोटे बच्चे उन्हें पढ़ और समझ सकें। बालबोध का वार्षिक मूल्य ३) है। आज ही मनिआर्डर भेजें।

मैनेजर—'बालबोध'
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद—२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

[illegible]

दीदी

मार्च, १९५५

॥)

४२६ ३२

२४-११.११

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न
प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दादी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—श्री राधारानी [धारावाहिक उपन्यास] १२६
२—तीर्थ-यात्रा [श्री श्रीनाथसिंह] १३२
३—अस्सी कांटे [श्री नरेश जैन] ... १३६
४—उदय-अस्त [श्री शिवप्यारे लाल शुक्ल] १४८
५—खेजाब [श्री निशीथकुमार राय बी० ए० एल-एल० बी०] १५१
६—साझे का घर [श्री श्रीनाथसिंह] ... १५७
७—साढ़े सात आने का दान [श्री बुद्धिसागर वर्मा विशारद बी० ए० यल-टी०] १६५

लेख

१—बच्चे का रोज नामचा [श्रीमती सुभद्रा-देवी] १२२
२—कला पूर्ण घरेलू कढ़ाई [श्रीमती सुशीला कुमारी चौहान] १२५
३—जो मैं न कर सका [श्री श्रीप्रकाश राज्य-पाल, मद्रास] १२६
४—हिन्द-चीन में नारी जीवन [श्री चन्द्रबली सिंह एम० ए० (हनोई से)] ... १३७
५—उर्दू शायरों की होली [श्री शाह नसीर फरीदी] १४६
६—यह भी एक गलती है [श्रीमती कमला दीक्षित] १५५

कविताएँ

१—गीत [कुमारी विद्यावती विशारद] १२१
२—गीत [कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०] १३६
३—गीत [श्री सोमेश्वरसिंह एम० एल० ए० (वि० प्र०)] १३८

फुटकर

१—हास्य-विनोद १२६
२—आकर्षक गृह १५०
३—रोटी बनाने का कारखाना ... १६३

स्तम्भ

१—रसोई १५६
२—आपको कुछ पूछना है? १६४
३—विविध विषय १६८
४—अपने विचार १७१

दीदी

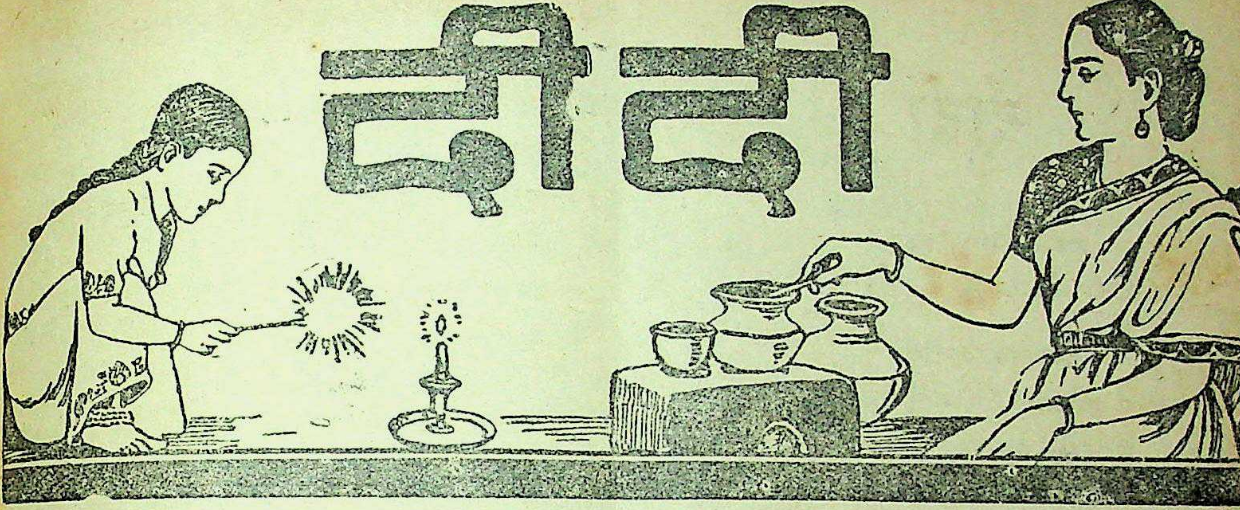

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १६ } इलाहाबाद, मार्च १९५५ { संख्या ३

गीत

लेखिका, कुमारी विद्यावती विशारद

कहीं छिपा लूँ प्रिय की छवि को, इन नयनों की कोर में।
तो शायद बँध जायेंगे वो, मृदुल स्नेह की डोर में॥

चमकेगी स्मृति की बिजली,
भावों के घन आयेंगे।
सजल जलद से बरस-बरस कर,
मानस - सर लहरायेंगे।
क्यों न मिलेंगे मन के मोती,
उर्मिल मंजु हिलोर में।
कहीं छिपा लूँ प्रिय की छवि को,
इन नयनों की कोर में॥

सावन की भीगी रातों में,
चँदा आँख-मिचौनी खेलें।
अभ्र - खंड की ओट में तारे,
खोज-खोज कर उलझन झेलें।
उलझ-सुलझ कर मन रम जाये,
मन - मोहन चित चोर में।
कहीं छिपा लूँ प्रिय की छवि को,
इन नयनों की कोर में।

चन्द्र किरण-सी मंजु ज्योति में,
प्रिय की छवि मुस्कायेगी।
तृप्त बनेंगी प्यासी आँखें,
रूप माधुरी पायेंगी।
यदि आँसू आय पलकों में,
उन्हें छिपा लूँ छोर में।
कहीं छिपा लूँ प्रिय की छवि को,
इन नयनों की कोर में।

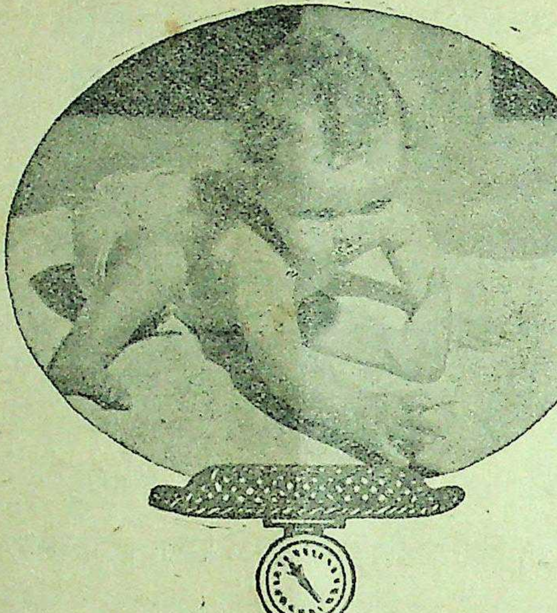

बच्चे का रोज नामचा

लेखिका, श्रीमती सुभद्रादेवी

इस लेख में लेखिका ने बच्चे के प्रथम दो वर्षों के क्रम विकाश कीचर्चा की है।

मैंने अपनी मुन्नी के जन्म से एक डायरी बना ली है। मुन्नी के पहले पहल मुस्कराने की, दाँत निकलने की पहला शब्द उच्चारण करने की तथा पहले पहल खड़े होने की तारीखें उसी डायरी में लिख ली हैं।

इस तरह मैंने देखा, लगभग १२ सप्ताह में वह मुस्कराने लगी थी और १६ सप्ताह में खिलखिला कर हँसने लगी थी। उसका पहला शब्दांश लगभग ३२ और पूरा शब्द ४८ सप्ताह के बाद सुनाई पड़ा था।

तन्दुरुस्ती, प्रसन्नता और बच्चे की समुचित देख रेख उसे एक निश्चित क्रम से उन्नति की ओर बढ़ाती रहती हैं। बच्चे की उन्नति का क्रम हमेशा और हर जगह एक सा ही रहता है। यह बात जरूर है कि किसी बच्चे के विषय में समय का अंतर कुछ कम हो जाय और किसी में कुछ अधिक। कमजोर और चिड़चिड़े बच्चे किसी न किसी परेशानी में पड़े ही रहते हैं। जिससे उनकी उन्नति में देर लगती है।

बच्चों की बोली

बच्चों की किलकारी धीरे-धीरे शब्द का रूप धारण कर लेती है। बच्चे सबसे पहले 'मा' और फिर 'दा' कहते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि इसके उच्चारण में जीभ को इधर-उधर नहीं ले जाना पड़ता। 'मा' तो केवल ओठों की सहायता से ही उच्चारण हो जाता है। दूसरा शब्द 'दा'

मुँह खुले रहने पर बड़ी आसानी से उच्चारण हो जाता है।

यही कारण है कि बच्चे सबसे पहले 'मा' कहते हैं इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चे सबसे पहले अपनी माता को ही पुकारते हैं। यह तो उनका बोलने का प्रयास ही है। इसके बाद बच्चे विभिन्न वस्तुओं के नाम लेने लगते हैं उस समय वे चीजों का केवल नाम लेकर ही अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं।

बच्चे का चलना

शरीर में नसों का जाल बिछा हुआ है। इन सभी नसों का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। सबसे पहले हाथ, कोहनी और भुजा की नसें पुष्ट होती हैं। जब हाथ की नसें मजबूत हो जाती हैं तो बच्चा आगे को फिसलने की कोशिश करता है। लेकिन पैर मजबूत न होने के कारण वह आगे जाने के बजाय पीछे ही खिसक आता है।

हमने अपनी मुनिया की आगे फिसलने और बंकइयाँ (घुडुरुवन) चलने की तारीख अपनी डायरी में लिख रखी है। वह समय कुछ कम चार सप्ताह का है। इन तारीखों में किसी-किसी बच्चे के विषय में तो काफी अन्तर पड़ जाता है। लेकिन बहुधा बच्चे इसे ४ सप्ताह तक इस काम में लगते हैं। यह काम बच्चे की आयु के ११ मास के आस पास होता है।

बच्चे का बैठना

साधारणतया बच्चा इसके बाद बैठता है। बैठने में बच्चे को सिर के भार को साधना पड़ता है। इसके साथ ही बच्चे में, स्वतन्त्र और सीधा बैठने के लिये. शक्ति की भी आवश्यकता होती है। यह शक्ति बच्चे के पट्टों की मजबूती पर ही निर्भर होती है। बैठने और चलने की तारीख में कुछ कम या वेश २ मास का समय लगता है।

बच्चे की हाथ की शक्ति

बच्चा सबसे पहले अपने हाथ को पंजे की तरह इस्तेमाल करता है। उस समय बच्चे की अंतिम दो उँगुलियों में ही अधिक शक्ति होती है। यह काम बच्चा २८ सप्ताह के आयु के आस-पास करता है। इसी के एक मास बाद ही अँगूठे के बगल वाली और बीच वाली उँगुली में भी शक्ति आ जाती है एक साल की आयु में बच्चा अपने अँगूठे और बगल वाली उगुली को बड़ों के समान ही काम में लाने लगता है।

बच्चा जब दो मास का रहता है तब वह अपनी उँगुलियों को इधर-उधर हिलाता ही रहता है। ४ मास तक पहुँचते पहुँचते वह छोटी-छोटी चीजों को पकड़ने लगता है पालने के ऊपर लटकते हुए खिलौनों को इधर-उधर हिलाने लगता है, क्रमशः वह हाथ को रगड़ने लगता है, दोनों हाथों में कोई-न-कोई चीज लिये रहना पसंद करता है, चीजों को एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलने लग जाता है, हाथ हिलाने लग जाता है, ताली बजाने लगता है और फिर चीजों को फेकने लगता है।

दस मास के लगभग बच्चा अपने पालने की चीजों को सावधानी से नीचे फेंकना शुरू कर देता है। इस समय बच्चा छोटे-छोटे खेल जैसे खिलौने का लेना और फिर देना आसानी से खेल लेता है।

एक साल के बाद बच्चा हाथ से नकल करने लगता है। और चीजों को एक साथ रखने लगता है। डेढ़ साल का बच्चा अपने हाथों को भली-भाँति काम में लाने लग जाता है।

बच्चों द्वारा हाथों का पूर्ण रूप से उपयोग करन' बहुत कुछ उनकी मस्तिष्क और स्वायु शक्ति पर निभर करता है।

ये मेरे अपने अनुभव हैं। इसमें जो कुछ कमी रह गई हो, मैं अपनी बहनों से प्रार्थना करूँगी कि वे पूरा कर दें। जिससे प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चे को डेढ़ दो साल तक सावधानी से रखें और उसकी उन्नति को बराबर देखते रहें।

—:०:—

कला पूर्ण घरेलू कढ़ाई

लेखिका, श्रीमती सुशीला कुमारी चौहान

कढ़ाई सम्बन्धी सब प्रकार के टांकों का वर्णन पिछले अङ्कों में किया जा चुका है। इस लेख में कच्ची कढ़ाई के द्वारा वस्त्र पर सुन्दर आकृतियां बनाने की विधि बताई जा रही है।

ये कढ़ाइयाँ अति प्राचीन काल से सब देशों में चली आ रही हैं। इनमें अधिकतर कच्ची कढ़ाई (रनिंग स्टिच) का प्रयोग होता है। परन्तु इनमें बड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है। क्योंकि प्रत्येक स्टिच को एक खास नाप के अनुसार बनाना पड़ता है।

इन कढ़ाइयों में जिस वस्त्र पर कोई कलाकृति बनानी होती है उसके प्रत्येक सूत की गिनती करके सुई चलानी पड़ती है। यदि वस्त्र महीन हुआ तो यह काम जरा टेढ़ा होता है। इसीलिए ऐसी कढ़ाइयों को घरलू कढ़ाइयाँ कहते हैं। क्योंकि ये हाथ के कते और हाथ से ही बुने वस्त्र पर सुन्दरता के साथ काढ़ी जाती हैं। क्योंकि ऐसे वस्त्रों में प्रत्येक सूत की गिनती आसानी से की जा सकती है।

इसमें प्रत्येक स्टिच समान होनी चाहिए। यानी गिनती करके दो या तीन सूतों के ऊपर से सुई ले जाइये और इतने ही सूत छोड़ते भी जाइये जैसा कि होलवीन स्टिच में होता है। इसमें सुई को दो बार यात्रा करनी पड़ती है। दूसरी यात्रा में खाली जगहों पर से सुई लायी जाती है। इस प्रकार एक अटूट रेखा वस्त्र के ऊपर और नीचे दोनों तरफ दिखाई पड़ती है।

इस प्रकार की सीधी रेखा वस्त्रों की सजावट के लिये काढ़ी जाती है। अब जरा यहाँ दिये गये चित्र पर ध्यान दीजिये। इससे आपको ज्ञात होगा कि किस प्रकार एक मात्र इस कच्ची कढ़ाई से एक सुन्दर किनारानुमा कलाकृति काढ़ी जा सकती है।

वस्त्र के सूतों की गिनती के आधार पर जब आप कोई कढ़ाई आरम्भ करें तब उसकी मूल रेखा को पहले से निश्चित् कर लें। तभी आप इस नमूने की कढ़ाई को वस्त्र पर उतारने में सफल हो सकती हैं। यहाँ दिये गये चित्र को देखें। मूल रेखा की पहली यात्रा समाप्त हो गई है। अब इस रेखा को थोड़ा और ध्यान से देखें। आपको ज्ञात होगा कि यह रेखा सम्पूर्ण नमूने के बीच से टेढ़ी-मेढ़ी जाती है और इसी पर एक क्रम से और समान दूरी पर शाखाएँ फूटी हैं या अन्य नमूने कढ़े हैं। यह भी

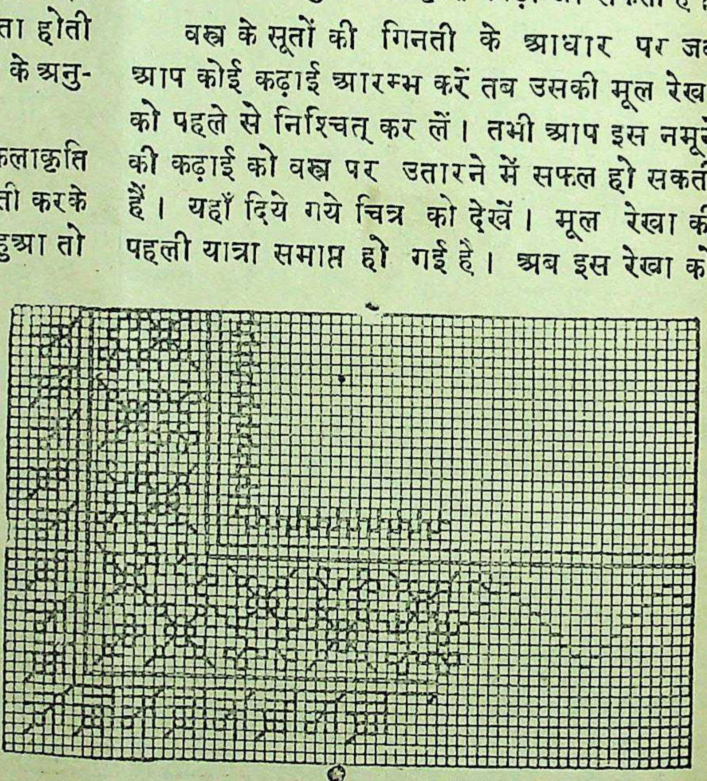

चित्र नं० १

देखें कि प्रत्येक नमूना सीधा न होकर तिरछा बना है। इसी में इसका सौंदर्य है।

इस प्रकार की कढ़ाइयों को आप पहले ग्राफ-पेपर पर निश्चित कर सकती हैं। यह नमूना जो यहाँ चित्र में है, भी ग्राफ-पेपर पर ही दिया गया है। इसमें प्रत्येक नन्हें वर्ग को एक इकाई मान कर काम किया जाता है। अभ्यास के लिये मूल रेखा को उपयुक्त शाखाओं सहित वस्त्र पर पहले से अङ्कित कर लीजिये और चाहे पैंसिल से ग्राफ बना लीजिये चाहे सूतों की गिनती कर के ग्राफ को समझ लीजिये।

वस्त्र और कढ़ाई के धागे का चुनाव

इस प्रकार की कढ़ाई में स्टिचों की क्रम-बद्धता आवश्यक है। अतएव वस्त्र ऐसा होना चाहिए कि उसके ताने-बाने के सूत समान मोटाई के और ढीले हों और आँखों पर बिना जोर डाले आसानी से गिने जा सकें। सफेद या प्राकृतिक रंगों के लीनेन अच्छे होते हैं। कढ़ाई का धागा भी उतना ही मोटा होना चाहिये जितना कि ताने बाने के सूत हों। इस प्रकार की कढ़ाई के लिए सुई गोंठल होनी चाहिए जिससे वह वस्त्र के सूतों में कहीं पर भी न चुभे। इस प्रकार की कढ़ाई आम तौर पर एक ही रंग के धागे से की जाती है। सफेद वस्त्र पर काले धागे की कढ़ाई का चलन बहुत है। परन्तु आप लाल, हरा, नीला जिस रंग का धागा काम में ले आवें, वह गहरा और चमकीला हो। दो रंग के धागों का भी प्रयोग कर सकती हैं।

काढ़ने की विधि

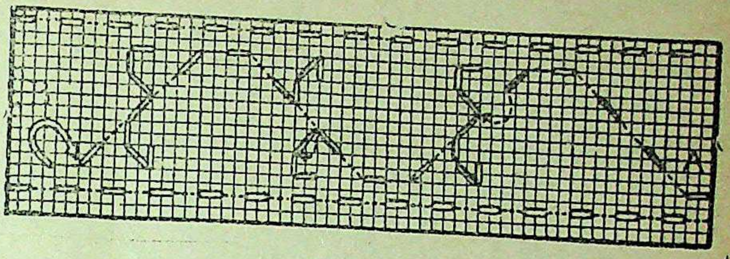

चित्र नं० २

पहले वस्त्र पर मूल रेखा को अच्छी तरह अंकित कर लीजिये। यदि किसी आसन का किनारा काढ़ना हो तब एक तरफ के मध्य से प्रारम्भ कीजिये। और इस मूल रेखा को दाँई तरफ से और बांई तरफ से बनाइए। तब कोणों के बनाने में कठिनाई न होगी।

इस कढ़ाई की विधि चित्र नं० २ में दिखाई गई है। वस्त्र के तीन सूतों की इकाई मान कर चलिए। यह ताख सख्या अधिक आकर्षक प्रतीत होती है।

दाहिनी ओर बिन्द A से आरम्भ कीजिए और मूल रेखा काढ़िये। प्रत्येक स्टिच और दो स्टिचों के बीच का स्थान समान रहे। चित्राङ्कित स्थान यह इङ्गत करता कि कहाँ कहाँ सुई वस्त्र के नीचे ले जानी चाहिए। थोड़े अभ्यास और अनुभव के बाद इस मूल रेखा में कुछ शाखाएं भी जोड़ी जा सकती हैं। शाखा के स्थान पर पहुँचने पर शाखा को आदि से अन्त तक काढ़िये और फिर मूल रेखा पर आ जाइये। चित्राङ्कित तीर' यह पद्धति बताते हैं। बिन्दु B से दूसरी यात्रा आरम्भ होती है जो कि बिस्तार के साथ चित्र नं० ३ में दिखाई गई है। इस कढ़ाई में बहुत आनन्द आता है क्योंकि इसमें पहली यात्रा में छोड़े गये स्थानों को भरना

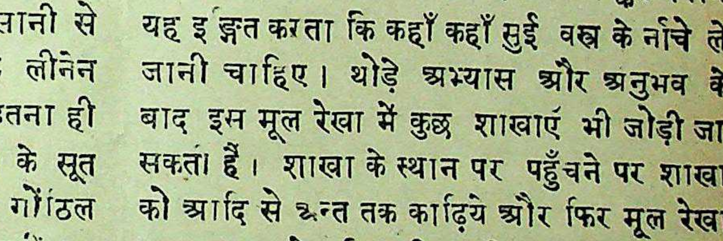

चित्र नं० ३

पड़ता है जिसमें प्रत्येक स्टिच अपने निश्चित स्थान पर पड़ती है। चित्र नं० ३ से यह भी प्रकट होगा कि दूसरी यात्रा में और भी शाखाएँ जोड़ी गई हैं, परन्तु शाखाएँ प्रथम यात्रा में या द्वितीय यात्रा में जोड़ी जायँ यह बहुत कुछ नमूने की बनावट पर निर्भर करता है।

यह ध्यान देने की बात है कि मूल रेखा पड़ी काढ़ी जाती है और इसके परिणाम स्वरूप शाखाएँ भी पड़ी ही काढ़ी जाती हैं। शाखाएँ तिरछी हों जैसा कि चित्र नं० १ में है तो नमूना सुन्दर दिखता है।

इस कढ़ाई की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें वस्त्र के ऊपर और नीचे एक-सी आकृति बनती है। अतएव एक भी स्टिच ऐसी न डालनी चाहिए जो अनावश्यक हो या यथा स्थान न हो।

हास्य-विनोद

३०० ऊँट = १ कुत्ता

खुरासान का राजकुमार लड़ाई में चला, तो उसके खाने-पीने और सुख-सुभीते का सामान ३०० ऊँटों पर लदा।

लड़ाई का पासा उलटा पड़ा और वह खलीफा इस्माइल का कैदी हो गया, पर भूख तो कैदी का भी साथ नहीं छोड़ती।

'अरे भाई, कुछ खाना-वाना तो बना।' अपने रसोइया से राजकुमार ने कहा। उसके पास सिर्फ मांस का एक टुकड़ा ही बचा। उसे ही उसने मिट्टी की एक हण्डिया में उबलने रख दिया और किसी शाक-सब्जी की तलाश में चला।

मौका देख एक कुत्ते ने हण्डिया में मुँह डाला तो कुछ ऐसा हुआ कि वह उसके गले में फँस गयी और वह हण्डिया लिये भागा।

राजकुमार ने यह देखा तो वह खिलखिला कर हँस पड़ा।

खलीफा की ओर से पहरे पर तैनात अफसर ने पूछा—'आप इन दुःख की घड़ियों में भी इस तरह हँसते हैं?'

राजकुमार ने कहा—'मुझे यह सोच कर हँसी आ रही है कि सुबह जिस सामान के लिये ३०० ऊँट जरूरी थे, अब एक कुत्ता ही काफी है।'

गंजा सिर

एक बार एक नाई, एक गंजसिर प्रौढ़ व्यक्ति और एक मूर्ख एक साथ कहीं जा रहे थे। वे राह भूल गये और उन्हें खुले मैदान में रात काटने की नौबत आ गई। तय हुआ कि बारी-बारी से तीनों जगें जिससे कोई उनका सामान लेकर चम्पत न हो जाय।

पहला अवसर नाई को मिला। जब उसके सब साथी सो गये तो नाई को एक मजाक सूझा। उसने मूर्ख के सिर के केश अस्तुरे से साफ कर दिया। इसके बाद उसने उस मूर्ख को पहरा देने के लिये जगाया। जगने पर मूर्ख ने अपने सिर पर हाथ फेरा और वह चिल्ला उठा—'भाई नाई! तुमने बदले गलती से उस गञ्जसिर आदमी को जगा दिया।

विचित्र रिवाज

सुमात्रा-द्वीप में अब भी कुछ जङ्गलीपन बना हुआ है। वहाँ आदमी की खोपड़ी में लोग शराब भर कर पिया करते थे और यह रिवाज अब तक चला आता है। ब्याह में कन्या को मनुष्य की खोपड़ी दी जाती है। इसके बिना कन्या प्रसन्न नहीं होती। यूरोप में जैसे ब्याह के पहले वर कन्या को एक अँगूठी देता है, वैसे ही सुमात्रा में मनुष्य की खोपड़ी दी जाती है। वहाँ नया मकान बनाते समय भी लोग नींव में मनुष्य की खोपड़ी डालते हैं और इसे शुभ समझते हैं।

धारावाहिक पौराणिक उपन्यास

श्रीराधारानी

किन परिस्थितियों में व्रज में राधा का जन्म हुआ और उद्धव ने उन्हें आशीर्वाद दिया यह हम पिछले अङ्कों में बता चुके हैं। राधा कृष्ण के प्रथम मिलन की कथा यहाँ दी जा रही है।

प्रथम मिलन

गोप-बाल-बालिकाओं के बीच में खेल-खाकर राधा अब बड़ी हो गई हैं। गृह कार्यों में अपनी माता का और गृह के बाहर के कार्यों में अपने पिता का हाथ बटाने लगी हैं। अपने शील-मृदु व्यवहार और अनुपम सौंदर्य के कारण वे सबको अत्यन्त प्रिय हो उठी हैं। गोप-कुमार और कुमारिकाएँ उनका इतना आदर मान करते हैं कि मानों वे उनकी रानी हों।

माता-पिता ही नहीं अन्य ग्राम-पुर वासी भी उन्हें कोई भी काम सौंप देते हैं जिसे वे बड़ी तत्परता से करती हैं। व्रज के सारे निवासी उन्हें अपनी ही कन्या समझते हैं। उन सबको वे इतनी प्रिय हो उठी हैं।

आज नन्द ने उन्हें एक विचित्र काम सौंपा है। माता के बनाये हुए पकवान को वृषभानु और अन्य गोपों को खिला कर वे घर को लौट रही थीं कि उनके कानों में नन्द का परिचित स्वर गूँज उठा।

'राधा।'

राधा ने पीछे मुड़ कर देखा। नन्द सुन्दर पीत वस्त्रों में लपेटे एक नन्हा शिशु लिए हुए खड़े थे। उस शिशु को राधा को सौंपते हुए बोले—'बेटी, यहाँ से सीधे मेरे घर पर जाना। इस बालक को नन्दरानी को सौंप कर तब अपने घर जाना।'

राधा ने बालक को ले लिया और आश्चर्य-चकित-सी उसकी ओर देखा।

'अब जाऊँ? वे बोलीं।

'हाँ, सावधानी से जाना। बालक का कोई अनिष्ट न हो।' नन्द ने कहा।

'बहुत अच्छा।' कह कर राधा चल पड़ीं। उनकी दृष्टि शिशु पर लगी थी पर तो भी उनके पग चिर अभ्यस्त पथ पर सदा की भाँति पड़ रहे थे। नाना बिचारों में मग्न वे तेजी से कदम बढ़ाती हुई आगे बढ़ी जा रही थीं।

पिछले कई दिनों से व्रज में जिस शिशु की चर्चा थी सम्भवतः वह यही है, राधा ने सोचा। नन्द इस शिशु को सबकी दृष्टि बचा कर अपने पास

रखते थे यह उन्हें ज्ञात था। कोई-कोई कहते थे, यह किसी महान् पराक्रमी यदुवंशी राजा का पुत्र है जो राजनैतिक कारणों से चोरी से नन्द के पास पहुँचाया गया है। क्योंकि इसके प्राणों का खतरा है और इसीलिए नन्द की बलिष्ट बांहों की छाया में रखा गया है जिससे इसकी रक्षा हो।

आगे कदम बढ़ाती हुई राधा ने उस शिशु को चुमकारा। शिशु राधा की चुमकार के उत्तर में मुस्कराया। अद्भुत मुस्कान थी वह। राधा उस पर मुग्ध हो गईं। उन्हें लगा कि जैसे वह नन्हा शिशु ही उनका प्रियतम हो। लज्जा से उनके दोनों कपोल रक्तिम हो उठे। उनकी श्वास-प्रणाली गतिवान हो उठी। हाय! यह वे क्या सोचती हैं? लोग उन्हें क्या कहेंगे? वे खिन्न हो उठीं।

उसी समय बड़े जोर की आंधी आई। आसमान काली-काली घटाओं से महा भयानक प्रतीत होने लगा। बन-पथ में रात्रि का-सा अँधेरा छा गया। राधा ने अपने अञ्चल में उस शिशु को छिपाया और शून्य पथ में तेज हवा के झोंकों की ओर पीठ करके बैठ रहीं जिससे बालक की रक्षा हो?

आह! नन्द ने यह कार्य उस अजान अबला को क्यों सौंपा? इस शून्य निर्जन में यदि कोई दुष्ट आ जाय तो कौन उसकी रक्षा करेगा? और यह तूफान! पता नहीं कोई दैत्य ही न इस तूफान पर चढ़ कर आया हो। राधा सिहर उठीं। भय से उनकी रोमावलि खड़ी हो गई।

उन्होंने पुनः उस शिशु की ओर देखा। उन्हें लगा कि जैसे यह शिशु पूर्ण पुरुष हो और उनकी रक्षा में सब प्रकार समर्थ हो। पर जहाँ मन में इस प्रकार के भाव का उदय हुआ वहीं यह विचार भी आया कि बन का यह शून्य पथ और यह शिशु रूप धारी यह छलिया प्रियतम! आह! यहाँ रहना तो ठीक नहीं जंचता। हे वन के देवी देवताओ, मेरी रक्षा करो! मेरे साथ-साथ चलो। शिशु को अपने अञ्चल में लपेटे आँधी से लड़ती, लम्बे कदम बढ़ाती वे नन्द के घर पहुँच गयीं और शिशु को नन्दरानी को सौंप कर राधा अपने घर भागीं।

उस दिन राधा ने भोजन नहीं किया। बड़ी रात तक वे पलंग पर पड़ी-पड़ी उसी बालक के विषय में वे सोचती रहीं। उनका मन ग्लानि से भर गया था। अपने आप पर उन्हें घृणा हो रही थी। एक नन्हा शिशु जिसे उन्हें माता की या बड़ी बहन की दृष्टि से देखना चाहिए था, क्यों कर उन्हें अन्यथा रूप में दिखाई पड़ा। अब क्या हो? आह! उन्हें क्या हो गया है? वे प्रायश्चित् करेंगी, उपवास करेंगी जब तक कि उनका मन शुद्ध न हो जायगा।

तभी गोपा आयी और उसने उसी शिशु की चर्चा उठाई। गोपा ने कहा—'नन्द ने व्रज के ऊपर भारी सङ्कट बुलाया है। वसुदेव उन्हें अपना पुत्र कंस की दृष्टि बचा कर पालने को दे गये हैं। नन्द को क्या सूझी कि वे यह बालक ले आये। कंस जानेगा तो समस्त व्रजवासियों का नाश कर देगा। मेरी तो राय है कि यह बालक उद्धव को दिला दिया जाय। वे इसको ले जाकर योग सिखावें।

वृषभानु बोले—'गोपा! नन्द ने वही किया है जो एक आदर्श पुरुष को करना चाहिए। कंस अन्यायी है। उसके मुकाबले में वसुदेव की सहायता करना हम सबका धर्म है। भले ही इस कार्य में हम गोपों का सर्वनाश हो जाय?'

'यह बालक!' वृषभानु चुप हो गये।

'कहो न क्या कहना चाहते हो?'

'यह बालक हम गोपों का नाम अमर करेगा? इसको लेकर हम कंस का राज उलट देंगे।' वृषभानु कहते गये।

'छोटा है? नहीं तो तुम शायद इसके साथ अपनी राधा को ब्याह देते।'

'ब्याह शरीर का नहीं आत्मा का होता है। मेरी चले तो मैं तो आज उसके साथ राधा को ब्याह दूँ।'

[शेष पृष्ठ १७० पर]

जो मैं न कर सका

लेखक महोदय ने अपने जीवन में बड़े-बड़े काम किये हैं पर तो भी कुछ छोटे काम ऐसे हैं जिनके न कर सकने का उन्हें दुःख है। इस लेख में आपने उन्हीं कामों की चर्चा की है।

लेखक, श्री श्रीप्रकाश राज्यपाल, मद्रास

यह तो साधारण-सी बात है कि मनुष्य के हृदय में बहुत-सी अभिलाषाएं उठती रहती हैं और जो कुछ भी काम वह करे उसके परिणाम से वह कदापि सन्तुष्ट नहीं होता और उसके हृदय में यह ग्लानि बनी रहती है कि मैं यह नहीं कर सका. मैं वह नहीं कर सका। वृद्धावस्था में यह भावना और भी प्रबल हो जाती है क्योंकि बाल्यावस्था और युवावस्था में तो यह आशा बनी ही रहती है कि हम आगे चल कर अपनी आकांक्षाएं पूरी कर लेंगे क्योंकि अभी समय काफी है, पर जब ऐसा प्रतीत होने लगता है कि मृत्यु निकट है और जब व्यक्ति विशेष यह भी अनुभव करता है कि शारीरिक और मानसिक शक्तियां शिथिल हो रही हैं तो वेदना बढ़ती जाती है कि मैंने यह क्यों किया या क्यों नहीं किया, मैंने वह काम क्यों छोड़ रखा। किसी को पुस्तक विशेष लिखने की इच्छा रही हो तो उसे दुख होता है कि मैं इसे न लिख सका। कोई योग आदि की साधना की लालसा रखता रहा हो तो उसे यह दुःख होता है कि मैं कोई सिद्धि प्राप्त न कर सका। किसी को सावजनिक सेवा विशेष की अभिलाषा रही हो, तो उसे दुःख होता है कि मैं अपनी मनोकामना पूरी न कर सका।

व्यवस्थित जीवन

साधारण प्रकार से मेरे सम्बन्ध में मेरे मित्रों और हितैषियों की यह धारणा रही है कि यह समय का बड़ी दृढ़ता से पालन करता है, सब कार्य नियमित रूप से करता है, सब पत्रों का उत्तर देता है और इसके सब कार्यों की व्यवस्था अच्छी होती है। मैं यह तो नहीं कह सकता कि कहाँ तक मित्रों के ये विचार ठीक हैं पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरी इच्छा सदा अवश्य यह रही कि सुव्यवस्थित रूप से जीवन को व्यतीत करूँ।

किन्तु चार बहुत आवश्यक कार्य जो प्रत्येक गृहस्थ को नियमित रूप से करना चाहिए, वह मैं नहीं कर सका और बराबर यत्न करने पर भी इस में असफल ही रहा। मुझे एक आश्चर्य होता है कि हर प्रकार से नियमित रूप से जीवन व्यतीत करते हुए भी मैं इन आवश्यक कार्यों को क्यों न कर पाया।

पहिली बात तो शारीरिक व्यायाम की है। यद्यपि मेरा स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा रहा; पर इसका मुझे दुख रहा कि शरीर की पुष्टि के लिये नियमित रूप से दिन प्रति दिन जितने व्यायाम की आवश्यकता होती है उतना मैंने नहीं किया। यद्यपि

बहुत से देश-विदेश के खेल खेले, बहुत-सी कसरतें कीं, घोड़े बाइसिकिल सब पर चढ़ा, मालखम कुश्ती सब सीखी, क्रिकेट, फुटबाल, टेनिस, हाकी सब में सम्मिलित हुआ, बन्दूक भी चलाई, पर समुचित प्रकार से व्यायाम का सेवन नहीं किया। यह एक भारी त्रुटि है और हम भारतवासी प्रायः इस सम्बन्ध में उदासीन रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर के बल और स्वास्थ्य के अर्थ प्रति दिन उपयुक्त व्यायाम अवश्य करना चाहिए। मुझसे यह न बना इसका मुझे दुःख है। शास्त्रों ने ठीक ही कहा है—'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।'

संध्या वंदन

दूसरी बात यह है कि मेरी समझ में प्रत्येक व्यक्ति को अपने आध्यात्मिक जीवन के अर्थ किसी न किसी प्रकार का संध्या-वंदन करना ही चाहिए। जैसे और बालकों को गुरुओं ने संध्या आदि करना सिखलाया वैसा मुझे भी सिखलाया गया, पर मैं इसे भी नियमित रूप से नहीं कर सका। मेरा यह अर्थ नहीं है कि किसी विराट् पुरुष रूपी स्रष्टा में विश्वास कर भय श्रद्धा सम्मान सहित उसकी उपासना करनी ही चाहिए। यदि हम ऐसा न करना उचित समझें तो कोई हानि नहीं है। मैं सम्प्रदायगत विचारों और अध्यात्मगत विकास को पृथक्-पृथक् मानता हूँ। हम अपनी इन्द्रियों द्वारा चारों तरफ व्याप्त पदार्थों का अनिवार्य रूप से अनुभव करते हैं। सूर्य, चन्द्र, तारे आदि की नियमित रूप से गतियों का निरीक्षण भी करते हैं। अवश्य ही हमें उन रहस्यमय शक्तियों की तरफ ध्यान देना चाहिए जो इनमें निहित हैं।

जन्म में जरा विपत्ति मृत्यु की भी जो घटनाएँ सामने घटती हैं, उन पर तो विचार करना ही पड़ता है। इन्हें देखकर मन में जो तूफान उठता रहता है, उसके शमन की भी इच्छा तो होती ही है, यदि किसी न किसी प्रकार के सन्ध्या-वन्दन अर्थात् एकाग्रचित होकर दिन प्रति दिन के सांसारिक संकटों के परे अपने को हम नियमित रूप से कुछ समय के लिए ले जा सकें तो अवश्य हमको शान्ति मिलेगी। शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक शक्ति की ही हम सबको विशेष रूप से खोज रहती है। इसके लिये हम दूर-दूर फिरते रहते हैं। पर यह सदा हमारे पास ही रहती है। उचित मार्गों का अवलंबन न करने के कारण हम इन्हें नहीं प्राप्त कर पाते, नियमित रूप से दिन प्रति दिन व्यायाम करने से स्वास्थ्य मिल सकता है, और अपने चित्त को चारों तरफ की बातों से कुछ देर के लिए प्रति दिन खींच कर एकाग्र होकर अध्यात्म के चिन्तन से शान्ति भी प्राप्त हो सकती है। मैंने अपने को इससे भी वंचित किया, इसका दुःख रह गया। भगवद्गीता में श्री कृष्ण भगवान ने ठीक कहा है:—

> तत्रैकाग्रं मनःकृत्या यतचितेंद्रियक्रियः।
> उपविश्यआसने भुज्यात योगमात्म विशुद्धयेः।

दैनिक राजनामचा

मुझे छोटेपन से कुछ इच्छा रहती थी कि मैं अपना रोजनामचा लिखूँ जिसमें दिन प्रति दिन के अपने अनुभवों को भी लिखता जाऊँ। मुझे खेद है कि यद्यपि बीच-बीच में मैंने इसे लिखा पर नियमित रूप से इसे मैं न लिख सका। तीस वर्षों तक बराबर मैं सार्वजनिक कार्यों में लगा रहा। राजनीतिक, सामाजिक शिक्षा सम्बन्धी, सभी प्रकार के कार्यों को करने का मुझे अवसर मिला। नाना प्रकार के लोगों से परिचय पाया, नाना प्रकार के स्थानों को देखा। फिर इन वर्षों के बाद जब देश को स्वराज्य मिला तो इधर करीब आठ वर्षों से दूर दूर घूमता रहा। पाकिस्तान, आसाम, दिल्ली, मद्रास सभी स्थानों पर राजकीय कार्यों से सम्पर्क रहा। खेद है इनका कोई विवरण आज मेरे पास नहीं है। मेरी समझ में यदि मेरा रोजनामचा इन वर्षों का रहता तो सम्भव है कि वर्तमान समय की क्रांतिकारी घटनाओं और उससे सम्बद्ध पुरुष विशेषज्ञों को समझने और परखने में आगे की पीढ़ियों के लिए सुविधा होती। खेद है मैं इस छोटे से सरल और उपयोगी कार्य को न कर सका। अपना रोज-

नामचा नहीं ही लिख सका। भर्तहरि ने सबको ही समुचित रूप से सचेत किया है :—

'आदित्यस्य गतागतैः अहः अहः संक्षीयते जीवितम्।'

आय-व्यय का हिसाब

गृहस्थ के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपने आय-व्यय का हिसाब किताब ठीक तरह से रखे। जो लोग हिसाब लिखते रहते हैं, उन्हें अपने खर्चे पर काबू रहता है और नियमित रूप से हिसाब रखने वाले लोगों का यह अनुभव है कि वे अपना व्यय अपनी आय के अन्दर रख सकते हैं। मैंने भी जब-जब हिसाब रखा है, तब तक यह देखा है कि मैं अपने सामर्थ्य के परे व्यय से अपने को बचाता रहा, पर मैं नियमित रूप से हिसाब नहीं ही रख सका और इसके कारण जो अत्यधिक व्यय कर डाला, उसका दुःखद परिणाम आज भी उठा रहा हूँ। महात्मा गांधी जी स्वयम् रुपये पैसे का हिसाब बड़ी फिकर से रखते रहे, उसे ठीक प्रकार से रखने पर जोर देते रहे। पर उनके अनुयायीगण सार्वजनिक पैसे की चिन्ता करते हुए भी अपने निज के आय-व्यय के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कर सके। जो कुछ हो, यह भी मानी हुई बात है कि सब लोग सार्वजनिक कार्यकर्ता नहीं होते, न उन्हें होना ही चाहिए क्योंकि संसार को चलाते रहने के लिए साधारण गृहस्थ ही अधिक उपयोगी हैं और सार्वजनिक लोग और उनका कार्य गृहस्थों के लिये ही बनाये जाते हैं और मैं सबसे आग्रह करूँगा कि वे अपने आय-व्यय का हिसाब अवश्य बराबर रखें। इसमें कोई संकोच अथवा लज्जा की बात नहीं है। इसमें उन्हें लाभ होगा। मनु भगवान का उपदेश है :—

व्यये चामुक्त हस्तयाः भाव्यम्ः

प्रतिदिन व्यायास करना, प्रतिदिन अध्यात्म! की आराधन करना, प्रतिदिन के अपने अनुभव को रोजनामचे में लिखना, और प्रति दिन के आय-व्यय का हिसाब रखना, सब के लिये आवश्यक है। और मुझे इसका खेद है कि यह सब मैं न कर सका।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि आज मैं सार्वजनिक जीवन के संबन्ध में कुछ नहीं कहना चाहता। पर एक बात कहना आवश्यक है! यह देखा गया है कि सार्वजनिक कार्य कर्ता अपने बाहर के काम में इतने लग जाते हैं, उनके लिए यह इतना रोचक और आकर्षक हो जाता है कि घर गृहस्थी की तरफ उन्हें उपेक्षा हो जाती है। साधारण गृहस्थों की ही तरह चाहिये कि सार्व जनिक जन भी अपने घर वालों की सदा फिकर रखें। अपने और उनके बीच में हृदय भेद न होने दें। उनकी इच्छाओं की पूर्ति करें, उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान रखें, नहीं तो पीछे चल कर बड़ी कष्टदायी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वहुत से भाइयों के साथ साथ मैं भी इस का कटु अनुभव करता हूँ। इस सम्बन्ध में मैं सब को सचेत कर देना चाहता हूँ। कौटुम्बिक सुख, शान्ति और प्रेम के सामने बाह्य जगत् की प्रशंसा और तथा कथित लोक प्रियता हेय है। इसे हमें न भूलना चाहिये। मैं इससे बंचित रहा। इसका जितना ही दुःख करूँ कम है।

अब कथा समाप्त होनी चाहिये! मोटे तौर से इस ६५ वर्ष के करीब की उम्र में अवश्य ही अन्यों की तरह मुझे भी दुख हो सकता है कि मैं अधिक क्यों नहीं कर सका। पर अपनी तरफ से जो कुछ मैं कर सका, और अपनी समझ में जो कुछ मैं नहीं कर सका, उसकी कहानी थोड़े में कह दी। यदि किन्ही भाइयों और बहनों को इससे कुछ लाभ हो तो आवश्य ही मुझे बड़ा ही सन्तोष होगा।

सवस्तरतु दुर्गाणि, सर्वभद्राणि पश्यतु॥
सर्वः सद्बुद्धि मापनोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु॥

—अ० भा० रेडियो के सौजन्य से

तीर्थ-यात्रा

शिशु-अपहरण की एक कहानी

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

[१]

'यदि मेरा बच्चा मेरी आँखों के सामने मर जाता या कोई उसे गोली मार देता तो मुझे इतना दुःख न होता।'

श्रीमती कृष्णगोपाल इससे अधिक न कह सकीं। अपने पति श्री कृष्णगोपाल के साथ तीन मास पूर्व जब वे तीर्थ यात्रा को निकली थीं तो उनकी गोदी में लगभग ढाई वर्ष का पुत्र 'ललन' था और आज वापस लौटीं तो गोद सूनी थी। वे ऐसी दिख रही थीं, जैसे उनका सर्वस्व लुट गया हो। उनका गला रुँध गया, आँखों से धारा प्रवाह अश्रु-गङ्गा फूट पड़ी—'आह ! मैं क्या करूँ ?' बड़ी मुश्किल से उन्होंने इतने शब्द और निकाले।

कृष्णगोपाल ने तांगे से सामान उतारा, वहाँ जो लोग जमा हो गये थे, उनकी सहायता से पत्नी को बल पूर्वक खींच कर तांगे से उतरवाया, तांगे वाले को भाड़ा चुकाया। दशों दिशाओं की तरफ हाथ जोड़ कर दशों दिक्पालों को प्रणाम किया और अपने घर के द्वार पर इस प्रकार खड़े हो गये जैसे वह नर्क का द्वार हो, अन्दर जाने से भय लगता हो।

कृष्णगोपाल दम्पती ने मान्यता मानी थी कि यदि उनके पुत्र होगा तो वे उसके समेत समस्त तीर्थों की यात्रा करेंगे। देवताओं ने उनकी प्रार्थना सुन ली थी क्योंकि तभी तो उनके यहाँ एक ऐसी अवस्था में पुत्र ने जन्म लिया था जब किसी को सन्तान की आशा नहीं रह जाती। इससे पति पत्नी नयी उमङ्गों से भर गये थे, सर्वथा जवान से हो गये थे। बड़े हौसले के साथ पुत्र समेत तीर्थ यात्रा को निकले थे और वापसी पर बड़े पैमाने पर भोज और उत्सव का आयोजन कर गये थे। परन्तु आज जब वे अपने घर के द्वार पर खड़े हुए तब उन्हें लगा कि सब नक़शा ही बदल गया है।

जिस प्राणों से प्यारे पुत्र को लेकर वे तीर्थ-यात्रा को निकले थे उसे गवा कर आये हैं, यह समाचार तत्काल ही सारे मुहल्ले में फैल गया। इष्ट-मित्र और मुहल्ले वाले सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिये उमड़ पड़े।

स्वजनों सम्बन्धियों और चिर परिचितों के बीच में अपने आपको पाकर उन्हें कुछ शान्ति मिली। घर सूना था और ऐसा लगता था जैसे काटने दौड़ता हो तथापि सबकी सहानुभूति पाने पर उन्हें कुछ शक्ति प्राप्त हुई और वे पत्नी समेत अन्दर गये।

आँगन में पहुँचते ही पत्नी तो फूट-फूट कर रोने लगी और कृष्णगोपाल ने संक्षेप में सबसे बताना आरम्भ किया कि उनका पुत्र कैसे गायब हुआ है!

उन्होंने कहा—'रामेश्वरम् का दर्शन करके हम लौट रहे थे। मदरास से गाड़ी बदली करके बेजवाड़ा पहुँच रहे थे। यहाँ से हमारे साथ एक और सज्जन सवार हुए। देखने में वे काले थे पर चेहरा बहुत ही भोला प्रतीत हो रहा था। उनके साथ उन की पत्नी थीं। दक्षिणी वेष-भूषा से सुसज्जित। वे कुछ गेहुएं रङ्ग की थीं और वे भी अपने पति के समान ही बहुत भोली प्रतीत हो रही थीं।

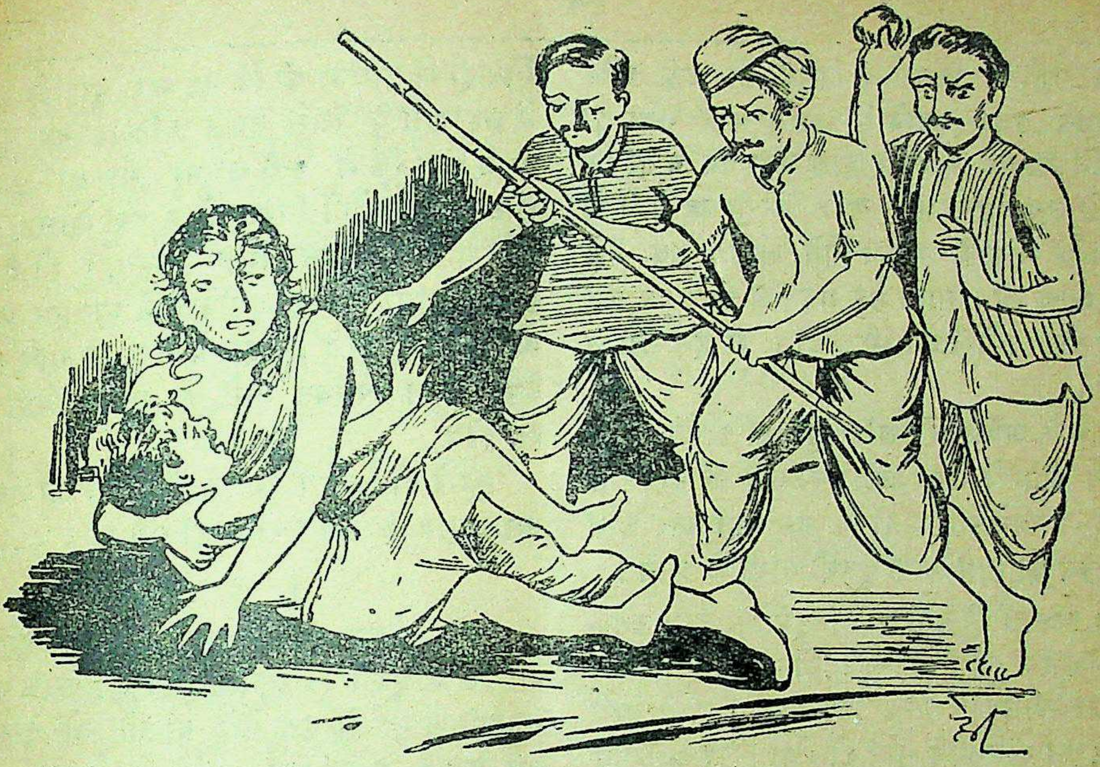

पुलिस ने अपाहिजों की बस्ती पर छापा मारा !

हमारे बच्चे को देख-देख कर ये दोनों मुस्कुराते थे और फिर न जाने क्या तर्क-वितर्क करते थे। बच्चा इनकी तरफ आकर्षित हो गया था। एक बार तो पति महोदय ने अपने दोनों हाथों से बच्चे को खींच कर अपनी पत्नी की गोद में दे दिया।

उस समय मैंने देखा कि उनके एक हाथ की त्वचा बाहर की तरफ उंगलियों के पास कुछ छिली-सी है। मैंने उसके बारे में पूछा कि क्या है और कैसे हो गया है पर उन्होंने कोई सन्तोष जनक उत्तर न दिया। ऐसे रहस्यमय व्यक्तियों के पास मैंने बच्चे को रहने देना उचित न समझा और बलपूर्वक उसे खींच कर पुनः अपनी गोद में बैठाल लिया। इससे बच्चा कुछ मुझसे अप्रसन्न हुआ और अपनी माता की गोद में चला गया।

वे सज्जन और उनकी पत्नी पुनः बच्चे की ओर माधुर्य पूर्ण इशारे करने लगे। वे मुस्कुराते और बच्चा भी मुसकुराता। अपने शिशु के प्रति ऐसा अनुराग प्रदर्शित करने वालों की इन चेष्टाओं को देख कर मेरी पत्नी बहुत प्रसन्न हुईं और उस स्त्री से घुल-मिल कर बातें करने लगीं।

इतने में बेजवाड़ा स्टेशन आ गया। वे दम्पती वहाँ उतर गये और खिड़की के पास खड़े होकर बच्चे से हाथ मिला रहे हों और विदा ले रहे हों ऐसा अभिनय करने लगे। मेरी पत्नी भी बच्चे को उत्साहित कर रही थीं कि उन्हें हाथ जोड़े और विदा दे। अनुचित न होगा, यदि कहूँ कि मेरी भी मति मारी गई थी। मैं भी मन ही मन इसका आनन्द ले रहा था।

इञ्जन का स्वर बदला। उसकी सीटी सुनाई पड़ी और गाड़ी चल दी। बच्चा खिड़की के बाहर झांक रहा था और वे दम्पती उसे चुमकारते हुए प्लेट फार्म पर गाड़ी के साथ-साथ चल रहे थे। एकाएक उस पुरुष की बलिष्ट बाहों ने बच्चे को आबद्ध करके चलती गाड़ी की खिड़की के बाहर खींच लिया।

मेरी पत्नी तो किंकर्तव्य विमूढ़ हो उठीं और केवल इतना कहा—'अरे! 'ललन' कहाँ गया ?' और मैंने खिड़की के बाहर हाथ बढ़ा कर चाहा कि बच्चे को उस दुष्ट से छीन लूँ। परन्तु वह तेजी से भागा और भीड़ में गायब होने लगा। तब मैंने जञ्जीर खींच ली। गाड़ी रुक गई। मैं उतर कर उस के पीछे दौड़ा। मेरी स्त्री भी दौड़ीं। पर हम उसे न पा सके।

रेलवे के अधिकारी और पुलिस आदि जमा हो गये। मैंने रो-रोकर क्षण मात्र में सारी बातें बता दीं। सबने सलाह दी कि हम यहाँ उतर जायँ और बच्चे को प्राप्त करके दूसरी गाड़ी से आयें।

हम तत्काल ही उतर गये। हमें असबाब उतारने की फिक्र न हुई। परन्तु गाड़ी पर बैठे यात्रियों ने हमारा असबाब नीचे फेंक दिया। गाड़ी चली गई। स्टेशन धीरे-धीरे सूना हो गया। मेरे असबाब के पास ही एक सन्दूक पड़ा था। वह उन्हीं रहस्यमय व्यक्तय का सन्दूक जान पड़ा। सबकी उपस्थित में पुलिस ने उसे खोला। उसमें से अत्यन्त घिनौने दुर्गन्धि पूर्ण मैले कपड़े निकले। जो हमारे ललन को ले गये थे उनका ही यह सन्दूक हो सकता है यह मैं मानने को तैयार न था। पर पुलिस के एक सिपाही ने जो सम्भवतः इस प्रकार के व्यक्तियों से परिचित था बतलाया कि यह सन्दूक और इसके अन्दर के कपड़े निश्चय ही उसी व्यक्ति के हैं जो मेरे ललन को हर ले गया है। उस सिपाही ने बताया कि एक प्रकार के भिखमंगे होते हैं जो अपने हाथ या पांव में एक छोटा-सा वास्तविक घाव बना लेते हैं और उसके दो तरफ काफी दूर तक किसी पशु का ताजा मांस पीस कर चुपड़ देते हैं इससे पूरा हाथ या पैर सड़न से युक्त और छिला-छिला-सा दीखता है।

मुझे सिपाही के इस कथन में सच्चाई जान पड़ी और मैंने गिड़गिड़ा कर उससे प्रार्थना की उस क्ति का हाथ मैंने छिला-छिला सा देखा था और ये मैले वस्त्र निश्चय ही उसकी निशानी हैं। मैंने उस सिपाही से प्रार्थना की कि वह मेरे पुत्र को खोजने में सहायता दे जिसे उसने स्वीकार कर लिया। उसने कहा कि मैं पत्नी को घर भेज कर जल्दी ही लौट आऊ। ढोंगी भिखमगों में उसे खोजना पड़ेगा कहीं न कहीं अवश्य मिल जायगा। सो मैं इन्हें छोड़ने आया हूँ। कृष्णगोपाल ने व्यथातुर पत्नी की ओर इशारा करते हुए इस प्रकार का भाव बनाया जैसे वे वहाँ उपस्थित जनों से तुरन्त विदा माँग रहे हों।

दूसरे ही दिन वे पुनः जहाँ बच्चा खो गया था उसी स्थान के लिये रवाना हो गये।

[२]

कृष्ण गोपाल को बेजवादा स्टेशन पर कुली की पोशाक में घूमते १० दिन हो गये हैं। आज उन्होंने रेलगड़ी से उतरते एक ऐसे दम्पती को देखा जो उस दिन के रहस्य मय व्यक्ति से मिलता जुलता था। उसके बाँएँ पैर में घुटनों के नीचे एक बड़ा-सा चकत्ता था। उन्होंने लपक कर सन्दूकउठा लिया।

'हम ले चलेंगे इसे।'

'नहीं बाबा हम को कुली न चाहिए।'

परन्तु कृष्ण गोपाल ने तब भी सन्दूक न छोड़ा उसे उठा कर अपने सर पर रखने लगे। दम्पती ने बल पूर्वक सन्दूक छीनना चाहा। तब तक पुलिस का वही सिपाही आ गया।

'खोलो। इस सन्दूक के अन्दर क्या है।'

'कुछ नहीं बाबा हमारे कपड़े हैं।'

'नहीं इसके अन्दर अफीम है। खोलो इसे।' सिपाही अधिकार के स्वर में बोला।

काफी लोग जमा हो गये। उस दम्पती ने पुलिस के सिपाही को दूर ले जाकर एकान्त में कहा 'सन्दूक ले जाने दो १) देंगे।'

'निकालो।'

तुरन्त १) का एक नोट सिपाही के हाथ में आ गया। इसे वहाँ उपस्थित समस्त लोगों ने देखा, सब ने यही समझा कि सिपाही इसे छोड़ देगा पर कुली का भेश धारण किये हुये कृष्ण गोपाल को

उस सिपाही में अधिक विश्वास था। वे सन्दूक अपने सिर धरे जहाँ के तहाँ मौन खड़े रहे।

सिपाही ने बनावटी क्रोध दिखाते हुए उन्हें डाट कर कहा—'रक्खो जी सन्दूक नीचे।'

कृष्ण गोपाल नीचे सन्दूक रख दिया। सिपाही बोला—देखिए जनाब ! इस कुली ने मुझे आप से १) लेते देखा है। कुछ इसे भी दो नहीं तो यह मेरी शिकायत कर देगा, मैं नौकरी से निकाला जाऊँगा।'

'क्या दे दूँ इसे ?'

'१) इसे भी दो।'

उस व्यक्ति ने जैसे १) का दूसरा नोट निकाल कर कृष्ण गोपाल की ओर बढ़ाया।

कृष्ण गोपाल सिपाही की ओर विनय भरी दृष्टि से देखने लगे। मानों उन्हें रुपया नहीं, सन्दूक की तलासी चाहिये। उनका मन बोलने लगा कि उनके पुत्र का सुराग इस सन्दूक के खुलने पर चला जायगा।

वे न बोले—'मैं १००) और दूँगा। यदि यह मनुष्य यह सन्दूक खोकर मुझे दिखा दे।'

'तुम कुली ! तुम १००) दे सकते हो।'

'हाँ दूंगा।'

'निकालो।

अब तो वहाँ जो लोग जमा हो गये थे उनकी भी इच्छा हुई कि यह सन्दूक खोला जाय। अवश्य इसके अन्दर कोई भारी भेद छिपा है।

सन्दूक खोला गया। ऊपर ही एक पिटारी रखी थी। उसे उस स्त्री ने झट उठा लिया।

'इसमें क्या है ?'

'सांप ?'

'खोलो इसे ?

'नया पकड़ा है। खोलेंगे तो सबको काट लेगा।'

अब तो सब लोग बहुत घबराए।

सन्दूक के अन्दर पहने ओढ़ने के कपड़ों के सिवाय और कुछ न था। पर ये कपड़े वैसे मैले न थे।

'इस सन्दूक को खोलने से तुम इतना घबराते क्यों थे ?' कृष्ण गोपाल ने पूछे।

'सांप लेकर रेल में कैसे चल सकते हैं ? इसी से छिपा कर ले जा रहे हैं।'

इसमें सांप है !' कृष्ण गोपाल ने उस स्त्री के हाथ से पीटारी छीन ली।'

'हां, खोलना मत नहीं तो मैं नहीं जानती।'

'मैं चाहता हूँ कि सांप मुझे काट ले मैं मर जाऊँ।'

'हाँ हां हां !' वह स्त्री चिल्लाती ही रह गई और कृष्ण गोपाल ने वह पिटारी खोल डाली।

क्या देखते हैं कि उसके अन्दर एक मानव शिशु है जिसके मुह में कपड़ा ठुसा है और हाथ पांव पीछे को बँधे हैं।'

'बाबा मैंने इसे २५) में खरीदा है।

'और इसका हाथ पांव इस तरह क्यों बांधे हो मुह में कपड़ा क्यों ठूसे हो।'

वह व्यक्ति कुछ कहे इसके पहले ही कृष्ण गोपाल ने बच्चे के बन्ध खोल दिये और उसके मुँह से कपड़ा निकाला।

बालक अब भी गुपचुप पड़ा था। जैसे उसमें जान ही न हो। पर साँस चल रही थी।

उसको देखने के लिए चारों तरफ से भीड़ उमड़ने लगीं। वे दोनों गिरफ्तार हो कर तुरन्त ही पुलिस कैद में भेजे गये और बालक को कृष्ण गोपाल अपने दोनों हाथों में लिये हुये पुलिस के आदेशानुसार निकट के थाने पर ले गये। भीड़ उनके पीछे पीछे चली।

बालक न तो आंख खोलता था और न बोलता था। गुमसुम जैसे निर्जीव हो पड़ा था। तुरन्त ही अस्पताल पहुँचाया गया।

डा० ने परीक्षा करके बताया कि बच्चे को बड़ी मात्रा में अफीम खिलाई गई है। शायद ही बचे।

'डाक्टर इसे बचाइये ? यह मेरा ललन है।' कृष्ण गोपाल ने आर्त स्वर में पुकारा।

'धैर्य रखो। मुझे काम करने दो।,

कृष्ण गोपाल बालक के पास से हटा दिये गए और डाक्टर ने यन्त्रों के सहारे उसके पेट की सफाई की।

बालक अब भी आंख बन्द किये सुस्त पड़ा था।

इसे छेड़ना मत। एक या दो घन्टे में ईश्वर चाहेगा तो ठीक हो जायगा। डाक्टर तो चला गया पर कृष्ण गोपाल उसके पास बैठे देव पितर मनाते रहे कि वह आँख खोले, कुछ बोले।

एक घंटे बाद बालक ने आंख खोल दी। अपने मुख पर झुके अश्रु पूर्ण पिता का मुख देखा तो जैसे उसकी चेतना लौट आई। वह उनसे लिपट गया और सिसकने लगा।'

'बाबू।'

'ललन।'

कृष्ण गोपाल ने बालक को उठाकर अपनी छाती से चिपटा लिया।

[३]

दूसरे दिन पुलिस ने नगर के बाहर अपाहिजों की बस्ती पर छापा मारा। वहाँ वैसे ही १८-१२ बच्चे मिले। किसी की आँख फोड़ दी गई थी। किसी का का हाथ पाँव पीछे बधा था। किसी को लँगड़ा बनाया गया था। पता चला कि पंरू नामक एक दुष्ट व्यक्ति है जो छोटे बच्चों की चोरी करता है और उन्हे अङ्ग भंग करके या अन्धा बना कर भिखमंगों के हाथ बेचता है और भिखमंगे ऐसे बच्चों को तीर्थों में प्रदर्शित करते हैं जिससे लोग दया भाव से प्रेरित होकर उन्हें अधिक से अधिक पैसे दें।

चुटकुला

पत्नी—(नाराज होकर) तुम जब किसी सुन्दर स्त्री को देखते हो, तो दीवाने हो जाते हो, तुम्हें याद भी नहीं रहता कि तुम विवाहित हो।

पति—नहीं प्रिये! मैं जब किसी सुन्दर स्त्री को देखता हूँ तभी मुझे बराबर याद आता है कि मैं विवाहित हूँ!

गीत

लेखिका, कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

सुन्दर सपने मांगो लेकिन
सपनों का विश्वास न मांगो!

चंदन, अगर, धूप की बाती
घुलती रहे प्रहर दिन राती,
आंसू बन उपहार चढ़े या–
जले दीप - सा प्राण सँगाती!

अर्चन में नित मिटने वाले–
सुमनों का इतिहास न मांगो!

अम्बर रहे अनल की क्रीड़ा,
या धरती उच्छ्वास लुटाये,
सागर का सन्देश हिमालय–
बन्द द्वार से रिक्त फिराये।

नीर भरे ये मेघ व्यथा के–
इनसे बरबस हास न मांगो!

ऊपर ज्योति साध की निर्मल–
नीचे तिमिर भाग्य की रेखा,
मिट्टी का तन शेष रहेगा–
इसे शलभ ने कभी न देखा!

श्वासों के सूखे मधुवन में–
प्राणों का मधुमास न मांगो।

हिन्द-चीन में नारी जीवन

लेखक, श्री चन्द्रबलीसिंह एम० ए० (हनोई से)

यों तो हिन्द-चीन ही क्या दक्षिण पूर्व एशिया के अधिकांश निवासी मंगोल वंशज हैं। मंगोल वंशज के प्रमुख गुण उनकी आकृति है। प्रथम दृष्टि पड़ते ही यह विदित हो जाता है कि यह व्यक्ति मंगोल वशी है। चेहरा गोला, रङ्ग कुछ सफेद व पीला, नाक चपटी व आँखें छोटी-छोटी होती हैं। शरीर भी अधिकांश स्थूल काय होता है। यह रूप स्त्री व पुरुष दोनों का होता है। मैं पहले आपको हिन्द-चीन में बसने वाली स्त्रियों की आकृति व भेषभूषा तथा अन्य बातों का परिचय कराऊँगा।

आकृति में इस प्रायद्वीप की स्त्रियाँ अधिकांश नाटे कद की होती हैं। कुछ लम्बी व पतली भी होती हैं। इनकी नाक चपटी व आँखें छोटी-छोटी होती हैं। मुखमण्डल की आकृति गोली व चपटी होती है। अतः ये देखने में बहुत सुन्दरी नहीं प्रतीत होती हैं। हाँ इनका रङ्ग गोरा अवश्य होता है। यह रूप आपको बर्मा से लेकर हनोई तक में मिलेगा। हाँ हनोई शहर में कुछ असर दूसरा सा दृष्टिगोचर होता है। यहाँ की औरतों में ऊपर वर्णित आकृति तो है परन्तु उतनी नहीं हैं। कभी-कभी हमें ऐसी स्त्रियाँ भी देखने में मिलती हैं जिनका कद हम भारतीयों के बराबर होता है और कितनी तो बिलकुल हमारी काश्मीरियों की तरह दीखती हैं। इनकी नाक कुछ ऊँची, आँखें बड़ी व सुन्दर तथा मुखमण्डल भी सुन्दर आकृति का होता है। हो सकता है कि यह शहर दक्षिण पूर्व एशिया का उच्चकोटि का शहर है इसलिये यहाँ यह बात हो। इसे देख कर हमें अपने दिल्ली शहर की याद हो आती है।

पहनावा इनका भिन्न-भिन्न है। अधिकांश हिन्द चीन में स्त्रियां स्कर्टस व चोली या फ्राक पहनती हैं। बर्मा व कम्बोडिया में स्त्रियां ऊपर सुन्दर चोली पहनती हैं और नीचे सुन्दर रेशम की लुङ्गी बांधती हैं, लाओस की स्त्रियां कुछ पाश्चात्य प्रभाव के कारण स्कर्ट और ऊपर ब्लाउज ऐसा पहनती हैं। हनोई शहर की स्त्रियां भी अजीब हैं। यहाँ की स्त्रियों की वेश व भूषा देखने पर हमारे पंजाब की याद आती है। प्रत्येक स्त्री एक रेशम का पायजामा जनाना पहनती हैं और अन्दर चोली उसके ऊपर एक सफेद कुर्ता की तरह पतली बांह का कुर्ता और उसके ऊपर से एक लम्बा कुर्ता पहनती हैं। यह कुर्ता गुठनों तक होता है और बगल में फटा होता है। बांहें पतली होती हैं। बिलकुल सासू सा देखने में लगता है। पैर से गले तक सारा बदन ढका रहता है। देखने में बहुत सुन्दर लगता है। ये ऊपरी पोशाक बहुत रङ्ग-बिरंगे व बहुमूल्य होते हैं, उसी तरह जैसे हमारे यहाँ की साड़ियाँ। यह पोशाक केवल हनोई शहर की अमानत है। यह हिन्द-चीन के किसी भी हिस्से में नहीं है। अब तो कुछ औरतें कोट व पाइन्ट पूरा पहनने लगी हैं।

शृङ्गार में यहाँ की स्त्रियां बहुत बढ़ी-चढ़ी हैं। सबसे पहला शृङ्गार जो विदेशी को अपने तरफ आकर्षित करता है वह है बाल। इनके बाल इतने काले व लम्बे होते हैं कि वे नितम्ब से नीचे नागिन की तरह लटकते हुए दिखाई देते हैं। इन बालों को ये स्त्रियां खोलकर रखती हैं। कभी-कभी क्लिप भी लगाती हैं। यों तो यहाँ पीछे जूड़ा बांधने का भी चलन है और ये उस प्रकार का जूड़ा बांधती हैं जैसे हमारे यहाँ की उच्चकोटि की महिलायें चोटी करती हैं और अधिकांश दो चोटियां बांधती हैं। बाब बाल रखने का प्रचार अधिक है। यह भी

देखने में अच्छा लगता है। रेशमी चोटी व पुष्पों द्वारा ये अपने बालों को रचती हैं।

मुखमण्डल का शृङ्गार भी बहुत करती हैं। बर्मा की स्त्रियां तो अपने कपोलों पर रङ्ग लगाती हैं। यहाँ की स्त्रियां पाउडर का प्रयोग तो करतीं ही हैं। रङ्गों का भी प्रयोग बहुत होता है। कपोलों को रंगना प्रचलित है। ओठों में लिपस्टिक का प्रचार बहुत है। यहाँ तक कि कभी-कभी यह भद्दा-सा लगता है। ये गोरी तो स्वयम् ही होती हैं। यदि इन कृत्रिम ढङ्गों का प्रयोग न करें तो भी अच्छी लगती हैं।

प्रत्येक स्त्री हैट लगाती है। यह हैट किसी फूस का बना होता है, बिलकुल हलका व बड़ा होता है। यह धूप व बरसात से इनकी रक्षा करता है।

यहाँ की अधिकांश लड़कियां पढ़ी-लिखी होती हैं। आपको प्रत्येक स्कूल जाती हुई मिलेंगी। सबसे प्रसन्नता की बात यह है कि यहां के सारे काम स्त्रियां ही करती हैं। आप बाहर निकलिये तो आपको सड़क, बाजार व दूकानों तथा आफिसों में स्त्रियां ही देखने को मिलेंगी। यहाँ का सारा व्यवसाय स्त्रियों के हाथ में है। बहुत से लोग ऐसे हैं जो इन स्त्रियों के पैसे व मेहनत पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ये बड़ी परिश्रमी होती हैं।

बुराई इनमें एक है कि स्त्रियों की सख्या मर्दों से ५ गुना है इसलिये स्त्री मर्द का पीछा करती है। या यों कहो कि मर्द स्त्री को आसानी से पाता है और एक नहीं तीन या चार या पाँच जितनी चाहे रखता है। लेकिन आश्चर्य यह है कि स्त्रियां आपस में लड़ती नहीं हैं क्योंकि मर्द उनके लिये तो अमानत हो जाता है। सब अपना-अपना काम व व्यवसाय करती हैं और अपने पति को स्नेह तथा आराम से खिलाती हैं। बात अजीब ही है। यह रीति यहाँ अब भी है। हाँ नयी साम्यवादी सरकार ने इसे बन्द करने की पूरी कोशिश की है।

स्त्रियाँ मदिरा व मांस को कोई बुरा व्यसन नहीं समझती हैं फलतः दुराचरण का प्रचार है और कारण इसका विदेशियों का असर ही है। अब इन में चैतनता आ रही है और ये अपने नैतिक पतन को समझ रही हैं। फिर भी सदियों की बुराई शीघ्र नहीं जाती है। समय लगेगा।

यहाँ की स्त्रियां दस्तकारी व बुनाई के काम में बहुत ही चतुर होती हैं। इनके मनोरञ्जन साधनों में फोक डान्स इनका प्रचलित मनोरञ्जन है। प्रत्येक लड़की या लड़का गाना व नाचना जानता है। इन के प्रत्येक चाल में गुनगुनाहट और पैर के ताल व लय आपको देखने में मिलेंगे।

आपका स्वागत हर स्थान पर मधुर मुस्कराहट से होगा। थकावट या मन मोटाव इनमें देखने को नहीं है। इसलिये इनका जीवन प्रसन्न रहता हैं।

——

गीत

लेखक, श्री सोमेश्वरसिंह एम० एल० ए० (वि० प्र०)

अब चला मैं अब चला मैं
हास अपने रुदन अपने
मान औ अपमान अपने
कामनाओं की विफलता
और अगणित सुखद सपने
श्वेत चादर में लपेटे
अब चला मैं अब चला मैं
द्वेष, ईर्षा, औ घृणा के
भाव कितनों के कभी के
स्नेह, ममता और करुणा
आज कन्धों पर सभी के
शान्ति से चुपचाप लेटे
अब चला मैं अब चला मैं
नियति के निस्पृह करों में
पतन भी उत्थान भी है
और यश अपयश यहाँ का
क्षुद्र और महान भी है
वञ्चना जग की समेटे
अब चला मैं अब चला मैं

अस्सी कांटे

कन्या के लिये सबसे बड़ा दहेज क्या है ?

यह सुन्दर कहानी पढ़िये और इस प्रश्न का उत्तर सोचिये ?

लेखक, श्री नरेश जैन

[१]

गांव हरीपुर में उन दिनों बड़ी चहल-पहल थी। होती भी क्यों नहीं। गांव के प्रसिद्ध व्यक्ति लाला हरीचन्द की लड़की का ब्याह होने वाला था। चरों ओर एक उत्साह का वातावरण था। छोटे-बड़े सभी घरों में इस ब्याह की चर्चा थी। ब्याह की तैयारी में सारा गांव जुट पड़ा था।

वैसे तो गाँव में प्राय: हमेशा ही ऐसे मौकों पर एक अजीब चहल-पहल हो जाती है किन्तु लाला हरीचन्द के घर में यह पहली शादी थी और वह भी उनकी एकलौती लाड़ली बेटी सुषमा की, जिसे वह प्यार से शोखी कह कर पुकारते थे।

बात यह थी कि लाला हरीचन्द की स्वर्गवासी पत्नी श्रीमती सुखदेवी को उनके भाई ने जो कि शहर में रहता था यह सुझाव दिया था कि अब जमाना बहुत बदल गया है और उन्हें लड़की का नया नाम रखना चाहिए। उसे खुद भी आभास हुआ कि उसके रक्खे हुए सुन्दर नाम के कारण गांव वाले लड़की के मामा की-जरूर तारीफ करेंगे।

लाला हरीचन्द ने जब यह नाम सुना तो पहले तो वह कुछ सहमें। उन्हें इस नाम में कुछ शहरियत की गंन्ध आयी। किन्तु उनके साले हरीश ने उन्हें इतमिनान से समझाया—'जीजा जी, आप बेकार परेशान होते हैं। देखिये न, कुल में कन्या का होना एक बड़ी शोभा की बात होती है। कन्या का होना इस बात का सूचक है कि घर के यश, धन में अवश्य ही बढ़ोतरी होगी और कुल का श्रेय बढ़ेगा। सुषमा के भी यही मतलब होते हैं—शान, शोभा, चमक, रोशनी।'

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं।' लाला हरीचन्द ने बड़े नम्र स्वर में कहा।

दर असल में बात यह थी कि लाला हरीचन्द अपने साले के सामने नीचा नहीं देखना चाहते थे, वह नहीं चाहते थे कि किसी भी प्रकार उनका अपने साले से वाद-विवाद हो और उसमें उन्हें पराजय मिले। दूसरे उनकी धर्मपत्नी का नाम सुखदेवी भी जिसे वह प्यार से सुक्खो कहा करते थे कुछ सुषमा से मिलता-जुलता दिखाई दिया। उन्होंने झट कह दिया—'हाँ नाम बिलकुल ठीक है। पंडित जी से कहो कि नाम-संस्कार का शीघ्र प्रबन्ध करें। उस दिन नाम-करण संस्कार के दिन लाला हरीचन्द ने जी खोल कर पैसा बहाया था।

सुषमा के बाद उन्होंने अपने एक मात्र इकलौते बेटे सुशील के जन्म और नामकरण पर भी कुछ कम खर्च नहीं किया। किन्तु बात यह थी कि बचपन से ही अपने बेटे में उन्हें अच्छे लक्षण नहीं

दिखाये दिये। वह उन्हें फिजूल खर्च और आधुनिक विचारों का दिखाई दिया। वह चाहते थे कि उनका बेटा रोज सबेरे पांच बजे उठे। सुबह ही ठंडे पानी से स्नान ध्यान कर पहले मन्दिर को जाये। वहाँ से लौट कर नाश्ते में दही से बासी परावठे खाकर दो घंटे बाद ही सुबह का भोजन कर वह उनके कारोबार में हाथ बटाएँ। शाम होते ही वह एक दम सीधा घर आये और खाना खाकर जल्दी ही सो जाये। उन्होंने सुशील को लाख समझाया—'लल्ला तू तो बड़ा खोयाखेड़ी है।' किन्तु उनकी सब कोशिशें बेकार गई। वह चाहते थे कि उनका बेटा वास्तविक अर्थों में सुशील बने और सुशील पुत्र के लिये यह आवश्यक है कि पायजामे पर पम्प जूता पहने। दर्जी की सिलाई में कोई नुक्स न निकाले। छोटे-छोटे बाल रक्खे और हफ्ते में एक बार हजामत बनवाये। वह नहीं चाहते थे कि उनका बेटा जरा भी फिजूल खर्च करे। हाँ, वह उसे महीने में चार रुपये जरूर दे देने के पक्ष में थे ताकि वह बाजार आते-जाते प्रति दिन दो आने का चाटचूरन खा सके। सुशील ने दसवाँ जमात गांव के ही स्कूल से पास की किन्तु जब लाला हरीचन्द ने उस में सब विपरीत लक्षण पाये तो उन्होंने उसे यह सोच कर शहर में आगे पढ़ने के लिये उसके मामा के यहाँ भेज दिया कि लड़का वहाँ अपने पैरों पर आप खड़ा होना सीखेगा और अपने मामा की छत्रछाया में धीरे-धीरे रास्ते पर आ जायेगा।

[२]

वैसे तो अब जमीदारी खत्म हो चुकी थी और उनकी जायदाद का बहुत बड़ा हिस्सा उनके हाथ से निकल चुका था किन्तु फिर भी कुछ जमीन और एक दो मामूली मकान उनके शहर में थे जिनसे किराये की खासी आमदनी हो जाती थी। जमीदारी उन्मूलन से उन्हें दुःख न हुआ हो, ऐसी बात नहीं थी। हाँ, उनके आत्म-सम्मान को जरूर चोट पहुँची थी कि उनके बाप-दादों की जमीन कैसे पराई हो गई। क्यों इन गरीब मजदूरों और किसानों की हालत की सरकार को इतनी चिन्ता है जिन्हें भगवान् और उनके कर्मों ने ही इस योग्य बनाया है कि वे बड़े आदमियों की जीवन भर जी हुजूरी करते रहें।

किन्तु वह इतनी जल्दी हार मानने वालों में से नहीं थे। उन्होंने अनुभव किया कि जमाने में परिवर्तन अवश्य हो रहा है। अब पहले वाली बात नहीं है। बहुत सोच-समझ कर उन्होंने यह निश्चय किया कि खाली पड़े रहने से तो यही अच्छा है कि अपनी सम्पत्ति को किसी व्यापार में ही लगाया जाये। व्यापार – अपनी सम्पत्ति अपना फायदा, अपना स्वार्थ और फिर अपना राज और श्रम? श्रम भी क्यों नहीं—अपनी होशियारी, अपनी चालाकी, अपना दिमाग और अपना 'बिजनेस'। खुशी से उनका मन नाच उठा।

कौन-सा व्यापार किया जाये, यह सोचने में लाला हरीचन्द को ज्यादा समय नहीं लगा। शहर में पहले ही उनके पास कुछ मकान व दुकानें आदि थीं। गांव में अब भी उनके पास जमीन थी। दूसरे गांव के अनपढ़ खेतिहर किसानों को जब तब रुपयों की जरूरत पड़ती ही रहती है। किसी का हल चोरी हो गया तो किसी का बैल मर गया। किसी का बाप मर गया तो किसी की दादी का श्राद्ध होना है, किसी के यहाँ मुण्डन है तो किसी के बेटे का नामकरण-संस्कार और नामकरण-संस्कार भी इस शान से मानों स्वयम् भगवान् कृष्ण ने ही उसके घर में फिर से जन्म लिया हो और फिर लड़के के मुण्डन से जैसे उसके जीवन के ही मुण्डन का श्रीगणेश हो जाता है। बाप की मृत्यु और दादी का श्राद्ध बेचारे गरीब किसान की कब्र की पहली ईंट खोद डालते हैं। किन्तु फिर भी बड़ी लग्न से बेचारा भूखा और नंगा किसान, शान और अदा से अपना कर्तव्य पूरा करता है।

इस प्रकार लाला हरीचन्द गांव वालों की रुपये पैसे की आवश्यकता को पूरा करते। उन्होंने गांव

की फसल खरीदकर फिर उसे शहर में बेचने का व्यापार किया। बड़ा व्यापार, ऊँचा व्यापार।

इस व्यापार का प्रारम्भ करते वक्त लाला हरीचन्द ने न केवल गांव वालों की वरन् भगवान् और उनके भक्तों की भी खूब आव-भगत की। आस-पास के गांवों से भजन-मंडलियां बुलाई गयीं। रात भर कीर्तन-पूजन हुआ। सन्त-साधुओं के प्रवचन हुए। मनों प्रसाद बँटा। भगवान और उसके प्यारे भक्तों ने खूब भोग लगाया।

गांव के रङ्गीन लड़कों ने इस अवसर का पूरा फायदा उठाया। उन्होंने सुन रखा था कि लाला हरीचन्द की धर्म पत्नी सुखदेवी की सरस्वती के प्रति विशेष श्रद्धा थी। उन्होंने लाला जी को एक दिन घेर लिया और कहा—'सेठ जी गांव वालों का परम सौभाग्य है कि आप जैसे देवता इस गांव में जन्मे। आपके प्रताप से हम लोग धन्य हो गये। अगर आज सेठानी जी जिन्दा होतीं तो लक्ष्मी के साथ-साथ देवी सरस्वती का भी अवश्य पूजन होता। अपनी स्वर्गीय पत्नी और उसकी सरस्वती के प्रति श्रद्धा को स्मरण कर लाला हरीचन्द की आँखों में पानी भर आया। तीर निशाने पर लगा। उन्होंने भर्राये गले में कहा—'तुम लोगों ने अच्छी याद दिलाई। मैं तो भूल ही गया था। देवी सरस्वती का पूजन भी होगा बड़े ठाट से होगा।'

देवी सरस्वती को प्रसन्न करने के लिये दो रात तक विशेषगान और नृत्य का कार्य-क्रम चला, जिस में सारे गांव ने भाग लिया। काफी-काफी देर तक घुंघरुओं और संगीत की झङ्कार के बीच नृत्य हुए।

[३]

आज सुषमा के ब्याह को यद्यपि कई महीने बाकी थे लेकिन गांव में अभी से चहल-पहल होने लगी। लाला हरीचन्द ने अपने मकान की मरम्मत रंगाई-पुताई में कोई कसर बाकी न रक्खी। वैसे उनका दुमंजिला मकान काफी बड़ा था किन्तु उस का बाहरी भाग कुछ भद्दा और टूटा हुआ-सा था। वह बहुत दिन से उसकी मरम्मत करवाने की सोच रहे थे। उन्होंने सोचा कि अब सुषमा का ब्याह तो हुआ समझो। यह बहुत आवश्यक है कि मकान का बाहरी हिस्सा तो कम से कम शानदार हो। सुशील का ब्याह होगा तो सबसे पहले लड़की वाले मकान ही देखेंगे। वे भी तो यह सोचेंगे कि हमारी लड़की महलों में रहे। उन्होंने दुमंजिले मकान के बाहर शानदार नक्काशी का काम करवाया। महीनों पहले राज-मिस्त्री काम पर लग गये। दीवारों और दरवाजों पर पुराने ढङ्ग की पुताई-रङ्गाई हुई। दीवारें पीले रङ्ग की पुती और छतों पर तरह-तरह के बेल-बूटों से युक्त नीले रङ्ग की पुताई हुई जिसके पोतने में शहर से बुलाये गये एक खास राज को भी हफ्तों लग गये।

जब उनका रङ्ग पुतकर तैयार हो गया तो उन्होंने अपने मकान का भी नया नाम रखा—अपनी स्वर्गीय पत्नी के नाम पर 'सुख महल'। इच्छा तो उनकी बहुत थी कि मकान के नामकरण पर भी लक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त किया जाये किन्तु यह सोच कर कि लड़की का ब्याह नजदीक है उन्होंने यह विचार त्याग दिया और केवल लड्डू बांट कर ही सन्तोष किया।

लाला हरीचन्द अपने लड़के सुशील को लेने हफ्तों पहले शहर चले गये। सुशील ने अपने पिता लाला हरीचन्द को बहुत समझाया—'मैं अभी से गांव जाकर क्या करूँगा, पिता जी। अभी तो सुषमा के ब्याह को काफी दिन हैं। आप विश्वास रखिये शादी-ब्याह के प्रति अपनी जिम्मेदारी को मैं बखूबी समझता हूँ और इस जिम्मेदारी को मैं बड़ी शान के साथ निभाऊँगा।'

लाला हरीचन्द को सुशील के ये शब्द सुनकर जैसे विश्वास ही नहीं हुआ। उन्हें उससे ऐसे उत्तर की आशा बहुत कम थी। किन्तु वह समझे कि अब लड़का बड़ा हो गया है। दुनियादारी समझने लगा है। उसका यह उत्तर सुन वह फूले न समाये और खुशी से बोले—'मुझे तुम्हारे से यही उम्मीद थी,

बेटा। तुम चलने की तैयारी करो। अरे! स्कूल-मदरसे की तालीम से ही थोड़े कुछ होता है। शादी ब्याह का मौका है। घर में दस लोग आयेंगे। दस काम करने पड़ेंगे। मैं अकेला क्या-क्या करूँगा।'

अगले दिन लाला हरीचन्द दिन भर शहर में व्यस्त रहे और उन्होंने बेटी के ब्याह के लिये हजारों रुपयों का सामान खरीदा। गांव से वह अपने साथ ठा० छोटेलाल को भी ले आये थे जो कि शादी ब्याह के मामलों के विशेषज्ञ थे। अपनी उम्र में ठा० छोटेलाल ने अनगिनत ब्याह रचवाये थे। गांव के प्रत्येक ब्याह शादी के मामले में उनका परामर्श अनिवार्य और अन्तिम होता था। गांव लौटने से एक दिन पहले लाला हरीचन्द अपने बेटे और ठा० छोटेलाल को साथ लेकर शहर के प्रसिद्ध जौहरी पन्ना भाई माधो भाई की दुकान पर गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने बेटी के दहेज के लिये नये से नये डिजाइन और नये से नये माडल के जेवर पसन्द किये। यही तो वक्त था जब कि उनकी इज्जत खानदान और बाप-दादों का नाम ऊँचा होना था, क्या ही अच्छा मेल है। जितना ऊँचा व्यय, उतनी ही ऊँची इज्जत। जैसे इज्जत और दहेज में चोली-दामन का साथ हो! इज्जत जैसे और कुछ नहीं केवल रुपये की दासी हो।

सब सामान अच्छी तरह पसन्द कर लेने के बाद सुशील ने जब एक निगाह अपनी बहिन के शादी के जेवरातों के बिल की ओर डाली तो उसके पैर तले की जमीन खिसक गई। उसका सारा बदन कांप उठा। उसने चुपके से लाला हरीचन्द के कान में कहा—'पिता जी यह आप क्या कर रहे हैं?' लाला हरीचन्द ने जोर से हँसते हुए सुशील के कधे पर हाथ रखा और उसे भींचते हुए बोले—'बेटे! पैसा पैसे को खींचता है। यही तो व्यापार है। यही तो लेन-देन है। ये जो अस्सी हजार खर्च कर रहा हूँ वह लाख बन कर आयेंगे। आज मेरे दिल में जैसे अस्सी कांटे चुभ रहे हैं कल फूलों की शैया पर भी मैं ही सोऊँगा।' इससे पहले कि सुशील कुछ कहे ठा० छोटेलाल अपने पोपले मुख से मुस्कराते हुए धीरे से बोले—'हाँ छोटे बाबू! अगले साल आपके ब्याह में ये ही अस्सी कांटे फूल बनकर आपके घर की शोभा बढ़ायेंगे।'

सुषमा का ब्याह बड़ी धूम-धाम से और शान्ति पूर्वक सम्पन्न हो गया। उनकी बिरादरी में आज तक ऐसा ब्याह नहीं हुआ था। लड़के वाले लाला हरीचन्द की तारीफ करते नहीं थके। तारीफ करते भी क्यों नहीं उन्हें आशा से अधिक पैसा मिल गया था। दहेज मिल गया था। दहेज! मनुष्यता का सबसे बड़ा अपमान। जिसमें लड़की और पैसे को एक ही पलड़े में रक्खा जाता है। वही रुपया जिसे मन्दिरों में हाथ का मैल और माया कह कर पुकारा जाता है, यहाँ पर लड़की को नापने का पैमाना बन जाता है।

[४]

आज फिर गांव में चहल-पहल थी। क्योंकि सुशील का ब्याह होने वाला था। लाला हरीचन्द के बरसों के अरमान पूरे होने वाले थे। सुशील का रिश्ता तय करने में लाला हरीचन्द के समधी ने अपना पूरा जोर लगाया और उन्होंने अपने पास के एक पुराने और नामी जमीदार, रायमाधोपुर के लाला केशवदास के यहाँ सुशील का रिश्ता तय किया। लाला केशवदास भी पुराने खयाल के आदमी थे और उनके सन्तान भी बस एक ही थी। इससे यह स्वयम् स्पष्ट था कि ब्याह में वह अपनी लड़की पर खूब खर्च करते। दूसरे लाला हरीचन्द के समधी ने लाला केशवदास को लाला हरीचन्द के बारे में सब बातें अच्छी तरह बता दी थीं और अपने बेटे के ब्याह में लाला हरीचन्द ने जो उनकी खातिर-तवाजे की थी उससे भी उन्हें खूब बढ़ा-चढ़ा कर परिचित करा दिया।

लाला केशवदास भी आदमी खानदानी थे। वह सब समझते थे। उन्होंने लाला हरीचन्द के समधी से कहा—'लाला जी, वैसे तो मैं किस काबिल हूँ लेकिन आप जानते ही हैं मेरे घर में

सिवाय मेरी बेटी के और कोई नहीं है। अब सुशील ही मेरा बेटा और सब कुछ है।'

लाला हरीचन्द बड़े ठाट-बाट से बेटे की बारात लेकर रायमाधोपुर को रवाना हुए। बारात में कोई डेढ़ सौ आदमी थे। गांव हरीपुर का प्रत्येक सम्पन्न परिवार बारात में शामिल था। वैसे तो बारात में सभी धनी-मानी व्यक्ति थे लेकिन कुछ दो-चार गरीब परिवारों के भी व्यक्ति थे किन्तु बारात में जिनकी उपस्थिति अनिवार्य थी।

लाला हरीचन्द ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कपड़े लत्ते बनवा कर उनकी सहायता की और बारात की शान में कोई कमी नहीं आने दी। उन्होंने अपने वास्ते भी कई जोड़े नये कपड़े बनवाये। एक बढ़िया लाल रङ्ग की मलमल की पगड़ी जिसमें जरी का काम हो रहा था। जरी के काम से ही युक्त अचकन और एक हरे रङ्ग की हल्की पंजाबी ढङ्ग की जूती पहन कर लाला हरीचन्द मन ही मन बड़े प्रसन्न थे। घर में बहू आ रही थी। लक्ष्मी आ रही थी। सम्पत्ति आ रही थी और सम्पत्ति आती किसे अच्छी नहीं लगती।

रायमाधोपुर पहुँचते ही बारात का शानदार स्वागत हुआ। लाला हरीचन्द शहर से एक खास बैन्ड बारात में अपने साथ ले गये थे जिसमें इक्यावन आदमी थे। बारात पहुँचते ही बाजे वालों ने अपनी सुन्दर पोशाक में 'मार्च' करते हुए नई-नई फिल्मों के तर्जों पर बैन्ड बजाया। बारातियों को फूलों की मालाओं से लाद दिया गया। इत्र की फुरेरियों से सारा वातावरण महक उठा।

बारात को नयी धर्मशाला में ठहराया गया। इस धर्मशाला को बनवाने में लाला हरीचन्द के समधी लाला केशवदास ने काफी योग दिया था और कई कमरे उन्होंने अपने नाम से ही बनवाये थे। बारात की खातिर में कोई कमी नहीं रखी गई, लाला हरीचन्द इतने खुश होते पहले कभी नहीं देखे गये थे। होते भी क्यों नहीं। बारात की खातिर में उन्हें कोई कमी नहीं दिखाई पड़ी। आज उनके अरमान पूरे होने का दिन था। आज के ही दिन के वास्ते उन्होंने अपनी बेटी के व्याह में जी खोलकर खर्च किया था। इसी दिन के वास्ते उन्होंने अपने बेटे को बी० ए० तक की तालीम दी थी ताकि उसका बढ़िया सौदा हो सके। ऊँची कीमत उठ सके ऊँचा लेन-देन हो सके।

सन्ध्या के भोजन में नाना प्रकार के व्यंजन थे, कई प्रकार की सब्जियां, रायते, सोंठ, अचार, मुरब्बे, पापड़ इत्यादि। सात प्रकार की गांव के शुद्ध घी की वर्क लगी हुई मिठाइयों की तश्तरियां जिनके तैयार करने के लिये शहर से खास हलवाई आये थे। गांव के एक सीधे-सादे मास्टर जो कि बारात में आये थे बोले भी कि—'भई, हमें तो थोड़ा परोसो। हम तो इतना नहीं खा सकते। फिजूल बेकार जायगा।' मास्टर जी के आस-पास जो बाराती बैठे थे उन्होंने उनकी इस बात को शायद सुना भी और समझा भी लेकिन हुआ वही जो होता चला आया है। प्रत्येक व्यक्ति को उसके पेट से कहीं अधिक सामान मिला। आवश्यकता से कई कचौड़ियां अधिक। मिठाई की कई-कई तश्तरियां और वह भी बड़े स्नेह भरे शब्दों में। 'अजी वाह! अभी आपने खाया ही क्या है। अच्छा एक और। यह ठंडी कचौड़ी छोड़ दीजिये। गर्म लीजिये, बिलकुल खस्ता, गर्म और नर्म।' इस प्रकार झूठ का जो ढेर लगा वह बेकार नहीं गया वह भी इन्सानों के पेट में गया। उन इन्सानों के जो कि बाहर काफी बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गये थे। जिनमें बूढ़े भी थे और हट्टे-कट्टे नौजवान भी। स्त्रियां भी और भोले भाले मासूम बच्चे भी। किन्तु उन्हें ये कचौड़ियों के जूठे टुकड़े, मिठाइयों की आधी खाई तश्तरियां भी स्नेह से नहीं बल्कि झिड़कियों से मिलीं—'अबे क्या मक्खियों की तरह भिनभिना रहे हो। एक तरफ हटो। सबको मिलेगा।' अन्दर से जब तब कोई कह उठता।

लाला हरिचन्द बारात की यह आव-भगत देख गदगद हो गये और उन्होंने लाला केशवदास से

इठलाते हुए स्नेह भरे स्वर में कहा, 'लाला जी आप बड़े आदमी है किन्तु आप तो जरूरत से कहीं ज्यादा कर रहे है। माना कि बेटी आप है लेकिन......
बीच ही में बात काटते हुए लाला केशवदास बोले, 'अजी हम किस काबिल हैं। जो कुछ टूटा फूटा बन पड़ा है कर दिया है।'

सब काम ठीक चल रहा था। फेरे होने में कुछ ही घन्टे बाकी थे। लाला हरीचन्द को सब से बड़ा सन्तोष यह था कि उनका बेटा सुशील बिल्कुल चुप रहा था। उसने कहीं पर किसी रीति-रसम में नाक मुंह नहीं सिकोड़ा था। कहीं पर कोई विरोध नहीं किया था। किन्तु विरोध हुआ भी तो ऐन मौके पर। सुशील ने फेरो के वक्त सिर पर सेहरा बाँधने का से इन्कार कर दिया। उसने साफ कह दिया कि मैं इन बेकार रसमों को नहीं मानता। यह बात सारे बरातियों में बिजली की तरह फैल गई। चारों तरफ कानाफूसी होनी लगी। लाला हरीचन्द भी घबड़ाये किन्तु उनके सुलझे हुये मुनीम हुकम चन्द उन्हें एक तरफ को ले गये और बोले, 'सेठ जी ये कल के छोकरे समझते हैं कि हम बड़े सुधार वादी हैं। बड़े बहादुर हैं। क्या हुआ जो शादी नंगे सिर हो गई। जीत आप की हुई है, सेठ जी। घबड़ाने की कोई बात नहीं। सेहरा न बाँधने से क्या फर्क पड़ता है। सारा काम पूरा हो गया है। दहेज का सब सामान बंध कर तैयार हो चुका है। जरा सी बात के लिये क्या बखेड़ा करना। मेरी बात मानो सेठ जी। फेरे नंगे सिर ही होने दो। सादी पोशाक में ही होने दो। दुनिया कहेगी सेठ हरीचन्द बड़े सुधार-वादी थे उन्होंने पुराने रीति रसमो को नहीं माना। आप की इज्जत में चार चांद लग जायेंगे।'

बात जंच गई लेकिन सुशील के मन में तीर की तरह चुभ गई। लाला केशवदास को भी इस बात में कोइ एतराज नहीं हुआ। लाला हरीचन्द भी मन ही मन मुनीम जी की होशियारी पर मुस्कराये। सच पूछो तो उन्हें सुशील की यह जिद बहुत ही अच्छी लगी।

फेरे होने का वक्त नजदीक आने लगा। विवाह मंडप केले के बड़े बड़े पत्तों से सजाया गया था। जिसके ऊपर लाल रंग के मखमल का बेल-बूटो से से युक्त बढ़िया चंदोआ था, जो लाल केशवदास की अपनी दीदी के जमाने का था लेकिन अहतियाद से रखने के कारण बिल्कुल नया लगता था। फर्श पर बढ़िया काशमीरी कालीन बिछे थे। बीच में एक छोटी सी तिपाई रक्खी थी जिसके सोने के पत्तर पर नक्काशी का सुन्दर काम हुआ था। सब बाराती मंडप के चारो ओर बैठे पंडित जी के आने की प्रतीक्षा देख रहे थे। फेरो का समय रात के दस बजे का निकला था इसलिये उसे बड़े चौक में बरातियों के अतिरिक्त लड़की वालों के भी पचासियों आदमी इकट्ठा हो गये। मकान की दूसरी मंजिल में पास पड़ोस की स्त्रियों की भारी भीड़ जमा हो गई थी। मकान की दूसरी मंजिल में चौक के चारों ओर हरे रंग से पुते, गोल आवृत्ति के लोहे की पतली सीखों से बने जंगली के बीच में से ये स्त्रियाँ झांक झाँक कर बड़ी उत्सुकता से दूल्हे को और नीचे का दृश्य देख रही थी। नीचे चौक के अन्दर स्त्रियां सुहाग के गीत गा रही थीं। एक अजीब सा कोलाहल था।

किन्तु सुशील को न जाने क्यों मुनीम जी की वह बात बड़ी जोर से चुभ गई थी। जैसे २ फेरों का वक्त निकट आता जा रहा था सुशील की बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी। उसे रह रह कर मुनीम जी के वे शब्द जहर से भरे तीर की तरह चुभ रहे थे।........समझते हैं हम बड़े सुधारवादी हैं।' पंडित जी आ गये। पूजा का सामान भी धीरे २ कई थालियों में आने लगा दरवाजे की चिक हटी। बहू को लाल साड़ी और लाल चादर में पैर के अँगूठे से लेकर सिर तक ढांक कर उसके मामा उसे गोद में उठा कर बाहर तक लाये और उसे सुशील के दायीं तरफ बैठा दिया।

सुशील ने एक उड़ती नजर से अपनी भावी पत्नी को देखा। उसका मस्तिष्क बिचारों के भयंकर

तूफान में लहरें लेने लगा। यहीं उसकी पत्नी है जो जीवन भर उसका साथ देगी। उसके सुख दुख में हाथ बटाएगी। जिसकी आवश्यकताओं, इच्छाओं और जिम्मेदारियों का पूर्ण दायित्व उसके ऊपर है। पूर्ण दायित्व केवल और केवल उसी पर। पंडित जी ने लग्न के श्लोक पढ़ना शुरू कर दिये। स्त्रियों ने सुहाग के गीत और जोर से गाने शुरू कर दिये। बाहर बाजे वाले ने जोर जोर से फिल्मी धुने बजाई और शहनाई–नपीरी वालों ने शादी के राग। चौक में धीरे धीरे शान्त होने लगी बाजे शहनाई और नपीरी वालों को रोक दिया गया, लेकिन सुशील की अशान्ति बढ़ने लगी। उसका दिल और जोर से धड़कने लगा। साँस जोर जोर से चलने लगी। मस्तिष्क में तीर से चुभने लगे। 'बड़े बहादुर है। क्या हुआ जो शादी नङ्गे सिर हो गई। जीत आप की हुई है सेठ जी।' उसका मस्तिष्क तिलमिला उठा उसका हृदय झनझना उठा और उसकी आत्मा कांप उठी। वह गरजते हुए शेर की तरह उठा और क्रोध से चिल्ला उठा। 'रोक दो यह शादी। यह शादी नहीं व्यापार है। सिर्फ लेन देन है।'

अपने ससुर लाला केशवदास की ओर मुस्कुरा वह बड़े आवेश में बोला 'लाला जी यह शादी केवल तभी होगी जब कि मेरे साथ सिर्फ आप की लड़की आएगी। दहेज में एक पैसा भी नहीं।' अपने पिता लाला हरीचन्द को सम्बोधित कर वह आदेश भरे स्वर में बोला, 'पिता जी आप को मेरी और मां की सौगन्ध। खबरदार जो आप कुछ बोले तो। चारों ओर एक भयकर निस्तब्धता छा गई।

लाला हरी चन्द को जैसे हजारों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मार दिया। उनके सारे बदन में बिजली कौंध गई। दिल बैठ सा गया। मुँह सूख गया। जबान बन्द हो गई। चौक में बैठे सभी व्यक्ति फटी फटी आँखों से एक दूसरे का मुँह देखने लगे। स्त्रियों की फुसफुसाहट एक दम बन्द हो गई। किन्तु लाला केशवदास भी हार मानने वालों में से नहीं थे। बड़े प्यार और स्नेह से उन्होंने विनय पूर्वक कहा, 'बेटा शान्ति से काम लो। यह दहेज तुम्हारे लिये नहीं बल्कि मेरी बेटी के लिये है। तुम्हारी पत्नी के लिये है। यही संसार का नियम है। ऐसे ही संसार का व्यापार होता चला आया है।'

सुशील का चेहरा एक अपूर्व आभा से चमक उठा। अदम्य साहस और तेजी से वह बोला,- 'लाला जी, क्षमा कीजियेगा। आप जैसे व्यक्ति ही इस गन्दी प्रथा के लिये जिम्मेदार हैं। शादी के बाद लड़की की सुख-सुविधा की सारी जिम्मेदारी उसके सुसराल वालों पर होती है, न की उसके मां बाप पर। फिर सुसराल में चाहे उसकी किस्मत से उसे खाने को सूखी रोटियां ही क्यों न मिले, पहनने को फटे चीथड़े ही क्यों न मिले और घर में झाड़ू लगाने से लेकर नल से पानी भर कर लाने का काम ही क्यों न करना पड़े, लेकिन आप उसकी कुछ सहायता नहीं कर सकते। आह कन्या दान कर रहे है न कि धन सम्पति दान।'

ला० केशवदास निरुत्तर हो गये। लाला हरीचन्द मूर्तिवत बैठे रहे। कहना चाहने पर भी उन का मुह नहीं खुल सका। सब लोग काना फूसी करने लगे। स्त्रियां एक दूसरे से पूछने लगी कि यह सब क्या हुआ।

तभी बरात में आये मास्टर जी उठे और ला० केशवदास की ओर मुड़ कर जोर से बोले, 'सेठ जी लड़की का सब से बड़ा दहेज उसके पति की अपनी मेहनत और उसका अपना श्रम होता है। संसार का सब से बड़ा व्यापार सब से बड़ा 'बिजनेस' है, मनुष्य का अपना श्रम।' और पंडित जी की ओर संकेत कर वह जल्दी से बोले, 'पंडित जी, लग्न क्रिया जल्दी पूरी करो। समय निकला जा रहा है।'

वातावरण शान्त हो गया। पंडित जी ने लग्न के श्लोक पढ़ने शुरू कर दिये। सुशील के सिर से जैसे मानो बोझ उतर गया किन्तु ला० हरीचन्द के दिल में जैसे अस्सी काँटे चुभ रहे थे।

उर्दू शायरों की होली

लेखक, श्री शाह नसीर फरीदी

आइये जरा देखें कि उर्दू के कवियों ने कहाँ-कहाँ और किस-किस तरह अपनी कविता के द्वारा होली मनाई। इस मौके पर कवियों के जीवन चरित्र और विशेषताओं का बताना मुनासिब नहीं मालूम होता है। इसलिए होली के अवसर पर जो कविता इन शायरों ने की है; वही पेश करता हूँ। शायर होली अपने यारों और माशूकों के साथ किस तरह खेलता है सुनिये :—

कातिल जो मेरा ओढ़े,
एक सुर्ख साल आया।
खाकर के पान जालिम,
कर होट लाल आया।
गोया निकल शफक से,
बहरे कमाल आया।
जब मुँह से वह परी,
वह मल कर गुलाल आया।

होली के जमाने में रंग का पड़ना और लोगों को अपने आपको रङ्ग से बचाने का नकशा किस तरह खींचता है और वह अपनी प्रेमिका के ऊपर जबरदस्ती जाकर किस तरह रङ्ग छोड़ आता है; सुनिये :—

अय्यार गी से पहिले अपने तईं छुपा कर,
चाहा कि मैं भी निकलूँ उनमें से छुट छुटा कर।
दौड़े गये यह कहकर जाता है दम चुरा कर,
इतने में घेर उनको और शोरगुल मचा कर।
एक दिन सन पै जाकर मैं रङ्ग डाल आया।

इसके बाद शायर दिखाता है कि होली खेलने का कमाल क्या है? वास्तव में होली खेलने का कमाल तो यही है कि हर तरफ खुशी-खुशी की लहर दौड़ती रहे। इसका वर्णन निम्नलिखित पंक्तियों में कवि यूँ कहता है—

ये छल तो अपनी,
किस्मत से मच रही थी।
वह आपस के पर्दे हुरमत,
से बच रही थी।
कैसी समा थी कैसी,
शोखी समा रही थी।
उस वक्त मेरे सर पर,
एक धूम मच रही थी।

उस धूम में भी मुझको उनका ख्याल आया—

लाजिम न थी यह हरकत ऐं खुश सफीर तुझको।
करते हैं अब मलामत खुदों कबीर तुझको।
जाहिर है सब कहे हैं मिलकर शरीर तुझको।
लाहौल पठ के शैतों बोला नजीर तुझको।

अब होरी खेलने का पूरा कमाल आया।

कहा जाता है कि वास्तव में त्यौहार बच्चों के लिये होता है और वह भी खासकर होली का त्यौहार जिसमें कि बच्चे हर तरफ पिचकारी और रङ्ग की ही भाषा में बात-चीत करते हैं। इनका भी हाल जरा देख लीजिये।

बच्चे फिरते हैं हँसते हर तरफ,
शोर करते गुल मचाते हर तरफ।
मिल के हँसते हैं जो,
गिरता है कोई।

उसका गिरना और इनकी दिल्लगी।
लग रही हैं लड़कियाँ पकवान में,
घी शक्कर सारे के हैं सामान में।
तभी तो हर घर से उठता है धुआं,
पकती हैं मठी सलौनी पूरियां।
जब पका लेती हैं कुछ चखती हैं,
भाइयों के वास्ते रखती भी हैं।

बच्चों की होली और उनका होली मनाना आप देख चुके लेकिन होली एक ऐसा मौका होता है कि इसमें क्या बच्चे क्या बूढ़े और क्या जवान सभी अपने रङ्ग में मस्त होते हैं। अब आप सर-परस्त नौजवानों की होली देखिये—

गुलों का रङ्ग चमन का
निखार है होली।
खुली शराब के कन्टर
भरी है पिचकारी।
अजीब मौसमे मस्तानी
वार है होली।
छलक रहीं है गुलाबी
बरस रहा है गुलाल।
गरम किरौन के फसले
बहार है होली।
वर्ष रही है पुलक से
सुख सुर्ख अबीर
कि सर से पाँव तलक
लाला मार है होली
कदम-कदम पर खिले है
दिलों के मैखाने
किसी का नशा किसी का
खुमार है होली
हर एक शै में नया जोश
है नई उमग
हर एक चीज बस अर
अशकार है होली
दमकती है कहीं गुल गूं
नये जमीं बन कर
कहीं से सुर्खी ये रुखसार
यार है होली

नौजवानों ने जो गुलाबी छल कायी है और गुलाबी बारिश की है वह आप देख चुके हैं आप औरतों का होली मनाना देखिये कि शायर उसे किस तरह बयान करता है।

मचल रहे है फिजा में,
रंगों के फौवारे।
बड़ी हसीन बड़ी शान-
दार है होली।
कदम कदम पै है रंगी-,
नियों का वह आलम।
तकाजा वक्त का दिल,
का पुकार है होली।
असा से वक्त की होली
का है कहीं महदा।
कहीं सुहाग के फूलों,
का हार है होली।
नया है समा नया रंग,
है नई सज धज।
दुल्हन जमाना है सोलह,
सिंगार है होली।
इसी के आड़ में मिलते,
है दो धड़कते दिल।
मुहब्बतों के लिये,
सरमा रहे होली।
किसी ने चुपके से आकर,
कहा कि ऐ समझो।
उठो गले से मिलो,
बेकरार है होली।

यही है वह होली जिसके मनाने के लिये हम और आप साल भर से इन्तजार करते हैं।

—भाषा सम्बन्धी 'सनातन धर्म'—

[पृष्ठ १५४ का शेषांश]

'और' की जगह ! यह एक महान सनातन धर्म है। 'वा' का समुच्चय—अर्थ में प्रयोग संस्कृत ने छोड़ दिया उसे विकल्प अर्थ के लिये ही रखा। हिन्दी ने समुच्चय द्योतन के लिये अपना अलग ही और अव्यय बना लिया। परन्तु हिन्दी की 'उर्दू' तथा हिन्दुस्तानी शाखाओं में अब तक 'वा, का बच्चा (व) समुच्चय-अर्थ में चल रहा है।

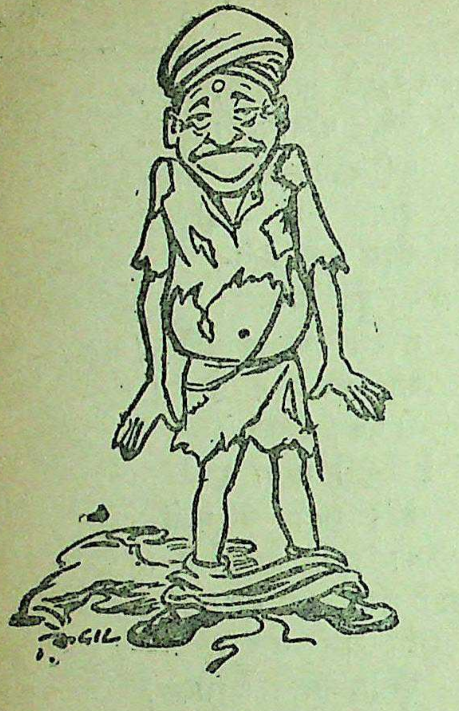

दुखान्त

कहानी

उदय-अस्त

लेखक, श्री शिवप्यारेलाल शुक्ल

एक समय था जब लाला रामलगन की तूती बोल रही थी। सदर में लकड़ी की एक बहुत बड़ी दूकान थी। 'लाला राम लगन, टिम्बर मरचेन्ट' का साइनबोट दूर से पढ़ा जाता था। सगे सम्बन्धियों तथा दूर नजदीक के रिश्तेदारों का घर पर जमघट लगा रहता था। आये दिन हाकिमों की 'टी पार्टियाँ' उड़ा करती थीं। शहर के इने-गिने प्रतिष्ठितों में इनका नाम था। कई एक सभा सुसाइटियों तथा संस्थाओं के सञ्चालक थे। प्रायः शहर के सार्वजनिक कार्यों का उद्घाटन यही किया करते। उस साल 'गांधी प्रसूति ग्रह' का उद्घाटन इन्हीं ने किया था।

× × ×

अब वह समय आया जब लाला रामलगन को वह सुनहरे दिन स्वप्न हो गये। व्यापार में घाटे पर घाटा हुआ। सारी सम्पत्ति गुब्बारे मे से फूँक के समान न मालूम कहाँ उड़ गई। भाग्य ने ऐसा साथ छोड़ा कि रहने को स्थान तथा जीविका का साधन ढूँढ़ने पर भी उनको न मिला। तमाशबीनों ने आतिशबाजी के खत्म होते ही अपने-अपने घरों की राह ली। और अब 'लाला रामलगन' की जगह खाली 'रामलगन' रह गये।

× × ×

रामलगन ने बंडल में से आखिरी बीड़ी निकाली, उसे जलाया और एक लम्बा कश खींचा, आधी रात का निखंड समय था। कुछ ही समय पहिले वर्षा हो चुकी थी, तथा चिन्ता मग्न मनुष्य के सामने कठिनाइयों की भांति आकाश पर बादल छाये हुए थे। क्षितिज के एक कोने में बिजली अपने क्षणिक प्रकाश से संसार को चौंधिया रही थी। वातावरण में ठिठुरन भर गयी थी। और ठंडी हवा से कलेजा कांप रहा था। रामलगन ने सीधे हाथ की दो अँगुलियों के बीच बल पूवक बीड़ी को दबा कर चुटकी से बीड़ी के मुख पर आई हुई राख को झाड़ते हुए पूछा—'रूपा की माँ, कैसी तबीयत है।'

पास की कोठरी में प्रसव पीड़ा से कराहती हुई रामलगन की पत्नी रूपा की माँ ने उत्तर दिया—'द···र्द···स हा···न हीं जा रहा।'

रामलगन ने पुनः बीड़ी का लम्बा कश खींचा और उसे जमीन पर रगड़ कर बुझा दी। इस विचार से कि अभी आधी रात काटनी है। बंडल की बीड़ियाँ खत्म हो चुकी हैं और इस ठंडी रात में गरमाहट लाने के लिये बीड़ी का होना जरूरी है। वह दोनों घुटनों पर हाथ टेक कर उठे और भिड़े हुए किवाड़ों को धीरे से खोल कर कमरे में घुसे। उस समय रूपा की माँ फटी और मैली रजाई में लिपटी हुई ठंड से काँप रही थी। पीड़ा से उसकी बुरी दशा थी। असह्य वेदना उसकी आँखों से टपक रही थी उसने निराशा भरे शब्दों में रामलगन से कहा—'इस बार जिन्दी न बचूँगी।' और हांफते हुए एक लम्बी सांस लेकर कहा—'जरा मेरे सरहाने बैठ जाओ।'

रामलगन भारी हृदय से अपनी स्त्री के सिरहाने जा बैठे। बीते दिनों की याद में आँसू डबडबाते हुए वह अपने असफल जीवन को कोस रहे थे। वह सोच रहे थे कि मेरा जीवन आर्थिक दृष्टि से कितना पंगु, निकम्मा और दूसरों की दया पर अवलम्बित है। उन्होंने महसूस किया कि आज उन का वह अदम्य साहस और शक्ति जैसे उन्हें जवाब दे रही हो। वह एक टक कुप्पी की ज्योति से निकल कर एक काली टेढ़ी-मेढ़ी ऊपर जाती हुई रेखा की ओर देख कर सोच रहे थे कि आज धन के कारण मेरी पत्नी जीवन मरण से द्वन्द कर रही है। वह तिल-तिल मिटती जा रही—मेरी आंखों के सामने। धन्य! तुझ में कितना बल-ईश्वर से भी अधिक!

और तभी रूपा की माँ ने अधमुंदे नेत्रों से अपने पति की ओर देखा। उससे इस नाजुक हालत में भी अपने पति की वेदना और भाव छिपे न रहे उसने साहस बटोर कर कहा—'रूपा के चाचा इस तरह उदास न हो भाग्य को कोसने से भाग्य बनेगा नहीं। राम लगन के हृदय में रूपा की माँ के ये शब्द चुभते चले गये। उनकी आंखों के सामने नाच रहा था वह दिन जब जरा सी फाँस या हलकी सी ठोकर लगने पर डाक्टर उनके घर दौड़े आते थे। कुशल पूंछने वालों की मोटरे उनके दरवाजे खड़ी रहती थीं। तभी रूपा की माँ बड़े जोर से कराह उठी—रामलगन उसके सर को धीरे धीरे सहलाने लगे—रूपा की माँ ने उनका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा:—

'मुझे लग रहा है, रूपा के चाचा कि अब मेरा अन्त आ गया। मौत मेरे आस पास घूम रही है। और फिर ढेर से आँसू उसकी आँखों से निकल कर इधर उधर कपोलों पर लुढ़क गये। राम लगन ने महसूस किया कि यह दयनीय दशा उनका गला घोंटे दे रही है। उनके अन्दर का मानव हा हा कार कर उठा। उन्होंने धैर्य बाँधते हुये कहा—'रूपा की मां 'घबराओ नही, जरा हिम्मत बाँधों।

रूपा की माँ वैसे ही मौन पड़ी रही। दर्द बढ़ता जा रहा था। और अब बेहोशी भी होने लगी। राम लगन यह देख कर दाई की तलाश में बाहर निकले।

'इस शीत और पाले में उन्हें दाई के घर पहुँचना था। उसकी खुशामद करनी थी। और जैसे तैसे उसे घर लाना था। यही सब सोचते हुए वह मदहोश शराबी की तरह सड़क और गली को पार कर रहे थे। वह अपने आप से कह उठते थे कि सारी दुनिया इस पैसे के इर्द गिर्द मंडराया करती है। यह सारे सम्बन्धी मित्र और शुभ कामनाओं वाले पैसे से खरीदे और दास बनाये जा सकते हैं।

दाई के घर पहुँच कर उनको निराश होना पड़ा उनके पहुँचने के थोड़ी देर बाद शहर के सेठ जग्गू मल की मोटर आई और दाई को लेकर चली गई। राम लगन घायल सिपाही की तरह लड़ खड़ाते हुए घर लौटे। रास्ते में उनके मस्तिष्क में रूपा के वही शब्द गूंज रहे थे कि 'अब मैं जिन्दा न बचूंगी।,

+ + +

घर आकर उनको एक भयंकर वातावरण दिखाई दिया— कोठरी के पास क्षण मात्र खड़े हो कर उन्होंने अपने चारों ओर देखा—किवाड़ों के पास पहुचने पर उनको रूपा की माँ की कराहट न

सुनाई दी—अन्दर जाकर उनको एक भयभीत नीरवता—एक डरावना सन्नाटा दिखाई दिया। और फिर उन्होंने देखा कि रूपा की माँ चारपाई पर ठंडी पड़ी है।

चेहरे पर मृत्यु की छाया फैली हुई थी। आँखें जैसे किसी की रास्ता देखते देखते थक कर झुक गई हों। राम लगन थोड़ी देर अपनी मृतक पत्नी को देख कर—हारे हुए जुआरी की तरह बाहर आये—और ज्ञान सून्य विवेक रहित उतावले और पागल मनुष्य की तरह इधर उधर घूमने लगे।

+ + +

अब भी 'बस' और मोटर स्टैंडों पर आने जाने वाले मुसाफिरों से एक एक पैसे के लिये हाथ पसार कर भीख माँगते हुए आप उन लाला राम लगन को देखेंगे जिनका मैंने उदय-अस्त आप को कह सुनाया।

आकर्षक गृह

लेखिका, श्रीमती विमला माथुर

किसी भी घर को सजाने के लिये किसी प्रकार के बहुमूल्य फर्नीचर अथवा शिल्पकलाओं की आवश्यकता नहीं होती है अत्यधिक स्वच्छता की। साफ़ सुथरा घर सदैव चित्ताकर्षक होता है। वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। गन्दा घर उस घर की स्त्रियों की ही अयोग्यता दिखाता है जो करों की नहीं। अधिकतर स्त्रियों को जिनके यहाँ काम करने वाले नौकर होते हैं यह कहते सुना है कि हमें नौकर ही ऐसा खराब और आलसी मिला है कि घर को साफ ही नहीं रख सकता परन्तु वे यह नहीं सोचतीं कि नौकर का रखना और उसको हर प्रकार का कार्य सिखाना भी एक कला है तथा उसका योग्य या अयोग्य होना उन्हीं के ऊपर निर्भर है।

आवश्यक बात है घर के कमरों की व्यवस्था है, कमरों को किस व्यवस्था से बांटा जाये कि वे उसी योग्य दीखें जिस कार्य के लिये बनाया गया है।

किसी भी घर में रसोई पाखाने, स्टोर आदि के अतिरिक्त एक बैठने-उठने के कमरे की बहुत आवश्यकता होती है जिसे अंग्रेजी सभ्यता में ड्राइङ्ग रूम कहते हैं। छोटे मकान में किसी बड़े कमरे का विभाग करके इसे बना सकते हैं। इस कमरे को या घर के इस भाग को इस प्रकार सजाना चाहिए, जिससे उसमें बैठने वाला यह न सोच सके कि इस घर की स्त्री कला से अनभिज्ञ है। यदि उस कमरे में बहुमूल्य फर्नीचर रखा है परन्तु अव्यवस्थित रूप से बिखरा पड़ा है। तस्वीरें आड़ी तिरछी टंगी हैं। दीवार हरी है तो पर्दे लाल हैं, दरवाजे के पर्दे लाल हैं तो खिड़की के पीले हैं इसे देख कर तो कोई भी कह सकता है कि गृहणी फूहड़ है।

रसोई घर में बर्तनों की सफाई का पूरा खयाल रखना चाहिए। साफ चमकते हुए बर्तन बहुत भले प्रतीत होते हैं। रसोई का सब सामान यदि छोटी-सी रसोई में भी सफाई व व्यवस्था से रखा जाये तो बुरा नहीं लगता, अनावश्यक सामान हर महीने रसोई से बाहर निकाल देना चाहिए। नमक, मसाला आदि मिट्टी की हँड़िया में न रख कर एक लकड़ी के बने हुए मसाले दान में रखा जाये तो अधिक सफाई दीखती है।

आज की सभ्यता में बिस्तर चारपाइयों पर ही बिछे रहने का चलन है। उनको वहीं झाड़ कर पलंग पोशों से ढक देते हैं। परन्तु मेरे विचार में यह उचित नहीं है, बिस्तरों को हर रोज उठा कर सहन में जहाँ धूप आती हो तह करके ढक कर रख देना चाहिए। यदि सहन में किसी कारण से न रख सकें तो कमरे में ही एक तरफ को किसी चारपाई या तखत पर रख सकते हैं। ऐसा करने से घर के आलसी नौकर या बेपरवाह आदमी बिस्तर को बगैर झाड़े नहीं बिछा सकते।

बहुत स्त्रियां अपने घर की कोठरी को जिसमें ट्रन्क इत्यादि सामान रखा रहता है सबसे गन्दा रखती हैं क्योंकि वह स्थान किसी को दिखाई नहीं देता। परन्तु अपने घर के हर स्थान को साफ करो।

जासूसी कहानी

खेजाब

लेखक, श्री निशीथकुमार राय बी० ए० एल-एल० बी०

[१]

जब यह मालूम हुआ कि शहर के सबसे प्रमुख रईस श्री श्याममोहन का कतल हो गया तो पुलिस कप्तान श्री अग्रवाल को बड़ा नागवार गुजरा। उन्होंने साफ अलफाज में दारोगा जी को जता दिया कि कोतवाली का चार्ज सम्भालने के लिये उन्हें किसी योग्य दारोगा को लाना पड़ेगा। कोतवाल साहब की केवल दस महीने की सर्विस बाकी थी। वे कोतवाल के पद पर से पेन्शन लेना चाहते थे ताकि पेन्शन में एलाउन्स का भाग मिले और इसके अलावा बा-इज्जत कोतवाली का चार्ज निबाहने का श्रेय मिले। इस कतल की सुरागरसी करके जब उन्हें कुछ भी पता चल न सका तो वे सीधे उदय के पास पहुँचे। उदय जैसे मशहूर जासूस की सहायता सभी पुलिस वाले लिया करते थे। उदय ने दारोगा श्री रामकिंकर सिंह की भी मदद करने का वादा कर लिया। जब उदय जांच वकुआ पर पहुँचा, उस समय तक मृतक जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ था। उसके इच्छानुसार वहाँ किसी को आने जाने की इजाजत न थी। सिपाहियों ने बँगले का मुहासरा कर रखा था—विशेष कर उस कमरे का जनमें कि मृतक पड़ा था।...

उदय ने देखा कि कमरा चौकोन था। एक द्वार इधर और एक उस ओर की दीवाल में था। एक ओर 'सोफासेटी' रक्खी थी और दूसरी ओर तखत बिछा था। तखत पर गद्दा पड़ा था। गद्दे पर सफेद चादर था और तकियाँ थीं। उसी तखत के सामने मृतक फर्श पर पड़ा था। तकिये अस्तव्यस्त पड़ी थीं जिससे जाहिर होता था कि मृतक से हत्यारे का गुत्थम-गुत्था हुआ था। उदय को आश्चर्य हो रहा था कि दोनों में गुत्थम-गुत्था होते समय चिल्लाहट भी हुई थी, मगर कोई आया क्यों नहीं?

रामकिंकर बोले—'इस कमरे के बाद खाने का कमरा है, उसके बाद मेहमानों के ठहरने वाला कमरा, उसके बाद कपड़ा पहिनने वाला कमरा—सब खाली थे। इनमें कोई था ही नहीं। इसलिए किसी के लिये कुछ सुनाई पड़ना भी सम्भव न था।

मगर फिर भी इस बात को मैं अस्वाभाविक समझता हूँ कि इतने बड़े आदमी का कोई नौकर-चाकर भी उस समय इधर नहीं आया।'

'हाँ, यह कुछ आश्चर्य की बात तो है।' बोला उदय का सहकारी मानसिंह।

'अरे यह क्या है।' अपने ही मन में धीरे से कहा। उदय ने सम्मुख वाले दरवाजे के दरार से एक महीन सूत निकाल कर रख लिया। मालूम होता था साड़ी फँस जाने से वह सूत वहाँ रह गया था। उदय ने उस सूत को अपने जेब में पुड़िया में मोड़ कर रख लिया। इसके बाद कमरे के अन्दर उसने चक्कर लगाया। कमरे में ज्यादा फर्नीचर नहीं था। जो था वह बहुत ही साधारण था। कीमती भी था। एक कोने में रेडियो उस वक्त तक बज रहा। रेडियो के सामने आकाशवाणी की पत्रिका 'लिसनर' पड़ी थी।'......

उदय ने श्याममोहन जी की पत्नी को बुलवाया।

वे आयीं। उनकी अवस्था चालीस के लगभग थी। श्याममोहन के कोई बाल-बच्चा नहीं था।

भाई के लड़के थे पर वे साथ नहीं रहते थे। उनके असामयिक मौत से उन भतीजों को सारी जायदाद मिली।

उदय ने शान्त स्वर में पूछा—'श्रीमती जी, मुझे मालूम है कि इस समय आपको सवाल जवाब बहुत ही दुखदायी प्रतीत होगा। मगर कर्तव्य-पालन करने के लिये हम विवश हैं, आशा है आप हमारी इस धृष्टता को क्षमा करके हमारे प्रश्नों का उत्तर देंगी।'

'आप संकोच न करें। मैं जहाँ तक जानती हूँ आपको बता दूँगी।' क्लिष्ट स्वर में वे बोलीं।

'श्याममोहन जी ने वसीयतनामा लिखा ?' उदय का प्रश्न इतना अचानक आया कि वे हकबका गयीं।

'जी नहीं। इसी बात पर हमसे उनसे कई बार तकरार भी हुई। अब मुझे उनके भतीजों की दया पर निर्भर करना पड़ेगा।'...उनका स्वर रुद्ध हो गया। आँखों में पानी भर आया।

'यह आपको क्यों सूझा कि वे इतनी जल्द मरेंगे ?' उदय ने पूछा।

'मुझे ऐसा नहीं मालूम था। मगर भविष्य की बात कौन कह सकता था ?...आखिर ये ही कौन जानता था कि उनकी मौत सिरहाने है ?' कुछ देर रुक कर वे बोलीं।

'और उनके भतीजों के बारे में आपको पता तो लग ही जायगा। ऐसे आवारा उत्तराधिकारी क्या इस बात की जिम्मेदारी लेना चाहते कि वे जायदाद किसी और को दे दें ?'...

आपको निश्चय मालूम है कि श्याममोहन ने आपको कुछ नहीं दिया ?'

'जी नहीं। मैं नहीं बता सकती अगर वे कुछ लिख गये हों।' उदय ने प्रश्न बदला।

'जिस धोती को आप पहने हैं, यह क्या रोज़ घर पर पहिनती हैं ?'

'जी नहीं। यह तो बनारसी धोती है। कल ही शाम को वे लाये थे और मुझसे कहा था पहिनने के लिए.. हम सिनेमा जाने वाले थे।'..

'आप साड़ी पहिन कर उनके पास आयी थीं ?'

'जी ?...जी नहीं।' उन्होंने इन्कार किया। उदय की निगाहों ने लक्ष्य किया कि उनके आँचल के एक कोने में से सूत निकल जाने की सिकुड़न है।

[२]

'श्याममोहन के वकील कौन हैं ?'

'योगेन्द्रसिंह ! हमारी कोठी से सात-आठ कोठी की दूरी पर दाहिनी ओर का लाल मकान है ?'

उदय ने दारोगा जी से मकान की तलाशी लेने को कह कर योगेन्द्रसिंह से मिलने गया। मृतक को अभी जहाँ का तहाँ रहने देने के लिये कह गया।

तलाशी से और कुछ तो नहीं निकला, मगर श्रीमती जी के कमरे में से एक हिबानामा निकला। जिस पर उसी दिन की तारीख थी। श्याममोहन ने अपनी जायदाद में से आठ आना हिस्सा पत्नी को दिया था। बाकी में से आधा अनाथालय और आधा भतीजों को दिया था। पत्नी वाला हिस्सा दानपत्र (हिबानामा) किया था बाकी वसीयतनामा।......

नौकर चाकरों का बयान लिया गया। कोई विशेष बात तो नहीं निकली। सबसे पुराना नौकर रामदेव से निम्नलिखित बातें हुई—

'श्याममोहन मृत्यु से पहिले कब आखिरी मर्तबा उससे बोले थे ?'..वृद्ध का चेहरा उतर गया प्रश्न सुन कर वह घबरा गया था। मानसिंह को शुबहा हुआ कि वृद्ध कोई बात छिपाने की कोशिश में है !..प्रश्न दुहराया। अब द्विधापूर्ण स्वर में वह बोला—'मालकिन और सेठ जी में बहुत गर्म-गर्म बातें हो रहीं थीं तो सेठ जी ने मुझे बुलाकर वकील साहब को तुरन्त बुला लाने को कहा।'

जब वकील साहब आये तो क्या हुआ ?

वकील साहब से कुछ लिखा पढ़ी करवा रहे थे। मैं काफी लेकर एक बार और गया तो देखा

रेडियों बज रहा है और सेठ जी और वकील साहब बैठे हैं।

वे लोग क्या बातें कर रहे थे? 'मानसिंह ने पूँछा।' मैं नहीं बता सकता, बोला वृद्ध, 'क्योंकि रेडियों की आवाज तेज थी.....उसके बाद मैं कमरे में नहीं गया। जब कमरे में से बर्त्तन उठाने गया तो देखा कि वे मरे पड़े हैं।

और वकील साहब क्या कर रहे थे? 'मानसिंह ने पूँछा।

वकील साहब तो घन्टों पहिले चले गये थे।

+ + +

उधर वकील श्री योगेन्द्र सिंह से उदय की बातें हुई। उदय को आदर सहित वकील साहब ने बिठाला। उदय ने देखा वकील साहब प्रौढ़ होने पर भी तन्दुरुस्त थे। बाल भी बिलकुल काले थे। दाँत एक भी नहीं गिरे थे। देखने सुनने में अच्छे थे। वकील साहब को अपने आने का कारण संक्षेप में बताया उदय ने पूँछा, 'उस रात में अपने मृतक के लिये किस प्रकार का हिबानामा वगैरह लिखा था?

क्षमा कीजिए मि० राठौर, यह हमारे मुवक्किल की गोपनीय बातें हैं।'

आप कितने दिनों से श्याम मोहन के वकील हैं?'

'उदय से' बोले योगेन्द्र सिंह, '२५–३०' साल से ऊपर हुये होंगे वह मेरा मुबक्किल है।

हमारे ख्याल से आप दोनों के परिवार में तो घरेलू ताल्लुकात होंगे।

हाँ। दुर्भाग्य वश उनके कोई लड़के नहीं थे वर्ना जब हमारी लड़की प्रेमा हुई थी तो उन्होंने कहा था कि उसे वे अपनी बहू बना लिये होते?

इसके बाद दो चार बातें कर के उदय श्याम मोहन के घर लौटा। वहा का सारा हाल उसे मालूम हुआ।.....मृतक का हाथ मुष्ठि बद्ध था। ऐसा प्रतीत होता था मानों किसी से हाथा पाई किया हो। उदय ने मुष्ठि ढीली की तो उसमें दो तीन बाल मिले। शायद हत्यारे के थे। उदय ने यत्न पूवक उन्हें पुड़िया में मोड़ कर रख लिया।

+ + +

उदय गम्भीर चिन्ता में निमग्न था।.....हत्या का क्या उद्देश्य हो सकता था?

(१) यदि भतीजों में से किसी ने किया होता तो नौकर चाकर को भतीजों का आगमन मालूम हुआ होता। इसके अतिरिक्त भतीजों को क्या फायदा हुआ इस मौत से? जायदाद लेना होता तो पहिले ही मार डाले होते श्याम मोहन को।

(२) पत्नी ने यदि कतल किया हो—जैसा कि सम्भव था, तो भी कुछ बातें खटकतीं हैं। वे मार सकती थीं एक मर्द को?.....यद्यपि उनसे झगड़ा लड़ाई हुई थी।.....वसीयत नामा के अनुसार श्याम मोहन के मरने से उन्हीं को सब से ज्यादा फायदा है।.....इसके अलावा वे क्यों झूठ बोली कि वे मृतक के कमरे में नहीं गई थी जब कि उनकी धोती दरवाजे के दरार में फंसी थीं और कल शाम को ही उन्होंने पहिले पहल उस धोती को पहिना था?

(३) वकील साहब कतल कर सकते थे। मगर उद्देश्य?.....उन्हें क्या फायदा?

प्रमाण उनके विरुद्ध इतना अकाट्य था कि उदय बड़ी चिन्ता में पड़ गया था। मान सिंह ने पूँछा, 'मगर शोर गुल—बाधा देकर बोला, 'उदय मान। तुमने रेडियो लिसनर नहीं देखा। उस समय रेडियो में जो हो रहा था उससे काफी शोर हो रहा था। कोई ऐसा नाटक था जिसमें मार पीट, चिल्लाहट हा-हुल्लड़ था। नौकर चाकर ने श्याम मोहन के वास्तविक चित्कार को भी रेडियो का नाटक समझा था। अगर सुन सके हों तो—अव्वलन तो सुनना ही दुश्वार था।...

उदय और मानसिंह चाय पीने बैठे। सुबह का अखबार दे गया। नागपुर के हवाई जहाज टकराने से दस आदमियों की मृत्यु का समाचार

छपा था ।.....अन्तिम पन्ना पर एक चित्र देखकर उदय को परिचित सा लगा । उस चित्र के नीचे लिखा था 'श्री योगेन्द्र सिंह जी सहकारी सरकारी वकील नियुक्त हुये है । इनकी सुपुत्री सुमित्रा की शादी श्री प्यारे मोहन से निश्चित हुई है । प्यारे मोहन शहर के प्रमुख रईस श्याम मोहन के भतीजे हैं ।'

मान मिल गया, बोला उदय । टेलीफून पर उसने एस० पी० और डी० एम० से कुछ बातें की ।

जिस समय योगेन्द्र जी को हथकड़ी लगाया गया तो वे बड़े खफा हुये ।' किस प्रमाण पर आप हमें गिरफ्तार करते हैं ? मैं हेवियस कारपस आवेदन पत्र हाईकोर्ट के सम्मुख लाऊंगा......'

प्रमाण तो यह है कि श्याम मोहन की अकाल मृत्यु से उनका दान पत्र और वसीयत नामा बेकार हो जाता है चूँकि रजस्ट्री हो न सकी । यदि वे एक दिन भी जिन्दा रहते तो रजस्ट्री हो जाती और प्यारे मोहन यानी आप के होने वाले दामाद का साझा घट जाता ।

क्या इसी प्रमाण से आप मुझ पर कतल का जुर्म साबित कर लेंगे ?

जी नहीं । सब से बड़ा प्रमाण है आप का खेजाब लगे मूछों के बाल ! मरते समय श्याम मोहन ने आप की मूँछे पकड़ी थी... चन्द बाल उखड़ आये थे... आप को तो याद रहना चाहिये !'

+ + +

उनको धर्म पत्नी क्यों झूठ बोलीं थीं मानसिंह ने पूछा ।

वे यह बात छिपाना चाहती थीं कि उनसे श्याम मोहन से झगड़ा हुआ था और जबरदस्ती उन्होंने (हिवानामा) दान पत्र लिखाया क्योंकि वैसी सूरत में हिवानामा बेकार हो जाता ! हिवानामा से कहीं उन पर लोग शुबहा करें इसलिये मृत्यु की खबर पाते ही वे हिवानामा उड़ा लाई थीं । जल्दी में धोती फँस गई थी । उन्होंने स्वयम् मुझ से स्वीकार किया था ।........

भाषा सम्बन्धी 'सनातन धर्म'

लेखक श्री किशोरीदास वाजपेयी

संस्कृत में 'वा' अव्यय विकल्प का अर्थ देता है । हिन्दी ने इसके 'व' को 'य' कर लिया; 'वा' को 'या' बना लिया । हिन्दी की प्रवृत्ति ही ऐसी है । 'नव' के 'व' को भी 'य' कर लिया और अपनी पूर्वोक्ति लगा कर 'नया' रूप । महाराष्ट्र में 'नवा' चलता है । तद्रूप (तत्सम) हिन्दी में भी 'नव, चलता है—नव जागरण की वेला में ।' परन्तु तद्भव रूप 'नया' है । इसी तरह 'वा' का रूप या हुआ—आम लोगे या अनार ?

बहुत पुराने समय में, वैदिक काल में, 'वा' का प्रयोग समुच्चय में भी होता था । महर्षि यास्क ने अपने निरुक्त में लिखा है—

अथाऽपि समुच्चयार्थे भवति— 'वायुर्वात्वा मनुर्वा त्वेति' ।

यास्क कहते हैं कि 'वा' का प्रयोग (विकल्प के अतिरिक्त) समुच्चय-अर्थ में भी दृष्टचर है । आगे उन्होंने उदाहरण के लिये एक उद्धरण दिया है । इस मंत्र में वायुर्वात्वा मनुर्वा त्वा, का अर्थ है 'वा' युश्च त्वा मनुश्च त्वा' । यह पुरानी बात है । यास्क के समय में 'वा' का प्रयोग केवल विकल्प-अर्थ में रह गया था । समुच्चय के अर्थ में 'च' तथा अपि । आदि चलने लगे थे । संस्कृत (लौकिक) साहित्य में 'वा' विकल्पार्थ में ही प्रचलित है ।

हिन्दी ने समुच्चय-अर्थ के लिये अपना और अव्यय गढ़ा । परन्तु ईरान में 'वा' समुच्चय अर्थ में भी चलता रहा, मात्रा-ह्रस्व होकर । वैदिक संस्कृत का समुच्चयार्थक 'वा; फारसी में 'व' बन गया । इस 'व' को मुसलमान अपने साथ भारत लेते आये और हिन्दी (उर्दू) में और की जगह चलाने लगे । राम व गोबिन्द' । अब तक यहां यही चलता है ? हिन्दुस्तानी । में भी 'व' चलता है

[शेष पृष्ठ १४७ पर देखिये]

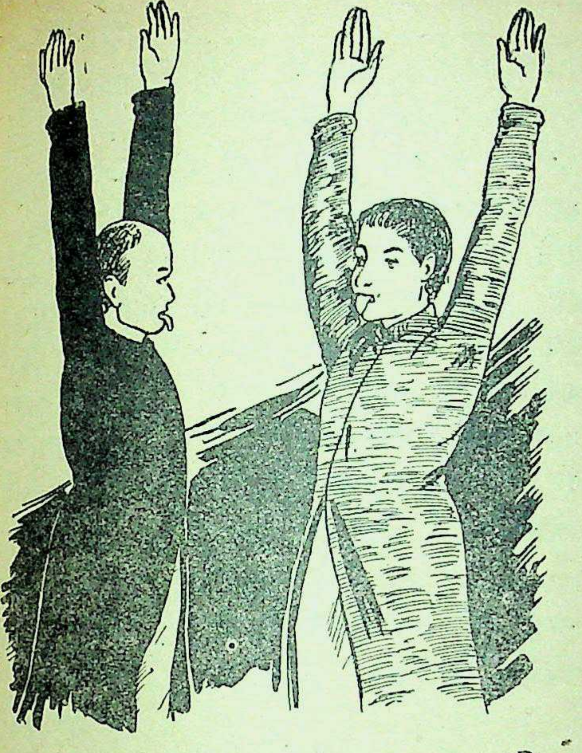

यह भी एक गलती है

लेखिका, श्रीमती कमला दीक्षित

अगर आप अमीर हैं? तो गरीबों का भी हिस्सा आप ही खर्च कर डालते हैं? अतः उनकी निगाहों से यह भी एक गलती है। अगर आप गरीब हैं, तो आपने अपनी कार्य-शक्ति का परिचय नहीं दिया? अतः अमीरों की निगाह में यह भी एक गलती है?

अगर आप हमेशा हँसते ही रहते हैं—तो बुजुर्गों की निगाह में यह एक चञ्चलता है, अतः यह भी एक गलती है। और अगर आप रोते-से रहते हैं? तो आप जीवन संग्राम से पराजित से दिखलाई पड़ते हैं। अतः युवकों की निगाह में यह भी एक गलती है?

अगर आप सौन्दर्य-शील हैं, तो लोगों को प्रायः आकर्षित करते रहते हैं, धर्म-गुरुओं की निगाहों में यह भी एक नैतिक अपराध है, अतः यह भी एक गलती है और अगर आप कुरूप हैं? तो कलाकारों की नजरों से आप अप्रिय से दिखलाई देते हैं, अतः यह भी एक गलती है।

अगर आप विद्वान् हैं, तो जीवन का सर्वोत्तम भाग विलासी की निगाहों में, व्यर्थ ही गंवा दिया, अतः यह भी एक गलती है और कहीं आप मूर्ख हैं, तो विद्वान् की नजरों में आपका जीवन ही व्यर्थ है, अतः यह भी एक गलती है।

अगर आप विरागी हैं, तो रागी की नजरों में आप व्यर्थ का वितण्डावाद करते रहते हैं, अतः यह भी एक गलती है और अगर आप रागी हैं? तो विरागी की नजरों में व्यर्थ मायामोह में जो कि नश्वर है—इस कांचन काया को पाकर भी कीड़े की तरह ही बिलबिलाते रहते हैं, अतः यह भी एक गलती है। अगर आप प्राचीनता के उपासक हैं, तो नये वाद की नजरों में आप कूढ़ मगज हैं, अतः यह भी एक गलती है और कहीं आप नव वाद के पुजारी हैं तो प्राचीनों के दिमाग से आप गलतफहमी पर हैं, अतः यह भी एक गलती है।

अगर आप विवाहित हैं? तो जन संख्या बढ़ा कर खामखाह आप इस गरीब देश का अकल्याण कर रहे हैं। यह भी एक गलती है और कहीं आप अविवाहित हैं? तो समाज की नजरों में आप छिपे अनाचारी हैं? अतः यह भी एक गलती है।

अगर आप वीर हैं? वीरता की पुकार सुनकर समराङ्गण में धारातीर्थ मनाते हैं? तो कायर की निगाहों में, आपकी वीरता का इतना ही मूल्य है, जितना कि गधे को अपनी पीठ पर लदी हुई पुस्तकों का, अतः उसकी निगाहों में, यह भी एक गलती है। और अगर कहीं आप कायर हैं? तो व्यर्थ ही वीरता के प्राङ्गण में यह बहुमूल्य प्राण गँवा देना कहाँ की बुद्धिमानी है? अतः यह भी एक गलती है।

अगर आप किसी की स्नेह के अनुरोध से देवता-सी मन ही मन पूजा करते हैं, तो उसकी निगाहों में आप एक महा मूर्ख शास्त्री हैं, अतः यह भी एक गलती है और यदि आप किसी की मन ही मन अवहेलना, घृणा या तिरस्कार करते हैं तो मानव की निगाहों में आप कपटी हैं अतः यह भी एक गलती है।

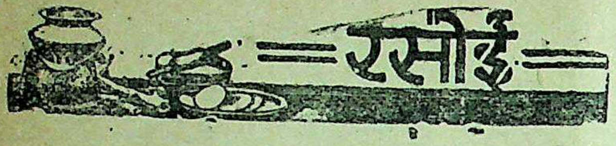

रसोई

आलू टमाटर की बर्फी

सामान—१ सेर आलू, आधा सेर टमाटर, १ सेर चीनी, छोटी इलायची, बादाम, कुछ पिस्ते, आधा पाव घी।

विधि—पहले आलू और टमाटर अलग-अलग उबाल लो। आलू छील कर पीस लो। टमाटर का रस निकाल कर कपड़े या छन्नी से छान लो और कलई वाले बर्तन में पकने को रख दो। जब गाढ़ा हो जावे तो उतार लो। फिर आलू में चीनी मिला कर आग पर रखो और खूब चलाती जाओ। नीचे लगने लगे तो एक-एक चम्मच करके घी छोड़ दो। फिर चलाओ। जब लोयी-सी बँधने लगे तो टमाटर का रस डाल कर खूब चलाइये। सब मिला कर बिलकुल लोया हो जावे, जमने लायक तब बादाम इलायची छोड़ दो। थाल में घी लगा कर दो। ऊपर से बारीक पिस्ते छोड़ दो। चलाते समय बीच-बीच में घी डालती जाओ।

नोट—खाने में खटमिट्ठी बर्फी बहुत स्वादिष्ट लगती है। जल्दी किसी को पता भी नहीं चलता कि चीज की बनी है।

—मिसेज दुबे

मूली की पूड़ी

सामान—१ सेर मैदा, सोया व धनिया, नमक १ सेर मूली, हरा लहसुन, हरा मिर्चा, घी।

विधि—मूली को कद्दूकस पर कस लो और नमक छोड़ कर रख दो। कुछ देर के बाद उसी मूली से आटे को गूँध लो। धनिया, सोया, मिर्च, लहसुन बारीक काट कर मिला दो। फिर पराठे की तरह पूड़ी बना कर सेंक लो। बड़े स्वादिष्ट होते हैं।

लौकी की खीर

सामान—१ मुलायम लौकी, एक पाव चीनी, इलायची, मेवा, दो सेर दूध।

विधि—लौकी को लच्छेदार बना लो। कद्दूकस पर। फिर कड़ाही में जरा-सा घी डाल कर लच्छों को भून लो। अब पतीली में दूध रख दो जब दूध गाढ़ा हो जाय तब लच्छे डाल दो। कुछ देर उसमें पकने दो। फिर उतार कर उसमें चीनी, इलायची, मेवा डाल दो।

—कुमारी शकुन्तला शाही

अगर आप जीवित हैं ? और मोक्ष न चाह कर कर्मभूमि ही चाहते हैं ? तो महामार्तण्डों की निगाहों में आप एक क्षुद्र कीट हैं, अतः यह भी एक गलती है और अगर आप मर गये ? और कहीं कुटुम्ब की दुर्दशा हो गई और उनकी रंगीनियों के स्वप्न हवा होकर परिश्रम करना पड़ा, तो उनकी निगाहों में, आपका मर जाना भी एक गलती है ? अतः यह भी एक गलती है।

अगर आप सौन्दर्य और स्वच्छता ज्यादा पसन्द करते हैं ? तो व्यर्थ ही ज्यादा टायलेट में रुपया फूँक कर तमाशा देखते हैं ? अतः कृपण की निगाहों में यह भी एक गलती है। और अगर कहीं आपको मितव्यता से ही ज्यादा अनुराग है ? और किसी को अपनी गाढ़ी कमाई का अनुचित उपयोग नहीं होने देते ! तो दुनियां की निगाहों में आपकी यह कृपणता भी एक गलती है ?

अतः यह भी एक गलती है। अगर आप यह लेख पढ़ रहे हैं ? और कुछ सार नहीं ढूँढ़ पा रहे हैं ? तो आपकी समझ से यह भी एक गलती है और अगर आप यह लेख बगैर पढ़े ही छोड़े दे रहे हैं ? तो मुझ नाचीज की निगाहों में बुजुर्गों की इस कहावत के अनुसार मिट्टी में भी सोना निकलता है, इस उक्ति का अनुसरण नहीं कर रहे हैं ? अतः यह भी एक गलती हे।

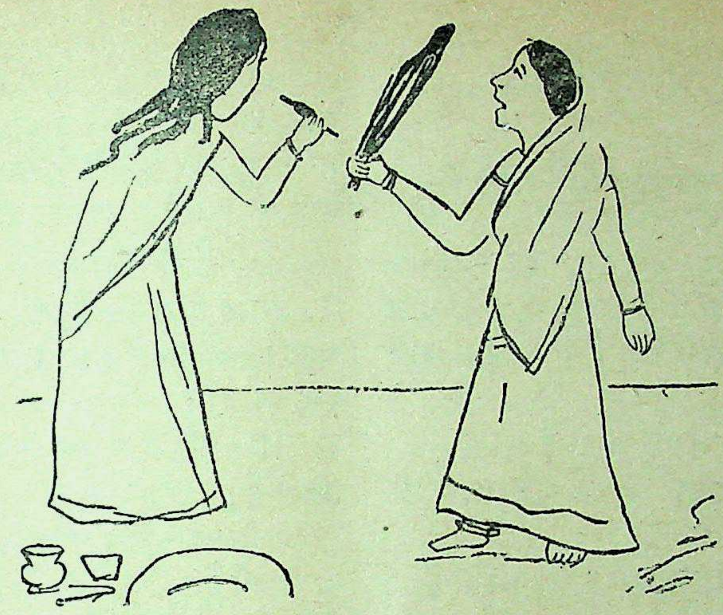

साझे का घर

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

पात्र —

उषा—आधुनिक शृङ्गार प्रिय नारी।

मनोरमा—आधुनिक पर सादगी पसन्द नारी।

प्रभात कुमार—उषा का पति सुसंस्कृत प्रोफेसर

विनय मोहन—मनोरमा का पति, प्रभातकुमार का सहायक।

[१]

[रात को ११ बजे हैं। विनय मोहन अपने शयन कक्ष में खुर्राटे ले रहा है। बगल के कमरे से मधुर संगीत की ध्वनि आ रही है।]

मनोरमा—(अपने आप) ये तो सोने न देंगे। इन्हें क्या ? ये तो देर से सोते हैं, देर से उठते हैं। पर हमारी तो आफत है। अरे सुनते हो जी ?

[विनय मोहन की नाक और जोर-जोर से बजती सुनाई पड़ती है।]

मनोरमा—धन्य है, इन्हें। इतने जोर की गाने की आवाजें आ रही हैं और ये पड़े सो रहे हैं। मैं तो ऐसा नहीं कर सकती। इस साझे के घर से तो पेड़ के नीचे रहना अच्छा है। अरे सुनते हो जी !

[पति को झकझोरती है।]

विनय मोहन—(चौंकता हुआ) ऍं ! क्या बात है ?

मनोरमा—इस तरह दबने से काम न चलेगा, आधा किराया हम भी देते हैं।

विनय मोहन—हुआ क्या ?

मनोरमा—कुछ सुनाई पड़ता है तुम्हें ?

विनय मोहन—सङ्गीत है। होने दो, इससे तुम्हें क्या परेशानी है।

मनोरमा—मैं कैसे सोऊँ ?

विनय मोहन—जैसे मैं सोता हूँ।

मनोरमा—नहीं, मैं इस तरह नहीं सो सकती। एक दो दिन को हो तो कोई बात नहीं। रोज-रोज तो⋯⋯!

विनय मोहन—तो क्या चाहती हो।

मनोरमा—जाइए ! और उनसे कहिए, बाजा बन्द करें।

बिनय मोहन—वे अपने कमरे में गा-बजा रहे हैं। भला मैं उन्हें कैसे रोक सकता हूँ ?

मनोरमा—अपने कमरे में इस तरह नहीं गा-बजा सकते कि दूसरों की नींद हराम करें। मैं पूछती हूँ, आप उनसे इतना दबते क्यों हैं ? आप न जायें तो मैं जाऊँ ?

विनय मोहन—अच्छा मैं जाता हूँ।

[पलंग से उठने, जूता पहनने और चलने की आवाज।]

विनय मोहन—क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ।

प्रभात कुमार—आओ विनय, तुम्हारी भाभी गा रही हैं। सङ्गीत का आनन्द लो। मनोरमा को भी न बुला लो। दिन भर के काम के बाद यह सङ्गीत सारी थकान मिटा देता है।

विनय मोहन—जी !

[सङ्गीत जारी रहता है। बगल के कमरे से घड़ी का एलार्म बजने की आवाज।]

उषा—(गाना बन्द करके) देखा न आपने ! देवी जी एलार्म बजा रही हैं। हमारे आनन्द में कितना बड़ा विघ्न डाल रही हैं।

प्रभात कुमार—क्यों भाई विनय ! तुम्हारी भाभी क्या कह रही हैं ?

विनय मोहन—ऐसी बात नहीं है। सम्भवतः एलार्म अपने आप बज उठा है।

उषा—अच्छा मैं जाकर देखती हूँ।

[उषा के जाने की आहट।]

प्रभात कुमार—विनय ! तुम भी जाओ। देखो क्या बात है ?

विनय मोहन—मैं यहीं बैठता हूँ आप ही चले जाइये।

[प्रभात कुमार के जाने की आवाज।]

उषा—क्यों बहन मनोरमा ! यह एलार्म क्यों बजा रही हो ?

मनोरमा—रात को ग्यारह बजे हैं और आप सोने नहीं देती हैं तो क्या करूँ। मैं भी आपके संगीत में योग दे रही हूँ, अब जब तक आप गायेंगी मेरा भी एलार्म बजता रहेगा।

[घड़ी में चाभी ऐंठने की आवाज।]

प्रभात कुमार—बेशक ! यह विश्राम-काल का अच्छा सिगनल है। चलो उषा, अब सोवें। बेशक बड़ी देर हो गई है।

उषा—नहीं, ये इस तरह एलार्म नहीं बजा सकती हैं।

मनोरमा—और आप भी इस तरह बेवक्त नहीं गा सकती हैं।

प्रभात कुमार—बेशक ! आप दोनों को समझौता करना ही पड़ेगा। जब हम एक साथ एक घर में रह रहे हैं तब एक दूसरे की रुचि का खयाल करना ही पड़ेगा। अरे ! विनय मोहन !

विनय मोहन—(तेजी से आते हुए) जी, प्रोफेसर साहब !

प्रभात कुमार—भाई बात ठीक है। बेशक बड़ी रात हो गई है। उषा की ओर से मैं माफी माँगती हूँ। कल से कुछ ऐसा करेंगे कि आप लोगों की नींद में कोई खलल न पड़े।

विनय मोहन—मैं क्या कहूँ ! प्रोफेसर साहब मैं स्वयम् बहुत लज्जित हूँ। सभ्य समाज में ये रही नहीं हैं इसी से यह दुखद घटना हो गयी।

प्रभात कुमार—कोई बात नहीं, अब तुम लोग सोओ ! हम लोग भी जाकर सोते हैं। आओ उषा।

[दोनों के अपने कमरे में जाकर किवाड़े बन्द करने की आवाज।]

× × ×

विनय मोहन—लो ! अब तो खुश हो। सङ्गीत बन्द हो गया।

मनोरमा—एक दुःख हो तो उसको चुपचाप सह भी लिया जाय। नाक में दम कर रखा है, इन लोगों ने।

विनय मोहन—और भी कोई बात है ?

मनोरमा—गुसलखाना देखा आपने ! कोई बच कर निकलना चाहे तो मुश्किल है। तिपाई, टब, साबुन, तैल, कंघा जैसे सारा गुसलखाना ही उन्हीं का हो।

विनय मोहन—तुम भी अपनी चीजें उसमें रख सकती हो। इसमें क्या बात है।

मनोरमा—एक दातौन रखने की तो कहीं जगह बची नहीं है और क्या रखूंगी।

विनय मोहन—अच्छा सबेरे इस पर भी खुलासा बात कर लेंगे। चलो अब सोओ ?

[! विराम !]

[२]

[दूसरा दिन प्रातःकाल आठ बजे हैं।]

प्रभात कुमार—उषा, जाओ ! मनोरमा और विनय को बुला लाओ। सब एक साथ चाय पियेंगे।

उषा—वह गंवार औरत है। जितना ही खुशामद करोगे उतना ही सिर पर चढ़ेगी।

प्रभात कुमार—तुम्हीं सोचो ! मकान बड़ा है। हम तुम इतने बड़े मकान में अकेले रह नहीं सकते और इतना किराया भी नहीं दे सकते।

उषा—मैं उनको निकालने को थोड़े ही कहती हूँ। पर कितनी दुष्ट है वह स्त्री। उधर देखिये।

[कुत्ते के पिटकर रोने की सी आवाज।]

प्रभात कुमार—क्या बात है ?

उषा—देखो न हमारे कुत्ते को पीट रही है ?

प्रभात कुमार—शायद कुत्ते ने कोई नुकसान किया हो। जरा देखो तो !

उषा—(आगे बढ़ कर) क्या बात है, मनोरमा जी, मेरे कुत्ते को क्यों पीट रही हैं।

मनोरमा—यह देखिये ! मेरी चप्पलें !

[दोनों चप्पलों को जोर से जमीन पर पटक देती है।]

उषा—ओफ, चप्पलों को काट डाला इसने।

मनोरमा—(सिसकते हुए) बिलकुल नयी चप्पलें थीं। अभी कल ही साढ़े सात रुपये में मँगाई थीं। एक तो बिना नाक की हो गयी।

उषा—बहन, नाराज न हों, मैं नयी मँगवा दूँगी।

मनोरमा—रोज ही यह एक न एक नुकसान करता है। आप क्या मगवायेंगी।

विनय कुमार—उषा भाभी, आप चिन्ता न करें मैं इन्हें नयी ला दूंगा। सच पूछिये तो इन्हीं की लापरवाही है।

उषा—खैर, कल गुसलखाने की आप क्या चर्चा कर रहे थे।

विनय कुमार—कुछ भी नहीं, मैं अभी नहा-धोकर आ रहा हूँ। आपने तो गुसलखाने को इस तरह सजा दिया है कि उसमें बार-बार जाने का जी करता है।

मनोरमा—बस, तो आप उसी में जाकर बैठिये। मैंने तो तय किया है, आज से खुले में एक बाल्टी पानी रख कर उससे नहा लूंगी।

विनय कुमार—मनोरमा, उषा भाभी विलायत हो आई हैं। घर की सजावट करना ये तुझसे अच्छा जानती हैं। इनसे कुछ सीखो।

मनोरमा—खैर, ये गुसलखाना सजावें। ड्राइङ्ग रूम मेरे ऊपर छोड़ दें।

उषा—तुम जानती ही नहीं हो कि ड्राइङ्ग रूम किसे कहते हैं।

मनोरमा—जानती हूँ। ड्राइङ्ग रूम वह कमरा है जिसमें हम बैठ सकें और अपने मेहमानों को बैठाल सकें।

उषा—बेशक ! इसीलिये उसे सबसे अच्छा सजाना चाहिए ?

मनोरमा—सजाने को कौन मना करता है, पर आप तो उसे कबाड़ी की दूकान बनाना चाहती हैं।

उषा—रोकिये इनको विनय बाबू, मैं यह अपमान सहन नहीं कर सकती। (जोर जोर से सिसकती है।)

विनय कुमार—मनोरमा ! तुम्हें अक्क कब आवेगी। जो कुछ कहा है वापस लो और उषा भाभी से माफी मांगो।

मनोरमा—माफ करो बहन ! अगर ऐसा है तो तुम अपने मन का ड्राइङ्ग रूम सजा लो। मैंने तो जैसे गुसलखाना छोड़ दिया है वैसे ही ड्राइङ्ग रूम भी छोड़ दूंगी।

[प्रभात कुमार का प्रवेश]

प्रभात कुमार—अरे ! उषा, मैंने तुम्हें भेजा था कि इन दोनों को बुला लाओ और तुम यहाँ आकर सिसक रही हो।

उषा—इन्हें तो मेरी चीज नापसन्द आती है। चाय भी पसन्द न आये तो ?

प्रभात कुमार—चाय कैसे पसन्द नहीं आयेगी, आइये सब लोग इकट्ठे चाय भी पियेंगे और बातें भी करेंगे। हम दो प्रोफेसर जब एक घर में एक साथ मिलकर नहीं रह सकते तब इतने बड़े देश को एकता का पाठ कैसे पढ़ा सकते हैं।

[सबके जाने की आहट। प्रभात कुमार के कमरे में कुर्सियों के खींचने और उस पर बैठने की आहट।]

प्रभात कुमार—ओह ! कब से चाय रखी है।

उषा—बिलकुल ठंडी हो गई। (सबके प्यालों में उँडेलती है।)

विनय मोहन—नहीं तो, अभी बिलकुल ठीक है, बहुत गर्म।

[कुत्ता उधर से भौंकता आता है।]

प्रभात कुमार—मनोरमा देवी, यह आपको भूँक रहा है।

मनोरमा—जी, अपनी मालकिन के इशारे समझता है।

[प्रभात कुमार जोर से हँसते हैं।]

उषा—जी, और मेरे कहने से इसने इनकी चप्पलें भी काट डालीं।

मनोरमा—आखिर आपकी चप्पलें क्यों नहीं काटता।

[बिल्ली की आवाज]

उषा—अरे यह बिल्ली कहाँ से आ गई।

मनोरमा—मेरी है।

प्रभात कुमार—आपकी ?

मनोरमा—जी !

विनय मोहन—मैंने तो इसे आज ही देखा है।

मनोरमा—मौसी के घर में थी। मैंने सोचा हिल जायगी तब ले जाऊँगी।

विनय मोहन—कल शाम तक तो नहीं थी।

मनोरमा—उन्होंने आज भिजवा दिया होगा ?

विनय मोहन—तब यह कहो, यह उषा भाभी के कुत्ते का जवाब है।

मनोरमा—हाँ, आप उनके मन में यह भाव पैदा कर सकते हैं।

प्रभात कुमार—यह कुत्ते का पूरक है।

[इसी बीच में कुत्ता बिल्ली की ओर भूँकता हुआ झपटता है।]

उषा—ओह ! यह तो बड़ी मुसीबत आई, जाने इस कुत्ते ने बिल्ली को कैसे देख लिया।

प्रभात कुमार—जब आपने देखा, तब वह कैसे न देखता ?

उषा—यानी मैंने कुत्ते को बिल्ली के पीछे छोड़ दिया है।

[कुत्ता जोर-जोर भूँकता है। बिल्ली उछल कर मेज पर चढ़ जाती है।]

उषा—(हे भगवान्) प्याले-वाले सब टूटना चाहते हैं। (कुत्ते को डांटती है पर कुत्ता भूँके ही चला जाता है।)

मनोरमा—इधर आ।

[बिल्ली को पकड़ कर अपने पास बैठालने का यत्न करती है। पर बिल्ली उसे पंजा मारती है और पास की खुली आलमारी पर चढ़ जाती है।]

मनोरमा—(चीखती है) हाय मरी रे !

उषा—(चीखती है) हाय ! रे ! ए ! ए !

मनोरमा—(अपनी उँगली दिखाते हुए) ओह बड़े तेज नाखून इसके हैं। कैसा पंजा मार दिया।

उषा—इसीलिये कोई बिल्ली नहीं पालता।

मनोरमा—कुत्ते वाले घर में बिल्ली की मुसीबत है।

विनय कुमार—और बिल्ली की मालकिन की भी?

मनोरमा—(सिसकती है) अगर कुत्ता न होता?

उषा—हाय रे! ए! बिल्ली।

प्रभात कुमार—ऐसा चीख क्यों रही हो, तुमने कभी बिल्ली नहीं देखी।

उषा—उषा देखते नहीं हो, उस शेल्फ पर चढ़ पर गई है। हाय रे! मेरी सङ्गमरमर की आदि पुरुष की मूर्ति गिर कर टूटना ही चाहती है। इटली में मैंने इसे खरीदा था।

प्रभात कुमार—मनोरमा का कहना ठीक ही है तो, तुम हर जगह को कबाड़ी की दूकान बना देती हो। अब बिल्ली किधर से निकले। कहीं रास्ता है। दुनिया भर का कूड़ा कर्कट गांज रखा है।

उषा—बलिहारी है, आप लोगों की रुचि की।

विनय कुमार—उषा भाभी, कुत्ते को इधर बुलाओ तो बिल्ली स्थिर हो जायगी।

[उषा-राम! ओ राम! कह कर कुत्ते को बुलाती है। पर वह भूँके ही चला जाता है।]

मनोरमा—ओह! आज नयी बात मालूम हुई कुत्ते को राम कह रही हैं। ओह भगवान् के नाम का कितना अनादर है।

विनय मोहन—अनादर नहीं, राम के नाम लेने का यह एक बहाना है। जब कुत्ते को बुलावेंगी मुँह से राम का नाम निकलेगा।

[खड़. खड़...खड़ खिलौनों के गिरने की आवाज, कुत्ते के भूँकने की आवाज, बिल्ली के उछलने की आवाज।]

उषा—हाय! मेरी तो बहुमूल्य चीजें सत्यानाश हुई जा रही हैं। यह साझे का घर तो हमको बहुत महंगा पड़ेगा।

मनोरमा—मेरी चप्पल गई, उँगली गई। मुझे कौन यह घर सस्ता पड़ रहा है।

[फिर खड़खड़ाहट। आदि पुरुष की मूर्ति गिर कर चूर-चूर हो जाती है।]

उषा—हाय! मेरे आदि पुरुष।

मनोरमा—हाय! मेरी चप्पलें।

उषा—तुम्हारी चप्पलों का दाम मैं देने को तैयार हूँ। तुम दे सकोगी मेरे आदि पुरुष की मूर्ति २५) की है।

मनोरमा—बिल्ली ने जान-बूझ कर थोड़े ही गिराई है।

उषा—और कुत्ते ने तुम्हारी चप्पलें जानकर काटी हैं।

मनोरमा—बेशक, कुत्ते को सिखाया जाय तो वह कुछ नुकसान नहीं कर सकता।

उषा—अच्छा, मैं अपने कुत्ते को बाँध रखूँगी।

[जञ्जीर लेकर उसे बाँधने चलती है। राम! ओ राम! कहती हुई। कुत्ता जोर जोर से भूँकता है। बिल्ली कमरे में उछलती और चीजें गिराती है। खड़-खड़!]

[! विराम !]

[३]

[संध्या समय ८ बजे हैं। उषा ड्राइङ्ग रूम में नाप-जोख कर रही है। मनोरमा का प्रवेश।]

मनोरमा—अँग्रेज गये, लेकिन अपना ड्राइङ्ग रूम इस देश में छोड़ गये।

उषा—यह बहुत बड़ी चीज है जो अँग्रेज हमें दे गये हैं। इस ड्राइङ्ग रूम को अच्छी तरह सजाने के लिये १०००) रुपये भी कम ही हैं। पर मेरे पति-देव कहते हैं, इससे अधिक की गुञ्जाइश वे नहीं निकाल सकते। इसमें आधा विनय बाबू देने को तैयार हो गये हैं। पर मैं चाहती हूँ, १०००) हम लगावें और १०००) तुम लगाओ तो मजा आ जाय।

मनोरमा—नहीं-नहीं! मैं तो ५००) भी लगाने के खिलाफ हूँ। यह नहीं हो सकता कि रुपया भी लगाऊँ और कमरे की सजावट में अपनी राय भी न रखूँ।

उषा—आखिर तुम्हारी राय क्या है?

मनोरमा—मैं चाहती हूँ दो-तीन तखत मिला बिछा दिये जाय. उन पर गद्दा हो, गद्दे पर चादर चादर पर तकिये बस।

उषा—ड्राइङ्ग रूम तुमने नहीं देखा बहन, किसी सेठ जी का गद्दा शायद देखा हो।

मनोरमा—मैंने देखा सब कुछ है। पर मैं अँग्रेजों की नकल नहीं चाहती। ड्राइङ्ग रूम को भारतीय ढङ्ग से सजाना चाहती हूँ। सादा पर सुरुचि पूर्ण।

उषा—मैं तो सोफा सेट कुर्सियों, गुलदस्तों दीवाल पित्तों पूर्ण पर दरी दरवाजों खिड़कियों पर पर्दों के वगैर ड्राइङ्ग रूम की कल्पना ही नहीं कर सकती।

मनोरमा—मैं इन सब चीजों को गर्द बटोरने का साधन समझती हूँ।

उषा—खैर बीच में पर्दा कर ड्राइङ्ग रूम दो भागों में बाँट दिया जाय। आधे में आप लोग चाहे जैसे रहें आधे में हम।

मनोरमा—मुझे स्वीकार है।

[उषा तत्काल कमरे के बीचो बीच से खड़िया से एक रेखा खींचती है।]

उषा देखो! यह बटवारा तुम्हें स्वीकार है।

मनोरमा—हाँ!

[विनय कुमार का प्रवेश]

उषा—आओ विनय बाबू!

विनयकुमार—ओ भाभी यह क्या हो रहा है।

उषा—जो होना चाहिए। हम लोग एक साथ एक तरह से नहीं रह सकते।

मनोरमा—(ड्राइङ्ग रूप के अपने हिस्से में झाड़ू लगाते हुये) ओह कब से इसमें झाड़ू नहीं पड़ी।

विनयकुमार—लगाया क्यों नहीं कोई रोके था।

मनोरमा—साझे के घर में कौन झाड़ू लगावे अब बट गया है। अपना हिस्सा साफ रखूँगी।

उषा—(अपने हिस्से की तरफ खड़ी होकर) खैर हमारी तरफ कूड़ा मत फेंकिये बहन!

विनय कुमार—ठहरो! उषा भाभी! तुम्हारा हिस्सा मैं साफ किये देता हूँ।

उषा—आप रहने दीजिए। नौकर आयेगा साफ कर लेगा ये सब नौकरों के काम हैं।

मनोरमा—मैं इसे गृहिणी का काम समझती हूं।

[और जो जोर से झाड़ू लगाती है और उषा की तरफ कूड़ा बहारती है। उधर से विनय मनोरमा की तरफ बहारता है।]

प्रभात कुमार—अरे यह क्या हो रहा है।

उषा—देखिये न! देवी जी अपने पति ही से लड़ रही हैं।

विनय कुमार—मनोरमा नहीं मानेगी?

प्रभात कुमार—विनय कुमार! पहले तुम तो मानो।

[विनय कुमार झाड़ू रख देता है।]

प्रभात कुमार—अब यह निश्चय हो गया कि आप दोनों स्त्रियां मिल कर इस ड्राइङ्ग रूम को नहीं बना सकती। आप लोग यह काम हम पुरुषों पर छोड़ दें।

उषा—यह लो मैं जाती हूँ।

मनोरमा—यह लीजिये मैं भी जाती हूँ।

[दोनों की दो तरफ जाने की आहट]

प्रभात कुमार—मैं ने कोई भी ऐसा घर नहीं देखा जहाँ दो स्त्रियाँ मेल से रह सकें।

विनय मोहन—और मेरा तो अनुभव है कि अकेली स्त्री भी शान्त नहीं रह सकती। वह हवा से लड़ती है।

[उधर से बिल्ली आती है। उधर से कुत्ता भूँकता आता है। दोनों स्त्रियां बुलाती हैं।]

प्रभात कुमार—यह कुत्ते बिल्ली भी एक समस्या हो गये।

विनय कुमार— आज दोपहर को ही मैं इस बिल्ली को थैली में बन्द करके बहुत दूर छोड़ आया था। न जाने कैसे आ गई।

प्रभात कुमार—इस तरह काम न चलेगा। हम तुम एक साथ सुख से रह सकें इसके लिये जरूरी है कि इस कुत्ते और बिल्ली में मेल कराया जाय।

विनय कुमार—ऐसा हो जाय तो क्या कहना।

प्रभात कुमार—यह लो मैं ने कुत्ते को पकड़ पकड़ लिया। तुम बिल्ली को पकड़ो तो।

विनय कुमार—पकड़ लिया।

प्रभात कुमार—अब इन्हें पास पास लाया जाय! छोड़ना मत।

[कुत्ता भूँकता है बिल्ली फुसकारती है]

उषा— दौड़ी हुई आती हैं) छोड़ों मेरे कुत्ते को, बिल्ली से कटवाना है क्या ?

मनोरमा—(दौड़ी हुई आती है) छोड़ों मेरी बिल्ली को। उसे कुत्ते से कटवाना है क्या ?

प्रभात कुमार इ हें एक साथ रहना सिखा रहे हैं।

रोटी बनाने का कारखाना

लेखक, इ० बोरोसोव और आई० प्यातनोवा

इन कारखानों की इमारतें असाधारण आकार की—पूर्णतः गोल हैं।

सोवियत संघ के रोटी बनाने वालों को आज दिन तक अपने कल कारखानों पर न्यायोचित गर्व है जिनका निर्माण चौथे दशक में मार्साकोव पद्धति के अनुसार हुआ था।

कारखाने की जांच-परख करने के बाद हमें पता चला कि इसका निर्माण इस ढंग से क्यों हुआ है। यह अनेक मंजिलों की विशाल चक्करदार गाड़ी है? बाहर हमने खिड़कियों की कतार देखी जब कि अन्दर हर एक गोल शीशे के पीछे खमीरी आटे से भरी विशाल नादें. तैयार खमीर से भरे लिनेन की छलनी, या अन्ततः चूल्हे में पकाने के लिए तैयार रोटियां धीरे धीरे चक्कर लगाती रहती हैं। प्राविधिक भाषा में मार्काकोव पद्धति को गोलाकार कठिन कनवेयर पद्धति कहते हैं।

हम इस चक्कर दार गाड़ी के एक घेरे में गये। इसका घेरा विशाल और बिल्कुल ही गोलाकार है और इसमें प्रचुर रोशनी और हवा के आने जाने की व्यवस्था है। बीच में स्तम्भ के रूप में एक वृहत् कुआं है जिसका घेरा लगभग बीस मीटर है जिसमें विविध यांत्रिक प्रसाधन तथा रहट की तरह बालटियों का एक क्रम लगा रहता है जिसके द्वारा आटा तहखाने से (जहाँ वह संचित रहता है) ऊपर की मंजिल पर पहुँचाया जाता है जहाँ खमीर बनाने की कच्ची सामग्रियों की नाप-जोख और तौल होती है। स्तम्भ के चतुर्दिक चार रिंग हैं जिनमें नादें बन्धी हुई हैं। हर रिंग के ऊपर लकड़ी की खोल नादों पर चढ़ी हुई है जो सिर्फ कुछ स्थानी में दिखाई देती है।

हम एक खाली नाद के पास रुके। एक मजदूर स्त्री ने लीवर को दबाया और गेहूँ के आटे का एक हिस्सा जो स्वयंचालित तराजू पर पहले ही तौला जा चुका था नाद के ऊपर लिनेन की छलनी में उड़ेला गया। इसके साथ साथ नालियों के द्वारा पानी और तरल खमीर उड़ेल दी गयी। इसके बाद नाद खमीर गूँधने वाली मशीन के पास चली गयी। इसके धातुनिर्मित शक्तिशाली हाथ आटा में पानी मिलाते थे और बाद में खोल के नीचे टनेल में उसे सरका देते थे। वहाँ खमीर बनाने के लिए आवश्यक तापमान रखा जाता है।

लेकिन खमीरी आटा नाद में अभी तैयार नहीं है। यह दो बार करके बनाई जाती है। पहले सिर्फ आटा और पानी का एक हिस्सा पूरी खमीर में मिलाया जाता है। यह स्पञ्ज कहलाता है। साढ़े तीन-चार घटों में खमीर तैयार होती है और तब फिर बाहर लाई जाती है।

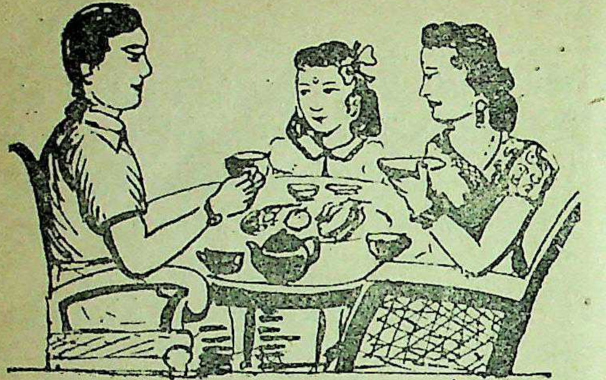

'दीदी' का ध्येय प्रत्येक मामले में पाठिकाओं को व्यक्ति गत सलाह देना भी है। इसलिये पाठिकाओं से निवेदन है कि यदि आपके सामने कोई ऐसी समस्या हो तो उत्तर के लिये =) के स्टाम्प से युक्त अपने पते का लिफाफा भेजें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार गुप्त रखे जाते हैं। श्यामाबाई मार्फत 'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद—२

आपको कुछ पूछना है ?

आँवले से सौंदर्य वृद्धि

प्रश्न—'दीदी के किसी अङ्क में छपा था कि आँवले के सेवन से सौंदर्य वृद्धि होती है। कृपया बताएँ सौंदर्य के लिए आँवले का सेवन किस प्रकार करूँ ?

उत्तर—शाम को सूखे आँवले किसी मिट्टी के बर्तन में चूर्ण करके भिगो दो। प्रात काल उसके पानी को छान कर दांतौन के बाद उससे कुल्ले कीजिये। इससे दाँत शुद्ध व चमकीले होंगे। उसी पानी के छींटे आँखों पर मारिये। इससे नेत्र विशाल होंगे व उनकी ज्योति बढ़ेगी। उसी पानी से मुँह धोवें। इससे मुहासा व झांई रोग दूर होंगे।

मुरब्बा, चटनी या अचार किसी भी रूप में कम से कम एक आँवला रोज खाइये। इससे सम्पूर्ण शरीर नीरोगी व सुन्दर होगा।

सौत या मौत ?

प्रश्न—मेरे सामने यह प्रश्न है कि मैं सौत या मौत दो में से किसको कबूल करूँ? मेरे पति ने दूसरी शादी कर ली है और यह स्त्री मेरा बड़ा अपमान करती है। इसके साथ जीवन बिताने से मर जाना अच्छा समझती हूँ। पर मरा भी नहीं जाता, क्या करूँ?

उत्तर—यह दुःख की बात है कि आज के युग में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो एक पत्नी के रहते दूसरी शादी कर बैठते हैं। यदि आप साहस दिखा सकें तो ऐसे पति को त्याग दें और अपना स्वतन्त्र जीवन बितावें। पर शायद इतना साहस या शक्ति आप में नहीं है, तब दूसरा रास्ता यही है कि अपनी सौत से मैत्री करें और प्रेम पूर्वक रहें। क्रमशः सब ठीक हो जायगा।

दहेज का प्रश्न

प्रश्न—मेरी अवस्था लगभग ३० वर्ष की हो चुकी है पर दहेज का प्रश्न हल न हो सकने से मेरी शादी न हो सकी। इसी चिन्ता में पिता जी स्वर्गवासी हो गये। गत वर्ष माता जी भी चल बसीं। भाई-भौजाई मुझे अभागिनी कह कर धिक्कारते हैं और घर से निकल जाने तक को कह बैठते हैं। क्या करूँ?

उत्तर—सब कुछ धैर्य से सहते हुए अपने पैरों पर खड़ी होने का यत्न करें यानी कोई काम सीख कर अपनी जीविका अर्जित करें और भाई भौजाई से स्वतन्त्र हो जायँ। इस प्रकार हो सकता है आप को विवाह की आवश्यकता ही न पड़े परन्तु यदि आप आवश्यकता समझें तो जाति के बाहर अपने मन का मीत चुन कर उससे शादी कर सकती हैं।

ठगों की एक कहानी

साढे सात आने का दान

लेखक, श्री बुद्धिसागर वर्मा विशारद बी० ए० एल-टी०

[१]

ग्रीष्म ऋतु के दिन थे। मैं दोपहर का खाना खाकर बाहर कमरे में लेटा हुआ धीरे-धीरे हुक्के का आनन्द ले रहा था। मैं उन दिनों सब-डिप्टी इन्सपेक्टरी की कोशिश में था। अतः पड़ा-पड़ा यही सोच रहा था कि किस प्रकार इस पद की प्राप्ति हो सकती है। इतने में एक अपरिचित व्यक्ति आकर सामने खड़ा हो गया। इच्छा न होते हुए भी उसे शिष्टाचार वश स्थान देना पड़ा। आगन्तुक की आयु २५-३० वर्ष से अधिक न थी। सिर पर मैली-सी पगड़ी, मस्तक पर त्रिपुण्ड की सुन्दर रेखा साधारण शरीर पर खद्दर की मिर्जई और एक मैली-सी धोती। कन्धों पर राम नामी दुपट्टा, हाथ में एक मोटा-सा डण्डा, बगल में एक बूटेदार मैले कपड़े में बंधी हुई २-३ पोथियाँ, व सम्वत् का पत्रा ऊपर से खुसा हुआ, पैरों में पुराना फुलस्लीपर जिसने शायद बरसों से पालिश की शकल भी न देखी थी।

मैंने पूछा—'महाराज, आप कौन हैं और कहाँ से आना हुआ?'

उत्तर मिला—'मैं ज्योतिषी हूँ, काशी जी से आ रहा हूँ। मैं भविष्य बता सकता हूँ। सफलता या असफलता, मूक प्रश्न, हस्तरेखा, सामुद्रिक आदि का ज्ञान मैंने कठिन परिश्रम के पश्चात् प्राप्त किया है। अरिष्ट ग्रहों की शान्ति और निवारण की विधि भी जानता हूँ। बड़े-बड़े रजवाड़ों से मुझे पारितोषिक और प्रशसा पत्र मिले हैं। आप भी कोई प्रश्न करके परीक्षा कीजिये?'

यह कह कर वह अपना बस्ता खोलने लगा। मैंने कहा—'महाराज मुझे कुछ पूछना नहीं है। मैं इन बातों पर विश्वास नहीं करता।' मुझे आशा थी कि इस प्रकार यह बला टल जायगी किन्तु वह अपनी ही कहे जाता था। लक्षण ऐसे प्रतीत होते थे कि सहज में उखड़ने वाला नहीं है। मैं हैरान था कि कैसे पीछा छुड़ाऊ।

इतने में एक और भद्र मूर्ति ने दर्शन दिये। इन का वेश-भूषा सन्यासियों का-सा था गेरुये वस्त्र, हाथ में कमण्डल, सिर मुड़ा हुआ, नंगे पैर। उन्होंने गली में खड़े होकर पहले तो इधर-उधर निगाह दौड़ाई, मानो किसी को ढूँढ़ना चाहते हों। फिर कुछ रुक कर बैठक के सामने वाले चबूतरे पर आ गये। मैंने उनकी सौम्य मूर्ति त्याग-मुद्रा और सन्यासी रूप देख कर हिन्दू संस्कार वश उन्हें अभिवादन किया।

ज्योतिषी जी भी सम्भल कर बैठ गये। अब उनकी वाचालता और आत्मश्लाघा का प्रवाह मन्द पड़ गया था।

मेरे चबूतरे के सामने गली में मुहल्ले वालों की सुविधा के लिये चुङ्गी की ओर से नल लगा हुआ है। महात्मा जी ने नल की ओर देख कर मुझसे कहा—'बच्चा, यह किसका नल है।'

मैंने कहा—'यह सबका नल है, इसमें सभी जाति के लोग पानी पीते हैं।'

उन्होंने कुछ घृणा सूचक मुँह बनाया और बोले—'बच्चा, मैं तुम्हारे घर का पानी पीऊँगा।'

मैंने श्रद्धा पूर्वक ठण्डा जल मँगा कर उन्हें पिलाया। अँचले से मुँह हाथ पोंछ कर वह एक कुर्सी पर बैठ गये। पहले तो उन्होंने इधर-उधर दृष्टिपात किया, फिर उनकी तेज आँखें मेरे ऊपर गड़ गईं। मैं किसी दूसरे सवाल का इन्तजार कर रहा था और उसके लिये उपयुक्त उत्तर की खोज अपने दिमाग के कोने-कोने में कर हा था। अब वे ज्योतिषी की ओर ध्यान से देखने लगे। कमरे में निस्तब्धता छाई हुई थी।

महात्मा जी ने ज्योतिषी की ओर देखते हुए मुझसे पूछा—'बच्चा, यह कौन है।'

मैंने कहा—महाराज, यह एक ज्योतिषी है, ज्योतिष विद्या जानते हैं, भविष्य वक्ता भी हैं। इसी से इनकी जीविका चलती हे, चार पैसे कमा लेते हैं। इसी आशा से मेरे पास आ बैठे हैं।'

सन्यासी जी कुछ गम्भीर हो गये। बोले—'इन लोगों के चक्कर में मत आना, यह बड़े धूर्त होते हैं। इन्हें कुछ भी तो नहीं आता।'

ज्योतिषी बिगड़ने लगा। भला इस प्रकार कौन अपनी तौहीनी सहन कर सकता है। दोनों में वाग्युद्ध छिड़ गया। मैंने शान्त करने की चेष्टा की। मेरा उस समय कर्तव्य यही था। किन्तु मेरी कौन सुनता था दोनों अपनी-अपनी विद्वता की डींग मारने लगे। मैं अपना हुक्का पीने लगा।

अन्त में सन्यासी जी ने कहा—'अच्छा तू बड़ा पंडित बनता हे। मेरे प्रश्न का उत्तर दे—पहले अपनी आँखें बन्द कर।'

ज्योतिषी ने झट हाथ से आँखें बन्द कर लीं। सन्यासी ने २ उँगलियाँ उठाई और पूछा—'बता कितनी हे?'

ज्योतिषी ने उत्तर दिया—'चार।'

सन्यासी ने मुझसे कहा—'देख ली इसकी विद्या। (ज्योतिषी से) अच्छा अब तू पूछ ले, मैं भी अपनी आँखें बन्द कर लेता हूँ।' ज्योतिषी ने दो उँगलियाँ उठाईं। सन्यासी का उत्तर ठीक था। ज्योतिषी लज्जितत हो गया।

दोनों का वाग्युद्ध होते समय मैंने देखा था कि ज्योतिषी कितना उत्तेजित और उद्दण्ड हो गया था, किन्तु सन्यासी न तो उत्तेजित ही हुआ और न उसने घृणित शब्दों का प्रयोग ही किया था। अतः उसकी शालीनता. चतुरता और विद्वता की छाप मेरे सरल और निष्कपट हृदय पर पड़ना स्वाभाविक थी, मैं प्रभावित हो गया।

कुछ देर इधर-उधर की बातें होती रहीं। पश्चात् सन्यासी जी ने पूछा—बच्चा तेरे मन में राज-पद पाने की लालसा है'

यह मेरे मन की बात थी। मैं और भी प्रभावित हुआ। मेरी श्रद्धा और भी बढ़ गई। मैंने कहा—'हाँ स्वामी जी मैं सब डिप्टी इन्सपेक्टरी की कोशिश कर रहा हूँ। क्या मैं सफल हूँगा।'

कुछ देर गम्भीर चिन्तन के बाद वह बोले—'हाँ योग तो ऐसा ही है। किन्तु कुछ बाधाय हैं। कुछ आरिष्ट-गृह रुकावट डाल रहे है। इनका उपाय कर देने से सोलहो आने सफलता है।'

मैंने उपाय पूछा। उन्होंने कहा—'कुछ दान की व्यवस्था करनी होगी।'

मैं कुछ चौंका—'कितना दान। और किसे देना होगा?' मैंने पूछा।

'यही साधारण...मैं तो कुछ ग्रहण नहीं कर सकता! सन्यास को धन से क्या काम? किसी अपने मान्य को दे देना। पाँच टके का दान और एक सीधा पर्याप्त होगा।' उन्होंने उत्तर दिया।

मैंने सोचा सस्ते छूट रहे हैं। यह कोई कठिन भी नहीं है। इतने पैसे तो नित्य सिगरेट पान में ही व्यय हो जाते हैं। मैं राजी हो गया।

उन्होंने फिर पूछा—'अच्छा तो किसे देना निश्चय किया हे।'

मैंने कहा—'मेरे घर में भानजा-भानजी, बहनोई आदि भी हैं। हम ब्राह्मणों में इन्हें मान्य समझा जाता है। यदि कहिये तो अपने पुरोहित को ही दे दूं।'

वे बोले—'बिलकुल ठीक! किन्तु जिसे दान देना. १५ दिन तक उसका दर्शन न करना, नहीं तो तुम्हारे लिये अनिष्टकर होगा।'

मैं बड़े असमञ्जस में पड़ गया। घर में रहने वालों को १५ दिन न देखूँ! यह कैसे हो सकता है, उन्होंने कहा—'चिन्ता की कोई बात नहीं, इस ज्योतिषी को ही क्यों न दे दो। मैंने एक सीधा मगवाया—घी, आटा, दाल, नमक और कुछ सब्जी दस पैसे भी अण्टी से निकाले। स्वामी जी ने ज्योतिषी से कहा—'क्यों भाई दान ले सकते हो इन का?' उसने कहा—'हाँ महाराज क्यों नहीं लूँगा?'

अध्यापनं अध्ययनं, यंजन याजनं तथा।
दानं अति ग्रहणं चैव, ब्रह्म कर्म स्वभावजम्॥

किन्तु मैं इसकी सिद्धि और अरिष्ट दमन के निमित्त उल्टा दान कराऊँगा। उल्टा दान लेने में तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है? ··स्वामी जी ने कहा

ज्योतिषी ने कानों पर हाथ रखकर बड़ी गम्भीर मुद्रा बनाई और बोला—'ना बाबा, उल्टा दान मैं नहीं ले सकता। बाल-बच्चों वाला आदमी ठहरा। मुझे अपना भी तो कुछ ख्याल है।··ना बाबा मुझ से यह न होगा।'

वह उठ कर चलने का उपक्रम करने लगा। स्वामी जी ने मुझे एकान्त कमरे में ले जाकर कहा—

'देखो. यह कहता ठीक है, कोई भी उल्टा दान ग्रहण न करेगा। कुछ अधिक दे दो यही ले लेगा।'

'तो फिर कितना देना होगा?' मैंने पूछा।

'एक गऊ कितने में आती है?' उन्होंने पूछा।

'भिन्न-भिन्न प्रकार की गायों का दाम भिन्न-भिन्न होता है। जैसी गाय वैसा दाम।

'कम से कम कितने दामों की एक गाय आ सकती है।

'यही कोई २५) में।'

'अच्छा २५) को ५ से भाग दो।' कितना हुआ?'

'५) अच्छा मैंने कहा।'

'अच्छा ५) और रक्खो।'

मेरी आँखे खुली। मैंने कहा—'महाराज मैं दान-वान कुछ नहीं करूँगा। आप रहने दीजिये। मैं बाज आया।' थोड़ी देर तक दुकानदारी का-सा मोल-भाव होता रहा। स्वामी जी अधिक से अधिक दिलाने की चेष्टा कर रहे थे। और मैं कम से कम देने पर तुला हुआ था। मुझे अयोध्या जी के पण्डों का दृश्य याद आ रहा था अन्त में स्वामी जी ने मामला बिगड़ता हुआ देख कर पूछा—'अच्छा तुम्हारी अण्टी में कितना धन है।' मैंने अण्टी में हाथ डाला। एक चवन्नी और चार पैसे निकले। उन्होंने कहा—'खैर इसी को रख दो, मैं संकल्प पढ़े देता हूँ। अस्तु साढ़े सात आने पैसे मैंने हाथ पर रक्खे। संकल्प पढ़ा गया। दान ज्योतिषी को दिला दिया गया। एक-एक करके दोनों आशीर्वाद देकर चले गये। मैंने सन्तोष की साँस ली।

उसी दिन रात की ट्रेन से मेरे मित्र पीली भीत से आ गये। उन्होंने प्रस्ताव किया—'चलो हरिद्वार घूम आयें।' अस्तु दूसरे दिन हम लोग हरिद्वार पहुँचे शाम को हम लोग प्लेट फारम पर घूम रहे थे। मैंने देखा दो मनुष्य साधारण वेश भूषा में घुल-घुल कर बातें करते स्टेशन के बाहर हो रहे थे। मुझे सूरत शक्ल परिचित सी लगी। ध्यान से देखने पर ज्ञात हुआ वही छद्मवेषी महात्मा जी और ज्योतिषी जी थे। किन्तु भेष दूसरा था। मैंने मित्र महोदय से संक्षेप में सारा किस्सा बयान किया। पहले तो मित्र महोदय मेरी मूर्खता और भोले पन पर बहुत हँसे। हम लोगों ने परामर्श किया और लगभग एक फर्लाङ्ग पीछा करने के बाद उन्हें जा पकड़ा। मित्र महोदय ने स्वामी जी की गरदन दबाई और मैंने ज्योतिषी जी को जा दबोचा। दोनों हक्के-बक्के होकर हमारी ओर देखने लगे।

मैंने कहा. 'क्यों बे धूर्त तूने तो कहा था कि दान लेने वाले की शक्ल १५ दिन तक न देखना। आज तो तीसरा ही दिन है। अपनी मनहूस सूरत क्यों दिखाई? मेरा तो घोर अनिष्ट हो जायगा।

विविध-विषय

रोमां रोलां की युद्धकालीन डायरी

महान् फ्रांसीसी लेखक रोमां रोलां की पाण्डुलिपियों के पार्सल जो उन्होंने मास्को के लेनिन पुस्तकालय को सुरक्षित रखने के लिये १६३४–१६ ५ में दिये थे, दिवंगत लेखक द्वारा पुस्तकालय के निर्देशक के नाम अपने २५ नवम्बर १६३४ के पत्र में प्रकट की गई इच्छा के अनुसार १ जनवरी को पुस्तकालय में खोले गये।

उस पत्र में लेखक ने लिखा था कि पार्सल में उनकी १६१४ से १६१८ तक की 'युद्धकालीन डायरी' के उनतीस भागों की आधिकारिक प्रतियां हैं। रोलां ने पार्सल खोलने की तिथि १ जनवरी १६५५ नियत करते हुए लिखा था कि ये पांडुलिपियां पुस्तकालय की सम्पत्ति बन जायगी और ऐतिहासिक एवम् साहित्यिक कृतियों के रूप में उनका प्रकाशन एवम् उपयोग किया जा सकता है।

पारसल खोलने वाले आयोग में निम्नलिखित व्यक्ति थे—रूसी सङ्घ के संस्कृति मन्त्री ट० जुयेवा, सोवियत सङ्घ के उप संस्कृति मन्त्री एफ० खुग्नोव, लेनिन पुस्तकालय के निर्देशक पी० बोगाचेव तथा सोवियत सङ्घ के परराष्ट्र मन्त्रालय, रूसी सङ्घ के संस्कृति मन्त्रालय, सोवियत लेखक सङ्घ, वोक्स (विदेशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने वाला सोवियट सङ्गठन) लेनिन पुस्तकालय तथा तास के प्रतिनिधि। कुल मिलाकर दस पारसल थे। वे अच्छी तरह बँधे थे और लाह की मुहर लगी थी जिस पर रोमां रोलां की लिखावट में उनके खोलने की तिथि अंकित थी।

जब वे पारसल खोले गये तो उनमें उनतीस खंडों में 'युद्धकालीन डायरी' थी जिसमें टाइप किये हुए २६५० पृष्ठ थे जिनमें स्वयम् लेखक ने संशोधन किये थे।

डायरी में पहले लेख की तिथि ३१ जुलाई १६१४ तथा अन्तिम लेख की ११ जुलाई १६१६ थी। पारसलों में डायरी की भूमिका भी लिखी है जिस पर रोमां रोलां का हस्ताक्षर है।

इस पांडुलिपि का रूसी में अनुवाद करने की व्यवस्था की जा रही है जिसके बाद उसका प्रकाशन होगा।

खोये हुए नगर का पता लगा

शिकागो के एक गोताखोर ने संसार में अधिक ऊँचाई पर स्थित टिटिकाका नामी झील में पानी में डूबे हुए एक नगर के खण्डहरों का पता चलाया है। पी विलियम पडार्फ को इन खण्डहरों का उस समय पता चला जब वे सोने की तलाश में इस झील में उतरे थे। आपने इस नगर के कुछ चित्र भी लिए हैं। प्राचीन वस्तु विशारदों का कथन है कि यह नगर संभवतः आ हमारा जाति के लोगों द्वारा बसाया गया था। अमेरिका की खोज के लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व इनका जाति के अभ्युदय के उपरान्त आ हमारा जाति के लोगों की सभ्यता नष्ट हो गयी थी।

उन्होंने छूटने की भरसक चेष्टा की किन्तु बोरिया बिस्तरे से लदे हुये वे उसी प्रकार हमारे शिकन्जे में थे जिस प्रकार बिल्ली के पंजों में चूहे। पहले तो इन्होंने अकड़ से काम लेना चाहा हम लोगों ने जोर-जोर से दो-दो झापड़ रसीद किये। मार से भूत भागते हैं। गिड़-गिड़ाने लगे। हमने कहा, 'हमारे पैसे वापस करो, नहीं तो हवालात की हवा खानी पड़ेगी पुलिस स्टेशन पास ही है। वहीं ले चलता हूँ।' अस्तु बहुत वाद-विवाद के बाद हमारे पैसे वापस मिल गये। रुक्क के पैसे मिले स्टेशन पर मिठाइयाँ उड़ीं और घूम घामकर घर वापस आये। अब मैं ऐसे रंगे सियारों से बहुत सतर्क रहता हूँ।

—

नया कीटमार

अमेरिकी सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग के अनुसंधानिकों ने एक नई कीटमार औषधि खोज निकाली है। बताया जाता है कि यह औषधि डी० डी० टी० की अपेक्षा भी अधिक घातक है, तथापि मनुष्यों और पशुओं को इससे कोई हानि नहीं पहुँचती। इस नई औषधि का नाम डी० डी० बी० पी० रखा गया है। अमेरिका के स्वास्थ्य, शिक्षा, जनकल्याण विभाग की मन्त्रिणी श्री ओवेता हौबी की सूचना है कि यह औषधि जौजिया की सरकारी प्रयोगशालाओं में तैयार की गई है।

पूर्व के देशों लिए सूर्य का चूल्हा

अमेरिकी मौसम का हालचाल बताने वाली संस्था की हाल की ही एक बैठक में प्रतिनिधियों को सूरज के ताप से काम करने वाला एक चूल्हा दिखाया गया। यह चूल्हा न्यूयार्क विश्वविद्यालय के इन्जीनियरिङ्ग कालेज के विद्यार्थियों ने फोर्ड प्रतिष्ठान के एक अनुदान के अन्तर्गत पूर्व के देशों के लिये तैयार किया है। प्रदर्शन के समय मौसम के अत्यधिक ठण्डे होने पर भी इस चूल्हे ने सूर्य से इतना ताप ग्रहण कर लिया, जिससे चूल्हे की भट्ठी का तापमान ३२५ हो गया।

आटा पासने की नये प्रकार की मशीन

केन्द्रीय खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड ने हाथ से चलने वाली आटा पासने और धान कूटने की नये प्रकार की मशीनें तैयार की है। ये मशीनें बड़ी हल्की चलती हैं और इनके द्वारा कम समय में अधिक काम होता है। इनका मूल्य क्रमशः ४ रु० और ५० रु० है। इन मशीनों का आधा मूल्य सरकार वहन करेगी।

हाथ के चलने वाली धान कूटने की मशीनों से प्रति दिन ६ मन धान कूटा जा सकता है और जिससे एक व्यक्ति को औसतन २ रु० प्रति दिन मजदूरी मिल सकती है।

ये मशीनें अखिल भारत खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, पटेल हाल, नाडियाड, गुजरात से प्राप्त हो सकती हैं।

चाय में मिलावट

कई वर्ष पूर्व 'सरसों' के बीज में 'भड़भाँड़' नामक एक विषैला पदार्थ मिला कर तेल बेचने की धूर्त्तता देश के कतिपय व्यापारियों ने की थीं।

इधर प्रायः सारे देश में छिट-फुट चाय की पत्तियों में भी लकड़ी के बुरादे आदि मिला देने का रोग लग गया है। इस प्रकार के कई मामले लखनऊ, कलकत्ता आदि शहरों में पकड़े गये हैं। कलकत्ता के म्युनिस्पल मजिस्ट्रेटों की अदालत में ऐसे कई मामले विचाराधीन हैं। कारपोरेशन अधिकारियों का कहना है कि खाद्य-विभाग के इन्सपेक्टरों ने चाय के सौ 'सैम्पुल्स' (नेमूने) देखे जिनमें ६० से ऊपर में काफी मिलावट पाई गई।

सौभाग्य या दुर्भाग्य से चाय विश्व-पेय (यूनिवर्सल ड्रिङ्क) है, चाय में लकड़ी का बुरादा मिला देने का मतलब है, लाखों आदमियों को तिल-तिल कर मार डालने का धीमा किन्तु भयवाह कुचक्र !

—कर्मयोगी

नये किस्म का उत्तर देने वाला टेलीफोन

अमेरिकन बैल टेलीफोन लेबोरेटरीज़ ने एक नये किस्म का उत्तर देने वाला टेलीफोन तैयार किया है। यह आपकी अनुपस्थिति में छोड़े गये सन्देशों को टेलीफोन करने वालों तक पहुंचा देता है।

बाहर जाने से पहले आप एक बटन दबा कर अपना सन्देश नये टेलीफोन को लिखा जाये तथा साथ ही दूसरा बटन दबा कर इस टेलीफोन को स्वयम् उत्तर दे सकने की स्थिति में छोड़ दें। जब किसी का टेलीफोन आयेगा, तब यह टेलीफोन चालू हो जायेगा। सुनने वाला आपकी आवाज सुनेगा। आप अपना नाम बतायगे और टेलीफोन करने

वाले का नाम और नम्बर पूछेंगे। साथ ही आप का सन्देश भी उस तक पहुँच जायेगा। टेलीफोन करने वाले व्यक्ति का जवाब भी यह मशीन नोट कर लेगी। जब आप वापस लौटेंगे तब आप टेलीफोन पर मिलने वाले सभी सन्देशों को जितनी बार चाहें बटन दबा कर सुन सकते हैं।

उक्त कम्पनी द्वारा तैयार की गई टेलीफोन की इस नयी मशीन में 'टाकिंग स्वर' (बोलने वाली रबड़) को प्रयुक्त किया गया है। प्लास्टिक और आयरन ऑक्साइड के मिश्रण से यह रबड़ उपर्युक्त कम्पनी ने तैयार किया है और इसे सन्देशों को रिकार्ड करने के लिये लाखों बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

चकोतरे के फल से रंगों का निर्माण

गैसविल स्थित फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया है कि चकोतरे के फल में कड़वाहट पैदा करने वाले तत्व से उत्तम किस्म की ऊन को रंगने के लिये रङ्ग तैयार किये जा सकते हैं। इस तत्व को 'नैरिंजिन' कहा जाता है और सन्तरों में पाये जाने वाले बसन्ती रङ्ग से यह मिलता-जुलता है।

'नैरिंजिन' से बसन्ती (पीला. लाल) रङ्ग तैयार होते हैं और इसे ऊन और रेशम को रङ्गने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। ये रङ्ग पानी में घुल जाते हैं और देखने में अति सुन्दर लगते हैं। इससे लकड़ी को रङ्गने वाला रङ्ग तैयार करने में भी कुछ प्रगति की गई है। यह रङ्ग बड़ा टिकाऊ सिद्ध हुआ है और तेज धूप में भी नहीं बिगड़ता।

बहरों के लिये खुशखबरी

न्यूयार्क के निकट डोब्ज फैरी नामी कस्बे की 'ओटेरियन इन्कार्पोरेटेड' नामी दम्पती ने बहरों की सुविधा के लिये एक इतने छोटे आकार का सुनने का यन्त्र तैयार किया है, जो आसानी से ऐनक के फ्रेम में समा सकता है।

अच्छी तरह से सुन सकने के बड़े आकार के प्रचलित यन्त्रों की तरह छोटे आकार के उपर्युक्त यन्त्र में भी २०० या इससे भी अधिक पुर्जे होंगे। यह नूतन यन्त्र ऐनक के फ्रेम में फिट किया गया है। कान के पीछे आने वाले ऐनक के फ्रेम में इस यन्त्र का 'माइक्रोफोन' (ध्वनि प्रसारक यन्त्र) लगा होता है।

टेलीविजन और अमेरिका

अमेरिका में पिछले दिसम्बर तक सब मिला कर ४०६ टेलीविजन स्टेशन काम कर रहे थे। यह सूचना 'ब्राडकास्टिङ्ग' पत्रिका ने प्रदान की है। अमेरिका के उन नगरों की संख्या जिनमें टेलीविजन स्टेशन हैं, उस समय कुल मिला कर ७७२ थी तथा समस्त अमेरिका में ३ करोड़ ८६ लाख टेलीविजन सैट लोगों के पास थे।

—श्री राधारानी—

[पृष्ठ १२८ का शेषांश]

'नन्द की भाँति तुम भी मर्यादा विहीन हो उठे हो।' कहती हुई गोपा उठ खड़ी हुई—'तुम्हारी मति मारी गई है।'

गोपा तो चली गयी पर राधा बिसूरती रही। 'यह बालक अवश्य उसका पूर्व जन्म का……।'

राधा ने दोनों हाथों से अपने मस्तक को दबाया। जैसे वहाँ विचार का जो महल उठ रहा हो उसे चकनाचूर कर डालना चाहती हो।

वे पलङ्ग से उठीं और कलस उठाया। यमुना में पानी भरने चली गईं। अभी बहुत कुछ गृह-काय करना था। इन व्यर्थ की कल्पनाओं के लिये उनके पास समय न था।

—क्रमशः

अपने विचार

आटम बम से विनाश

आगामी युद्ध में आटम बम का प्रयोग हुआ तो संसार का विनाश किस सीमा तक होगा इसका कुछ अनुमान अमेरिका के अणुशक्ति आयोग के अध्यक्ष श्री स्ट्रास के एक वक्तव्य से लगाया जा सकता है। आपने कहा कि गत वर्ष पश्चिमी प्रशांत महासागर में अमेरिका ने उदजन बम का जो परीक्षण किया था, उसका प्रभाव ७००० वर्ग मील पर पड़ा था। आपने बताया कि इससे हवा की दिशा में १४० मील की लम्बाई और २० मील की चौड़ाई में शत-प्रतिशत लोग मारे जायेंगे। उसके बाद २० मील तक के क्षेत्र में ५० प्रतिशत आदमी मारे जायेंगे और इसके आगे भी ३० मील तक ५ से १० प्रतिशत व्यक्ति मारे जायेंगे। आहत मानवों की संख्या अपरिमित रहेगी।

स्त्री शिक्षा निःशुल्क

मध्य भारत का सन् ५५–५६ का बजट प्रकाशित हुआ है। राज्य की सरकार को हम बधाई देते हैं कि उसने विकास की अन्य योजनाओं के साथ समस्त राज्य में हाई स्कूल तक कन्याओं की निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की है।

विस्थापित बंगाली महिलाओं का पुनर्वास

उत्तर प्रदेशीय सरकार की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि:—

३१ अक्टूबर १९५४ को अन्तिम रूप से खाली किये गये चुनार गृह में रहने वाली २४० महिलाएँ अब इलाहाबाद, मिर्जापुर और लखनऊ में हैं और स्वयम् जीविकोपार्जन कर रही हैं। इलाहाबाद में १९६ महिलाए हैं जिनमें ४६ हाथ की मशीनों से बुनाई का काम कर रही हैं. ५४ महिलाएँ स्थायीरूप से राजकीय मुद्रणालय में जिल्दबन्दी के काम पर नियुक्त कर दी गई हैं और २६ महिलाओं को परिचायिका तथा दाई बना दिया गया है। मिर्जापुर में २० महिलाओं को कुटीर उद्योग सञ्चालन की व्यूशनल कक्षा योजना में कम्बल बुनने के काम पर लगा दिया गया है। लखनऊ के उत्पादन केन्द्र में ४७ महिलाएँ कपड़ों की कटाई तथा सिलाई का काम, २२ महिलाए विद्युत करघे से बुनायी का काम और २६ महिलाएँ डबल रोटी आदि बनाने का काम कर रही हैं।

इलाहाबाद का उत्पादन केन्द्र इस समय गोरखपुर श्रमिक दल के लिए वर्दियों की सिलाई का काम कर रहा है और लखनऊ का केन्द्र गहरे नीले रङ्ग के कपड़ों की बुनाई का नया तरीका अपनाने जा रहा है।

इन केन्द्रों के सम्बन्ध में सरकार की जिम्मेदारी उन इमारतों का किराया देना है जिनमें ये महिलाएँ रहती हैं। साथ ही प्रबन्धकर्ताओं के वेतनों का भुगतान ट्रेनिंग समाप्त होने के बाद प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को २५० रु० का पुनर्वासन अनुदान और गुजारे के लिये प्रत्येक वयस्क को १२ रुपये और आश्रित अवयस्क को ८ रुपये प्रतिमास भत्ता देने की जिम्मेदारी भी सरकार पर है।

प्रशिक्षार्थियों द्वारा औसतन २५ रुपये प्रतिमास की मजदूरी कमायी जाती है। सरकार से प्राप्त गुजारे का भत्ता मिला कर एक विस्थापित महिला तथा उसका कुटुम्ब अपनी जीविका के लिये मजदूरी कमा लेता है।

इन विस्थापित महिलाओं में ३ की शादी राज्य के संरक्षण में कर दी गयी है।

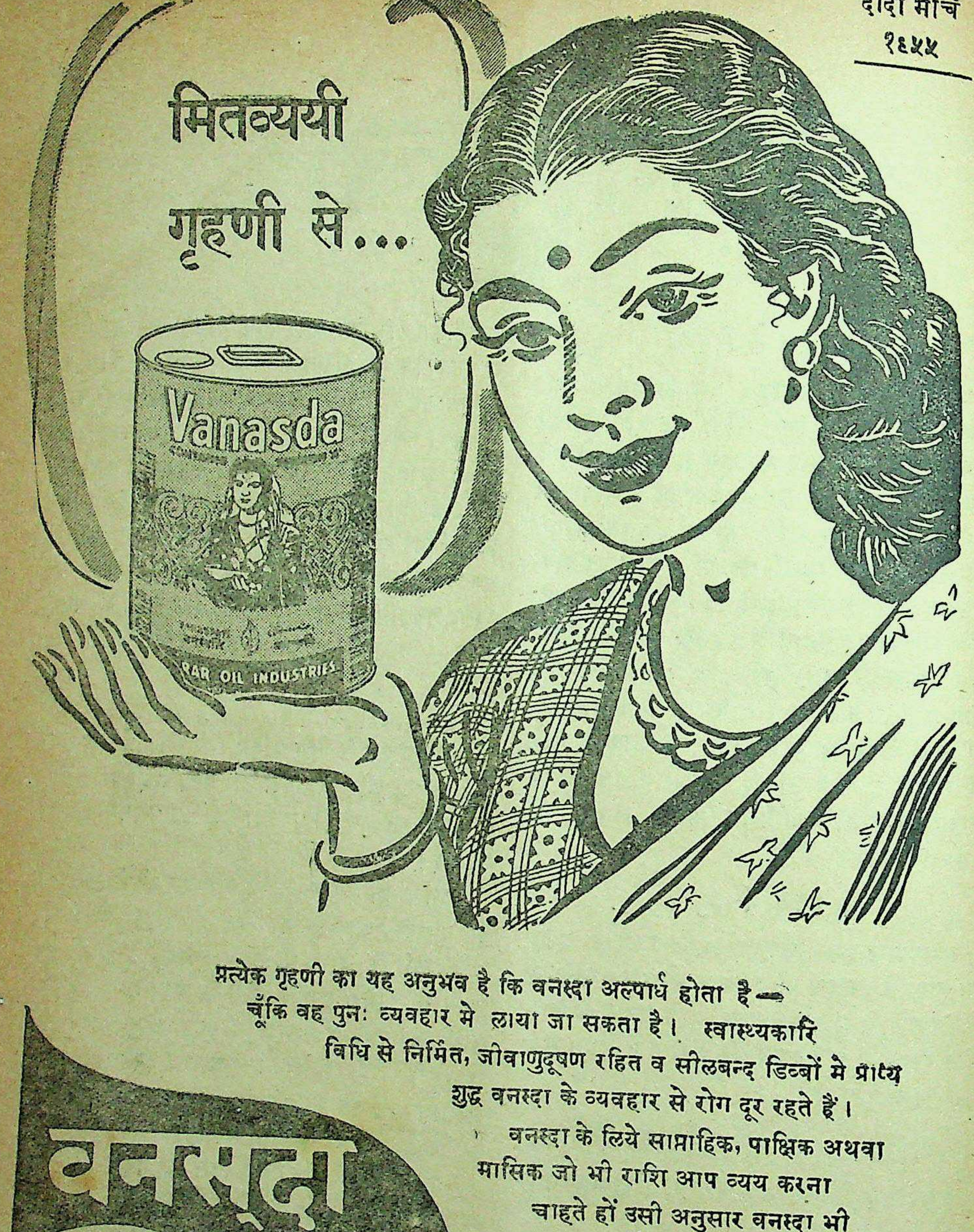
Vanasda
RAR OIL INDUSTRIES
ASP-V 10/54

मितव्ययी गृहणी से...

प्रत्येक गृहणी का यह अनुभव है कि वनस्दा अल्पार्घ होता है— चूँकि वह पुनः व्यवहार मे लाया जा सकता है। स्वास्थ्यकारि विधि से निर्मित, जीवाणुदूषण रहित व सीलबन्द डिब्बों मे प्राप्य शुद्ध वनस्दा के व्यवहार से रोग दूर रहते हैं।

वनस्दा के लिये साप्ताहिक, पाक्षिक अथवा मासिक जो भी राशि आप व्यय करना चाहते हों उसी अनुसार वनस्दा भी १० पौंड, ५ पौंड और २ पौंड के डिब्बों में मिलता है।

वनस्दा

विटामिन-मिश्रित

वनस्पति

निःशुल्क

विभिन्न भारतीय भोजन सम्बन्धी पाक पुस्तिका हमसे निःशुल्क प्राप्त कीजिये।

बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज, आकोला (मध्यप्रदेश)

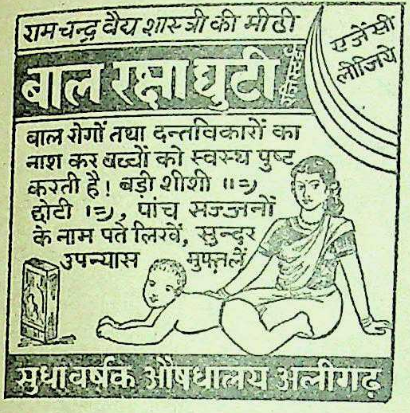
रामचन्द्र वैद्य शास्त्री की मीठी

बाल रक्षा घुटी

एजेंसी लीजिये

बाल रोगों तथा दन्तविकारों का नाश कर बच्चों को स्वस्थ पुष्ट करती है! बड़ी शीशी ।।=) छोटी ।=), पांच सज्जनों के नाम पते लिखें, सुन्दर उपन्यास मुफ्त लें

सुधावर्षक औषधालय अलीगढ़

सफेद कोढ़ की पेटेंट दवा
मूल्य ५) रुपया
विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।
वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मंगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

सुख-दुख का झमेला

लेखक, श्री हरिचरण लाल वम. शास्त्री

प्रस्तुत पुस्तक में देश के प्रतिष्ठित सन्त महात्माओं और विद्वान् पुरुषों के भिन्न-भिन्न विषयों पर विचारणीय लेख का उपयोगी सङ्कलन है जो जीवन में उत्कर्ष तथा सामञ्जस्य लाने के लिये, मानव हृदय में मानवता के विचार उद्बुध करने के लिए गिरते हुए नैतिक स्तर में चारित्र्य बल लाने के लिये लोक हित की पावन भावनाओं से ओत प्रोत सुखद फल-प्रद प्रेरक भावनाओं से युक्त है! पुस्तक सभी के काम की चीज़ है। मूल्य १) पता—साधना कार्यालय, इलाहाबाद नं०–२

दैवी औषध एवम् कवच

मैं देव देवियों के साथ बातें करती हूँ एवम् उनसे प्राप्त औषधि एवम् कवच द्वारा सब व्याधियों को अच्छा करती हूँ। चक्षु रोग, बात, बसन्त, भगन्दर, स्त्री रोग, यक्ष्मा, दमा, बच्चों के रोग, धात, सुजाक इत्यादि रोगों को ६=) पूजा निमित्य भेजना होगा। कुष्ट, बहरापन, गूँगा और पागलपन ६ महीने में आराम होगा, पूजा के लिये २२=) भेजना होगा। देवता-गण दवा देने के लिये स्वीकार न करें रुपया वापस किया जायगा।

श्रीमती कल्याणीदेवी, मार्फत दीजोपद चक्रवर्ती
खेजुराडांगा पुरुलिया, मानभूम

अलकपरी—
केशों को बढ़ाने वाला केशतैल

'अलकपरी' का कोर्स
पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।
६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्

अलकपरी

नया कटरा इलाहाबाद

सबसे अधिक धुलाई
प्रत्येक इंच साबुन से
चाँदनी
चाँदनी
साबुन
बरार आयल इन्डस्ट्रीज़ अकोला
चाँदनी
साबुन
मिलावट से मुक्त
बरार आँयल इन्डस्ट्रीज़
अकोला
ASP-CH-V34

नये क्षेत्रों के लिए स्टाकिस्टों की आवश्यकता है।

नव-शिशु का उज्वल रङ्ग

आप निश्चय ही यह चाहती होंगी कि आपका नव-शिशु आपके दूसरे बच्चों से सुन्दर व साफ रङ्ग का हो। गर्भ-स्थिति के चौथे महीने में हमारी 'बृहत् कान्ति' प्रयोग में लाने से आपको यह अद्भुत एवम् अभीष्ट फल प्राप्त हो सकेगा। एक बार परीक्षा कीजिये। मूल्य ८।) डाक व्यय ।।।≡), मिलने का पता—

कान्ति-फार्मेसी, वृन्दावन गेट, मथुरा (उ०प्र०)

युनाइटेड
ब्लाकवर्क्स
७०७ कटरा
इलाहाबाद

राष्ट्र के साथ समृद्ध होइये

अपनी बचतों को

भारत सरकार की **छोटी बचत योजनाओं** में लगाइये

और भारत की इन योजनाओं में मदद कीजिये

- ★ सामुदायिक विकास कार्यक्रम
- ★ महती नदी घाटी परियोजनाएँ
- ★ समाज कल्याण योजनाएँ
- ★ रेल और सड़क विकास

अपना धन

इन आकर्षक गारंटीशुदा सिक्योरिटियों में से किसी में भी लगाइये

१२-वर्षीय नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स	परिपक्वता पर ४·१६ प्रति शत प्रति वर्ष की दर से ब्याज मिलता है। ५ रु. से ५,००० रु. तक के मूल्यों में प्राप्य हैं। एक व्यक्ति २५,००० रु. तक के खरीद सकता है।
१०-वर्षीय ट्रेज़री सेविंग्ज़ डिपॉज़िट सर्टिफ़िकेट्स	३½ प्रतिशत ब्याज वार्षिक दिया जाता है। १०० रु. के विभाज्यों में २५,००० रु. तक के प्राप्य हैं। एक व्यक्ति २५,००० रु. तक के खरीद सकता है।
१०-वर्षीय नेशनल प्लान सर्टिफ़िकेट्स	परिपक्वता पर ४½ प्रति शत प्रति वर्ष की दर से ब्याज मिलता है। २५ रु., ५० रु., १०० रु. और ५०० रु. के मूल्यों वाले मिलते हैं। एक व्यक्ति १००० रु. तक के खरीद सकता है।
पोस्ट ऑफ़िस सेविंग्ज़ बैंक एकाउंट्स	१०,००० रु. तक की जमा (डिपॉज़िट्स) पर २% ब्याज जोड़ा जाता है और १५,००० रु. तक बाकी पर १½%।

१५-वर्षीय एनुइटी सर्टिफ़िकेट्स

जारी करने के मूल्य: ३,५०० रु., ७,००० रु. १४,००० रु. और २८,००० रु.। एक व्यक्ति २८,००० रु. तक के खरीद सकता है।	पंद्रह वर्ष की अवधि में फैली हुई मासिक अदायगियों के रूप में ३½% प्रति वर्ष चक्रवृद्धि ब्याज सहित लौटा दिया जाता है।

आपको निश्चय ही

आय-कर से मुक्त एक बढ़िया रक़म वापिस मिलेगी

धन लगाने की इन योजनाओं के नियमों के और/या अधिक विवरणों के वास्ते कृपया नेशनल सेविंग्ज कमिश्नर, शिमला. को या अपने राज्य के रीजनल नेशनल सेविंग्ज ऑफिसर को लिखिये।

भारत के भविष्य में धन लगाइये

AC 850

श्रीनाथसिंह-लिखित पुस्तकें

उपन्यास और कहानियाँ

नयन तारा १।।)

अनेक समालोचकों की राय है कि हिन्दी में श्रेष्ठ और रोचक कहानियाँ लिखने में श्री श्रीनाथ सिंह बेजोड़ हैं। यह उन्हीं की १६ चुनी हुई कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी ऐसी है कि आप शुरू करने पर बिना पढ़े न छोड़ेंगे।

अपहृता ।।)

इस पुस्तक में उन वीर नारियों की साहसपूर्ण कहानियाँ हैं जिन्हें पाकिस्तानी अपने अधीन नहीं कर सके और जो अन्त में भारत पहुँचने में समर्थ हुई।

प्रजामण्डल ७)

यह अनोखी घटनाओं से भरा एक उपन्यास है जिसमें दो स्त्रियों के अद्भुत साहस की कहानी है जिन्होंने कि एक भारतीय महाराजा से अपनी रक्षा ही नहीं की, सम्पूर्ण प्रजाजनों को भी बन्धनमुक्त किया। सन ९४२ में बिहार की सरकार ने यू० पी० की सरकार से इस पुस्तक को जब्त करने की सिफारिश की थी। परन्तु यू० पी० के एक सहृदय अधिकारी ने इसकी रक्षा की। यह बहुत ही रोचक उपन्यास है।

'दीदी' के ग्राहकों को डाक व्यय माफ

पता—मैनेजर 'दादा' कार्यालय,
इलाहाबाद—२

बालोपयोगी

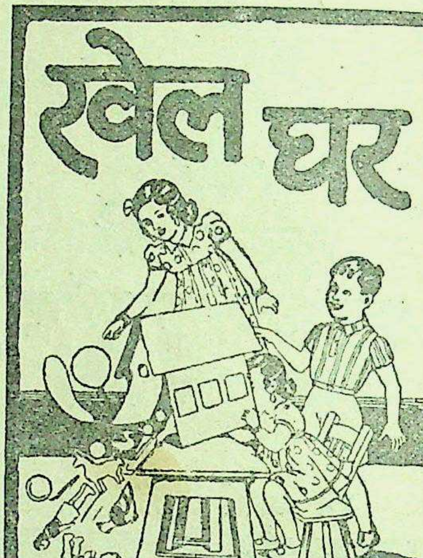

खेल घर ... ... १)

अनोखी कविताओं, मजेदार कहानियों दिल लुभाने वाले चित्रों और बहुतेरी अन्य रचनाओं का खजाना।

बालगीत ... ... ।)

बहुत ही छोटे बच्चों के लिये मोटे टाइप में छपी मजेदार सचित्र तुकबन्दियाँ। प्रत्येक पृष्ठ सचित्र है।

तीन दुमकटों की कहानी ... ।)

शिक्षाप्रद और हँसाने वाली कहानियाँ।

गाँधी जी ... ... ≡)

इसमें महात्मा गाँधी की संक्षिप्त जीवनी, बहुत ही सरल छन्दों में वर्णित है।

अनोखी यात्रायें ... ... ।-)

ज्ञान वर्धक मजेदार सचित्र कहानियाँ।

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	”
३—कुमारी कमल सहाय, आरा	”
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया	”
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	”
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग	”
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१२८)
९—श्री सेठ बल्देवदास मूंधड़ा, कलकत्ता	१००)
१०-श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई	”
११-श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	”
१२-श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	”
१३-श्रीमती निर्मला गोबिल, आगरा	”
१४-श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर	”
१५-श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	”
१६-श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	”
१७-श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	”
१८-श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	”
१९-कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	”
२०—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	”
२१-श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून	”
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता	”

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ।।) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक 'दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावे। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

DIDI -/8/- March 1955 Regd. No. A—691

बच्चों को उपहार

बालबोध बालबोध बालबोध पढ़िये।
बालक गण उन्नति की सीढ़ी पर चढ़िये॥

माता पिताओ ! अपने बच्चों को इस बार होली के अवसर पर उपहार में 'बालबोध' दीजिये।

बालबोध छोटे बच्चों का मासिक पत्र है। इसमें कहानियाँ, और ज्ञान-विज्ञान के विविध लेख आदि इस प्रकार छापे जाते हैं कि छोटे बच्चे उन्हें पढ़ और समझ सकें। बालबोध का वार्षिक मूल्य ३) है।

पता—मैनेजर 'बालबोध' 'दादी' कार्यालय, इलाहाबाद-२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

४२६२३
१४।४।५५

दीदी

२६।४

एप्रिल
१९५५
।।)

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दादी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—मैं क्या करूँ ? [श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश] १७८
२—मिलन [श्रीमती अमिता कुमारी वोस] १६८
३—सांकेतिक भाषा [श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०] ... २०६

लेख

१—शुद्ध जल के लिये सौ वर्ष तक सङ्घर्ष [श्री जे० एम० मैकिम्टोश, जनस्वास्थ्य अध्यापक लन्दन स्कूल आफ हाइजीन] १८१
२—आपका घर और बच्चे [स्व० प्रोफेसर चन्द्रकिशोर जैन एम० ए०, बी० ए० आनर्स] १८७
३—नेहरू जी छुरी के वार से बचे १९०
४—प्रदर रोग [श्री विठ्ठलदास मोदी] १९२
५—हिन्दी साहित्य [डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा] १९५
६—आधुनिक पढ़ी-लिखी तरुणियाँ [श्री दादा धर्मधिकारी २०४
७—स्त्रियों की हथेली का सौंदर्य [श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित] २०५
८—जायदाद में स्त्री के हक का कानून ... २१३
९—फिल्मी कलाकारों का नेहरू द्वारा स्वागत २१४
१०-क्रास स्टिच की कढ़ाई [श्रीमती सुशीला कु० चौहान] २१६
११-झूला दूर-दूर रखें या रोकें [शकुन्तला परांजपे बी० एस०-सी० एम० ए० 'कैटब'] २१८

कविताएँ

१—गीत [कु० पुष्पलता अस्थाना एम० ए०] १७७
२—गीत [कुमारी उर्मिला राठौर 'विशारद] २२५

फुटकर

१—बजट पर तुकबन्दी १९१
२—विस्थापित कन्याओं का विवाह ... १९४
३—विज्ञान के चमत्कार २१२
४—घरेलू उपचार [कामिनीदेवी श्रीवास्त 'विदुषी' उन्नाव] २२५

स्तम्भ

१—रसोई १८२
२—चिट्ठी-पत्री १८५
३—दृष्टिकोण २२६
४—विविध विषय २२७
५—अपने विचार २२८

दीदी

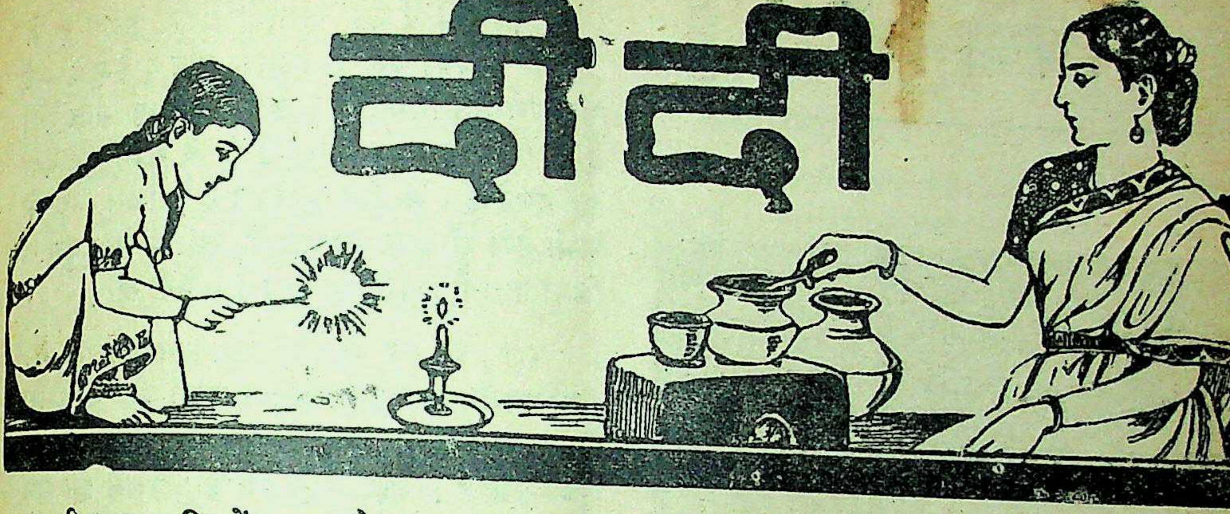

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १६ } इलाहाबाद, अप्रैल १९५५ { संख्या ४

गीत

लेखिका, कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए०

नयन मिले कुछ अधर हिले, पर
तुमसे मेरी बात हुई कब ?
क्षण भर का वह प्यार पुरातन
पीड़ा हर दिन लगी नई सी
पथ के कोलाहल में भटकी
आशा छल से ठगी गई सी
जग - जग कर आँखें झप आयीं
सच सपनों की रात हुई कब ?

स्मृति ने सौ घाव उघारे
पलकों ने अङ्गार सँवारे
गरजे प्राण - पीर ले बादल
मेरे आंगन साँझ - सकारे
मिला सीप को निष्ठुर मोती
नयन भरे बरसात हुई कब ?

विरह जलाये जला न यह तन
नीर बहाये बुझा न यह मन
टूट चला श्वासों का दर्पण
साज सजाये थका न जीवन
तुम ही माने तुम ही रूठे
मेरी बाजी मात हुई कब ?

मैं क्या करूँ ?

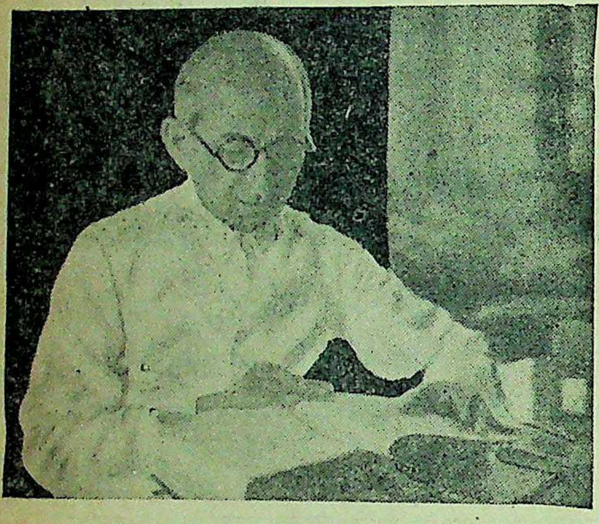

लेखक, श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी,
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

इस लेख में सुयोग्य लेखक ने एक ऐसे पुरुष की मनोव्यथा अंकित की है जिसकी पत्नी परम सुन्दरी है। प्रश्न है कि ऐसा पुरुष क्या करे ? पाठक यह लेख पढ़ें और सूझे तो कोई मार्ग बतावें ?

गुजराती से अनुवादित
अनुवादक,
श्री मोतीलाल यु० शाह 'मधुकर'

पाठक से मैं एक खानगी प्रश्न पूछता हूँ, मैं क्या करूँ ? किसको दोष दूं ? मुझे कोई भी मार्ग सूझता नहीं है। इसका कारण मात्र ऐसा है कि जिन-जिन को मैं कहता हूँ, वे सभी मुँह दबा कर हँसते हैं। अजीब मुसीबत है ! जिस वस्तु में सभी मेरा सौभाग्य समझते हैं, उसी में मेरा दुर्भाग्य छिपा पड़ा है। और वह वस्तु है—मेरी स्त्री !

परन्तु इस पर से ऐसा समझ न लेना कि मेरी पत्नी कुरूपा, वा दकियानूसी विचारों की, वा अशिक्षित, वा नीरस, वा असावधान, वा कृतघ्न, वा कुलच्छनी है ! नहीं, नहीं जनाब ! उसमें इन समस्त दोषों का पूर्णतः अभाव है। विचारों में तो वह महादेव गोविन्द रानाडे को भी सुधार कर दो-चार सबक सिखा दे, ऐसी है; उसकी बुद्धि विलायती चाकू जैसी तीक्ष्ण है। बम्बई विश्वविद्यालय से एफ० ए० की परीक्षा उसने पास की है। अतः उस की चतुराई में से कुछ दोष ढूँढ़ निकालते समय जबान काट खानी पड़ती है और रसज्ञता में—जाने दो नहीं कहता। संक्षेप में सम्पूर्ण भारतवर्ष में, काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक उसका प्राप्त होना दुर्लभ है, ऐसी स्त्री के प्राणवल्लभ होने का मुझे सौभाग्य हासिल हुआ है। किसी ने कहा है—'जिस घर नार सुलच्छनी, वह घर सुख में सोय।' परन्तु मेरे लिये तो यह बात कतई झूठ साबित हुई है। मेरी नारी सुलक्षणी है परन्तु मैं तो कभी भी चैन की नींद नहीं सो सकता हूँ।

मूल बात यह है। मैं जब बी० ए० में पास हुआ, तब 'वह' (आप समझ गये न कौन ?) इन्टरमीजियट में पास हुई। मैं कालेज में लड़कों का सरदार माना जाता था। उसके पीछे लड़के दीवाने होकर घूमते थे। कोई उसकी किताब उठाता-रखता, कोई उसको घर तक पहुँचाने के लिये जाता; प्रोफेसर साहब उसे अकसर चाय-पानी का निमन्त्रण दिया करते। उस समय तो ठीक, परन्तु बाद में हमारा परिचय हुआ और साथ में पीड़ा भी प्रारम्भ हुई।

घर में, बाहर, मित्रों में, सभाओं में वह मेरी पत्नी नहीं, परन्तु मैं उसका पति हूँ, ऐसा सब जाहिर करते हैं। मैं रास्ते पर गुजरता होऊँ तब मेरी ओर उँगली बता कर लोग कहते हैं—'यह मिस्टर ! हुँ, वह लो मिस क्ष—अपनी वह मिस मैना है न, उसके पति। मिसिस अत्यन्त चतुर हैं। वास्तव में आदर्श रूप है।' अतः अपने राम तो वहाँ कोई हिसाब में नहीं।

बहुत दिनों के पश्चात् कोई मित्र मिलते तो पूछते—'ओ हो ! मि॰ क्ष ! कहो, मिसिस क्ष कैसी हैं ?' भला आदमी मेरी तबीयत के विषय में तो कुछ पूछता ही नहीं है। मुझे बहुत बार ऐसा उत्तर देने की इच्छा हो आती कि, मिसिस क्ष गयीं जहन्नुम में !

किसी जगह कोई चार मित्र मिलकर बातें करते हों और मैं वहां जाऊं कि वे लोग तुरन्त विचित्र ढङ्ग से बातों का विषय ही बदल डालते हैं। हिन्दू कुटुम्बजाल कितना दुःखमय है। स्त्रियाँ कितनी अशिक्षित हैं। पतियों को कितना सहन करना पड़ता है इत्यादि बातें शुरू कर देते हैं। ऐसी बात शुरू हुई कि मैं वहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाता हूँ। क्योंकि दूसरा वाक्य फिर यही कि—'हाँ ! भाई क्ष तो भाग्यवान् हैं। उनको कहाँ ऐसी मुसीबतें हैं। उनको तो मिस मैना.....!' मुझे चाहे कुछ भी हो, परन्तु मैंने क्या दुनियां के बाप की चोरी की है, जो इतना जुलम !

मित्रगण अपने पत्रों में आठ पृष्ठों का मिसिस क्ष को सन्देश भेजते हैं यानी बन्दा तो केवल सन्देश पहुँचाने वाला हमाल। कितने ही धृष्ट बाहर ही बाहर पत्र लिखते हैं 'प्रिय श्री......!' नये जमाने के अनुसार ऐसी नाजायज हर्कत भी मुझे बर्दास्त करनी पड़ती है।

घर में भी मेरी पूरी मुसीबत है। एक दिन की बात है, मिसिस क्ष का जरा सिर दर्द देने लगा। अब बताओ भला, इसमें मेरा कोई दोष था ? तो भी मैं जब दफ़्तर जा रहा था, सब नीचे हमारे पड़ोसी बातें कर रहे थे—

'बिचारी आज कुछ बीमार मालूम होती है।'

'अरे बीमार क्या, उसका पति ही मरा पशु जैसा है। कुछ डांट-फटकार की होगी।' मिसिस क्ष का सिर दुखे, तो भी मेरी मुसीबत ! अब घड़ी भर के लिये मान लो कि मैंने उसे डांटा, परन्तु इस में दूसरों के पेट में पीड़ा क्यों होने लगी ? मेरी पत्नी है, और मैंने उसे डांटा। घर में माँ और बाप का भी उतना ही त्रास है।

'भाई क्ष तू मैना के लिए इतना भी नहीं कर सकता ? तू तो उस बेचारी को बहुत परेशान करता है।' इत्यादि।

इतने से ही अगर पीड़ा अटकती हो तो, ईश्वर का उपकार। किन्तु सांझ को जब मैं थका-मांदा घर आऊँ और सहधर्मचारिणी सङ्ग दो घड़ी आराम से बैठने की अपेक्षा करता होऊँ, उसी समय दरवाजा ठोंकने वाला कोई-न कोई अवश्य हाजिर। 'क्यों कैसे हो मिस्टर क्ष ? क्यों मिसिस क्ष, आप तो मजे में हैं ? यह तो मुझे जरा घर में चैन न पड़ा, इसलिये सोचा जरा मिस मैना के घर चला जाऊं।'

'क्यों कोई खास काम ?'

जरा आकर्षक तरीके से, 'नहीं रे ! कोई खास काम तो नहीं है। मिस मैना ! आप तो जानती हैं न कि आपकी भाभी.....! हमारा घर तो भई ठीक-ही ठीक है। यह तो मन का जरा उद्वेग हुआ इसलिये आपकी ओर चला आया।'

लो ! जनाब को बीबी ठीक न मिली, इसलिए मेरी बीबी के पास चले आये फिर ऐसे मिस्टर लोग आराम से मैना के पास बैठेंगे, दुनियां भरे की बातें करेंगे और सेवक खामोश होकर सब कुछ सुनता रहे। अन्यथा 'हाँ, जी हाँ' का धन्धा शुरू करे। मैना तो शान्त मन से दुःखड़े सुनेगी, आश्वासन देगी और बाद में फिर आने का निमन्त्रण देकर बिदा करेगी। यानी दूसरे किसी को

अपनी मनपसन्द पत्नी न प्राप्त हुई, इसलिये घर में चैन नहीं पड़ता और इसलिये मेरी पत्नी को, मेरे घर को दिल बहलाने का अड्डा बना लेना।

एक बार रात्रि को ग्यारह बजे मैना गीत गाने लगी। एक के बाद एक उसने गीत अलापना प्रारम्भ कर दिया। बहुत दिनों के बाद ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ है, ऐसा सोचकर मैं बड़ी चाव से उसका गाना सुनने लगा। सुनते-सुनते यों ही मैंने खिड़की में से नीचे नजर डाली। देखा कि बीस-पच्चीस आदमी जिराफ की तरह गरदन ऊंची तान कर खिड़की की ओर देख रहे हैं। मुझे बड़ा क्रोध आया। मैंने आवेश में खिड़की बन्द कर दी। दूसरे दिन घर, जो कि पहिली मञ्जिल पर था, मकान-मालिक को नोटिस देकर पाँचवीं मञ्जिल पर ले लिया, ताकि मैना की आवाज का उपभोग करने वालों की संख्या अधिक न बढ़े।

ऐसी-ऐसी घटनाएँ निशदिन घटने के कारण मेरा स्वभाव अत्यन्त बिगड़ गया है, चिड़चिड़ा हो गया है। किसी मित्र का मुंह तक देखना पसन्द नहीं पड़ता, किसी जगह जाने का दिल ही नहीं होता, घर बैठने में चैन नहीं पड़ता। दिन भर बस यही विचार आते रहते हैं कि कोई मैना के साथ बातें करने बैठ जायगा, कोई उसके साथ हँसी-मजाक करने चला आवेगा। परन्तु इन सबसे बड़ा दुःख तो और एक है। किसके सामने बयान करूँ? मैना को कहता हूँ तो उसे बुरा लगता है। दूसरों को कहता हूँ तो वे हँसी उड़ाते हैं और नहीं कहता हूँ तो दिल जल-जल कर खाक हुआ जाता है कभी तो मैना पर गुस्सा आता है; स्त्री-शिक्षण को मन धिक्कारता है। मैना से तो कोई अनपढ़, गँवार, कुरूपा से शादी कर ली होती तो चैन तो मिलता; क्योंकि उसकी ओर तो कोई वक्र दृष्टि डाल कर भी देखने वाला न रहता।

ईश्वर न करे, अगर कहीं मैं सम्राट् बन गया तो पहिला कानून यही लागू करूँ कि स्त्रियाँ बिना बुरके के घर-बाहर न निकलें। केवल नाक-कान कटी स्त्रियों को ही खुले बाजार घूमने की इजाजत देता। परन्तु अब तो सम्राट् बनने का समय भी चला गया। आज से हजार वर्ष पहिले जन्म लिया होता तो···? खैर!

मात्र सद्भाग्य केवल इतना है कि मेरी मैना कुछ वस्तुस्थिति समझती है। मेरी भावनाओं को ठेस न पहुंचे ऐसा बर्ताव करने का वह प्रयत्न भी करती है। परन्तु इससे क्या? मेरी मैना तो केवल मेरी है, उस पर मेरा पूर्ण अधिकार है, स्वामित्व है, दूसरे क्यों बीच में हस्तक्षेप करते हैं? सुख चाहिए, नहीं मिलता; आश्वासन चाहिए, नहीं मिलता। परन्तु इसमें मेरा कोई कुसूर? किन्तु इतनी मामूली-सी बात कोई समझता नहीं और नाहक मेरा जी जलाते हैं। इसका कोई मार्ग है? मार्ग जल्द ही ढूंढ़ निकालना आवश्यक है, क्योंकि स्त्री-शिक्षण तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है; आज मेरी बारी है, तो कल आपकी!

साड़ी पर उत्तर

बनारस में हाई स्कूल परीक्षा के एक गर्ल्स हायर सेकंडरी स्कूल केन्द्र के निरीक्षिकाओं के लिये एक परीक्षार्थिनी की साड़ी सिर दर्द का कारण बन गयी।

कहा जाता है कि उक्त परीक्षार्थिनी प्राइवेट तौर से उस केन्द्र से परीक्षा दे रही थी। कल साड़ी पर कुछ प्रश्नों का उत्तर वह लिखकर लाई थी। किसी प्रकार निरीक्षिका ने उसे साड़ी से नकल करते देख लिया और उसे पकड़ लिया।

इसके पश्चात उस साड़ी को बोर्ड कार्यालय में किस प्रकार भेजने के प्रश्न ने वहाँ के स्टाफ को चक्कर में डाल दिया। अन्त में एक अन्य परीक्षा केन्द्र के व्यवस्थापक से परामर्श किया गया। अन्त में उसके अनुसार परीक्षार्थिनी को एक नयी साड़ी पहनायी गया और उसकी साड़ी को बोर्ड कार्यालय में भेजने के लिये रख लिया गया।

शुद्ध जल के लिए सौ वर्ष तक संघर्ष

लेखक, श्री जे० एम० मैकिंटोश, जनस्वास्थ्य अध्यापक लन्दन स्कूल आफ हाइजीन

१८५४ की गर्मियों में लंदन के एक मुहल्ले में हैजा फैला और दस दिनों में ही ५०० व्यक्ति मर गये। यदि इस इलाके के लोग वहाँ से भग न जाते तो शायद मृत्यु-संख्या कई गुनी होती। पर डा० जान स्नो की कृपा से इसके बाद लंदन में महामारी के रूप में हैजा कभी नहीं फैला।

डा० जान स्नो के अन्वेषण से पहले समझा जाता था कि हैजा दुर्गन्धयुक्त वायुमंडल में फैलता है। पर डा० स्नो ने यह सिद्ध किया कि हैजे के कीटाणु पानी के जरिये भी फैलते हैं और हैजे वाले क्षेत्र के नल को, जिसके बारे में हैजे के कीटाणु से युक्त होने का सन्देह था, बन्द कराने के बाद महामारी का प्रकोप जल्द ही दूर हो गया। डा० स्नो के कुछ साल बाद डा० विलियम बड ने सिद्ध किया कि कई तरह के आतों के बुखार भी पानी से फैल सकते हैं। दोनों के अन्वेषणों के फल स्वरूप शहरों में पीने के पानी की व्यवस्था और गन्दगी को फेंकने के तरीकों में सुधार हुआ। इससे पानी से फैलने वाली बीमारियों से मरने वालों की संख्या भी बराबर घटती गयी। इन आंकड़ों से इस कथन की पुष्टि होती है।

ब्रिटेन में १८७० में प्रति दस लाख व्यक्ति पीछे ३८५ व्यक्ति आंतों के बुखार से मरते थे और १९०० में यह संख्या १७४ रह गयी। आज यह सख्या प्रति दस लाख पीछे एक से भी कम है। यहाँ तक कि गत महायुद्ध के दिनों में भी पानी से फैलन वाली कोई बीमारी नहीं फैली।

ब्रिटेन के अलावा स्कैंडीनेविया और हालैंड में भी इन बीमारियों में ऐसी ही आश्चयजनक कमी हुई। वेल्जियम में १९०१ में जहाँ १५०० व्यक्ति मियादी बुखार (टायफायड) से मरे थे वहाँ १९४९ में इस रोग से केवल ५६ व्यक्तियों की मृत्यु हुई। इटली में १९३५ में इस रोग ने ५ हजार से अधिक की बलि ली थी। फिर भी १९००–१९२० की तुलना में उसमें बहुत कमी रही जब प्रतिवर्ष १० हजार व्यक्ति इसकी भेंट चढ़ते थे।

युद्ध के कारण जर्मनी, पोलैंड और आस्ट्रिया में अवश्य कई बार मियादी बुखार फैला पर साधारण रूप में। क्योंकि इन देशों में जल व्यवस्था और नालियाँ आदि नष्ट हो गयी थीं। अब ज्यों-ज्यों देशों में पुनर्निर्माण होता जा रहा है त्यों-त्यों इन बीमारियों से भी छुटकारा मिलता जा रहा है।

अमेरिका में भी पानी से फैलने वाली बीमारियों पर काफी काबू पा लिया गया है। १९०० में मियादी बुखार से २३ हजार व्यक्ति मरे थे; पर १९४४ में केवल ६००।

एशिया और निकट तथा मध्य पूर्व के देश में पीने के पानी की उचित व्यवस्था न होने के कारण इन देशों में अंतड़ियां ज्वरों से हर साल हजारों व्यक्ति मरते हैं।

भारत में १९३६ में १ लाख अंतड़ियां ग्रस्त व्यक्तियों का अस्पतालों में इलाज किया गया पर रोग ग्रस्त लोगों की कुल सख्या का यह अश मात्र है। अगले साल पेचिस से ३ लाख व्यक्ति मरे। बड़े-बड़े शहरों में काफी रोक-थाम के बावजूद १९४९ में हैजे से ७५ हजार मौतें हुईं।

चीन की स्थिति भी इतनी ही खराब है।

असंख्य लोगों को इन रोगों के कारण काल कवलित होने से बचाने तथा जन-स्वास्थ्य के विकास के लिय अपनी विकास योजनाओं में हमें पीने के लिये शुद्ध और नीरोग जल की व्यवस्था पहले करनी होगी।

रसोंई

यदि आप अपनी रसोंई में कोई नवीन प्रयोग करें तो उसे अन्य बहनों के लाभार्थ यहां छपने के लिये भेजें।

—सम्पादिका

पेठे का मुरब्बा

पेठा अच्छा वजन दार तथा दल का मोटा होना चाहिये। पेठे को छील डालिये—छीलने में छिलके का हरा पन न रहे। उसकी हरी नसों को चाकू से निकाल दीजिये और बीच का नरम गूदा भी निकाल डालिये। अब पेठे के टुकड़ों को उसके छिलके की तरफ वाले हिस्से को अच्छी तरह गोद डालिये। अब एक चाय के चम्चच भर चूने को पानी में घोल लीजिये और उसमें पेठे को भिगो दीजिये। ६-७ घंटे भीगने के बाद पेठा अच्छी तरह धोकर उबाल लीजिये। ५-६ उबाल आने पर पेठे को किसी डलिया में उड़ेल लीजिये और तुरन्त ही उसे ठंढे पानी में धो डालिये ठंडा होने पर पेठे के बराबर चीनी तौल लीजिये। अब पेठा और चीनी एक में मिला कर किसी बड़े मुँह के बर्तन में रख कर चूल्हे पर चढ़ा दीजिये। परन्तु ध्यान रहे कि चूल्हा की आँच तेज न हो। उसे धीमी आँच पर पकने दीजिये। पकते पकते जब पेठे के टुकड़ों में चाशनी अच्छी तरह भीन जाए और जब चाशनी गाढी हो जाए तब उतार लीजिए। ठंडा होने पर उसमें गुलाब या केवड़े का इत्र मिला दीजिए। अब पेठे का मुरब्बा तैयार हो गया।

—लक्ष्मीदेवी श्रीनेत

फ्रूट स्यालेट

सामान—खरबूजा, केला, संतरा, मौसम्बी, अँगूर, अनन्नास, शक्कर, दूध, एसेन्स, कस्टर्ड पाउडर, क्रीम (बालाई)।

विधि—केले, अनन्नास व खरबूजे के बारीक बारीक टुकड़े कर लें। शेष फलों का गूदा निकाल लें और एक डिश (तश्तरी) में खूबसूरती से जमा दिया जाय। और फिर निम्नलिखित विधि से कस्टर तैयार कर लिया जाये।

तैयारी कस्टर—थोड़े से दूध में एक टेबिल स्पून कस्टर पाउडर जो तैयार किया हुआ बाजार में मिलता है और अन्दाज से शक्कर मिलावें। फिर चूल्हे पर चढ़ाकर पकावें। जब वह लेई की तरह गाढ़ा हो जावे तो उतार कर ठंडा कर लें और इसमें चन्द कतरे एसेंस की बूँदे मिला कर तैयार किये हुये मेवे में डाल दें। और ऊपर से क्रीम जो कि तैयार की गई है डाल दिया जावे। फिर बालाई को खूब अच्छी तरह फेंट कर थोड़ी देर बर्फ में रख दिया जाये। जब वह बालाई मक्खन की तरह जम जाय तो उसे फ्रूट स्यालेट में डाल दिया जाय। यह खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है, प्रायः अँगरेज लोग इसे बहुत पसद करते हैं।

—कामिनी देवी श्रीवास्तव विदुशी उन्नाव

मूँग का हलुआ

सामग्री—१ सेर मूँग की दाल, १ सेर घी, आधा सेर खोवा, १ सेर चीनी, आधा सेर दूध, और थोड़ी सी गरी, किसमिस, पिस्ता और इलाइची।

विधि—मूँग की दाल को भिगो दो। जब खूब भींग जाय तो धो डालो। और सिल पर पस डालो कढ़ाई में घी डाल कर दाल को खूब भूनें। लाल होने पर भुना हुआ खोवा आधा सेर और १ सेर चीनी मिला दें। और थोड़ा सा दूध डाल कर चलावें। पक जाने पर बारीक गरी किसमिस पिस्ता और इलायची डाल कर उतार लें।

—विजय लक्ष्मी, हसुआ

चिट्ठी-पत्री

ज्वाइंट फेमिली में बहू की हालत

प्रिय सम्पादिका जी !

मेरा यह प्रथम अवसर है, जब यह लेख आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं घरेलू वातावरण से इतनी ऊब गई हूँ कि कुछ समझ में नहीं आता।

यह आन्दोलन बहुत दिनों से चल रहा है कि स्त्रियों को समान अधिकार दिया जा रहा है। परन्तु ससुराल में आज भी वही हालत है जो पहले थी। आजकल तो ताने-कशी इतनी करते हैं जो ज्यादा चुभती है। मार तो कुछ दिनों के बाद भुला दी जाती है परन्तु बातें कलेजा चुभो देती हैं। परन्तु कहें किससे? पति महाशय राग यह अलापेंगे कि वे शादी तभी करेंगे जब पढ़ी-लिखी लड़की होगी। पर उस पढ़ी-लिखी की कदर ऐसा करेंगे जो एक नौकाराइन की भी न होती होगी। सुबह से लेकर रात तक चौके में लगी रहती है। उस पर भी जरा-जरा-सी बात पर सास महोदया अपना मुंह डबल रोटी की तरह फुला लेती हैं। पति हैं, वे आफिस गये। वहाँ से लौटे। खड़े-खड़े आर्डर फरमाया—'चाय लाओ।'

उसके बाद क्लब गये। वहाँ से लौटे, खाना खा कर घूमने गये। अब आप ही बताइये, उन्हें बीबी की तकलीफों की ओर देखने की फुरसत कहाँ? रात को बीबी कुछ कहने बैठी तो बोले—'भाई नींद आती है।'

परन्तु यदि कभी वे ठंडे दिमाग से यह सोचते कि स्वतः तो ज्वाइन्ट फेमिली में रह कर सब तरह के मजे लूट रहे हैं और बहू के अरमानों की होली जला रहे हैं? यदि बीबी को घूमने जाना या सिनेमा जाना है तो सास का मूड देखो। फिर खुशामद करो। उस पर भी मुँह फूला!

बहू को भी ससुराल में उतनी ही आजादी मिलनी चाहिए जितनी लड़कों को रहती है। बहू पर बन्धन या दवाव नहीं होना चाहिए। फिर देखिये कि जब उसकी इच्छा पूरी होगी तो घर में किस प्रकार खुशी से, सबके साथ हेल-मेल से रहेगी जिन्दगी से कभी ऊबेगी नहीं, दूसरों को खुश करने की चेष्टा करती रहेगी।

मेरी प्रार्थना उन महाशयों से है जो ज्वाइन्ट फेमिली में रहते हैं तथा जिनके घर में बहू के प्रति न्याय न हो और जो अपने में ही मस्त रहते हों, उन्हें कदापि शादी न करनी चाहिये। इससे एक लड़की का जीवन ही बर्बाद होता है। इस प्रकार तो पढ़ी-लिखी बहू दुःखी हो जाती है। मैं पूछती हूँ ज्वाइन्ट फेमिली बहुओं के लिये सुखद कैसे बने?

—रजनी श्रीवास्तव, बिलासपुर

नोट—लेखिका ने एक आवश्यक प्रश्न उठाया है। आशा है, पाठिकाएँ इस पर अपने विचार प्रकट करेंगी?

—सम्पादिका

सास और पति का जुल्म

एक दुखी बहन लिखती हैं:—

'मैं एक दुखी बहन आपके पास आखरी आशा लेकर लिख रही हूँ। मुझे आशा है आप जरूर जवाब देंगी। मेरी शादी हुए पौने दो साल हुए। मैं ससुराल आती-जाती थी। मेरी बड़ी दुर्दशा थी। फिर भी मैंने किसी से नहीं बताया। सास ननद तो सबकी खराब होती हैं, लेकिन आदमी से ही भरोसा

नेहरू ने गुड़ियों का मेला देखा

गत १८ मार्च को नई दिल्ली में संसार भर की गुड़ियों का मेला हुआ। इसमें ४८ देशों ने अपने-अपने देश की बनी गुड़ियां प्रदर्शन के लिए भेजीं। सब मिला कर २२०० गुड़ियाँ प्रदर्शनी में रखी गयीं।

गुड़ियों के इस मेले का उद्घाटन प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने किया। आपने इस बात पर जोर दिया कि कभी-कभी हम बड़ों को भूल जाना चाहिए कि हम बड़े हैं। हमें बच्चों के बीच में बच्चा बन कर रहना चाहिए जिससे हम उनके मनोभावों को विकसित करने में सहायता दे सकें।

गुड़ियों का निरीक्षण करते हुए आपने कहा—कुछ देशों में गुड़िया के चेहरे भद्दे करके बनाये जाते हैं। इस प्रकार भद्देपन को रोकना उचित होगा। यदि गुड़िया असाधारण प्रकार से कुछ भद्दी दिखाई देती है तो वह बालक के सुन्दर मनोभावों पर बुरा प्रभाव डालती है। इस बात का हमेशा ख्याल रखना उचित होगा कि बालक अच्छे और बुरे को पहचान सकें। जब मैं यहाँ आया तो मैंने बालकों की अपेक्षा वयस्कों को अधिकता में पाया। मैं यह समझ न सका कि बालकों की प्रदर्शनी में बालकों की सख्या क्यों कम है। लेकिन आयोजकों ने मुझे बताया कि बालक आ रहे हैं।

प्रधान मन्त्री ने इस प्रकार की प्रदर्शनियों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे कार्यों में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन मैं देखता हूँ कि यहाँ पर ऐसी प्रदर्शनियों के सङ्गठन करने वाले कम हैं पर तमाशा देखने वाले अधिक हैं।

आपने कहा कि राष्ट्रपति भवन के संग्रहालय में ५ हजार वर्ष पुरानी गुड़ियां मौजूद हैं। पाकिस्तान में भी मोहन जोदड़ो के समय की बहुत-सी ऐसी वस्तु हैं, जिनके देखने से मालूम होता है कि बालक हमेशा एक से ही रहते हैं।

है। जो वह ठीक न रहे तो इस जग में फिर कौन रहा? वही तो जीवन साथी हैं। खूब मारते-पीटते थे। हाथ और पैर तोड़ डाले। बेकसूर दूसरों से लड़ें, मुझे मारें। और घर भर कहते हैं कि तू मरती क्यों नहीं? हम अपने लड़के की दूसरी शादी करते और वे एक दिन गला दबा दिये। बड़ी मुश्किल में छोड़े और कहते थे कि मार कर कुएं में डाल देंगे और कह देंगे कि पानी खींचते वक्त गिर कर मर गयी। तो मैंने मायके चिट्ठी लिखी। अब मैं मैके में हूँ। न मेरे मां-बाप भेजना चाहते हैं न मैं जाना चाहती हूँ। मुझे ये सलाह दीजिये कि कहीं मैं इज्जत के साथ रह कर अपनी जिन्दगी बिता सकूँ।'

नोट—पत्र बहुत लम्बा है। ऊपर हमने कुछ पंक्तियां छापी हैं। इस बहन ने अपना नाम व पता नहीं भेजा और यह भी नहीं बताया कि उनको पति और सास आदि क्यों इतना तङ्ग करते हैं। इस बहन से हमारी प्रार्थना है कि यदि उनमें कोई अवगुण हो तो उसे वे दूर करें। और यदि उन्हें अकारण तङ्ग किया जा रहा हो तो वे अदालत की सहायता से तलाक ले लें और अपना स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करें।

[सं० दीदी

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि वे अपना ग्राहक नम्बर कहीं नोट कर लें और कार्यालय को रुपया या अङ्क न मिलने की शिकायत आदि भेजते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखा करें ताकि उनकी आज्ञाओं का तुरन्त पालन किया जाय। जो ऐसा नहीं करेंगे उन्हें कार्यालय से उत्तर जाने में देर होगी।

सञ्चालिका—प्रेमलता देवी

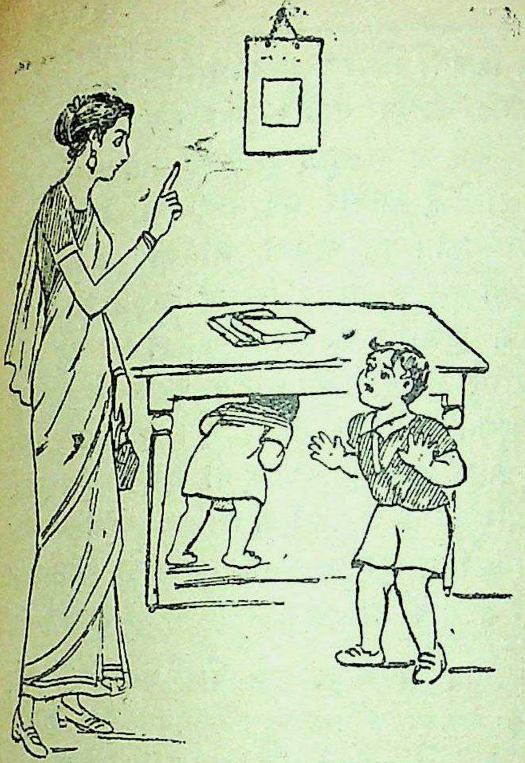

आपका घर और बच्चे

लेखक, स्व० प्रोफेसर चन्द्रकिशोर जैन एम० ए०,
बी० ए० आनर्स

यदि आपके बच्चे झूठ बोलते हैं या चोरी करते हैं। तो उन्हें सजा देकर आप सुधार नहीं सकतीं। फिर क्या उपाय है ? इस लेख में इसी प्रश्न का उत्तर दिया गया है। यह लेख हमें स्वर्गीय लेखक की पत्नी से प्राप्त हुआ है।

अभिभावकों को बहुधा यह शिकायत करते सुना गया है कि उनके बच्चे शैतान हो गये हैं, चोरी करने लगे हैं और उनमें बेहद झूठ बोलने की लत पड़ गई है। उस शिकायत का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवम् मनोरंजक पहलू यह होता है कि इसका सारा सेहरा स्कूल के सिर बांधा जाता है और यह कहा जाता है कि स्कूल में प्रवेश करने के पूर्व उनके बच्चे ऐसे न थे।

यदि ईमानदारी से हम इस शिकायत की परीक्षा करते हैं तो हमारे समक्ष एक बहुत बड़े मनोवैज्ञानिक रहस्य का उद्घाटन होता है। वास्तव में बालक का मानसिक निर्माण स्कूल आने के पूर्व पांच वर्ष की अवस्था के अन्तर्गत हो जाता है। इस अवस्था में ही बालक के भविष्य में बनने वाले जीवन की नींव तैयार हो जाती है।

बालकों में अनुकरण करने की प्रवृत्ति विशेष होती है। स्कूल आने के पूर्व घर के वातावरण, हमजोलियों और विशेषतः बड़े भाई बहनों के आचार-विचार, गृहस्थी की क्रिया कलाप और मां-बाप की आदतों का जो प्रभाव बालकों पर पड़ता है, वहीं से उनके चरित्र विकास की पहली सीढ़ी आरम्भ हो जाती है। बालक अपने संगियों के अतिरिक्त गुरुजनों के साथ केवल खेलना ही पसन्द नहीं करता वरन् उनकी बोलचाल और वेशभूषा का अनुकरण करने में भी सलग्न रहता है। स्कूल में वह अपने पिता की भांति बोलने का प्रयत्न करता है, वैसे ही कपड़े पहिनता है, वैसी ही काली टाई पसन्द करता है और जेब की बजाय कफ में रूमाल रखता है। यहाँ तक प्रत्येक रूप में अपने पिता की प्रतिमूर्त्ति उपस्थित करने की चेष्टा करता है, चाहे वह एक हास्य चित्र मात्र ही क्यों न हो।

उसकी इस प्रवृत्ति पर सबसे बड़ा आघात पहुँचता है जब उसे ऐसा करने में पिता से न तो प्रोत्साहन प्राप्त होता है और न सौजन्य ही। पिता जी को दफ्तर और क्लब से फुरसत नहीं और माता जी को गृहस्थी के धन्धों से। उनके मानसिक विकास के लिये समुचित वातावरण एवम् हमजोलियों के चुनाव पर ध्यान नहीं दिया जाता। फल-

स्वरूप एक दिन कोई सुसस्कृत सुशिक्षित एवम् सावधान दम्पति चाय पर आकर अपने सुलझे बच्चों की प्रदर्शनी करके उनके अव्यक्त मानस में उनके बच्चों की हीनता का आभास दे जाता है अथवा अपने बच्चों की सराहना करता हुआ उनके बच्चों के लिये 'शैतान' का फतवा दे जाता है, तो अभिभावक महोदय अपनी असावधानी का प्रतिबिब घर में न देख कर पहुँच जाते हैं स्कूल के हेड मास्टर के पास अपना क्रोध उतारने।

बालक स्वभावतः जिज्ञासु होता है। संज्ञा के विकास के साथ जब सृष्टि का अक्षय और अनन्त निधि का पिटारा उसकी आँखों के सामने अकस्मात् खुलता है, तब वह तड़प उठता है। उसकी इच्छा होती है कि सब कुछ वह एक क्षण में जान ले। कर्त्ता-धर्ता एवम् ज्ञाता के रूप में उसके पिता का उसके साथ परिचय होता है। कभी समाप्त न होने वाला प्रश्नों का तांता वह अपने पिता के सामने लेकर बैठ जाता है। वह नाना प्रकार के प्रश्न करता है—'उसे बनाने वाला कौन है, वह मां के गर्भ में कहाँ से आया, गन्ने से चीनी कैसे बनती है? इत्यादि।'

पिता जी को बहुत काम हैं—दफ्तर के, रोजगार के, गृहस्थी के, दस चिन्ताएँ हैं। सेल टैक्स के मुकदमे की अपील, मकान के चार महीनों का किराया, दफ्तर के बचे हुए काम। स्कूल में फीस के १० रुपये महावार जाते हैं। वे खीज उठते हैं। आखिर कम्बख्त स्कूल के मास्टर क्या करते हैं? मेरा भेजा क्यों खाया जाता है? किन्तु जरा सोचिये तो सही, बालक के इन मासूम सवालों का जवाब मास्टर बेचारा किस अधिकार से दे। उत्तर तो घर पर ही मिलना चाहिए था। बेचारा बालक नाहक डांट दिया जाता है और अपना सा मुँह लेकर रह जाता है और भारी-सा हृदय जिसमें करोड़ों बातें जानने की जिज्ञासा थी।

बात बहुत सादी सी है और प्रत्येक घर में रोज हुआ करती है, किन्तु बालक के चरित्र निर्माण पर उसका कितना विषमय मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है इसकी कल्पना नही की जा सकती है। बालक यह समझने को बाध्य होता है कि बातें उससे गुप्त रखी जाती हैं अथवा बताने की आवश्यकता नही समझी जाती। वह अपना अधिकार आसानी से नही छोड़ना चाहता। किवाड़ अथवा दीवार की आड़ मे लुकछिप कर खाट के नीचे लेट कर रात को जागते हुये सोने का नाट्य करके मां बाप की बात सुनने की चेष्टा करता है। यदि उसे थोड़ा बहुत अक्षर ज्ञान हो गया है तो दफ्तर का फाइलों का और दराज मे पड़े पत्रों का वह निरीक्षण किये बिना कभी बाज़ न आवेगा। यही कुटेव बढ़ते-बढ़ते चोरी करने की आदत मे परिणित हो जाती है।

वास्तव में आप उसे चोर बनाते हैं। यदि आपका बच्चा आपसे फाउन्टेनपेन के लिये इसरार करता है तो आप उसे हाई स्कूल परीक्षा पास करने की अवधि तक टाल देने का प्रयत्न करते हैं। छः सात साल के लम्बे अरसे तक अपने मन को मार कर रुका रहना उसके लिये बड़ी कठिन परीक्षा का विषय है। आपका कलम वह नहीं चुरायेगा क्योंकि आप पहिचान लेंगे; छीन लेंगे; शायद मारेंगे भी। अतः वह स्कूल मे अपने साथियों पर हाथ साफ करेगा। चोरी जरूर होती है स्कूल मे किन्तु उसका उत्तरदायित्व आप पर है स्कूल पर नही। क्या आप अपने बच्चों की छोटी मोटी इच्छाओं को व्यर्थ समझे बिना पूरी नहीं कर सकते? अथवा प्यार से उसे यह नहीं समझा सकते कि अमुक वस्तु का व्यवहार इस उम्र में उसके लिये हानिकारक प्रमाणित होगा।

इस प्रजातंत्रीय युग में जब आप सारी बातों की संपूर्ण स्वाधीनता में विश्वास करते हैं तब आप अपने बच्चों को वाणी और कार्य की स्वाधीनता देना पसन्द नहीं करते। बच्चों पर पूर्ण नियंत्रण रखना आपका ईश्वर प्रदत्त अधिकार है। बच्चा जो बात आपसे नहीं बताना चाहता उसे आप

कुमारी पुष्पलता अस्थाना की कविता

पिछले कई महीनों से मैं 'दीदी' में कुमारी पुष्पलता अस्थाना एम० ए० की कविता पढ़ रही हूँ। हो सकता है, हिन्दी के समालोचकों के नक्कारखाने में मेरी यह लघु टिप्पणी तूती की आवाज के समान अनसुनी कर दी जाय पर इसकी परवा न करके मैं कहना चाहती हूँ कि कुमारी पुष्पलता हिन्दी की परम होनहार कवयित्री हैं और हिन्दी संसार का ध्यान इनकी ओर जाना चाहिए।

इनकी पंक्तियों में कल्पना की ऊची उड़ान और अनुभूति की गहराई एक साथ ही देखने को मिलती है। गत मास में छपा गीत ही लीजिये। क्या सुन्दर पंक्तियां हैं—

अर्चन में नित मिटने वाले
सुमनों से सुविकास न मांगो।
× × ×
नीर भर ये नयन व्यथा से
इनसे बरबस हास न मांगो।
× × ×
श्वासों के सूखे उपवन से
प्राणों का मधुमास न मांगो।

ये पंक्तियां आधुनिक सङ्कटों से जकड़ी मानव आत्मा का चित्र हमारे सामने कितने सहज ढङ्ग से उपस्थित करती हैं। इन्हें जितना पढ़िये हृदय में उतनी ही गम्भीर रस की सृष्टि होती है।

कुमारी जी को इन सुन्दर पंक्तियों के लिये मैं हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि इसी प्रकार वे अपनी प्रतिभा से हिन्दी काव्योपवन में नित नूतन छवि, रस और गन्ध भरती रहेंगी।

—बिमला साहित्यरत्न, बनारस

डांट फटकार कर मार पीट कर उगलवा लेते हैं। आपके किसी प्रश्न पर यदि आपका बच्चा मौन रहता है तो आप उसका अपराध समझते हैं और अपने प्रभुत्व और अधिकार की सुरक्षा के लिये क्या नहीं करने को तैयार हो जाते हैं। फल यह होता है कि बालक झूठ बोलने पर बाध्य होता है और यदि वह झूठ इस श्रेणी का हुआ जो उसे दस बीस चपतों की सजा का अधिकारी प्रमाणित करता हो तो यह समझ लीजिये कि भविष्य में मार से बचने के लिये वह अभय प्रदान करने वाले केवल एक कवच का प्रयोग करेगा .... और वह होगा अनाश्यक झूठ।

फलतः शैतानी चोरी और झूठ जैसे घातक कुटेव बालक के जीवन मे उस समय प्रवेश कर जाते हैं जब वह स्कूल नहीं जाता और इसका एक मात्र कारण है आपकी असावधानी। इसलिये मैं कहता हूँ कि बालक का वास्तविक चरित्र निर्माण पांच वर्ष की अवस्था प्राप्त होने के पूर्व ही आरंभ हो जाता है।

नेहरू जी छुरी के वार से बचे

ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू को एक पागल की छुरी के वार से बचा दिया।

यह घटना गत २२ मार्च की है जब प्रधान मंत्री एक खुली मोटर कार में नागपुर हवाई अड्डे से शहर में जा रहे थे। मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री रविशंकर शुक्ल और गवर्नर श्री पट्टाभि सीता रमैया उनके अगल-बगल बैठे थे। सड़क की दोनों ओर उनके दर्शनों को जन-समूह उमड़ा पड़ रहा था।

इसी बीच में एक रिक्शा वाले ने जिसका नाम बाबू राव बताया जाता है मोटर के सामने अपना रिक्शा अड़ा दिया और हाथ में छुरी लिए हुए उनकी मोटर पर चढ़ गया।

नेहरू जी का वक्तव्य

इस घटना के सम्बन्ध में नेहरू जी ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है:—

उस आदमी का इस तरह रास्ते में रिक्शा लाकर खड़ा करना मुझे बुरा लगा। पर जब वह मेरी तरफ आने लगा तब मैंने समझा वह कोई फरियाद लेकर आ रहा है। सहसा मैंने उसके हाथ में छुरी देखी। मैंने चाहा कि उसके हाथ से वह छुरी छीन लूँ। पर इसके पहले ही तीन चार पुलिस वालों ने जो पास ही खड़े थे, उसे गिरफ्तार कर लिया और लेकर चले गए। मैं इसे एक पागल का प्रयास समझता हूँ। इससे अधिक इस बात को मैं कोई महत्व नहीं देता।

आक्रमणकारी कौन है ?

बाबू राव एक नाटे कद का ३२ वर्षीय युवक बताया जाता है। उस समय वह हरी कमीज और लाल हाफ पैंट पहने था। पता चला है कि वह छठी कक्षा तक पढ़ा है पर समाचार पत्र पढ़ने का शौकीन है। पुलिस में उसने बयान दिया है कि नेहरू के आगमन का समाचार पढ़ कर वह उनसे अपनी कष्ट कथा कहने आया था। चाकू उसके हाथ में यों ही चला आया था। वह इन्दौर बड़ोदा आदि में मिलों में काम कर चुका है। अहमदाबाद की किसी मिल ने उसे बोनस नहीं दिया और सरकार में भी उसकी सुनाई नहीं हुइ जिससे वह बहुत निराश हो गया। वह जिला सतारा बम्बई राज्य का रहने वाला है।

सरकार का तख्ता उलटने की धमकी

उर्दू मिलाप का कहना है कि इसी बाबू राव ने इस घटना से चार दिन पहले अहमदाबाद के सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट के नाम एक धमकी का पत्र भेजा था जिसमें एक हफ्ते के अन्दर कांग्रेस राज का तख्ता उलट देने की धमकी थी। मजिस्ट्रेट ने यह चिट्ठी पुलीस को दी और दफा १०८ के अनुसार कार्यवाही का आदेश दिया। पर पुलीस बाबू राव का पता न लगा सकी।

पुलिस उसके सम्बन्ध में जाँच पड़ताल कर रही है। बहुत सम्भव है, जैसा कि स्वयं नेहरू जी का खयाल है, वह कोई पागल हो।

भविष्य के लिये चेतावनी

कुछ भी हो देश की पुलिस को इस को एक चेतावनी के रूप में लेना चाहिए और नेहरू जी की जीवन रक्षा के लिए जहां कहीं भी वे जायें, उसे विशेष सावधानी वर्तनी चाहिए। गांधी जी को इसी प्रकार की गफलत में हम खो चुके हैं। पर उस हानि को हम सह गए क्योंकि नेहरू जी हमारे बीच मे थे। यह भारत का सौभाग्य है कि नेहरू जी की रक्षा हो गई। ईश्वर उन्हें चिरंजीवी करे।

बजट पर तुकबन्दी

राज्य सभा में बजट पर होने वाली बहस के समय श्री मैथलीशरण गुप्त ने यह तुकबन्दी सुनाई—

आय और व्यय के लेखे की
लिपि सदैव काली-काली,
जली हमारे घर होली तो,
अभी दूर है दीवाली !
विनय-पत्रिका लिखने में भी
अब नव बाधा आयी है,
कागद का जो मूल्य बढ़ा है,
इसकी किसे बधाई है !
आड़े रहे डाक के भाड़े,
ग्रन्थों का गति-रोध वही,
बची रेल से कटते-कटते,
शिक्षा का सौभाग्य यही !
अविवाहित यदि विवश हो गये,
विवाहितों की सुविधा से,
तो कुमारियां बच जावेंगी,
वर पाने की दुविधा से।
अर्थ सरल, लिपि कुटिल कठिन है,
क्या देखें अपना लेखा,
आप हमीं पलटें तो पलटें
अपने कर्मों की रेखा।
खुला इधर यह कच्चा चिट्ठा
घुला इधर होली का रङ्ग,
जो होना होगा सो होगा
न हो आज अपना रस-भंग।

इस पर वित्त मन्त्री श्री चिन्तामणि देशमुख ने यह तुकबन्दी सुनाई—

भरसक कर जब देंगे,
    तब कर लोगे नवीन-सा संसार
उस पर मणि लालों से—
    होगी कल्याण राशि की बौछार।

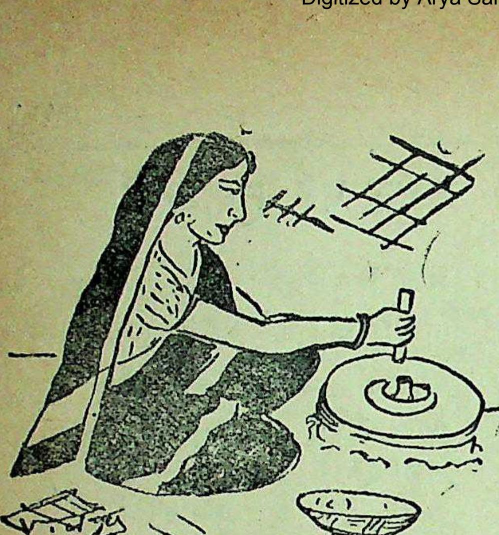

मानिये या न मानिये पर यह
एक विचित्र बात है कि जो
स्त्रियां कम से कम एक घंटा
रोज चक्की चलाती हैं उन्हें
प्रदर रोग नहीं होता।

प्रदर रोग

लेखक, श्री विट्ठलदास मोदी

जुकाम में कुछ चिकना सा, कभी पतला कभी गाढ़ा श्लेष्मा नाक से निकलता है और जब जुकाम बहुत पुराना पड़ जाता है तब कभी यह श्लेष्मा कुछ समय के लिये बन्द हो जाता है और फिर आने लगता है।

जिसे पुराना जुकाम रहता है, उसकी भूख चली जाती है, कब्ज रहने लगता है, चेहरे और शरीर की त्वचा का लावण्य चला जाता है और वह रूखी, शुष्क व पीली-सी हो जाती है।

यही सब लक्षण प्रदर के साथ भी होते हैं और जब केवल श्लेष्मा आता है तब उसे प्रदर और जब साथ में रक्त आने लगता है तब उसे रक्तप्रदर कहते हैं। जुकाम की तरह ही प्रदर भी आता-जाता रहता है, पर रोगी को घेरे ही रहता है। जा जाकर चला आता है। प्रदर नाक का नहीं, एक विशेष अङ्ग का जुकाम ही है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। शरीर की गन्दगी को निकालने के लिये प्रकृति नाक को नहीं, उस अङ्ग को ही चुनती है और इस रोग की चिकित्सा भी वही है जो जुकाम की।

जिस प्रकार शारीरिक श्रम द्वारा भोजन पैदा करने वालों को जुकाम कम-से-कम होता है, उसी प्रकार भोजन के लिये शारीरिक श्रम पर निर्भर रहने वाली स्त्रियों को प्रदर कम से कम होता है। इसलिये यदि यह कहा जाये कि प्रदर मेहनत से बचने का परिणाम है, तो अत्युक्ति नहीं होगी और आज शहर में रहने वाली प्रत्येक परदा नशीन स्त्री और ऐसी स्त्री जिसे बिना मेहनत किये ही भोजन मिल जाता है, इस रोग से घिरी मिलती है।

पहला उपाय

अतः इस रोग से बचने और इसे दूर भगाने का पहला उपाय है श्रम करना, यह श्रम चक्की चूल्हे से हो या टेनिस बैडमिटन खेल कर या नित्य दूर नदी में नहाने जाकर या टहल कर—लाभ एक ही है।

साधारणतः मादा पशु को यह रोग नहीं होता पर जब उसे घास कम और अन्न बहुत अधिक खाने को दिया जाता है, तब उसे भी यह रोग आ घेरता है। लेकिन जब उसके चारे में से दाना

निकाल कर उसे केवल घास दी जाती है तब वह अनायास इस रोग से मुक्त हो जाती है। यह रहस्यमय नहीं है। अन्न से ही श्लेष्मा बनता है और हरी घास इसे दूर करती है। ठीक यही परिणाम मनुष्य के भोजन में परिवर्तन करके भी प्राप्त किया जा सकता है। भोजन में अन्न, घी, दूध की मात्रा कम करके और हरी तरकारियों और मौसिम के ताजे फलों की मात्रा बढ़ा कर इस रोग को दूर करने में सहायता मिल सकती है। मसाले भी ठीक नहीं हैं, वे झिल्ली में जलन पैदा करते हैं और रोग टिकने में सहायक होते हैं।

कितनी सरल है इस रोग की चिकित्सा, पर लोग हैं कि इस रोग को जिंदगी भर लिये ही रहते हैं। उनकी उमर कम होने के साथ-साथ उनके जीवन में आनन्द और उत्साह कम होता जाता है। इस रोग से पीड़ित स्त्रियों के कभी-कभी बच्चे भी नहीं होते।

स्त्रियां शरम के मारे अपने इस रोग के सम्बन्ध में बात नहीं कर पातीं; जान भी नहीं पातीं कि उन में लावण्य का ह्रास, सिर दर्द. शरीर में दर्द और शिथिलता इस रोग के कारण हैं और मूल रोग की चिकित्सा न करा कर लक्षणों के पीछे परेशान रहती हैं। कारण समझ में आ जाने पर रोग से मुक्ति दिलाने वाले विज्ञापनों के लिये अखबारों के पन्ने उलटती रहती हैं। विज्ञापक स्त्रियों में इस रोग के फैलाव को जानते हैं और प्रदर, सफेद पानी, लिकोरिया शीर्षक से आकर्षक विज्ञापन छापते हैं और एक हफ्ते में या चौबीस घंटे के अन्दर रोग से मुक्ति दिलाने का वादा करते हैं। इन झूठे वादों की कीमत उन्हें खूब मिलती है। उनकी और अखबार वालों की झोली भरती है। पर दवा खरीदने वालों की झोली खाली होती जाती है और लाभ कुछ भी नहीं होता।

रोग के कारण को दूर न कर परिणाम से बचने की कोशिश की जाती है। जो स्वयम् से साध्य हो सकता है, उसके लिये दूसरे पर निर्भर रहा जाता है। फल स्वरूप रोग और दवा जिंदगी भर चलते रहते हैं।

प्रदर से मुक्ति पाने का स्वाभाविक उपाय स्वास्थ्य को उन्नत बनाने के एक कार्यक्रम को अपनाना है। यह कार्यक्रम बनाने में मैं आपका सहायक हो सकता हूँ।

स्वास्थ्य को उन्नत बनाने के लिए पहली आवश्यकत है श्रम करना, यह श्रम आप अपनी सुविधा के अनुसार उपजाऊ या अनउपजाऊ किसी भी रूप में कर सकती हैं। मैं उपजाऊ श्रम में चक्की चलाना और अनउपजाऊ श्रम में तेजी से टहलना श्रेष्ठ समझता हूँ। कुछ भी किया जाए, पर श्रम इतना अवश्य किया जाना चाहिए कि उसकी ठीक आदत पड़ने पर पसीना आ जाए; कम-से-कम शरीर में गरमी आ जाए। आरंभ में और जाड़े के दिनों में यह कठिन होगा, पर अभ्यास द्वारा यह सरल हो जाएगा।

स्नान व भोजन

श्रम के बाद तुरन्त ही स्नान करना चाहिए और स्नान के बाद शरीर को तौलिए से न पोंछ कर त्वचा को हाथ से ही रगड़ रगड़ कर सुखा लेना चहिए। इस विधि से स्नान का लाभ बढ़ता है और त्वचा पर ताजगी आ जाती है, वह रक्ताभ व सलवण होने में सहायक होती है।

स्वास्थ्य उन्नत बनाने अथवा प्रदर से मुक्ति पाने की दूसरी सीढ़ी है भोजन में सुधार सफेद चावल, दाल, मांस मछली श्लेष्माकारक हैं, प्रदर को बढ़ाते और टिकाते हैं। आरंभ में और सदा के लिए भी इन से मुक्ति पा ली जाए तो अच्छा है। प्रदर की रोगिणी के भोजन में होनी चाहिए चोकर समेत आटे की रोटी, हरी तरकारियां और ताजे फल। खीरा, ककड़ी, गाजर, टमाटर, प्याज, मूली करमकल्ला पालक आदि कच्ची खाई जा सकने लायक तरकारियों को कच्चा ही खाना चाहिए। दूध दही भी उपयोगी हैं, पर इनका उपयोग आरंभ में नहीं,

भोजन सुधार के हफ़्ते दो हफ़्ते बाद ही शुरू करना चाहिए।

धूपस्नान

धूप प्रदर से मुक्ति दिलाने में बहुत सहायक होती है। इसका सेवन नित्य करना चाहिए। किसी एकांत स्थान में निर्वस्त्र हो कर तथा सिर पर गीला तौलिया रख कर गरमी में सवेरे सातआठ बजे और जाड़े में आठनौ बजे दस पंद्रह मिनट रहना चाहिए। सप्ताह में एक बार यह धूपस्नान तेज धूप में अर्थात् दिन के ग्यारह बजे से तीन बजे के बीच आधे घंटे अथवा इतनी देर के लिए करना चाहिए कि पसीना आ जाए। धूपस्नान में गरम पानी पी कर पसीना लाने में सहायता मिल सकती है। यदि पसीना अच्छी तरह आ जाए, तो धूपस्नान के बाद ठंढे पानी से अच्छी तरह मलमल कर नहाना चाहिए अन्यथा सिर को ठंढे पानी से धो लेना चाहिए और सारे शरीर को गीले कपड़े से पोंछ डालना चाहिए। धूप का यह विशेष स्थान भोजन के पहले या उसके दो तीन घंटे बाद ही करना चाहिए।

स्थानीय चिकित्सा के लिए पानी की गद्दी विशेष लाभदायक होती है! किसी साफ सफेद कपड़े को चार छः तह करके दोढाई इञ्च चौड़ी और चारपांच इंच लम्बी गद्दी बनानी चाहिए और उसे ठंढे पानी से भिगो कर और हलका निचोड़ कर लंगोट के सहारे स्थान पर बांध लेना चाहिए। यह गद्दी घंटे भर लगी रहे; सोते समय लगाई जाए तो नींद खुलने तक गद्दी लगी रह सकती है।

यह है वह सीधी और सरल रीति जिस पर चल कर नए या पुराने प्रदर से आसानी से मुक्ति पाई जा सकती है। साथ-साथ आपको वह स्वास्थ्य मिलेगा और जीवन में वह खुशी पैदा होगी जिसकी क़ीमत आप उन्हें प्राप्त करने के बाद ही लगा सकेंगी।

—

विस्थापित कन्याओं का विवाह

कुछ दिन हुए, उत्तर प्रदेश सरकार को पूर्वी पाकिस्तान से आने वाली तीन विस्थापित कन्याओं का विवाह करने के लिये कन्यादान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सरकार ने ही इन लड़कियों के लिये वरों की खोज की और अपनी इन कन्याओं को उचित दहेज भी दिया।

राज्य सरकार को पिता के रूप में अभी अपनी अनेक अन्य कन्याओं का विवाह सम्पन्न करना है। अन्य भारतीय पिताओं की भांति राज्य सरकार को भी अच्छे वरों की खोज में काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। इन कन्याओं की शादी के मामले में इनकी रुचि और पसन्द वास्तविक बाधायें हैं। इन लड़कियों से शादी करने के लिये गैर बंगाली पुरुषों से आवेदन आये हैं, परन्तु ये लड़कियां न केवल अपने राज्य के बाहर वरन् अपनी जाति के बाहर भी शादी नहीं करना चाहतीं। कुछ लड़कियों ने तो उन लोगों से शादी करने से इन्कार कर दिया जिनका रङ्ग उनसे भी अधिक काला है। इससे शादी योग्य वरों की और भी अधिक कमी हो गई है क्योंकि पूर्वी पाकिस्तान से अधिकतर औरतों के आने के कारण पश्चिमी बंगाल में वरों का अभाव पहले ही से था। ऐसा अनुमान है कि पश्चिमी बंगाल में विवाह योग्य ४०,००० विस्थापित महिलायें हैं और इनके लिये वर नहीं मिल रहे हैं। इसके अतिरिक्त विस्थापित महिलाओं के पुनर्वास में विधवा पुनर्विवाह व्यवस्था भी कुछ सीमा तक बाधक हो रही है।

उत्तर प्रदेश सरकार के पास विवाह योग्य ४० लड़कियों में से अभी तक केवल तीन की शादी हुई है। अन्नपूर्णा चक्रवर्ती पहली युवती हैं, जिनकी शादी राज्य सरकार ने की है। लखनऊ में १४ अगस्त, १९५४ को जो दूसरी शादी हुई थी, वह अनीमा की थी। तीसरा विवाह २१ जनवरी १९५५ को लखनऊ में सम्पन्न हुआ।

हिन्दी साहित्य

प्रारम्भ और मध्यकाल का विवरण

लेखक, डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा

प्राचीन काल

भारत के संविधान में देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा मानी गयी है। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य-भारत, मध्य-प्रदेश का अधिकांश भाग राजस्थान, विंध्य प्रदेश, भोपाल, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और पूर्वी पञ्जाब ये सब हिन्दी भाषी प्रदेश हैं। इनका समूचा क्षेत्रफल ५७१,००० वर्ग मील है और कुल आबादी लगभग १७ करोड़ है। हिन्दी की सीमा पश्चिम में पञ्जाबी, पूर्व में बंगला, दक्षिण में मराठी क्षेत्रों से लगी है। गङ्गा का पूरा कांठा, पूर्व में भागलपुर तक हिन्दी का ही क्षेत्र कहा जा सकता है। प्राचीन काल में यह प्रदेश आर्यावर्त्त या उत्तरी भारत का मध्य देश कहा जाता था। चूँकि हिन्दी का क्षेत्र बहुत दूर तक फैला है इसमें अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं, जो एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। ये सभी महत्वपूर्ण हैं और इनमें बहुत साहित्य मिलता है। हिन्दी साहित्य में कम से कम पांच साहित्यिक परम्पराएँ सम्मिलित हैं—डिंगल या पुरानी मारवाड़ी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, अवधी और मैथिली। संकीर्ण अर्थ में कभी-कभी हिन्दी का आशय खड़ी बोली शैली लिया जाता है।

हिन्दी का प्रारम्भ

हिन्दी साहित्य का इतिहास मुख्यतः तीन कालों में बांटा जाता है-आदिकाल (१५०० ई० के पहले) मध्यकाल (१४०० ई० से १८०० ई० तक) और आधुनिक काल (१८०० ई० से अब तक) यहाँ प्राचीन काल के अन्तर्गत आदि और मध्य काल का विवरण दिया जाता है।

यह कहना कठिन है कि हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ किस समय से हुआ। कुछ विद्वानों ने हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ ८वीं, कुछ ने १० वीं और कुछ ने १२ वीं शताब्दी में माना है। विद्वानों के मतों में यह भिन्नता इस कारण है कि प्रारम्भिक काल की हिन्दी के नमूने अपभ्रंश से मिल जाते हैं। अपभ्रंश की साहित्यिक परम्परा में जैन साहित्य और सिद्ध साहित्य दो प्रकार के अपभ्रंश हैं। नागर अपभ्रंश में लिखा जैन साहित्य पश्चिमी राजस्थान तथा गुजरात का है और मगधी अपभ्रंश में लिखा सिद्ध साहित्य, जो उस समय बङ्गाल और बिहार में प्रचलित था। जैन अपभ्रंश की ओर पहले चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने ध्यान दिलाया था, इसे उन्होंने पुरानी हिन्दी का नाम दिया। श्री राहुल सांकृत्यायन ने सिद्ध साहित्य की ओर ध्यान दिलाया।

वास्तव में मध्यकाल के आरम्भ तक स्थानीय अपभ्रंश में प्रायः कुछ न कुछ साहित्य रचना होती रही। विद्यापति ने तो १५ वीं शताब्दी में 'कीतिलता' की रचना मैथिली अपभ्रंश में की थी। अपभ्रंश साहित्य के अध्ययन से हिन्दी भाषा साहित्य के विकास पर बहुत प्रकाश पड़ा है।

आदि हिन्दी साहित्य की मुख्य दो धाराएँ थीं, नाथ साहित्य और चारण साहित्य। नाथ साहित्य 'नाथ-सम्प्रदाय' से सम्बन्धित था। गोरखनाथ जी

ने नाथ सम्प्रदाय चलाया था। गोरखनाथ सम्भवतः १० वीं शताब्दी में हुए। उन्होंने सारे भारत में अपने मत का उपदेश दिया था। उनके समय तक सिद्ध-सम्प्रदाय में अनेक दोष आ गये थे। वे सिद्ध सम्प्रदाय में अनेक सुधार करना चाहते थे। नाथ-सम्प्रदाय से हमें उस समय की धार्मिक स्थिति का पता चलता है।

चारण-साहित्य का सम्बन्ध १२ वीं शताब्दी में मध्य देश के राजदरबारों से रहा। उस समय हिन्दी क्षेत्र में कन्नौज मुख्य राज्य था। जान पड़ता है कि यहाँ मुख्यतः संस्कृत भाषा और साहित्य को आश्रय दिया जाता था। 'नैषध' महा काव्य के रचयिता श्री हर्ष कन्नौज के महाराज जयचन्द के दरबार में थे। ऐसी जनश्रुति है कि जयचन्द की राजसभा के कवि मधुकर और भट्ट केदार ने भी 'भाषा काव्यों' की रचना की थी, यद्यपि ये रचनाएँ उपलब्ध नहीं है। इसका मुख्य कारण यह था कि मुसलमानों के आक्रमणों से कन्नौज ऐसा तहस-नहस हो गया कि हिन्दी क्षेत्र की पुरानी संस्कृति के कोई चिन्ह बचे न रह सके। हिन्दी क्षेत्र के अन्य राज्यों के आश्रय में भी भाषा के अनेक ग्रन्थों का निर्माण हुआ। अजमेर के अन्तिम चौहान राजा बीसलदेव के दरबारी कवि नरपति नाल्ह ने लगभग ११५५ ई० में बीसलदेव रासो की रचना की थी। इसी प्रकार दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज के दरबारी कवि चन्द ने 'पृथ्वीराज रासो' रचा। महोबा के चन्देल राजाओं के आश्रय में आल्हाखंड की रचना हुई। हिन्दू राज्यों के अन्त के बाद तीन शताब्दियों तक हिन्दी राज्याश्रय से वञ्चित रही। बाद को कुछ हद तक अकबर ने हिन्दी साहित्यिक परम्परा को पुनर्जीवित किया था। उन के पूर्व दिल्ली के सुलतानों के समय में केवल खुसरो ने ही भाषा में कुछ लिखा था।

मध्य काल

हिन्दी साहित्य का मध्य काल संस्कृत-वाङमय और भक्तिधारा से बहुत प्रभावित हुआ। मध्यकाल का साहित्य भी दो भागों में विभक्त है—भक्तिकाल (१४०० ई० से १६०० ई० तक) और रीति या शृङ्गार काल (१६०० ई० से १८०० ई० तक)।

वैष्णव भक्तिधारा उत्तरी भारत में प्रवेश कर चुकी थी। वैसे तो १२ वीं शताब्दी में ही जयदेव 'गीत गोविन्द' लिख चुके थे। बाद को मैथिल कवि विद्यापति ने राधा और कृष्ण के प्रेम आख्यान को लेकर भाषा में ललित पदों की रचना की थी। १६ वीं तथा १७ वीं शताब्दी में व्रजभाषा में रचे कृष्ण भक्ति का प्रारम्भ मीराबाई से हुआ था। मीराबाई के पदों में भक्तिभाव का सुन्दर चित्रण मिलता है। यही कारण है कि मीरा के पद गुजरात राजस्थान और दूर-दूर प्रदेशों में बड़े लोक प्रिय हुए।

रामानन्द और महा प्रभु वल्लभाचार्य के प्रयत्न से वैष्णव भक्ति हिन्दी क्षेत्र में फैली। रामानन्दी-सम्प्रदाय के अनुयायी गोस्वामी तुलसी दास ने १५७५ ई० में अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरित मानस' की अवधी में रचना की। उन्होंने अपने अन्य प्रमुख ग्रन्थ व्रजभाषा में लिखे। काव्य कला की दृष्टि से 'रामचरित मानस' उच्च कोटि की रचना है। हिन्दी और भारतीय साहित्य ही नहीं, बल्कि विश्व साहित्य में रामचरित मानस अद्वितीय है।

वल्लभ-सम्प्रदाय के कवियों में महाकवि सूरदास अग्रगण्य हैं। उनके कृष्ण लीला विषयक पद 'सूरसागर' में संग्रहीत हैं। व्रजभाषा में जैसी ललित रचना सूरदास ने की, वैसी अन्य कवियों से न बन सकी। इसके बाद राम भक्ति और कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय के अनेक कवियों ने उत्कृष्ट काव्य लिखे। 'भक्तमाल' के रचियता नाभादास, नन्दलाल राधा वल्लभी सम्प्रदाय के प्रवर्तक हित हरिवंश और तानसेन के गुरु हरिदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मध्यकाल के पूर्वार्द्ध में संतकाव्य और प्रेम-आख्यान भी लिखे गये। कबीर दास, दादू दयाल,

मलूक दास दरिया साहब आदि अनेक संत कवियों ने अपने हृदय के भावों को सीधी साधी वाणी में प्रकट किया। प्रेम-आख्यानों के अंतर्गत मलिक मुहम्मद जायसी का 'पद्मावत' बहुत प्रसिद्ध है। साहित्यिक दृष्टि से मध्यकाल की रचनाओं में पद्मावत का स्थान बहुत ऊंचा है। अन्य मुसलमान सूफ़ी कवियों ने भी प्रेम आख्यान लिखे, जिनमें मृगावती के रचियता कुलवन, चित्रावली के उसमान मधु मालती के रचियता मंझन आदि उल्लेखनीय हैं।

रीतिकाल

१७ वीं शताब्दी के आरम्भ तक धार्मिक और साहित्यिक धाराए सूख चली थीं ! मुगल साम्राज्य की जड़ें जम चुकी थीं। बुन्देलखंड, और राज्यस्थान के हिन्दू राजा शांति से राज्य कर रहे थे। ऐसे समय में शृङ्गार या रीति साहित्य की उन्नति स्वाभाविक थी।

१६०० ई० से २८०० ई० तक रीतिकाल माना जाता है। इस काल के अधिकांश कवि हिन्दू राजदरबारों के आश्रित थे। अधिकांश कवियों ने अलंकार और लक्षण ग्रन्थों की रचना की। अनेक प्रतिभाशाली कवि रीति काल में हुए। इनमें केशव दास अग्रगन्य हैं, जो ओरछा के दरबार में थे। इनका 'कवि-प्रिया' अलंकार शास्त्र का उत्कृष्ट ग्रंथ है। जयपुर दरबार के कवि बिहारी ने 'सतसई' लिखी। इनके अतिरिक्त सेनापति, देव, मतिराम, घनानन्द, भिखारी दास आदि रीतिकाल के अन्य प्रमुख कवि हैं।

शृङ्गार की कविताओं के अतिरिक्त कुछ कवियों ने अपने आश्रय दाताओं और वीर पुरुषों की गाथाओं को भी काव्यों में चित्रित किया। गोरेलाल का 'छत्र प्रकाश' और मानका 'राजविलास' इसी कोटिकी रचनाएं हैं। भूषण ने अपने काव्य में शिवाजी की वीरता का ओजस्वी वर्णन किया।

दिल्ली या आगरे के मुगल दरबार में किसी भी हिन्दी के उच्चकोटि के कवि को आश्रय नहीं मिला। इस प्रसङ्ग में 'गङ्ग' और 'नरहरि' का उल्लेख किया जाता है, जो साधारण कवि थे। हाँ, अब्दुर रहीम खानखाना का स्थान हिन्दी साहित्य में बहुत ऊँचा है, जो अकबर के दरबार में थे। रहीम के दोहे और बरवे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। रहीम को राजनीति, राजदरबारों और ससार का गहरा अनुभव था, जो उन के काव्य में समाया हुआ है।

डिंगल या पुरानी साहित्यिक मारवाड़ी में गद्य और पद्य की रचना हुई। जोधपुर के महाराज पृथ्वीराज की लिखी 'कृष्ण-रुक्मिणी वेलि' एक सुन्दर कृति है।

१८०० ई० तक मुगल साम्राज्य की शक्ति क्षीण होने लगी थी। समूचे हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र में धीरे-धीरे अँग्रेज हुकूमत की जड़ें जमने लगीं। ईस्ट-इन्डिया कम्पनी के शासन काल में अंग्रेजी भाषा और संस्कृति का प्रभुत्व बढ़ा, जिसका प्रभाव तत्कालीन हिन्दी साहित्य पर लक्षित होता है।

[आल इन्डिया रेडियो के सौजन्य से]

विचित्र बालक का जन्म

राबर्टगंज का समाचार है कि पिछले मास में यहाँ से दक्षिण ११ मील के दूरी पर बुरुडुल ग्राम में एक हरिजन की पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया, जिसके चार भुजा, चार पैर, दो पुरुषेन्द्रीय एवम् दो कमर अच्छी दशा में वर्तमान है। उक्त बालक चारों पैर एवम् चारों हाथ को हिला-डुला लेता है, मूत्र दोनों पेशाब के रास्ते से करता है। लड़का ४ दिन का प्रतीत न होकर बल्कि लगभग ३ माह का प्रतीत होता है। कितने ही व्यक्ति उसे देव रूप मान कर पुष्प एवम् पैसा चढ़ा कर हाथ जोड़ते हैं। कहते हैं कि बालक ने जन्म लेने के पश्चात् ही चढ़ाये हुए फूलों में से कुछ फूलों को अपने हाथ में उठा लिया।

मिलन

लेखिका, श्रीमती अमिता कुमारी बोस

[१]

उमा सुखी, बहुत सुखी। अपने पति विमल के प्रेम से तथा सास के स्नेह से उसका जीवन सुखमय हो गया। छोटा-सा संसार। विधवा सास और पति विमल। उमा इसी संसार की रानी उमा अपने पति और सास की सेवा में जीवन बिताने लगी। उसके कोमल करों की निपुण सेवा से उसका गृह संसार सुन्दर हो गया। संसार देखने से ऐसा लगता मानों यहाँ लक्ष्मी का निवास है। किन्तु भगवान उस संसार के आनन्द को चिरस्थायी नहीं करना चाहते थे। एक शिशु के बिना वह संसार अधूरा ही लगता था। करीब चार वर्ष हुए उमा का विवाह हुआ था; किन्तु अभी तक उसे माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ और न निकट भविष्य में ही प्राप्त होने की आशा थी।

सास के मन में विषाद की छाया पड़ने लगी। एक ही पुत्र विमल को लेकर वे विधवा हुई थीं और यदि वही विमल की सन्तान न हुई तो यह वंश नष्ट हो जावेगा। सास के मन में शान्ति नहीं थी। वही अशान्ति की हवा विमल और उमा को भी छा रही थी। जब उमा नन्हें-नन्हें बच्चों के चित्र देखती तो उसका मन भी तृषित हो उठता, ऐसे ही एक शिशु को गोद में खिलाने के लिये, उसके मुँह से माँ की आवाज सुनने के लिये।

उमा ने एक दिन विमल से कहा—'आप पुनः शादी कर लें। मेरे भाग्य में सन्तान नहीं है।' विमल चकित होकर कहने लगा—'उमा, तुम क्यों ऐसा कहती हो? भगवान ने हमें सन्तान नहीं दी तो क्या हुआ? तुम्हें पाकर तो मैं बहुत खुश हूँ। तुम सदा हमारे गृह को आलोकित करती रहो।' स्नेह से विमल उमा के सिर पर हाथ फेरने लगा। पति के प्रेम पूर्ण वाक्य से उमा का मन आनन्द से भर गया। फिर भी उसके मर्मस्थल पर एक व्यथा चुभ रही थी। यदि वह अपने पति को एक शिशु का सुख देने में समर्थ होती तो कितना ही अच्छा होता।

विमल को खाना खिलाते समय उसकी माँ ने कहा—'विमल, तू फिर से शादी कर ले। बहू को

बाल बच्चा होने की कोई सम्भावना नहीं है। तू यदि शादी न करेगा तो तेरे पिता का वश नष्ट हो जावेगा।' विमल तुरन्त कह उठा—'नहीं-नहीं माँ! तुम ऐसा न कहो। भगवान ने हमारे भाग्य में जो नहीं लिखा है वह हम कैसे प्राप्त कर सकेंगे। असम्भव है।'

माँ चुप हो गई किन्तु उसके दिमाग में वही चिन्ता बनी रही। नाती वश का प्रदीप होता है। नाती-हीन ससार में क्या रखा है? कुछ नहीं। कहीं भी मौका पाकर वह यही बात कहने लगती। विमल आजकल माँ की बातों का प्रतिवाद नहीं करता है। समय-समय वह माँ की बातों पर विचार करता। वह सोचता—'हाँ ठीक ही तो है। शिशु के न होने पर तो वश नष्ट हो जायगा। फिर यदि एक और शादी कर लूँ......तो क्या होगा?' उसका विवेक कह उठता—'छिः छिः! विमल स्वार्थी मत बनो। उमा का क्या दोष! उसने तो तुम्हार सेवा में, तुम्हारे सुख के लिये अपना मन प्राण सब कुछ दे दिया है। उसने एकान्तिक प्रेम से तुम्हारा मन मोह के रखा है। क्या उसे बंचित कर दूसरे को हृदय में स्थान दोगे?' विमल उसी चिन्ता में खोया खोया रहने लगा। उमा स्नेहमयी और बुद्धिमती। वह पति का मुख देख कर जान जाती कि उसके मन में कौन-सी बात छिपी है।

सन्ध्या के समय मां बेटे में बातचीत हो रही थी। पास के कमरे में उमा बैठी कुछ सोच रही थी। अचानक सुना, माँ कह रही थीं—बेटा, आपत्ति न कर, तू शादी कर ले। बहू रानी बहुत अच्छी लड़की है। वह भी आपत्ति न करेगी। क्योंकि वही तो इस गृह की मालकिन बनेगी और जो आवेगी वह उसकी छोटी बहन होकर रहेगी। इसमें आपत्ति की कौन-सी बात है।' विमल ने उत्तर दिया—'सोच कर कहूँगा।'

उमा श्वांस बन्द कर उन दोनों की बातें सुन रही थीं। हठात् उसका सब शरीर मानों ठंडा पड़ गया। उसके पति अब दूसरे के हो जायगे। 'हे भगवान मैंने कौन-सा पाप किया था कि मैं सन्तान हीना हूँ। क्यों मुझे ये दण्ड दिया।' उमा बोल उठी, उस दिन दूसरी शादी करने की बात तो उमा ने ऊपरी मन से कहा था। क्या वह सत्य हो जावेगा? उमा का मन विषाद ग्रस्त हो गया।

[२]

माँ, बेटा, बहू तीनों के मन में एक शिशु के बिना तूफान मचा था। किसी के मन में शान्ति नहीं थी। संसार में पहले की तरह आनन्द नहीं था। तीनों में से प्रत्येक अपने आपको दोषी ठहराता था। घर की हवा विषाद पूर्ण हो गयी थी।

ऐसे ही समय अचानक एक दिन उमा के मौसा आये और कहा कि उमा की मां बीमार है और वे उसे देखना चाहती हैं। उमा अशान्त चित्त से जाने की तैयारी करने लगी। जाने के समय उसने सास को प्रणाम किया। सास ने कहा—'गृहलक्ष्मी जल्दी ही लौट आना।'

अपने पति को प्रणाम करते समय उमा की आँखों से अश्रु प्रवाह फूट पड़ा। उमा को प्यार से उठा कर विमल बोला—'अरे रोती क्यों हो? सिर्फ दो दिन के लिये तो जा रही हो। शीघ्र ही लौट आना। तुम तो जानती ही हो कि तुम्हारे बिना यह घर सूना है और यह हृदय भी।'

उमा ने धैर्य से अपने को संयत कर बिदा ली। उसके मन में एक अशुभ आशंका जागृत हो रही थी कि वह अपने पति से चिरकाल के लिये बिछुड़ रही है।

दिन गये। रात बीती। उमा का अभाव दोनों मां बेटे अनुभव कर रहे थे। ससार की आनन्द रूपिनी उमा मानों सब आनन्द अपने साथ ले गई थी। विमल के दिन बड़ी कठिनाई से बीत रहे थे। वह पोस्टमैन की राह देखा करता था। उमा की सुलिखित चिट्ठियाँ विमल को शान्ति प्रदान करतीं।

एक दिन विमल आफिस से लौट कर आने के पश्चात् 'मां! मां!' पुकारते हुए मां के कमरे में

गया। वहाँ जाकर ही वह बाहर जाने लगा तो मां ने पुकार कर कहा—'विमल कहाँ जा रहे हो? वह ललिता है और यह तुम्हारी मौसी है। इन्हें प्रणाम करो।' विमल ने आश्चर्य से विधवा नारी को प्रणाम किया। मां ने फिर ललिता से, विमल को प्रणाम करने के लिये कहा। धीरे से उठ कर ललिता ने विमल को प्रणाम किया, लज्जा से संकुचित सुन्दर तरुणी।

एक दिन विमल ने पूछा—'मां ये लोग कौन हैं? मेरी तो कोई मौसी नहीं है।' मां ने हँस कर कहा—'वह मौसी नहीं है। वह मेरे पिता के गाँव में रहने वाली है। ललिता की मां और मैं छुटपन की सखियाँ हैं। ललिता की मां काशी में तीर्थ करने आई थी। मैं यहाँ हूँ जानकर हमारे यहाँ आई है।'

विमल ने कहा—बहुत अच्छा। विमल मां के कमरे में संकोच के कारण अधिक नहीं आता-जाता था। यह देख कर एक दिन मां ने उससे कहा—'विमल, तुम ललिता से क्यों शर्माते हो? उसे देखते ही तुम लौट जाते हो, अन्दर क्यों नहीं आ. ?' इतना कह कर ललिता से बोलीं—'जाओ तो ललिता विमल के लिये चाय नाश्ता ले आओ।

धीरे-धीरे विमल और ललिता के बीच का संकोच का पर्दा हट गया। अब ललिता विमल को देखते ही नहीं शर्माती थी और न ही उसका मुख लाल होता। वे दोनों स्वाभाविक रूप से आपस में बातचीत करते। कभी कभी हँसी मजाक भी हो जाती। विमल अब भी उमा का अभाव महसूस करता परन्तु पहले की अपेक्षा कम।

एक दिन मां ने कहा—'विमल, मैं तेरी शादी ललिता से करना चाहती हूँ। ललिता की मां गरीब है। वह अपनी लड़की की शादी भी नहीं कर सकती।' विमल ने कहा—'छिः मां। तुम्हें अपनी बहू का ख्याल भी नहीं आता? भगवान ने हमें सन्तान नहीं दिया है तो क्या हुआ? हमें उस पर अन्याय नहीं करना चाहिए।'

किन्तु मां वह बात मानने वाली नहीं थी। वह उसे युक्ति तर्क से बहुत समझाने लगी और अन्त में आँखों में आंचल देकर रोने लगी—'तू मेरा एक ही पुत्र! तुझे भी यदि सन्तान न हुई तो यह वंश नष्ट-भ्रष्ट हो जावेगा।' विमल को खाना खिलाते हुए मां ने ये बात कही। विमल अन्यमनस्क भाव से खाना छोड़ कर उठ गया। विमल के मन में भी 'हाँ' 'ना' का द्वन्द मचा था। कभी-कभी तरुणी ललिता का मुख उसके हृदय में अंकित हो जाता। वह पत्नी रूप में ललिता की कल्पना करता। ललिता की गणेश जननी रूप की कल्पना कर वह पुलकित हो उठा। उमा उसकी हृदय की रानी है, गृह की लक्ष्मी है। परन्तु जब दोनों वृद्ध हो जावेंगे तो शिशुहीन गृह में क्या आनन्द मिलेगा।

वृद्धावस्था में किसको हम अपना कह कर गले से लगावेंगे। यह भी तो एक बड़ी समस्या है। फिर वृद्धा माँ के मन में दुःख देकर भी क्या फायदा। विमल की मानसिक अवस्था कमजोर हो गई है ऐसा उसे अनुभव होने लगा। मां की जोर जबरदस्ती से विमल ने प्रायः अनुमति दे दी थी। फिर भी कहा—'मां कुछ दिन और ठहरो। बहू की अनुमति के बिना मैं दूसरी शादी नहीं करूँगा।'

दो-चार दिन बाद विमल को हठात् आश्चर्यचकित कर उमा बिना पत्र भेजे ही, एक दम उपस्थित हो गई। किन्तु तरुणी ललिता को देख कर वह आश्चय में पड़ गई और सास की ओर देखने लगी। सास ने शर्मा कर उमा को हृदय से लगाते हुए आशीर्वाद दिया। ललिता से कहा—'अपनी दीदी को प्रणाम करो।' ललिता प्रणाम कर खाना पकाने के लिये रसोई गृह में चली गई। उमा व्याकुल होकर पूछने लगी कि वह कौन है। सास कहने लगीं—'वह हमारे गांव की लड़की है। उसकी मां उसे मेरे पास रख कर तीर्थ करने गई है।' यह सुन न जाने क्यों उमा का मन विषाद-ग्रस्त हो गया।

विमल उमा को पाकर आनन्दित हो उठा। उमा अपने पति के ऊपर तीक्ष्ण दृष्टि रख कर भी

परिवर्तन को न जान सकी। उमा स्वाभाविक रूप से मिलने की चेष्टा करती पर न जाने क्यों वह उस से सरल मन से न मिल सकती थी। ललिता अपने को अपराधी समझ कर दूर-दूर रहने लगी। अब उमा संसार में पहले की तरह सहज और स्वाभाविक गति नहीं देख रही थी। मानों कुछ घटना घट चुकी है ऐसा उसे प्रतीत होने लगा।

इतने दिनों के विच्छेद के बाद विमल उमा को अपने पास पाकर उच्छ्वासित हो उठा। किन्तु धीरे-धीरे फिर उसके मन में द्वन्द आरम्भ हो गया था। एक ओर मां का अनुरोध और नूतन का कल्पित चित्र, दूसरी ओर उमा के प्रति अन्याय। इन दोनों प्रतिवादी विचार धाराओं ने उसके मन को विक्षुब्ध कर दिया था।

उमा सब परिस्थिति समझ गई। एक दिन उमा ने अपना मन शान्त कर विमल से कहा—'देखो, एक भी बच्चा नहीं है, अच्छा नहीं लगता। तुम ललिता से शादी कर लो। ललिता अच्छी लड़की है।' विमल का मुख लाल हो उठा किन्तु दूसरे ही क्षण वह सफेद पड़ गया। आँखें नीची कर वह अस्फुट स्वर में बोला—'क्यों ऐसा कहती हो। मुझे अच्छा नहीं लगता।' उमा उस दिन और कुछ न बोल सकी। वह केवल विमल और ललिता पर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि रखने लगी।

विमल और ललिता एक दूसरे से मिलना नहीं चाहते थे। लेकिन एक दूसरे को जब कभी भी देखते तो उनका मुख उज्ज्वल हो जाता। आँखें खुशी से चमकने लगतीं। उमा के हृदय से एक आह निकलती। उमा अपने मन को कठोर कर समझाने लगी। पति की फिर से शादी करवाना ही ठीक होगा। केवल स्वार्थी होने से काम नहीं चलेगा। अपने वंश में दिया जलाने के लिये कोई नहीं बचेगा, नहीं-नहीं वह ऐसा नहीं होने देगी। उमा जितनी चिन्ता करती उतनी ही उसकी अश्रुधारा बहती जाती थी। अब उसका पति पराया हो जावेगा। उसे दूसरे के हाथों सौंप देना पड़ेगा। उस दिन दरवाजा बन्द कर उमा बहुत रोई। दो दिन रात अपने मन को बहुत समझाया और संयत किया। फिर जाकर सास से बोली—'मां यही अगहन में दिन शुभ है। मैं ललिता को अपनी छोटी बहन कहना चाहती हूँ। हमारे वंश में दिया जलाने वाला कोई नहीं रह जायगा यह बात ठीक नहीं।' सास ने उसे प्यार कर कहा—'तुम हमारी गृहलक्ष्मी। भगवान तुम्हारा कल्याण करें। तुम हमें दोष न दो। इसके बिना दूसरा कोई रास्ता ही नहीं सूझता।' उमा सास की छाती पर सिर रख कर रोने लगी। उसे रोती देख कर सास बोली—'तुम यह प्रस्ताव छोड़ दो। इसे तुम वापस ले लो। तुम हमारे घर की लक्ष्मी! तुम्हारी आँखों से आँसू बहने पर इस गृह का कल्याण कैसे होगा?' उमा जल्दी आँसू पोंछ कर कहने लगी—'नहीं मां अब दिन निश्चित कर लीजिये।' उमा की हँसी और निःस्वार्थ भाव को देख कर सास को ऐसा लगा कि उमा सचमुच देवी है।

[३]

अधिक साधारण रीति से विमल और ललिता की शादी उमा के यत्न से सम्पन्न हुई। उमा अपना सोने का कमक्ष ललिता के लिये छोड़ कर सास के पास सोने को आयी। सारी रात उमा के आँसू न थम सके। उमा आकुल भाव से भगवान की आराधना कर बल सञ्चय करने लगी। किन्तु व्यथा से उसका हृदय टुकड़ा-टुकड़ा हो रहा था।

उमा शान्ती की आशा से पित्रालय में आई थी किन्तु वहाँ भी उसे शान्ती नहीं मिली। शतशत् मधुर स्मृति उसे बिच्छू की तरह डंक मार रहे थे। विमल पहले पत्र भेजते थे पर उमा हृदय कठोर कर उसका उत्तर नहीं देती थी। गम्भीर व्यथा और अभिमान से उमा का हृदय परिपूर्ण था। उमा ने कर्तव्य पालन के हेतु विमल से पुनः शादी करने के लिये कहा था किन्तु इसीलिये क्या विमल पुनः शादी कर लेगा? ना विमल अब उसका कोई नहीं। अब उसके साथ वह कोई सम्पर्क नहीं रखेगी। उमा

ने अपनी मां को तीर्थ करने के लिये कहा। दुःखिनी मां अपनी लड़की के भाग्य विपर्यय से मानसिक आघात पाकर कातर हो गई थी अतः उमा के तीर्थ भ्रमण के प्रस्ताव से सानन्द राजी हो गई। शहर के और अनेक वृद्ध प्रयाग के कुम्भ मेले में तथा वहाँ से अन्य तीर्थ स्थानों में जाने की तैयारी कर रहे थे। उमा और उसकी मां तीर्थ करने के लिये निकल पड़ीं।

[४]

प्रयाग का वही विराट कुम्भ मेला। हजारों साधु सन्यासी, अगनित जनता से कुहराम मचा था। चारों ओर एक अद्भुत दृश्य था। उमा अवाक् होकर देख रही थी। कुम्भ मेला देख कर, गंगा स्नान कर उमा के वैचित्र्यपूर्ण दिन कटने लगे, किन्तु मेला समाप्त होते ही उसका मन अवसादपूर्ण हो गया। तीर्थ यात्रियों का दल मथुरा बृन्दाबन और काशी के लिये चल पड़ा।

काशी में आकर उमा और उसकी मां दूर के रिश्ते वाले मामा के घर ठहरीं। विश्वेश्वर अन्नपूर्णा के मन्दिर में पूजा देकर शान्तिपाठ सुन कर और गङ्गा स्नान कर उमा मन को भुलाने की चेष्टा करती। उसके हृदय के गहन कोने में जो एक मधुर स्मृति छिपी थी उसे भुलाने के लिये वह प्राणप्रण से चेष्टा करने लगी। वह मन प्राण से भगवान से प्रार्थना करती—'प्रभू मुझे ये संसार भुला दो।' उसने शारीरिक व मानसिक कष्ट उठाना शुरू किया। फल स्वरूप वह अपने आपको भूलने में समर्थ हुई। तब उसके क्लिष्ट आँखों और मुख पर उज्ज्वल प्रकाश दिखाई देने लगा।

उमा अपनी मां के साथ फिर हरिद्वार गई। हरिद्वार उसे बहुत भाया। प्रकृति के अपूर्व सौन्दर्य में उसने अपने आपको भुला दिया। निभृत प्रकृति की गोद में गङ्गा के कगारे पर बैठ कर उमा सूर्यास्त की आभा में तन्मय होकर देखती अस्तगामी सूर्य की आभा से गङ्गा का उच्छृङ्खल रंगित श्रोत देख कर वह अपने आपको भुला देती। इतने दिनों बाद उसे अपने मन में आनन्द अनुभव हुआ। उसका मन भी शान्त हो गया।

डेढ़ साल बीत गये। बहुत खोज करने पर विमल को ज्ञात हुआ कि उमा और उसकी मां हरिद्वार में हैं। विमल हरिद्वार गया, बहुत खोज के पश्चात् एक बधू की सहायता से वह उमा के घर पहुँचा। उमा की मां घर के सामने फूल तोड़ रही थी। विमल को देख कर एक दम चकित हो गई। पूजारता उमा को भी विमल के आगमन की सूचना दी गयी। उमा ठाकुर को प्रणाम कर अपने चित्त को स्थिर कर रही थी। पूरे डेढ़ साल बाद विमल को देख कर विचलित हो उठी। उमा का तपस्विनी वेश और मुख देख कर विमल अत्यन्त व्यथित हुआ। पहले की तरह स्वाभाविक भाव से उमा से बातचीत न कर सका। उमा का विषाद पूर्ण गम्भीर मुख और उदासीन आँखों की दृष्टि दोनों के बीच में दीवाल बन कर खड़ी थी। विमल ने संकुचित भाव से कहा—'उमा, मैं तुम्हें ले जाने के लिये आया हू।' उमा ने आश्चर्य चकित होकर विमल की ओर देखा। विमल की दृष्टि और संकुचित हो गयी। वह कहने लगा—'मां बहुत बीमार हैं। तुम्हारी राह देख रही हैं।'

उमा बोली—'नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं अब उस ससार में जाना नहीं चाहती हूँ।'

विमल ने कहा—'मुझे माफ कर दो उमा। मां एक बार तुम्हें देखना चाहती हैं। उनके मन को तुम दुःख मत दो।'

ये सुन कर उमा कर्तव्य पालन के लिये अपनी मां के सहित ससुराल के लिये रवाना हुई। मां को घर छोड़ कर विमल और उमा जब अपने घर पहुँचे तब सन्ध्या हो चुकी थी। उमा धीरे-धीरे गाड़ी से उतरी किन्तु कोई दृष्टिगत नहीं हुआ। गृह में प्रवेश कर देखा कि कोई भी नहीं है। घर-द्वार सब श्रीहीन दिखाई दे रहे थे। सामान यहाँ वहाँ बिखरा पड़ा था। उमा चकित चित्त से धीरे-धीरे आगे बढ़ी। उसने सास को रसोई घर के

आंगन में बैठा पाया। उमा ने जाकर सास को प्रणाम किया। सास ने उमा को छाती से लगा कर कहा—'आओ, अब तुम यह घर सम्भालो। मैं निश्चिन्त हुई।'

उमा सास की बात न समझ सकी। वह सास की ओर देखने लगी। सास आंसू पोंछ कर कहने लगी—'वह अभागिन चिरकाल के लिये हमें छोड़ कर चली गई।' वह अब कभी नहीं लौटेगी। जाने कैसा बुखार था। सात दिन में ही चल बसी। डाक्टर की दवा भी उसे ठीक नहीं कर सकी।

उमा यह विदारुण सम्वाद सुन कर जमीन पर बैठ गयी। क्या सचमुच अब ललिता नहीं है। क्या उमा पर अभिमान कर चली गयी? किन्तु उमा तो यह नहीं चाहती थी। वह तो स्वयम् इस ससार से दूर हो गई थी। अमङ्गल कामना तो उसके हृदय से निकली नहीं। उसने तो केवल इस ससार को भूलने के लिये प्रार्थना की थी। लेकिन यह क्या हुआ? उमा यह निष्ठुर समाचार सुन स्तब्ध होकर बैठी रही।

सास चली गयी। विमल ने आकर कहा—'उमा उठो, मैं अपराधी हूँ। मुझे माफ करो। दो-दिन के लिये जो अशुभ ग्रह बन कर तुम्हारे मार्ग में आई थी वह हमेशा के लिये बिदा ले चुकी है। उसे तुम स्वप्न की तरह भूल जाओ।' उमा दोनों हाथों से अपना मुख ढांक कर आर्त स्वर से बोल उठी—'नहीं-नहीं, मैं यह सब न कर सकूँगी।'

विमल ने गम्भीर होकर कहा—'तुम्हें वह सब भूल जाना होगा। उमा देखो, उठो! जिस लिये तुमने गृह त्याग किया था उसी मातृहीन शिशु को तुम अपना समझो।'

मातृहीन शिशु सुनते ही उमा विद्युत की तरह चमक कर खड़ी हो गई। उसने देखा विमल की गोद में एक सुन्दर शिशु उमा को देख कर अपनी मृत मां की याद में अस्फुट स्वर में 'मां, मां' कहकर दोनों हाथ आगे बढ़ा दिये। उमा चक्कर में पड़ गयी। क्या यह स्वप्न है या साकार? वह विह्वल हो उठी। किन्तु क्षण ही में अपने मन को कठिन कर कहा कि सौत की सन्तान को वह ग्रहण नहीं करेगी, उसके माया-जाल में बँधना उसे स्वीकार नहीं। वह यह ससार छोड़ कर चली जायगी। विमुख हो कर उमा ने पग बढ़ा दिये। किन्तु मायावी शिशु ने दोनों हाथ बढ़ाये और उमा की ओर कूद पड़ा। उमा और अधिक स्थिर नहीं रह सकी। दोनों हाथों से नन्हें बच्चे को हृदय से लगा लिया। उसका दुर्जय अभिमान और व्यथा अश्रु के रूप में बाहर फूट पड़ा।

पुत्रवधू को विष दिया

मथुरा जिले में थाना गोवर्द्धन के अन्तर्गत दोसेरस गांव के मंगोलाल पांडे व उनकी पत्नी को अपनी पुत्रवधू को विष देकर मार डालने का प्रयत्न करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है।

ज्ञात हुआ है कि वधू ने अस्पताल में बयान दिया कि निरंजनलाल से ४ वर्ष पूर्व मेरा विवाह हुआ था। शादी के बाद एक वर्ष तक तो अच्छी तरह रखा किन्तु फिर सन्तान न होने के कारण अनेक यातनायें दी गई हैं। मार-पीट में तीन दांत भी तोड़े जा चुके हैं और अब जान से मार डालने के लिये तेजाब में कांच पीस कर मिलाकर जबरन पिला दिया है।

पता चला है मौका पाकर वह रात को अपनी मौसी के यहाँ चली गई। वहाँ उसकी हालत बहुत बिगड़ गई थी। पुलिस में रिपोर्ट लिखने के पश्चात् अस्पताल में दाखिल की गई।

स्त्री की दर्दनाक मृत्यु

मढिया (हरदोई) में एक गर्भिणी स्त्री प्रसव के समय कई घंटे छटपटाती रही परन्तु बच्चा पैदा न हो सका। अन्त में उस महिला की बड़ी ही दर्दनाक मृत्यु हुई।

आधुनिक पढ़ी-लिखी तरुणियां

लेखक, श्री दादा धर्माधिकारी

> आधुनिक पढ़ी-लिखी तरुणियाँ जनता के दुखों के विषय में संवेदन-शील प्रतीत होती हैं; शोषकों और श्रीमानों की कड़ी आलोचना करती हैं परन्तु चाहती यही हैं कि शादी किसी मालदार पुरुष से हो। धन का मोह वे अभी भी नहीं छोड़ सके हैं! यही उनकी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है। आशा है सुशिक्षिता बहनों का ध्यान प्रश्न के इस पहलू पर जायगा और इस पर अपनी सम्मति प्रकट करेंगी।

बराबरी का नाता ?

सारे समाज में और विशेषकर स्त्रियों में यह भ्रम बहुत पुराना है कि स्त्री के हृदय में स्नेह और करुणा अधिक होती है।

अनुभव यह है कि स्त्रियों में सुकुमारता और भीरुता तो भरपूर होती है परन्तु करुणा या स्नेह की मात्रा विशेष नहीं होती। सुकुमारता में साहस का अभाव होता है और भीरुता में स्नेह का अभाव होता है। तब क्या स्त्री के हृदय में करुणा और स्नेह का एकान्तिक अभाव है? नहीं जब स्त्री अपने को पुरुष की माता मानती है, तब तो वह वात्सल्य और वीरता की मूर्ति होती है। लेकिन वह अक्सर अपने को पुरुष-मात्र की माता या भगिनी मानने में असमर्थ पाती है। इसलिये पुरुष की ओर से निरन्तर सतर्क और सशङ्क रहती है। इसीलिये स्त्री-शिक्षा तथा स्त्री मता-धिकार से उसके जीवन में मूल भूत परिवर्तन नहीं हो सका है।

डाक्टर, प्रोफेसर, कौंन्सलर और लीडर तरुणियों से भी पाणिग्रहण शुल्क लेने का हौसला

तरुण पुरुष रखता है। विद्या, वैभव और सताधिकार से विभूषित, कन्या का 'सालंकृत आत्म दान' उसे मिलता है। रूपवती, विद्यावती, गुणवती तरुणी निरन्तर अपने अनुरूप वर की खोज में है। पुरुषार्थवान् और सम्पन्न तरुण अधिक से अधिक दहेज की प्रतीक्षा में है। क्या इस परिस्थिति में स्त्री का समानाधिकार और समान नागरिकता कोई अर्थ रखता है ?

कन्या का पिता आज उतना ही चिन्ताक्रांत है, जितना कि पचास वर्ष पहले था। बल्कि उस जमाने की अपेक्षा आज वह ज्यादा परेशान है। पढ़ी-लिखी लड़की की अभिरुचि विशेष प्रकार की होती है और प्रौढ़ कन्या की अभिरुचि की उपेक्षा करने में भय है। पढ़ा-लिखा लड़का शादी को अन्य व्यवहारों की तरह एक लौकिक व्यवहार, लेने-देने का एक अवसर मानता है। अतः वह लड़की की प्रतिकूल परिस्थिति और विवाह की आकांक्षा से अधिक से अधिक फायदा उठाने की फिक्र में रहता है। ऐसी अवस्था में स्त्री पुरुष का नाता बराबरी का कैसे हो सकता है ?

ये नये जेवर !

स्कूलों और कालेजों की लड़कियां समाजवादी, साम्यवादी और सर्वोदय-वादी कहलाती हैं। दलित और दरिद्र जनता के दुःखों और मुसीबतों के विषय में ओजस्वी भाषण करती हैं। शोषकों और श्रीमानों की कड़ी आलोचना करती हैं। परन्तु इच्छा यही होती है कि शादी किसी मालदार पुरुष के घर में हो, उनके माता-पिता अपनी कन्या को सुखी देखना चाहते हैं इसलिये वे भी उसके लिये किसी खुशहाल वर की खोज में रहते हैं। आज की नवयुवती के जीवन में यह असंगति है। इसलिए शिक्षण अधिकार और सत्ता उसके जीवन के जेवर बन जाते हैं। जेवर जितने ज्यादा कीमती हों, जान का खतरा भी उतना ही बढ़ जाता है।

तब क्या स्त्री अपने राजनीतिक अधिकारों को छोड़ दे ? क्या शिक्षण लेना बन्द कर दे ? क्या फिर से रनिवास में बन्द हो जाये ?

हकीकत !

हकीकत यह है कि स्त्री अपनी सारी आधुनिकता के लोभ से अकबका कर आज ऐसा ही कर रही है। आजादी की परीक्षा संकट के समय होती है। जब-जब संकट आता है, स्त्री अपने संरक्षण का भार पुरुष पर डालकर अपनी जिम्मेदारी से बरी हो जाती है। यदि पुरुष संरक्षण न कर सके, तो उसके पौरुष को धिक्कार है। अपवादरूप किसी स्त्री ने अपना जौहर दिखा दिया, तो वह लोकोत्तर ललना कहलाती है। इसमें पुरुष का गौरव है, इसके जीवन का मूल्य बढ़ जाता है। परन्तु स्त्री के जीवन का इसमें चिन्ताजनक अवमूल्य है। स्त्री को स्त्री के नाते, कोई प्रतिष्ठा और कीमत नहीं रह जाती है।

स्त्री भीरु और सुकुमार है, कायर और नाजुक है, इसलिए उसके मन में शारीरिक बल और शासन-शक्ति के लिए बहुत बड़ी इज्जत है। जो पुरुष शारीरिक शक्ति में दूसरों को परास्त कर सकता है, और उन पर अपना प्रभुत्व कायम कर सकता है, उसे स्त्री पूजती है, अपना सर्वस्व उस प्रतापी और पराक्रमी पुरुष के चरणों में चढ़ा देती है, स्त्री इस प्रकार बल और सत्ता की कायल हो गई है। जब तक यह स्थिति है, तब तक पर्दे में और पर्दे से बाहर, दोनों जगह, वह जोखम है, सम्पत्ति है, साधन है, न कि व्यक्ति या स्वतंत्र नागरिक।

एक मात्र उपाय

इसका एक मात्र उपाय यह है कि तरुण स्त्री नये जीवन-मूल्यों को अपनये। वह अपने मन में से शरीर बल की प्रतिष्ठा और शरीर बल का भय निकाल दे। आज उसे धन का और सम्पत्ति का मोह पुरुष की अपेक्षा अधिक है। पुरुष की तलवार स्त्री के संरक्षण के लिए है और पुरुष की सम्पत्ति स्त्री को सुखी बनाने के लिए है। इसलिए पुरुष की अपेक्षा

स्त्री अधिक शस्त्रनिष्ठ और सम्पत्तिनिष्ठ है। यह शस्त्र-निष्ठा और वैभवनिष्ठा पढ़ी-लिखी तरुणियों के मन में पुरानी अशिक्षित स्त्रियों की अपेक्षा किसी कद्र कम नहीं है, वरन् कुछ अधिक ही है।

गांधी जी की देन

गांधी जी ने स्त्री को शस्त्र-निरपेक्ष शौर्य और धन-निरपेक्ष प्रतिष्ठा की दीक्षा दी। सत्याग्रह में स्त्रियां पुरुष के बराबर पराक्रम और वीरता दिखा सकती हैं; क्योंकि उसमें शरीर-बल की आवश्यकता नहीं। श्रमनिष्ठ अपरिग्राही समाज की स्थापना के लिए नये क्रान्तिकारी अर्थशास्त्र का प्रतिपादन गांधी जी ने किया। उपयोगी परिश्रम, हस्त-कौशल और कला में स्त्री कमाल हासिल कर सकती है। गांधी जी का सर्वोदय एक समग्र दर्शन और विज्ञान है। जीवन के मूल्यों में ही वह आमूल परिवर्तन करता है आज तक का समाज पुरुष-सत्ताक रहा है। उसके मूल्य भी पुरुष सुलभ रहे हैं। सर्वोदय उस समाज को उभय-सत्ताक स्त्री पुरुष सत्ताक, मानव सत्ताक, बनाने का संकल्प करता है।

देश की सुशिक्षित तरुणियों के बिचार के लिए आज यह विषय बुद्धि-पूर्वक रखा है।

प्रधान मन्त्री का राष्ट्रीय सहायता कोष

लोक सभा में श्री डी० सी० शर्मा के प्रश्न के उत्तर में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने बताया कि १९५४ के पूरे वर्ष में अर्थात् १ जनवरी १९५४ से ३१ दिसम्बर १९५४ तक प्रधान मन्त्री राष्ट्रीय सहायता कोष में कुल ५१,४०,८५१ रुपया ९ आना ३ पाई की रकम प्राप्त हुई।

युवती बिजली की बैटरी बन गई

लखनऊ की एक युवती डाक्टरों की बुद्धि को चुनौती दे रही है। उसके अजीब मर्ज का इलाज किसी भी डाक्टर की समझ में नहीं आ रहा है।

कन्या स्थानीय दीवानी अदालत के एक (ओथ-कमिश्नर की पुत्री है। किसी बीमारी में उसको बिजली के इलाज में रखा गया था जिसके अन्तर्गत उसके शरीर में इतनी बिजली पहुँच गई है कि वह 'पूर्णतः विद्युत्मयी' हो गई है और उसका स्पर्श होते ही व्यक्ति को बिजली के धक्के का कटु अनुभव होता है। इस विद्युत् बाला को विद्युत-मुक्ति करने के सारे प्रयास अब तक व्यर्थ रहे हैं।

विनोबा बिना दर्शन लौटे

आचार्य विनोबा भावे जगन्नाथ मंदिर में जगन्नाथ जी का दर्शन करने गये थे। विनोबा जी के साथ फ्रांसीसी महिला श्रीमती निकोली भी थीं। मंदिर के पुजारी ने फ्रांसीसी महिला को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया। फल स्वरूप विनोबा जी बिना दर्शन किये ही वापस लौट आये।

मन्दिर के द्वार पर पुजारी विनोबा जी के स्वागत के लिये खड़ा था। पहुँचते ही आचार्य भावे ने पुजारी को बताया कि उनके साथ ईसाई महिला भी भगवान का दर्शन करना चाहती हैं। पुजारी महिला के मन्दिर-प्रवेश की आज्ञा न दे सका। इसलिये विनोबा जी को वापस लौटना पड़ा।

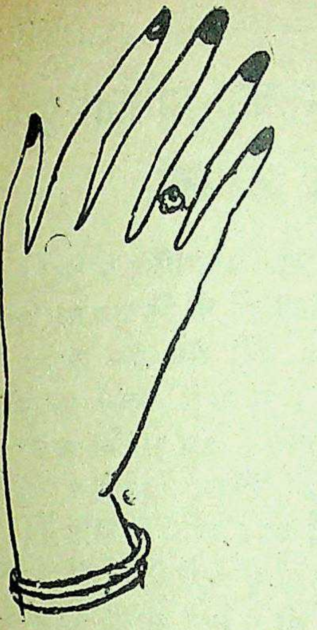

स्त्रियों की हथेली का सौन्दर्य

लेखक, श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित

हमारा प्राचीन साहित्य भंडार सैकड़ों वर्ष की कवियों की साधना का ही परिणाम है। उसमें अनेक उत्तम कवि हो गये हैं। जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर ऐसे आकर्षक, मनोहर एवम् श्रेष्ठ सुमनों का सृजन किया है कि आज भी वे हमारे लिये बहुत काम की वस्तु बने हुए हैं मनोरञ्जन की सामग्री भी उनमें कम नहीं है। इसलिये सबको गन्दा कह कर त्याज्य मान लेना उचित नहीं है। हाँ अश्लील साहित्य अवश्य छोड़ देने की आवश्यकता है जिससे हमारे हृदयों में कुरुचि पूर्ण भावना न आ सके।

आजकल नयी कविता की आंधी में हम मध्यकालीन ब्रजभाषा के साहित्य को उड़ाये दे रहे हैं। हम उसमें से पर्याप्त सुपाठ्य सामग्री निकाल कर युवकों के लिये मनोरञ्जक कविताएँ चुन सकते हैं। इसीलिये यहाँ कुछ सुरुचि पूर्ण रचनाएँ उपस्थित की जाती हैं जिनसे पाठक समझ सकेंगे कि ये कविताएँ हमारे लिये कितनी उपयोगी हैं।

एक सुकुमार स्त्री की हथेली का वर्णन हमारे साहित्यकारों ने किस ढङ्ग से किया है उसके कुछ नमूने लीजिये। एक दोहाकार लिखते हैं :—

दीप हथेरिन की दिपति यों मेंहदी के सङ्ग।
लाली सावन सांझ तैं ज्यों सूरज कौ रङ्ग॥

यहाँ पर कवि ने किसी सुकुमार स्त्री की हथेली में मेंहदी लगी देख कर सावन मास के संध्या समय के लाल बादलों पर पड़ी सूर्य किरणों पर अपनी प्रतिभा को जा टकराया है और तुरन्त उक्त दोहा रच डाला है। इसमें प्रकृति निरीक्षण की गहरी अनुभूति प्रकट हो रही है। 'दीप' से 'दिपति' क्रिया की रचना भी आजकल के शब्द शास्त्रियों के लिये अनुकरणीय वस्तु प्रस्तुत करती है।

ब्रज साहित्य में राधा कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन बड़ी प्रचुर मात्रा में मिलता है। उसके एक कवि ने राधा की हथेलियों का बड़ा ही हृदय ग्राही तथा उत्तम वर्णन किया है देखिये :—

राधिका रूप - निधान के पानिन,
आनि मनो छिति की छवि छाई।
दीह अदीहन सूछम थूल,
मही हम जोरी की दौर लगाई॥
किन्तु बनी मेंहदी तिन में,
मन मोहनी ह्वै मन मोहनी धाई।
इन्द्र बधू अरबिन्द के मन्दिर,
इन्दिरा कौं मनों देखन आई॥

इस सवैया में कवि ने राधिका की हथेलियों में पृथ्वी भर की शोभा भर दी है। छोटे, बड़े, सूक्ष्म और स्थूल सभी का उसने निरीक्षण कर डाला है

परन्तु इनकी समता कहीं न मिल सकी। फिर मेंहदी लगी हथेलियों की तुलना तो पृथ्वी पर असम्भव जान देवताओं में चक्कर लगाया। उस समय मन मोहनी राधा की वह इस प्रकार प्रशंसा करता है मानो वीर बहूटियां कमल रूप हाथों पर आकर लक्ष्मी रूपी राधिका के दर्शनार्थ आई हैं। कैसा सजीव और मनोहारी वर्णन है।

अब शंभुराज कवि का एक चित्रण और अवलोकन कीजिये—

हमारा यह कांव स्त्रियों की हथेली में मेंहदी न लगवा कर महावर लगवाता है जो कि कुछ ग्रामीणता का द्योतक है। तथा इससे कवि के गम्भीर और विसतृत प्रकृति निरीक्षण में कुछ न्यूनता प्रदर्शित होती है। हाथों में महावरी का कम चलन है। कवियों ने भी हाथों के महावर का कम वर्णन किया है। पैरों में महावर और हाथों में मेंहदी का ही विशेष वर्णन पाया जाता है। फिर भी इसकी रचना मनोहारिणी है। इस मन हरण दण्डक की सुन्दरता का अवलोकन कीजिये :—

तूतह के नूतन सरस सुकुमार पात,
जात हैं लजात जे वे निपट उतर के।
कोसम की कोसम करत किशलय कहा,
होत न बराबरी नवीन पात वर के॥
कहै शंभुराज दूजे सम कौं न देखौं और,
पेखि पेखि रेखा सों ललित प्यारी करके।
जावक सरफ बिधि फारसी हरफ लिखे,
कंज के दलन पै प्रबन्ध पञ्च सरके॥

ये का राज महाशय श्रीमती के ललित हाथों को देख कर कभी शहतूत के पत्तों से मिलान करते हैं तो कभी कुसुम्बी रङ्ग की ओर दौड़ते हैं फिर वट वृक्ष के नये कोमल किशलय से उपमा देने लगते हैं, परन्तु सबको तुच्छ कह कर त्याग देते हैं। फिर जब महावर से फारसी हरफों के समान हथेली पर रचयितर शक्लें निर्मित करता है तो हमारे शम्भु जी उसे कामदेव महाराज की निबन्ध रचना कहने लगते हैं। मानो उसने अपना प्रभाव फैलाने के लिये ही कमल की पंखड़ियों पर इसकी रचना कर डाली है जिसे पढ़ कर सब उसकी लेखन शक्ति का लोहा मान जाय।

कवि ने अनुप्रास और यमक लाने के लिये कोसम तथा उतर शब्दों को कुछ बिगाड़ दिया है। परन्तु रचना चातुर्य की प्रशंसा करनी ही पड़ेगी। इन कविताओं से हम मध्यकालीन भारतीय कवियों का प्रकृति निरीक्षण और सौन्दर्य चित्रण का रसास्वादन कर अवश्य आनन्द का अनुभव करेंगे।

राणा प्रताप की प्रतिज्ञा पूरी की जायगी

मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह के पिता राणा उदयसिंह ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौढ़ को वे स्वतन्त्र न कर लेंगे तब तक आराम की जिन्दगी न बितायेंगे। न तो वे पलंग पर सोयेंगे और न थाली में खायेंगे। तब से मेवाड़ के राणा बराबर इस प्रकार का जीवन बिताते आ रहे हैं। वे चटाई पर सोते हैं और पत्तल में खाते हैं।

महाराणा के साथ ही वहाँ के गोदी लुहारों ने भी यही प्रतिज्ञा की थी। तब से यह गोदी लुहार आज तक खानाबशोश का जीवन बिताते आ रहे हैं।

यह हर्ष की बात है कि इस मास में राणा और गोदी लुहारों की यह प्रतिज्ञा पूर्ण होगी। ६ अप्रैल को लगभग ४०० गोदी लुहारों का एक दल चित्तौड़गढ़ के किले में प्रवेश करेगा। इस दल का नेतृत्व प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू करेंगे।

इस अवसर पर किले को खूब सजाया जायगा और उसमें रोशनी होगी। किले के फाटक पर विभिन्न राज्यों के मुख्य मन्त्री दल का स्वागत करेंगे।

सांकेतिक भाषा

लेखक, श्री निशीथकुमार राय बी० ए० एल-एल० बी०

१९४० ई० का मार्च का महीना था बरतानिया तथा जरमन में लड़ाई छिड़ चुकी थी। उदय उन दिनों लन्दन में ही था। एक दिन वह अपने मित्र खुफिया विभाग के प्रधान मिस्टर जेम्स से मिलने गया तो उनके कमरे में एक २६-२७ का बहुत ही सुन्दर युवक बैठा पाया। मिस्टर जेम्स ने परिचय करवाया—'यह हैं मिस्टर मिलर, मेरे नये रिसर्च अफसर। मैंने इनके बराबर अक्लमन्द और योग्य लड़का आज तक नहीं देखा। संकुचित होकर मिलर बोला—'मिस्टर चौहान आपसे परिचित होकर मैं अपने को सौभाग्यवान् समझता हूँ। परन्तु मैं तुच्छ आदमी हूँ और आप तो अपने मित्र को जानते हैं जिसको एक बार पसन्द करते हैं उसका कोई दोष इन्हें दिखाई ही नहीं पड़ता।'

थोड़ी देर बाद मिलर अपने कमरे में काम करने चला गया और उदय से जेम्स बहुत-सी जरूरी बातें करने लगे। बातों ही बातों में मिस्टर जेम्स ने उदय से कहा—'मि० चौहान आप तो जानते ही हैं कि सबसे गुप्त बातें देश-विदेश के गुप्तचरों को मैं सांकेतिक भाषा नम्बर १ द्वारा भेजता रहता हूँ। देश-विदेश के गुप्तचरों का नाम व पता सांकेतिक भाषा में मेरे पास लिखा हुआ है। इस भाषा को मेरे और उन गुप्तचरों के अतिरिक्त दो ही और व्यक्ति जानते हैं। वे हैं मेरे डिप्टी चीफ मिस्टर ब्रैन्ड और समर सचिव। इधर कुछ दिनों से सन्देह हो रहा है कि शायद इस सांकेतिक भाषा का गूढ़ जानने की कोशिश कोई कर रहा है। वह कौन है और किसी हद तक उसने भाषा को जान लिया है इसी का पता लगाने के लिये मैंने आपको कष्ट दिया है। सांकेतिक भाषा का शब्द कोष मेरी इस तिजोरी में रक्खा हुआ है और मेरे इस कमरे में आने का अधिकार मेरी अनुपस्थिति में किसी को नहीं है।' कहकर उन्होंने एक बहुत ही मजबूत तिजोरी दिखलायी। उदय ने पूछा—'क्या उस शब्दकोष को आपको रोज देखना पड़ता है।'

'जी हाँ मुझे रोज देखना पड़ता है। शब्दकोष खुले हुए पृष्ठों पर मेरे अपने कलम से लिखा गया है और छुट्टे पन्ने इकट्ठा करके एक लोहे के जिल्द में ढके हुए हैं।'

'तो क्या पन्ने सिलसिलेवार किताब की शक्ल में नहीं हैं?'

'जी नहीं, पन्ने का कोई सिलसिला नहीं, जिस दिन जिस पन्ने को देखने की आवश्यकता हुई वह ऊपर आ जाता है और जब दूसरा पन्ना देखा तो उसको ऊपर रख लेता हूँ।'

उदय उठने ही वाला था कि मिलर एक बालिश्त का डिब्बा लिये कमरे में घुसा और मि० जेम्स के पास जा पहुँचा और बोला—'सर इसको रख दीजिये अभी दो एक दिन का काम और बाकी है।' मिस्टर जेम्स ने अपने हाथों से तिजोरी का सबसे ऊपर वाला हिस्सा खोला और मिलर ने अपने हाथों से बक्स को रख दिया। फिर तिजोरी को बन्द करते हुए मिस्टर जेम्स ने कहा—'चौहान मिलर एक ऐसा बेतार यन्त्र आविष्कार करने वाला

है जिससे बहुत ही मृदु शब्द भी सुनाई पड़ जायगा।'

दूसरे दिन उदय मि० जेम्स के दफ्तर में जब आया तो पहिले उनके कमरे में न जाकर मिलर के कमरे की ओर गया। कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द था। थपथपाने पर मिलर ने खोला। उदय ने देखा कि मिलर बहुत से यन्त्रों के बीच में खड़ा है। पास ही वह बक्स भी पड़ा था। एक प्रकार की बू कमरे में फैली थी। उदय मुस्करा कर बोला—'मि० मिलर आप जरा मिस्टर जेम्स के कमरे में आइये कुछ बातें हैं।'

मिलर पैनी दृष्टि से उसकी ओर ताक कर बोला—'अच्छा।'

मिस्टर जेम्स के कमरे में १० मिनट तक इन्तजार करने के बाद भी जब मिलर नहीं आया तो मि० जेम्स ने अपने आदमी को भेजा। अरदली ने आकर बतलाया कि कमरा खुला पड़ा है और मिलर नहीं है। मिस्टर जेम्स का मुँह गम्भीर हो उठा, कमरा खुला छोड़ कर बिना किसी को कुछ कहे मिलर कहीं जाने वालों में नहीं था। उदय ने मि० जेम्स से कहा—'मिलर ताड़ गया था कि मैं उसे सन्देह करता हूँ और मुझे सन्देह है कि मिलर आपके सांकेतिक शब्दकोष की नकल भी ले गया।'

'मगर कैसे? यह असम्भव है।' चौंक कर बोले मिस्टर जेम्स।

उदय ने उस बक्स को ले जाकर तिजोरी में रक्खा और पूछा—'शब्दकोष किस ताख में है।'

'ठीक उसी के नीचे वाले ताख में।' गम्भीर स्वर में मि० जेम्स बोले।

दोनों कुर्सी लगा कर वहीं बैठ गये। धीरे-धीरे दो घंटे बीत गये परन्तु कोई बात नजर नहीं आई। मि० जेम्स हँस कर उदय से बोले—'कोई खास बात नहीं है मि० चौहान आप बेकार डर गये। उदय कुछ बोला नहीं, बैठा ही रहा, इधर-उधर की बातों में और एक घन्टा बीता। मि० जेम्स का धैर्य टूट ही रहा था कि यन्त्र ने शायद समझ लिया। क्योंकि उसी वक्त किल्क की आवाज-सी हुई और एक प्रकार की तीव्र नीली रोशनी उस ऊपर वाले ताख को भेद करके शब्दकोष पर जा पड़ी और दूसरी किल्क शब्द के साथ वह लुप्त भी हो गयी। मि० जेम्स का चेहरा भयकर गम्भीर हो उठा और उदय ने कहा—'लीजिये आपके शब्दकोष के ऊपरी पृष्ठ का फोटू खिच गया। मिस्टर जेम्स की आवाज तो लापता हो चुकी थी। रुद्ध स्वर में वे बोले—'चौहान गजब हो गया, इससे सिर्फ देश-विदेश के सौ गुप्तचरों की जान ही केवल खतरे में नहीं, बल्कि विलायत का सारा भविष्य खतरे में जा पड़ा है। आप इसका कोई उपाय कीजिये। मैं तो मुँह दिखाने काबिल भी नहीं रह गया हूँ।'

उदय बोला—'मैं आपको आश्वासन तो नहीं दे सकता परन्तु इस बात की कोशिश अवश्य करूँगा कि आपको मिलर के चक्रान्त से मुक्त करूँ।'

उदय स्वीजरलैण्ड को जाने की तैयारी कर ही रहा था कि जेम्स का पत्र मिला—'मिलर इस समय जरमनी की राजधानी बर्लिन में है और तुरन्त यदि उसको नहीं रोका गया तो सर्वनाश हो जायेगा।'

उदय बर्लिन पहुँचा। किस प्रकार उसने प्रहरी की निगाह बचा कर वहाँ पहुँचा यह बताना अन्तर्जातिक परिस्थिति को देखते हुए मैं नहीं चाहता। वहाँ एक होटल में निम्न प्रकार की बातें हुईं—'तुम्हें कोष के दो-चार पन्ने मालूम हैं, कितना रुपया पाने पर तुम लन्दन में आकर जब तक हम दूसरा कोष न बना लें तब तक रहोगे।'

'मुझे कोष का दो-चार पन्ना ही नहीं बल्कि पूरा कोष मालूम है। कोष में कुल २३२ पन्ने हैं और मैंने हर पन्ने की नकल फोटू के सहारे लेकर जब रट लिया तो उन्हें नष्ट कर दिया था। अब मुझे आपके मित्र के भेजे हुए निर्देशों को पढ़ने के लिये मुँह मांगी रकमें मिलती हैं। मैं क्यों बेवकूफ जैसा अपनी जान खतरे में डाल कर लन्दन में नजरबन्द रहूँ?'

'आप अगर हमारे गुप्तचर द्वारा मार डाले जायें तो कोड आपके साथ ही खतम हो जायेगा।' उदय ने पूछा।

जी नहीं, गम्भीर स्वर में बोला मिलर—'उदय जी आप जितनी रकम माँगें मैं देने पर तैयार हूँ। यदि आप इस मामले से अपना हाथ हटा लें। इस कोड को मैं एक और आदमी को जताना चाहता हूँ मगर अपनी मौत से पहिले नहीं।'

'मैं आपकी बातों पर विचार करूँगा।' कह कर उदय उठा। दो ही मिनट बाद एक व्यक्ति अचानक कमरे में घुस कर साइलेन्सर लगे हुए रिवाल्वर से मिलर की हत्या करके जब बाहर निकला तो कौन कह सकता था कि वह स्वयम् मिलर नहीं था। उसने इतना अच्छा भेष बदल रखा था। थोड़ी दूर जाकर उसने फिर भेष बदला और एक ओर चल दिया।

[२]

उदय के सम्वाद से मिस्टर जेम्स खुश तो हुए परन्तु फिर भी उनकी चिन्ता दूर नहीं हुई जब उदय ने कहा कि मिलर की इच्छा थी—'मरने के बाद एक आदमी को वह यह भाषा सिखा जाना चाहता था। अब तो वह मर गया है अब वह दूसरा आदमी सीखना शुरू कर दिया होगा। मगर वह कैसे, यही थी चिन्ता की बात।'

उदय ने लन्दन में जिस होटल में मिलर रहता था, शुरू से ही उसकी कड़ी निगरानी का इन्तजाम किया था और मिलर के कमरे को बन्द करवा कर छोड़ रखा था। अब वह उस कमरे में पहुँचा। मिलर के अधिकार में एक 'सुइट' था। मिस्टर जेम्स गम्भीर स्वर में बोले—'इन कमरों को हजारों बार हम लोगों ने देखा है, मि० चौहान। मगर कोई खास बात नजर नहीं आई।'

'आपने देखा है। मगर मैंने नहीं, एक बार मैं भी कोशिश करके देख लूँ।' कह कर उदय ने कमरे की छान-बीन शुरू की। होटल के मैनेजर ने बताया कि मिस्टर मिलर ने उन्हें कहा था कि जब तक वे या उनका कोई मित्र न कहे तब तक कमरे की सफाई भी न की जाये।

'सफाई के माने।' उदय ने पूछा।

'यही कि कमरे की पुताई वगैरह कराना, झाड़ू लगवाना, फर्नीचर पर पालिश दोहराना इत्यादि।'

उदय की आँखें उज्ज्वल हुईं। उसने दोनों हाथों से टटोल-टटोल कर दीवाल को भी देखा। मिस्टर जेम्स का गम्भीर स्वर सुनाई पड़ा। हमारे आदमियों ने भी दीवालों को बड़े गौर से देखा है जहाँ तक मेरा ख्याल है दीवाल या कोई भी हिस्सा खोखला नहीं है। उदय ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा कामयाबी की रोशनी से झलमला रहा था। उसने मिस्टर जेम्स से कहा—'मि० जेम्स आपको जिस व्यक्ति ने पत्र द्वारा सहायता करने का इरादा जताया है और कल इस होटल का मुआइना करने वाला है वह आपसे कहेगा कि वह मिलर का साथी था और मिलर ने उसको इस रहस्य का हिस्सा बँटाने को कह कर इनकार कर गया और रुपये के लालच में पड़ कर उससे नाता तोड़ लिया। उसे सिर्फ इतना ही कह पाया था कि उसके सुइट के कमरों में से किसी एक की दीवाल के अन्दर छुपा हुआ खाना है, उसी में कोड (सांकेतिक शब्दकोष) की नकल रक्खी है।'

दूसरे दिन उदय और मि० जेम्स बैठे हुए थे कि बेयरा ने कार्ड पेश किया। आगन्तुक के एक बहुत ही लगीय सहीय आदमी। बोली से उनकी जात का पता लगाना मुश्किल था मगर अँग्रेज नहीं थे यह स्पष्ट था। वे सीधे होटल जाने की तैयारी करके आये थे और जाते-जाते उन्होंने हूबहू वही बातें कहीं जैसा उदय ने बतलाया था।

उन सज्जन ने दीवाल पर हाथ लगा कर टटोलना शुरू किया और कहा—'कौन जाने इस काम में मुझे एक दिन लगे या एक माह। काम आसान नहीं है यह तो आप भी मानेंगे मि० चौहान?'

'जी हाँ।' भयंकर गम्भीर स्वर में बोला उदय, मैं मानता हूँ। परन्तु क्या आपको मालूम है कोड नम्बर एक को जानने वाले की सजा क्या है।'

'मृत्यु।'

शीतल कठिन स्वर में मि० जेम्स बोले—'तत्कालीन मृत्यु ! कोड नं० १ को जानने के पश्चात् एक पल भी गैर सख्श को हम जीने नहीं दे सकते।'

तो आप समझ-बूझ कर आगे बढ़िये श्रीमान् जी ! बोला उदय—'क्योंकि जहाँ तक आपने टटोला है उसी के आगे से शुरू हो जाता है कोड नम्बर १ का गूढ़ तत्व।'

एक जोड़ी मजबूत हथकड़ियों में जकड़ गये थे आगन्तुक के हाथ। विस्मित मि० जेम्स को और भी आश्चर्य्यान्वित करके उदय बोला—'जितनी बातें मैंने आपको बतायी थीं वे सब मि० जेम्स ने दीवाल ही में से पढ़ कर कही थीं। आगे यह लिखा है—'टिटिकाका के माने जहाज चल चुका है···।'

मि० जेम्स का चेहरा जरा अप्रतिभ-सा दीख रहा था। उदय बोला—'आप न घबराइये। मैं आगे नहीं पढ़ूँगा।'

और फिर मृदु हँस कर बोला—'मि० जेम्स इस दीवाल पर 'ब्रेइल' ढङ्ग से पूरा कोड नं० १ (शब्द कोष) लिखा है जिससे अन्धे पढ़ते-लिखते हैं। हाथ लगाने से मालूम हो जाता है, आलपीन के नोक जैसे उठे-उठे हैं। वैसे मालूम नहीं होता, क्योंकि दीवाल पर फलदार कागज लगा है (वाल पेपर) और आलपीन उसके पीछे गड़े हैं।'

उदय को प्रधान सचिव की ओर से भी जो धन्यवाद मिला उसमें उसे इङ्गलैण्ड के रक्षक के रूप में सम्बोधित किया गया था।

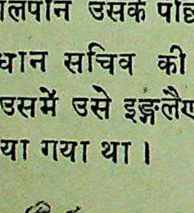

विज्ञान के चमत्कार

कृत्रिम वर्षा

संयुक्तराष्ट्र-सङ्घ के शिक्षा, विज्ञान एवं सस्कृति सन्घटन (यूनेस्को) ने यह रिपोर्ट दी है कि पश्चिमी पंजाब के कुछ हिस्सों में वैज्ञानिकों ने बहुत ही महीन पिसे हुये नमक को हवा में छिड़क कर वर्षा में ५० प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि की है। लाहोर और जाफराबाद में पिछली गर्मियो मे इस सम्बन्ध में परीक्षण किये गये थे। साधारण नमक को हाथ से चलने वाली मशीन द्वारा हवा में छिड़का गया था। इस तरह नमक का कण वाष्य में घुलमिल जाता है और हवा इसे अपने साथ ले उड़ती है। १५०० वर्गमील क्षेत्र पर इस प्रकार वर्षा बरसाई गई।

पृथ्वी की आयु

कोलम्बिया बिश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की आयु के बारे में नया अनुमान लगाया है। इस अनुमान के अनुसार पृथ्वी की आयु ४ अरब ८० करोड़ वर्ष की कूती गई है। इन वैज्ञानिकों का कथन है कि पृथ्वी की वास्तविक आयु इससे २० करोड़ बर्ष तक अधिक या कम हो सकती है। कोलम्बिया के डा० जे० लारेन्स कल्प और ने जौर्ज एल० केट ने अमेरिकी कैमिकल सोसाइटी की बैठक में इस नये अनुमान की घोषणा कीं। उन्होंने पृथ्वी की आयु का अनुमान पृथ्वी में पाये जाने वाले और उत्कापात के समय पृथ्बी पर गिरने वाले सीसे की तुलना करके पता लगाया है। दोनों प्रकार के सीसों म अणुओं के अनुपात का जो अन्तर है, उसका माप ब्रह्माण्ड (कौस्मक) किरणों के मापक यन्त्र द्वारा किया गया है।

जायदाद में स्त्री के हक का कानून

इसके पास होने से स्त्री के प्रति अन्याय समाप्त हो जायगा

प्रस्तुत विधेय हिन्दू कोडबिल की तीसरी किश्त है जो अब लोक सभा में पेश है। इसमें हिन्दू परिवार की जायदाद के उत्तराधिकार की व्यवस्था की गई है।

पुत्री को पिता की जायदाद में हिस्सा मिलने तथा पति की जायदाद पर विधवा के पूर्ण स्वामित्व की बात भी इस विधेयक में हैं।

अभी तक जनता की जो कुछ राय मिल सकी है। उसके अनुसार कहा जा सकता है कि कुछ थोड़े से लोग विधेयक के विरोधी हैं। पुत्री को पिता की जायदाद में हिस्से का विशेष रूप से विरोध किया जा रहा है। किन्तु फिर कुछ विशेष व्यवस्थाओं का चाहे विरोध हो किन्तु सिद्धान्ततः विधेयक जनता को मान्य कहा जा सकता है।

महिला क्षेत्रों का कहना है कि संयुक्त परिवार पर भी विधेयक में विचार किया जाना चाहिये। कुछ लोगों का सुझाव है कि कुछ योरोपीय देशों की भांति पत्नी या पुत्र के जीवित रहने पर मालिक को अपनी जायदाद किसी को दे देने का हक हरगिज न होना चाहिये।

पिता की जायदाद में पुत्री को और विशेष कर विवाहित पुत्री को हिस्सा देने की आलोचना करते हुए कुछ लोग कह रहे हैं कि परिवार में एक परगोत्रीय हिस्सेदार के आ जाने से द्वेष और कलह का फैलना अवश्यम्भावी है। इससे मुकदमेबाजी तथा अन्य नई बुराइयों के पैदा होने की आशङ्का है। कुछ लोगों का कहना है कि भाई और बहन के बीच का मधुर नेह भी समाप्त हो जायगा। भाई अपनी बहन के विवाह आदि के प्रति गैर-जिम्मेदारी का रुख अख्तियार कर लेंगे।

कुछ न्यायाधीशों का मत है कि १५० वर्षों के विदेशी शासन से हिन्दू समाज में कुछ ऐसी बातें आ गई हैं कि वह बदलती परिस्थितियों के साथ नहीं बदल पा रहा है। उसे इस प्रकार के कानूनों से ही बदल कर मौजूदा परिस्थितियों के अनुरूप बनाया जा सकता है। विधेयक समर्थक इसका जोरदार स्वागत कर रहे हैं। उनका कहना है कि इससे अभी तक स्त्री जाति के प्रति जो अन्याय चल रहा था, वह समाप्त हो जायगा।

विधेयक के विरोधी एक और मजबूत दलील पेश कर रहे हैं। उनका कहना है कि विधेयक से लड़कियों को पिता की जायदाद में हिस्सा देकर लड़कों के प्रति अन्याय किया जा रहा है। पुत्रियां अपने पति, अपने पिता और विधवा हुई तो अपने ससुर की सम्पत्ति की भी स्वामिनी बनती है जब कि पुरुष को अपने ससुर की जायदाद पर कोई स्वामित्व नहीं मिलेगा। पुत्र पुत्रियों की अपेक्षा परिवार के प्रति अधिक उत्तरदायी होते हैं जब कि विवाह के बाद पुत्रियाँ पिता के परिवार के प्रति बिलकुल उत्तरदायी नहीं होतीं। महिला क्षेत्रों को इस बात पर एतराज है कि पुत्रियों को पूत्रों की अपेक्षा कम हिस्सा क्यों दिया जा रहा है। विधवाओं को स्वामित्व देने के प्रस्ताव का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया जा रहा है।

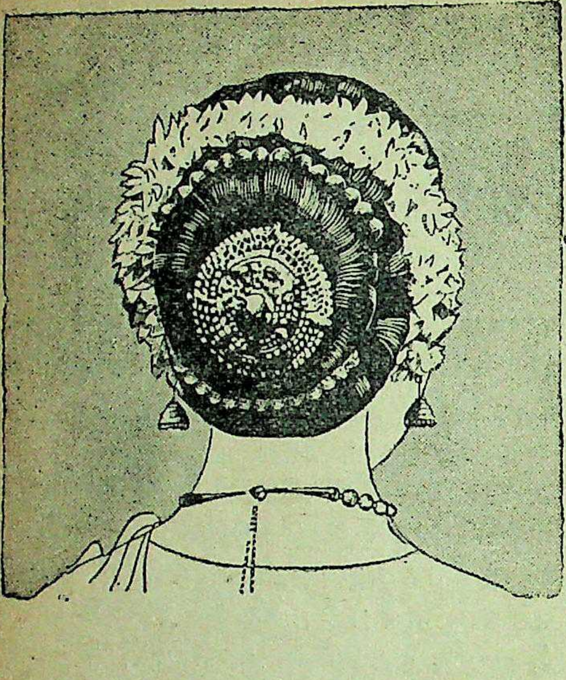

फिल्मी कलाकारों का नेहरू द्वारा स्वागत

दिल्ली फिल्म-गोष्ठी समारोह समाप्त हो गया, अन्तिम दिन, ४ मार्च को प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने अपने निवास स्थान पर सभी प्रतिनिधियों और कलाकारों का स्वागत किया। समारोह का आरम्भ हुआ विख्यात संगीत-कला-विशेषज्ञ श्री पंकज मलिक और श्री अनिल श्रुति-विश्वास के गान से! गान इतना ललित और मधुर था कि प्रधान मन्त्री खो-से गये और उन्हें पता भी नहीं चल सका कि आधे घटे का समय किस भाँति बीत गया।

पण्डों की जोड़ी

परिचय के अनन्तर प्रधान मन्त्री ने कहा कि चलिये, आपको मैं अपने पण्डे दिखाऊं। उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गये राजकपूर, नरगिस, देविका रानी, दुर्गा खोटे और सुप्रभा मुखर्जी। फोटोग्राफर भी इसी समय वहाँ पहुँच गये और उन्होंने सबों का सम्मिलित रूप से चित्र ले लिया। फिल्मी कलाकारों के जीवन की एक बहुत बड़ी मनोकामना पूरी हुई।

दिलीप की मनोकामना

दिलीप कुमार बहुत देर तक मौन रहे, पर उनका धैय अपनी सीमा पार कर गया और वे बोले—आदरणीय नेहरू जी, मैंने अपनी इच्छा दबाने की बड़ी कोशिश की, पर सफल नहीं हो सका। यदि आपको एतराज न हो तो आप मेरे साथ अपना एक चित्र दे दें। इससे मैं अपने को धन्य समझूँगा। नेहरू जी ने उनकी ओर देख कर मुस्कुरा दिया और कैमरे के सामने हसते हुये खड़े हो गये। दिलीप भी उनकी बगल में आ गये और दोनों का चित्र साथ-साथ ले लिया गया।

सुप्रभा पिंजड़े में

कलाकारों को लिये हुये नेहरू जी अपनी बाटिका के उस कोने में पहुंचे जहां पण्डों की जोड़ी पिंजड़े में खेल रही थी। नेहरू जी पिंजड़े में चले

गये और उनके साथ सुप्रभा मुखर्जी और दुर्गा खोटे भी वहाँ पहुँच गयीं। पण्डे नेहरू जी को देख कर उछलने लगे। उन्होंने अपने दस्ताने मंगाये और उन्हें खिलाने के दाने। दस्ताने पहन कर उन्होंने दाना खिलाना आरम्भ किया और पण्डे उछल-उछल कर दाने चुगने लगे। यह दृश्य कलाकारों को इतना प्रिय लगा कि वे सब कुछ भूल से गये और सभी दाने छींटने लगे।

पण्डों का परिचय

प्रधान मन्त्री ने कहा कि ये जानवर उन्हें तिब्बत से मिले हैं। ये न बन्दर हैं और न भालू। इन दोनों में से बीच की ही किसी जाति के ये जानवर हैं। इनमें एक का नाम है तशी और दूसरे का भीमसा है। ये जानवर हिमालय से ऊपरी भाग में, जहाँ काफी बर्फ गिरती है, मिलते हैं। जलवायु परिवर्तन के लिये मैं भी इन्हें गर्मी के दिनों में नैनीताल भेज दिया करता हूँ।

नरगिस को नींबू भेंट

पण्डों को दाने खिलाकर प्रधान मन्त्री पिंजड़े से बाहर आ गये। वे अपनी बाटिका की ओर बढ़े। कलाकार दल भी उनके साथ हो लिया। सामने एक नींबू का पेड़ था। नेहरू जी उसकी ओर बढ़े और बोले,—यह पेड़ चीन से लाया गया है। इसके फल काफी खट्टे होते हैं, जो अचार के काम में आते हैं। उन्होंने वृक्ष से एक नींबू तोड़ा और नरगिस के हाथ में दे दिया। बोले—चखिये तो, देखिये कितना खट्टा है!

नरगिस और नेहरू

यहाँ से आगे बढ़ने पर नेहरू जी के साथ केवल दो ही कलाकार रह गये। इनमें से एक थी नरगिस और दूसरे थे राजकपूर। इन कलाकारों के अब तक के जीवन का सम्भवतः यह उज्ज्वलतम क्षण था। प्रधान मन्त्री के साथ एकान्त में इस तरह घुल-मिल कर बातें करने का उनके जीवन का यह प्रथम अवसर था। वे अनेक विषयों पर बातें करते हुए आगे बढ़ते गये और अन्त में शामियाने के निकट जा पहुंचे। यहाँ देखा गया कि दिलीप कुमार जल्दी-जल्दी चाय निगलने की कोशिश में हैं। उनकी नजर जब नेहरू जी पर पड़ी तो वे झट से उठ खड़े हुए और बोले—आइये, चाय पीजिये। इस पर नेहरू जी मुस्कुरा पड़े और बोले—हाँ, चाय जरूर पीनी चाहिए और वे भी वहीं बैठ गये।

देविकारानी से मजाक

श्री नेहरू उस दिन प्रतिनिधियों और कलाकारों से खुलकर मजाक कर रहे थे। चाय पीने के बाद वे उठ खड़े हुए और देविका रानी के हाथ से उनका 'पर्स' ले लिया। 'पर्स' रंगीन चमड़े का था, जिसे गौर से देखते हुए प्रधान मन्त्री बोले—'पर्स' आपका बड़ा सुन्दर है। कहाँ आपको यह मिला? उसका उत्तर सीधा न देकर देविका रानी बोलीं—'लेकिन यह खाली है।' और सभी व्यक्ति ठहाके के साथ हँस पड़े। प्रधान मन्त्री भी उनके साथ हो गये।

नरगिस और गुलाब

इसके अनन्तर उन्होंने नरगिस और राजकपूर को पकड़ लिया और बोले—चलिये, मैं आपको अध्ययन कक्ष दिखाऊँ। दोनों उनके साथ उनके अध्ययन के कमरे की ओर चल पड़े।

रास्ते में प्रधान मन्त्री ने नरगिस को एक उजला गुलाब दिया। वे बोले—आपको तो रंगीन गुलाब पसन्द नहीं होगा। यह लीजिये, यह उजला गुलाब है। इसे मैं आपको दे रहा हूँ। नरगिस को प्रसन्नता के मारे रोमांच हो आया। सभी व्यक्ति प्रधान मन्त्री के साथ उनके अध्ययन कक्ष में पहुँचे। वहीं पर निर्देशक अछरेकर ने प्रधान मन्त्री का चित्र पेन्सल से बनाया और उस पर उनका हस्ताक्षर लिया। प्रधान मन्त्री ने नरगिस की ओर देख कर कहा—यहीं पर मैं अपनी रात गुजारता हूँ।

('योगी' से संकलित)

क्रास स्टिच की कढ़ाई

लेखिका,
श्रीमती सुशीला कु० चौहान

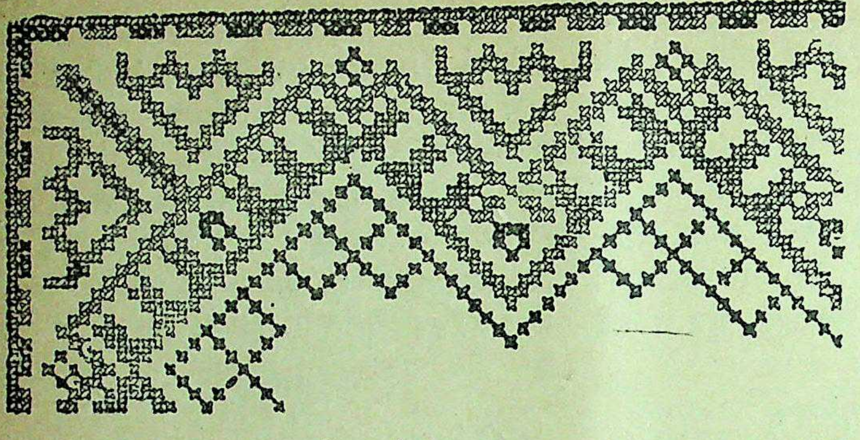

चित्र नं० १

हाथ के बने कपड़ों पर संसार में जिस पद्धति से सर्वोत्तम कढ़ाई की जाती है उसे क्रास स्टिच कहते हैं। कोई कोई कढ़ाइयाँ एक ही रङ्ग में की जाती हैं; परन्तु कोई कोई रङ्ग और नमूना दोनों में अद्भुत होती हैं। क्रास स्टिच की इस प्रकार की कढ़ाई जो यहाँ दी जा रही है—रोमानिया देश की है (देखिये चित्र नं० १)। यह कढ़ाई वहाँ के गाँव में बहुत प्रचलित है।

इस कढ़ाई का सौन्दर्य प्रत्येक स्टिच के समान और सही नाप पर निर्भर है। इसमें सफलता तभी मिलती है जब प्रत्येक स्टिच वस्त्र के सूतों को गिन कर डालें। गणना से जो सुन्दर परिणाम निकलता है वह ट्रांसफर के द्वारा काढ़ने से कदापि सम्भव नहीं है क्योंकि ट्रांसफर में इतना सही नाप सम्भव नहीं है। ऐसे वस्त्रों पर जैसे क्रेप या साटन यह कढ़ाई ठीक नहीं हो सकती क्योंकि इन वस्त्रों में इनके सूतों को गिनते हुए काढ़ना सम्भव नहीं है। सच यह है कि क्रास स्टिच जिसका जन्म किसानों के घरों में हुआ था; ऐसे महीन वस्त्रों के लिये कदापि नहीं हो सकती।

वस्त्रों का चुनाव

इस कढ़ाई के लिये ऐसा वस्त्र चुनना चाहिए जिसमें ताना-बाना दोनों का सूत समान और बराबर हो और आसानी से देखे और गिने जा सकते हैं। वायल, लिनेन, महीन खादी आदि वस्त्र चुने जा सकते हैं। चारखाने पर भी यह कढ़ाई की जा सकती है। उसमें बजाय तागों की गिनती के चारखाने के वर्गों को इकाई मान कर चला जा सकता है। इस कढ़ाई के लिये मरसराईज्ड, सिल्क ऊन या लिनेन कोई भी सूत काम में लाया जा सकता है। सिर्फ यह ध्यान रखने की बात है कि जिस सूत से काढ़ा जाय और जिस वस्त्र पर काढ़ा जाये दोनों के बीच बैलेन्स बना रहे अर्थात मोटे वस्त्र पर मोटे और महीन पर महीन सूत से कढ़ाई की जानी चाहिए यदि ऊन से कढ़ाई की जाये तो स्टिचों को खींचकर इतना न कसना चाहिए जितना सूत की कढ़ाई में कसा जाता है।

विधि

प्रत्येक क्रास को एक भिन्न इकाई मानना चाहिए और उसे वर्ग के रूप में लेना चाहिए। यदि वस्त्र का ताना-बाना एक समान रहेगा तो इसमें सरलता होगी। ऐसे वर्गों की प्रत्येक इकाई में जितने सूत ताने की ओर गिने जायें उतने बाने की ओर भी, तीन सूतों की इकाई दोनों ओर सुन्दर होती है परन्तु यदि आप चाहें तो चार-पाँच या अधिक भी सूतों की इकाई मान कर चल सकती हैं। कुछ खास कला पूर्ण कढ़ाइयों में तो एक ही सूत की इकाई मान कर चलते हैं। स्टिच सुई को वस्त्र में एक तरफ चुभो कर दूसरी तरफ निकाल कर बनाई जाती है।

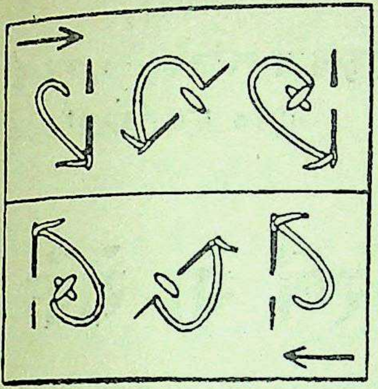

चित्र नं० २

(देखिये चित्र नं० २) तीन सूत चौड़ाई की तरफ गिनिये और तब तीन सूत नीचे की तरफ गिनिये और तब सुई को ऊपर की तरफ चुभोइये जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। यह आधी स्टिच बन गई। बाईं तरफ तीन सूत गिनने से क्रास पूरा होगा। सुई दूसरी स्टिच के लिये ठीक स्थान पर निकालिये जो कि इस कढ़ाई में उसके पास ही है यदि प्रत्येक क्रास के बीच में कोई स्थान आवश्यक हो तब दो या तीन धागे छोड़ कर सुई निकालिये। यही बात किनारे की रेखा बनाने में लागू होती है। जैसा कि (चित्र नं० १) में दिखाया गया है।

विभिन्न आकृतियां बनाने में प्रायः आवश्यक होता है कि कुछ स्टिचें बायें से दाहिने एक कतार में इस तरह बनाई जाएँ और फिर लाईन के ऊपर या नीचे जैसा आवश्यक हो दाहिने से बाएँ को बनाई जायें। दाहिने से बाएँ काढ़ने में क्रास किस तरह बनाया है इसका नमूना (चित्र नं० २) में नीचे दिखलाया गया है। इन दोनों को सावधानी के साथ समझ लीजिये। इससे एक बात प्रगट होगी कि आप चाहें जिस तरफ काढ़ें, ऊपर वाला सूत एक ही दिशा में होना चाहिए जैसा कि लिखावट में बाईं तरफ से दाहिनी तरफ को लिखा जाता है। यदि कोई स्टिच गलत दिशा में दूसरी को पार करके क्रास बनावेगी तो तागा भिन्न प्रकार से दिखता है और भूल के समान प्रतीत होता है।

बड़े नमूने या किनारों की लम्बी लाइने क्रास स्टिचों से बनाई जा सकती हैं जैसा कि चित्र नम्बर ३ में दिखलाया गया है। इसमें क्रास का पूर्वार्ध सुई की पहली यात्रा में बनता है और उत्तरार्ध सुई की वापसी यात्रा में निर्मित होता है। बाएँ से दाहिने की तरफ या दाहिने से बाएँ की ओर काढ़ने की दोनों विधियाँ इस चित्र में दिखाई गई हैं। आप देखेंगी की ऊपर वाला धागा प्रत्येक दशा में बाईं ओर तिरछाता है जैसा कि बताया जा चुका है।

डिजाइन

क्रास स्टिच में वस्त्र पर कोई डिजाइन बनाने का प्रयत्न करने से पहले डिजाइन को सावधानी के साथ समझ लीजिए। जैसा कि डिजाइन न० १ है। और तब सबसे पहले मुख्य पंक्ति को काढ़िए। इस डिजाइन में मुख्य पंक्ति चौड़ी टेढ़ी मेढ़ी जाने वाली लाइन है। अन्दर वाली इकहरी काली पंक्ति, मूल पंक्ति है। इसमें एक साथ चौदह क्रास तिरछी पंक्ति में कढ़े हुए हैं। यह चौदह क्रास पहले ऊपर को बाएँ ओर चलते हैं और फिर चौदह क्रास नीचे को चलते हैं इस रेखा को पहले वस्त्र की चौड़ाई की तरफ काढ़ लेना चाहिये। यदि कोना बनाना आवश्यक हो तो जैसा कि दिखाया गया है सोलह क्रास स्टिचें बनाते हुये चौदह के लिये फिर घूमिए। इसके एक बार पूर्ण हो जाने पर इस आधार पर शेष नमूने को बनाना

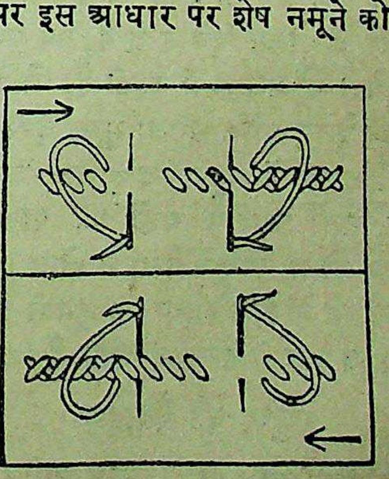

चित्र नं० ३

[शेष पृष्ठ २२४ पर देखिये]

लेखिका,
शकुन्तला परांजपे बी० एस-सी०
एम० ए० 'कैंटब'

झूला दूर-दूर रखें या रोकें

लेखिका महोदया पूना के म्युनिस्पल कारपोरेशन की ओर से महिलाओं को कुटुम्ब-नियोजन के सम्बन्ध में सलाहें देती हैं। इस कार्य के लिये उन्होंने वहाँ कई केन्द्र भी खुलवाये हैं। हाल ही में आपने इस सम्बन्ध में मराठी में एक पुस्तक भी लिखी है, जिसका हिन्दी अनुवाद (झूला दूर-दूर रखें या रोकें—पृष्ठ संख्या ८६, मूल्य ।।।), पता है, श्रीमती शकुन्तला परांजपे, परांजपे रोड पूना नं० ४) भी उपर्युक्त शीर्षक से प्रकाशित किया है। प्रस्तुत लेख उसी पुस्तक से संकलित किया गया है। जिन स्त्रियों को सन्तान नहीं होती पर वे चाहती हैं कि उन्हें सन्तान हो वे; और जिन्हें अति सन्तान होती हैं पर वे चाहती हैं कि उन्हें सन्तान न हो या देर-देर से हो उन सबको ये मुफ्त सलाहें देने को तैयार हैं। दीदी की पाठिकाएँ इन्हें निःसंकोच लिख सकती हैं।

झूला जब पहिली-पहल घर में झूलने लगता है तब वह अति आनन्द का समय होता है।

छटी के दिन जब की बच्चे को पहिली बार झूले में डाल कर आँदोलन दिये जाते हैं, तब घर की वृद्ध स्त्रियाँ बहूबेटी को मजाक में कहती हैं, 'बेटी, आंदोलन दूर-दूर देना, ताकि अगला झूला देरी से झूलेगा।' क्योंकि घर में झूला यदि जल्द-जल्द झूलने लग जाय, तला ऊपर के बच्चों का पालन-पोषण जिस प्रकार होना चाहिये वैसा न होगा। और माँ का स्वास्थ्य भी न ठीक रहेगा। अनुभवी स्त्रियाँ इस बात को बहुत अच्छी तरह समझती हैं।

मनुष्य की पैदाइश

मानव जाती बढ़ रही है, किन्तु जमीन के टुकड़े उतने ही उतने हैं। दो मानव के दस बन जाते हैं, किन्तु दो एकड़ जमीन रबर की तरह दस एकड़ों में नहीं तानी जाती। जिस दो एकड़ जमीन के पहिले दो ही मालिक थे उसके यदि दस मालिक हो गये तो हर एक को एक एकड़ का पाँचवा हिस्सा मिलेगा। आज-कल हिन्दुस्तान की आबादी हर साल ५० लाख बढ़ रही है। यदि आज पेट भर खाना मिलना मुश्किल हो गया है तो कोई आश्चर्य करने की बात नहीं।

उपवास करो, 'सिगाड़े, शकरकन्द आदि खाओ' 'अधिक पैदा करो'; 'बनमहोत्सव करो' आदि नारे सरकार की ओर से बराबर लगाये जाते हैं। किन्तु 'सन्तति नियमन करो' यह कहने का साहस सरकार को कभी नहीं होता। यह कहा जाता है कि उचित खाद डाल कर और बढ़िया बीज बोकर आधुनिक ढंग से खेती करने से अनाज की पैदाइश बढ़ती है और वह सच भी है। किन्तु जिस परिमाण

से अनाज की उत्पत्ति बढ़ेगी उससे कई गुना हमारी जनसंख्या बढ़ती रहेगी। उसे रोकने का जब-तक उपाय नहीं होता तब-तक आमदनी और खर्च का हिसाब समतोल कैसे हो सकता है?

गृह की शोभा

पाश्चात्य लोगों के तन्दुरुस्त और गोलमटोल बच्चे देख कर हम लोग मन ही मन में कुढ़ते हैं। वे लोग धनिक और हम हमेशा धनहीन क्यों यह विचार मन में आता है और हमारे मन में जलन पैदा होती है। किन्तु उनके कुटुम्बों की और अपने कुटुम्बों की यदि तुलना की जाय तो सत्य स्थिति का पता तुरन्त लग जायगा। उनके परिवार हमेशा छोटे रहते हैं और हमारे विस्तारित होते रहते हैं।

बालकों के बिना घर शोभा नहीं देता यह सच है, किन्तु वह बच्चे जब मनोहर और आरोग्यशाली हो तो। नहीं तो वह कुटुम्ब रूपहीन दिखता है। यदि मनोहर और आरोग्यशाली बच्चे चाहिये तो हर एक को अपनी परिस्थिति और कमाई देख कर जितने बच्चों का वह अच्छी तरह से पालन कर सकें उतने ही बच्चे उचित समय पर दुनियाँ में लाना चाहिये।

बच्चों का राशनिंग

मैं एक देहात में काम करने गई थी। तब मैंने वहाँ की औरतों को कुछ मेरी बात सुनाई। उस पर एक औरत ने भी अपने विचार संक्षित में प्रगट किये, वह बोली, सच है तुम्हारा कहा बहिन जी। सब चीज़ का राशनिंग हो गया, अनाज का राशनिंग हुआ, कपड़े का हुआ, मिट्टी के तेल का हुआ, चीनी का हुआ तो अब बच्चों का ही राशनिंग सरकार क्यों नहीं करतीं? 'राशनिंग' यह परिभाषा का शब्द प्रयोग करके उस औरत ने मेरे तत्व का सार सन्क्षेप में और बड़ी चतुराई के साथ समझाया।

दूसरे एक गाँव में जब मैं गई तब एक सास मिली। उसके बहू का तीन महीने का पेट गिर गया था! और इसलिये दो तीन वर्ष गर्भ धारण न होने के लिये सास ने उपाय पूछा। उसकी वह माँग मुझे कुछ अजीब मालूम हुई। क्योंकि वृद्ध स्त्रियां पोते का मुँह देखने के लिये बड़ी अधीर रहती है यह मैं जानती थी। और मेरे विचार जब मैंने प्रगट किये तब वह सास कहने लगी।' 'पोते का मुँह देखने को कौन नहीं चाहता? किन्तु बहू तो अभी बच्ची है! इसकी पूरी बाढ़ होनी चाहिये या नहीं? फिर होते रहें बच्चे। पौदा जब छोटा रहता है तब हम उसे फल नहीं लगने देते। क्या पेड़ बड़ा होने तक उसका बवर हम काटते नहीं?' इसका कहा हुआ यह तत्व सभी के प्रायः सामान्य श्रेणी के लोगों ने ध्यान में रखने योग्य है।

घर में हमेशा झूला झुलता ही रहेगा तो वह किसी को भी हितकर न होगा। उससे सबको हानि ही पहुँचेगी। लगातार बच्चे होने से माँ-बाप किसी भी बच्चे को योग्य रीति से पाल नहीं सकते। अपने देश में पैदाइश की आधे बच्चे पाँच वर्ष की आयु होने के पहिले ही मर जाते हैं। इसलिये यह बच्चे यदि पैदा न हुए होते तो अच्छा होता ऐसा विचार हर एक माँ के मन में आना स्वाभाविक होगा।

तीन साल हुए मैं अपने बुवा के घर गयी थी। तब वहाँ की कहारिन के बहुत-से बच्चे थे। इस ओर मेरा ध्यान गया। मेरा फुफेरा भाई कहारिन को उपदेश करने के लिये मुझे आग्रह से कह रहा था। मैं वहाँ चार दिन ठहरने वाली थी। इसलिये मैंने उसको समझाने की जल्दी नहीं की। प्रथम मैंने उससे केवल इधर-उधर की थोड़ी बातें कीं। गाँव के रीति के अनुसार कुँवे पर नहाने का मेरा समय और उसका कपड़े धोने का समय एक ही होता था, इसलिये गप्पें आसानी से होती थीं।

मेरे वापसी आने के एक रोज पहिले उसने ही बात छेड़ी—

'बहन जी, आपको एक ही बच्चा है?'

'हाँ, पर दस बच्चों के बराबर है या नहीं?'

'गये साल आयी थी, वह आपकी बहन है है?,

'हाँ, वह मेरी चचेरी बहन होती है।'

'क्या उसकी भी एक ही बच्ची है?'

'हाँ, एक ही है।'

'अभी उसके बाद दूसरा नहीं हुआ?'

'अभी क्या जल्दी पड़ी है दूसरा होने की?'

'आप सबको इतने कम बच्चे कैसे होते हैं?'

'हम इसका मन्त्र जो जानते हैं।' यह सुनकर पड़ोस में कोई नहीं, यह देख कर वह औरत मुझे चुपके से बोली—'आप वापस जाने के पहले मुझे भी अपना मन्त्र पढ़ाना!' मैं इसी की राह देख रही थी। मैंने उसे यह मन्त्र तो बतलाया ही और साथ ही साथ यह मन्त्र और दो औरतों को बतला देने से इसका असर जल्दी हो जाता है। यह यों ही कह कर उसके गले प्रचार का काम सौंप दिया।

क्या करना चाहिये

प्लानिंग कमीशन ने कुटुम्ब नियोजन के प्रचार की शिफ़ारिस तो की है। फिर भी अभी सरकार इस काम की कोई जिम्मेवारी अपने पर नहीं लेती। बम्बई, पूना, मद्रास आदि म्युनिसिपल कार्पोरेशनों ने कुटुम्ब नियोजन के केन्द्र स्थापित किये हैं और वहाँ से सैकड़ों लोग फायदा उठाते हैं।

पूने के म्युनिसिपल केन्द्र मैंने ही स्थापित किये हैं और इनके काम भी मैं ही देखती हूँ। इसलिये केन्द्रों में जो काम होता है वह बतलाने से औरों को मार्गदर्शन होगा इस विचार से केन्द्रों का वृत्तान्त मैं दे रही हूँ।

स्त्रियों के दवाखाने में ही केन्द्र स्थापित होने से सब प्रकार की सुविधाएँ मिल गई। जो औरतें बच्चा न होने के कारण या बच्चे जिन्दा नहीं रहते इस कारण सलाह मांगने आती हैं उन्हें भी तुरन्त सलाह और औषधि देने का बन्दोबस्त इस दवाखाने में कर सकते हैं।

प्रसूति के लिये इस दवाखाने में बहुत तादात से औरतें आती हैं और उनमें से सैकड़ा में नब्बे औरतों के आदमियों की महीने की कमाई १००) से कम ही रहती है! हर एक माँ की परची (केस पेपर) देख कर उसके परिवार और परिस्थिती का तुरन्त पता लग जाता है और उसे व्यक्तिगत भूला दूर रखने का शाब्दिक उपदेश दे सकते हैं।

जिनके दो बच्चों से अधिक बच्चे (जिन्दा) हैं उनका भूला कितने वर्ष के बाद आता है यह देख कर हम उन्हें 'क्या वे अपना भूला दूर रखना चाहती है।' यह प्रश्न प्रथम पूछते हैं। अधिकतर जवाब हाँ ही होता है। शुरू में यह प्रश्न कुछ औरतों को अप्रिय लगता था, ऐसी औरतों को यह प्रश्न हमने कभी नहीं पूछा। पर उसी कमरे में दूसरे किसी बच्चे वाली माँ को जब हम भूला दूर रखने की सलाह देते थे, तब यह औरतें ध्यान पूर्वक हमारी बातें सुनती थीं, यह हम भली-भांति जानते थे। इसलिये इनके प्रति ध्यान न देकर, सलाह लेने वाली को उपदेश इस प्रकार करते थे कि यह औरतें भी उसे सुन सकें। इस तरह सर्व साधारण सलाह देकर कुछ महीनों के बाद हम इन औरतों की परीक्षा करने के लिये और प्रत्यक्ष सलाह देने के लिये बुलाते थे। इस प्रकार शाब्दिक सलाह लेने के लिये तो अनेक स्त्रियां तैयार होती हैं किन्तु प्रत्यक्ष में परीक्षा करवा के और शास्त्र के अनुसार उपाय योजना कर लेने के लिये बहुत ही कम औरतें साहस करती हैं।

क्या न करें

माहवारी बन्द हो जाती है और कुछ गड़बड़ का मामला है यह डर लगने लगता है तब तो यही औरतें दौड़ती भागती हमारे पास आती हैं। और महावारी शुरू होने के लिये दवा मांगती हैं। यह दवा उन्हें हमारे पास हरगिज नहीं मिलता किन्तु उनकी परची देख कर यदि उनके काफी बच्चे हैं इसका हमें पत लग गया तो होने वाले प्रसूति समय शस्त्रक्रिया करके भूला हमेशा के लिये बन्द करने की हम उन्हें सलाह देते हैं।

दुर्भाग्य से आज कल सर्वत्र प्रथम सावधानी लेने का आलस्य करके महीना बन्द होने पर, वह

शुरू होने के लिये औषधि लेने की प्रथा जोरों में चली है। यह दवाइयाँ जालिम होती हैं, जहरीली होती हैं और परिणामकारक नहीं होतीं। यह लेना और देना दोनों ही कायदे से गुना है। इस तरह कीऔषधियाँ लेकर आजकल तरुण लोग अपना और अपने बच्चों का स्वस्थ्य बिगाड़ते हैं। "गर्भवती स्त्री को न लेना चाहिये" इस प्रकार स्पष्ट रूप में इश्तेहार छपवा कर बाजार में ये औषधियाँ खूब बिक रही हैं। जिनको दस्तखत भी करना नहीं आता ऐसी औरतें भी दवाइयों की दुकान में जाकर माहवारी शुरू होने की दवा माँगती हैं और वह उन्हें मिल जाती है, यह मुझे इन औरतों से ही मालूम हुआ है। इस प्रकार की औषधि डाक्टरी दस्एखत के बिना बाजार में मिलना कायदे से बन्द करना चाहिये। इससे पता चलता है कि अधिक बच्चे नहीं होने चाहिए यह लोग जानने तो लगे हैं। किन्तु उसके लिये पहले से सावधानी रखने का आलस होता है। अब हम प्रसूति के बाद जब औरतों की परीक्षा करने के लिये केन्द्र में बुलाते हैं तब उन्हें साफ-साफ कह देते हैं कि माहवारी बन्द होने के पहले ही आना, बन्द होने पर आने से यहाँ दवा नहीं मिलेगी।

ऊपरी निर्दिष्ट अनुचित मार्गों के साथ ही साथ और भी कुछ हानिकारक मार्ग गर्भधारणा टालने के लिये बहुतेरे लोग अवलम्ब करते हैं, उनका भी हम निषेध करते हैं।

झूला दूर करना

विवाह के पश्चात् पहले दो वर्ष तक गर्भधारणा न होना अच्छा है। इसका मैंने ऊपर निर्देशन किया है।

गर्भधारणा टालने के लिये जो उचित उपाय खोजे जाते हैं वह प्राय: औरतों को ही उपयोग में लाने होते हैं। साथ में पुरुषों की भी सहायता हो तो अच्छा ही है। स्त्री-बीज और पुरुष-बीज का संयोग न होने से गर्भधारणा टलती है। उसके लिये गर्भाशय की थैली का मुँह ढाक देने से काम हो जाता है। इस उपाय में औरतों को पहनने के लिये रबड़ का ढकना या कैप्स होती है वैसे ही रबड़ के अथवा और किस्म के स्पंज भी होते हैं। ढकना या स्पंज से गर्भाशय का मुँह बन्द हो जाता है। उसी के साथ-साथ शुक्रजन्तुनाशक कोई जेली अथवा मलहम उपयोग में लाया जाय तो दोहरा प्रतिबन्ध होकर उपाय अधिक सफल होता है। किन्तु कोई भी साधन उपयोग में लाने के लिये तज्ञ लोगों से परीक्षा करवा कर योग्य माप के साधन लेने चाहिये और उसे स्वयम् ही योग्य प्रकार से पहिनना सीखना चाहिए। नहीं तो उपाय बेकार होने का डर तो रहता ही है और उपाय का ही साधन गलत पहिनने से शरीर के कोमल हिस्से पर दबाव आकर और अनेक व्याधियां शुरू होने का अन्देशा रहता है। केन्द्र में आने वाली अन्दाज से सैकड़ा में ८० औरतों को हम तेल कपड़े का साधा-साधा उपाय उपयोग में लाना सिखलाते हैं।

कपड़े से गर्भाशय का मुँह ढक जाता है और तेल में चन्दन के तेल का अंश होने से शुक्रजन्तु का नाश हो जाता है और उपयोग में लाने के बाद यह कपड़ा फेंक दिया जाता है। इस प्रकार के प्रसाधनों को उपयोग के बाद सम्भाल कर रखने की आवश्यकता नहीं होती। अन्त में कौन-सा साधन किसे अधिक फायदेमन्द है यह परीक्षा करने के बाद ही मालूम होता है। साधनों को पहिनना सिखलाने के तीन-चार दिन बाद हम इन औरतों को फिर से परीक्षा करने के लिये और उनकी और हमारी भी तसल्ली करने के लिये वापस बुलाते हैं।

झूला बन्द करना

यह सब कुछ करने के बाद भी औरतें साधनों का उपयोग करने का कभी-कभी आलस्य करतीं हैं और फिर जो होना होता है वहीं ही हो जाता है। साधनों को ले जाने वाले हर एक स्त्री का नाम और पता हमारे रजिस्टर में लिखा रहता है और वह जब कभी वापस आती है उसकी हाजरी उसके नाम के आगे लिखी जाती है। जहाँ एक ही कमरे में दस-

दस, बारह-बारह लोगों को रहना पड़ता है वहाँ इच्छा होते हुए भी प्रसाधनों का उपयोग करना कठिन हो जाता है और गर्भ-धारणा हो जाती है। पहले बहुत से बच्चे हों तो ऐसी स्त्रियों को हम आने वाले प्रसूति समय शस्त्रक्रिया कर लेने की सलाह देते हैं। प्रसूत के बाद पहिले हफ्ते में स्त्री पर शस्त्रक्रिया करना सहज होता है। क्योंकि उस समय अंडाशय से गर्भाशय में आने वाली नलियाँ फूल कर ऊपर उठी हुई रहती हैं और उन्हें काट लेने के लिये बहुत गहरी जखम नहीं करनी पड़ती और एक पंथ दो काज होकर इस शस्त्रक्रिया के लिये अन्य समय बिस्तर में पड़े रहने की आवश्यकता नहीं होती और चोट का घाव भी शीघ्र भर आता है। के० ई० एम० में शस्त्रक्रिया कर लेने को अधिकाधिक स्त्रियाँ सम्पति दे रही हैं और रोज-रोज प्रसाधनों के उपयोग करने के झंझट से अनेक स्त्रियाँ यह सर्वदा का एक ही उपाय अधिक पसन्द करती है। इस शस्त्रक्रिया के लिये बाहर गाँव से भी औरतें आती हैं और महीने में कम से कम २०–२५ स्त्रियों पर शस्त्रक्रिया की जाती है।

के० ई० एम० अस्पताल में गर्भवती स्त्रियां परीक्षा कराने के लिये एक निश्चित दिन आती हैं। उस समय हम उनकी पर्चियां देख लेते हैं और उन्हें शस्त्रक्रिया के सम्बन्ध में समझाते हैं। यह औरतें भी गर्भावस्था और प्रसूति इस चक्कर से थकी हुई होती है और वे इस चक्कर से हमेशा के लिये छुटकारा चाहती हैं। किन्तु शस्त्रक्रिया या आप्रेशन इन दोना शब्दों से लोग बहुत डरते हैं। इस भय से परावृत्त करने में हमारा बहुत समय खर्च होता है। शस्त्रक्रिया के सम्बन्ध में लोगों के मन में विपरीत कल्पनाएँ बसी हैं। स्त्री पर शस्त्रक्रिया करने के माने गर्भाशय निकालना यही आम तौर पर लोगों की समझ होती है। उसे हटाने के लिये तस्वीर दिखा कर क्या किया जाता है यह हम उन्हें समझाते हैं। हमारे उपदेश से नहीं किन्तु जिन औरतों ने शस्त्रक्रिया कर ली है उन्हें देख कर दूसरों को सचमुच साहस प्राप्त होता है और अनेक स्त्रियां शस्त्रक्रिया करवाने को तैयार होती हैं। शस्त्रक्रिया करने के लिये पति और पत्नी दोनों के लिखे हुए अनुमोदन की आवश्यकता होती है। हम इन औरतों के पतियों को भी दवाखाने में बुलाकर उनके गलत समझ को दूर करते हैं और गर्भावस्था में ही यह सब प्रचार होने के कारण विचार करने के लिये उनको पूरा समय मिलता है। यदि दोनों की इच्छा हो तो शस्त्रक्रिया करने की बातचीत शुरू होती है। इसके बाद उस स्त्री की सब प्रकार परीक्षा करके उसे औषधोपचार किये जाते हैं। क्योंकि शस्त्रक्रिया सहने योग्य अगर औरत का स्वास्थ्य हो तो ही उसे टेबल पर लिया जाता है। यह अनुभव है कि गर्भावस्था में अनेक स्त्रियों को रक्तक्षय की व्याधि होती है और इस व्याधि के होते हुए शस्त्रक्रिया नहीं कर सकते। प्रसूति के समय शस्त्रक्रिया करना आसान होता है यह बात सच है किन्तु इसके माने यह नहीं कि और किसी समय यह शस्त्रक्रिया हो नहीं सकती। फरक इतना ही है कि अस्पताल में कुछ अधिक दिन रहना पड़ता है। अनेक बार सब प्रकार की औषधियां दे कर भी जिस स्त्री के स्वास्थ्य में जितना होना चाहिए उतना सुधार नहीं होता ऐसी औरत के मामले में हम उसके पति को अपनी शस्त्रक्रिया कर लेने की सलाह देते हैं।

विनोदी अनुभव

पन्द्रह साल पहले जब कि मैंने काम शुरू किया तब मेरे सेंटर का इश्तहार लेने के लिये सिवाय 'ज्ञानप्रकाश' के कोई दूसरा अखबार तैयार न हुआ जब कभी सभा में बोलने को बुलाया जाता था तो सभा चालक बिनती करते थे कि 'सन्तति-नियमन' यह विषय पर मत बोलिये। समाज सुधार, परदेश के अनुभव आदि विषयों पर बोलते हुए आपने सन्तति नियमन पर थोड़ा कुछ सुनाया तो हरज नहीं।' इस तरह सन्तति-नियमन इस विषय को लोग डरते थे।

मेरे जान पहचान की एक लड़की नर्स का काम सीख कर एक गाँव में नौकरी पर लगी थी। जाते ही उसे एक जचकी के केस पर बुलावा आया। वह खुश थी कि आते ही मैंने एक बच्चा पैदा कराया। किन्तु वह बच्चा मरा पैदा हुआ। नर्स बाई ने सोचा—'बच्चा मर गया यह उसके माँ को कैसे बतलाऊ? आज पहला केस किया, वह भी बच्चा मरा निकला।' अब क्या करना चाहिए इस विचार से नर्स बाई व्याकुल हुईं, किन्तु धीरे से उसने जच्चा को बतलाया—'तुम्हारा बच्चा मरा पैदा हुआ।' उस पर वह थकी हुई औरत बोली—'बहुत अच्छा हुआ, ईश्वर का देना ईश्वर ले गया। घर में छै बच्चे भूखें हैं, जो दूध आयेगा वह पहले साल भर के बच्चे को पिलाऊंगी।'

नौ मास पेट में रख कर जचकी के कष्ट उठा कर बच्चा मरे और उस मौत से माँ को दुःख न हो किन्तु शांति का निश्वास ले इससे और दुर्दैव की और कौन-सी बात है? यदि ऐसे माता को कोई भूला बन्द करने का तरीका पहले से बतला दे तो वह बड़ी ऐसानमन्द होगी। ऐसी कौन माता है जो अपना बच्चा मरा हुआ चाहती है? किन्तु भूखा बच्चा गरीब माता से नहीं देखा जाता और ऐसी कई गरीब माता सारे हिन्दुस्तान देश में होंगी। उनकी मदद करके, उनके बच्चों की पैदाइश बन्द करना अपने सरकार का कर्तव्य है या नहीं?

एक बार एक औरत से मैं उसके ग्यारवहें प्रसूति समय बात-चीत कर रही थी तब उसके आँखों में आंसू आगये और कहने लगी, 'बहिन जी, आपका कहना बहुत सच है। सुवर की तरह बच्चे पैदा कर के क्या फायदा? एक के कपड़ा है तो एक के नहीं, सवेरे रोटी मिली तो शाम को नहीं। यह बच्चा पेट में आने के पहले तो मैं पुलिस थाने पर भाग कर जा बैठी थी।' मैं उसका मतलब नहीं समझी, पर वह आगे बोली 'मैंने अपने आदमी से कहा, कहीं भी तुम जाओ, दूसरी शादी करो, नहीं तो और कुछ भी करो, पर मेरे पास मत आना!' 'क्या इसलिये आप पुलिस चौकी पर जा बैठी थी?' 'और नहीं तो क्या? पर वहां भी पुलिस ने मुझे रहने नहीं दिया। कहने लगा यह तुम्हारा ब्याह का आदमी है, इसलिये हम तुम्हें उससे दूर नहीं रख सकते। बस इसके बाद यह बच्चा पेट में आ गया।' मैंने विस्मत हो कर कहा 'बहिन जी और औरतें रोती हैं उनके आदमी बाहर के औरतों के पास जाते हैं इस लिये और आप रोती हैं आपका आदमी नहीं जाता इस लिये!'

और एक समय मैं प्रसूत गृह में ऐसे ही एक औरत के चारपाई के पास बैठकर बातें कर रही थी, इतने में उसकी पड़ोसिन ने मुझ से बच्चे बन्द करने का उपाय जानना चाहा। यह उसका पहला बच्चा था। तब मैंने स्वाभाविक ही उसे कहा कि 'बहिन जी, आपके और दो बच्चे होने के बाद मैं आपको सयानी कर दूँगी। अभी नहीं।' 'बीबीजी, हमें और बच्चे हैं तो। मेरे सौत के चार हैं, तो क्या मेरे नहीं हैं? हमेशा मेरे ही तो पीछे-पीछे रहते हैं, तो देखिये दो यहां बैठे हैं। मुझे बच्चा नहीं होता था इसलिये मैंने ही आदमी का दूसरा ब्याह कर दिया। अब मुझे भी एक हो गया और नहीं चाहिए।' एक पत्नीव्रत प्रचारक ऐसी औरत को देखकर क्या कहेंगे?

एक औरत ने तो मुझे उस विषय के प्रचार के लिये एक नया मार्ग दिखाया। 'माहवारी बन्द हो गई है, कुछ भी करो मुझे छुड़वा दो' यह हमेशा का मन्त्र कहती हुई वह केन्द्र मे आई। ऐसी औरतों पर मुझे गुस्सा आता है पर इसने मेरे गुस्से की पर्वाह नहीं करी 'दुनियाँ को मुँह दिखाने क योग्य भी नहीं रही हूँ। इस समय, हमे ना मत कहो बीबी जी।' बड़ी दीन होकर कहने लगी। मेरा भी कुतुहल जाग उठा और कितने बच्चे हुये हैं यह सवाल मैंने पूँछा। तो पता चला कि उसके सात बच्चे हुये। उसमें से केवल एक लड़का और एक लड़की ही जिन्दा हैं! विस्मत होकर मैंने कहा, 'फिर तीसरा बच्चा आप क्यों नहीं चाहती? इस बात पर तो आपको आनन्द होना चाहिये।'

बीबी जी कैसे बताऊँ आपको। गर्भवती बेटी घर में प्रसूती के लिये आई है। बहू सयानी हो गई है, इस समय यदि मैं पेट बच्चा लिये हुये फिरने लगी तो मेरे बच्चे ही मेरे मुह पर थूकेंगे।'

उसके यह विचार सुन कर मुझे बहुत आनन्द और विस्मय हुआ। उस बेचारी को तो मैं मदद कर न सकी, मेरे घर के कुछ उदाहरण बताकर कहा कि उसको और उसके बहू-बेटी का यदि साथ बच्चे हुये तो उसमें कोई लज्जा की बात नहीं, मामा भाँजा दोनों साथ ही साथ बड़े होंगे। इस प्रकार उसे समझाने का प्रयत्न किया। पर उस दिन के पश्चात यही उदाहरण मैं सब औरतों के सामने रखने लगी। यदि किसी का पहला बच्चा उम्र में आया हुआ दिखाई दिया तो तुरन्त हो 'देखो बहिन जी अब झूला बन्द करो, नहीं तो आपके ही बच्चे आपकी हसी उड़ाने लगेंगे, ऐसे कह कर मैं डराती हूँ। मेरे और उपदेशों से यह उपदेश औरतें जल्द समझ जाती हैं। और बुढ़ापे में बच्चे होना नहीं चाहिये इसलिये मेरी हमेशा की सूचना से यह भिन्न नहीं। किन्तु सुलझाने की उस औरत की रीति मेरे रीति से कितनी सुन्दर है और परिणाम पूर्वक है!

पूने में यह अनुभव है कि संतति नियमनों के साधनों से आपरेशन कराने को ज्यादा स्त्रियाँ राजी होती हैं, और इस कारण शस्त्रक्रिया सुलभ करने पर ज्यादा पैसा खर्च होना ठीक होगा।

प्रजोत्पादन-नियमों के सबक स्कूल या कालेज में नहीं पढ़ाये जायेंगे। किन्तु हास्पिटल, आरोग्य केन्द्र, दुग्धकेन्द्र, फिरती के अस्पताल, वेल फेयर सेंटर, ऐसे जगहों पर और सब के घर-घर इन संतति नियमनों के उपायों का प्रचार करना अधिक सफलता देगा। संसार में प्रत्यक्ष सीखे सबक ज्यादा याद होते हैं।

घरेलू उपचार

बिच्छू काटने की दवा—यदि किसी के बिच्छू काट ले तो निर्मली का बीज तुरन्त ही पंसारी के यहाँ से मँगा ले और एक बीज पत्थर पर घिसे। घिसते-घिसते जब बीज आधा रह जाय तो उसी स्थान पर जहाँ बिच्छू ने डङ्क मारा है चिपका दे। जब तक बिच्छू का जहर (विष) न उतरेगा वह बीज चिपका रहेगा। फिर जहर उतरने पर वह तुरन्त छूटकर अपने आप गिर जायगा। यह बड़ी अचूक दवा है। यह बीज प्रत्येक घरों में बहिनों को मँगाकर अवश्य रख लेना चाहिए।

पाइरिया का मंजन—सरसइया का बीजा पाँच तोला, काली मिर्च दो तोला, वायविडग डेढ़ तोला, सोंठ डेढ़ तोला, भूनी फिटकरी एक तोला, सफेद जीरा एक तोला, अजवाइन एक तोला, सरसइया की छाल चार तोला, पाँचों नमक सात तोला, रूमामस्तगी दो तोला, कपूर।

विधि—मिट्टी की हांडी में छाल, बीजा, रूमीमस्तगी व नमक को डालकर जला डाले। बाकी मसाले अलग भून ले। फिर सब वस्तुएँ मय कपूर के एक साथ कूट डाले और कपड़छान करके बोतलों में भर कर रख ले और प्रयोग में लावे। इससे पुराना से पुराना पाइरिया ठीक हो जाता है और दाँतों की जड़ें भी मजबूत हो जाती हैं।

—कामिनीदेवी श्रीवास्तव 'विदुषी' उन्नाव

[पृष्ठ २१७ का शेषांश]

सहज हो जाता है। इन नियमों का पालन करते हुये और मूल रेखा को समझ कर चलते हुये क्रास स्टिचों का नमूना कितना ही जटिल क्यों न प्रतीत हो वह वस्त्र पर उतारा जा सकता है। रङ्गों का चुनाव सहज ही है। उदाहरण के तौर पर चित्र नं० में काले क्रासों को काले धागे से काढ़िये।

बीच के टेढ़े मेढ़े चौड़े फीते को लाल से काढ़िये और छोटी तिकोनी आकृतियों को नीले से काढ़िए।

दृष्टिकोण

खोखले दाँत

किसी बहन ने 'दीदी' के फरवरी अङ्क में अपने खोखले दाँतों के बारे में लिखा है ?

आप निम्नलिखित उपायों को करके देख सकती हैं :—

(१) ठंढे पानी में कागजी नींबू का रस निचोड़ कर तीन-चार बार पियें—कम से कम दो नींबू का रस रोज पियें।

(२) गरम पानी एक प्याला ले लें और उसमें चौथाई नींबू का रस नीचोड़ कर कुल्ला करें।

(३) नींबू के रस से अँगूठा और तर्जनी से दाँतों और मसूड़ों में दो-तीन बार मलें।

(४) खोखले दाँतों में मिसरी और कपूर मिला कर भर भी सकती हैं।

पानी ठंढा या गरम जो आपको सहन हो सके उसी के साथ उपरोक्त उपायों को करेंगी।

यदि इनसे लाभ हो तो कृपया 'दीदी' में प्रकाशित करवायेंगी जिससे और लोग भी लाभ उठा सकें।

—एक शुभचिन्तक (कलकत्ता से)

पाठिकाएँ बतावें ?

कोई दो वर्ष हुए दीदी में किसी बहिन ने काजल बनाने की विधि छपवाई थी। उसमें लिखा था—'घास गोभी एक पेड़' तथा और भी कई चीजें थीं। मैं हकीमों, वैद्यों से तथा हिन्दी के ज्ञाताओं से 'घास गोभी' का अर्थ पूछ चुकी हूँ। कोई नहीं जानता कि घास गोभी क्या चीज है। कृपया वह बहिन जिन्होंने यह नुसखा छपवाया था, समझाने की कोशिश करेंगी ? उस नुसखे में उन्होंने लिखा था—'गुलाब की कोंपल की पत्ती' इससे उनका मतलब गुलाब के बूटे पर जो नर्म-नर्म पत्ती आती है उससे है या कि गुलाब के 'पुष्प' की पंखुड़ी से है यह भी कोई बहन जानती हों तो इस पर रोशनी डालने की कृपा करें।

—सत्यावती छाबड़ा, गुरदासपुर पञ्जाब

आशा है जान कर बहनें उत्तर देंगी।

बाजपेयी जी बतावें ?

फरवरी की 'दीदी' में आचार्य बाजपेयी जी की उलझन को मैं भी सुलझाना चाहती हूँ। मुझे कोई श्रीमती बिन्दु बासिनी सकलानी, कोई श्री बिन्दु बासिनी सकलानी, कोई श्रीमती बिन्दु बासिनी-इन्दुमोहन सकलानी लिखते हैं। कहिये तो क्या ठीक रहेगा ? —बिन्दुबासिनी सकलानी

गीत

लेखिका, कुमारी उर्मिला राठौर, 'विशारद'

बन्द कर दो वीण के स्वर रुक गये हैं गान मेरे !
देव ! सङ्ग - सङ्ग गा सकूँगी
यह नहीं विश्वास मुझको
हर लहर अब बन गई मझ-
धार का आभास मुझको
वेदना से सजल गुञ्जन, बन गये अरमान मेरे !

अधर बन्धन में व्यथित हैं
भावनायें घुट रही हैं
युग युगों की साधनायें
नयन पथ से लुट रही हैं
क्यों ? तुम्हारी मधुर ज्वाला में झुलसते प्राण मेरे !

स्नेह के दो गीत गा लूँ
है कहाँ अधिकार मेरा
स्वप्न तट पर जो बसाया
ढह गया संसार मेरा
हो गये पाषाण - से नीरव निठुर भगवान मेरे !
बन्द कर दो वीण के स्वर रुक गये हैं गान मेरे !!

विविध-विषय

कन्या की आत्म-हत्या

रायबरेली जिले के जायस निवासी एक जिला बोर्ड के अध्यापक की युवा पुत्री ने होली के दूसरे दिन जब कि घर की अन्य स्त्रियां किसी दूसरे घर होली मिलने गयी थीं, एक चिता बना कर उसमें जल कर अपने प्राण त्याग दिये।

कहा जाता है कि गरीब अध्यापक जहाँ कहीं उस पुत्री का व्याह करने के हेतु जाता था उससे भारी दहेज माँगा जाता था। जिसे देने में वह असमर्थ था। दुखिया पुत्री ने अपने माता-पिता की चिन्ता न देख सकने के कारण स्वयम् अपने आप को अग्नि में समर्पण कर दिया।

कहा जाता है कि उसने एक पत्र लिख कर छोड़ दिया है जिसमें उसने अपनी आत्महत्या का कारण लिखा है। कन्या कायस्थ परिवार की बतायी जाती है।

स्त्री की जलकर मृत्यु

बरेली के मोहल्ला ब्रह्मपुरी में पण्डित श्रीराम स्वरूप की स्त्री श्रीमती ज्ञान देवी बुरी तरह से अग्नि में जल कर सदर अस्पताल में लाई गयी और वहाँ पर उनकी मृत्यु हो गयी।

कहा जाता है कि शुक्रवार की शाम को वह स्टोव जला रही थी और यकायक आग लग जाने से वह बुरी तरह से जल गयी। उनके घर वालों ने तुरन्त सदर अस्पताल पहुँचाया और वहाँ पर उन को बचाने का पूरा प्रयत्न किया गया परन्तु रात के करीब १० बजे उनकी मृत्यु हो गयी।

मृत्यु के पूर्व एक मजिस्ट्रेट के सम्मुख उनका बयान भी लिया गया। बाद को पुलिस ने एक पंचायत-नामा भर कर शव को घर वालों को दे दिया।

दीदी की सुलेखिका कुमारी सुशीला कुमारी और कुँअर इन्द्रवीरसिंह चौहान जिनका शुभ विवाह गत १७ फरवरी को प्रयाग में हुआ।

अधिक आमदनी वाले व्यक्तिः

भारत में केवल १२० आदमी ही ऐसे हैं, जिन की आय पाँच लाख रुपये प्रति वर्ष से अधिक है।

यह जानकारी वित्त मन्त्री श्री चिन्तामणि देशमुख ने राज्य सभा में आपने बताया कि ५ से ७ लाख तक की आमदनी के व्यक्तियों की संख्या ७४ है और ७ से १० लाख तक की आमदनी के व्यक्तियों

की संख्या ४६ है तथा एक या दो व्यक्ति ही ऐसे होंगे, जिनकी आमदनी १० लाख से अधिक है।

प्यास बुझाने का नया तरीका

१६ मार्च को फर्रुखाबाद जिले के छिब्रामऊ नामक स्थान पर तपती धूप में भाषण सुनने वाले किसानों को उत्तर प्रदेश के माल मन्त्री श्री चरणसिंह ने प्यास बुझाने का एक नया तरीका बताया। अपने तीन घंटे के भाषण में मन्त्री महोदय ने यह अनुभव किया किसानों को प्यास लग रही होगी, अतएव आपने किसानों को सुझाव दिया कि उन्हें चाहिए कि वे अनुमान करें कि वे जलती धूप में खेतों में काम कर रहे हैं और उनकी आखें क्षितिज की ओर इस प्रतीक्षा में लगी हैं कि उनकी घरवाली सर पर पानी का मटका लिये आ रही हैं।

ज्ञातव्य बातें

१० फरवरी १९५५ तक महिला छोटी बचत योजना में १,४७,१७,००० रु० जमा हुआ था। यह योजना मार्च १९५३ में चालू की गयी थी।

सूर्य शक्ति को उपयोग में लाने वाले केन्द्रों की स्थापना

संयुक्तराष्ट्र-सङ्घ की अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष विज्ञान संस्था की एशियाई प्रादेशिक संस्था ने यह शिफारिस की है कि सूर्य की शक्ति कों उपयोग में लाने के लिये एशिया के विभिन्न भागों में अनेक केन्द्र स्थापित किये जायें। उक्त संस्था ने पृथ्वी के नजदीक और दूर की हवा की जांच के लिए वेधशालायें स्थापित करने की भी राय दी है।

गठिया रोग की नयी औषधि

एक हजार रोगियों सफल जांच के बाद न्युजर्सी की शेरिंग कार्पोरिशन औव् ब्लूमफील्ड नामी कम्पनी ने अमेरिका में गठिया रोग की एक नई औषधि की बिक्री शुरू कर दी है। मैटीकार्टन नामी इस औषधि से पिछले ८ मास में जो परीक्षण हुये हैं, उनमें यह औषधि भीषण वात रोग में ९५ प्रतिशत गुणकारी सिद्ध हुई है।

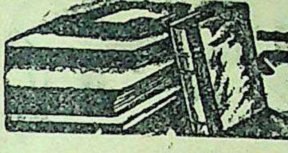

नई किताबें

मोम के मोती—उपन्यास, लेखिका श्रीमती रजनी पनिकर, प्रकाशक-शारदा मन्दिर, नई सड़क, देहली। पृष्ठ संख्या १९५, छपाई सफाई सुन्दर, (मूल्य ३॥)

उपरोक्त उपन्यास में माया नामक निम्न मध्यवर्ग की ऐसी नारी का चित्रण किया गया है जिसने सामाजिक रूढ़ियों की शृङ्खला को तोड़ने का साहसपूर्ण प्रयास किया है। माया अपने घर की आर्थिक दशा सुधारने के लिये अविवाहित रहकर एक सेठ के यहाँ नौकरी करती है। इस प्रकार वह अनेकों पुरुषों और स्त्रियों के सम्पर्क में आती है। पुरुष की अनैतिकता भरी आँखें उस पर पड़ती हैं और तंग आकर उसे कहना पड़ता है कि 'पुरुष......सब नीच होते हैं।' इसी प्रकार की उक्ति सामरसेट माघम की 'रेन' शीर्षक कहानी में भी है जहाँ एक स्त्री ने कहा कि, 'ही इज पिग आल मेन आर 'पिग्ज' माया अपने संघर्ष में जुटी रहती है। किन्तु उसे भी कहना पड़ता है कि 'वह बुरी है, यह तो वह भी जानती है। उसने सती बनने का दावा कभी नहीं किया। स्त्रियों के व्यंग का भी उसे शिकार होना पड़ा है।

माया कोई आदर्श नारी नहीं है। वह इस युग की पढी-लिखी संघर्षशील मध्यम वर्ग की स्त्रियों का एक एक नमूना है। ऐसी स्त्रियों को आर्थिक कारणों से अपने चरित्र को निष्कलुष रखने में महान कठिनाइयाँ होती है।

उपन्यास में कोई आदर्शवाद नहीं बल्कि हमारे वर्तमान शिक्षित समाज के एक विशेष अङ्ग का सुन्दर और सच्चा चित्रण है। भाषा सुन्दर और कथानक रोचक है।

—मार्कण्डेय सिंह

अपने विचार

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

यह दुःख की बात है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन में अभी भी रिसीवर का शासन है और इस कारण इस संस्था के द्वारा हिन्दी ससार के भावों की अभिव्यक्ति जैसी चाहिए वैसी नहीं हो रही है। सम्मेलन के उद्धार का एक ही मार्ग है कि इसके सम्बन्ध के समस्त निर्णय श्रद्धेय राजर्षि टंडन जी पर छोड़ दिये जायँ। स्वयम् गांधी जी, जहाँ सम्मेलन का प्रश्न आता था, टंडन जी के मत को ही मान्यता देते थे।

सम्मेलन की गुत्थी को जो लोग सुलझा सकते हैं, उनमें हमारे ख्याल से निम्नलिखित व्यक्ति प्रमुख हैं:—

१—पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी
२—श्री प्रभात शास्त्री
३—श्री बाबूराम सक्सेना।
४—श्री सीताराम चतुर्वेदी।
५—श्री उदयनारायण तिवारी।

इन पाँचों व्यक्तियों से हमारा आग्रह है कि वे शीघ्र से शीघ्र आपस में मिलकर किसी निर्णय पर पहुँचें और नहीं तो श्रद्धेय बाबू जी की सेवा में उपस्थित होकर समस्त निर्णय उन्हीं के ऊपर छोड़ दें। हिन्दी ससार श्रद्धेय टंडन जी के नेतृत्व में सम्मेलन के द्वारा बहुत कुछ करने को उद्यत है। सम्मेलन के समस्त सेवकों को इस महा यज्ञ के लिये तैयार होना चाहिए।

श्री हरिशंकर विद्यार्थी का स्वर्गवास

श्री हरिशङ्कर विद्यार्थी का गत १४ मार्च को कानपूर में केवल ४२ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया।

श्री विद्यार्थी विख्यात पत्रकार शहीद गणेशशङ्कर विद्यार्थी के ज्येष्ठ पुत्र थे और अपने पिता की भाँति अच्छे लेखक और पत्रकार थे। पिता के शहीद हो जाने के बाद आप 'प्रताप' के सम्पादक बने थे और उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया था।

अपने पीछे आप एक पुत्र, दो पुत्री तथा भाई श्री ओंकार शङ्कर विद्यार्थी को छोड़ गये हैं। उनके निधन पर हम हार्दिक शोक और उनके दुःखी परिवार के प्रति गहरी समवेदना प्रकट करते हैं।

पुत्रियों के उत्तराधिकार का कानून

कानून मन्त्रालय के मन्त्री श्री एच० वी० पतस्कर ने हिन्दी उत्तराधिकार विधेयक पर बहस का उत्तर देते हुए राज्य सभा में कहा कि पुत्रियों को उत्तराधिकार का अधिकार देकर ही हिन्दू समाज में प्रचलित दहेज प्रथा को मिटाया जा सकता है।

आपने आगे कहा कि दहेज प्रथा स्वाभाविक नियमों या प्रेम एवम् स्नेह के सिद्धान्तों पर आधारित नहीं है। ऐसा पिता जो समर्थ नहीं भी होता है वह भी कर्ज ही लेकर शादी के समय दहेज का प्रबन्ध करता है। आपने कहा कि दहेज प्रथा की बुराई को हम दहेज विरोधी कानून बनाकर नहीं दूर कर सकते बल्कि पुत्री को भी उत्तराधिकार का अधिकार देकर हम यह बुराई दूर कर सकते हैं।

हिन्दू समाज की उन्नति के लिये दहेज प्रणाली का उन्मूलन परमावश्यक है। इस कानून से वह हो जाय तो क्या कहना।

श्री नवीन सेवाश्रम

इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध इञ्जीनियर श्री नन्दकिशोर अग्रवाल ने अपने स्वर्गीय पुत्र की स्मृति में

उनके नाम पर इसकी स्थापना की है। इसके ट्रस्टियों में राजर्षि टंडन जी आदि हैं। भारतवर्ष में यह अपने ढङ्ग की पहली संस्था है जिसने जीविकोपार्जन में असमर्थ व्यक्तियों की सहायता का बीड़ा उठाया है। कोई भी व्यक्ति जो जीविकोपार्जन में असमर्थ है दरवाजे-दरवाजे भीख न माँग कर इस आश्रम में आवे तो उसका सादर स्वागत होगा। उसे भोजन वस्त्र, निवास, औषधि सब कुछ मुफ़्त मिलेगा। कोई काम कर सकने में समर्थ है उसे ऐसा काम सिखाया जायगा जिससे वह अपनी जीविका चला सके। स्त्रियों को भी इस आश्रम में रहने की व्यवस्था है। हम इस आदर्श संस्था की की उन्नति चाहते हैं।

श्री माखनलाल चतुर्वेदी का सम्मान

भारत सरकार ने इस वर्ष १२ भारतीय भाषाओं के लेखकों को पाँच-पाँच हजार रुपयों का नकद पारितोषिक दिया है। हिन्दी में यह पुरस्कार 'कर्मवीर-सम्पादक' पं० माखनलाल चतुर्वेदी को उन की हिम-तरंगिनी नामक काव्य संग्रह पर दिया गया है। इस अवसर पर हम चतुर्वेदी जी को बधाई देते हैं।

डिगल काव्य

रानी लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत के हम कृतज्ञ हैं कि वे डिगल काव्य के उत्कृष्ट नमूनों का चयन कर के हमारे सामने उपस्थित कर रही हैं। जयपुर में होने वाले बङ्ग-साहित्य सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आपने बताया कि रवि बाबू ने डिगल काव्य सुन कर कहा था कि मेरी युवावस्था में यदि वे कवितायें मुझे सुनने को मिलतीं तो मैं अपना सारा जीवन इन्हीं के संग्रह प्रकाशन और प्रचार में लगा देता। इस अवसर पर आपने निम्नलिखित दोहा भी सुनाया:—

राजनीति रै रोग सूँ, बढै विपद जद पूर।
मेटै सङ्कट मुलक रो, कै साहित कै सूर॥

राजनीति के रोग से देश जब विपद्ग्रस्त हो जाता है तो साहित्य या शूरवीर ही उसका सङ्कट मिटा सकते हैं।

गृह कार्य्य

गृह कार्य अब तक केवल स्त्रियों का काम माना जाता था। पुरुष इस कार्य से सर्वथा बरी थे। चूल्हा पोतना, जूठे बर्तन माँजना, चक्की चलाना, रसोई बनाना केवल लड़कियों का काम माना जाता था। परन्तु अब यह समझा जाने लगा है कि इन सब कामों में पुरुषों को भी हाथ बँटाना चाहिए।

आचार्य बिनोवा भावे ने इस बात को सर्वोदय सम्मेलन (पुरी) में जोर के साथ कहा। आपने कहा कि स्त्रियाँ घर के बाहर के कामों में पुरुषों की सहायता करें और पुरुष भी घर के कामों में अपनी पत्नियों की सहायता करें। आचार्य भावे ने कहा कि केवल भारतीय स्त्रियाँ ही चरित्रवान हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने मर्दों को भी अपनी तरह चरित्रवान बनावें।

गांधी जी तो माताओं को यह उपदेश दिया करते थे कि वे गृहकार्य में लड़कों और लड़कियों को समान रूप से दक्ष करें।

वर्ष-भविष्य

बम्बई के ज्योतिषी श्री घनश्याम ने इस वर्ष का भविष्य इस प्रकार बताया है:—

शनि के प्रभाव से १८ जुलाई तक अखिल विश्व में दुःख-सन्ताप की वृद्धि होती रहेगी। मानव-संहारक तूफान आयेंगे तथा बीमारियाँ बढ़ती रहेंगी। युद्ध का अन्देशा बढ़ेगा। मध्य-पूर्व के देशों में अराजकता की विशेषता बनी रहेगी। महिलाओं को स्त्री-स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सफलता मिलती रहेगी।

गुरु ग्रह के अतिचार का फल १८ अगस्त तक रहेगा; अतः दुर्भिक्ष के चिह्न बढ़ते रहेंगे। सभी चीजों की महर्घता बनी रहेगी।

रामचन्द्र वैद्य शास्त्री की मीठी
बाल रक्षा घुटी
एजेंसी लीजिये
बाल रोगों तथा दन्तविकारों का नाश कर बच्चों को स्वस्थ पुष्ट करती है। बड़ी शीशी ॥=) छोटी ।=), पांच सज्जनों के नाम पते लिखें, सुन्दर उपन्यास मुफ्त लें
सुधावर्षक औषधालय अलीगढ़

सफेद कोढ़ की पेटेंट दवा
मूल्य ५) रुपया
विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।
वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मंगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

सुख-दुःख का झमेला
लेखक, श्री हरिचरण लाल वर्मा शास्त्री
प्रस्तुत पुस्तक में देश के प्रतिष्ठित सन्त महात्माओं और विद्वान् पुरुषों के भिन्न-भिन्न विषयों पर विचारणीय लेखा का उपयोगी सङ्कलन है जो जीवन में उत्कर्ष तथा सामञ्जस्य लाने के लिये, मानव हृदय में मानवता के विचार उद्बुध करने के लिए गिरते हुए नैतिक स्तर में चारित्र्य बल लाने के लिये लोक हित की पावन भावनाओं से ओत-प्रोत सुखद बल-प्रद प्रेरक भावनाओं से युक्त है! पुस्तक सभी के काम की चीज है। मूल्य १) पता—साधना कार्यालय, इलाहाबाद नं०—२

विवाह विज्ञापन
अपने स्वस्थ सुशील सुन्दर एम० ए० विद्यार्थी भाई के लिये एक सुन्दर स्वस्थ सुशील, गृह कार्य में चतुर कम से कम मैट्रिक पास वधू चाहिये। श्रीवास्तव खरे का विशेष ध्यान रखा जायगा। पूर्ण विवरण सहित लिखें।
मुकुट बिहारी लाल श्रीवास्तव
उप प्रधान शिक्षक बिरलापुर विद्यालय
बिरलापुर २४ परगना।

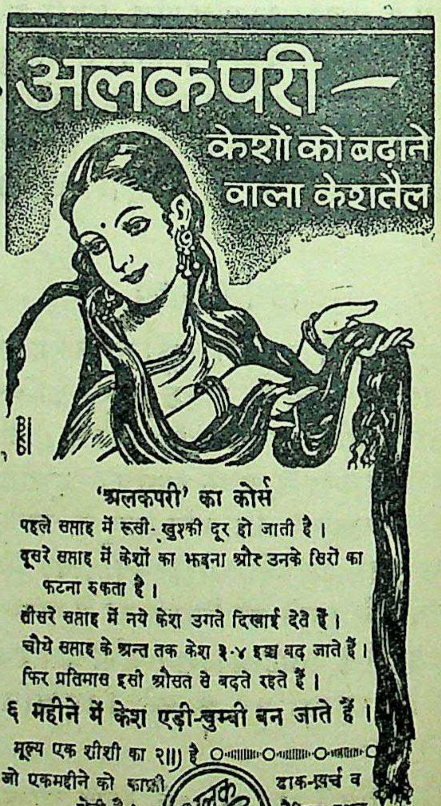
अलकपरी—
केशों को बढ़ाने वाला केशतैल
'अलकपरी' का कोर्स
पहले सप्ताह में रूखी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।
६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।
मूल्य एक शीशी का २।) है जो एकमहीने को काफी होती है।
डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्
अलक परी
नया कटरा इलाहाबाद

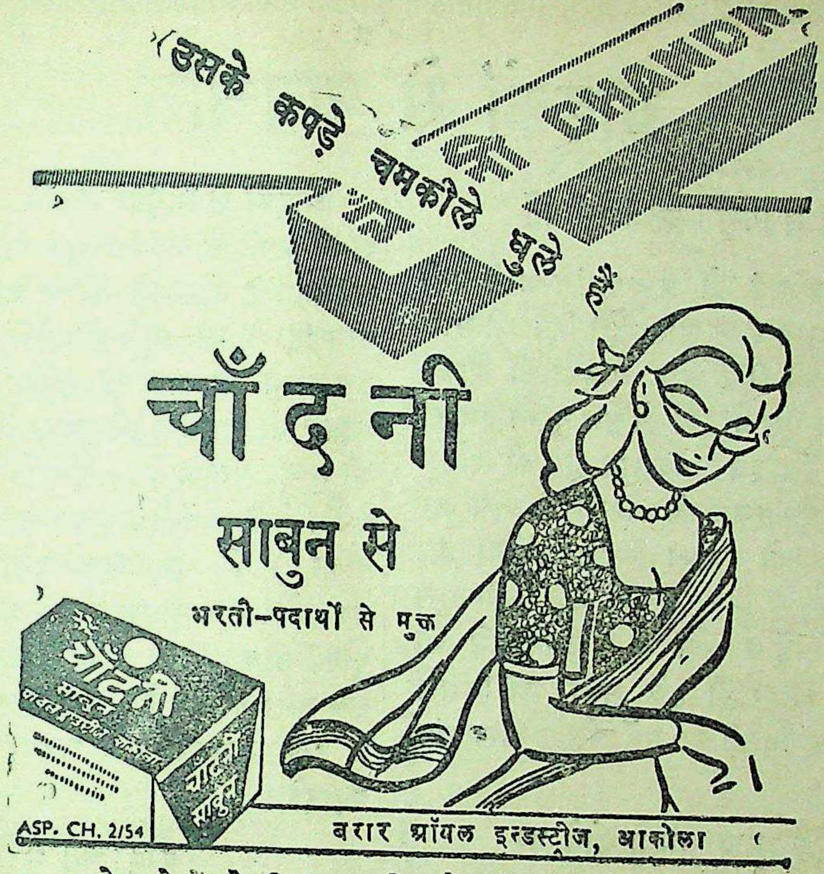
उसके कपड़े चमकीले धुले हैं
CHANDNI
चाँदनी
साबुन से
भरती-पदार्थों से मुक्त
चाँदनी साबुन
ASP. CH. 2/54
बरार ऑयल इन्डस्ट्रीज, आकोला

नये क्षेत्रों के लिए स्टाकिस्टों की आवश्यकता है।

उपहार

प्रत्येक मास में !

आपकी बहनें और बेटियां चाहे घर में हों, चाहे ससुराल में, उनकी पसन्द का उपहार वही हो सकता है जो आप विचार पूर्वक उन्हें दें और 'दीदी' के वार्षिक चन्दे से बढ़ कर और सुन्दर उपहार क्या हो सकता है जो कि प्रति मास उन्हें आपके स्नेह का स्मरण दिलायेगा ? 'दीदी' का वार्षिक मूल्य केवल ६) है। इसी में डाक व्यय भी शामिल है।

'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद-२

युनाइटेड
ब्लाकवर्क्स
७०७ कटरा
इलाहाबाद

ग्राहकों से बातचीत

दीदी न मिलने की शिकायतें

दीदी की प्रतियां दो बार जांच करके बड़ी सावधानी के साथ भेजी जाती हैं। फिर भी मार्ग में कुछ गुम होती ही हैं और ग्राहकों की शिकायतें आती हैं। ऐसे ग्राहकों को हम तुरन्त दुबारा प्रतियां भेजते हैं। इधर अंक गुम होने की शिकायतें बढ़ रही हैं। हम इनके कारणों की जांच कर रहे हैं और उनको सर्वथा निर्मल करेंगे। इस बीच में ग्राहकों से निवेदन है कि यदि किसी मास में कोई अङ्क उन्हें न पहुँचे तो वे उस महीने की १५ तरीख के अन्दर ही हमें सूचित करें जिससे हम तत्काल कार्यवाही कर सकें और दुबारा अंक भेज सकें।

वार्षिक मूल्य समाप्त होने पर

वार्षिक मूल्य समाप्त होने पर ग्राहकों की सेवा में आगामी वर्ष का प्रथम अंक वी० पी० से भेजा जाता है। परन्तु यदि कोई ग्राहक वी० पी० लौटाल देते हैं तो कार्यालय को सात आना की हानि उठानी पड़ती है। इसलिए ग्राहकों से निवेदन है कि यदि वे अगामी वर्ष ग्राहक न रहना चाहें तो कार्यालय को सूचित कर दिया करें जिससे उनकी सेवा में वी० पी० न भेजी जाय और कार्यालय व्यर्थ की हानि से बचे। वी० पी० का डाक व्यय बढ़ जाने से ग्राहकों के लिये उचित है कि वार्षिक मूल्य मनिआर्डर से ही भेजें। इससे उन्हें सात आने की बचत होगी।

दीदी पुरस्कार देगी

दीदी ने अपने ग्राहकों-ग्राहिकाओं को जो इसके प्रचार में हाथ बटाएँगे पुरस्कार देने का निश्चय किया है। वह इस प्रकार से:—

ग्राहकों से निवेदन है कि वे एक कार्ड पर अपने-अपने से लेकर ५ तक परिचित मित्रों या सहेलियों के नाम पते भेजें। कार्यालय उन सबके पास 'दीदी' की नमूने की प्रति भेज कर ग्राहक बन जाने की प्रार्थना करेगा। फिर उनमें से जितने भी ग्राहक बनेंगे उतने ही रुपयों के मूल्य की सुन्दर पुस्तकें इन प्रचारकों के पास उपहार स्वरूप भेजी जायेंगी। इस तरह एक ग्राहक बनाने वाला २) की; दो ग्राहक बनाने वाला ४) की; नया और पांच ग्राहक बनाने वाला १०) मूल्य की पुस्तकें प्राप्त करेगा। प्रिय पाठक गण यह कार्य कुछ मुश्किल नहीं है। इस तरह दीदी के प्रचार में हाथ बटाइये और अपना निजी पुस्तकालय बढ़ाइये।

दीदी की त्रुटियाँ

हम दीदी को प्रारम्भ से ही एक आदर्श पत्रिका बनाने के लिये प्रयत्न शील हैं। हमें इस कार्य में अभी पूरी सफलता तो नहीं मिली है पर जो कुछ हम कर सकें हैं उसके लिये हमें सन्तोष है। 'दीदी' में सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि इसके पास धन का अभाव है जिससे अच्छी छपाई व सजावट नहीं हो पाती। यह त्रुटि तो क्रमशः दूर होगी पर अन्य त्रुटियाँ जिनको दूर करना हमारे हाथ में है, हम एक भी नहीं रहने देना चाहते। अतएव पाठकों से हम सुझाव मांगते हैं। दीदी में उन्हें कोई त्रुटि दीखे तो हमें तुरन्त सूचित करें जिससे हम उसे दूर कर सकें।

निवेदिका—प्रेमलता देवी
सञ्चालिका—
'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद-२

दीदो के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	”
३—कुमारी कमल सहाय, आरा	”
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया	”
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	”
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग	”
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१२८)
९—श्री सेठ बल्देवदास मूंधड़ा, कलकत्ता	१००)
१०-श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई	”
११-श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	”
१२-श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	”
१३-श्रीमती निर्मला गोबिल, आगरा	”
१४-श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर	”
१५-श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	”
१६-श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	”
१७-श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	”
१८-श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	”
१९-कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	”
२०—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	”
२१-श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून	”
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता	”

‘दीदी’ के नियम

(१) ‘दीदी’ मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ॥) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू हो जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका ‘दीदी’ कार्यालय, इलाहाबाद–२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका ‘दीदी’ कार्यालय, इलाहाबाद–२।

(४) ‘दीदी’ हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि ‘दीदी’ आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका ‘दीदी’ इलाहाबाद को लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना मय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक ‘दीदी’ इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) ‘दीदी’ में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मंगावे। पर यह ध्यान रखें, ‘दीदी’ में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

DIDI -/8/- April 1955 Regd. No. A—601

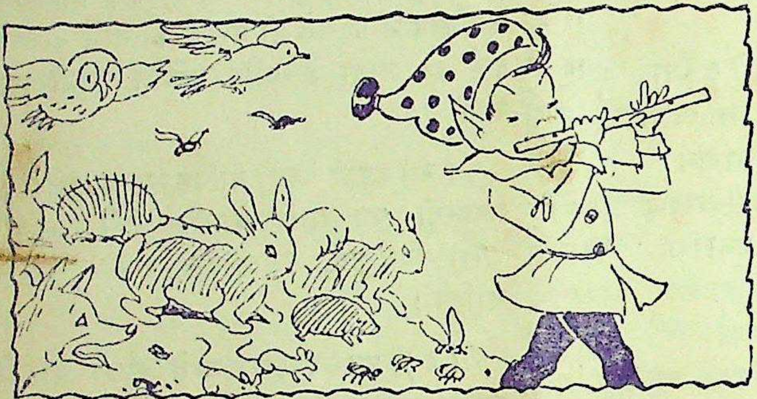

यदि आप 'दीदी' के ग्राहक हैं तो केवल २) वार्षिक मूल्य भेज कर अपने प्यारे बच्चे के नाम यह पत्र मँगा सकते हैं।

आपका बच्चा बहुत प्रसन्न होगा !

यदि आपकी डाक में उसे

बालबोध

की एक प्रति मिलेगी !

बालबोध, श्रीनाथसिंह द्वारा संस्थापित छोटे बच्चों का मासिक पत्र है। अपने प्यारे बच्चे के नाम प्रतिमास इसे डाक से पहुँचने दीजिये।

बालबोध का वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) है। यह रकम मनिआर्डर से भेज कर आप निश्चिन्त हो जाइये और शेष काम हमको करने दीजिये।

मैनेजर—'बालबोध',
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद–२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

८८२८-८
६१४१९२

22-7-55

दीदी

जुलाई
१९५५
॥)

२७/७

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—श्री राधारानी ३४८
२—स्वप्न-भङ्ग ३५५
३—दो जिंदगियाँ [बिल-बेलोत्सेर्कोव्स्की] ३६०
४—आफताब-ऐ-हिन्द हीरा [श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०] ... ३६६

लेख

१—महाकवि रहीम [राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी] ३४६
२—अपने हाथों को स्वच्छ व सुन्दर रखिये [श्रीमती श्यामा बाई] ... ३५१
३—वेदों में स्त्रियों की प्रतिष्ठा [श्रीमती कांतिदेवी मिश्र] ३५
४—न्यूयार्क की रूबी ३५
५—फलों का राजा : आम [श्री सदानन्द चेन्दवणकर] ३६
६—ब्रिटेन की महिला सेवा-संस्थाएँ [ए० के० एस्टबरी] ३६
७—बी० ए० बहू से चमत्कार की माँग क्यों? [श्रीमती लक्ष्मी देवी श्रीनेत] ... ३७
८—रेल यात्रियों को नयी सुविधाएं ... ३७
९—श्रीमती चन्द्रमुखी [श्रीमती रजनी पनिकर] ३७
१०—श्रावण का एक लोकगीत [श्रीमती शारदा देवी शर्मा, विद्या विनोदनी, बुढ़ार ३८
११—नेत्रों का मेगापन और उसके उपाय [डा० महाबीर शरण अग्रवाल] ... ३८
१२—४० हजार दिये तब भी कन्या जल मरी ३८
१३—यह हैं हाल मेरे···उनके [श्रीमती विमला ओझा] ३८

कविताएँ

१—गीत [कु० सुशीला सुरोलिया एम० ए० साहित्य रत्न] ३५
२—गीत [श्री महेश दत्त 'रङ्क'] ... ३८

फुटकर

१—संक्षिप्त-समाचार ३७
२—सिनेमा संसार ३६

स्तम्भ

१—दृष्टि कोण ३७
२—रसोई ... ३६
४—विविध-विषय ... ३८
५—आपको कुछ पूछना है ३८
६—अपने विचार ... ...

दीदी

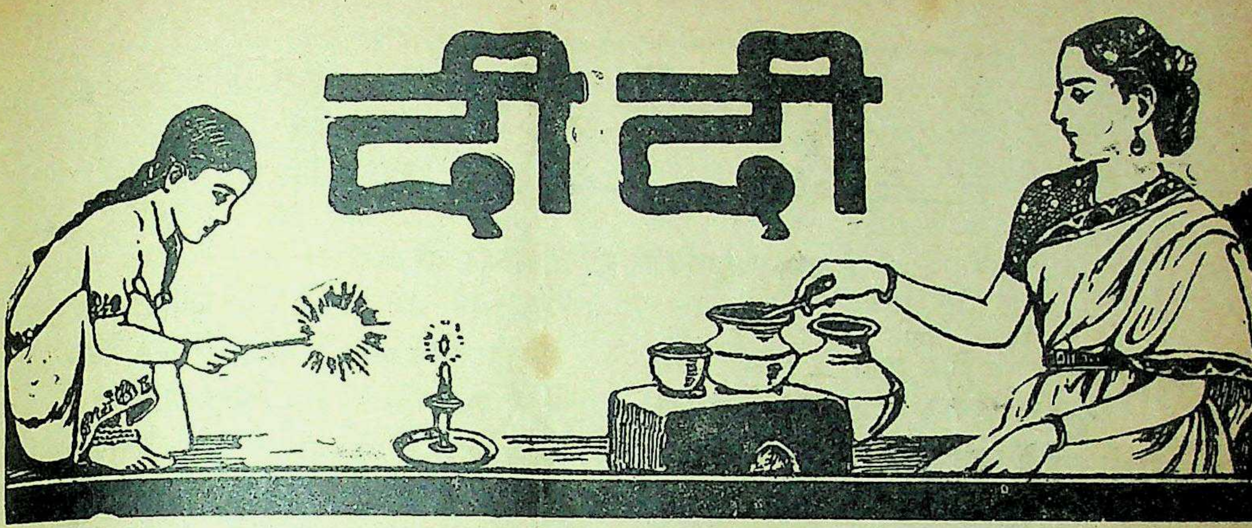

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १६ } इलाहाबाद, जुलाई १९५५ { संख्या ७

गीत

लेखिका, कु० सुशीला सुरोलिया एम० ए० साहित्य-रत्न

कितनी दूर सजन का घर है ?
आली री ! बतला दे तू ही कितनी दूर सजन का घर है ?
मेरा अणु अणु उन्हें समर्पित, मेरा अन्तर उनसे दीपित,
मंजु प्रभंजन की सन-सन में सुन पड़ता उनका ही स्वर है ?
कितनी दूर सजन का घर है ?
वे मेरे प्राणों की आशा, वे मेरे नयनों की भाषा,
वे मेरे हैं, मैं उनकी हूँ, दोनों में न तनिक अन्तर है।
कितनी दूर सजन का घर है ?
वे मेरे सपने में रहते, वे मेरे अपने में रहते,
मेरा अपना अब सब कुछ तो–केवल उन पर ही निर्भर है।
कितनी दूर सजन का घर है ?
चाहे जितना मुझे रुलाये, चाहे जितना मुझे भुलाये,
मुझ में उनका लहराता पल-पल सुधियों का सागर है।
कितनी दूर सजन का घर है ?

महाकवि रहीम

लेखक, राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी

आधुनिक युग में जिन गुणों के आधार पर हम किसी भी कवि, लेखक अथवा कलाकार को राष्ट्रीय कवि कहते हैं, वे सभी गुण अबदुर्रहीम खानखाना में हमें मिलते हैं। मेरे विचार से यदि हम सोलहवीं शताब्दी के राष्ट्रीय-कवियों में रहीम की गणना करें तो इससे सभी सहमत होंगे। हिन्दी भाषा और साहित्य के लिये सोलहवीं शताब्दी का विशेष महत्व है। उसी शताब्दी में सूरदास और तुलसीदास जैसे महाकवियों ने अपनी कविता द्वारा हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की।

कई दृष्टियों से रहीम को हम उस काल की सामाजिक तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधि कवि कह सकते हैं। रहीम अरबी, फारसी, तुर्की और संस्कृत के विद्वान् थे। उनकी कविता के कुछ नमूने मात्र देखने से यह पता लगता है कि अवधी और ब्रजभाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। स्वयं एक उच्च कोटि के कवि होने के साथ-साथ रहीम विद्वानों और कवियों के प्रश्रयदाता भी थे। कविता के सच्चे ग्राहक होने के नाते कवियों के प्रति रहीम की उदारता इतिहास का विषय बन गई है। जब कभी वह किसी के मुख से अच्छा छंद अथवा दोहा सुनते तो मुग्ध हो जाते और उसे मालामाल किये बिना न रहते। कहते हैं कि उन्होंने गङ्ग कवि को केवल एक छंद पर छत्तीस लाख रुपया पुरस्कार दिया था। रहीम की स्वाभाविक उदारता से परिचित कवि गङ्ग ने एक दिन नीचे लिखे दोहे में खानखाना से प्रश्न किया—

सीखे कहाँ नवाज जू ऐसी देनी दैन।
ज्यों-ज्यों कर ऊँचे करो, त्यों-त्यों नीचे नैन॥

खानखाना ने तुरन्त इसके उत्तर में यह दोहा पढ़ा—

देनदार कोउ और है भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पर धरें, याते नीचे नैन॥

साहित्यिकों का अनुमान है कि उनके समकालीन कवियों में से अधिकांश रहीम से परिचित थे और कई कवि उनकी उदारता के कारण कृतकृत्य भी हुए थे। जो हो, इस बात में सन्देह की गुञ्जाइश नहीं कि रहीम के साहित्य-प्रेम और उदात्त भावनाओं के कारण प्रायः सभी कवि उनका आदर करते थे।

अपने जीवनकाल में रहीम ने जो प्रारब्ध के उतार-चढ़ाव देखे, वे कम लोगों को देखने को मिलते हैं। एक ओर से अकबर जैसे महान् सम्राट् के सेनापति और अनेक जागीरों के मालिक रहे और दूसरी ओर जीवन के संध्याकाल में उन्हें कैद भी भुगतनी पड़ी और ऐसी निर्धन अवस्था में अपने दिन बिताने पड़े, जिसकी कल्पना-मात्र से करुणा का स्रोत फूट पड़ता है। प्रायः उनके मानवोचित गुणों, सहृदयता तथा वीरत्व की सच्ची परीक्षा का परिचय हमें इसी हाल में मिलता है। रहीम इतने शिक्षित और सुसंस्कृत व्यक्ति थे कि असाधारण अभाव उनकी प्रतिभा को कुंठित नहीं कर सका। उनकी जीवन-धारा बदल गई, किसी हद तक जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण भी बदल गया, परन्तु वह स्वयम् नहीं बदले। उनका कविता-प्रेम और ईश्वर में विश्वास यथा पूर्व बना रहा। अपनी दीन-हीन अवस्था की व्यञ्जना उन्होंने इस प्रकार की है—

तब ही लौं जीवो भलौ देबौ होय न धीम।
जग में रहिबो कुंचित गति, उचित न होय रहीम॥

इससे स्पष्ट है कि अपनी दरिद्रता के कारण रहीम को जो दुःख हुआ उसका प्रधान कारण यह नहीं था कि उन्हें कष्ट सहना पड़ता था और वह ऐश्वर्य का जीवन नहीं बिता सकते थे, बल्कि यह

कि अब वह औरों को कुछ दे नहीं सकते थे। इस अवस्था में भी वे यथा सम्भव किसी को निराश करना नहीं चाहते थे। जब इस दीन दशा में वह चित्रकूट में रहने लगे, वहाँ भी उन्हें याचकों ने आ घेरा। उनके अपने पास तो कुछ देने के लिये था नहीं, इसलिये निम्न दोहा लिख कर रहीम ने एक याचक को रीवां-नरेश के पास भेज दिया—

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेश।
जा पर विपदा परति है, सो आवत यहि देस॥

स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति ने जीवन के दोनों पक्षों को इस गहराई से देखा हो और जिससे विवेक और विद्वत्ता की कमी न हो, वह निश्चय ही मर्मज्ञ होगा। इसलिए जीवन के किसी भी पहलू का चित्र खींचने के लिए रहीम को कल्पना का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं थी। अपने वास्तविक अनुभव के बल पर ही उन्होंने सब कुछ लिखा। उन्हें जीवन की सच्ची परिस्थियों का मार्मिक अनुभव था। यही कारण है कि उनके दोहे इतने अधिक लोक प्रिय हुए और आज भी सर्वसाधारण के मुह पर है। उनके दोहों के कुछ नमूने देखिए। प्रत्येक दोहे में मासिकता और ठोस अनुभव भरा है।

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखे न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखे, दीनबंधु सम होय॥
धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जखत पिआसो जाय॥
ए रहीम दर-दर फिरहिं, मांगि मधुकरी लाहिं।
यारो यारी छोड़िये, वे रहीम अब नाहिं॥
तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहिं सुजान॥
रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आहिहें, बनत न लागहि देर॥

रहीम की हिन्दी रचनाओं में वरवैनायिका भेद रहीम दोहावली और मदनाष्टक प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। उन्होंने फारसी का एक दीवान भी लिखा था और 'वाकयाते बाबरी' तुर्की से फारसी में अनुवाद किया था।

चहुँमुखी प्रतिभा की दृष्टि से रहीम की तुलना हम अमीर खुसरो से ही कर सकते हैं। इनकी कविता बड़ी ही सरस है। इनकी भाषा के पीछे जो भाव हैं, वे एकान्त सत्य होकर राजीव हैं और उन मानव-जीवन से अटूट सम्बन्ध है। उनकी रचना के पीछे एक ऐसा हृदय है जिसमें अनुभव, अन्तर-दृष्टि सरसता है।

रहीम की कविता, हिन्दी के प्रति उनके अनुराग और साहित्यिकों के प्रति सद्भावना का स्मरण आते ही हमारा ध्यान मध्य युग में हिन्दी के विकास की ओर बरबस खिच जाता है। उस समय हिन्दी काव्य की भाषा तो बन चुकी थी, परन्तु अपना मार्ग खोज रही थी। इसके साहित्य को रहीम जैसे प्रतिष्ठत और विद्वान राजसेवी का

[शेष ३६३ पेज पर पढ़िये]

मन्त्र सिद्ध अंक-चक्र

जुलाई मास के लिये

प्रेषक, स्वामी भिक्षा नन्द

१	५	६	१०
४	२	९	७
३	८		८
७	६	५	४

ये गिनतियां यहाँ मन्त्र सिद्ध करके रखी गई हैं, किसी एक घर पर अँगुली रखिये और पृष्ठ पर अपना मास फल पढ़िये। आपका जो मास फल निकले उसे नोट करके रख लीजिये और महीने के अन्त में उसकी सत्यता स्वयम् आँकिये। प्रथम बार आपकी अँगुली जिस पर पड़ेगी उसी का फल आपको अपने लिये महीना भर समझना चाहिए। फल के लिये देखिये पृष्ठ ३८६।

धारावाहिक पौराणिक उपन्यास

श्रीराधारानी

इस पौराणिक उपन्यास के पिछले परिच्छेदों में बताया जा चुका है कि किन परिस्थितियों में राधा का जन्म, रायण से उनका विवाह और कृष्ण से उनका प्रेम बढ़ा। आगे की कथा यहाँ दी जा रही है।

६—चवाव

गोपा ने राधा कृष्ण के वृन्दावन के लता-वृक्ष निर्मित कुंज कुटीरों में मिलने और चाँदनी रातों में एक साथ मिलकर नृत्य करने की उस दिन की देखी बात को लेकर अनेक अर्थ निकाले और अनेक प्रकार से उसकी चर्चा की। सारे ब्रज में यह चवाव फैल गया कि राधा ने अपने पति की उपेक्षा कर दी है और कृष्ण के पीछे भागी-भागी फिरती हैं। राधा के साथ ही उनकी सहेलियों की भी निन्दा प्रारम्भ हो गई।

राधा से भी अधिक निन्दा कृष्ण की प्रारम्भ हो गई। यदि वे बस्ती से बाहर निर्जन बन में भी वंशी बजाते तो कहा जाता कि वह राधा के लिये वहाँ पहुँचने का संकेत है। यदि वे किसी गोप की अनुपस्थिति में गाय दुहने जाते तो कहा जाता कि उसकी अनुपस्थिति में वे उसकी पत्नी को उसके पति व्रत-धर्म से विचलित करने गये हैं। यदि वे यमुना किनारे जाते तो कहा जाता कि वे जल भरने जाने वाली गोपियों से छेड़-छाड़ करने गये हैं। इन चवावों के आधार पर गोपियाँ यशोदा के पास शिकायतें ले लेकर पहुँचने लगीं कि कृष्ण को रोको। और जब यशोदा पूछतीं कि किसी गोपी का नाम बताओ जिसे कृष्ण ने छेड़ा हो तो कुछ न बतातीं। सब यह कहतीं कि हमने सुना है। किसने सुना है? इस प्रश्न का उत्तर भी कोई न दे पातीं।

नन्द ने कृष्ण को राधा और उनकी सहेलियों के बीच में इसलिये छोड़ रखा था कि लड़कियों और स्त्रियों में वे कंस और उसके दुष्ट सेवकों की दृष्टि से बचे रहेंगे। परन्तु अब क्या हो? अब वे बालक कृष्ण को लेकर कहाँ जांय? कैसे उसकी रक्षा हो?

शिकायतें जब अपने चर्म सीमा पर पहुँचीं तब यशोदा ने कृष्ण से पूछ ताछ शुरू की। परन्तु कृष्ण के भोले उत्तरों से उन्हें भासित हो गया कि कृष्ण निर्दोष हैं। परन्तु यह चवाव कैसे बन्द हो? कृष्ण

के चरित्र पर यह जो कलङ्क लगाया जा रहा है यह कैसे मिटाया जाय ?

नन्द और यशोदा इस उधेड़-बुन में पड़ी ही थीं कि एक विचित्र शिक़ायत उनके कानों में पहुँची। कहा गया कि आज दुपहर में जब गोपियां अपने-अपने चीर व चोली किनारे पर रख कर यमुना के जल में स्नानार्थ मग्न हुई तब कहीं से कृष्ण जी आ पहुँचे और सब के वस्त्र लेकर पास ही के कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ गये और वंशी बजाने लगे। वंशीध्वनि सुनकर गोपियों का ध्यान अपने वस्त्रों की ओर गया। पर उनके वस्त्र यथा स्थान नहीं थे। उन्हें तो कृष्ण जी समेट कर धोबी जैसा एक भारी गठ्ठर बनाकर वृक्ष पर चढ़े हुये थे। पानी में से गोपियों ने बहुत अनुनय विनय किया पर कृष्ण ने किसी का भी वस्त्र नहीं गिराया और यही शर्त लगायी कि सब गोपियां पानी से बाहर निकलें तब वे उनके वस्त्र लौटायेंगे भला नग्न गोपियां पानी से बाहर कैसे निकलतीं। दो चार जिन्हें लज्जा नहीं थीं निकलीं पर शेष सब पानी में ही तब तक अपने अंग छिपाए रहीं जब तक कि निशा ने आकर उन्हें अपनी काली साड़ी नहीं पहना दी।

दूसरे दिन बड़े सबेरे ही जब कृष्ण अपनी गौओं को लेकर बन में चराने जा रहे थे, गोपा के नेतृत्व में गोपियों का एक झुण्ड नन्द के आगन में आ उपस्थित हुआ और यशोदा को कड़ा उलाहना देने लगा।

यशोदा ने आज्ञा दी कि गौओं को अभी रोको और कृष्ण को अन्दर बुलाओ। श्री कृष्ण जी मुस्कराते हुये घर के भीतर पहुँचे। उस समय छवि देखते ही बनती थी। नील कमल के समान उनका शरीर सुकोमल और सजीला था। वे पीताम्बर पहने हुये थे, मस्तक पर मोर मुकुट शोभायमान था। एक हाथ में वंशी थी दूसरे में चक्र। गले में वन फूलों की माला पड़ी हुई थी।

'यह माला। तुमने कहां पाई ?' गोपा ने आगे बढ़कर ऐसे प्रश्न किया जैसे वे कहीं से चुरा लाये हों?

'किसने इसे गूंथा है ?' एक दूसरी गोपी ने तेज स्वर में दूसरा प्रश्न किया ?

'यह माला मुझे राधा ने दी है।' कृष्ण जी का छोटा सा उत्तर था।

'क्यों री राधा ? यह माला तू ने गूंथा है ?' एक साथ कइयों ने पूछा।

'हां, मैं रोज ही दो मालायें बनाती हूँ। एक कृष्ण को देती हूँ एक स्वयं पहनती हूँ।'

गोपा ने पूछा—'कभी रस्यण को भी माला पहनाई है ?'

'वे नहीं पहनते! उन्हें पुष्प पसन्द नहीं हैं। वे तो बर मेग-साधन में रत रहते हैं। वे कहते हैं, माला कृष्ण को पहनाओ। कृष्ण के गले में अच्छी लगती है।' राधा एक सांस में यह सब कह गईं। और बोलीं—'यह सब पूछने का तुम्हारा मतलब क्या है ?'

'मतलब है? तुम्हारा और कृष्ण को यह प्रेम लीला व्रज बनिताओं के सामने एक अस्वस्थ आदर्श है। इसका तुम्हें मना करना पड़ेगा।'

राधा का मुख क्रोध और लज्जा से रक्त वर्ण हो गया। वे बोलीं—'कृष्ण को मैं मनुष्य नहीं, मनुष्य से बहुत ऊँचा परमेश्वर मानती हूँ। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे उनकी सेवा का अवसर मिला है। तुम ईर्षा क्यों करती हो? तुम भी माला बनाओ, कृष्ण को पहनाओ। मैं मना करूँ तब कहो ?''

'कल की छोकरी मुझे उपदेश देने चली है। गोपा बोली—'स्त्री का परमेश्वर उसका पति है। पति को छोड़ कर अन्य पुरुष की ओर जो स्त्री आकर्षित होती है वह कुलटा है, कुलच्छिनी है।'

'मैं विवाद नहीं चाहती। तुम्हारे जो मन में आवे कहो।' राधा ने कहा।

''सुना नन्दरानी! अब क्या कहती हो ?''

यशोदा ने कहा—''राधा अपने ऊपर लगाए गए लांछनों का उत्तर देने में समर्थ है। मैं उसकी ओर से क्या कहूँ ?''

"अपने पुत्र की ओर से तो कुछ कह सकती हो?"

"क्यों नहीं?" और उन्होंने क्रोध के स्वर में कहा—"कृष्ण सावधान आज के बाद मुझे कोई उलाहना न सुनना पड़े।"

श्री कृष्ण जी ने मुस्करा कर मन्द स्वर में पूछा—"पर मेरी मैय्या? मेरा अपराध क्या है? राधा ने मुझे माला दी, मैंने पहन ली। इसमें मेरा क्या अपराध है—?"

"एक आध बात हो तो उसकी ओर से दृष्टि फेर लूँ। तेरे विरुद्ध तो रोज ही उलाहनें आ रहे हैं। और आज तो ये गोपियां बहुत ही भयानक उलाहना ले आई हैं—?"

"कुछ मुझे भी तो बतावें कि ये सब क्या कहती हैं?"

गोपा ने गोपियों की चीर हरण की सारी लीला कह सुनाई।

'मिथ्या अरोप! एकदम मिथ्या।' कृष्ण जी ने सहज भाव से कहा—

'मैं।' गोपा बोली।

'तुमने देखा था।'

गोपा चुप हो गई। वह घूर घूर कर सब गोपियों को देखने लगी कि जिसने देखा हो वह बोले। पर वहाँ कोई गोपी न थी जो यह कहे कि यह मेरी आंखों देखी घटना है।

'बोलो! तुम सब चुप क्यों हो?' यशोदा ने पूछा—'किसने देखा है?'

'मैय्या अब मैं जाता हूँ। देर हो रही है?'

'ठहरो।' गोपा बोली—'तुम वृन्दा बन की तंग गलियों में गोपियों का रास्ता रोकते हो? तुम जल भरने जाने वाली गोपियों से छेड़छाड़ करते हो? तुम वंशी बजाकर अवाच्छनीय संकेत करते हो। तुम......।'

यशोदा ने बात काटकर कहा—'बस अब मैं उलाहना सुनूँगी। आज के बाद कुछ भी शिकायत आई तो जांच पड़ताल न करूँगी बस प्राण दे दूँगी।'

'अच्छा तो मैय्या, यह लो।' कृष्ण जी आंगन से मिले ओसारे में बिछी पलँग पर धम्म से लेट रहे। अब मैं न हिलूँगा, न डुलूँगा, न बोलूँगा, न कहीं जाऊँगा, न खाऊँगा, न वंशी बजाऊँगा जिसमें तुम्हें कोई उलाहना न सुनना पड़े।

यशोदा और गोपियों ने इसे कृष्ण का एक नाटक ही समझा और इस ओर कोई ध्यान न दिया। परन्तु जब क्षण के पश्चात घंटे, घंटों के पश्चात प्रहर और प्रहरों के पश्चात दिवस बीतने लगे तब सम्पूर्ण व्रज में चिन्ता छा गई।

क्रमशः श्री कृष्ण जी बहुत ही दुर्बल हो गए। बुलाने पर भी वे न बोलते और न आंखें खोलते। यशोदा बहुत ही चिन्तित हो उठीं। वैद्य ज्योतिषी और ज्ञानी ऋषि बुलाए जाने लगे कि श्री कृष्ण जी के प्राणों की रक्षा हो। हाय अब क्या किया जाय? सभी गोप गोपियां चिन्तित हो उठीं।

क्या उपाय किया जाय कि श्री कृष्ण के प्राणों की रक्षा हो, वे पलँग छोड़ें। पुनः मोर मुकुट, बन माल; वंशी और चक्र धारण करें, पुनः बन में गौओं को लेकर चराने जायें। हाय! अब वे दिन क्योंकर लौटें?

जो भी आता यशोदा उससे पूछतीं—'कोई उपाय है? कृष्ण की रक्षा का कोई उपाय है?' और उन्हें कोई उत्तर न मिलता।

—क्रमशः

सुशिक्षिता स्त्री

सुशिक्षिता स्त्री ही पुरुष की सच्ची हितैषिणी होती है। उसका पातिव्रत स्वर्गीय तेज की भांति चमकता रहता है, उसका पति उसका पूर्ण विश्वास करता है और वह भी उस विश्वास का कदापि दुरुपयोग नहीं करती। वह निरन्तर ही अपने पति के कल्याण की कामना करती है, पति के सुख में ही सुख और उसके दुःख में दुःख मानती है।

—बिशप हौर्न

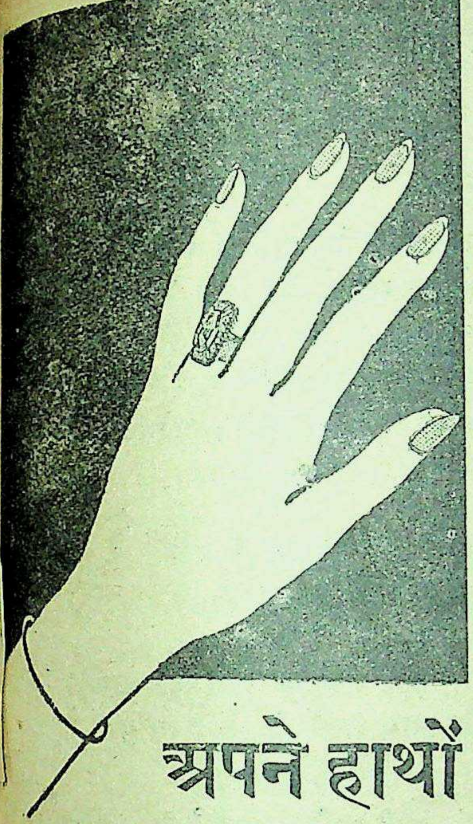

लेखिका,
श्रीमती श्यामा बाई

अपने हाथों को स्वच्छ व सुन्दर रखिये

सुन्दर अच्छे हाथ केवल उन्हीं स्त्रियों तक सीमित नहीं हैं जो काहिली में अपना समय व्यतीत करती हैं और जिन्हें कुछ नहीं करना पड़ता। बीते युग में बेशक उनके हाथ सुन्दर और अच्छे समझे जाते थे। क्योंकि हाथों से काम करने वाली स्त्रियां अपने हाथों की कोई परवाह नहीं करती थीं। परन्तु उस युग में भी यदि श्रमिक स्त्रियाँ अपने हाथों को स्वच्छ और मुलायम रख सकतीं तो निश्चय ही उनके हाथ महलों में निवास करने वाली काहिल रानियों के हाथ की अपेक्षा कहीं सुन्दर दीखते।

काम करना हाथों का व्यायाम है। व्यायाम से जैसे शरीर के अन्य भाग सुन्दर और सुडौल दिखते हैं वैसे ही हाथ भी सुन्दर दिखते हैं।

आप अपनी किसी सहेली की ओर देखिये जो हाथों से काम तो लेती हैं परन्तु उनकी स्वच्छता का ध्यान नहीं रखती। आप देखेंगी कि उसका मुख तो सुन्दर और आकर्षक है परन्तु उसके हाथ भद्दे और वृद्धा के से हैं। मैंने देखा है, सामाजिक समारोहों में या साधारण शिष्टाचारिक भेंट-मुलाकातों में भी कुछ स्त्रियाँ चाय के लिये अपना हाथ बढ़ाने में भी शर्माती हैं। क्योंकि वे जानती हैं कि उनके हाथ भद्दे और कुरूप हैं।

गृहकार्य और हाथों की स्वच्छता

आज के युग में ऐसे साधन हैं कि सभी स्त्रियाँ गृहकार्य के बाद अपनें हाथों को सुन्दर और स्वच्छ रख सकती हैं।

अपने एक हाथ की हथेली पर थोड़ा-सा सरसों का तेल गिरा लीजिये, फिर इसे दोनों हाथों पर, सभी अँगुलियों पर, नाखूनों के पोरों के बीच में, कलाई पर फैला लीजिये। फिर हाथ धोकर स्वच्छ तौलिये से पोंछ लीजिये। बस आपके हाथ स्वच्छ और सुन्दर दीखेंगे।

बाग में मिट्टी खोदने, बर्तन माँजने या अन्य ऐसे ही कामों में नाखूनों के नीचे मैल भर जाती है। थोड़ी-सी सावधानी से आप इस मैल से मुक्ति पा सकती हैं। कोई इस प्रकार का काम करने से पहले नाखूनों से साबुन खुरच कर उनके अन्दर साबुन भर जाने दीजिये। फिर चाहे जो काम कीजिये नाखूनों के अन्दर मैल नहीं जमा होगी। और काम कर चुकने पर हाथ धोने से साबुन अपने आप रही सही मैल भी लेकर निकल जायगा।

नेल पालिश छुड़ाना

बहुत-सी स्त्रियाँ नेल पालिश लगाती हैं। मैं इसे स्वच्छ और सुन्दर हाथों पर एक मैल ही समझती हूँ तथापि जो इसकी आदी हैं उनसे मैं कहना चाहती हूँ कि वे अपना 'एमरी बोर्ड', 'नेल पाईल', 'औरेंज स्टिक', 'पालिश रिमूवर', 'नेल-ब्रश' और अपनी रुचि की नेल पालिश हर समय तैयार रखें। इस बात का ध्यान रखें कि आपकी नेल पालिश लिपस्टिक से मिलती-जुलती हो और आपकी पोशाक के साथ मैच करे। कम से कम सप्ताह में एक बार नाखूनों को अच्छी तरह अवश्य साफ करें। पालिश रिमूवर से एक रुई का टुकड़ा तर करके उसकी गोली बना कर उससे नाखून पर से पालिश छुड़ावें एमरी बोर्ड से नाखूनों को सँवारें। फिर नाखूनों पर ब्रश चलावें। फिर साबुन से घुले गर्म पानी में नाखूनों को कुछ मिनट डुबोये रख कर हाथ साफ करें। फिर ओरेंज स्टिक में रुई लपेट कर उससे नाखूनों का मैल साफ करें।

नेल पालिश लगाना

शीशी को हिला कर खोलिये। ब्रश को पालिश से तर कीजिये। मेज पर अपनी अँगुलियों को फैला कर हथेली के बल जमाइये। एक बार में नाखून के अर्द्ध चन्द्र को पालिश से रँगिये। तब फिर शेष भाग को रँगिये। पालिश को आंच दिखा कर या मुँह से फूक कर सुखाने की चेष्टा मत कीजिये थोड़ा धैर्य से पालिश के सूखने की प्रतीक्षा कीजिये।

रङ्ग को गहरा करने के लिये और उसे टिकाऊ बनाने के लिये जब पालिश की पहली परत सूख जाये तब उस पर दूसरी परत चढ़ाइये।

कुछ इशारे

यदि आप नेल पालिश की शौकीन नहीं हैं तब आपको इन झंझटों में पड़ने की आवश्यकता नहीं है परन्तु तब भी यह सावधानी तो बर्तने की आवश्यकता है ही कि आपके हाथ स्वच्छ और सुन्दर दीखें इसके लिये यहाँ कुछ इशारे दिये जाते हैं।

करें

१—यदि आप खरीद सकती हैं तो हाथ गंदे होने वाले कामों को करते समय रबर के दस्ताने पहना करें।

२—कोई काम करने से पहले हाथों में तैल लगा लें और काम करने के बाद साबुन से हाथ धो डालें।

३—कभी-कभी डाईक्रोजन प्रोक्साईड में नाखूनों को डुबो कर थोड़ी देर बाद धो डालो।

४—गर्म पानी और साबुन से मैले हाथ धोवें और ऊपर से कोई क्रीम लगावें।

५—यदि हाथ में चिकनाई लगी हो तो उन्हें साबुन से अच्छी तरह धोवें और तब कोई क्रीम लगा लें।

मत करें

१—आलपीन या चाकू की नोक से नाखूनों के अन्दर की मैल निकालने की चेष्टा मत करें।

२—अपने हाथों का शृङ्गार दान किसी सहेली को कदापि प्रयोग करने के लिये मत दें। क्योंकि इससे उसी को या आपको हाथों के छूत के रोग हो सकते हैं।

३—अपने नाखूनों को सार्वजनिक स्थान या घर में दाँतों से मत काटें।

वेदों में स्त्रियों की प्रतिष्ठा

लेखिका, श्रीमती कान्तिदेवी मिश्र

'स्त्री शूद्रो न धीयताम्' की भावना चाहे जिस विचार से प्रचारित की गई हो; किन्तु वैदिक धर्म में नारियों की महत्ता उन शब्दों से प्रकट होती है, जो वेदादि शास्त्रों और पुराणों में उनके लिये प्रयोग में आये हैं। स्त्री के लिये प्रयुक्त देवी शब्द का अर्थ दिव्य गुण सम्पन्ना नारी है, जो अपने दिव्य गुणों और कार्य प्रणाली से दूसरों को आकर्षित कर सके। वेदों तथा अन्य आर्य ग्रन्थों में नारी को सरस्वती, विदुषी, बुद्धिमती, शक्ति, लक्ष्मी, नारी, गृहपत्नी, धर्मपत्नी, सखे (मित्र) पृथ्वी अनेक प्रकार की वस्तुयें देने वाली उत्पत्ति का साधन, सत्य और पवित्रता की देवी प्रशंसा और स्तुति करने के योग्य आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। इस से स्पष्ट है कि भारत में वेदकालीन स्त्रियों का सम्मान एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस्लाम और ईसाई धर्म में स्त्रियों को पैगम्बर का पद प्राप्त नहीं हुआ। परन्तु वेद में कितनी ही स्त्रियां वेदवक्ता और मन्त्रद्रष्टा ऋषि हो गई हैं। इनमें से कुछ की नामावली इस भांति है। घोषा, उपाला, विशोद्रा निशद, विजटा लोपामुद्रा, यमी, मेधा, इन्द्राणी इन्दुमती सरमा, सावित्री, मैत्रेयी, गार्गी आदि। यह विदुषियाँ ब्रह्मवादिनी, आचार्या आदि श्रेष्ठ नामों से सम्बोधित की जाती थीं। वे अपने प्रखर ज्ञान से बड़े-बड़े ऋषि मुनियों को स्तम्भित और आश्चर्यचकित कर देती थीं। वे नाम मात्र के लिये ब्रह्मवादिनी और आचार्या न थीं, वरन् उनके स्वरचित सूत्र वेदों में यत्र-तत्र पाये जाते हैं।

अनेक वेद मन्त्रों में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में स्त्री-शिक्षण का तत्व सुन्दर रीति से प्रतिपादित किया गया है—'गृह पत्नी यथा सो' 'ऊँ सम्राज्ञी श्वसुरे भव'। अर्थात् तुम गृह की स्वामिनी हो। तुम ससुराल में चक्रवर्ती महारानी के समान और अधिकार पूर्ण महत्ता के साथ व्यवहार करो। हे स्त्री! सुबुद्धिपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर विशेष ज्ञान सम्पन्न हो और स्वकीय आचरण अत्यन्त ज्ञानयुक्त तथा परम पवित्र रखते हुए 'दीर्घायुत्वाय शतशरदाय।' अर्थात् शत वर्ष तक दीर्घायुष्य प्राप्त करो। सेओरान्ति सूर्य भगवान् तुम्हें पूर्ण आरोग्य सम्पन्न और दीर्घायु करें। वेद की यह आज्ञा स्त्रियों का स्वगृह में अत्यन्त अधिकार, बहुमान तथा सत्कार स्पष्ट रीति से घोषित कर रही है। 'सूर्य तुम्हें आरोग्य सम्पन्न करें। अर्थात् हे स्त्रियों! तुम घर की चहार दीवारी के बाहर सूर्य प्रकाश में आओ।' इस वेदाज्ञा से पर्दा प्रथा की अनावश्कता लक्षित हो रही है। पर्दा प्रथा के ही कारण क्षय रोग ग्रस्त भारतीय नारियों का समूह दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि सूर्य के प्रकाश से दुस्साध्य क्षय रोग भी नष्ट हो जाता है।

वैदिक काल में स्त्रियों को वेद का पृथक् यज्ञ का गायत्री पुरश्चरण तथा उपनयन का भी अधिकार था। सीता, सावित्री, दमयन्ती, अनुसुइया, लोपामुद्रा, सुभद्रा, रुक्मिणी, द्रौपदी, लीलावती आदि असंख्य महान् सती, तेजस्विनी, विदुषी स्त्रियों के प्रमाण रामायण, महाभारत, भागवत आदि ग्रन्थों में पाये जाते हैं। श्री व्यास जी ने द्रौपदी का वर्णन 'प्रिया च दर्शनीया च पंडिता च पतिव्रता' कह कर किया है। सती सावित्री ने किस प्रकार यमराज से विद्वत्ता पूर्ण एवम् मधुर वाद-विवाद कर मृत्युपाश से सत्यवान को बन्धन मुक्त किया; यह कथा सर्वसाधारण में विख्यात है।

प्राचीन काल की स्त्रियां कितनी विदुषी शीलवती तथा अधिकार सम्पन्ना थीं यह उपयुक्त विवेचन से

सूर्य ग्रहण और कुरुक्षेत्र

भारत के कोने-कोने से लाखों यात्री प्रति वर्ष कुरुक्षेत्र की यात्रा करने आते हैं।

कुरुक्षेत्र महाभारत की युद्ध स्थली है। गीता का उपदेश यहीं हुआ था। यहाँ के मन्दिर और खंडहर पुराने इतिहास की याद दिलाते हैं। यात्रियों की श्रद्धा और कथा कीर्तन में महाभारत का युग आज भी जीवित है। पुरानी संस्कृति की धारा यहाँ आज भी अजस्र रूप से प्रवाहित हो रही है।

सूर्य ग्रहण के समय सहस्रों श्रद्धालु स्त्री-पुरुषों ने पवित्र मन्त्रों की ध्वनि के साथ कुरुक्षेत्र के विशाल सरोवर में स्नान किया।

इतिहास प्रसिद्ध थानेश्वर नगर के खंडहर भी कुरुक्षेत्र सरोवर से लगभग १ मील पर ही हैं। ७वीं शताब्दी में थानेश्वर सम्राट् हर्ष वर्धन की राजधानी थी। आज भी इसके खंडहरों को देख कर कोई भी कह सकता है कि यहाँ कभी विशाल और समृद्ध नगर रहा होगा। हर्ष वर्धन के लगभग ५०० वर्ष बाद, पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी की कई लड़ाइयां इसी नगर के पास हुईं।

जहाँ द्रौपदी स्नान करती थी

कुरुक्षेत्र का सरोवर संसार में सबसे बड़ा है। यह ६२ लाख वर्गफुट में फैला हुआ है और इसमें असंख्य कमल खिलते हैं। ताल के बीच में श्रवणनाथ का मन्दिर है। ताल के बीच में एक छोटा-सा टापू और है जिस पर कई प्राचीन स्थान हैं। इनमें से मुख्य द्रौपदी-कूप है। यहाँ एक मन्दिर है और पास ही वह कुआं बताया जाता है। जहाँ द्रौपदी स्नान करती थी। इसी टापू पर औरंगजेब की वह गढ़ी है जिसमें यात्रियों से जजिया वसूल करने के लिये सैनिक रहा करते थे। किनारे से इस टापू तक एक पुल बँधा है। सन्निहित ताल यहाँ का एक और सरोवर है। सूर्य ग्रहण के समय इसी में स्नान करने का सबसे अधिक महात्म्य माना गया है। स्थानेश्वर मन्दिर और उसके पास का ताल भी बहुत पवित्र माना जाता है। इस ताल में कछुए बहुत हैं और इसके पानी में घावों को अच्छा करने का गुण बताया जाता है।

जहाँ गीता का उपदेश हुआ था

'ज्योतिसर' यहाँ का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके किनारे एक बहुत प्राचीन वट वृक्ष है। कहा जाता है कि इसी के नीचे भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता उपदेश दिया था। यहाँ महाभारत के युद्ध के विभिन्न दृश्यों की बहुत सी मूर्तियाँ हैं। शिव के शरीर पर खड़ी काली की मूर्ति बहुत सुन्दर है।

थानेश्वर से लगभग ४ मील दक्षिण पश्चिम में 'वाण गङ्गा' है, जिसे शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म-पितामह की प्यास बुझाने के लिये अर्जुन ने पृथ्वी में वाण मार कर निकाला था। वाण गङ्गा भी अब एक ताल के रूप में है।

कुरुक्षेत्र के प्रदेश की सुन्दरता सूर्यास्त के बाद प्रकट होती है। संध्या का अन्धकार चारों ओर के दृश्य पर स्तब्धता का पर्दा डाल देता है और अतीत की स्मृतियां सजीव होने लगती हैं।

सिद्ध हो जाता है। सम्भव है, कि स्वार्थियों को इन का वर्चस्व स्वीकार न हुआ हो, तभी उन्होंने 'स्त्री शूद्रो न धीयताम्' खींच तान करके लिख दिया हो। जिस समय यह सिद्धान्त निर्माण किये गये, उसी समय से स्त्रियों और साथ ही देश की अवनति का भी श्रीगणेश हुआ। कट्टर धार्मिक रूढ़ि वादियों ने उन्हें चहार दीवारी में बन्द कर उनके प्रगति मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। जिस राष्ट्र की स्त्रियां दीन-हीन और अज्ञान हैं; वह राष्ट्र कदापि उन्नति नहीं कर सकता। किसी भी देश के लिये यह आवश्यक है, कि उसकी स्त्रियां पढ़ी-लिखी हों; क्योंकि स्त्रियां ही बालक और बालिकाओं की प्रथम गुरु होती हैं, जिनसे राष्ट्र का निर्माण होता है।

यहाना बुडे लिखित नार्वे की एक प्रसिद्ध कहानी

स्वप्न-भङ्ग

[१]

'आज प्रातः श्री चार्लस राबर्ट से मेरी भेंट हुई थी, उन्होंने तुम्हें नमस्कार भेजा है......।'

जब ईवाना अपने पति को चाय की प्याली आगे बढ़ाकर दे रही थी उस वक्त उसने नजरें हटा कर ईवाना से इतनी बात कही।

ईवाना ने अपनी उदास आंखों को उठा कर मकान के सामने की फुलवारी की तरफ देखा। उस समय रंग-बिरंगे फूलों पर सूर्य की स्वर्णिम किरणें अपूर्व छटा दिखला रही थीं।

'अच्छा क्या वे आजकल यहीं हैं?......' वह बोली।

'यहां तो वह बहुत दिनों से हैं किन्तु वे नगर के पूर्वी भाग में ठहरे हुए हैं। वैसे भी वे बड़े ही एकांत-प्रिय व्यक्ति हैं। कचहरी की बार-लाइब्रेरी में अक्सर उनसे भेंट हो जाती है। मगर अब बातचीत से मालूम हुआ कि वे फ्रेजलैंड के रहने वाले हैं और तुम दोनों में बचपन से काफी जान पहचान है।'

'हाँ ठीक है, हम लोगों के घर एक ही गांव में थे। उनके पिता हमारे गांव के पादरी थे। क्या राबर्ट ने शादी कर ली है?'

'नहीं अभी तक तो नहीं। मगर उनकी उम्र अभी इतनी ज्यादा भी तो नहीं है। इस छोटी उम्र में ही उन्होंने वकालत में काफी नाम कमा लिया है।'

'वह मुझसे दो साल बड़े हैं—उनकी उम्र तीस वर्ष के लगभग होगी।'

'हाँ, इतनी ही होगी। अच्छा अब तो जा रहा हूँ। रात को लौट कर नहीं आऊँगा।'

'अब मैं जा रहा हूँ, रात को लौट कर नहीं आऊँगा......।'

ईवाना इस तरह की प्यार से शून्य रूखी-रूखी बातें अपने वैवाहिक जीवन के इन लम्बे १० वर्षों में शुरू से ही सुनने की आदी हो गई थी। अपने पति के रूखे स्वभाव से अब वह भली भांति परिचित थी। किन्तु आज उसको उस वाक्य ने न जाने क्यों इतना उदास कर दिया। पति के चले जाने के बाद वह बड़ी बेदिली से बच्चों के खाने-पीने की वस्तुएँ मेज पर सजा कर रखने लगी। किन्तु उसकी कल्पना उसको अनुभूतियों के ऊबड़-खाबड़ से निकालती हुई उसे अपने गांव की पुरानी गलियों में ले गयीं, उसी गांव में जिसके शांत वातावरण में वह राबर्ट के साथ खेला करती थी। कैसा मासूम और पवित्र प्यार था उन दोनों में। फिर उन्हीं गलियों में उन का प्रेम पल कर जवान भी तो हो गया था। उसके बाद वक्त ने ऐसी करवट बदली कि राबर्ट गांव से शहर की यूनिवर्सिटी में पढ़ने को चला गया और इस बीच में ईवाना का विवाह हो गया। उसके बाद उसके गांव की सारी जिंदगी अतीत का एक सुन्दर-सा सपना बन कर रह गई।

उसका विवाह हुए दस साल हो गये थे किन्तु इस दीर्घावधि में कभी एक क्षण के लिये भी वह सच्ची मुहब्बत प्राप्त न कर सकी थी। बचपन के वे सुहाने दिन और उनमें अपने प्यारे साथी राबर्ट की स्मृतियां बार-बार उसके दिल में चुटकियां भरने लगीं। खेल-कूद के समय भी राबर्ट अपनी उदास आँखों से उसे घूरता रहता था; उन आंखों में जैसे उसके प्यार के सच्चे दीपक जल रहे होते। लेकिन वह कितनी व्यङ्ग पूर्ण हँसी से उनका मजाक उड़ाया

करती थी। आज उसको अपने सीने में अपने बचपन की ईवाना उछलती-कूदती हुई महसूस हो रही थी।

एकाएक बच्चों के शोर ने उसके कल्पना के स्वप्नों को भंग कर दिया और वह कमरे के अन्दर चली गई।

टैडी और ईमा—

टैडी माँ की गोद में आकर बैठ गया और ईमा ने उसको पीठ पर चढ़ कर अपनी नन्हीं-नन्हीं कोमल बांहें उसके गले में डाल दीं। ईवाना की सूखी जिंदगी में जैसे एकाएक मधुमास आ गया। उसके बच्चे अपनी-अपनी किताबें लेकर उसके पास बैठ गये। एक अपना पाठ सुनाने लगा और दूसरे ने अर्थ पूछने शुरू कर दिये।

[२]

सरदियों की सुबह—

शहर की चौड़ी सड़क पर सूर्य की मीठी-मीठी रोशनी बिखरी पड़ी थी। सड़क के किनारे धूप की ओर पीठ किये एक भिखारी बड़े दर्दीले शब्दों में भीख मांग रहा था। अखबार बेचने वाला बड़ी ऊँची आवाज में गला फाड़-फाड़ कर अखबार की सुरखियाँ बतला रहा था। सड़क की दोनों पटरियों पर धीरे धीरे भीड़ बढ़ती जा रही थी।

ईवाना एक रिश्तेदार के यहाँ से अपने पति के साथ लौट रही थी। थोड़ी दूर तक साथ आकर उसके पति ने कहा—'यहाँ अपने एक वादी के साथ मुझे काम है। तुम्हें अकेले घर जाने में कोई इतराज तो नहीं?'

'नहीं बिलकुल नहीं।'

ठीक उसी समय सड़क की दूसरी ओर भीड़ में बढ़ते हुए एक व्यक्ति पर ईवाना की नजर पड़ गई। उसके अगले क्षण ही दोनों की नजरें आपस में टकराईं और ईवाना ने शरमा कर अपनी आँखें नीचे झुका लीं।

फिर जब उस व्यक्ति ने सड़क पार करके उन्हें टोपी उतार कर नमस्कार किया तो ईवाना ने प्रतिनमस्कार कहने के लिये एक बार फिर नजरें ऊपर उठाई।

और उस व्यक्ति की गहरी नजर जैसे ईवाना के सीने के अन्दर दूर तक उतर गई—उसकी वे घायल किन्तु शांत आँखें। ईवाना इन आँखों से अच्छी तरह परिचित थी।

उसके पति से इधर उधर की दो चार बातें कह कर वह व्यक्ति एक बार फिर ईवाना की ओर देखकर नमस्कार कह कर आगे बढ़ गया।

उसके पति ने कहा—'राबर्ट कैसा सभ्य और सुसंस्कृत मित्र है? उसका व्यवहार देखा, तुमने?'

ईवाना अपने विचारों के संघर्ष में खोई हुई न जाने क्या कह गई, उसे मालूम ही नहीं हुआ। 'मैंने अखबार में पढ़ा है कि राबर्ट एक भारी मुकदमा लड़ने एमस्टर्डम जा रहा है। बड़ा खुश किस्मत आदमी है।'

'अच्छा तो मैं चलता हूँ।' यह कह कर उसका पति सड़क के एक मोड़ से घूमता हुआ आँखों से ओझल हो गया।

ईवाना खोई हुई सी चलती रही। उसका तन-मन जैसे एक दिवा स्वप्न में डूबा हुआ था।

अगर वह अकेली होती और उससे भेंट हो जाती तो वह न जाने कितनी बातें करती—अपनी गांव की बातें, बचपन की बातें और न जाने कितनी ही बातें।

ईवाना के तेज डग अपने आप सुस्त होने लगे। वह अपने मकान की फुलवाड़ी के एक छोटे फाटक तक पहुँच गई। अचानक एक परिचित आवाज ने उसे चौंका दिया। उसने आँखें उठा कर देखा, सामने राबर्ट खड़ा था।

पहली नजर में उसे देख कर सिर से पांव तक कांप गई। उसका चेहरा लाल हो गया। उसके दिल की धड़कनें तेज हो गयीं। लेकिन जल्दी ही अपने आपको सम्हाल कर उसने सलाम किया और फिर रस्मी तौर पर पूछा—'अच्छे तो हो राबर्ट?'

उसे सम्बोधित करने के लिये ईवाना को सिवा उसके नाम के और कोई शब्द मिल ही नहीं रहा था।

और इसके उत्तर में ईवाना के दायें हाथ को राबर्ट ने अपने बाएँ हाथ में दबा लिया। ईवाना को उसके हाथ की गरम गरम सरसराहट भी अतीव परिचित प्रतीत हुई।

'क्या मैं आज तुम्हें ईवा कह कर बुलाने की धृष्ठता कर सकता हूँ।' राबर्ट ने पूछा।

'हाँ क्यों नहीं……।'

और अपने चेहरे की मुस्कराहट में अपनी हार्दिक भावनाओं को छुपाते हुए राबर्ट ने कहा—'तुम से कितने दिनों बाद भेंट हुई यद्यपि मैं एक वर्ष से यहाँ हूँ।'

ईवाना ने मुस्करा कर उत्तर दिया—'हाँ, ठीक तो है। इसलिये कि तुम अपने मुकद्दमों और ग्राहकों के चक्कर में नगर के पूर्वी भाग में ही फँसे रहते हो और मैं बाल बच्चों के साथ पश्चिमी भाग में रहती हूँ।' और फिर ईवाना स्वयमेव गम्भीर होकर कहने लगी—'जानते हो राबर्ट, पहली नजर में तो मैं तुम्हें पहचान भी न सकी। तुम कितने बदल गये हो ?'

राबर्ट ने ईवाना के गाल पर प्यार से हल्की चपत मारते हुए कहा—'बाहर से चाहे मैं कितना ही क्यों न बदला होऊँ, अन्दर से तो मुझ में कोई परिवर्तन नहीं आया।'

और ईवाना के दिल में जैसे प्रसन्नता की कलियां चटकने लगीं। वह एक अजीब मस्ती की अनुभूति के झूले में झूलने लगी।

'आज कल शाम को कहाँ घूमने जाती हो ?'

'घूमने—हाँ बाल बच्चों को साथ लेकर…।'

राबर्ट ने बात काट कर पूछा—'ओहो… अच्छा…अच्छा तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?'

'एक लड़की और एक लड़का—' ईवाना ने जमीन पर नजरें गाड़ते हुए उत्तर दिया।

और फिर दोनों कुछ क्षणों के लिये चुप हो गये।

सड़क पर बग्घियां दौड़ती जा रही थीं। फेरी वाले चीख-चीख कर अपना माल बेच रहे थे। बच्चों के झुण्ड पाठशाला की ओर भागे जा रहे थे। लेकिन यह स्त्री पुरुष कांपते दिलों से चुप खड़े थे, अन्त में ईवाना ने उस मौन को भङ्ग करते हुए कहा—'सुना है, तुम विलायत जा रहे हो ?'

'अभी तक दृढ़ निर्णय तो नहीं किया। पहले सोचा था चला जाऊँ। लेकिन अब—जाने की इच्छा पहले सी तीव्र नहीं रही।'

ईवाना फिर चुप हो गई।

'तुम आज-कल स्केटिंग करने नहीं जाती हो क्या ?'

'कभी-कभी जाती हूँ।'

'क्या आज शाम को आ सकोगी ? वहाँ आज भारी मेला है। आतिशबाजी होगी, नाच होगा, गाने होंगे, आओगी न ?

ईवाना चुपचाप धरती में नजरें गाड़े रही। 'वचन दो कि जरूर आओगी ?' राबर्ट ने जैसे ईवाना को वास्तविक भावनाओं में झांकते हुए कहा।

'वचन तो नहीं दे सकती।'

'क्यों ?'—राबर्ट ने एक बार फिर उसके कोमल हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा—'क्या तुम मुझसे डरती हो ? क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं रहा ?

ईवाना चुप थी। लेकिन उसका लाल चेहरा शर्म की लाली में डूबा जा रहा था।

राबर्ट ने उसके थरथराते हुए कोमल हाथ को धीरे से दबाते हुए कहा—'आ जाना, हाँ—आज शाम को—मुझे निराश न करना। समझीं ईवा।'

और ईवा की भावनाओं की तारों को इस तरह झंकृत करके राबर्ट चला गया।

[३]

अपने कमरे में एक मानवाकार शीशे के सामने खड़ी ईवाना अपने रूप प्रसाधन में व्यस्त थी। उसे अपने लहू में फिर से नई जवानी की उमंगे उठती

महसूस हो रही थीं। उसे ऐसा लग रहा था मानो रंगीनी और प्रकाश से भरी एक नई जिदगी के द्वार उसके सामने खुल गये हों।

इतने समय तक उसने अपने जीवन में क्या पाया था—हीनमन्यता, थकान, निराशा और घृणा। ऐसे विषाक्त वातावरण में इनके सिवा हो भी क्या सकता था।

उसकी स्थिति एक नौकरानी से अच्छी नहीं थी, एक ऐसी नौकरानी जो अपने कर्तव्य के प्रति वफादार रही हो। उसके पति ने उसे सही अर्थों में पत्नी कब माना था?

फिर एकाएक वह अपने सुन्दर शरीर की तराश और गठन देखने में मस्त हो गई। उसे अपने वातावरण के प्रति भारी घृणा, भारी असंतोष अनुभव होने लगा। आज की शाम को होने वाली भेंट के विचार से ही उसकी कल्पना में रंग बिरंगे फूल खिल रहे थे। आज वह अपनी मुरझाई हुई जिंदगी के मुख पर नयी जवानी की रङ्गत पैदा करेगी—और फिर इसमें अपराध ही कौन-सा था। वह अपने बचपन के साथी से मिल कर कुछ क्षणों के लिये अपनी आत्मा के जख्मों को सहला लेगी।

और कोट पहन कर वह एक बार फिर अपने लम्बे-लम्बे घुँघराले बालों को सँवारने लगी। एक बार फिर उसने अपनी गालों पर पाउडर का पफ लगाया और एक बार फिर अपने रेशमी रूमाल पर इत्र छिड़का। एकाएक धम से दरवाजा खुला और अपने नन्हें-नन्हें पैरों से टैडी कमरे में प्रविष्ट हुआ। टैडी ईवाना की अँधेरी जिन्दगी में आशा की एक नन्हीं सी किरण था।

'अरी मम्मी, तुम यहाँ–तुम कहाँ जा रही हो?'

'हाँ टैडी—' ईवाना ने उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए दिल ही दिल में कहा—कैसा उजला उजला, कैसा प्यारा-प्यारा भोलापन इसके चेहरे पर खेल रहा है।

'क्या तुम अभी तक खेल रहे थे?'

'हाँ मम्मी आज फिर सभी बच्चे हैरी से छेड़छाड़ कर रहे थे।...हैरी को तुम जानती हो ना मम्मी? अरे हमारे साथ के मोहल्ले में तो रहता है।'

ईवाना उसे जानती थी। उसकी मां को भी जानती थी। एक वर्ष पहले अपने पति को छोड़ कर किसी पर पुरुष के साथ न जाने कहाँ भाग गई थी।

टैडी कहने लगा—'आज सब बच्चे हैरी को उस की मां की याद दिलाकर उससे मजाक कर रहे थे।'

'वह सब बच्चे बड़े शरारती हैं, तुम उनके साथ न खेला करो।' उसकी आवाज कुछ लड़खड़ा रही थी।

'मगर वह सब बच्चे मुझे तो कुछ भी नहीं कहते। तुम उनको खाने के लिये चाकलेट दिया करती हो ना। इसलिये वे सब तुम से प्यार करते हैं।'

ईवाना ने यह बात सुन कर भोले बच्चे को अपनी छाती से लगा लिया और बार-बार उसका मुँह चूमने लगी।

कुछ क्षणों में टैडी फिर कहने लगा—'तुम कहां जा रही हो मम्मी?'

'कहीं नहीं जाऊँगी।' ईवाना ने अपने शरीर से ओवरकोट उतारते हुए कहा और इतनी बात कहते-कहते उसका रङ्ग सफेद पड़ गया। ऐसे महसूस हो रहा था जैसे मन और बुद्धि के संघर्ष के बाद वह कांपते हुए शरीर के साथ अचानक किसी परिणाम पर पहुँच गई है।

टैडी ने खुश होते हुए कहा, 'कहीं नहीं जाओगी फिर तो बहुत अच्छा है। तो मम्मी कल की उस राजकुमारी की कहानी आज समाप्त कर दोगी ना, मैं ईमा को बुला कर लाता हूँ—अभी सुनाओगी—बहुत लम्बी कहानी है ना......।'

ईवाना ने सोफे पर बैठते हुए कहा—'हाँ जाओ बेटा! ईमा को बुला लाओ।'

कोमल सा बच्चा उसी क्षण कमरे से बाहर चला गया। ईवाना उसके तेज-तेज कदमों को मस्त होकर देखने लगी और वर्णनातीत प्रसन्नता से उस का चेहरा खिल उठा।

न्यूयार्क की रूबी

जो सबको सुन्दर बनाती है

न्यूयार्क की सबसे फैशनेबुल सड़क, फिफ्थ एवेन्यू पर, ७१५ नं० का एक मकान है, इस मकान में एक रमणी रहती है जो कभी लगातार ५ वर्षों तक संसार की सुन्दरियों में सर्वोत्तम स्थान रखती थी। आज वहाँ वह रूप का व्यापार करती है और इसी की बदौलत ४ अरब रुपये की स्वामिनी भी बनी है।

इस रमणी का नाम है हेलेना रूबीन्स्टीन। वैसे इसे सामान्य रूप से रूबी कहा करते हैं। रूबी की उम्र अभी ७० वर्षों की है किन्तु सौन्दर्य के निखार में आज भी वह किसी युवती से पीछे नहीं। रूबी के दो पुत्र हैं और दोनों ही बड़े सुडौल तथा अपनी माँ की तरह ही सुन्दर हैं। वे दोनों भी अपना सारा समय अपनी माँ के व्यापार को आगे बढ़ाने में ही लगाते हैं।

रूबी का सम्बन्ध पोलैण्ड के प्राचीन राज-परिवार से है। उसकी माँ पोलैण्ड की तत्कालीन सम्राट की सगी भतीजी थीं। उनका सौन्दर्य उन दिनों समस्त यूरोप में घर-घर की चर्चा का विषय था। उन्होंने राज-परम्परा से विद्रोह कर दिया और एक अतीव सुन्दर यहूदी नवयुवक से विवाह कर लिया। रूबी इसी सुन्दर दम्पति की एक मात्र सन्तान है।

रूबी जब सयानी हुई तब यूरोप की सौन्दर्य-प्रतियोगिता में आने लगी और लगातार ५ वर्षों तक संसार की सुन्दरियों में सर्वोत्तम स्थान पाती रही। उसके बहुत वर्षों बाद उसने रूप का व्यापार आरम्भ किया और वह ऐसा चल निकला कि उस की गणना आज अमेरिका के सबसे अधिक सम्पन्न ४-५ व्यक्तियों में होने लगी है।

रूबी का शयन-कक्ष बिलास-सामग्रियों का आगार है। उसकी शैय्या में मोतियों की लरियां गुथी हैं और दीवारों में प्रकाश के लिये हीरों के जगमगाते टुकड़े। सन्ध्या समय अपने कामेट-विमान पर सवार हो वह हवाखोरी के लिये आकाश का विचरण करती है। इस विमान को खरीदने में उसने लाखों रुपये व्यय किया है।

न्यूयार्क की उपर्युक्त फैशनेबुल सड़क पर एक 'ब्यूटी सैलून' है। जिसके अन्दर आप चले जाइये; आप चाहे जितनी कुरूप हों, निकलते समय एक सुन्दर नवयुवती बन कर बाहर आयेंगी। अगर आपकी त्वचा कड़ी है तो वह क्रीम की तरह कोमल बन जायगी; बाल रूखे हैं तो रेशम से ज्यादा मुलायम हो जायंगे; गाल पीले हैं तो काश्मीरी सेव की भाँति लाल हो जायंगे और होठ यदि रसहीन हैं तो शहद की तरह सरस और मीठे बन जायंगे।

रूबी इसी सैलून की स्वामिनी है। इसकी देख-रेख में आज भी वह नियमित रूप से अपना छः घंटे समय लगाती है। अब तक वह सौन्दर्य के आठ सौ से अधिक प्रसाधनों की खोज कर चुकी है और अब भी नित्य नई खोजों में संलग्न रहती है। रूबी की सौन्दर्य-शालाएँ आज संसार भर में फैली हुई हैं जिन में से प्रति दिन प्रायः १ लाख व्यक्ति सुन्दर और सुरूप बन कर निकलते हैं।

(योगी से)

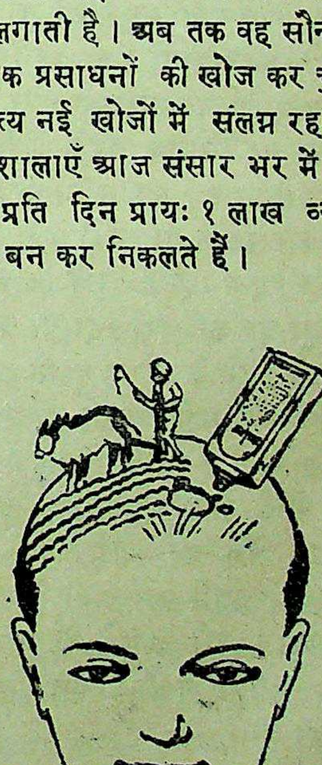

दो जिंदगियाँ

लेखक, बिल-बेलोत्सेर्कोव्स्की

सोवियत लेखक व्लादिमीर का इस वर्ष जनवरी में सोवियत जनता ने ७० वाँ जन्म-दिवस मनाया है। ललित साहित्य के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के बदले और उनके ७० वें जन्म-दिवस के अवसर पर सोवियत सरकार ने बिल-बेलोत्सेर्कोव्स्की को 'आर्डर आफ दि रेड बैनर आफ लेबर' से पुरस्कृत किया है। उनकी यह सुन्दर कहानी 'सोवियट भूमि' से उद्धृत की जा रही है।

वह वैसी ही एक सुबह थी जैसी सानफ्रांसिस्को में जाड़ों के दिनों में बहुधा देखने को मिलती है। चारों तरफ कुहरा छाया हुआ था। पीटर इस तरह चल रहा था मानो अँधेरे में राह टटोल रहा हो। लड़खड़ाता हुआ वह किसी अपरिचित घर के दरवाजे पर पहुँचता और उस घर के रहने वालों से यह मालूम करने के लिये कि वह कौन-सी सड़क है या उस मकान का नम्बर क्या है, वह दरवाजा खटखटाने या घंटी बजाने पर बाध्य हो जाता ताकि वह मालूम कर सके कि वह कहाँ है। वह कुहरे में घूर-घूर कर देख रहा था यहाँ तक कि उसकी आँखें जोर देने के कारण दुखने लगीं। पीटर उस सार्वजनिक उद्यान में पहुँचा जिसे पार करके वह अपने काम करने के स्थान पर पहुँच सकता था वह रास्ते के अन्त के निकट पहुँच चुका था कि सहसा उसे एक बेंच पर कोई काली-सी बेडौल चीज दिखाई दी। उसने सावधानी से उसके निकट जाकर उसे छुआ। उसे कराहने की आवाज सुनाई दी। पीटर ने गौर से देखा। बेंच पर एक स्त्री गठरी बनी लेटी थी।

एक ऐसा व्यक्ति जो काम न रहने पर स्वयम् भी अक्सर खुले मैदान में सोने पर मजबूर हुआ था, उस स्त्री की दशा को भली-भाँति समझ सकता था। पीटर को ऐसा लगा जैसे उसी के हाथ-पाँव जाड़े से ठिठुर गये हों, उसका अपना शरीर सर्दी से काँप रहा हो, उसका अपना दम कड़वे कुहरे से घुटा जा रहा हो; उसका सर एक दबी हुई पीड़ा से फटा जा रहा था और उसकी आँखों से आँसू छलछला आये कुछ करना आवश्यक था, नहीं तो यह सम्भव था कि वह जाड़े से अकड़ कर मर जाती।

पीटर ने उसे जगाया और सहारा देकर उसे बिठा दिया।

उसने कहा—'उठो, यहाँ तो तुम सर्दी से मर जाओगी। यह लो पच्चीस सेन्ट। वह सड़क पर आगे जाकर खाने की दूकान दिखाई देती है ना, जहाँ बत्ती जल रही है। वहाँ जाकर एक प्याला काफी पी लो और कुछ खा लो और फिर मेरे घर चली जाओ। पास ही है। यह रही मेरे कमरे की चाभी।'

झुक कर उसने उसके चेहरे को नजदीक से देखा उसकी सावधान आँखों में क्रोध की चमक थी। पर पीटर ने बात इतने सच्चे दिल से कही थी कि उस में शङ्का करने की कोई गुञ्जाइश बाकी नहीं रह गई थी। उसने उससे जल्दी करने को कहा, उससे

विनती की और उसे डाँटा। उस स्त्री के दाँत बज रहे थे; उसने पूछा कि क्या लोग उसे एक अजनबी के कमरे में घुसने देंगे।

'हाँ! हाँ!!' पीटर ने अधीर होकर उत्तर दिया 'तुम मकान मालिक को चाभी दिखाना और उस से कहना कि तुम पीटर की बहन हो। शाम को घर वापस आने पर मैं सब ठीक-ठाक कर लूँगा।'

उसने उस स्त्री को अपना पता दिया और सहारा देकर उसे खड़ा किया और उसे कई कदम चलने में सहायता दी। वह उसे सहारा देकर और आगे नहीं ले जा सकता था क्योंकि उसे काम पर पहुँचने की जल्दी थी। बड़ी मुश्किल से अपने अकड़े हुए पाँव घसीटती हुई वह स्त्री गिरती-पड़ती रास्ते पर आगे बढ़ी।

काम करते समय पीटर कुछ खोया-खोया सा रहा। उसे एक नेक काम करने की खुशी थी, शायद उसने एक स्त्री के प्राण बचा लिये थे। पर साथ ही उसे चिन्ता भी थी; वह सोच रहा था कि वह कितने दिन तक स्त्री को खिला-पिला सकेगा। वह मोटरों की मरम्मत के एक कारखाने में मजदूर की हैसियत से काम कर रहा था और उसे केवल इतनी ही तनख्वाह मिलती थी कि वह किसी प्रकार अपना पेट पाल सके। अपने लिये एक जोड़ा जूता और ओवर-कोट खरीदने के लिये वह एक-एक सेन्ट बचा रहा था। एक कोट में सारी सर्दियाँ गुजार देना कोई खेल नहीं था और उसका ओवर-आल भी काफी गंदा हो गया था। यह कोई ऐसी वैसी हँसी की बात नहीं थी। फिर भी वह एक मनुष्य को सड़क पर कैसे पड़ा रहने दे सकता था।

पीटर उस दिन शाम को जब घर लौटा तो उस ने देखा कि वह औरत बिस्तर पर लेटी है। वह अपना कोट पहने लेटी थी और उसका चेहरा लाल हो रहा था। उसकी आँखें छत को घूर रही थीं। पीटर के अन्दर आने पर भी वह जरा भी हिली-डुली नहीं। वह दरवाजे पर खड़ा हैरत से उसे घूर रहा था। उसने कहा—'गुड ईवनिंग!' पर उसे कोई उत्तर नहीं मिला। वह आगे बढ़ कर पलंग के पास गया। उस औरत को बहुत तेज बुखार था।

खाने का बंडल पीटर के हाथ से छूट गया। वह निढाल होकर एक कुर्सी में धँस कर बैठ गया और तमाम वक्त उसे घूरता रहा।

'अच्छा, अच्छा……' उसने बुदबुदाकर कहा, उसकी कुछ भी समझ में न आ रहा था। उसने सोचा था कि जब वह घर पहुँचेगा तो वह औरत घर के गरम वातावरण में आराम कर चुकने के बाद मुस्करा कर उसका स्वागत करेगी। पर उसने इस परिस्थिति की कभी कल्पना भी न की थी। वह विचार में डूब गया। एक ही चारा रह गया था कि उसे अस्पताल पहुँचाया जाये। वह उठ कर दरवाजे की तरफ चल दिया पर वह किसी तरह चौखट को पार करने के लिये अपने आपको राजी न कर सका। उसका विश्वास था कि ऐसे लाचार और फटे हाल लोगों के लिये अस्पताल केवल मरघट की पहली सीढ़ी होती है। नहीं! पीटर ने चौखट पार नहीं की। अपनी थकान को भूल कर वह कमरे को ठीक करने लगा। पहले उसने उस बीमार स्त्री के जूते और क़ोट उतारा और उसे कम्बल उढ़ा दिया, फिर उसने एक छल्ले वाला गैस का हीटर जला दिया और बिजली का चूल्हा जला कर जल्दी से उस पर भुनी हुई बीन का टीन गरम किया और जल्दी-जल्दी उन्हें निगल कर पानी की सहायता से उसे गले के नीचे उतारा और फिर अपने पाइप के दो-चार कश लगा कर जल्दी से बाहर निकल गया।

थोड़ी ही देर में वह एक नवयुवक डाक्टर को साथ लेकर लौटा। डाक्टर ने रोगी को देखने के बाद अपना सर हिलाया, नुस्खा लिखा और पीटर से अपनी फीस का एक डालर लेकर चला गया।

पीटर सारी रात उस बीमार स्त्री के पलंग के पास बैठा उसे दवा-दारू देता रहा और सुबह मकान मालिक से रोगी पर नजर रखने को कह कर जिस समय वह काम पर गया तब उसका सर भारी हो रहा था।

तीन सप्ताह गुजर गये पर रोगी के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। बार-बार डाक्टर को बुलाना पड़ता था। डाक्टर ने रक्त का सञ्चार ठीक करने के लिये कपिंग-ग्लास मँगवाये, कुछ दवायें और लिख दीं और पौष्टिक भोजन देने को कहा। पीटर ने अपने कोट और जूतों के लिये जितना पैसा बचाया था वह सब इसी में खर्च हो गया। उसके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह दूसरा कमरा ले ले; उसके इस कमरे में तो दूसरे पलंग की भी जगह नहीं थी। कमरा बदलने के लिये और अधिक किराया देना पड़ता; इसलिये उसने फर्श पर ही अपने लेटने का प्रबन्ध कर लिया। वह अपनी टाँगें पलंग के नीचे फैला लेता था। वह बहुत थक गया था और ऐसा मालूम होता था कि जैसे किसी ने उसका मुँह नोचा हो। आखिरकार जब रोगी में स्वस्थ होने के कुछ चिह्न दिखाई देने लगे तो उसके दिल पर से जैसे बहुत बड़ा बोझ हट गया।

जेस्सी तेईस बरस की थी; उस स्त्री का यही नाम था। बीमारी से उसका चेहरा क्षीण पड़ जाने के कारण वह और भी कम उम्र की मालूम होती थी। दक्षिणी प्रदेशों के रहने वालों की जिंदादिली के कारण जो उसे अपने मेक्सिको वासी पिता से मिली थी, उसकी उम्र और भी कम मालूम होती थी। जब वह मुस्कराती तो उसके मोतियों जैसे दांत चमक उठते और उसका ओजपूर्ण चेहरा और बड़ी बड़ी कुछ बाहर को उभरी हुई आँखें जगमगा उठतीं जैसे-जैसे उसके स्वास्थ्य में सुधार होता गया उस की आवाज और हँसी में उल्लास भी बढ़ता गया। उसके आने से पीटर के एकान्त नीरस जीवन के अन्धकार में जैसे चाँदनी छिटक गयी।

शाम को जब वह काम पर से घर वापस लौटता तो वह बच्चों की तरह दोनों हाथ फैलाकर 'पीटर ! पीटर !' कहती हुई बड़े हर्ष से उसका स्वागत करती।

और पीटर भी थका होने के बावजूद जवाब में बड़ी सुहृदयता से मुस्करा देता। अपनी इस मुस्कराहट के द्वारा वह जितना कुछ कह देता था उतना शब्दों से भी न कह सकता था।

पर इस बीच में पीटर पर कर्ज चढ़ गया था। वह प्रायः रोटी और काफी पर ही जीवन व्यतीत कर रहा था। उसकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी पर वह दिखाता यही था कि उसे भूख नहीं लगी है और यह कि काम खत्म करने के बाद तीसरे पहर दिन का खाना खाने की तो उसकी आदत ही है।

जेस्सी उसके लिये खाना पकाती और घर की देख-भाल करती। अपने अविवाहित जीवन में पहली बार पीटर को इस बात का ज्ञान हुआ कि स्त्री के हाथ में कितना चमत्कार होता है कि वह एक छोटे-से कमरे को भी आराम देह बना सकती है।

जेस्सी पलंग पर उसके पास बैठ कर कहती—'पीटर, क्या तुम जानते हो कि तुमसे मिलने से पहले तक मैं मरदों से नफरत करती थी। मुझे इस दुर्दशा में देख कर वे मुझसे सड़क पर छेड़खानी करने का प्रयत्न करते थे। मैं उन्हें भगा देती, उन्हें गालियाँ देती, मैं इन दरिन्दों के व्यवहार पर आग-बबूला हो जाती थी। मगर एक आदमी को भगाओ कि इतने में दूसरा आकर परेशान करने लगता था।

'बड़ी अजीब बात है', पीटर ने कंधे बिचका कर कहा। 'जब बिना कहे सड़क पर फिरने वाली वेश्याएँ मिल सकती हैं तो वे तुम्हें क्यों परेशान करते थे ?'

'यही तो बात है—ऐसा प्रतीत होता है कि वे लोग जानते थे कि मैं वेश्या नहीं हूँ। बड़े शर्म की बात है कि लोग किसी की मुसीबत का बेजा फायदा उठाने का प्रयत्न करें। वे हमारे साथ भोग-विलास करना चाहते हैं और इसमें इसका भी खतरा होता है कि वे कोई बुरा रोग हमें दे जायें।' वह सिहर उठी।

'अब मैं समझा कि उस दिन सड़क पर तुम मुझे इस तरह घूर क्यों रही थीं। तुम्हें याद है ?' पीटर ने कहा।

'पर मैंने तुम्हारे ऊपर विश्वास किया। तुम बाकी लोगों की तरह नहीं थे,' उसने उत्तर दिया और अपना सर उसके कंधे पर रख दिया। 'स्त्रियां भी मुझे परेशान करती रहती थीं।...'

'और ?'

'हाँ, उन्होंने मुझे अच्छी नौकरी दिलाने का वादा किया और साथ में रहने की जगह और खाने का प्रबन्ध मुफ्त !...' उसने कुछ देर हिचकिचा कर फिर कहा—'बार्बारा कोस्ट में।'

'क्या, वेश्याओं के मुहल्ले में ?'

'हाँ, और उन लोगों ने इसकी कितनी धूम मचा रखी है और इसकी प्रशंसा के पुल बाँध रखे हैं। वे हमेशा रोजगार के दफ्तरों के चक्कर लगाती रहती हैं। उफ, ये दरिन्दे !' इस बात को याद करके ही जेस्सी का रंग पीला पड़ गया। इन निराशा पूर्ण विचारों को दूर करते हुए उसने चिल्ला कर कहा, 'मैं शीघ्र ही अच्छी हो जाऊँगी ! मुझे काम मिल जायेगा, मिल जायगा न ? और हम दोनों हमेशा साथ रहेंगे। क्यों ठीक है न ?'

इस सुखद चित्र की कल्पना करके वह हँस पड़ती और आनन्द विभोर होकर नाच उठती, वह बैठा-बैठा उसके बालों पर हाथ फेर कर सुनता रहता और हृदय में एक मधुर पीड़ा के साथ मुस्कराता रहता।

डाक्टर ने अभी तक जेस्सी को बाहर निकल कर काम ढूँढ़ने की इजाजत नहीं दी थी और उसका आदेश था कि जब तक उसका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक न हो जाये तब तक उसे पौष्टिक भोजन दिया जाये। कहना तो आसान था पर करना बहुत कठिन था। तीन डालर एक पुराना जूता खरीदने में खर्च हो गये थे। पीटर ने अपना आखरी डालर डाक्टर को दे दिया। अगली तनख्वाह मिलने में अभी ग्यारह दिन बाकी थे। उस पर मकान मालिक का तीन हफ्ते का किराया चढ़ चुका था। ठीक से भोजन न मिलने के कारण कुछ दिन में तो वह स्वयम् भी बीमार पड़ जायेगा। तब जेस्सी का क्या होगा ? उसे भी उससे बड़ा लगाव हो गया था। कुछ ही डालर का सवाल था। पर वह इतना भी कहाँ से ला सकता था ? कहाँ से ? उसकी कुछ भी समझ में नहीं आता था। कोई और चारा न रहने पर केवल एक उपाय था। पर उसके विचार से ही पीटर की आत्मा विद्रोह कर उठती थी। हाँ, वह आखिरी उपाय था, बड़ा ही अपमान जनक रास्ता था। अपने जीवन की कठिनतम घड़ियों में भी उसने कभी ऐसे विचार को अपने दिमाग में नहीं आने दिया था। पर इस बार जेस्सी की खातिर वह ऐसा करेगा और यह बहुत बड़ा अन्तर था।

उसे अपना काम खत्म किये घंटा भर हो चुका था पर वह अभी तक अँधेरी गलियों में घूम रहा था। इक्के-दुक्के राही आकर उसके पास से गुजर जाते। उन्हें देखते ही पीटर काँप उठता जैसे उसे जूड़ी आ गयी हो। उसे ठंडे गरम पसीने छूटने लगते। वह किसी भी प्रकार अपने आपको ऐसा करने पर राजी नहीं कर पा रहा था। पर यह विचार कि जेस्सी घर पर उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी उसे लगातार कोंच रहा था।

सामने गली में एक आदमी चला आ रहा था पीटर ढीले-ढाले कदमों से उसकी तरफ बढ़ा। उसके पैरों में जैसे किसी ने सीसा भर दिया था। उसका मुँह खुल गया, उसकी सांस नहीं समा रही थी। इस बीच में आदमी धीरे-धीरे चलता हुआ उसके पास पहुँचता जा रहा था। उससे कुछ कदम की दूरी पर पहुँच कर पीटर रुक गया। उस व्यक्ति ने पीटर को आश्चर्य से देखा और सहसा पीटर को एक विनीत तथा करुण स्वर सुनाई दिया—'मेरी बीबी बीमार है, मेहरबानी करके कुछ मदद कर दीजिये।'

यह उसी की आवाज थी। वह आदमी चुपचाप उसे घूरता रहा। बहुत धीरे-धीरे उसने अपनी जेबें टटोलीं और पीटर को एक सिक्का देकर बगैर कुछ कहे आगे बढ़ गया। पीटर दीवार का सहारा लेकर

खड़ा हो गया। वह पचास सेन्ट उसके काँपते हाथों से गिरे जा रहे थे। आधा डालर!

'हे भगवान! क्या बात है?' जेस्सी ने उसे देखते ही चिल्ला कर पूछा—'डालिंङ्ग, क्या हुआ है?'

पीटर अपराधियों की तरह मुस्करा दिया, उस की आँखों में आँसू डबडबा आये थे। उसने जवाब में बुदबुदा कर कुछ कहा।

पीटर अब अक्सर शाम को देर से घर लौटने लगा। वह ओवर टाइम का बहाना कर देता। वह अपनी इस नयी भूमिका का आदी होता जा रहा था। उसकी आवाज अब काँपती नहीं थी और उस के याचना के शब्द अब ज्यादा स्पष्ट सुनाई देते थे, फिर भी लोग अनिच्छा पूर्वक उसे भीख देते थे और कभी-कभी तो उसे पुलिस की धमकी भी देते थे या जब वह याचक भाव से कहता—'मेरी बीबी बीमार है, मेहरबानी करके कुछ-कुछ मदद कर दीजिये।' तो वे उत्तर में उससे यह क्रूर मजाक करते—'क्यों, दारू से उसका इलाज करते हो?'

वे उस पर विश्वास नहीं करते थे। फिर 'बीबी बीमार है' के बजाय उसने 'बीबी मर रही है' कहना आरम्भ किया। पर उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ।

लोग उसे चिढ़ाते—'अगर वह मर रही है तो फिर क्या फायदा?'

वे उसका विश्वास इसलिये नहीं करते थे कि उसकी आवाज सहानुभूति नहीं पैदा कर पाती थी, वह राहगीरों के हृदय पर असर नहीं करती थी। क्यों? कुछ दिन बाद जाकर पीटर यह समझ पाया कि भीख माँगने का भी एक गुर होता है, उसके लिये अभिनय करना आवश्यक है। भीख माँगना भी एक प्रकार की कला है और इसलिये पीटर उसी आवाज की नकल करने लगा जो उसने उस दिन शाम को इस्तेमाल की थी जब उसे पहली बार आधा डालर मिला था। यह तरकीब काम कर गयी।

लेकिन जेस्सी को क्या हो गया था? उसके साथ कोई गड़बड़ जरूर थी। उसकी बच्चों जैसी आँखों से एक ऐसा भाव टपकता था जैसे किसी ने उसे दुःख पहुँचाया हो और वह इस भाव को मुश्किल से ही छुपा पाती थी। पीटर को उसमें कल्पना-लोक जैसी कोमलता दिखायी देती थी फिर भी वह उसके लिये एक पहेली बनी हुई थी।

'क्या बात है? तुम ठीक तो हो न?' पीटर उससे बार-बार यही पूछता रहता। 'न जाने क्यों मैं तुम में एक परिवर्तन पाता हूँ। प्रिये, बात क्या है?'

'क्यों, कुछ भी तो नहीं। तुम्हें यों ही वहम है' वह बड़ी बेपरवाही से अपने चेहरे पर मुस्कराहट लाकर उत्तर देती। पर पीटर आँखें गड़ा कर उस की आँखों में देखता और शंका के भाव से सर हिला देता; उसके हृदय में एक भय समा गया था जो उसे हर दम सताता रहता था।

और जब वह काम पर चला जाता तो जेस्सी अपने हाथ ढीले छोड़ कर बिस्तर पर बैठ जाती और भय से फटी हुई आँखों से खिड़की को घूरती रहती मानो बाहर सड़क पर कोई घातक संकट मुँह फाड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो।

कल इतवार है इसलिए सड़क पर ज्यादा देर तक रुका जा सकता है। दिन भर की सख्त मेहनत के बाद पीटर को इसके लिये बड़ा प्रयास करना पड़ता था। उसकी टाँगें टूटने लगतीं। पर उस दिन शाम को उसने भीख माँग कर एक डालर से अधिक कमा लिया।

जब वह घर वापस लौटा तो उसने दरवाजे में ताला लगा पाया। उसने खटखटाया पर कोई उत्तर न मिला। बड़ी अजीब बात थी। शायद चाभी मकान मालिक के पास हो।

'वह मेरे लिये कोई सन्देश नहीं छोड़ गयी है?' उसने पूछा।

'नहीं।' उसे उत्तर मिला।

पीटर ने दरवाजा खोला और बत्ती जला कर कमरे में नेजर दौड़ाई। मेज पर उसे एक परचा दिखाई दिया। कांपते हुए हाथों से उठा कर वह उसे अपनी आँखों के पास लाया। अक्षर उसकी आँखों के आगे नाच रहे थे और उन्हें पढ़ना उसके लिये कठिन हो रहा था। परचे में लिखा था—

'डार्लिङ्ग पीटर ! सोते-सोते तुम अक्सर बर्राया करते थे—'मेरी बीबी बीमार है, मेहरबानी करके कुछ मदद कर दीजिये।' मैं सब कुछ समझ गयी हूँ, मेरी खातिर तुम भीख माँगने लगे हो। क्योंकि मुझे तुमसे प्रेम है इसलिये मैं इतनी बड़ी कुरबानी स्वीकार नहीं कर सकती। मैं जा रही हूँ। मुझे बार्बारा कोस्ट में काम मिल जायेगा। मुझे कोई दूसरा रास्ता दिखाई नहीं देता। मुझे माफ कर देना। जेस्सी।'

और दूसरे दिन जब मकान मालिक उसके कमरे में आया तो उस समय तक पीटर तकिये में अपना मुँह दिये बिस्तर पर लेटा था।

मकान मालिक ने झुँझला कर उसका कंधा झँझोड़ा और उसका मुँह अपनी तरफ कर लिया। पीटर उसे अंधे आदमी की तरह शून्य आँखों से घूरता रहा और फिर उसने बुदबुदा कर कुछ कहा।

'क्या बात है ?' मकान मालिक ने पूछा।

'मैं उन्हें कभी माफ नहीं करूँगा।'

'किन्हें ?' मकान मालिक ने आश्चर्य से पूछा।

'उन सबको जिन्होंने मुझे भिखारी और मेरी बीबी को वेश्या बना दिया।

—

विज्ञान के चमत्कार

पहाड़ी पत्थरों से लाल मणि तैयार

स्कैनेक्टाडी (न्यूयार्क) स्थित 'दि जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी' ने यह बताया है कि पहाड़ी पत्थरों से लाल मणि तैयार की गयी है। उक्त कम्पनी के प्रवक्ता ने कहा कि भारी दबाव और तापमान द्वारा पहाड़ी पत्थरों से कृत्रिम रत्नों को तैयार किया गया है। आपने कहा कि सम्भव है इस खोज से अन्य योजनाओं को भी लाभ पहुँचे।

क्षय-रोग निरोधक नयी औषधि

अमेरिका में इस समय 'आइजोनियाजिड' नामी क्षय रोग निरोधक नयी औषधि के बारे में जो परीक्षण हो रहे हैं, उसमें वहाँ के १६ बाल स्वास्थ्य केन्द्र सहयोग प्रदान कर रहे हैं। लगभग १००० बच्चों का एक वर्ष तक उपचार उक्त नयी औषधि से किया जायेगा।

न्यूयार्क के बैलव्यू अस्पताल की डा० एडिथ लिंकन ने सबसे पहले यह सुझाव दिया था कि सम्भवतः उक्त नयी औषधि बालकों को एक भीषण किस्म के क्षय रोग से मुक्ति दिला सके। आपने यह रिपोर्ट दी है कि बैलव्यू अस्पताल में जिन बालकों को उक्त ढङ्ग के क्षय रोग के प्राथमिक संक्रमण से बचाने के लिये उक्त नयी औषधि दी गई थी, उनमें से किसी को भी क्षय रोग नहीं हुआ है। बच्चों के मस्तिष्क एवम् मेरुदण्ड नाड़ी पर सबसे पहले इस प्रकार के क्षय रोग का आक्रमण होता है बच्चों के क्षय रोगों में यह सबसे भीषण किस्म का क्षय रोग है।

इस्पात के भीतर भी देखना सम्भव

अमेरिकी वैज्ञानिकों और इञ्जीनियरों ने इस्पात के भीतर देख सकने वाले यन्त्र का निर्माण किया है। अब इस काम के लिये अणुशक्ति को प्रयुक्त किया जायेगा। इस परीक्षण यन्त्र को 'आइसोकोप' कहा जाता है और इसमें रेडियो सक्रिय कोबाल्ट ६० प्रयुक्त किया गया है। उस रेडियो सक्रिय पदार्थ को 'आइसोकोप' का नाम दिया गया है, जिसमें देखने की भी क्षमता विद्यमान हो। १० लाख वोल्ट वाली एक्स-रे मशीन को परीक्षण के लिये प्रयुक्त करने में जितना समय लगता है, उससे एक तिहाई समय 'आइसोकोप' द्वारा परीक्षण करने में लगता है।

फलों का राजा : आम

लेखक, श्री सदानन्द चेन्दवणकर

भारत के सब फलों में आम की बड़ी प्रशंसा है। उसे फलों का सम्राट कहा जाता है। उसी प्रकार अमृतफल कह कर उसका गौरव बढ़ाया गया है। आम को खाकर कभी कोई नहीं अघाता। गरीब और अमीर सभी इसका रस ले सकते हैं। शायद इसी कारण आम भारत का राष्ट्रीय फल कहलाता है।

आम भारत में सब जगह होता है। बड़े प्राचीन काल से इस फल का उपयोग होता रहा है। पुराणों में इसका वर्णन है। उसी प्रकार संस्कृत साहित्य में भी उसे स्थान मिला है। वसन्त ऋतु का प्रारम्भ आम के फूलों पर आने के काल से ही होता है। कवि कुल गुरू कालिदास ने इसे 'वसन्तदूत', 'मधुदूत', 'वसन्तद्रु', वसन्तपादपः, 'मधुद्रुमः' माधवद्रुमः आदि नाम से इसका उल्लेख किया है। प्रणय के पंडित वात्स्यायन ने इसे सुमदन मन्मथ, मन्मथालय कामशरः, रतिवल्लभः, केशवायुधः आदि नाम दिये हैं। यह फल काम क्रीड़ा का उद्दीपक है। इसलिये इसे मदन का एक शस्त्र कहा गया है। संस्कृत में इसके सुफलः, गंधबन्धु फलश्रेष्ठ, कीरेष्ट, पद्मसखा प्रियाम्बु, स्त्रीप्रियः आदि कई अन्य नाम हैं।

आयुर्वेद में आम के बारे में कहा गया है पक्वतुमधुरं, बृण्य स्निग्ध, हृद्य, बलप्रदम्।' बाग्भट योगरत्नाकर तथा वनौषधि गुणादर्श आदि नये पुराने ग्रन्थों में इस फल के, उसके वृक्ष के, फूल के, इसकी लकड़ी के, उसके छिलके के, उसके गुठली के तथा उसके पत्ते और रस के वर्णन देकर उनका उपयोग बताया गया है। उसमें यह भी कहा गया है कि २७ दिन तक आम का रस खाने से बुढ़ापा नष्ट हो जाता है।

चीनी यात्री ह्युएनत्सग ने अपनी यात्रा-वर्णन में आम के फल का सुन्दर वर्णन दिया है। हमारे धार्मिक उत्सव और अन्य खुशी के आयोजनों में आम तथा उसके वृक्ष को प्राचीन काल से ही महत्व प्राप्त है। विवाह आदि शुभ कार्यों में मण्डप आम के पत्तों से मढ़ा जाता है और यह प्रथा बड़ी पुरानी है। आजकल की तरह कीमखाब के मण्डप तब नहीं होते थे। आम की डालियों को ऊपर फैला कर मण्डप में उनकी छाया बनाई जाती थी। अभी भी कुछ खास धार्मिक विधि होम आदि के लिये आम के पत्ते तो रहते ही हैं।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति में आम का महत्व रहा है। बौद्ध धर्म में भी इसी प्रकार है। बौद्ध लोग भी आम को प्राचीन काल से धार्मिक महत्व देते आये हैं। तिब्बत के कुछ प्रदेशों में आम के वृक्ष हैं।

ऐय्याश और रसिक मुगल जब भारत में आये तब उनका ध्यान इस फल की ओर गया। इसके वीर्य वर्धन के गुण के कारण यह फल उन्हें अधिक प्रिय हुआ। मुगल शासकों ने जहाँ-तहाँ आम के बहुत से झाड़ लगवाये, जिससे बहुत आम खाने को मिले। अकबर के काल में दिल्ली में एक बगीचे में एक लाख आम के झाड़ लगाये गये थे और उसे 'लाख बाग' नाम दिया गया। यह बाग आज भी मौजूद है, किन्तु अब उसमें बहुत थोड़े झाड़ हैं। औरंगजेब को भी आम बहुत प्रिय था। उसने कई जगह आम के नाम लिख रखे हैं। उन दिनों आम को 'सुधारस' नाम प्राप्त था।

आम ने कवियों को भी स्फूर्ति दी और मधुर कविता इस पर लिखी गयीं। लावणी आई अन्य लोक गीतों में आम का उल्लेख मिलता है। अच्छे-अच्छे नाटकों में भी उसका वर्णन है।

महात्मा गांधी, वर्नार्ड शा और सतारा के राजा शाहू महाराज को आम बड़ा प्रिय था। वर्तमान काल के पं० नेहरू, माननीय मावलनकरजी, डा० जीवराज मेहता, उसी प्रकार ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय को भी यह फल बड़ा पसन्द है।

लोग मानते हैं कि आम का मौसम अप्रैल से जुलाई तक होता है। किन्तु यह गलत है। बम्बई के क्राफर्ड मार्केट में साल भर आम मिलता है। जनवरी से मार्च तक कोंकण की कैरी, मार्च से जून तक कोंकण का आम, एप्रिल से जुलाई तक सूरत का बलसाड आम, जुलाई से सितम्बर तक मैसूर के आस-पास का तोतापुरी आम और बाद में दीवाली के समय मद्रास के सेलम के पास का आम आता है। उसके बाद भी सेलम के आस-पास का रायफल नाम का आम होता है। इस प्रकार शौकीन लोग साल भर आम खा सकते हैं। किन्तु रत्नागिरी जिले का कलमी, हापुस नामक आम सबसे अच्छा माना जाता है और उसने रत्नागिरी का नाम भारत में महत्वपूर्ण बना रखा है।

हापुस जाति का आम विदेश में भी प्रसिद्ध है। किसी व्यक्ति ने पुर्तगाल में आम लगाया। उसे अल्कान्सो या हापुस नाम दिया है। सब दूर वह इसी नाम से जाना जाता है। गोवा में आम की जातियां फर्नादिन, माणखुलास, मालगीत या मालेगाय आदि नाम से प्रसिद्ध है। मद्रास में तोतापुरी, नीलम, लालबार, रूमाली आदि जातियां हैं। उत्तर प्रदेश में लंगड़ा, फसली आदि जातियां और बम्बई में हापुस, पायरी, शेंदरी काला, इसाड, कावसजी पटेल, बल, वेल्या, बलसाड आदि जातियाँ हैं। यवतमाल का बांद जाति का आम बहुत मुलायम मक्खन के समान रस के लिये प्रसिद्ध है। यह जाति अन्य स्थानों में नहीं लग पाई है और भारत में उस की प्रसिद्धि कम है। बनारस का लगड़ा पूर्णिमा का किसान भोग, मुर्शिदाबाद का खीर चपाती, सिंदुरिया नवाब परसन, बेगम पासन आदि जातियां प्रसिद्ध हैं। गुठली से जो आम पैदा होते हैं उनमें नारली, शेंदरी, राघू, खोबरी, चिकालू, गुठली, शेपू आदि जातियां हैं। इनके स्थानों पर से, रुचि पर से तथा ध्वनि पर से भी भिन्न-भिन्न नाम हैं। आकार पर से भी नाम हैं। एक जाति जो आकार में सबसे बड़ी है, उसका नाम काशी फल पर से रखा गया है।

आम के अन्दर अ, ब और क के तीनों ही जीवन सत्व है। आम शक्ति वर्धक और क्षुधा वर्धक है। साथ ही इससे पाचन-क्रिया भी शीघ्र होती है। इसे खाने से दस्त साफ होते हैं। आम रक्त वधक हैं और बढ़ा हुआ रक्त कायम रहता है। इसलिये इसे 'रक्तस्थापक' भी कहते हैं। आम खाने से मनुष्य शरीर से तथा मन से चपल होता है और उसमें उत्साह निर्माण होता है, साथ ही वजन भी बढ़ता है।

आम्र से रस, आइसक्रीम, रोटी, औटा हुआ मावा, बड़ी, अचार, मुरब्बा, चटनी आदि कई पदार्थ बनाये जाते हैं।

भारत में अभी अनुमानतः ग्यारह लाख एकड़ भूमि में आम लगे हुए हैं। मोटे तौर पर एक एकड़ में यदि बीस मान लें, तो भारत में आम के वृक्षों की संख्या करीब दो करोड़ बीस लाख है। आम के एक झाड़ में करीब एक हजार आम लगते हैं। इस हिसाब से करीब २२ अरब आम यहाँ होता है, जिसका मूल्य करीब १ अरब रुपया है। एक दर्जन आम विदेश में भेजने का जहाज का खर्च करीब आठ रुपया और हवाई जहाज से करीब २४ रुपया होता है। किन्तु आम का विदेश में व्यापार उतना लाभप्रद नहीं होता, जितना चाहिए।

इस प्रकार आम प्रकृति द्वारा भारत को दिया हुआ एक वरदान है। इस देन का हम भारतीय उचित उपयोग करें, तभी अच्छा होगा।

ब्रिटेन की महिला सेवा-संस्थाएँ

लेखक, ए० के० एस्टबरी

समाज सेवा की परम्परा ब्रिटेन में सदा ही विद्यमान रही है। हाल के वर्षों में सरकारी बीमा योजनाओं के प्रचलित किये जाने पर ऐच्छिक सहायकों का कार्य क्षेत्र अधिक विस्तृत हो गया और विशेष रूप से अधिकाधिक महिलायें समाज-सेवा के लिये आगे आने लगी हैं। ब्रिटेन में महिला समाजों का विकास और समाज-सेवा के लिये स्वयम् सेविकाओं की कार्य कुशलता इस शताब्दि की अत्यन्त महत्वपूर्ण बात मानी जाती है।

सुप्रसिद्ध 'विमैन वालन्टरी सर्विसेज' (जिसका प्रधान कार्यालय लन्दन में है) की स्वयम् सेविकाओं ने तरह-तरह के अनगिनत कामों को अपनी इच्छा से सम्हाल लिया है। इस संस्था की बहुत-सी सदस्याएँ लन्दन के २८००० उद्यानों में फूल पौधे लगा चुकी हैं। और पांच अपरिचित स्वयम् सेविकायें अफ्रीका के टैंगानाइका स्थित मूँगफली के खेत श्रमिकों के लिये सेवा-सुधार कार्य कर रही हैं। यह संस्था विदेशों में हाथ के बने जम्पर, फ्राक तथा रजाइयाँ इत्यादि बेचने के लिये एक नफा न कमाने वाली कम्पनी भी खोल चुकी हैं। इसकी सदस्यायें ऐसा सारा कार्य फालतू समय में किया करती हैं जिससे कम आय वाले लोगों को बहुत लाभ पहुँचता है।

यद्यपि वृद्ध लोगों के रहने और अच्छी तरह देख-भाल करने का उचित प्रबन्ध किया जा चुका है लेकिन उन्हें कभी-कभी अकेलापन बहुत खलने लगता है। इसलिये ब्रिटिश स्वयम् सेविकाओं ने ६५ वर्ष से अधिक आयु वाले वृद्ध जनों के मनोरंजनार्थ डारबी तथा जोन नामक क्लब चालू कर दिये हैं। महिला स्वयम् सेविका संस्था ऐसे लगभग ५०० क्लब चला रही है। जिसमें से कुछ सारे दिन खुले रह कर दोपहर के समय गरमागरम भोजन प्रदान किया करते हैं। बाकी सप्ताह में एक ही दिन खुलते हैं।

वृद्धजनों की सेवा

लन्दन के स्टैन्स्टीड लाज वाले क्लब में वृद्धजनों के लिये वृद्धजनों द्वारा ही नाटक खेले और नाटक सम्बन्धी वस्त्र फटे पुराने कपड़ों को काट-छांट कर तैयार कर लिये जाते हैं। सफल नाटक जिले के अन्य स्थानों में दिखाया जाता है। १६००० वृद्धजनों के लिये पुस्तकालय, लेटने की जगह, खेल तथा दस्तकारी-कक्ष और सङ्गीतशाला इत्यादि का प्रबन्ध किया जा चुका है। इनके उपभोक्ताओं पर हितकर प्रभाव पड़ रहा है। कई बूढ़े लोग यहाँ आने पर, चलने-फिरने, कपड़े पहनने और बिलियर्ड इत्यादि खेलने योग्य बन चुके हैं।

ब्रिटिश स्वयम् सेविकायें अवैतनिक रूप से बड़े नागरिक अस्पतालों में सहायता पहुँचाने के अतिरिक्त अनेकों छोटे-छोटे चिकित्सालयों को भी अपनी सेवायें अर्पित करती हैं। वे निवास क्लबों में वृद्धजनों के लिये भोजन पहुँचाती हैं और उन्हें अस्पताल ले जाने तथा वहाँ से निवास स्थान तक छोड़ने का काम भी करती हैं। इसी प्रकार उन्होंने विभिन्न रूप से समाज सेवा करने का अपना एक दैनिक कार्यक्रम बना लिया है।

देहातों में भी सेवा तथा सुधार कार्य के लिये अनेकों महिला संस्थायें स्थापित की जा चुकी हैं और उनकी सदस्य संख्या चार लाख तक पहुँच चुकी है।

घरेलू उत्पादन की बिक्री के लिये संस्था की निजी व्यावसायिक समितियाँ काम कर रही हैं।

जासूसी कहानी

आफताब-ऐ-हिन्द हीरा

लेखक, श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०

उदय उन दिनों कोई काम ले नहीं रहा था। उसकी तबीयत खराब थी। वह आराम करना चाहता था। उस दिन जब वह अपने ड्राइङ्ग रूम में बैठ कर टेनिसन की कविता पढ़ रहा था तो बेयरा ने कार्ड लाकर दिया। उस पर किसी हीरा जवाहरात के मालिक का नाम था—'पी० मोहन जुयेलर्स।' उदय ने यह नाम सुना था। उस ने आगन्तुक को अन्दर बुलाने को कहा। उदय को याद आया कि अभी हाल ही में इस कम्पनी का नाम सम्वाद पत्रों में छपा था, जब कि किसी महाराजा ने 'आफताब-ऐ-हिन्द' नाम का प्रसिद्ध हीरा खरीद कर इस कम्पनी को पालिश करने के लिये दिया था। हीरा, महाराजाधिराज ने तीन लाख रुपये देकर खरीदा था। आगन्तुक उक्त कम्पनी के मैनेजर तथा मालिक दोनों थे।

'कहिये मि० मोहन, आपने आज कैसे कष्ट किया? मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ।'

'उदय जी मेरा सर्वनाश हो गया है। कल सुबह के समय मेरे कम्पनी में महाराजाधिराज ने आफताब-ऐ-हिन्द पालिश करने के लिये भेजा था। उस को जरा काटना भी था ताकि और भी सुन्दर जँचे और महाराजा की अँगूठी में जड़ दिया जा सके। कल मेरे पास बहुत काम था इसलिये मैंने तै किया था कि आज उसे इतमिनान के साथ अपने सामने कारीगरों से छटवा कर पालिश करवा दूंगा।...मैंने कल शाम को हीरा को ठीक देख कर आलमारी में बन्द किया था, आज देखता हूं, हीरा नदारद है।'

कह कर वे एक मिनट के लिये रुके और माथे का पसीना एक कीमती रूमाल से पोंछा, फिर बोले, 'समझ में नहीं आता कि हीरा किस तरह चोरी गया। कल मैंने अपने सबसे योग्य मिस्त्री को हीरा दिखा कर समझा दिया था कि उसे किस तरह काटा जायगा और किस तरह काटने से उसका सौन्दर्य सबसे ज्यादा बढ़ेगा। हमारे पार्टनर मि० बी० दास भी वहीं थे। उसके बाद हीरा को आलमारी के उस खाने में रख कर बन्द किया जिसमें इसके अलावा और कोई हीरा नहीं था। ऐसा इसलिये किया ताकि कोई मिस्त्री गलती से और हीरों के साथ उस हीरा को न काट बैठे। कल शाम को हीरा अपने हाथों रख कर मैंने आलमारी में बन्द किया था। आलमारी जिस कमरे में रहती है उस कमरे में उसके एक दरवाजा है उस दरवाजे की चाबी सिर्फ मेरे और मिस्टर बी० दास के पास रहती है। इस दरवाजे के बाद ही लोहे का बना हुआ बहुत ही मजबूत गेट है जिसकी चाबी भी मेरे और मिस्टर दास के पास रहती है। कमरे के अन्दर रोशनी आने के लिये चार रोशनदान जरूर थे मगर इतनी ऊँचाई पर वे थे कि किसी इन्सान का हाथ वहाँ तक पहुँचना सम्भव न था। इसके अलावा उनमें लोहे के मजबूत सिकचे और तार की महीन जाली लगी हुई थी, जिसमें से मक्खी का भी आना-जाना दुश्वार था।'

इस कमरे से सँटा हुआ एक छोटा-सा कमरा है। उस कमरे से इस कमरे में आने-जाने का कोई रास्ता नहीं है। सिर्फ एक नाली दोनों कमरों में एक बिल्ली के जाने लायक रास्ता देता है। कमरे का जितना कूड़ा-करकट, सब इसी रास्ते से छोटे कमरे में फेंका जाता है। छोटे कमरे में भी सिर्फ

एक ही दरवाजा है। उस दरवाजे पर बन्दूकची पहरा देता है। उसकी चाबी भी सिर्फ मेरे और मि० दास के पास रहती है। उस कमरे में हम दोनों के सिवा और किसी को घुसने नहीं दिया जाता। हम दोनों कूड़ा के ढेर को अच्छी तरह जाँचने के पश्चात् फेंकने की इजाजत देते हैं। उस कमरे में भी सिर्फ छोटा-सा रोशनदान है जिसमें लोहे की सिकचें लगी हैं और क्या मजाल कि कोई उन्हें टस से मस भी कर सके।

इस कारखाने के ठीक ऊपर मेरा क्वार्टर है। किसी द्वार, खिड़की या दीवाल पर एक खरोंच भी नजर नहीं आता। आलमारी भी ज्यों की त्यों है। मगर हीरा नदारद है। किसी कारीगर ने यह हरकत नहीं की है, यह भी मैं दावे के साथ कह सकता हूँ। जब तक छुट्टी न हो किसी को उस कमरे में से जाने नहीं दिया जाता। खाना भी वहीं खाना पड़ता है—जिसकी जो मर्जी हो खाने के लिये ला सकता है।·· कमरे के आखिरी कोने में पर्दा लगा कर पेशाब पाखाने के लिये 'पाट' रक्खे हैं—लिहाजा किसी बहाने किसी आदमी को कारखाने के बाहर जाने का मौका नहीं मिलता। दरवाजे पर तीन सिपाही बन्दूक लिये खड़े रहते हैं। छुट्टी के वक्त मैं स्वयम् एक-एक आदमी की नंगाझोरी लेकर जाने देता हूँ। मैंने विलायत के हीरा-जवाहरात के कारखाने में रह कर हीरा-जवाहरात गायब करने के जितने तौर तरीके अमल में लाये जा सकते हैं, सब देख लिया है। लिहाजा मेरी आँखों में धूल झोंक कर कोई जा सकेगा यह मुमकिन नहीं।···

जब कारखाना बन्द किया तब भी एक मिनट के लिये मैंने देख लिया था कि हीरा अपनी जगह पर ही था। यह हीरा जादू से या भौतिक विद्या से किसी ने गायब किया है। मगर मुझे फिक्र तो इस बात की है कि तीन लाख रुपया देने के बाद भी हमारी कम्पनी की जो बदनामी होगी उससे कई लाख रुपये और घाटा देना पड़ेगा। उदय जी इस लज्जा से आप मुझे बचाइये। आप जितना रुपया माँगेंगे मैं आपको दूंगा।' आगन्तुक के स्वर में कातर अनुनय स्पष्ट था।

'मिस्टर मोहन आपके रुपये की चिन्ता मुझे नहीं है। मगर आज यह मामला मुझे दिलचस्प मालूम होता है इसलिये मैं इस मामले की जांच करूँगा। आइये पहिले आप मुझे अपने कारखाने को दिखाइये।' उदय उठ खड़ा हुआ और मानसिंह को साथ लेकर मिस्टर मोहन के मूल्वान मोटर पर जा बैठा और थोड़ी ही देर में एक विशाल भवन के पास आ पहुँचा। यही था पी० जुयेलर्स का कारखाना। उदय जब अन्दर दाखिल हुआ तब उस समय कारीगर लोग अन्दर जा रहे थे। सबके हाथ में एक-एक टिफिन का डिब्बा व कटोरदान हाथ में था। कटोरदान भी तरह-तरह के थे किसी में दो डिब्बे किसी में तीन और किसी में चार डिब्बे थे। मानसिंह ने कहा उदय देखो कारीगरों में भी कितने किस्म के लोग हैं कोई साहब ने तो कटोरदान का डिब्बा इस बुरी तरह से बन्द कर रक्खा है और पीतल के डिब्बे में खाने की चीजें रख छोड़ा है कि जिससे बीमार पड़ जाने का बहुत डर है और कोई साहब तो ऐसे हैं कि अपने कटोरदान के निचले हिस्से में छेद बना कर हवा जाने-आने के लिये रास्ता बना रखा है ताकि खाद्यपदार्थ सड़ न जाये। उदय ने मुँह फेर कर देखा कि दो आदमी अन्दर घुस रहे थे। एक हाथ में एक पीतल का कटोरदान जिसके डिब्बे बहुत दबे हुए थे लिये थे और उनके पास ही दूसरा आदमी एक ऐसा कटोरदान लिये था जिसके निचले हिस्से में छोटे-छोटे छेद बने थे।

सब कुछ देखने के बाद उदय ने फर्श पर से कुछ चुन कर उठाया उसके बाद हँस कर मि० मोहन से बोला—'खाने की बैचित्र भी कुछ कम नहीं है मि० मोहन व कोई-कोई कारीगर कच्ची खिचड़ी भी टिफिन में खाता है ?'

'कच्ची खिचड़ी ?' साश्चर्य मि० मोहन बोले।

'जी हाँ ! उदय बोला—'यह देखिये, मेरा मत-

तब कच्चा चावल और दाल से है ?' कह कर उदय ने हथेली पर चन्द चावल व दाल के दाने मि० मोहन को दिखाया।

उदय ने फर्श को अनुपरिक्षण के सहारे देखना शुरू कर दिया था। अपने ही मन में वह बोला—'यह क्या है ?'

मानसिंह ने झुक कर देखा और बोला—'महीन बालू है। मालूम पड़ता है किसी कारीगर के जूते में लग कर यहाँ आ गया है।'

मि० मोहन ने कहा—'मगर यह तो शीशे का महीन चूर्ण मालूम होता है उदय जी ! मेरे कारखाने में शीशे का बुरादा कहाँ से आया ?'

उदय उधर कोई ध्यान न देकर बोला—'मि० मोहन मैंने कुल देख-सुन लिया है, अब सिर्फ मुझे आपके उस 'कूड़ाखाना' को देखना है जिसके साथ इस कमरे का योगायोग केवल एक नाली के सहारे है।'

सब लोग उस कमरे में गये। वहाँ उल्लेख योग्य कोई बात नहीं नजर आया। केवल एक जगह से बहुत मुलायम थोड़ी-सी रेशमी रुई उदय ने उठा कर कागज में मोड़ कर जेब में डाल लिया।

'कुछ भेद पता लगा ?' उत्कण्ठित मि० मोहन ने पूछा।

'मेरा ख्याल है भेद में पता लगने लायक कुछ बाकी नहीं रह गयी है...हाँ हीरा का मिलना ज्यादा जरूरी है।

कारखाने से बिदा लेकर उदय जब निकला तो घर न जाकर बाहर एक होटल में बैठा। मानसिंह को तब समझने में आया जब उदय कुछ दूरी पर रह कर छेद वाला कटोरदान लिये कारीगर जो निकला तो उसका पीछा करने लगा।

उसके घर पहुँच कर ज्यादा धमकी देने की जरूरत नहीं हुई कि हीरा मिल गया।

× × ×

मि० मोहन जब दस हजार रुपये का चेक उदय को मेहनताना के बाबद देने आये तो उदय ने लौटा दिया और कहा—'मेरी फीस एक हजार रुपये रोज की है। मैं सिर्फ एक हजार रुपये लूँगा मिस्टर मोहन।'

उसके बाद उदय ने कहना शुरू किया—'आपके कारखाने को देखकर इतना तो मैं समझ गया कि बाहरी चोर का मजाल न था कि किसी तरह अन्दर दाखिल हो सके। कारीगरों की नङ्गाझोरी जिस कसरत के साथ ली जाती है उससे मुमकिन न था कि कोई कारीगर अपने साथ हीरा बाहर ले जा सके।

छेद वाला टिफिन कैरियर, चावल, दाल और रेशमी रुई ने भण्डा फोड़ कर दिया। शुरू में तो मेरे समझ में नहीं आया था सिर्फ शुबहा ही हुआ था। मगर जिसे आप लोगों ने रेशमी रुई समझा था वह कबूतर के पर के रोयें थे। अब मैं समझ गया कि कटोरदान में वह कबूतर लाया गया था। आते समय कारीगरों की तलाशी ली नहीं जाती थी। चावल वगैरह उसी चिड़िया के खाने के लिये कटोरदान में था। उसके पाँव में असली 'आफताब-ए-हिन्द' बाँध कर नाली के रास्ते पास वाले कूड़ाखाने में भेज दिया गया। वहाँ से चिड़िया रोशनदान में से बाहर उड़ गई। कारखाने के कमरों में रोशनदान में जाली लगी थी। इधर पकड़े जाने के डर से कारीगर ने एक नकली 'आफताब-ए-हिन्द' जैसा हीरा उस खाने में आलमारी में रख दिया।

जब आपने कारखाना बन्द करते समय क्षण भर के लिये आलमारी खोली तो आपको स्वप्न में भी सन्देह न था और अपने हीरा को जहाँ का तहाँ देखा। जाँच कर आपने नहीं देखा था।

दूसरे दिन तड़के कारखाना में आकर उस कारीगर ने नकली हीरा को मशीन में डाल कर चूर्ण करके चारों ओर फेंक दिया ताकि नकली हीरा नदारद हो जाय और आपका सन्देह अन्दरूनी चोर के बजाय बाहरी आदमी की ओर हो।

मानसिंह और मि० मोहन उदय की अक्लमन्दी को देख स्तम्भित थे।

बी॰ ए॰ बहू से चमत्कार की माँग क्यों ?

लेखिका, श्रीमती लक्ष्मी देवी श्रीनेत

'दीदी' के जून वाले अंक में श्रद्धेय पं॰ रामनरेश त्रिपाठी जी की 'एक बी॰ ए॰ बहू का चमत्कार' शीर्षक कहानी छपी है। उस कहानी में एक ऐसी बी॰ ए॰ बहू का वर्णन है जिसने अपनी गरीब ससुराल में जाकर अपने सद् व्यवहार और प्रबन्ध क्षमता से न केवल सबको मोह लिया बल्कि अपने घर की आर्थिक परिस्थिति में भी सुधार किया। कहानी सच्ची घटना के आधार पर लिखी व कही गई है। कहानी के अन्त में लेखक महोदय ने लिखा है कि एक बी॰ ए॰ बहू की इस प्रकार की कथा यह शायद सबसे पहली है और समस्त बी॰ ए॰ पास बहुओं के लिये गर्व की वस्तु है। हम ऐसी कथाएँ और सुनाना चाहते हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी कहानियाँ कम सुनने में आती हैं। इसका कारण यह नहीं है कि योग्य बी॰ ए॰ बहुओं की कमी है। बल्कि इसका कारण यह है कि इस प्रकार की परिस्थिति आती ही कम है। अधिकतर सम्पन्न परिवार की लड़कियाँ सम्पन्न परिवार में ही ब्याही जाती हैं। इसलिये उनके सामने ससुराल की आर्थिक दशा ठीक करने का प्रश्न ही नहीं उठता। जो सम्पन्न परिवार की नहीं हैं वे प्रायः गरीब परिवार में जाती हैं। वे वहाँ की गरीबी दूर करने में कहानी की बहू की तरह कोई चमत्कार नहीं दिखला सकतीं। न कोई विचारवान् व्यक्ति उनसे ऐसी आशा ही कर सकता है। क्योंकि कहानी की बहू की तरह वह अपने पिता के घर से धन, सम्पत्ति और गाड़ियों भरा सामान नहीं मँगा सकती। इसमें न उसके बी॰ ए॰ होने का दोष है और न उसके बुद्धि की कोई कमी, अब प्रश्न यह उठता है कि हम लोग बी॰ ए॰ स्त्रियों से या और पढ़ी-लिखी स्त्रियों से क्यों आशा करते हैं? ऐसी आशा हम हजारों और लाखों बेकार शिक्षित पुरुषों से भी क्यों नहीं करते। क्या घर गृहस्थी के महान् भार को ढोने वाली गरीब पढ़ी या अनपढ़ी महिलायें कहानी की बहू से कम हैं?

हमारा समाज सृष्टि के आदि से ही स्त्रियों से असम्भव की उपेक्षा करता रहा है। अग्नि परीक्षा भी केवल स्त्रियों ही के वास्ते बनाई गई। स्त्री यदि शिक्षिता है तो 'सफेद हाथी', नहीं पढ़ी है तो 'गठरी' और कम पढ़ी है तो 'नीम हकीम खतरे जान' की संज्ञा पाती है। लोगों की यह भी धारणा है कि पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ प्रायः अपना सारा समय बनाव शृङ्गार में लगा देती हैं और घर गृहस्थी के कार्यों के लिये सर्वथा अनुपयुक्त होती हैं। कुछ लोगों का यह भी ख्याल है कि उनके कारण गृह कलह बढ़ता है और आथिक व्यवस्था नष्ट होती है। बहुत से पढ़े-लिखे नव युवक अधिक पढ़ी-लिखी लड़कियों से केवल इसलिये ब्याह नहीं करते कि उनके विचार से ऐसी लड़कियाँ उच्छृंखल और खर्चीली होती हैं। जिस किसी को मानव स्वभाव

का साधारण भी ज्ञान है वे इस प्रकार के विचार को अवश्य ही अनुचित और अन्याय पूर्ण मानेंगे।

मनुष्य स्वभाव स्त्री पुरुष दोनों में समान है। अच्छे और बुरे दोनों में होते रहे हैं और होते रहेंगे। इस मूलभूत बात को स्वीकार कर लेने पर शिक्षिता स्त्रियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण उचित हो सकेगा। केवल विद्या पढ़ लेने से ही किसी में न आदर्श गुण आ जाते हैं और न विद्या के अभाव से सद् गुणों का नाश ही हो जाता है। प्रायः यह देखने में आता है कि विद्या से दुष्ट की दुष्टता अधिक बढ़ जाती है। नीतिकारों ने ठीक ही कहा है—'पयः पानं भुजंगानाम् केवलम् विष वर्धनम' तथा दुष्ट के लिये 'विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेशाम परपीडनाय' और यदि अपने में सहज बुद्धि नहीं है तो विद्या निरर्थक हो जाती है। 'यस्य नास्ति स्वयम् प्रज्ञा शास्त्रम् तस्य करोतिकिम्, लोचनाभ्याम् विहीनश्च, दर्पणम् किम करिष्यति।'

मैंने बहुत-सी स्त्रियों को जिनमें अनपढ़ साधारण पढ़ी और अधिक पढ़ी स्त्रियाँ हैं निकट से देखा है। उनके सम्बन्ध में कुछ बातें सुनने के बाद कोई स्वतः इस निर्णय पर पहुँच जायगा कि उच्च शिक्षा से निश्चय ही कोई बहुत अच्छा या बुरा नहीं हो जाता। पढ़ी-लिखी और बिना पढ़ी दोनों में ऐसी स्त्रियां हैं जो सुशील गृह कार्य में चतुर और व्यवहार में मोहक हैं। इसी प्रकार दोनों में घमण्डी, आलसी, लालची, फूहड़ और गृह कलह मचाने वाली भी हैं। मेरे जानने में चार-पाँच ऐसी बी० ए० और एम० ए० तक पढ़ी-लिखी स्त्रियां हैं जिनके पति बहुत ऊँचे पदों पर हैं। उन स्त्रियों में घमण्ड छू नहीं गया है। घर का काम इतना अधिक करती हैं कि परिश्रमी नौकर भी उतना नहीं कर सकता।

वे स्वभावतः मिलनसार और सहनशील हैं। उनकी कार्य परायणता और कर्तव्य शीलता पर कोई भी मुग्ध हुए बिना नहीं रहेगा। उनको देख कर हर कोई उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने को बाध्य होगा। एक बी० ए० पास महिला को, जिनके पति एक उच्च शिक्षा विशारद हैं, अपने घर में खाना बनाना, बच्चों को पढ़ाना, बाजार से सामान ले आना और कभी-कभी बर्तन साफ करने का काम भी करना पड़ता है। उनके पति काफी नुकताचीनी करते हैं और सहायता देना तो दूर किनार उस देवी के कामों से असन्तोष भी प्रकट करते रहते हैं। किन्तु वह महिला हँसी-हँसी में अपना सब काम सम्पन्न करती है। उनको मैंने कभी उदास या चिड़चिड़ाते नहीं पाया। बाकी उपरोक्त महिलाओं में से दो एक के पति अच्छे नहीं कहे जा सकते हैं। फिर भी उनकी स्त्रियां जिस प्रकार उनके साथ निर्वाह करती हैं, वह प्राचीन काल की सतियों की याद दिलाती हैं।

दूसरा चित्र उन स्त्रियों का है जिनमें बी० ए० या एम० ए० की डिगरी के अतिरिक्त न रूप है, न कोई विशेष गुण, न गृहस्थी सम्भालने की क्षमता है। इसके अतिरिक्त फूहड़ भी हैं। जिनके घरों में उनका प्रवेश हुआ, वहाँ उन्होंने झगड़ा लगाया। फिर भी उनके पैर जमीन पर नहीं पड़ते। वे अपने पति को सर्वथा अच्छा होते हुए भी सबके सामने अपने अयोग्य कह-कह कर अपमानित करते रहने से नहीं रुकतीं। बात-बात में कलह करती हैं और महीने भर के व्यय के लिये रुपया १० दिन के अन्दर खर्च करके रोती रहती हैं। हवा से लड़ती चलती हैं। इनके पति यदि सहनशील न होते तो इनकी गाड़ी एक दिन भी न चलती। इस प्रकार के दुर्गुणों से पूर्ण बहुत सी अनपढ़ी स्त्रियां भी हैं किन्तु वे परदे में छिपी हैं। कई एक मामूली पढ़ी-लिखी स्त्रियां जो सम्पन्न परिवार में हैं अपने व्यवहार और कार्य कुशलता से जहाँ जाती हैं आदर पाती हैं। एक ऐसी महिला भी मेरे निकट हैं जिन्होंने अपने पति के मरने के बाद अपने बच्चों को यह अनुभव नहीं होने दिया कि उनके बाप नहीं हैं। उन्होंने कठिन परिश्रम करके अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दी है।

कुछ पढ़ी-लिखी स्त्रियों ने कुछ ऐसे काम किये जिसको समाज ने निन्दनीय समझा और उससे स्त्री शिक्षा की उन्नति में बाधा पहुँची। लेकिन इस प्रकार की मिसालें केवल बहुत थोड़ी-सी हैं और उन्हें अपवाद मानना चाहिए। नियम तो यह है कि जिस प्रकार पढ़े-लिखे पुरुषों में अच्छे, बुरे, साधारण सब प्रकार के लोग मिलते हैं उसी प्रकार शिक्षिता नारियों में भी मिलती हैं। इसलिये हमारा दृष्टि-कोण इसी रूप में परिवर्तित होना आवश्यक है। यदि हम स्त्रियों से असम्भव की कामना करते रहेंगे तो हमें हताश होना पड़ेगा और स्त्री शिक्षा की उन्नति भी नहीं होगी। पढ़ी-लिखी स्त्रियों का भी धर्म है कि वे अपने सामने ऊँचा आदर्श रखें और ऐसा काम करें जिससे स्त्री जाति अलंकृत हो और स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिले।

संक्षिप्त-समाचार

५५ वर्ष के वृद्ध से शादी

भमरा (विन्ध्य प्रदेश) नामक ग्राम में एक सोलह साल की कन्या ने पचपन साल के बुड्ढे से शादी करने से इन्कार कर दिया। और ग्राम पञ्चायत से शादी रोकने का निवेदन किया। बताया जाता है कि वह एक ब्राह्मण लड़के से जिसकी उम्र बीस साल की है शादी करना चाहती है।

बराती निराश होकर लौटे

धर्मसारी (जयपुर) की एक कायस्थ कन्या ने शादी करने से इनकार कर दिया, क्योंकि बर उस के मन के मुताबिक न था और उम्र में अधिक था।

बारात के दो एक आदमियों ने लड़की को समझाने की चेष्टा की। पर वह अडिग रही और अन्त में बराती निराश हो वापस लौट गये।

तीन बच्चे एक साथ

मुरादाबाद के यात्रियों के विश्रामालय में एक स्त्री ने तीन बच्चों को एक साथ जन्म दिया।

स्त्री जो कि दूसरे दर्जे में यात्रा कर रही थी मुरादाबाद में विश्रामस्थल की ओर तेजी से ले जाई गई, वहीं पर बच्चे उत्पन्न हुए। माता बच्चों के साथ अपने घर पहुँचा दी गई और तीनों बच्चे सकुशल से हैं।

दामाद की खोज

कुख्यात डाकू देवीसिंह अपनी पुत्री के लिये योग्य वर की खोज में है। कहा जाता है कि उसने १०,००० दहेज देने की घोषणा की है। इसके उत्तर में अनेक राजपूत और अन्य जाति के युवकों ने भी उसे पत्र लिखे हैं। परन्तु वे सब पत्र डाक घर में बेकार पड़े हैं क्योंकि डाकघर वाले दें किसको?

दिल्ली में बिजली का स्मशान

सरकार ने दिल्ली नगर के लिये बिजली के एक आधुनिकतम स्मशान की स्वीकृति दी है। इसके बनवाने में २ लाख रुपया खर्च होगा। बिरला मन्दिर से कुछ ही फासले पर यह बनेगा। इसमें एक बन्द कमरा होगा जिसमें बिजली से मुर्दा जलाया जायगा। कमरे के बाहर एक तालाब होगा जो घाट का काम देगा।

कानपूर में प्रेत लीला

कानपूर के एक अस्पताल में एक मेहतर जिस का नाम रामसरन है आत्म हत्या करके मर गया। परन्तु जिस दिन वह दफनाया गया उसके तीसरे दिन बाद से अस्पताल में अपनी ड्यूटी के समय रात में दिखाई पड़ता है। अपना सब काम करता है और जाते समय ड्यूटी पर जो नर्स रहती है उस से कहता है, 'मैडम अब मैं जाता हूँ।' इससे अस्पताल में बड़ी घबराहट फैली है।

रेल यात्रियों को नयी सुविधाएँ

कुछ महीनों में ही भारतीय रेलों पर दो गलियारेदार जनता गाड़ियां चलाई जाएँगी। इनमें गाड़ी के अन्दर एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने के लिये गलियारा होगा। इन गाड़ियों में तीसरे दर्जे के यात्रियों को आराम पहुँचाने के लिये कर्मचारी तैनात किये जायेंगे।

यह बात रेलवे मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने अ० भा० रेडियो के दिल्ली केन्द्र से भाषण में कही। रेल यात्रियों की सुविधा के बारे में उन्होंने यह भी बताया कि खाने की नये ढङ्ग की गाड़ियों और देश के भिन्न-भिन्न भागों के लोगों की रुचि के सस्ते व्यंजन बनवाने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

रेलवे मन्त्री ने यह भी बताया कि स्टेशनों पर प्रतीक्षा करने वाले यात्रियों को चुने हुए वृत्त चित्र (डाक्युमेंटरी) दिखाये जायेंगे। इससे उन्हें पता लगेगा कि देश में क्या हो रहा है। यथा सम्भव हर स्टेशन पर बिजली और टेलीफोन लगाया जायगा। अब तक पुराने डिब्बों में ३० हजार से अधिक पंखे लगाये जा चुके हैं और हरेक नये डिब्बे पंखे लग कर ही आते हैं। सोने के लिये एक बढ़िया डिब्बे का डिजाइन बनाया जा रहा है।

रेलवे मन्त्री ने कहा कि १९५२ से १९५४ तक तीन सालों में ३४२ नयी गाड़ियां चलायी गयीं और ३४५ गाड़ियों का मार्ग बढ़ाया गया।

गांधी जी और तीसरा दर्जा

महात्मा गांधी सदा तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे। इसीलिये वह तीसरे दर्जे के यात्रियों की दशा अच्छी तरह जानते थे। आज से लगभग ३८ वर्ष पूर्व सितम्बर १९१७ में समाचार पत्रों में उन्होंने तीसरे दर्जे में अपनी बम्बई से मद्रास यात्रा का वर्णन किया था। यात्रा की दुर्गति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा था कि—'तीसरे दर्जे के यात्रियों की उपेक्षा करने से, लाखों व्यक्तियों की सुव्यवस्था, सफाई और मेल से रहने की शिक्षा देने का अवसर गँवाया जा रहा है।' आप इस बात से अवश्य सहमत होंगे कि मुसाफिरों को और विशेष रूप से तीसरे दर्जे के मुसाफिरों के लिये पिछले कुछ वर्षों में बहुत कुछ किया गया है।

आपको याद होगा कि अभी हाल तक तीसरे दर्जे के मुसाफिर ऊँचे दर्जे के आने-जाने के रास्तों से नहीं आ-जा सकते थे। न वे भोजन गाड़ियों में घुस सकते थे, न ऊँचे दर्जों के मुसाफिर खानों में। अब यह रोक उठा ली गयी है। हर रेलवे पर एक ऊँचा अधिकारी यानी डिप्टी जनरल मैनेजर केवल मुसाफिरों के आराम की व्यवस्था करने के लिये रखा गया है।

हर महीने दस नयी गाड़ियाँ

यह मानना होगा कि कुछ गाड़ियों में अभी तक बहुत भीड़ रहती है। इसका यही इलाज है कि गाड़ियों में और डिब्बे लगाये जाय और नयी गाड़ियाँ चलाई जायँ। पंच वर्षीय योजना के पहले ४ सालों में ३॥ हजार से अधिक नये डिब्बे लगाये गये हैं और १९५२ से १९५४ तक तीन सालों में ३४२ नयी गाड़ियाँ चलाई गयी हैं। इसका मतलब है कि हर महीने १० नयी गाड़ियाँ चलायी गयीं।

नये डिब्बे

रेलवे मन्त्री ने यह भी कहा कि धातु के बने तीसरे दर्जे के कई सौ डिब्बे अब तक चलाये जा चुके हैं। इनमें जिन लोगों ने यात्रा की है वे इनके आराम के साक्षी हैं। इतने ही बड़े पुराने किस्म के डिब्बों में ११० का स्थान होता था और इनमें ८० का रखा गया है। इनमें जगह अधिक और रोशनी

कहीं अच्छी है। रात के लिये हल्के नीले बल्ब हैं जिन पर पतिंगे नहीं आते हैं। पाखाने भी बड़े और जहाँ शीशे, हाथ धोने के तशले और इस्पात की खुड्डियाँ लगीं हैं। एक रेलवे की सब गाड़ियों के तीसरे दर्जे में पंखे लगाये जा चुके हैं और बाकी में १–२ साल में यह काम पूरा हो जायगा।

इस समय १६ एक्सप्रेस जनता गाड़ियाँ चल रही हैं। पिछले नवम्बर में रेलवे ने तीसरे दर्जे के मुसाफिरों को मामूली किराये पर सोने की जगह देने की व्यवस्था आरम्भ की। इसका अच्छा स्वागत हुआ। सोने के डिब्बों की बनावट के बारे में अवश्य कुछ शिकायत रही। अब ऐसे डिब्बे बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है जिनमें आराम अधिक होगा।

धन की कमी नहीं

पहली पञ्चवर्षीय योजना में मुसाफिरों के आराम और सुविधा बढ़ाने पर १५ करोड़ के खर्च की व्यवस्था की गयी थी। दूसरी योजना में भी इसे कम नहीं किया जा रहा है।

श्री शास्त्री ने आगे कहा कि रेलवे की ओर से तो यह प्रयत्न बराबर हो ही रहा है कि मुसाफिरों को अधिक से अधिक सुविधाएँ दी जायं पर जनता से भी यह अनुरोध है कि वह इनका ठीक उपयोग करे। मुसाफिरखानों में जहाँ-तहाँ पानी फैलाना, प्लेटफार्म या डिब्बों में थूकना, चलती गाड़ी से फलों के छिलके बाहर फेंकना या कहीं भी बैठ कर खाना और जूठे पत्ते आदि छोड़ कर चल देना, नलों को खुला छोड़ देना और टट्टी की जंजीर न खींचना या बिना टिकट सफर करना आदि बहुत सी ऐसी बातें हैं, जिनसे गंदगी फैलती है और सब को कष्ट होता है।

गांधी जी के जिस पत्र का मैंने उल्लेख किया था उसमें उन्होंने अधिकारियों को दोषी ठहराने के साथ मुसाफिरों की भी आलोचना की थी।

इसलिये मैं रेल यात्रियों से भी निवेदन करता हूँ कि वे सुविधाओं के समुचित उपयोग में हमारा हाथ बटाएँ।

दृष्टिकोण

शहद और दीर्घ जीवन

रूस में २०० मनुष्य ऐसे हैं जिनकी अवस्था ११० से लेकर १५० वर्ष तक की है। इनके सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल करने से ज्ञात हुआ है कि ये सब मधु मक्खी पालते थे और प्रायः शहद खाते थे।

शहद निःसन्देह बहुत अच्छा भोजन है। क्यों कि यह प्राकृतिक मिठाई है। इसके सेवन से स्वास्थ्य तो बढ़ता ही है, दीर्घ जीवन भी प्राप्त होता है।

मारवाड़ी समाज में विधवा-विवाह

गत ६ जून को गोरखपूर के मारवाड़ी समाज में प्रथम बार एक महत्वपूर्ण विधवा-विवाह हुआ। दुलहन बरौनी के स्वर्गीय लालचन्द की कन्या और दूल्हा बहराइच के श्री विश्वनाथ जी हैं। यह विवाह खेतान-हाउस में लगभग २०० मारवाड़ी स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति में हुआ।

रंग में भंग

सिहोरा (जबलपूर) में एक १३ वर्षीया बालिका ने अपने दूल्हे पर कुल्हाड़ी से वार किया, कारण यह हुआ कि इस बालिका का गौना नहीं हुआ था और यह अपने दूल्हे के गांव में एक दावत में गई थी। वहाँ कुछ स्त्रियों ने दोनों को एक कमरे में बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया और सोचा कि अच्छा तमाशा रहेगा। परन्तु अन्दर एक कुल्हाड़ी रखी थी जिसे बालिका ने उठा लिया और उससे अपने पति को इस भय से घायल कर दिया कि कहीं वह उस पर आक्रमण न कर बैठे। दूल्हे के चिल्लाने पर औरतों ने दरवाजा खोला तब उसे खून से लथपथ पाया। अब दूल्हा अस्पताल में है और दुलहन जेल में है।

आप इन्हें जानते हैं ?

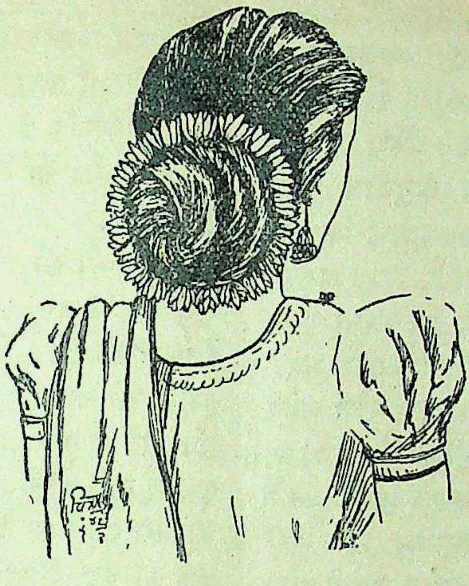

श्रीमती चन्द्रमुखी

लेखिका, श्रीमती रजनी पनिकर

श्रीमती चन्द्रमुखी किसी बड़ी राजनीतिज्ञ या साहित्यिक महिला का नाम नहीं है, न ही वह कोई समाज सेविका हैं। वह केवल साधारण सी गृहस्थी में उलझी नारी हैं, सौभाग्य से कहिये या दुर्भाग्य से, वह मेरी पड़ोसिन हैं। यदि वह पड़ोसिन न होतीं, तो आज आप से मैं उनकी चर्चा कैसे कर पाती। आज कल प्रचार का युग है और बिना दामों के प्रचार करने वाला मुश्किल से मिलता है।

शायद आपको इस बात का आभास मिल गया हो कि इनका नाम चन्द्रमुखी है, तो वास्तव में चाहे वह जलमुखी हों, सूर्यमुखी हों या हँसमुखी हों। वह हँसमुखी हैं इसमें सन्देह नहीं। उनका सांवला, चौड़ा, बड़ी-बड़ी गोल आँखों वाला मुख सदैव हँसता रहता है। उनकी आँखों की एक विसेषता बतलाना कहीं मैं भूल न जाऊँ; वह आँखें वचों के खेलने वाले कांचों की तरह गोल-गोल और बड़ी-बड़ी हैं। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि उनकी पुतलियाँ भी शायद उनको अच्छी तरह ढक नहीं पातीं। यह आँखें जब हँसते या मुस्कराते ओठों, सफेद नग वाले चमकदार नाक के कील के ऊपर जब नाचती हैं तो कुछ मत पूछिये चन्द्रमुखी जी किसी-किसी शो केस में रखे 'हनोल्लूलू' के छोटे-से खिलौने का ही वृहत्तर रूप··इन लार्जड रूपः दीखती हैं। वैसे उनका शरीर दोहरा, कद मंझौला है और आयु देखने में चालीस के लगभग लगती है। चाहे वह पिछले तीन वर्ष से अभी तक चौंतीस ही बतला रही हैं। तीन वर्ष में प्रायः आयु में तीन सालों का जोड़ हो जाना चाहिये परन्तु चन्द्रमुखी जी की बात दूसरी है।

कपड़ों में वह बहुत निफासत पसन्द करती हैं। हीन से महीन कपड़ा हो, सर्दियों में बढ़िया से बढ़िया सिल्क और क्रेप, गर्मियों में वायल चिकन और मुलायम मलमल ऐसे ही वह पहनती हैं। सल-

वार कुर्ता अथवा साड़ी अधिकतर व्यवहार में लाती हैं। उनकी अतृप्त आकांक्षाओं में से एक यह भी है कि वह एक बार पतलून पहन सकें। पतलून पहन कर वह कैसी लगेंगी, इसका अनुमान आप खुद ही कर लीजिये। हाँ, आप यह समझें कि जो पतलून पहनने की इच्छा रखती हैं, वह अवश्य बड़ी पढ़ी-लिखी होंगी, तो आपका अनुमान गलत है। उन्हें अक्षर ज्ञान अवश्य है, रामायण, महाभारत वह पढ़ लेती हैं। गीता का पाठ रोज सवेरे उठ कर करती हैं। प्राइमरी की परीक्षा में वह अपने कस्बे में सर्व प्रथम आई थीं। उसके बाद उनके थानेदार पिता ने उन्हें अधिक पढ़ाना ठीक नहीं समझा। घर पर तरह-तरह के अम्बार चटनी और मुरब्बे बनाने की शिक्षा उन्हें दी जाने लगी। चन्द्रमुखी जी ने वह सब बड़ी लगन से सीखा होगा, क्योंकि उसका उदाहरण तो अब मिलता है, जब भी वह कोई नई वस्तु बनाती हैं तो हमारे यहाँ भेजना नहीं भूलतीं।

श्रीमती चन्द्रमुखी के पति एक साधारण पद से ऊँचे ओहदे पर पहुँचे हैं। उन्हें अपने पति पर इतना गर्व है कि वह कभी उनकी बात करते अघाती नहीं। सुबह दिन निकलने से लेकर संध्या को सोने तक वह क्या-क्या करते हैं। यह वह मुझे बार-बार बताती हैं। रोज की रिपोर्ट उसी दिन शाम को मिल जाती है। रात के दस बजे आना तो उनकी दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग है। वह आते ही हँस कर कहती है—'अरे! बहन जी, आपको सुबह शाम फुरसत जो नहीं मिलती तो, केवल यही समय है जो आपका है। यदि इस समय में आपसे न मिलूँ तो फिर दिन भर नहीं मिल सकती। उनकी यह आदत उनके पति को भी नहीं पसन्द। आज के बाद वह कभी किसी के घर रात को नहीं जायंगी, परन्तु वह वादा केवल चौबीस घंटों के लिये होता है। दूसरी रात को वह फिर आ धमकती हैं। कुछ पति की तारीफ करती हैं कुछ निन्दा। पैसों की कमी के लिये रोती हैं। महँगाई की चर्चा और सबसे बढ़ कर अपने रिश्तेदारों की चर्चा। उनके पति के चार भाई और हैं तथा छः बहनें। मुझे सबके नाम याद हैं, यहाँ तक कि उनके लड़के लड़कियों के नाम याद हैं। क्यों, यह तो नित्य की बात है, वही नाम सुनते सुनते जबानी याद हो गये हैं। पाँच सौ पति की आय पर नौ सौ प्रति मास खर्च करें। जब वह रात के ठीक दस बजे आकर मेरे पास रोने लगती हैं कि उनके देवर, जेठ कुछ नहीं करते। कोरी सहानुभूति भी नहीं दर्शाते, दुनियां वालों से बिलकुल गये बीते हैं तो यह चर्चा साढ़े ग्यारह बजे तक समाप्त नहीं होती। बातें वही पुरानी, बड़े लड़के ने चालीस रुपये का जूता खरीद लिया है और आज कल कान्वेंट में पढ़ाई बड़ी महँगी हो गई है। फिर रुपये के अभाव में वह रोने लगती हैं। सच मानिये मेरी इतनी हिम्मत कभी नहीं हुई कि मैं पूछूँ—'आप जो इतना खर्च करती हैं, वह पैसे कहां से आते हैं। वह कौन देता है?'

कोई त्यौहार हो तब भी वह दिल खोल कर खर्च करती हैं। छोटी-बड़ी पार्टी भी दे देती हैं किसी के यहाँ ब्याह शादी होता है तो भी उनकी ओर से कुछ न कुछ उपहार में रहता है।

एक दिन आकर रोने लगीं कि उनके पति पर कर्जा हो गया है। यह कह देना अनुचित न होगा कि इन ऋण की रकमों में कपड़ों वाले का बिल सब से अधिक था। सात सौ के कपड़े वाले के बिल में से पाँच सौ के श्रीमती जी के अपने कपड़े आये थे। वह अपनी आय से अधिक खर्च करती हैं, इसका तो अनुमान मुझे भी था। क्योंकि प्रायः कहा करती थीं और आज कल भी कहती हैं, बहन जी आपके तो बच्चा भी नहीं, दोनों आदमी कमाने वाले हैं, आपकी साड़ियां उतनी बढ़िया नहीं होतीं। कौन समझाये कि काम पर जाते समय तिल्लेदार, जरी या बनारसी बार्डर वाली साड़ी नहीं पहनी जाती। क्योंकि स्वयम् चन्द्रमुखी जी रात को सोते समय भी रेशमी कपड़े पहनती हैं।

चन्द्रमुखी जी की स्मरण शक्ति इतनी तेज है कि पांचों बच्चों के जन्म दिन जो हर वर्ष धूमधाम से मनाये जाते हैं, साल में पांच बार आते हैं। बच्चों को क्या-क्या उपहार मिलते हैं उन्हें अभी तक याद हैं। मैं कई बार सोचती हूँ कि यदि यह एम० ए० बी० ए० पढ़ती तो इन्हें कठिनाई न पड़ती। क्योंकि स्मरण शक्ति जो इतनी तेज है। प्रत्येक बच्चे के जन्म पर किसी नारी को कितना कष्ट हुआ यह सब मुझे याद है क्योंकि वह कुछ इतने दिलचस्प तरीके से हर बात दोहरा जाती हैं कि उसे भूलना बड़ा कठिन है। कुछ घर की रोज में व्यवहार लाने की ऐसी चीजें हैं, जिन्हें वह कभी खरीदना पसन्द नहीं करतीं। जैसे थरमा मीटर, हमारे यहाँ है तो ठीक है, पेट तथा सिर दर्द की छोटी-मोटी दवा, नाखूनों पर लगाने वाला पालिश, विलायती सुगन्ध, महँगाई के दिनों में आलू और प्याज। जैसी चीज की कीमत यदि चौदह आना हो तो मसाले के लिये यदि दो प्याज सुबह और दो शाम हमारे यहाँ से ले लिये जायें तो क्या हर्ज है। दैनिक अखबार तो फिजूल खर्ची है ही। जब वह दस हजार रुपया खर्च करके एक मकान बनवा रही हैं तो एक-एक पैसे की किफायत न करें तो कैसे चलेगा। फिर हमारा घर और उनका घर कोई दो हैं नहीं, एक ही बात है। दूसरी ओर उन्होंने दो-दो कुत्ते पाल रखे हैं। जो पड़ोसियों के भी नाक में दम करते हैं।

यों हँस कर जब बात करती हैं तो यही कहती हैं—'मैंने बच्चों को कभी किसी वस्तु से तङ्ग नहीं रखा। ठीक तो है, सिनेमा तक के पास जाने कहाँ से जुटा लाती हैं, गरमी और सरदी के नये डिजाइन के कपड़े भी बच्चों को बनवा देती हैं।

एक बात और वह कहना बार-बार नहीं भूलती कि जब उनके पति विदेश में थे तो वह अपनी माँ के पास रहती थीं और रुपया बैंक में जमा करवाती थीं। उनके पास रुपया है, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु लोगों को, विशेष कर पड़ोसियों को दिखलाने के लिये रोना आवश्यक हो जाता है। नहीं तो हो सकता है किसी भी समय उन्हें देवर जेठ आकर लूट जायेंगे उनका मकान पूरा होने में अब कुछ ही दिन की देर है वह अपने नये मकान में चली जायेंगी, तो हो सकता है उनकी हँसी, उनका रोना दोनों का अभाव मुझे खलेगा।

उ० प्रदेश में सबसे अधिक अविवाहित

लखनऊ। जहाँ उत्तर प्रदेश अन्य प्रदेशों से बहुत सी बातों में आगे है, वहाँ वह अविवाहितों की संख्या में भी अन्य प्रदेशों से आगे है। उत्तर प्रदेश में अविवाहितों की संख्या विवाहितों और विधुरों से अधिक है।

राज्य के प्रत्येक १०० निवासियों में से ४७ विवाहित हैं और ४६ अविवाहित। शेष ७ प्रतिशत विधुर हैं। सबसे अधिक विधुर फतेहपुर जिले में हैं, जहाँ उनका अनुपात जन संख्या का १४ प्रतिशत है। अविवाहितों की सर्वाधिक संख्या इटावा जिले में है, जहाँ वे सम्पूर्ण जन संख्या के ५८ प्रतिशत हैं। फतेहपुर जिले में सबसे कम अविवाहित हैं। उनकी संख्या सम्पूर्ण जन संख्या की ३६ प्रतिशत ही है। साधारणतया राज्य के उत्तरी और पश्चिमी जिलों में कम अविवाहित हैं किन्तु पूर्वी क्षेत्र के देवरिया जिले में भी अविवाहित बहुमत में हैं। लखनऊ में सम्पूर्ण जन संख्या में विवाहित ५४ प्रतिशत, अविवाहित ४० प्रतिशत और विधुर ६ प्रतिशत हैं।

श्रावण का एक लोकगीत

लेखिका, श्रीमती शारदा देवी शर्मा, विद्या विनोदनी, बुढ़ार

उत्तर प्रदेश के लोक गीत मनुष्य के हृदयों में अति करुणा-भावना जाग्रत कर देते हैं, सुनने में सरस एवम् प्रिय होते हैं और प्रेम, दया, करुणा आदि से भरपूर रहते हैं।

असाढ़ और श्रावण के मास में ये गीत अति सुखदायी प्रतीत होते हैं। नव बधुयें इन्हें मल्हार की राग पर बड़े समुदाय में एकत्रित होकर सप्रेम गाया करती हैं :—

सिबु कोई चाकरी को जातु है
मेरी माय तुम कहो हम ढुर जाय

पुत्र माँ से कहता है, माँ सभी तो नौकरी करने जा रहे हैं, आप आज्ञा दें तो मैं भी चला जाऊँ।

जो तुम पूत मेरे चाकरी को जात हो
मेरे पूत धनियां कहा बुधि देउ

माँ कहती है—अगर तुम नौकरी करने को जाओगे भी तो अपनी स्त्री को क्या सीख दोगे।

महल में धनियां हो यों कहैं
जो तुम राजा पिया चाकरी को जात हो
राजा पिया हमेन कहा बुधि देउ

फिर पत्नी सामने आकर कहती है—प्रीतम यदि आप नौकरी को जायेंगे तो मैं क्या करूँगी।

ऊँचे से करियो बैठका मेरी धना
मेरी धना नीचे नयन करि लेउ
पोनी तो करियो सहेलरी
मेरी धना चरखा मीत करि लेउ

पति कहता है—प्रिये ! अच्छे चलन चलना, उच्च कार्यों के करने में ही भलाई है, रुई मँगा कर दिन भर चरखा चलाना, उसी से मन बहलाना, रुई तुम्हारी सहेली बनेगी और चरखे को हर प्रकार से प्रिय मानना।

जो तुम राजा पिया चाकरी को जात हो
मेरे पिया कौन सो हँसि बातें करे

आपके चले जाने के बाद मैं किससे हँस कर बातें करूँगी।

दीवार हँसि बतियां करो,
गोरी धन देहर हूँका हो देय,

मेरे परदेश जाने के बाद तुम दीवालों से हँस कर बात करना, डेहरी बात का उत्तर देगी।

जो तुम राजा पिया चाकरी को जात हो
राजा पिया हमेन कहाँ करि जाउ

प्रीतम तुम विदेश तो जा रहे हो, पर मुझे कहाँ कर ज़ाओगे।

जो हम चाकरी को जात हैं
गोरी धन तुम नैहर ढुरि जाउ

हमारे परदेश जाने पर तुम अपने मायके चली जाना।

ना मेरे माई न मायका
राजा पिया नाहीं सहोदर वीर

पत्नी के नेत्रों से नीर बहने लगता है, वह कहती है कि हे प्रीतम ! मेरे तो माँ, बाप, भाई, बहिन कोई नहीं है।

ससुर बाबुल कर मानियों
गोरी धन सासु मइल कर लेउ
देवर विरन कर मानियों
गोरी धन दुरनी भवज कर लेउ

पति कंधे पर हाथ रख कर धैर्य देता है—प्रिये सास-ससुर को अपने मन में माता-पिता व देवर, देवरानी को भाई भौजाई करके मानना।

उल्टी तो गंगा न बहे
राजा पिया उल्टे चलन न हों

हे प्रीतम तुम्हारे कहने से क्या होता है दुनियाँ में उल्टे चलन कैसे चल सकते हैं।

लीलो सो घुड़िल पलानियों
राजा पिया तुरत भये असवार
छींकत घुड़िल पलानियों
राजा पिया बरजत भये असवार
अगुना तो सगुना सिग भये
राजा पिया सिर बोलो है काग
गैल तो काटी कारे नाग ने
राजा पिया उरग को भये तैयार

इन पंक्तियों में स्त्री की विरह वेदना थिरक पड़ती है, पत्नी पति के सगुन मनाती है पर असगुन ही नजर पड़ते हैं जाते समय छींकना, रोकना, साँप का रास्ता काटना व कौओं का बोलना आदि उसके हृदय में अकुलाहट पैदा करते हैं पर स्त्री के नाते दिल मसोस कर ही रह जाना पड़ता है।

छोटो सो देवरा लाड़िलो
मेरी सासु बाने डराई पछडोर

इधर बन में सखियाँ झूला झूल कर मल्हार गा रही थीं। देवर का बहाना करके वह भी झूलने के लिये आतुर हो उठती है, जाने के लिये सास जी से पूछती है।

सिव कोई झूलन जातु है
मेरी सासु तुम कहो हमउँर. जायं

जो तुम मेरी बहू झुलन जाति हो
मेरी बहू पीसना पिसे धरि जाउ
मेरी बहू रसोई तपे धरि जाउ

देखिये माँ के स्नेह व सास के स्नेह में जमीन आसमान का अन्तर होता है, जब सास ने समझा कि बहू झूलने जाती है तो उसे चक्की पीसना व खाना बनाना आदि काम सौंप दिये।

पिसना पीस चक्की धरा
रसोई बनाइ चौका धरी
नीर भरि घिनौची धरि दीना
मेरी सासु तुम कहो अबऊँ र जायँ

सास की आज्ञा-नुसार बहू ने सभी काम कर दिये। पुनः आज्ञा माँगने लगी।

जो तुम बहू मेरी झुलन जाति हो
लौरी ननदिया ले लेउ साथ
लौरो सो देवरा बहू लाड़िलौ
मेरी बहू जियवन डारेगो मारि।

इतने पर भी सास को सन्तोष न हुआ. उसने छोटी ननद को साथ कर दिया और बहू को बता दिया कि तुम्हारा छोटा देवर अति चञ्चल है, तुम्हें झूला झूलते देखेगा तो जान से मार डालेगा।

इक पोथी झूली दूजी पोथी झूली
मेरी सासु तीजी को डारी हम मारि
खोदि बरिय तन गाढ़ियो मेरी सासु
मेरी सासु ऊपर जमि गई दूब

जीवन लीला समाप्त हो जाती है। बहू की आत्मा झपट कर सास के पास आती है, दो बार हो सास जी मैं झूल पाई। तीसरे पग पर ही देवर ने मुझे मार डाला, बरी (वृक्ष) के नीचे मुझे गाड़ दिया, जिस पर कि अब दूब जम आई है।

आधी रात सपनो दियो राजा पिया
राजा पिया छोड़ो उरग की चाकरी
राजा पिया छोड़ो उरगिया के दाम
एक टका तिहारी चाकरी
राजा पिया लाख टका घर जाय

आत्मा शक्तिशाली होती है—उधर अपने पति को स्वप्न देती है—हे प्रीतम ! अब इस नौकरी को छोड़ दो और अपना घर-द्वार देखो। एक टका कमाने के पीछे लाख टका का घर-द्वार नष्ट हो गया है। कितनी दयनीय दशा है।

भोर भयो पिरी फाटियो
राजा पिया उरग सों रहे बतराय

छोड़ी उरग तिहारी चाकरी
छोड़े उरगिया के दाम
झटपट घुड़िल पलानियों
राजा पिया तुरत भये असवार
माई बहिन सिव जुरि आईं
मेरी माई बे धना कहूँ न दिखाय

इस प्रकार का विचित्र स्वप्न देख कर पति का हृदय विह्वल हो उठता है। सुबह होते ही वह राजा उरग से नौकरी छोड़ देने को कहता है और शीघ्र ही अपने घर आ जाता है। घर में उसे मां, बहिन सभी सामने दिखाई पड़ती हैं, मगर अपनी स्त्री को नहीं पाता है, तो माँ से पूछता है कि हे माँ मेरी स्त्री कहाँ पर है।

झुलुआ झुलन बहुअर गईं
मेरे पूत वहाँ रे लगाई बड़ी देर

झूलन झूलन हम फिरे
मेरी माइ वे धना कहूँ न दिखाय

लौरो सो दिवरा लाड़िलो
मेरे पूत वा धना डारी है मारि
खोदि बरिय तन गाढ़ियो
मेरे पूत ऊपर जमि गई दूब

माँ ने पहिले तो बहाना बनाये तब अन्त में पति के ढूँढ़ने पर जब कहीं न मिली, तब उसने बता दिया कि झूला झूलने बहू गई तो देवर ने चञ्चलता वश बे पर्दा होने के लिहाज से मार डाला।

इतने तो छल बल तुम करे
मेरी माई तब तें देतीं बताय
ल्याओ हमारे कापड़े मैया
ल्याओ पाँचों हथियार
मेरी मैया जोगी ह्वै रमि जायं
रनियाँ दुखिया चल बसी
मैया छोड़ हमारो सङ्ग
हमऊँ र छोड़ि चले घर बार
धुँअनी हो ल्हेहैं रमाय
रङ्ग महल की चाकरी।

नई किताबें

नारियों का ब्रह्मचर्य व आदर्श जीवन—लेखिका, माता जी श्री चिन्मयी ब्रह्मचारिणी। पृष्ठ संख्या ४२ मूल्य ।॥) पता—सत्यव्रत मठ पोस्ट—आयदा किस्मत, बेहुला गुप्तिपाड़ा हुगली।

कुछ कहावतें—(एक आधुनिक दृष्टिकोण) लेखक, श्री स्वामीनाथ श्रीवास्तव स्वतन्त्र। प्रकाशक, वाणी प्रकाशन ८४ ए, अलोपीबाग, इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ४०। मूल्य ।) आना।

ठक्कर बापा—लेखक, कांतिलाल शाह; प्रकाशक, ठक्कर बापा-स्मारक समिति, दिल्ली; पृष्ठ डिमाई अठपेजी आकार के ४५५, मूल्य ५) रुपया।

बा और बापू की शीतल छाया में—लेखिका, मनु बहिन गांधी। अनुवादक, श्री रामनारायण चौधरी। प्रकाशक, नवजीवन प्रकाशक, अहमदाबाद। मूल्य अढ़ाई रुपये। पृष्ठ संख्या २४४।

बापू–मैंने क्या देखा क्या समझा—लेखक, श्री राम नारायण चौधरी। प्रकाशक, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद। मूल्य तीन रुपये, पृष्ठ संख्या २२४।

कबीर-साखी-सुधा—लेखक, प्रोफेसर रामचन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्र'; प्रकाशक, श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी आगरा, मूल्य तीन रुपये दो आने।

नेत्रों का मेगापन और उसके उपाय

लेखक, डा० महाबीर शरण अग्रवाल

नेत्र मानव जीवन में विशेष स्थान सौन्दर्य रखता है। नेत्रों की कमजोरी या भीतरी रोग होने पर रोगी काफी चिन्ता में पड़ जाता है लेकिन जिस समय नेत्रों में मेगापन दृष्टिगत होता है उस समय उसका अपना गौरव काफी कम हो जाता है। जनता के सामने वह काफी शर्म का अनुभव करता है। पुरुष के हृदय में काफी हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है लेकिन स्त्री के जीवन में विवाह जैसा प्रश्न बड़ा होते हुए भी और बड़ा मालूम होता है। बहुत सी लड़कियां इस रोग के हो जाने के कारण काफी आयु तक अविवाहित रहती है, यह भी देखा गया है कि जिन लड़कियों को यह रोग होता है वह अपनी पढ़ाई और लड़कियों की तरह नहीं कर पातीं। मेरी कही बातें लड़कियों के साथ ही नहीं एवम् लड़कों में भी देखने को मिलती हैं।

डाक्टरी पुस्तकों के अनुसार मुख्य रूप में मेगापन तीन प्रकार का होता है—

(१) कोनवरजेंट मेगापन—आँख का नाक की तरफ फिर जाना।

(२) डाईवरजेंट मेगापन—आँख का कान की तरफ फिर जाना।

(३) वरटीकल मेगापन—ऊपर या नीचे की तरफ आँख का फिर जाना।

काफी रोगियों में यह देखने को आया है कि नेत्रों का मेगापन कभी दाईं में और कभी बांईं आँख में दृष्टिगत होता है। ऐसी अवस्था को अल्टरनेटिव मेगापन कहते हैं।

आज के युग में यह रोग काफी पाया जाता है, डाक्टरी विचारकों का कहना है कि यह रोग नेत्रों को पकड़ने वाली मांस पेशियां रेक्टाई में कमजोरी आ जाने पर हो जाता है। कुछों का विचार है कि एक नेत्र की दृष्टि ठीक होने और दूसरी की क्षीण होने से यह रोग हो जाता है। या बुखार, काली खांसी या दिमाग की हलचल हो जाने के कारण भी यह रोग हो जाता है।

अमरीका के डा० बेटस ने काफी खोज के बाद यह कहा कि यह रोग मस्तिष्क पर जोर पड़ने पर होता है। जिस समय नेत्र एक की जगह दो वस्तुएँ देखने लगते हैं उस समय नेत्रों का मेगापन आ जाता है। अगर निरोग नेत्र भी दिमाग पर दबाव डालें तो उन्हें भी मेगापन दीखने लगता है।

अभी तक इस रोग को पूर्ण रूप से ठीक करने के लिये कोई ठीक चिकित्सा अभी तक कार्य में नहीं आई है। निम्नलिखित साधन जो कुछ रोगियों में लाभदायक सिद्ध हुए हैं।

स्टेरिसकोपिक तसवीरें।

इस यन्त्र में एक ही तरह की दो तसबीरें लगा दी जाती हैं और दोनों नेत्रों से एक करने को कहा जाता है। बहुत से रोगियों में आँखों की मांस पेशियां ठीक तरह सध जाती है और भेंगेपन की तकलीफ कम या नहीं दिखाई देती।

एमबलियस्कोप।......

यह यन्त्र भी तसबीरें देखने के लिये बनाया गया है। इस यन्त्र में तसबीरें बहुत छोटी-छोटी लगाई जाती है और दो भिन्न तसबीरों को एक में मिलाया जाता है। यह यन्त्र भी नेत्रों के भेंगेपन दूर करने के लिये काफी सहायक पाया गया है।

पेंसिल की चिकित्सा।......

यह चिकित्सा काफी सरल एवम् कहीं भी की जा सकती है। पहले पेंसिल को नाक के सामने लाया जाता है और बाद में हलके-हलके नाक से दूर करते जाना होता है। नेत्रों की दृष्टि पेंसिल की नोक पर जमी रहती है। यही विधि अनेक दिशाओं में पेंसिल को ले जाकर की जाती है। नेत्रों की रेकटाई मांस पेशियों को शक्ति पूर्ण बनाने के लिये यह चिकित्सा काफी लाभकारी सिद्ध हुई है।

अन्य कुछ और साधन—

१—नित्य सूर्य व्यायाम की प्रथम किरणों को बन्द नेत्रों पर लेना चाहिए।

२—ठंडे जल के तसले में नेत्रों को धोना चाहिए।

३—पामिंग की चिकित्सा।

४—झूलने की चिकित्साएँ भेंगेपन के रोगियों को काफी लाभकारी सिद्ध हुई हैं।

५—एट्रोपीन की दवा का प्रयोग भी कुछ रोगियों में लाभकारी सिद्ध हुआ है।

६—ओपरेशन—की क्रिया भी कुछ रोगियों के लिये लाभकारी सिद्ध हुई है।

नेत्रों के भेंगेपन के रोगियों को सदा अपनी अवस्था का ज्ञान नहीं होना चाहिये। बार-बार भेंगे व्यक्ति को भेंगा कहने से उसके मस्तिष्क पर जोर पड़ता है और बहुत से बच्चों में रोग पहले की अवस्था से अधिक बढ़ जाता है।

अन्त में मैं अपने पाठकों को यह बताना चाहता हूँ कि वह कभी बच्चे या अन्य किसी को भेंगे बच्चे की नकल करने का समय नहीं दें। बहुत से बच्चे नकल करने के कारण भेंगेपन के रोगी हो जाते हैं। आशा है मेरे पाठक इस लेख में लिखे सुझावों पर ध्यान देंगे और लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

गीत

लेखक, श्री महेश दत्त 'रङ्क'

आज मैं फिर से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ

चाहता हूँ तुम मुझे खुद ही बुला लो
और तुम दीपक प्रणय का जगमगा लो

बन शलभ मैं एक पल को मुसकराना चाहता हूँ
आज मैं फिर से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ

हूँ अभी तक तो अपरिचित मैं जवानी से तुम्हारी
प्रीत है जिन्दा कि बचपन की निशानी से तुम्हारी

आज बचपन औ जवानी को मिलाना चाहता हूँ
आज मैं फिर से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ

आज छुप जाओ गगन के चाँद तारो
इस मिलन की यामिनि को मत निहारो

स्नेह को मैं प्यार के हाथों उठाना चाहता हूँ
आज मैं फिर से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ

सोचता हूँ क्या तुम्हें उपहार दूंगा
या तुम्हें अपने हृदय का प्यार दूँगा

जब कि मैं यह भी न जानूँ क्या बनाना चाहता हूँ
आज मैं फिर से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ

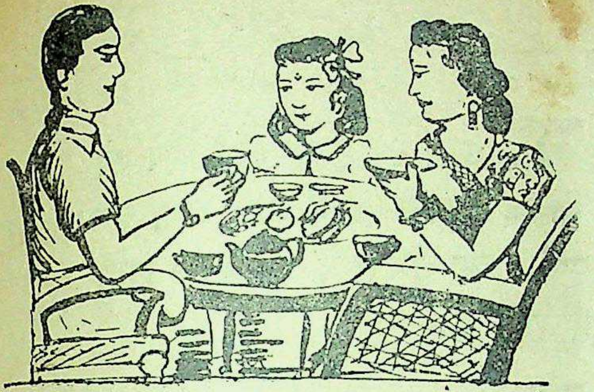

'दीदी' का ध्येय प्रत्येक मामले में पाठिकाओं को व्यक्तिगत सलाह देना भी है। इसलिये पाठिकाओं से निवेदन है कि यदि आपके सामने कोई ऐसी समस्या हो तो उत्तर के लिये =) के स्टाम्प से युक्त अपने पते का लिफाफा भेजें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार गुप्त रखे जाते हैं। श्यामाबाई मार्फत 'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद—२

आपको कुछ पूछना है ?

शिशु के हरे दस्त

प्रश्न—मेरा शिशु जो दो महीने का है, केवल मेरे स्तन के दूध पर ही आश्रित है। इधर उसे दिन में कई पतले दस्त हो रहे हैं और उनका रङ्ग हरा होता है। वह तन्दुरुस्त है, रात में खूब सोता है। परन्तु दूध पी चुकने पर जोर-जोर से रोता है और मुँह में मुट्ठियाँ भरता है। यह सोच कर कि उसे यथेष्ट दूध नहीं मिलता, मैं उसे काफी देर तक दूध पिलाने लगी पर इससे भी कोई लाभ न हुआ। अब तो वह दूध पिलाते समय या दूध पी चुकने पर भी दस्त कर देता है। क्या करूँ ?

उत्तर—यदि बच्चा दूध पिलाते समय दस्त करे या दूध पिलाने के बाद रोने लगे तो समझना चाहिए कि उसके पेट में आवश्यकता से अधिक दूध पहुँचाया जा रहा है। यदि आप जितनी देर तक दूध पिलाती हैं उसके आधे ही समय तक दूध पिलावें तो देखेंगी कि दूध पीने के बाद शिशु कम रोवेगा। प्रयत्न यह कीजिये कि बच्चे को २४ घंटों में केवल एक दस्त हो या अधिक से अधिक दो ही दस्त हों।

हरे दस्तों का यह अर्थ है कि पेट में अधिक भोजन पहुँचने से उसे कुछ दूध बिना पूरा पचे ही निकालना पड़ रहा है। क्योंकि पेट में जितना स्थान है उससे ज्यादा भरने से प्रकृति को कुछ स्थान तो निकालना ही पड़ेगा।

यदि माँ के स्तनों में काफी दूध हो तो स्वस्थ बच्चा प्रारम्भ के चार-छः बार की खींच में ही जरूरत भर का दूध चूस लेता है। अतएव बच्चे को कम दूध पिलाने से सब ठीक हो जायगा।

दहेज के कारण

प्रश्न—हम तीन बहनें हैं। तीनों की अवस्था १८ वर्ष के ऊपर जा चुकी है। हम तीनों अपने माता पिता पर बोझ स्वरूप हैं, क्योंकि इतनी पढ़ी नहीं हैं कि कहीं जाकर नौकरी कर सकें और समुचित दहेज न जुट सकने के कारण हम में से किसी का विवाह भी नहीं हो सका और न होने की आशा है, हम क्या करें ?

उत्तर—पुरानी परिपाटी और कुल मर्यादा कुछ तो आप लोगों को छोड़नी ही पड़ेगी। पिता सदैव पालन-पोषण के लिये जीवित न रहेंगे। अभी से कुछ सोचना उचित है। अपने पिता से राय करें और पास-पड़ोस में देखें कि आप तीनों क्या काम करके घर की आमदनी बढ़ा सकती हैं। आपकी जैसी परिस्थिति है उसको देखते हुए हमें तो कोई उपाय नहीं सूझता। आशा है दीदी की पाठिकाएँ कुछ उपाय बतावेंगी।

४० हजार दिये तब भी कन्या जल मरी

कलकत्ते की उमा सुन्दरी ने अपनी पोती को दहेज में ४० हजार रुपये दिये तब भी पति और सास ने उसे इतना सताया कि वह अपनी देह में आग लगा कर जल मरी। इस सम्बन्ध में अदालत के सामने उमा सुन्दरी ने जो बयान दिया है उसका सारांश इस प्रकार है:—

केदार मेरा पुत्र है। उसने दो विवाह किये। पहली पत्नी से उसे एक बच्ची हुई। वह बहुत छोटी थी तभी उसकी मां की मृत्यु हो गयी। इस बच्ची का नाम था नीलिमा। नीलिमा जब दो वर्ष की थी तब केदार ने दूसरा विवाह किया नीलिमा अपनी इस मां को ही अपनी सच्ची माँ समझती रही क्योंकि उसने बड़े प्यार से उसका लालन-पालन किया।

नीलिमा सयानी हुई। उसके विवाह की हमें चिन्ता हुई। सभी जगह लड़के खोजे गये। पीछे एक लड़का हमें मिला। इस लड़के का नाम था हरिहर मलिक। यह अभी हमारे सामने खड़ा है। विवाह में हमने अपनी जाति की रीति के अनुसार दो सोने की चूड़ियाँ नीलिमा को दी। इन चूड़ियों में मोती जड़े थे। पर नीलिमा की सास को यह चूड़ी पसन्द नहीं आयी। उन्होंने चूड़ी लौटा दी। हमारे सामने और चारा नहीं था। हमने बदले में ५ सौ रुपये दे दिया।

विवाह के बाद एक वर्ष तक नीलिमा के साथ उसकी सास और पति का किसी तरह का दुर्व्यवहार नहीं हुआ। पर वह सुखी भी नहीं रही। मेरे पुत्र ने उसके नाम से ५ हजार रुपये का नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट खरीदा था। उसने सोचा था कि नीलिमा जब सयानी हो जायगी तब ये रुपये उसे मिलेंगे और वह उनका कोई समुचित उपयोग करेंगी।

नीलिमा के पति को हमने दहेज में ४० हजार रुपये दिये थे। उसमें उसके गहने भी शामिल थे। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट का रुपया दहेज में शामिल नहीं था। उसे हमने इसलिये खरीदा कि वह नीलिमा के किसी व्यक्तिगत काम में आये। पर उसके पति की ओर से उस रुपये की भी मांग की जाने लगी।

हमने सर्टिफिकेट देने से इन्कार कर दिया। और इसी के बाद से नीलिमा के साथ दुर्व्यबहार आरम्भ हुआ। उसे ताने दिये जाते। खाना नहीं दिया जाता और बुरी तरह उसपर मार पड़ती। इसकी सारी सूचनाएँ हमें मिला करतीं। पर हम करते क्या? विवश थे। मार खा-खाकर नीलिमा की पीठ जैसे छलनी हो जाती। उस पर चोट के निशान कई दिनों तक बने रहते। वह रोती-बिलखती पर कुछ कर नहीं पाती। उन निशानों को कितनी बार हमने अपनी आँखों से भी देखा था।

हमारे सामने कोई उपाय नहीं था और इस बर्बर अत्याचार से बचाने के लिए हमने यह सर्टिफिकेट भी नीलिमा के पति को सौंप दिया। पर इतने से ही वह शान्त नहीं हुआ। उसने चाहा कि यह सर्टिफिकेट भी उसी के नाम से परिवर्तित कर दिया जाय। ऐसा करने के लिए हम तैयार नहीं हुए और उसने फिर उसी बर्बर तरीके का सहारा लिया।

बाद में एक दिन हमें खबर मिली कि नीलिमा जल गयी और वह अस्पताल भेजी गयी है। हम दौड़े हुए नीलिमा के मकान पर गये। वहां देखा कि उसकी सास किसी एक औरत के साथ खड़ी है और उसके पति तथा श्वसुर कुछ दूसरे आदमियों

से बातें कर रहे हैं। मेरा पुत्र दौड़ा हुआ उनके पास पहुँचा और हरिहर (नीलिमा के पति) के पिता के पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने उससे यही कहा कि नीलिमा जल गयी है और मेडिकल कालेज अस्पताल उसे भेजा गया है। हम दौड़े अस्पताल पहुँचे और जो कुछ वहाँ देखा वह किसी के भी हृदय को विदीर्ण कर सकता है। नीलिमा आज इस संसार में नहीं है। पति और सास के असह्य अत्याचार से त्राण पाने के लिए हमारी प्यारी पोती ने अपनी देह में आग लगाकर आत्महत्या कर ली। रुपये के लोलुप पति और सास से उसका जीवन देखा नहीं गया।

पुरुष वेषधारी स्त्रियों की विचित्र कहानियाँ

अर्कान्सास के एक अस्पताल का सञ्चालक एक ७४ वर्षीय डाक्टर जब बीमार हुआ और मरने लगा तब मालूम हुआ कि वह पुरुष नहीं स्त्री था। उसने अपनी कहानी इस प्रकार बताई:—

मेरे माता-पिता को, जो इङ्गलैंड में रहते थे, अपनी सम्पत्ति की रक्षा के लिये पुत्र की आवश्यकता थी। पर बजाय पुत्र के मैं उनके यहाँ कन्या पैदा हुई। परन्तु उन्होंने मुझे पुत्र की भाँति पाला-पोसा और कपड़े पहनाया और सबसे यही कहा कि मैं पुत्र हूँ। मर्द के रूप में ही मैंने पढ़ाई समाप्त की और डाक्टर बना।

मर्द के रूप में ही मैंने यहाँ अर्कान्सास में आकर प्रैक्टिस शुरू की। किसी को कभी सन्देह नहीं हुआ कि मैं स्त्री हूँ। इसमें मुझको इतनी सफलता मिली कि मैंने अपने घनिष्ट मित्रों को भी अपना भेद न बताया। अब मैं मर रही हूँ। अब यह भेद छिपाने में असमर्थ हूँ।

बहुतेरी स्त्रियाँ अपने पति को इतना प्यार करती हैं कि चौबीसों घंटे उसके साथ बनी रहने के लिये पुरुष का वेष धारण कर लेती हैं और जहाँ वह जाता है उसके साथ जाती हैं। कोई डेढ़ सौ वर्ष पहले की बात है, अपने पति के प्रेम के कारण जो सेना में नौकर था, एक सुन्दरी फ्रान्सीसी रमणी ने पुरुष का वेष धारण करके उसी सेना में भरती हो गई। परन्तु जब भेद खुला तब वह सेना से निकाल दी गई और अपने घर भेज दी गई। किसी प्रकार पुनः वह पुरुष का वेष बना कर सेना में भर्ती हुई। परन्तु जब फ्रन्ट पर पहुँची तब उसे ज्ञात हुआ कि उसका पति मारा गया। इससे वह बहुत दुखी हुई।

१६३४ में एक युवती पुरुष वेश में शिकागो में एक खेत में काम करने लगी। क्योंकि स्त्री को यह काम न मिलता था और उसके पास जीविका का कोई और साधन न था। परन्तु जब उसे समाचार मिला कि उसका बाबा उसके लिये १३८०० पौंड की सम्पत्ति छोड़ कर मरा है तब उसने यह भेद प्रकट कर दिया और कहा कि अब उसे अपने को छिपाने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार जीविकोपार्जन की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर बेलजियम की एक महिला पुरुष वेश में एक जहाज में 'मेट' बन गई। दो दिन उसने सब काम किया और उसका भेद न खुला। तीसरे दिन तेज आंधी आई जिससे उसकी टोपी उड़ गई। तब उसके केश देख कर दूसरे 'मेटों' ने शोर मचाया कि वह स्त्री है। जहाज आइसलैंड जा रहा था। कप्तान ने जहाज के मालिक से रेडियो फोन से पूछा, 'अभी-अभी पता चला है कि एक मेट पुरुष नहीं स्त्री है। क्या करें?' उत्तर गया—'फौरन जहाज वापस करो और उसे उतारो।' जहाज वापस किया गया और वह स्त्री चीखती-चिल्लाती रही, पर जबरदस्ती उतार दी गई।

यह हैं हाल मेरे ...उनके

लेखिका, श्रीमती विमला ओझा

इस लेख में लेखिका ने अपने पति का शब्द-चित्र अंकित किया है।

छोटा कद और दुबला-पतला शरीर है, गोल चेहरे पर कभी-कभी गोल मुस्कान थिरक जाती है, लेकिन कहकहा शायद ही फूटता है? ओठों के दोनों ओर तराशी हुई मूंछें और चौड़े मस्तक के चोटी तक खींची गई मांग; दोनों कनपटियों पर लटकती हुई अलकावली कुछ विशेषता और आकर्षण रखती है। मेरे लिये ही नहीं बल्कि प्रायः हर देखने वाले के लिये।

शान्त, भोला चेहरा मन और हृदय की अन्तर भावनायें प्रगट करता है। रास्ता चलते हुये तेजी से कदम उठाना उनके द्रुतकार्यकर्तृत्व का बोधक है। आराम हराम है, कल के लिए कोई काम न छोड़ने का जटिल स्वभाव है। व्यवहार में संकोची पर दिल दरिया है। अपनी और परायी जिम्मेदारी निभाने में आपको खपा देने का रोग-सा है। किसी की प्रार्थना, किसी का अनुरोध, किसी की मनुहार, किसी का हठ, किसी का परामर्श और सुझाव उनके लिये ईश्वरीय आदेश-सा होता है। उसे टालने की कौन कहे, सफल कर दिखाने में ही उनकी कृतकार्यता है। सबकी रीझ-खीझ को निपटाते हैं। किन्तु अपनी आवश्यकताओं के लिए निपट कन्जूस। एक धोती, एक अंडरवियर और एक ही खादी का कुरता पैर में सस्ते चप्पल तथा सुबह-शाम रूखा-सूखा जो भी भोजन मिल जाय—बस, यही उनके जीवन की आवश्यकता और जिन्दगी की जिन्दगी समझिये। धोबी घर भर के कपड़े धोता है, किन्तु बड़े बाबू के कपड़ों के लिये वह तरसता रहता है। हर इतवार नलगंगा में वे अपने ढाई कपड़ों को फेनिल मर्दन से सहलाया करते हैं। इसी लिये सप्ताह भर लकदक रहते हैं। कपड़े फटे हैं। चप्पल टूट गये हैं—इस प्रकार जब उन्हें बार-बार याद दिलाया जाय तब भी नहीं, सत्याग्रह की धमकी देने पर साल भर में मुश्किल से २० रुपये वेषभूषा में वे खर्च कर पाते हैं, किन्तु परिवार वालों के कल्पवृक्ष हैं। हर सदस्य की जा-बेजा आवश्यकताओं की पूर्ति तत्काल करते हैं।

हम सब साढ़ेछः प्राणी तो स्थायी रूप से उनके साथ रहते हैं। हर हफ्ते दो-चार मेहमानों का आ जाना स्वाभाविक होता है, किन्तु उनके चेहरे में शिकन नहीं, बड़े हर्ष और उल्लास से सबका पोषण और स्वागत करना उनका कर्तव्य बन गया है। भावनाओं की कोमलता और कर्तव्य कठोरता का अपूर्व सम्मिश्रण मैं उनकी जिन्दगी में पाती हूँ।

छः वर्ष पहले व्याह कर मैं उनके घर आई थी, पहले तो मैंने समझा था कि जिन्दगी डूबी, गुरुकुल के स्नातक से शादी कर पिता ने भूल की। इनसे अच्छे तो वे साधु-सन्यासी हैं जो अच्छे भोजन और अच्छे वस्त्र पहन कर 'अहं ब्रह्म' की चोट जन-समाज पर करते हैं। किन्तु थोड़े ही दिनों में मेरा यह सब भ्रम दूर हुआ। मैंने समझ लिया कि पति के रूप में मुझे धूलभरा हीरा मिल गया। जो घन की सहस्रों चोटें सह कर भी विचलित और विकृत नहीं होता। जिसके पास जाता है, जहाँ कहीं रहता है, उसी की शोभा बढ़ाता है।

अब मैं उन पर श्रद्धा करने के बजाय दया का भाव अधिक रखती हूँ। उनकी मासूम चेहरा, भोली

चितवन और धीमी-धीमी पर मीठी बोली मेरे हृदय में स्नेह और आकर्षण पैदा करती है। उनमें मैं भोले बचपन को खेलता हुआ पाती हूँ। मजाक के रूप में या सही कुछ भी उनसे कहा जाय, उनके लिये सवा पचीस होता है। उनमें आक्रोश और व्यंग्य-व्यंजना का लेश नहीं। सारा व्यक्तित्व दूध के समान स्वच्छ और हीरे की भाँति दृढ़ एव चमकदार मुझे प्रतीत होता है।

मेरी या मित्रों की प्रेरणा से जब कभी वे कुछ लिखते हैं—तो कमाल कर देते हैं, किन्तु आत्म-प्रचार के भय से वे लेखक बनना पसंद नहीं करते। एक सर्वोच्च हिन्दी संस्था में अच्छे पद पर काम करते हुये भी वे पूरे गद्य-पुरुष हैं। कदाचित् उनकी अपनी इच्छायें नहीं, वे स्वयं अपने आपको समझते हुये भी उपेक्षा भाव रखते हैं। यदि उन्हें इस बात की चिन्ता न होती कि मेरे भोजन न करने पर घर भर भूखा रहेगा तो शायद अन्न और भोजन की भी उपेक्षा करते।

एक वर्ष पहले भगवान ने मेरी गोद भर दी। मेरा 'देवात्मन्' ठीक उन्हीं की तरह मुस्कराता है, हाथ-पैर पटक कर शीघ्रगामिता का दम भरता है। पिता को इतना हिल गया है कि उन्हें अपनी आँख से ओझल नहीं होने देना चाहता। पुत्र के प्रति उनकी अपार ममता है, किन्तु मौन और दबी हुई। संकोच से लदी हुई। जब कभी जबर्दस्ती मैं उनकी गोदी में 'देवात्मन्' को डाल देती हूँ तो वे सजल नेत्रों से उसे संभालते हैं, किन्तु संकोचवश सबके सामने पुचकारने और बुलाने का साहस नहीं कर पाते।

कहा जाता है कि पुत्र पैदा होने पर पति पत्नी का प्रेम बँट कर पुत्र पर ही केन्द्रित हो जाता है किन्तु मैं अपने को इसके विपरीत देखती हूँ। 'देवात्मन्' के पैदा होने पर भी मैं उन पर अधिक दयालु बनी हुई हूँ। दूध पीने के लिये एक बार देवातमन् को रोने दे सकती हूँ किन्तु उन्हें संभालने और दफ्तर भेजने की तैयारी में मैं तनिक भी चूक नहीं कर सकती। सोचती हूँ कि इतना बड़ा अनुभवी, सुशिक्षित और शालीन व्यक्ति इस गतिशील जमाने में कब तक अपने को इस तरह छिपाये रखेगा।

जुलाई मास का फल

पृष्ठ ३४७ पर दिये गये अङ्क-चक्र के अनुसार

१—पारिवारिक वातावरण शान्त व सुखमय, मित्रों से विवाद, शत्रु पर विजय, विवाहित हैं तो पति पत्नी के बीच मेल, धन प्राप्ति, प्रवास का योग।

२—निराशा, परेशानी, अर्थाभाव, अन्य चिन्तायें। धैर्य से काम लीजिये। मास का अन्त सन्तोष प्रद होगा।

३—आप नई योजनाएँ बनायंगे पर उन्हें कार्य का रूप देने में जल्दी न करें। स्वास्थ्य सम्भलेगा, मन प्रसन्न रहेगा, शत्रु मेल करेगा।

४—यात्रा का योग आकर भी रुक जायगा। किसी प्रभावशाली व्यक्ति की सहायता से आपको व्यवसाय में गति प्राप्त होगी।

५—अकस्मात् सुख और आनन्द का योग।

६—यह मास आपके लिये जीवन-संघर्ष का मास है। पर यह वर्ष उत्तम होगा।

७—जिन्हें आप अपना हितैषी समझते हैं उन से ही आपकी उन्नति में बाधा पहुँचने का अन्देशा है। किसी पर भी सोच-समझ कर भरोसा करें।

८—खान-पान में सावधानी रखें जिससे बीमार न पड़ें। यह मास स्वास्थ्य के लिये चिन्त्य, बाकी सब ठीक।

९—आपके जीवन में भारी परिवर्तन की सम्भावना है जो उज्वल भविष्य की ओर ले जायगा।

१०—आर्थिक दृष्टि से मास उत्तम है। जिस काम में भी हाथ डालेंगे सफल होगे।

सिनेमा-संसार

नेहरू जी फिल्म में

किसी भी देश का प्रधान मन्त्री किसी फिल्म में उतरा हो ऐसा कभी सुनने में नहीं आया किन्तु भारत इसका अब अपवाद बनने जा रहा है। भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू अब एक फिल्म में एक अभिनेता के रूप में उतरेंगे और इसके लिये उन्होंने अपनी सम्मति भी दे दी है।

अखिल भारतीय फिल्म गोष्ठी समारोह के अवसर पर राजकपूर जब नेहरू जी से उनके निवास स्थान पर मिले थे तब उन्होंने उनसे अनुरोध किया था—'मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं बच्चों का एक चित्र तैयार करूँ और उसमें यह दिखाने का प्रयास करूँ कि भारत का प्रधान मन्त्री अपने देश के भावी नौनिहालों को किस तरह प्यार करता है और ये नन्हें बच्चे उसे किस प्रेम-भरी दृष्टि से देखते हैं।' नेहरू जी को राजकपूर की योजना पसन्द आ गयी।

सिने-क्षेत्रों में राजकपूर के इस प्रस्ताव और नेहरू जी की सहमति की बड़ी चर्चा है। राजकपूर एक चित्र बनाने जा रहे हैं—'अब दिल्ली दूर नहीं।' नेहरू जी इसी चित्र में बालकों के साथ उतरेंगे। चित्र के कथानक, गीत, कथोपकथन आदि सब कुछ तैयार हैं। आवश्यकता है नन्हें कलाकारों की। राजकपूर इसके लिये २० बच्चों की टोह में हैं। बच्चे ऐसे हों जो पेशेवर कलाकार न हों और इन की अवस्था भी ८ वर्ष से लेकर १२ वर्षों तक की हो। नेहरू जी अभी रूस गये हैं उनके वहाँ से लौटने पर ही इस चित्र का 'मुहूरत' होगा।

उषा किरण

उषा किरण के विवाह हुए एक वर्ष व्यतीत हो गये पर वह अपने पति के साथ कभी ठीक से सुहाग रात भी नहीं मना सकी। उसके पति डाक्टर मनोहर खेर एक नये डाक्टर हैं और अपने पेशे को आगे बढ़ाने के लिये रात-दिन व्यस्त रहते हैं। उषा किरण भी इधर चित्रों की शूटिंग में इतनी अधिक व्यस्त रही है कि वह अपने पति के साथ पत्नी की तरह कभी ठीक से रह नहीं सकी। अब दोनों ही अपनी सुहाग रात मनाने के लिये विदेश गये हैं।

अपनी विदेश यात्रा के अवसर पर उषा किरण ने अपने विवाह के उपलक्ष्य में एक प्रीति भोज दिया था। इस अवसर पर बम्बई के प्रायः सभी प्रमुख कलाकार उपस्थित थे। पर सभी यह देख कर दंग थे कि उषा किरण, जो जिस राज्य का था उससे उसी राज्य की भाषा में बातें करती। वह निरूपा राय और जयन्त देसाई से गुजराती में स्मृति-विश्वास और माला सिन्हा से बँगला में, बलराज सहानी, अचला, जिया सरहदी और श्रीमती महबूब से हिन्दी में और नलिनी जयवन्त से मराठी में बातें कर रही थी। उसकी यह प्रतिभा देख कर बलराज से रहा नहीं गया और उसने पूछ दिया—'उषा, तुमने बंगला कब सीखी?'

उषा किरण कह रही थी कि यह एक वर्ष का समय कितने सुख से और कितनी जल्दी बीत गया। मुझे तो ऐसा लगता है जैसे मेरी शादी कल ही हुई है।

आधा मन गुरियों का लहँगा

अभिनेत्री जेनेट ली पेट केलीस ब्लूस नामक फिल्म में एक नृत्य करते समय काँच की नीली गोलियों को पिरो कर बनाया गया एक जालीदार लहँगा पहनेंगी, जिसका वजन ४० पौंड है। लहँगे के वजन के कारण जेनेट को नृत्य के रिहर्सल में शरीर का सन्तुलन रखने में बड़ी मुश्किल हुई।

रसोई

आम की लौंजी

अच्छे गूदेवाले आमों को छील कर कद्दूकस में किस लाजिये पतीली में थोड़ा घी डाल कर भून लीजिये अंदाज की शक्कर छोड़ कर पानी डाल दीजिये और पक जाने पर इलायचीं के दाने व कुछ सुगंधि भी मिला सकतीं हैं। आम की इस मीठी लौंजी को चख कर देखिये।

नोट—यदि आप चाहें तो किसे आम को भूनने के पहिले जीरों से भी बघार सकतीं हैं। खाने में स्वादिष्ट होगा।

—श्रीमती कुन्तल, अंबिकपुर

आम की बरफी

सामग्री—अच्छे पके आम, असली घी, चीनी, और छोटी इलायची, यह सब आप अपने अन्दाज से लें।

विधि—पहले आमों को धोकर छीललें। फिर किसी साफ कपड़े से छाँनकर सारा रस निकाल लें। इसके उपरान्त कलई की हुई कढ़ाई में इसे चूल्हे पर चढ़ायें। और थोड़ा-थोड़ा कर के घी डातती जायँ, साथ-साथ हिलाती भी जाय। जब खूब गाड़ा हो जाय तब उतार लें। अब शक्कर की चासनी बना कर आम के रस के साथ मिला दें। और साथ में इलायची का चूर्ण भी मिलाएं। इसके बाद किसी कलई की हुई थाली में जमा दें। जब जम जाय तो बरफी के आकार में काट लें।

—सुगीता बागपी, लाकर

सेवई की तहरी

सामग्री—सेवई एक पाव, प्याज बड़े-बड़े २-३, काजू एक छटाक, आलू बड़े २-३, उड़द की दाल एक चम्मच (धुली हुई) घी अन्दाज से, जीरा मिर्च, अदरख, तेजपात, नमक, मशाला, धनियाँ, हल्दी, मिर्च, प्याज, लेहसुन।

विधि—प्याज को पतला पतला काट लीजिये और आलू को भी छोटा-छोटा काट लीजिये। अब फिर थोड़ा सा प्याज काटिये, अदरख के भी बारिक बारिक टुकड़े करिये अब यह दोनों वस्तुयें और तेजपात उड़द की दाल धुली हुई, जीरा मिर्च बघारने के लिये रख लें। और धनियाँ, हल्दी, मिर्च, प्याज, लेहसुन पिसवा कर रख लें। अब कढ़ाई चढ़ाइये और घी डालिये फिर जो प्याज काट कर रक्खा है उसे घी में भूनिये जब थोड़ा-थोड़ा गुलाबी हो जाय तो अलग एक बर्तन में निकाललें इसी तरह आलू और काजू भूनिये और फिर सेवई भूनिये और थोड़ी सी घी में जो बघारने की वस्तुये रक्खी हैं उन्हें बघार दीजिये। जब यह सब चीजे लस हो जायें तो सब मसाले डालकर भूनिये। जब भून जाय तो जो भूनकर सेबई रक्खी है उसे डाल दीजिये और फिर पानी अन्दाज से डालिये जिसमें सेवई पक जाये और पानी सूख जाय। जब सेवई पक जाय तो उसमें प्याज, आलू, काजू जो भून कर रक्खा है तथा नमक डाल दीजिये और पानी सुखने पर उतार लीजिये। प्लेटों में सजाकर नास्ते के लिये चाय के साथ बहुत अच्छा एवं स्वादिष्ट होगा। शीघ्र ही सामग्री मंगाइये और बनाकर देखें।

—रानी कविता कुमारी देवी

अंकुरित चने

चने साफ करके सुबह पानी में भिगो दीजिये। शाम को पानी से निकाल कर साफ कपड़े में ढीला बाँध कर टांग दीजिये। रात भर में अंकुर निकल आवेंगे। बस प्लेटों में नीबू के रस व नमक के साथ खाइये।

विविध-विषय

जीवन भर की कमाई का दान

मध्य भारत के स्वास्थ्य विभाग की एक परिचारिका श्रीमती घुले ने जिनकी आयु ६५ वर्ष की है, अपने जीवन भर की कमाई का २२ हजार रुपये का दान महेश्वर के प्रसूति-गृह के निर्माण के लिये कर दिया है। इसी प्रसूति गृह में आपने अभी तक काम किया है और अभी भी कर रही हैं। प्रसूति-गृह भवन निर्माण होने के पश्चात् राज्य सरकार को सौंप दिया जायगा। ऐसे दानदाता धन्य हैं।

अस्पृश्यता कानून

अस्पृश्यता (अपराध) विधेयक १ जून १९५५ से अमल शुरू हो गया। यह कानून संसद के दोनों सदनों द्वारा पिछले अधिवेशन में सर्व सम्मति से पास किया गया था।

इस कानून के अनुसार अस्पृश्य होने के कारण किसी व्यक्ति को उसके अधिकारों से वञ्चित रखना अपराध समझा जायगा। इसका उल्लंघन करने वालों को ६ महीने की कैद अथवा ५००) रु० जुर्माना अथवा दोनों की सजा दी जा सकती है।

स्त्री पति को पैसे के लिये जेल भेजती है

जब उसका पति जिसकी साप्ताहिक आमदनी ७ पौंड १० शिलिंग है जेल चला जाता है तो उसके परिवार को १५ पौंड साप्ताहिक खर्चा चलाने को दिया जाता है। वह पुरुष कई बार जेल जा चुका है और अब यह पता चला है कि जब जब उस स्त्री को घर में खर्च कम पड़ जाता है तब-तब वह अपने पति को 'शराबी' के नाम से अदालत से सजा करा देती है। दक्षिणी अमेरिका का एक दम्पति ऐसे ही अपनी जीविका चलाता है।

नेहरू जी की इच्छा

एक सभा में बोलते हुए प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने कहा कि 'मैं चाहता हूँ कि भारत के प्रधान मंत्री के पद पर आसीन आदिवासी या हरिजन को मैं देख सकूँ।'

जाति-व्यवस्था के दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता को बताते हुए प्रधान मन्त्री ने कहा कि हमारी समानता की कल्पना तब पूर्ण होगी जब छोटी कही जाने वाली जाति में पैदा हुए व्यक्ति ऊँचे पद पर पहुँच जायेंगे।

शरणार्थी महिला से १०००) ठग लिये

जमशेदपुर में एक शरणार्थी महिला को १८००) का क्लेम मिला था। जब वह इम्पीरियल बैंक से रुपये लेकर जा रही थी तो दो व्यक्तियों ने २२ तोले सोने का छड़ दिखा कर नाटकीय ढङ्ग से कहा गया कि यह असली सोना है और उनमें से एक व्यक्ति को मिला है। उसका मालिक हल्ला मचायेगा, अतः वह उसे ७००) में लेकर जल्दी से चली जाय। जल्दी में स्त्री से ७००) के बदले १०००) ले लिये। घर पहुँच कर रुपये गिने तो धोखा मालूम हुआ। पड़ोसियों को सोने की छड़ दिखलाई। वह छड़ भी सोने की नहीं निकली।

चित्रकार के हाथ नहीं हैं !

एथेन्स के २४ वर्षीय चित्रकार क्रिस्टो सोपोहल्स के हाथ ही नहीं हैं लेकिन वह सफल चित्रकार हैं और वह स्विटजर लैण्ड में अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिये आमन्त्रित किया गया है। वह अपनी बांहों में जोड़ी हुई तूलिका से बहुत ही अच्छे चित्र बनाता है।

लड़की सर्व प्रथम

बम्बई विश्वविद्यालय की एम० ए० परीक्षा में उत्तीर्ण हुए २५७ विद्यार्थियों में एक बालिका सर्व प्रथम रही। उक्त बालिका का नाम कुमारी कालिन्दी भालचन्द्र बेदक है। उसको चांसलर का स्वर्ण पदक मिला।

रूस भारत मैत्री के ५ आधार

सोवियत सङ्घ की मन्त्री-परिषद् के अध्यक्ष एन० ए० बुल्गानिन तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के संयुक्त वक्तव्य द्वारा स्वीकृत।

(१) एक दूसरे को प्रादेशिक अखंडता और प्रभुसत्ता का पारस्परिक सम्मान।

(२) अनाक्रमण।

(३) आर्थिक, राजनीतिक और विचारधारा-सम्बन्धी किसी कारण से एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप।

(४) समानता और पारस्परिक लाभ, तथा

(५) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

गांधी जी की मितव्ययिता

श्री विष्णुशरण 'जीवन साहित्य' में लिखते हैं:—

गांधी जी के पास जो भी पत्र आते, यदि वे सग्रहणीय न होते और एक ओर से कोरे होते तब पुनः पत्र लिखने के लिये उन्हें रख लिया जाता था, ऐसे पत्रों का पैड अलग ही था। यह उनका 'मौन पैड' था। मौनवार (सोमवार) को लिखित रूप से वार्तालाप करने के लिये वे आग्रह पूर्वक इसी पैड का प्रयोग करते थे। इसी प्रकार लिफाफे सावधानी से खोलकर, उलट कर अथवा चिट चिपका कर पुनः व्यवहार के योग्य बना लिये जाते थे। उनका भीतरी कोरा भाग लेख अथवा छोटे पत्र लिखने के काम में आ जाता था। आलपिनों, सुतली और तागे के छोटे-छोटे टुकड़ों को तथा रैपर्स को हिफ़ाजत के साथ और इस प्रकार ढङ्ग से रख दिया जाता था कि आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त ही निकाले जा सकें। वास्तव में उनकी वस्तुएँ इतनी कायदे के साथ लगी रहती थीं कि उन्हें किसी की खोज करने की आवश्यकता ही न पड़ती थी, आंख आंख बन्द कर वे उन्हें आसानी से उठा सकते थे।

जब वह यात्रा पर होते तब चलते समय दवात में से स्याही एक शीशी में भर दी जाती और कार्क लगा दी जाती ताकि वह गिर कर तनिक भी नष्ट न हो।

लिखने के समय पुनः उसे शीशी में से मिट्टी की दवात में लौटा दिया जाता था। कातने में बेकार हुए सूत के टुकड़ों से उनका पिनकुशन तैयार होता था और चलने से घिस-घिस कर जब तक खड़ाऊँ बिलकुल ही बेकार न हो जाती, वे उनका त्याग न करते थे।

मितव्ययिता से उनका उद्देश्य तो केवल यह था कि जब तक किसी भी वस्तु का पूरा-पूरा उपयोग न हो जाय उसे फेंका न जावे।

—महाकवि रहीम—

[पृष्ठ ३४७ का शेषांश]

समर्थन प्राप्त हुआ। वे मुसलमान थे और अपनी साहित्य-पिपासा के शान्त करने के लिए अरबी और फारसी के समृद्ध साहित्य से असीम सामग्री पा सकते थे, किन्तु उन्होंने संस्कृत और हिन्दी सीखी और स्थानीय भाषा में उच्च-कोटि की कविता की। अकबर के दरबारी कवियों में रहीम प्रमुख थे इनके अतिरिक्त और भी कई मुसलमान कवियों का अकबारी दरबार से सम्बन्ध था। इस प्रकार प्रौढ़ावस्था को प्राप्त करते ही हिन्दी को धर्म अथवा जाति के भेद-भाव के बिना, सभी वर्गों के भारतीयों का योगदान मिला। जिस भावना से ये कविगण प्रेरित हुए और इन्होंने हिन्दी के भंडार को भरा, यह भावना आज भी हमारे लिए गौरव का विषय है और हमारी राष्ट्र भाषा की अतुल सम्पत्ति है।

——

आगामी अंक में पढ़िये

टोना, टोटका, मंत्र-तंत्र, मूठ मारण, निवारण—स्वामी भिक्षानन्द, शरीर के मोटाने या दुबलाने की चिन्ता—श्यामा बाई।

अपने विचार

कुछ 'दीदी' के विषय में

दीदी के वर्तमान रूप से हमें सन्तोष नहीं है। हम इसे और भी सुपाठ्य और आकर्षक बनाना चाहते हैं। हम चाहते हैं, यह संसार की श्रेष्ठ पत्रिकाओं के बीच रखी जा सके। हम प्रयत्न शील हैं। पर हमारे मार्ग में सब से बड़ी बाधा है धन का अभाव! पहले भी हमारे पास कोई पूँजी नहीं थी आज भी नहीं है। एक मात्र पाठकों और शुभचिन्तकों के सहारे हमने 'दीदी' की यह छोटी सी नौका संसार के तूफानी समुद्र में डाल दी थी। पीछे मुड़कर हम देखते हैं तो हमें आश्चर्य होता है कि किस प्रकार पिछले १५ वर्षों से 'दीदी' उन भयावनी लहरों को, जिनकी एक ही थपेड़े से बड़ी-बड़ी पत्रिकाएँ गर्त में विलीन हो गई, काटती चली आ रही है। इस बीच में हम में बहुत कुछ सहने की शक्ति पैदा हो गई है। और हमारे प्रति पाठकों का विश्वास व उनकी सहानुभूति द्विगुणित हो गई है। इसी से हम संकटों की परवाह न करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। हम कहीं से अचानक आर्थिक सहायता की आशा नहीं करते। एक मात्र ग्राहक-शुल्क का ही सहारा है। इस वर्ष हमने दीदी के ४००० नए ग्राहक बनाने का निश्चय किया है। इसी से आगे का मार्ग सुगम होगा। हमें आशा है पाठकों के सहयोग से हम इस प्रयत्न में सफल होंगे।

नेहरू जी की रूस यात्रा

प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू की रूस यात्रा और उनका वहाँ अभूत पूर्व स्वागत आधुनिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। नेहरू जी की इस यात्रा से भारत और रूस दोनों देश बहुत निकट आ गए हैं और इसके परिणाम स्वरूप विश्व में शान्ति की स्थापना का प्रश्न बहुत कुछ सहज हो गया है।

रूस में नेहरू जी से कुछ छिपाया नहीं गया और उन्होंने वे सब जगहें देखीं जहाँ पहले कभी कोई विदेशी नहीं जाने पाया था। रूस से लौटते समय नेहरू जी रूस के प्रधान मार्शल बुलगनिन को भारत आने का निमंत्रण दे आए हैं जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है और आशा है कि इसी जाड़ों में वे भारत आएँगे। मार्शल बुलगानिन का भारत आगमन इतिहास की दूसरी महत्व पूर्ण घटना होगी जो विश्व के राजनीति को प्रभावित करेगी।

गोआ का प्रश्न

भारत स्वाधीन हुआ प्रान्तु उसका एक छोटा सा भाग गोआ अभी भी पुर्तगाल के अधिकार में है। भारत को स्वाधीन देखकर गोआ निवासियों के हृदयों में भी जो सब प्रकार से भारतीय हैं, स्वाधीता की पिपासा उग्र हो उठी है और उन्होंने सत्याग्रह आरम्भ कर दिया है। भारत की उनके साथ पूर्ण सहानुभूति है और भारतीय सत्याग्रही भी गोआ जाने शुरू हो गए हैं। परन्तु पुर्तगाल अभी पुराना सपना ही देख रहा है। वह निःशास्त्र, शान्त सत्याग्रहियों का बड़ी बर्बरता के साथ दमन कर रहा है। यह प्रगट सत्य है कि पुर्तगाल अब गोआ को अपने चंगुल में दबा कर नहीं रख सकता। यदि समय रहते वह न चेता तो उसे अपयश ही मिलेगा।

हम कितना खर्च करें

कांग्रेस के प्रेसीडेंट श्री धेबर भाई ने अपने एक भाषण में कहा है भारत वर्ष में किसी भी व्यक्ति के

के लिए २५०) प्रति मास से अधिक खर्च करना बहुत बड़ा सामाजिक अपराध है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जो अधिक खर्च करता है लाख-लाख गरीब भारतीयों को खाली जेब और खाली हाथ बनाने का अपराध करता है।

हम कांग्रेस प्रेसीडेन्ट से सर्वथा सहमत हैं। क्योंकि सरल और सादा जीवन बिताने के लिए २५०) से अधिक खर्च की किसी को आवश्यकता नहीं पड़ सकती। आशा है, उन लोगों का ध्यान, जो नशे बाजी और फिजूल के खर्चों में अपने धन का व्यय करते हैं, इस ओर जायगा।

बुराइयों की जड़ सिक्का

संसार में जब से सिक्कों का चलन हुआ तभी से बुराइयों का श्रीगणेश भी हुआ क्योंकि सिक्कों के रूप में धन जोड़ कर रखना बहुत सहज हो गया एक समाचार है कि चीन इस बुराई का अन्त करने जा रहा है। चीन के मन्त्रिमण्डल ने यह घोषणा की है कि देश भर में सरकारी कर्मचारियों को अब वेतन सिक्कों के रूप नहीं मिलेगा। वरन् भोजन, वस्त्र, घर और अन्य आवश्यकताओं के अनुसार चीजों के रूप में मिलेगा।

भारत के देहातों में तो आज भी अन्न के रूप में मजदूरी देने का चलन है। यदि यह प्रयोग चीन में सफल हुआ तो इसका प्रभाव सारे विश्व पर निश्चित है।

'प्रसाद' और मैथिलीशरण गुप्त

इस टिप्पणी के लेखक ने अपने निजी अनुभव के बल पर लिखा था कि श्री मैथिलीशरण गुप्त स्वर्गीय 'प्रसाद' के जीवन काल में उनके प्रति ईर्षालु और उन्हें नीचा दिखाना चाहते थे। इसका गुप्त जी के समर्थकों की ओर से बड़ा विरोध किया गया था। खैर काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'प्रसाद' के विशेषांङ्क में गुप्त जी ने एक लेख लिखा है जिससे प्रश्न के इस पहलू पर प्रकाश पड़ता है। गुप्त जी लिखते हैं —......वे जानते थे कि 'प्रसाद' जी के और मेरे बीच एक तनाव हो चुका है। सम्भव है वह अब भी शेष हो।" पृष्ठ १५ इससे पहले आपने एक घटना का उल्लेख किया है। वह इस प्रकार है।

इसके (अपने एक सम्बन्धी से प्रसाद की कड़ी आलोचनाएँ लिखवाने के) कुछ दिन पश्चात् मैं काशी गया। दूसरे दिन प्रसाद जी कृष्णदास की कोठी पर पहुँचे। उस सयम मैं कोठी के नीचे ही गङ्गा स्नान के लिए गया था। वे कोठी पर न रुक कर गङ्गा तट पर पहुँचे। मैं पानी में था। उन्हें देख ललकार कर मैंने उनसे कहा—आओ, तुम भी स्नान कर लो। उनका सेवक भी धोती तौलिया और तेल की शीशी लिये उनके साथ था, परन्तु उन्होंने मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। मैंने कहा—सीधे नहीं आओगे तो मैं पानी उछाल कर भिगो दूँगा। उन्होंने व्यंग्य से कहा—और क्या करोगे तुम? जितना चाहो, और कीचड़ उछालो। यह कहते कहते उनका मुंह तमतमा गया और जब तक मैं कुछ कहूँ, अवज्ञा पूर्वक मुह फेर वे चल दिये मैं स्तब्ध रह गया। (पृष्ट १४)

उसी पृष्ठ पर आप लिखते हैः—

मेरे लिए यह गौरव की बात है कि उन्होंने मुझे अपनी कुछ अन्तरंग बातें भी बता दी थी। परन्तु किसी की गोपनीय बात कहना उसके प्रति विश्वास-घात करना है।

खेद है कि मृत्यु के बाद भी प्रसाद जी को गुप्त जी क्षमा नहीं कर सके। इस प्रकार लेख लिखा है जिससे प्रकट हो कि प्रसाद जी का अन्तरंग मैला था जिसे प्रकट न करके गुप्त जी उनकी रक्षा किए हुए है। और वे असहिष्णु वे साधारण विनोद भी नहीं समझ सकते थे। धन्य है गुप्त जी को।

महिला राजप्रमुख

मैसूर राज्य के गजट के अनुसार वहाँ की राज प्रमुख राजमाता श्रीमती चेक्पुगेलू बजम्मन्नी नियुक्त हुई हैं।

वनस्दा अब पहले से दुगुनी शक्ति-प्रदा !

अब वनस्दा में प्रति आउँस ७०० अन्तर्राष्ट्रीय 'यूनिट' विटामिन 'ए' है, जो पहले की अपेक्षा दुगुनी से भी ज्यादा है। इसलिये बनसदा अब आपके साधारण उपहार का एक आवश्यक अङ्ग हो जाता है।

वैज्ञानिक रीति से संवेष्टित—

अधिक दिनों तक ताजा रहने एवम् बहुमुल्य विटामिन की रक्षा के लिये।

हाथ से अछूता—

वाता प्रवेश सीलबन्द डिब्बों में प्राप्य एवम् कीटाणु-मुक्त रहने की गारण्टी।

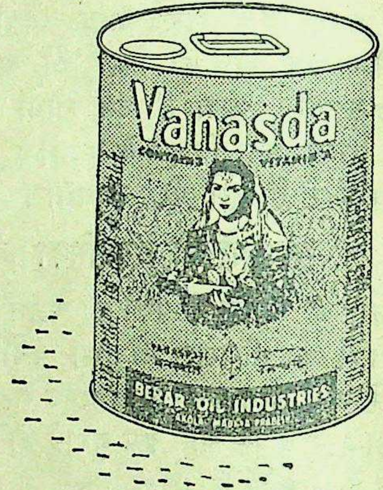
Vanasda
CONTAINS VITAMIN 'A'
BERAR OIL INDUSTRIES
AKOLA, MADHYA PRADESH

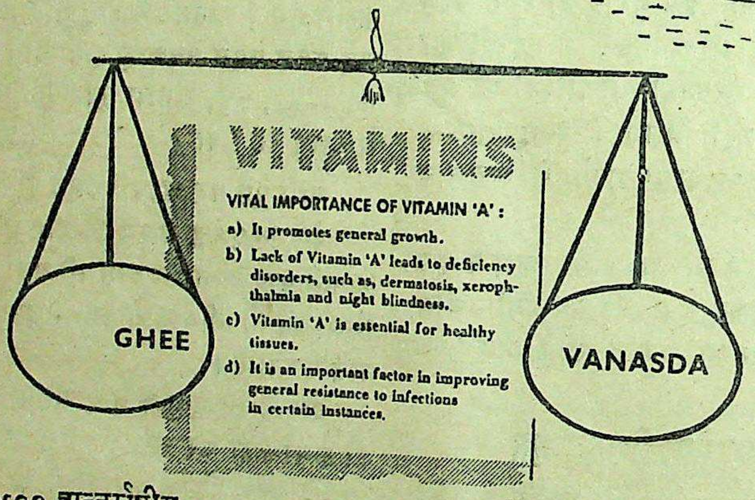
GHEE
VANASDA

VITAMINS

VITAL IMPORTANCE OF VITAMIN 'A':

a) It promotes general growth.
b) Lack of Vitamin 'A' leads to deficiency disorders, such as, dermatosis, xerophthalmia and night blindness.
c) Vitamin 'A' is essential for healthy tissues.
d) It is an important factor in improving general resistance to infections in certain instances.

५०० अन्तर्राष्ट्रीय
'यूनिट' प्रति आउँस

७०० अन्तर्राष्ट्रीय
'यूनिट' प्रति आउँस

याद रखिये—वनस्दा आपके आहार को पुष्टिकारक बनाता है।

भारतीय पूँजी एवम् भारतीय श्रम से निर्मित

बरार ऑयल इंडस्ट्रीज, आकोला

सफेद कोढ़ की पेटेंट दवा
मूल्य ५) रुपया
विवरण पत्र मुफ्त मँगावें।
वैद्य बी० आर० बोरकर, आयुर्वेद भवन
मु० पोस्ट मँगरूलपीर, जिला—अकोला
(बेरार) मध्य प्रदेश

प्रूफ की भूलें

दीदी के इस अङ्क में प्रूफ की कुछ भूलें रह गई हैं। आशा है पाठक गण उन्हें सुधार कर पढ़ेंगे। वे ये हैं:—

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
३४६	बरमेग साधन	बस योग साधन
३५२	नेल पाइल	नेल फाइल
”	डाई क्रोजन	हाइड्रोजन
३६०	बागपी लाकर	बागची लश्कर

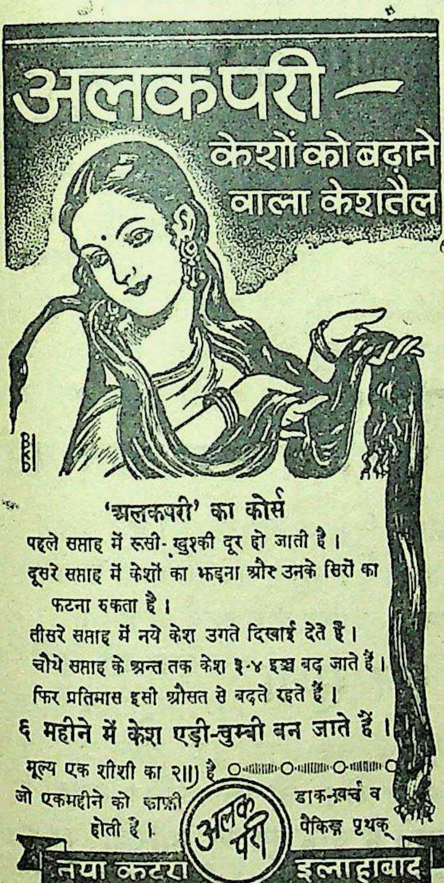

'अलकपरी' का कोर्स
पहले सप्ताह में रूसी-ख़ुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।
६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।
मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एकमहीने को काफ़ी होती है।
डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्
नया कटरा इलाहाबाद

दीदी के संरक्षक बनिये

'दीदी' के आवरण के तीसरे पृष्ठ पर इसके संरक्षकों की सूची प्रति मास प्रकाशित हो रही है, प्रिय पाठक! आप देखें इस सूची में आपका नाम है या नहीं? यदि नहीं है तो कम से कम १००) तुरन्त भेज कर दीदी के संरक्षक बनें। कार्यालय जब तक यह रुपया आपको वापस न कर देगा, 'दीदी' आपकी सेवा में निःशुल्क जाती रहेगी। इस प्रकार आपका रुपया भी बना रहेगा और संकट काल में 'दीदी' की सहायता का आपको यश भी प्राप्त होगा। मनिआर्डर सञ्चालिका 'दीदी' कार्यालय इलाहाबाद-२ के पते पर भेजें, 'चेक' दीदी कार्यालय के नाम भेजें और उसे क्रास कर दें।

निवेदक—
श्रीनाथसिंह, प्रबन्धक सम्पादक

अध्यापिका चाहिए—दो छोटी बालिकाओं को पढ़ाने के लिए एक अध्यापिका चाहिए। गांव में रहना होगा और भोजन निवास के अलावा २५) जेब खर्च मिलेगा। पता 'क' मार्फत दीदी कार्यालय, इलाहाबाद-२।

भारत विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव द्वारा प्रस्तुत

रूपविलास कम्पनी कानपुर की कुछ अनुभूत शक्तिशाली औषधियां

लक्ष्मण धारा जिस घर में लक्ष्मण धारा रहता है उस घर के लोग बेफिक्र और सुखी रहते हैं। लक्ष्मण धारा की ३-४ बूंदें पानी में डाल कर पीने से हैजा, कै, दस्त, जी मिचलाना, पेचिस, अतीसार, खट्टी डकारों का आना, बदहज़मी, पेट फूलना, मंदाग्नि, कफ, खांसी, जुकाम, सर्वज्वर आदि अनेक रोग दूर होते हैं और इसी के लगाने से चोट, मोच, सूजन, दाद, खाज, फोड़ा फुन्सी, बात, दर्द, पसली का दर्द, भिड़ मक्खी, बर्र आदि के काटे का दर्द अच्छे होते हैं। लाखों गृहस्थ लक्ष्मण धारा का प्रयोग कर गृहस्थी सुखमय बना रहे हैं क्योंकि यह आकस्मिक दुर्घटना के कष्ट और रोगोंसे बचने के लिये जगत का अनुपम आविष्कार है।

लक्ष्मण धारा खरीदते समय पैकेट पर लक्ष्मण धारा व रूपविलास कम्पनी का नाम अवश्य देख लें। यह हर जगह मिलता है। न मिलने पर हम से वी० पी० द्वारा मँगवा लें। मूल्य छोटी शीशी ॥।) बारह आना बड़ी शीशी २॥) दो रुपया आठ आना डाक खर्च पृथक।

बालको हर बच्चों का पोष्टिक और मीठा पेय है। बालको पर पलने वाले बच्चे नीरोग और प्रसन्न चित्त रहते हैं इसके पिलाने से खून की कमी दूर होकर निबल व कमजोर बच्चे हृष्ट-पुष्ट व तन्दुरुस्त बनते हैं। इसलिये हर माता को चाहिये कि दैनिक-कार्य में अपने प्यारे बच्चे को "बालको" पिलाना कभी न भूलें। यह बच्चों को सूखा रोग से बचाता है और उनके दाँत निकलने में कष्ट नहीं होता है। मूल्य प्रति शीशी १) एक रुपया डाक खर्च अलग।

दमे की दवा नयी या पुरानी खांसी श्वांस दमा को दूर करने के लिये सुप्रसिद्ध है। यह दवा श्वांस की नली को साफ कर बलगम को बाहर निकाल कर दमे को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य प्रति शीशी ३=) तीन रुपया दो आना डाक खर्च अलग।

रूपविलास इसके लगाने से मुहांसे, झांईं चेचक काले काले दाग, रूसी, खुश्की, फुन्सी बदरौनकी, झुर्रियां वगैरह दूर कर मलिन मुख चमकदा होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। विवा आदि शुभ अवसरों पर वर वधुओं की सुन्दरता बढ़ाने लिये वैज्ञानिक तत्वों के आधार पर निर्मित किये गये उबटन का दैनिक उपयोग करना चाहिये। मूल्य फी डिब्ब २) दो रुपया डाक खर्च अलग।

फकीरी सुरमा यह सुरमा मोती, ममीरा भीमसे कपूर आदि उत्तमोत्तम जड़ी बूटि के सम्मिश्रण से घोंट कर तैयार किया जाता है, इसके लगा ही यह तमाम जहरीले पानी को निकाल कर आंखों ठण्डी निर्मल तथा साफ कर देता है। इसके लगाने साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नजला की निकलना नाखून परवाल आदि दूर होते हैं और नजर कमजोरी दूर होकर दृष्टि तीव्र हो जाती है। मूल्य प्र शीशी ॥।) बारह आना डाक खर्च अलग।

चन्द्रोदय मकरध्वज वटी शक्तिक्षीणता कमजोरी को करके दिल व दिमाग को बल देकर शरीर में स्फूर्ति पै करती हैं। मूल्य ४० गोलियों के पैकेट का ७॥) सात रुप आठ आना डाक खर्च अलग।

बन सुधा वन सुधा स्त्री रोगों की सुविख्यात गु कारी महौषधि है। इसके सेवन से कमर रीढ़ का दर्द शिर दर्द दुबलापन कमजोरी चक्कर आ आदि रोग जो कि अनियमितता के दोषों से उत्पन्न जाते हैं उन्हें दूर कर नारियों को हृष्ट-पुष्ट बनाने की दवाहै। मूल्य ३=) तीन रुपया दो आना डाक खर्च अल

रूपविलास हिम कुसुम तैल कठिन दर्द को मिनट में नष्टकर शीतलता प्रदान करता है मस्तिष्क व से काम लेने वालों को महान उपकारी है खुशबू भीनी मूल्य प्रतिशीशी ॥।) बारह आना डाक खर्च पृथक।

नोट—यदि आप किसी रोग से ग्रसित हैं तो अपने रोगका पूरा हाल लिखकर औषधि मंगवा लें। इस कंपनी में प्रकार की औषधियां तैयार होती है। विशेष जानकारी के लिये कम्पनी का सूची पत्र मुफ्त मंगाकर देखें।

दवा मँगाने का पता:—रूपविलास कम्पनी नं० ११० धनकुट्टी कानपुर

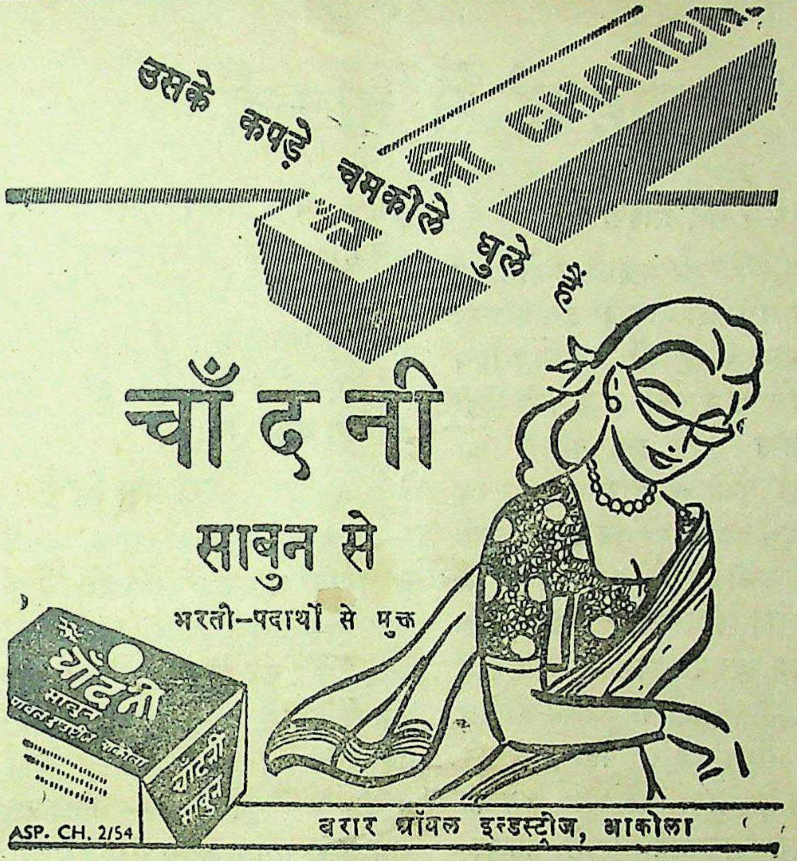

उसके कपड़े चमकीले धुले हैं
CHANDNI
चाँदनी
साबुन से
भरती-पदार्थों से मुक्त
चाँदनी साबुन
चाँदनी साबुन
ASP. CH. 2/54
बरार ऑयल इन्डस्ट्रीज, आकोला

नये क्षेत्रों के लिए स्टाकिस्टों की आवश्यकता है।

दीदी की प्रचारिका बनिये

भारत के प्रत्येक शहर में ऐसी बहनों की आवश्यकता है जो अपने घर में रहकर अपने फुरसत के समय में 'दीदी' और 'बालबोध' का प्रचार करते हुए प्रतिमास अपने काम के अनुसार नकद पुरस्कार प्राप्त करें। यह काम कुछ कठिन नहीं। थोड़े श्रम से ही योग्य बहनें २०) से १००) मासिक तक पैदा कर सकती हैं।

प्रेमलता देवी—
सञ्चालिका 'दीदी'
इलाहाबाद

उपहार

प्रत्येक मास में !

आपकी बहनें और बेटियां चाहे घर में हों, चाहे ससुराल में, उनकी पसन्द का उपहार वही हो सकता है जो आप विचार पूर्वक उन्हें दें और 'दीदी' के वार्षिक चन्दे से बढ़ कर और सुन्दर उपहार क्या हो सकता है जो कि प्रति मास उन्हें आपके स्नेह का स्मरण दिलायेगा ? 'दीदी' का वार्षिक मूल्य केवल ६) है। इसी में डाक व्यय भी शामिल है।

'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद-२

ग्राहकों से बातचीत

दीदी को ४००० नए ग्राहक चाहिएँ

प्रिय ग्राहक गण, दीदी को प्रकाशित होते हुए १५ वर्ष से ऊपर हो गये, इस बीच में इस पत्रिका ने हिन्दी पाठक समाज के हृदयों में अपना प्रिय स्थान बना लिया है। जो प्रारम्भ के वर्षों में दीदी के ग्राहक थे उन्हें ज्ञात है कि इस पत्रिका का प्रकाशन बिना किसी पूजी के आरम्भ हुआ था और जब क्रमशः इसने उन्नति की तब इसको प्रेमी ग्राहकों से १० हजार की पूँजी कर्ज के रूप में मिल गई। इसके बाद ही आर्थिक संकट शुरू हुआ जिसके परिणाम स्वरूप अनेक पत्र पत्रिकायें बन्द हो गईं। दीदी जीवित रही पर उसको जीवित रखने का हमें गहरा मोल चुकाना पड़ा। हमारे पास जो कुछ भी था हम गंवा बैठे और कर्ज की रकमें अदा करने में हम असमर्थ हो उठे, कर्मचारियों के वेतन, कागज और छपाई के बिलों का भुगतान हमारे लिये भगीरथ प्रयत्न-सा एक दुष्कर कार्य हो उठा। अब हम किसी तरह इस संकट के पार हो रहे हैं परन्तु कर्ज, ब्याज और कार्यालय पर लदे अन्य भारों के कारण हमें दीदी की नाव खेने में बड़ी कठिनाई हो रही है।

कम से कम हमें २४००० रुपये तत्काल मिलें तब हम संकट के पार हो सकते हैं। ये रुपये इस प्रकार चाहिए :—

कर्ज की रकमें	१०,०००)
पिछले ४ वर्षों का ब्याज	२०००)
रंगीन छपाई के लिये नई मशीन	१२,०००)
कुल	२४,०००)

इस प्रकार २४,०००) की तत्काल आवश्यकता है। यह रकम हमें १ वर्ष के अंदर चाहिए। यदि हम १ वर्ष के अन्दर दीदी में कम से कम ४००० नये ग्राहक बना लें तो कुछ मुश्किल नहीं है, हमने यह कार्य आरम्भ कर दिया है और इस कार्य में दीदी के समस्त ग्राहकों प्रेमियों और शुभ-चिन्तकों का सहयोग चाहते हैं। हमें आशा है कि हमें सहयोग प्राप्त होगा।

पूरा पता लिखें

कुछ ग्राहक कार्यालय को पत्र लिखते समय न तो अपना ग्राहक नं० लिखते हैं और न अपना पता लिखते हैं। और पत्र लिखते चले जाते हैं और खीझ कर आगे साल ग्राहक न रहने की धमकी देते हैं। हम ऐसे ग्राहक महोदयों को उत्तर नहीं दे पाते। उन सबसे हम यहाँ प्रार्थना करते हैं, कि कृपा पूर्वक कार्यालय को पत्र लिखते समय अपना पूरा पता और याद हो तो अपना ग्राहक नं० भी अवश्य लिखें। इसके बिना कार्यालय से पत्रोत्तर जाना कदापि सम्भव नहीं है।

नये ग्राहक बनाने वाले

१—श्री के कप्लीस ने इङ्गलैण्ड से दो वर्ष के लिये एक ग्राहक बनाया है।

२—श्री प्रभा उपाध्याय इलाहाबाद ने १ ग्राहक बनाया है।

३—श्री बच्ची देवी, कमतौल, श्री जयदेव प्रसाद उमरिया, श्री कमला देवी, हमीरपुर, श्री कान्त सिन्हा, गया, श्री होमेश प्रताप सिंह कोतमा, श्री गजानन अग्रवाल इन्दौर, श्री रतन कुमारी करवा जोधपुर, श्री मौनिका बनर्जी पुरुलिया, ने अपने-अपने क्षेत्र में दीदी के नये ग्राहक बनाने का काम शुरु कर दिया है। इन सब भाई बहनों को हम धन्यवाद देते हैं।

दीदो के संरत्तक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	"
३—कुमारी कमल सहाय, आरा	"
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया	"
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	"
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग	"
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१ ८)
९—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता	१००)
१०-श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बइ	"
११-श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	"
१२-श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	"
१३-श्रामती निर्मला गोबिल, आगरा	"
१४-श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर	"
१५-श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	"
१६-श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	"
१७-श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	"
१८-श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	"
१९-कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	"
२०—श्री महेंशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	"
२१-श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून	"
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता	"

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ।।) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू कर जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना भय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहियं।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायेंगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावे। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छापे जाते।

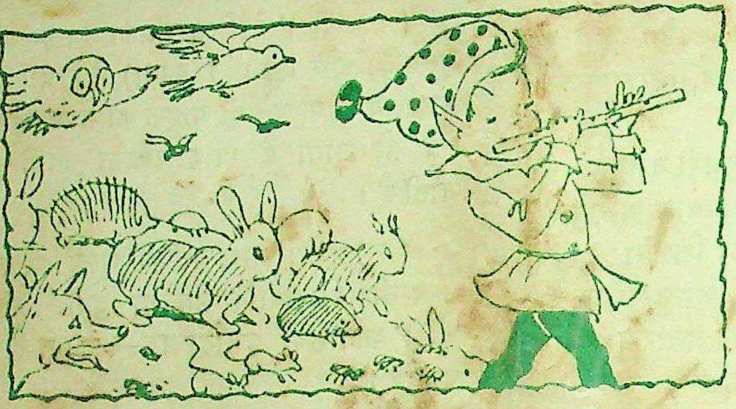

'दीदी' के ग्राहक केवल २) वार्षिक मूल्य भेज कर अपने प्यारे बच्चे के नाम यह पत्र मँगा सकते हैं।

आपका बच्चा बहुत प्रसन्न होगा !

यदि आपकी डाक से उसे

बालबोध

की एक प्रति मिलेगी !

बालबोध, श्रीनाथसिंह द्वारा संस्थापित छोटे बच्चों का मासिक पत्र है। अपने प्यारे बच्चे के नाम प्रतिमास इसे डाक से पहुँचने दीजिये।

बालबोध का वार्षिक मूल्य सिर्फ ३) है। यह रकम मनिआर्डर से भेज कर आप निश्चिन्त हो जाइये और शेष काम हमको करने दीजिये।

मैनेजर—'बालबोध',
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

गुरुकुल पत्रिका

२६
[illegible]

आक्टोबर
१९५५

दीदी

॥)

8-10-55

राष्ट्रपति श्रीमती रामेश्वरी नेहरू को पद्मभूषण की पदवी दे रहे हैं।

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—श्री राधारानी ५१८
२—आधुनिक गृहलक्ष्मी [श्रीमती सुशीला कुमारी चौहान] ५२१
३—रूपमती [श्रीमती सुशीला कु० चौहान] ५३०
४—पैपुजी [श्री प्रेमचन्द]... ... ५३६
५—पागलखाने में [सुश्री रमा पन्त] ५४१
६—अदृश्य-लेख [श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०] ... ५४३
७—नींद की पुड़िया [कुमारी सरोज वार्ष्णेय बरेली] ५४५

लेख

१—गांधी-जयन्ती [श्री श्रीनाथसिंह] ... ५१४
२—इनसानियत : जैमिनी का मिथ्या दम्भ [श्री श्रीनाथसिंह] ५१६
३—सुन्दरता वरदान भी है अभिशाप भी ! [कुमारी रेणुका चक्रवर्ती] ... ५२४
४—सास-बहू [श्रीमती रुक्मिणी शुक्ल] ५२८
५—बच्चों का अनोखा अस्पताल [श्रीमती विमला गुप्ता (लन्दन से) ... ५३३
६—वीरांगना सुभद्राबाई ... ५३६
७—प्रथम रजोदर्शन [श्रीमती शकुन्तला देवी पारिक, बीकानेर] ५४७
८—कुमारी सुचरिता की नृत्यकला [श्री जयभाई] ५५१

कविताएँ

१—गीत [श्रीमती तारा पांडे] ... ५१३
२—गीत [कुमारी मुन्नीदेवी शर्मा, सा०रत्न] ५२७
३—गीत [श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी एम० ए०] ५४०
४—गीत [कृष्णा कुमारी 'मधुरिम'] ५५२

फुटकर

१—औषधि विज्ञान ५४२
२—हास्य-विनोद ५१८
३—नई किताबें ५४८
४—प्रमुख महिलाएँ ५६१

स्तम्भ

१—पाठिकाओं की टिप्पणियाँ ... ५५२
२—रसोई ५५४
३—आपको कुछ पूछना है ५५८
४—विविध-विषय ५५६
५—अपने विचार ५६२

गुरुकुल पत्रिका

दीदी

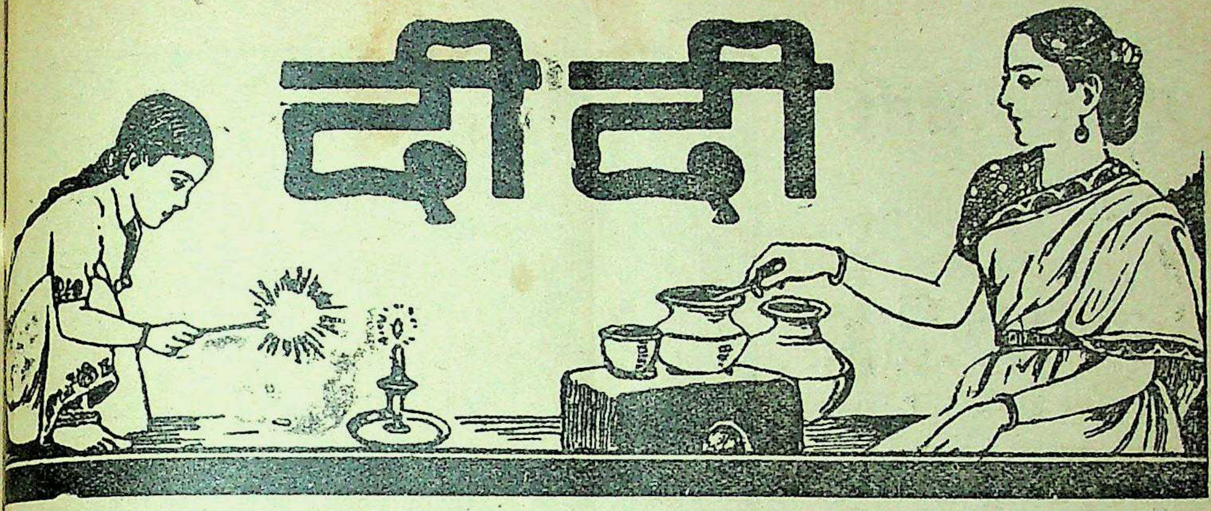

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १६ } इलाहाबाद, अक्टूबर १९५५ { संख्या १०

गीत

लेखिका, श्रीमती तारा पांडे

मैं बादल हूँ जिसने केवल
घिर-घिर कर मिटना ही जाना।
मैं विद्युत हूँ जो ज्वाला बन कर
जान सकी है मुसकाना।

मैं स्वर हूँ जिसको सुन कर
नभ के तारे भी काँपा करते।
मैं गीत वही जिसके तालों पर
कण-कण भी नाचा करते।

मैं दीपक हूँ जो तिल-तिल कर
अपने जीवन भर है जलता।
मैं सपना हूँ वह जो, दुखिया
आँखों की राह गला करता।

मेरे प्राणों में छिपे हुए हैं
दुःख के जलते अङ्गारे।
मेरी आँखों में उमड़ रहे नित
आँसू के सागर खारे!

—o—

गांधी-जयन्ती

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

'दीदी' का यह अङ्क गांधी जयन्ती के पुनीत पर्व पर प्रकाशित हो रहा है। आइये पाठक! इस अवसर पर हम थोड़ा राष्ट्रपिता का स्मरण करते हुए अपने मानस को पवित्र करें।

आज जब कि हम ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं, मानस-पटल पर वे सब दृश्य खचित हो-हो उठते हैं जब गांधी जी जीवित थे और उन का हृदय भारत के कोटि-कोटि हृदयों के साथ धड़क रहा था। उस समय के दो दृश्य जो दीदी की पाठिकाओं को खास तौर से अनुकरणीय प्रतीत होंगे, हम यहाँ उपस्थित करते हैं:—

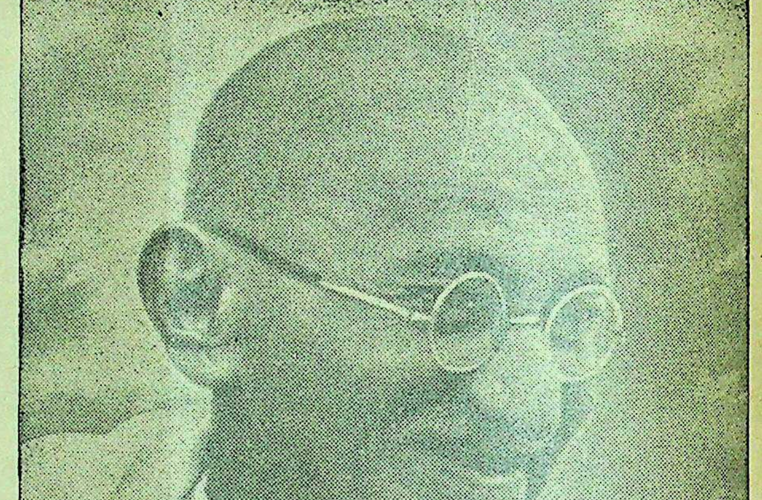

एक बार हरद्वार में कुम्भ के अवसर पर गांधी जी पधारे। एक सेठानी जो आभूषणों से लसी थीं उनका चरण स्पर्श करने झपटीं। गांधी जी मुस्कराये—'कुछ दक्षिणा भी देगी या कोरा प्रणाम करेगी।'

सेठानी ने अपने पति की ओर देखा। सेठ जी ने जेब से नोट निकाले।

'नहीं, मुझे तो स्वर्ण चाहिए?'

सेठानी ने अपना हार उतार कर गांधी जी को दिया।

'इतने से क्या होगा?' वे बोले।

सेठानी ने एक-एक करके सभी गहने उतार दिये।

'बस! महात्मा, अब तो सन्तुष्ट हो।' वे बोलीं।

'अभी कहां?' गांधी जी जोर से हँसे।

'अब तो मेरे पास कुछ नहीं है।' सेठानी ने कहा।

'और ये?' गांधी जी ने पैर के बिछुओं की ओर संकेत किया।

सेठानी ने उन्हें भी उतार दिया।

'वादा करो कि अब गहने कभी नहीं पहनोगी।' गांधी जी ने कहा और सेठानी ने वादा किया।

गांधी जी चाहते थे कि स्त्रियां फिजूल के आभूषण या फैशनेबल पोशाक न पहनें। स्त्रियों के बड़े-बड़े बाल रखने और उन्हें सँवारने के भी वे विरुद्ध थे। आश्रम की लड़कियों के सुन्दर केश वे अपने

हाथ से कैंची से काट देते थे। स्त्रियां कितनी ही धनी क्यों न हों, अपने घर का सारा काय करें, यह वे चाहते थे। परन्तु साथ ही रसोई बनाना, बर्तन मांजना अथवा चक्की चलाना—केवल स्त्रियों का काम है यह वे नहीं मानते थे। वे चाहते थे गृहस्थी के कार्य स्त्री पुरुष दोनों मिल कर करें। लड़कियों की भांति लड़कों को भी गृहकार्य की शिक्षा देना आवश्यक समझते थे।

एक बार जेठ की दोपहरी में, जब मैं सेवाग्राम में उनकी कुटी के पास से गुजर रहा था, देखा कि माता कस्तूर बा कुएँ से भरा डोल खींचने में व्यस्त हैं। मैं आगे बढ़ा—'लाइये माता जी यह पानी मैं खींच दूँ ?'

'अरे न !' वे बोलीं—'तमाम लड़के हैं जो मेरा यह काम कर दे सकते हैं। पर बापू तो कहते हैं, जब सब किसानों की स्त्रियां कुओं से पानी खींच कर लाती हैं तब तुम क्यों नहीं ला सकती हो ?' और पानी से भरा डोल कभी इस हाथ में लेती कभी उस हाथ में लेती कुटी के अन्दर चली गयीं। उस समय श्रद्धा से इस महापुरुष के प्रति मेरा मस्तक नत हो गया। गांधी जी कोरे उपदेशक नहीं थे। जो कहते थे उसको अपने जीवन में पहले करके दिखाते थे।

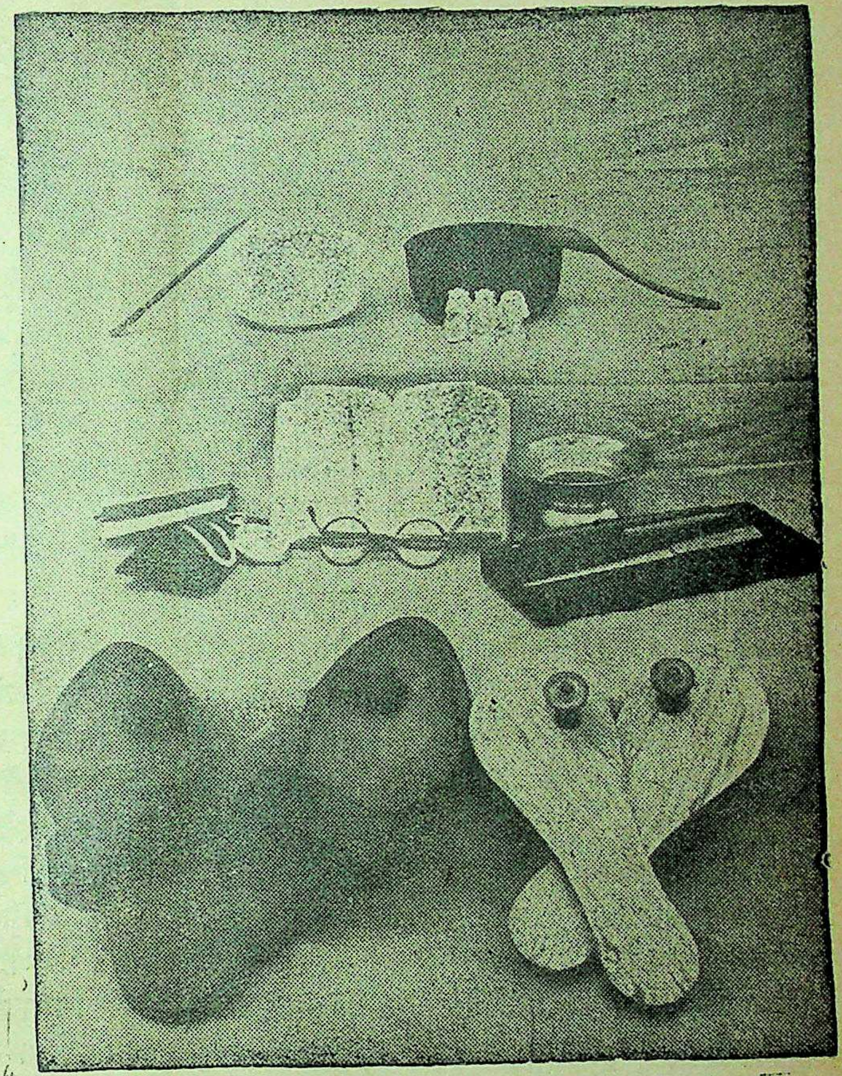

राष्ट्रपिता गांधी के खड़ाऊ, चप्पल, घड़ी, चश्मा, प्याले और चम्मच यहाँ उनकी भजनों की प्रिय पुस्तक के साथ देखे जा सकते हैं। और वे तीन बन्दर जिन्हें वे अपना गुरू कहते थे। ये बन्दर कहते-से प्रतीत होते हैं—'बुरी बात मत कहो, बुरी बात मत देखो, बुरी बात मत सुनो।'

बड़े लोग बड़े काम करते ही हैं। इसमें आश्चय क्या है ? परन्तु गांधी जी छोटे-छोटे कामों में भी अपने बड़प्पन की झलक दिखला देते थे। यह उन्हीं का पुण्य प्रताप है कि भारत आज स्वतन्त्र है—और गांधी जी के सत्य और अहिंसा के पथ पर स्वयम् तो चल ही रहा है, सम्पूर्ण विश्व को इस पथ पर चलने को आकृष्ट कर रहा है। आइये पाठक ! आज हम नये सिरे से सत्य, अहिंसा का व्रत लें !

इनसानियत : जैमिनी का मिथ्या-दम्भ

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

जर्मनी के नाचते हुए कछुवे जो अमेरिकन जिप्पी का मुँहतोड़ जवाब हैं

जैमिनी के 'इन्सानियत' की जिसमें 'जिप्पी'—एक अमरीकन मदारी द्वारा ट्रेन किया हुआ बनमानुष—उतर रहा है, बड़ी धूम है। 'दीदी' का यह अङ्क जब पाठकों के हाथ में पहुँचेगा, जैमिनी के इस चित्र का 'भारत के प्रमुख नगरों में प्रदर्शन हो रहा होगा और लाख-लाख भारतीय इसे देखेंगे। इस प्रकार जैमिनी के हाथों में लाखों रुपये पहुँचेंगे, जो कि इस चित्र के पीछे ध्येय है और उस की सिद्धि होगी।

जैमिनी ने अपने सभी चित्रों का इसी प्रकार प्रचार किया है और यह सिद्ध कर दिया है कि प्रचार के बल पर जनता को कहां तक बेवकूफ बना कर उससे पैसा ऐंठा जा सकता है।

जिप्पी—जिसने इनसानियत में अभिनय किया है

जैमिनी के चित्रों की अति प्रशंसा सुन कर हम भी उन्हें देखने से कभी नहीं चूके। पर उन चित्रों को हमने भारत में बने अन्य चित्रों से किसी बात में श्रेष्ठ नहीं पाया, बल्कि उसके चित्रों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और वस्तुस्थिति का यथार्थता की भित्ति पर चित्रण की गहरी कमी देखी। आज जब कि हम ये पंक्तियाँ लिख रहे हैं, हमारे सामने तथाकथित 'जिप्पी' द्वारा प्रदर्शन से पहले इस चित्र की समालोचना है जिसे पढ़ कर हमें गहरी निराशा हुई। वही मध्य युग! वही छुरी, कटारी का प्रदर्शन और वही नर हत्या का दृश्य, वही निर्दयता का सीमा-तोड़ नर्तन और इस सबके बीच में एक बनमानुष! जो केवल यह सिद्ध करता है कि मनुष्य पशु से भी गया बीता प्राणी है।

क्या इसीलिये यह बनमानुष अमरीका से भारत लाया गया और उसके ट्रेनर को प्रचुर धनराशि दी गई? और यही सिद्ध करना था तो क्या यही काम भारत के मदारियों में से कोई, जो गली-गली बन्दर नचाते हैं, करके नहीं दिखा सकता

था ? जैमिनी के इस चित्र में जिस प्रकार इस बनमानुष—जिप्पी ने अभिनय किया है उससे कहीं अधिक सुन्दरता, वास्तविकता और सूक्ष्मतर मनोवैज्ञानिक प्रश्नों को सुलझाते हुए हमने सड़कों के किनारे इन बन्दरों को अभिनय करते देखा है।

यह जरूर है कि यह जिप्पी बहुमूल्य अप-टू-डेट पोशाक में दर्शकों के सम्मुख पेश किया गया है जो हमारे गरीब मदारियों और उनके बन्दरों को सुलभ नहीं है।

हमें यह जानकर दुःख हुआ कि इस प्रचार में जैमिनी ने मदरास के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश जी को भी अपने तुड़ही बजाने वाले लड़कों के साथ कौशल से खड़ा कर दिया है। उसने यह व्यवस्था की कि मदरास के गवर्नमेंट हाउस में जिप्पी ले जाया जाय, राज्यपाल के साथ सोफे पर बैठे जिससे इनसानियत, जिसमें अभिनय करने वाले बन्दर को राज्यपाल ने गवर्नमेंट हाउस में बुलाकर आदर प्रदान किया, को बहुत ही महत्वपूर्ण चित्र समझ कर लोग देखने दौड़ें।

यह जैमिनी के लिये और शील-वश उसके प्रचार में अपने उच्च पद का उपयोग होने देने के लिये मदरास के राज्यपाल के लिये लज्जा की बात है। क्या जैमिनी ने कभी यह जानने का प्रयत्न किया कि कोई भारतीय मदारी अपने बन्दर द्वारा यह अभिनय करा सकता था अथवा क्या राज्यपाल महोदय ने भी कभी किसी भारतीय मदारी को अपने गवर्नमेन्ट हाउस में बुलाकर उसके बन्दरों का नाच देखा या उन्हें इसी प्रकार आदर प्रदान किया ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं ? क्या भारतीय मदारी इसीलिये त्याज्य है कि वह गरीबी के कारण अच्छे कपड़े नहीं पहन सकता और अपने बन्दरों को अपने साथ मोटर पर बैठाल कर नहीं चल सकता ? और यह अमरीकन मदारी क्योंकि लखपती है, इसलिये गवर्नमेन्ट हाउस में आदृत होने योग्य है ?

मेरी प्रार्थना है कि मदरास के राज्यपाल महोदय इस प्रश्न पर विचार करें और आइन्दा अपने आपको जैमिनी या किसी भी विज्ञापन बाज का तुड़ही बजाने वाला न बनने दें।

बनारस के बन्दर अभिनेता—श्री गंगाराम और श्रीमती चमेली देवी। आदर से बुलाये जाते तो जैमिनी के इनसानियत में जिप्पी से अच्छा अभिनय करते।

मदरास के गवर्नर श्री श्रीप्रकाश जी बुरा न मानें यदि हम कहें कि गवर्नमेन्ट हाउस में इस अमरीकन मदारी और उसके बन्दर को आदर प्रदान करके उन्होंने भारत के हनुमान जी के लाख-लाख वंशजों और मदारियों का अपमान किया है। क्योंकि श्री

[शेष ५२० पृष्ठ पर]

धारावाहिक पौराणिक उपन्यास

श्रीराधारानी

इस पौराणिक उपन्यास के पिछले परिच्छेदों में बताया जा चुका है कि किन परिस्थितियों में राधा का जन्म, रायण से उनका विवाह और कृष्णजी से प्रेम करने का उन्हें कलङ्क लगा तथा किस प्रकार पातिव्रत धर्म की परीक्षा देने के बाद वे मथुरा पहुँचीं। आगे की कथा यहाँ दी जा रही है।

६—कंस-वध

कंस की मल्ल शाला देखने ही योग्य थी। विशाल हरित बांसों से आवृत अर्द्ध-वित्ताकार उस लता-पत्र विनिर्मित सभा-भवन के बीचो-बीच में लगभग ५० गज का चौकोर अखाड़ा था जो चारों ओर से योद्धाओं के लड़ने के लिये छोड़ दिया गया था। पूर्व की ओर व्यासाकार रेखा पर कंस के बैठने के लिये उच्च सिंहासन बनाया गया था। सिंहासन के पूर्व लता-पत्र विनिर्मित द्वार था जिसके भीतर से कंस के हाथी पर बैठकर आने का मार्ग था। अखाड़े के तीन ओर वृत्ताकार मार्ग था जिस पर मल्ल शाला के नियमों की घोषणा करने वाले कर्मचारी हाथी पर बैठ कर घूम-फिर सकते थे। कंस के आसन से ठीक पश्चिम की ओर दूसरा वैसा ही विशाल द्वार था जिससे होकर दर्शक गण आ सकते थे।

इस द्वार पर कंस ने अपना कुबलिया नामक उनमत्त हाथी बँधवा दिया था और महावतों को आदेश दिया था कि जैसे ही कृष्ण बलराम इस द्वार से प्रवेश करने लगें यह हाथी बन्धन मुक्त कर दिया जाय, जिससे उनको कुचल डाले।

अखाड़े और कंस के सिंहासन के बीच में रङ्गमञ्च था जिस पर सङ्गीत व नृत्यकला में दक्ष यक्ष और यक्ष-सुन्दरियाँ अपने नृत्य और संगीत से मल्ल युद्धों के बीच बीच में सभा-भवन का मनोरञ्जन करने के लिये उद्यत थीं। रङ्गमञ्च के दोनों ओर कंस के सरदारों और प्रमुख दरबारियों के बैठने का स्थान था।

डंकों और तुड़ही के तुमुलनाद के साथ कंस ने मल्ल शाला में प्रवेश किया। उपस्थित जनों ने नत-मस्तक और करबद्ध उसका स्वागत किया। ब्राह्मणों ने शङ्ख बजा कर उच्च स्वर से उसकी प्रशस्ति के श्लोक पढ़े।

हाथी सिंहासन के निकट खड़ा किया गया। और वह ऊपर ही ऊपर सिंहासन के मञ्च पर जा खड़ा हुआ। एक बार फिर शङ्ख घड़ियाल बज उठे। कंस मूँछ मरोड़ता हुआ अपने सिंहासन पर विराजमान हो गया। इसके पश्चात् उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई कि कौन सरदार व दरबारी कहाँ

बैठे हैं। अनेक सरदारों को उसने केवल उनकी पोशाक से पहचाना, उनकी मुखाकृतियां व चितवन उसे सर्वथा भिन्न प्रतीत हुईं।

बात यह हुई थी कि अनेक गोप धोबियों से उन के धवल वस्त्र छीन कर और स्वतः धारण कर उन के आसनों पर जा विराजमान हुए थे अनेक गोपों ने सभा-मण्डप की रक्षा करने वाले प्रहरियों की पोशाकें धारण कर ली थीं और वे यादव वेशधारी गोपों को तो अन्दर जाने देते थे परन्तु वास्तविक दरबारियों तथा कंस के भक्त मथुरा वासियों को बाहर ही रोक रहे थे।

अपने दरबारियों और प्रहरियों की बदली हुई आकृतियां देख कर कंस कुछ शंकित हुआ और उसने अपने अंग-रक्षकों से पूछा कि क्या वे उन्हें पहचानते हैं। बुद्धिहीन अंग-रक्षक इस भेद को न समझ सके और वे पोशाकों के सहारे उनका परिचय देने लगे। कंस ने समझा कदाचित् विशेष पोशाकों के कारण ही उनकी आकृतियां भिन्न प्रतीत होती हैं। वास्तव में वे वही हैं। उसे तनिक भी इस बात का भान न हुआ था कि गोप गण उसके सभा-भवन में छद्म वेष धर कर भर गये हैं।

तभी चाणूर के आने की सूचना प्रसारित की गई। कंस ने सामने देखा। मत्त गयन्द-सा उसकी मल्ल शाला का प्रमुख पहलवान चाणूर चला आ रहा था। बज्र के समान उसकी छाती, लौह दण्डों के समान विशाल भुजाएँ! हाथी के समान शरीर व मतवाली चाल, दो चिताओं के समान क्रोध से जलती हुई आँखें। जब वह आगे बढ़ा तब जान पड़ा जैसे धरती डगमगा रही हो। उसकी डरावनी आकृति देख कर गोपगण सहम गये। चाणूर के पश्चात् उसी प्रकार रङ्ग स्थल को डगमगाते हुए मुष्टिक ने प्रवेश किया।

उसके पश्चात् कृष्ण और बलराम के आने की सूचना प्रसारित की गई। जैसे ही ये दोनों भाई प्रवेश द्वार पर पहुँचे कुबलिया छोड़ दिया गया। उसने चिंघाड़ कर दोनों भाइयों को अपनी सूँड़ की लपेट में आबद्ध कर लिया और सूँड़ को ऊपर को उठाया कि उन्हें पटक कर पैरों तले कुचल डाले। तभी उस मत्त गयन्द का एक दाँत उखाड़ कर श्री कृष्ण ने उसकी एक आँख में भोंक दिया और उस का दूसरा दाँत उखाड़ कर श्री बलराम ने उसकी आँख में भोंक दिया। हाथी की सूँड़ की पकड़ धीमी पड़ गई। वह उन्हें वहीं छोड़ कर चिंघाड़ कर भागा।

दोनों भाई उस मतवाले हाथी का ताजे रक्त से सना दाँत अपने हाथों में लिये हुए आगे बढ़े। उन की इस वीरता पर कंस की ओर से उन्हें बधाई दी गई और वे चाणूर और मुष्टिक के जोड़ के पहलवान घोषित किये गये। लोगों ने देखा कि कहाँ चाणूर और मुष्टिक और कहाँ ये कोमल बपु-बालक। परन्तु कंस के डर के कारण किसी ने कुछ न कहा।

कंस की आज्ञा से दोनों भाई अखाड़े के बीच में खड़े किये गये और उनके सामने चाणूर और मुष्टिक आ खड़े हुए। एकाएक कृष्ण का ध्यान अखाड़े और कंस के सिंहासन के बीच में निर्मित मञ्च पर गया। अरे! यह क्या? यक्ष सुन्दरियों की जगह श्री राधा भी अपनी कतिपय सहेलियों के साथ कृष्ण की सहायता को विद्यमान थीं।

श्री राधा को रङ्गमञ्च पर देखा तो हाथ में हाथी का वह तुरन्त उखाड़ा हुआ दाँत लिये हुए श्री कृष्ण जी एक छलांग मार कर उस मञ्च पर जा पहुँचे। राधा उठ खड़ी हुईं। बने यक्षों ने अपने वाद्य-यन्त्र सम्भाले और अद्भुत नृत्य सङ्गीत आरम्भ हो गया।

'यह स्त्री जो कृष्ण के साथ नाच रही है? कौन है?' कंस ने रङ्गमञ्च के सूत्रधार से पूछा। परन्तु उसने इस सम्बन्ध में कुछ भी बताने में असमर्थता प्रकट की। तब कंस ने बिगड़ कर आदेश दिया—'इन सब यक्षों और यक्ष-नारियों को सभा-भवन के बाहर निकाल दो।' परन्तु उसके आदेश का पालन करने वाला जैसे वहाँ कोई न था। राधा-

गुरुकुल पत्रिका

कृष्ण का नाच इस प्रकार स्वाधीनता पूर्वक प्रारम्भ हो गया जैसे वे बृन्दावन में वंशीवट के नीचे हों और कस आदि वहाँ बैठे हुए लोग पेड़-पौधे से कोई अधिक महत्व न रखते हों।

'चाणूर ! मुष्टिक !! इस नचनिये को अखाड़े के भीतर खींच कर एक पटकना दो।' कंस चिल्लाया।

चाणूर-मुष्टिक दोनों आगे बढ़े। परन्तु कृष्ण ने अद्भुत फुर्ती दिखलाई। एक ताल के साथ वे राधा के बगल में जा खड़े होते थे और दूसरी ताल के साथ कभी चाणूर और कभी मुष्टिक को इस प्रकार धक्का देते थे कि दोनों गिर-गिर पड़ते थे।

एक साथ ही नृत्य और युद्ध का यह अच्छा प्रदर्शन था। चाणूर और मुष्टिक अधमरे से हो कर अखाड़े में लोट रहे और चारों ओर से क्षद्मवेषी गोप गण कृष्ण को वाह-वाह कहने लगे। अब तो कंस से न रहा गया। उसने उच्च स्वर से कृष्ण को अखाड़े के बाहर जाने का आदेश दिया। परन्तु उस आदेश के उत्तर में कृष्ण जी उछल कर उसके सिंहासन पर जा पहुँचे और वहीं से उसकी चोटी पकड़ कर उसे अखाड़े में फेंका और कभी रङ्गमञ्च पर कभी अखाड़े में उसे पटकना दे-देकर उसकी छाती पर तब तक नृत्य करते रहे जब तक वह मर नहीं गया।

कंस के मरते ही सभा-मंडप श्रीकृष्ण जी की जय-जयकार से गूँज उठा। तुरन्त ही श्रीकृष्ण जी के आदेश से उग्रसेन बन्दीगृह से लाये गये और कंस के स्थान पर उस उच्च आसन पर बैठाये गये और वे राजा घोषित हुए। उसी समय कंस के कारागार से मुक्त होकर वसुदेव और देवकी भी वहाँ आ गये। नन्द आदि गोप वहाँ पहले ही से उपस्थित थे। देवकी बार-बार कृष्ण का मुख चूमने और उनके मस्तक व पीठ पर हाथ फेरने लगी और नन्द और वसुदेव एक दूसरे को भेंटने लगे।

[क्रमशः]

['इन्सानियत'—पृष्ठ ५१७ का शेषांश]

प्रकाश जी के रूप में तो वे ऐसा कदापि न करते परन्तु गवर्नर के रूप में तो ऐसा और भी नहीं करना चाहिए था क्योंकि इसका जनता पर गलत प्रभाव पड़ता है।

अमरीका में बनमानुष को पूर्ण सभ्य मानव के रूप में रंगमंच पर उतारने की कला दीर्घकाल से विकसित होती चली आ रही है। उन्हीं अमरीकनों की सहायता से कोई चित्र बना कर प्रस्तुत करने में जैमिनी ने कोई कमाल नहीं किया है जिसका कि वह इतना ढोल पीट रहा है। कमाल तो तब भी न होता जब वह किसी भारतीय बन्दर को अपने स्टूडियो में ट्रेन करके अपने इस चित्र में उतारता। क्योंकि यह काम तो भारतीय मदारी युगों से करते आ रहे हैं। पर हाँ, उस अवस्था में उसका भारतीय पन का अभिमान सुरक्षित रहता।

अमरीकनों को इस बात का बड़ा घमण्ड है कि उन्होंने बन्दरों को रङ्गमञ्च पर उतारा है। उन का यह घमण्ड जर्मनी ने चूर किया है जिसने कछुओं को भी रङ्गमञ्च पर उतार दिया है—क्योंकि कछुओं को हाथ-पांव बाहर निकलवा कर उनसे अभिनय कराना अति कठिन है। जैमिनी कोई ऐसा कमाल दिखाता तभी गवर्नमेन्ट हाउस में आहूत होने का अधिकारी था।

यहाँ हम जर्मन महिला सेरीन ब्राउन्स की प्रशंसा करेंगे जिसने कछुओं को मानव की तरह कपड़े पहना कर रङ्गमञ्च पर खड़ा करके विश्व को चकित कर दिया है। ये कछुए जर्मन टेली विजन से अग्रगण्य अभिनेता के रूप में नृत्य करते व गाना सुनाते हैं।

इस अवसर पर हम भारत के समस्त फिल्म निर्माताओं से निवेदन करना चाहते हैं कि वे कोई ऐसा फिल्म बनावें जिसमें भारतीय मदारियों द्वारा ट्रेण्ड बन्दर काम करें जिससे वह कलंक मिटे जो जैमिनी ने यह चित्र बना कर समस्त भारतीय फिल्म-निर्माताओं के मस्तक पर मढ़ दिया है।

मनोरंजक कहानी

आधुनिक गृहलक्ष्मी

लेखिका, श्रीमती सुशीला कुमारी चौहान

[१]

उस दिन जब मुझ में और चूँ चूँ में लड़ाई हो गयी तो उनका पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। मुँह फुला सिसकियां भरते-भरते बोलीं—'सच बता दो, जिस घड़ी से ब्याह कर लाये हो एक पैसा भी मेरी इन सूनी हथेली पर रखा है। तुम मर्द घर का खर्चा सम्भालना क्या जानो, जानते हो? औरतों को गृहलक्ष्मी कहा गया है! एक महीने मुझे खर्च सम्भालने दो, देखो मैं कैसे खर्च सम्भालती हूँ और बचा भी लेती हूँ। और अगर मुझे नहीं देना है तो यह रोज-रोज का रोना लेकर मेरे सामने मत आया करो।'

अपने जी की सारी व्यथा उस दिन उड़ेल कर चूँ-चूँ ने सांस ली।

मैंने भी सोचा चलो घर के नमक, तेल, लकड़ी ककड़ी से छुट्टी मिली। 'पर्स' खोला और ६०) थमाते हुए बोला—'लो चें-चें काहे की मचाये हो, देखता हूँ अबकी कैसे खर्च सम्भलता है और कैसे गृहलक्ष्मी जी सम्भालती हैं।'

'ए जी, हमें चें-चें कह चिढ़ाते काहे हो, तुम्हीं ने तो मेरा नाम चूँ चूँ रखा है।'

'अच्छा भाई! मुझे तो सिविल सर्जन साहब के यहां जाना है, मैं तो जाता हूँ। तुम अपना बड़बड़ाती रहो।'

पर आज तो रुपया हाथ आया था। जरा मुख पर मुस्कराहट आ गई और बड़े प्यार से बोलीं—'आफिस से आये हो, कुछ खा-पी लो, कुछ मुँह मीठा कर लो तब जाना।'...मीनू ओ मीनू...!

'आई मां।' एक ग्यारह साल की बालिका आ कर खड़ी थी।

'देख मीनू 'चिरौंजी' की दूकान से पाव भर मिठाई ले आ, ये रहा रुपया! आठ आने की मिठाई ले आना और बाकी आठ आने मुझे लाकर देना, यदि न दिया तो पीट दूँगी।'

'मीनू।' मैंने उसे बुलाते हुए कह—'आज से मुझसे पैसा मत मांगना, पगली! अब तेरी मां घर की मालकिन बनी हैं।'

मीनू मिठाई लेने चली गई। मैंने जेब में हाथ डाला तो एक पैसा भी नहीं। ध्यान आया कि घन की मालिक आज से चूँ-चूँ हो गयीं।

इधर दो-तीन सालों से घर में बड़ी तकलीफ चल रही थी। भला बताइये ६०) रुपये की नौकरी में क्या-क्या आराम हो! क्या-क्या न हों? मन बड़ा परेशान और उद्विग्न-सा रहता था। हर शाम सबेरे किसी अच्छी सर्विस की तलाश में इस साहब से, उस साहब के दरवाजे पर चक्कर काटता। बतलाइये, अँग्रेज चले गये हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो

गया पर अभी साहबों की पूँछ जुड़ी ही है। शाम को जब थका-मांदा घर आता तो चूँ-चूँ की जो चें-चें शुरू होती कि सारा दिमाग ठिकाने पर आ जाता। बड़े प्रेम से सोच कर सड़क को लम्बे-लम्बे डग भर कर पूरी कर तब दरवाजे पर कदम रखता था कि घर चल कर चूँ चूँ से कुछ कहेंगे तो बेचारी सहानुभूति भरे शब्दों में कह देगी—धैर्य रखो धीरज की पतवार मत छोड़ो, जिन्दगी की नाव किनारे लग ही जायगी। पर हाय री किस्मत ! बदकिस्मती से घर में भी फटकार सुननी पड़ती। मैं तो इस कलम घिसाई की नौकरी से ऊब-सा गया था और ये रोज-रोज की फटकारों में सच कहूँ आँसू आते-आते आँखों में ही सूख जाते थे।

आज जब चूँ-चूँ का यह हाल देखा तो पर्स खोल रुपये निकाल कर दे दिये। सोचा, चलो सर पर से एक बला टली। 'अब न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। न मेरे मत्थे पैसा खर्चा रहेगा और न यह रोज-रोज की भकभक रहेगी। कम से कम शान्ति से आकर खाना तो खाऊँगा और चैन की नींद सोऊँगा।

मीनू मिठाई लेकर लौटी। एक प्लेट में एक लड्डू, एक बर्फी, एक इमरती और एक रसगुल्ला रख कर चूँ-चूँ बड़े स्नेह से मुख पर मधुर मुस्कान भर कर बोली—'लो खा लो, तब सर्जन साहब के यहाँ चले जाना। सर्जन साहब, बड़े भले आदमी हैं उनसे हमारा 'सादर नमस्ते' कह देना। मैंने और मीनू ने बैठ कर मिठाई खायी और मैं मीनू को लेकर सर्जन साहब के यहाँ चला गया।

[२]

प्राची में पौ फटने से पहले ही नींद अकस्मात् टूट पड़ी। चारों ओर धुएँ-सा अन्धकार था पर हलका था और ऐसा लगता था कि बस अब सबेरा होने वाला है। आकाश के तारे एक-एक कर के शून्य में खोये जा रहे थे। धीरे-धीरे चाँद भी अपनी चाँदनी से विलग हो रहा था। जब विमला की चारपाई पर नजर डाली तो साहब वह तो आज कब की शायद उठ चुकी थीं। समय बीता और घूमते-घूमते घड़ी की सुई साढ़े नौ पर आयी। जल्दी से नहाया-धोया कपड़े पहने और आफिस को जाने की तैयारी करने लगा। मेरा यह सफेद वाला पैन्ट एक जगह से फट चुका था, पर अभी तक इसे किसी तरह घसीटता चला जा रहा था। सोचता था जब तक चले तभी तक। खाना खाया तो चलते समय दबी आवाज में बोला—'विमला ! यदि पैसा दे दो तो एक 'न्यू पैन्ट' बनवा लूँ।' अब क्या था। माथे पर दो-चार लकीरें खिंच गयीं। भौहें तन गयीं और कहा—'मैंने सुना नहीं, क्या कहा आपने ?'

'कुछ नहीं यही कहा था......जाने दो।'

'नहीं-नहीं बता के तब जाओ ?'

बड़ी आफत में पड़ गया। सोचा बता दूँगा तो बरस पड़ेंगी और यदि नहीं बताता तो जिद के मारे आफिस में डांटा जाऊँगा और ६०) रुपये की चिड़िया भी हाथ से फुर से उड़ जायगी। बड़े असमंजस में पड़ा। डरते-डरते बोला—'यही कहा जरा पैन्ट फट गया है यदि पैसा मिल जाय तो एक नया पैन्ट बनवा लूँ ?'

'अच्छा तो इसीलिये शायद आपने ये रुपये दिये थे ?'

मैं तो ठहरा नहीं सीधे आफिस का रास्ता पकड़ा। शाम को आया तो देखा बीबी जी महरी से उलझी थीं। पता चला कि वह उसके चार रुपये नहीं देना चाहती थीं। खैर किसी तरह चुप करा कर भीतर लौटा था कि दरवाजे पर दस्तक हुई—

'कौन ?'

'मैं हूँ बाबू धोबी।'

'अच्छा।' मैंने दरवाजा खोल दिया। कपड़ों के गट्ठर में से उसने दो-चार हमारे यहाँ के भी कपड़े निकाले जिसमें एक मेरी कमीज थी और दो मीनू की फ्राक और दो विमला की साड़ी थी। कपड़े मिला लिये तब बड़ी नम्रता से हाथ जोड़ कर धोबी बोला, 'सरकार, यदि हिसाब हो जाता तो ठीक था।'

'अच्छा ! मीनू ओ मीनू।'

'आई।'

'जा अपनी माँ से कह दे, धोबी को हिसाब और कपड़ा दे दे।'

श्रीमती जी चूल्हे पर जलता घी छोड़ कर दौड़ी-दौड़ी आयीं—'क्या है जी, अगले महीने में कपड़े और हिसाब ले जाना ?' बेचारा अच्छा कह कर चला गया।

जैसे-तैसे दिन बीतने लगे। एक दिन दफ्तर जाने की तैयारी में था कि पोस्टमैन ने आवाज दी, 'चिट्ठी ले जाओ ?' विमला रसोंई में थी, चिल्ला कर बोली—'सुनते हो जी; देखना जरा भाभी की चिट्ठी आई है क्या ?' मैंने उन चिट्ठियों को उठा लिया। एक तो था बिजली का बिल; और दूसरी थी सावित्री की चिट्ठी।

अब क्या था जो लेकर पहुँचा तो चूँ-चूँ का मुँह तो फूल गया। सारा रङ्ग हवा हो गया। क्रोधित होती हुई बोलीं—'जाकर सबसे डंका काहे पीट आये हो कि घर की मालकिन बीबी हो गई है।'

'मैं काहे को कह आऊँगा किसी से।' खैर जब लौट कर आऊँगा तब सोचा जायगा। कह कर मैं आफिस चला गया।

शाम को मेरे मेज के कागजात वगैरह सब उल्टे-पलटे रखे थे। मैंने अन्दाजा लगा लिया कि सावित्री की चिट्ठी ढूँढ़ी जा रही थी और विमला को खोजने पर भी वह नहीं मिली। क्योंकि वह मेरे कमीज की जेब में ही रखी रह गई थी थोड़ा नाश्ता कर चुकने के बाद विमला ने कहा—'क्या लिखा है सावित्री ने।' मैंने एक लम्बी सांस खींची और कहा—'उस बेचारी का जीवन भी क्या जीवन है ? बेचारी फूल-सी बहन मिट्टी में मिली जा रही है। यही लिखा है कि हमें दस-पन्द्रह दिन के लिये बुला लो भैया।'

'सुनो अभी लिख दो कि अगले महीने में आना इस समय तो पैसे की बड़ी तंगी है। है न, वह सब आयेंगी तो चालिस-पचास खर्चा बैठ जायगा।' यह कह कर उन्होंने सन्तोष की सांस ली। मैंने भी सोचा पन्द्रह दिन पहले न सही, पन्द्रह दिन बाद ही सही।

महीने को बीतने को पन्द्रह दिन की देर थी। बिजली का बिल भेजने को पड़ा रह गया था। धोबी का हिसाब भी अगले महीने के लिये चला गया था धीरे-धीरे करके अगला महीना भी बीत ही चला था।

इतवार का दिन था। अगले महीने की दो तारीख थी, मैं जरा इतमिनान से आराम से बैठा अखबार पढ़ रहा था। अचानक विमला बोली—'सुनते हो जी ?'

'क्या है; क्यों परेशान करती हो ?'

'इसीलिये तो आयी हूँ कि अब आपको परेशान न कर सकूँ ?'

'क्या है ? जो कुछ कहना हो साफ-साफ कहती क्यों नहीं ?' मैंने जरा क्रोधित होते हुए कहा।

'मैं अब घर का खर्चा न सम्भालूँगी।'

मैंने आश्चर्य से सर ऊपर उठाया तो क्षण भर देखता ही रह गया। जो गृहलक्ष्मी होने का दावा करती थीं वह कैसी हो गयी हैं। मैंने एक गहरी निःश्वास खींची और कहा—'अच्छा लाओ कुछ रुपये बचे हों तो वह मुझे वापस दे दो।'

'रुपये !' चूँ-चूँ ने एक अजीब उलझन भरी दृष्टि मेरे ऊपर डाली और बोली—'रुपये तो खर्च हो गये।'

'किसमें खर्च किये ?' मैं विस्मय से देखता ही रह गया।

उन्होंने एक बक्सा मेरे सामने खोला और 'दस रुपये के ब्लाउज पीस और मीनू के फ्राक का कपड़ा पन्द्रह का बेनिटी बाक्स, व ये दो साड़ियाँ।'

'और बिजली का बिल और धोबी का हिसाब......!' मैं विस्मित होकर नवीन गृहलक्ष्मी को देखता रहा और मेरी मेज पर पड़ी थी धोबी की हिसाब की कापी और बिजली का बिल, सावित्री की चिट्ठी !......

सुन्दरता वरदान भी है अभिषाप भी !

क्या आप अपने अमूल्य समय का काफी अंश अपने भाग्य पर रोने में व्यतीत करती हैं कि कितना अच्छा होता यदि मेरा चेहरा सुन्दर होता, मैं जरा और गोरी होती ? यदि हाँ तो मैं यही कहूँगी कि आप कृपया अपने आप पर दया कीजिये और उन सुन्दर व्यक्तियों के प्रति भी रहम की भावना रखिये जिनके प्रति आप ईर्ष्यालु हैं। वे उन अभागे व्यक्तियों में से हैं जिन पर 'मियाँ की जूती मियाँ के सिर' वाली कहावत चरितार्थ होती है। उनकी सुन्दरता ही अक्सर उन्हें ले डूबती है।

यह सच है कि सौंदर्य से कई प्रत्यक्ष एवम् शीघ्र लाभ होते हैं तथा वह दूसरों को प्रभावित करने,

अदि आप सुन्दर हैं तो परमात्मा को धन्यवाद दीजिये कि इस कारण कितने लोग आपका आदर करते हैं। परन्तु यदि आप सुन्दर नहीं हैं तो परमात्मा को और भी धन्यवाद दीजिये कि इस कारण आप अनेक मुसीबतों से बचेंगी और आपके व्यक्तित्व का यथेष्ट विकास होगा।

लेखिका, कुमारी रेणुका चक्रवर्ती

उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने, दूसरों के द्वारा अपनी प्रशंसा कराने आदि में काफी सफलता प्राप्त करता है, पर अपने पाठकों से मैं फिर भी यही कहूँगी कि सुन्दर व्यक्तियों के लिये उनकी युनावस्था में ही जीवन बहुधा इतना भार बन जाता है कि वे अपनी शक्ति एवम् योग्यता के विकास करने के बहुत कम अवसर पाते हैं। इसका परिणाम यही होता है कि उनका जीवन अक्सर अप्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ ही समाप्त हो जाता है। जीवन संग्राम के कठिन वारों को सहने की उनमें बहुत कम क्षमता होती है। जो बच्चे बचपन में बहुत सुन्दर होते हैं, वे स्कूलों में अध्ययन एवम् अन्य कार्यों में बहुत ही कम दक्षता प्रदर्शित कर पाते हैं।

केलीफोनिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एस० जे० होम्ज तथा सी० ई० हेच ने ६०० लड़कियों की उनके सौन्दर्य के आधार पर परीक्षा की। स्कूली रेकर्ड देखने पर पता चला कि योग्यता में ८६ प्रतिशत सुन्दर लड़कियाँ असुन्दर लड़कियों से पीछे थीं। उनके परीक्षणों का निष्कर्ष था कि सुन्दर लड़कियों का जीवन सामाजिक व्यवहारों के कारण ही नष्ट होता है। वे सामाजिक व्यवहारों में इतना अधिक समय व्यय करती हैं कि वे जीवन में सर्वदा काम पड़ने वाले आचारों, व्यवहारों और आदतों की ओर उचित ध्यान नहीं दे पातीं। दूसरी ओर असुन्दर तथा कुरूप लड़कियाँ (लड़के भी) प्राकृतिक सौंदर्य के अभाव का बदला अपने व्यक्तित्व या ज्ञान चतुराई आदि के विकास से निकाल लेती हैं।

यह एक तथ्य है कि प्रसिद्ध अभिनेत्रियाँ प्राकृतिक रूप से कभी उतनी सुन्दर नहीं हैं जितनी कि वे फिल्मों में दिखाई पड़ती हैं। हालीउड की अभिनेत्री इली ओवोरा डूज (वर्गीया) तथा हेलेन हैज, रुथ गार्डन, कैथरीन कार्नल और लिन फोण्टेन आदि सभी प्रभावशाली एवम् आकर्षक व्यक्तित्व वाली थीं। कुछ सौंदर्य-प्रदर्शन में सफल अवश्य थीं पर वे भी उतनी अधिक सुन्दर न थीं कि उन्हें सुन्दर कहा जा सके। सभी अपने व्यक्तित्व की महानता एवम् आकर्षण के कारण प्रसिद्ध हुईं।

संयुक्त राज्य के अब्राहम लिंकन, जेक्शन, रूजवेल्ट आदि जिन्हें इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सभी अत्यन्त भद्दे एवम् कुरूप रहे हैं या अपनी युवावस्था में थे। भारतवर्ष में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, जनरल कैरियप्पा, माननीय जगजीवन राम, आचार्य विनोबा भावे आदि के विषय में भी ऐसा ही कहा जा सकता है।

सुन्दर बच्चे भी माता-पिता के लिये अभिशाप बन जाते हैं। माता-पिता अपने सुन्दर बच्चों को अपने घर में तिजोरी के समान रखते हैं। कहीं उन के बच्चे को नजर न लग जाय, उन पर किसी की छाया न पड़ जाय, इसका उन्हें बड़ा डर रहता है, अभिभावकों को यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि वे अपने सौभाग्य (सौंदर्य) के साथ ही बहुत बड़ी जिम्मेदारी यह देखने की ला देते हैं कि व्यक्तित्व विकास के लिये वे बच्चे बहुत कम अवसर पाते हैं। घर के अन्दर भले ही वे उन्हें सिर-आँखों

पर चढ़ाये रहें पर घर के बाहर उनके योग्य व्यक्तित्व के अभाव में उनके सौंदर्य का कुछ भी मूल्य नहीं रह जाता।

यहाँ मैं कुछ सुभाव लिख रही हूँ जो असाधारण रूप से सुन्दर बच्चों के अविभावकों के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। आप अपने बच्चों के सौंदर्य पर भले ही मन ही मन अपने को गौरवान्वित अनुभव करें। आपको मन में यह अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि सौन्दर्य को लोग बहुत कम महत्व देते हैं। आपको अपने बच्चों को ऐसे कार्यों की ओर लगाना चाहिए, उनका ध्यान ऐसे कार्यों की ओर केन्द्रित करना चाहिए जिनमें सौंदर्य को कम स्थान प्राप्त हो। उनकी शिक्षा-दीक्षा की ओर भी पूर्ण सतर्क रहना चाहिए। आपको उन्हें ऐसी परिस्थितियों में डालना चाहिए कि जिससे उनमें आत्म विश्वास की उन्नति हो सके, उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके, वे अपने व्यक्तित्व को सुन्दर बना सकें। आपको अपने बच्चों में ऐसी भावनाएँ भरनी चाहिए कि वे बाहरी सौन्दर्य, तड़क-भड़क आदि पर कम ध्यान दें।

सुन्दर लोगों की अपेक्षा सामान्य सुन्दर लोगों के विवाह अधिक सफल होते हैं। बेन्जामिन फ्रैंकलिन ने एक नवयुवक को विवाह के विषय में यह सलाह दी थी कि वह सामान्य स्त्री से ही विवाह करे, वैसी स्त्री अधिक अच्छी पत्नी एवम् गृहिणी बनने की कुशलता रखती है। केवल सौंदर्य के आधार पर विवाह बहुत कम सफल हो पाते हैं। क्योंकि सुन्दर स्त्रियां या पुरुष अपने सौन्दर्य से सदा ही गर्वोन्नत रहते हैं और दूसरे को नीचा समझते हैं। अधिकांश भ्रष्ट चरित्र स्त्रियां या पुरुष सुन्दर (विशेष सुन्दर) ही होते हैं। तलाक की संख्या में भी सुन्दर व्यक्ति ही अधिक निकलेंगे। सुन्दर व्यक्ति बाहर से जितने सुन्दर रहते हैं उनका अन्तर उतना ही असुन्दर रहता है। आकर्षण के स्थायित्व का प्रमुख आधार 'देन की' और 'प्रसन्न करने' की दृढ़ इच्छा है। विशिष्ट सुन्दर व्यक्ति कभी एक से सन्तुष्ट नहीं होते। वे नित्य नई-नई सुन्दरता खोजते रहते हैं।

विशेष रूप से सुन्दर लोगों को अन्य व्यक्तियों के साथ दिन प्रति दिन के सम्बन्धों को बनाये रखने में अधिक सुविधा होती है। किसी सुन्दर स्त्री की उपस्थिति में पुरुष घबड़ा से जाते हैं और स्त्रियां भी सुन्दर स्त्रियों का सङ्ग करना इस डर से पसन्द नहीं करतीं कि पुरुषों की उपस्थिति के अवसर पर उनकी उपेक्षा हो सकती है। अतः सुन्दर स्त्री को अपने सम्बन्ध स्थापित करने में हर दृष्टि से अधिक असुविधा होती है। यह बात बिलकुल ही भिन्न है कि पुरुष उनकी ओर अधिक आकर्षित होते हैं। पर अब तो लोगों की अभिरुचि बदलने लगी है। बाहरी सौंदर्य की अपेक्षा अब लोग आन्तरिक सौंदर्य की ओर अधिक ध्यान देने लगे हैं। दूसरी ओर जो सुन्दर पुरुष होते हैं, उन्हें पुरुषों से सम्बंध स्थापित करने में दिक्कत होती है और जिन लोगों के साथ उनका व्यावसायिक सम्बन्ध होता है उनसे अक्सर '३६' होते रहते हैं। सामान्य सुन्दर व्यक्तियों को विशिष्ट सुन्दर व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक उम्र तक जीने के अधिक सुन्दर और आकर्षक अवसर मिलते हैं। सुकरात कहा करता था—'सौंदर्य एक अल्प आयु वाला निरंकुश एवम् क्रूर शासक है।' जब सौंदर्य का शासन समाप्त हो जाता है तो लोगों को अपमानित जीवन व्यतीत करना पड़ता है। उन्हें लोगों की काफी उपेक्षा सहनी पड़ती है और अपनी युवावस्था में सुन्दर रहे व्यक्ति युवावस्था के बाद की वास्तविकता का सामना करने में अपने को अक्सर असमर्थ पाते हैं। फिर वे कोशिश करने पर भी आंतरिक गुणों की ओर ध्यान नहीं दे पाते। सौंदर्य का साम्राज्य स्थायी नहीं होता। उसका विनाश काल शीघ्र ही आ जाता है।

एक स्थानीय महिला कालेज की प्रिंसिपल महोदया से इस विषय में मेरी एक बार काफी बातचीत हुई। बात-चीत के दौरान में उन्होंने बतलाया कि एक बार वे अपने उस पुराने स्कूल में गई जहाँ

वे आज से करीब २०--२५ वर्ष पहले थीं। जिन लड़कियों से, उनके सुन्दर होने के कारण, उन्हें उस समय काफी ईर्ष्या होती थी और जो अपने सौन्दर्य के बल पर लोगों को खूब आकर्षित किया करती थीं उस वक्त खूब बनती-ठनती थीं, वे आज उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाती हैं। वे जरा से ही श्रम में थक जाती हैं। लोग उन्हें गन्दी बूढ़ी औरत कहा करते हैं और कुछ वे लड़कियाँ जिन्हें वे उस समय उपेक्षा की दृष्टि से देखती थीं, (उनके सामान्य सौन्दय के कारण) आज उनकी स्कूल में खूब धाक है। उन की सभी प्रशंसा करते हैं, गुणगान करते हैं। वहाँ की सभी महिलाओं में वे सबसे अधिक आकर्षक एवम् प्रभावशाली मानी जाती हैं।

सौन्दयं के महत्व से मैं इनकार नहीं करती पर मुझे वही सौन्दर्य प्रिय है जो अपने आप में मूल्य रखना है तथा जो किसी के द्वारा नष्ट किए जाने की कोशिश करने पर भी नष्ट नहीं किया जा सकता। यह सौन्दय सुदृढ़ चरित्र और जीवन की मुस्कानों के सुसंयोग से बनता है। यदि आप में यह सौन्दयं है तो निश्चय ही आपको सर्वत्र सफलता मिलेगी। युवावस्था में आकार-प्रकार शरीर आदि का सौन्दयं जो हुआ करता है, वह चमड़े का ऊपरी सौन्दर्य होता है जो क्रमशः अवस्था के साथ ही साथ ढलता जाता है और पूर्णतः नष्ट होने के पहले आपको अपने आप के प्रति बड़े ही भयंकर मोह-भ्रम में डाल देता है। यदि आप में वास्तविक अन्दरूनी 'चमक' है तो आपको वह सुन्दरता प्राप्त है जो सभी व्यक्ति प्राप्त कर सकते हैं और जिस पर उनकी अवस्था और शारीरिक गठन आदि का कभी कोई प्राभव नहीं पड़ता।

युवकों को इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। गौरवर्ण में ही सौन्दर्य नहीं होता, गेहुँए या काले रगं की लड़कियाँ भी अधिक अच्छे स्वाभाव की, अधिक गुणवती और अधिक प्रेमवती हो सकती हैं और होती हैं जैसा की मैं ऊपर बतला चुकी हूँ। सौन्दर्य की परीक्षा केवल रंग से नहीं करनी चाहिए। हमारे देश के युवकों को काली लड़कियों को प्रधानता देनी चाहिए। क्योंकि भारत ऐसी लड़कियों का देश है और यदि उनके प्रति सहिष्णुता नहीं दिखाई जायगी तो बहुत से परिवार बरबाद हो जाएँगे। ग्रामों में भी रंग का रोग फैल गया है और कहने की आवश्यकता नहीं कि वहां के लड़कों को भी गोरी ही भाती हैं और काली काटती हैं। वस्तुतः ऐसा सोचना ठीक नहीं कि केवल गोरे रंग वाली लड़कियाँ ही सुन्दर होती हैं या रंग से सौन्दर्य बढ़ जाता है।

गीत

लेखिका, कुमारी मुन्नीदेवी शर्मा, साहित्यरत्न

मुझको तो जीने की खातिर एक तुम्हारा प्यार बहुत है

धरती को जीवन देने को,
घिर आईं घनघोर घटाएँ।
बरसे मेंह हँसे हरियाली,
सरितायें सागर लहराएँ।
पर चातक की तृषा-तृप्ति को स्वांति बूँद दो-चार बहुत है

नील गगन से नित्य निशा में-
हँसता चाँद सुधा बरसाता,
अवनी के सूने आँचल को,
तुहिन बिन्दुओं से भर जाता।
पर चकोर की मजबूरी को केवल दो अङ्गार बहुत हैं

विरह-वेदना में जब व्याकुल-
प्राण निकलने को अकुलाएं!
किसी प्रतीक्षा में दो आँसू
कोरों में छलकें, छिप जाएं!

याद किसी की तब जीने को दो क्षण का आधार बहुत है
मुझको तो जीने की खातिर एक तुम्हारा प्यार बहुत है

सास-बहू

मनोरंजक प्रश्नोत्तर

सास चाहे जैसी हो, बहू को चाहिए कि उसका आदर करे। और बहू चाहे जैसी हो सास को चाहिए कि उसको आशीर्वाद दे !

लेखिका, श्रीमती रुक्मिणी शुक्ल

[१]

'**अ**रे ! छोटी।'

'जी माता जी।'

'देखो तोता उड़ गया।'

'तो जाने दीजिये बन्धन मुक्त हो गया।'

'अरे कैसी हो तुम ठीक बात ही नहीं करती।'

'माफ करिये मैं सच कहती हूँ।'

'अच्छा पकड़ उसे।'

'माता जी आप तोता पालकर अनर्थ करती हैं अब उसे कौवे मार डालेंगे।'

'अरे राम-राम देख बेटी।'

'आइये माता जी देखिये उसे कौवे सता रहे हैं। (पेड़ पर) उफ ! उड़ने की शक्ति भी नहीं रह गई, बन्द रहने से।'

'अरी यह क्या कहती है मेरे सिर पाप ?'

'प्रत्यक्ष दिखता है।'

'दइया रे घोर कलजुग राम-राम नोच डाला तोते को।'

'तोते की तरह मुझे भी घर रूपी पिंजड़े में पाल कर पराधीन कर दिया है। आप लोगों ने।'

'खबरदार जबान मत उठाना अब।'

'जो आज्ञा बंदी की तरह मानूँगी।'

'क्या बकती है भाग सराह जो धनवान की बहू हुई है।'

'ऐसे धनवान से गरीब भला जो दूसरों की भलाई करता है।'

'अरे बाप रे परलो, परलो, पागल तो नहीं हो गई ? लोग धनवान होने के लिये संसार छान डालते हैं।'

'वही पागल हैं।'

'अरी तू तो चपतें-सी लगाती है।'

'माफ करिये सच-सच कहती हूँ, धनवान को घमण्ड आ जाता है और धन का दुरुपयोग करते हैं।'

'मेरे घर में भी ?'

'जी हाँ सिगार बन कर धुयें के रूप में और औषधि बन कर शराब के रूप में आपका धन बरबाद होता है, साथ ही जीवन 'वर्थलेस' हो रहा है।'

'वर्थलेस ? अरे गाली तो नहीं देती मेरे लाल को ?'

'जी नहीं मेरे स्वामी हैं इसलिये।'

'नहीं तो क्या करती री तू ?'

'जेल करा देती जिससे जीवन का कुछ मूल्य तो रह जाता।'

'तो तेरी आँखों में सब खटकते हैं।'

'जी हाँ दुर्गुणों के कारण।'

'दुर्गुण ? अपने बाप की कमाई खर्च करता है कि तेरी ?'

'किसी की समझिये, किन्तु गरीबों के लिये खर्च करने को मैं सहमत हूँ ।'

'तेरा मत कौन लेता है री । जा भोजन बना ।'

'जो आज्ञा ।'

[२]

'अरी छोटी !'

'जी माता जी ।'

'दाल में जरा ज्यादा-सी मिर्चें छौंक देना ।'

'लेकिन आपको खांसी अधिक आवेगी मिर्चों से ।'

'तुझे क्या करना है ?'

'सब कुछ ।'

'हट इधर से, चली है डाक्टरी बताने ।'

[३]

'छोटी ।'

'जी.....ई ।'

'थाली परोस भइया आया है ।'

'स्वामी जी ।'

'क्या चाहती हो ।'

'केवल यही कि दिन में ६ घंटे मुझे धर्म ग्रन्थ सुनाइये और......धूम्र पान कम करिये ।'

'थोड़ा-सा धूम्रपान करता हूँ ।'

'उसी थोड़े से संसार बनता-बिगड़ता है । अच्छा थोड़ा-सा दान रोज किया करिये, गरीबों को ।'

'ठीक ।'

[४]

'छोटी ।'

'जी माता जी ।'

'आज व्रत है ।'

'जी हाँ किन्तु मैंने सेवा व्रत धारण किया है ।'

'चरण छू लूँ माता जी ।'

'अहबाती रहो दस लड़कों की माँ होओ ।'

'यह क्या कहती हैं आप, मैं मुर्गी नहीं होना चाहती ।'

'अरी क्या बकती है निपुत्री होगी ?'

'जी नहीं अपने स्वार्थ के लिये नहीं, भारत माता के लिये केवल एक 'शेर' सियार नहीं ।'

'सियार भी हो तो वंस चलेगा ।'

'नहीं माता जी मैं सियार की माँ नहीं होना चाहती ।'

'अच्छा तेरी इच्छा भगवान पूरी करेंगे ।' तेरा हृदय शुद्ध होगा तो अवश्य सफलता मिलेगी । तेरी ही बदौलत भइया सुधरा है, छोटी ! अब वह धर्म पर चलता है, दान भी करता है । तुम लोग चिरंजीव रहो । यही मेरा आशीर्वाद है बेटा ।

'माता जी ।'

'........'

स्वामी जी आइये माता जी का हार्ट फेल हो गया ।

'उफ ! मुझसे तो बात तक न की ।'

....

'तुमसे कुछ कहा ?'

'सिर्फ आशीर्वाद ।'

——

—पै पु जी—

[पृष्ठ ५२८ का शेशांष]

अपमान को अपना सम्मान समझते हैं तो फिर क्यों न स्त्रियों की समाज में यह दुर्दशा हो, क्यों न वे अपने को पुरुष के पांव की जूती समझे, क्यों न उनके आत्म सम्मान का सर्वनाश हो जाय !

जब विवाह संस्कार समाप्त हो गया और वर वधू मण्डप से निकले तो मैंने जल्दी से आगे बढ़ करके उसी थाल से थोड़े से फूल चुन लिये और एक अर्ध चेतना की दशा में, न जाने किन भावों से प्रेरित होकर उन फूलों को वधू के चरणों पर रख दिया और उसी वक्त वहां से घर चल दिया ।

——

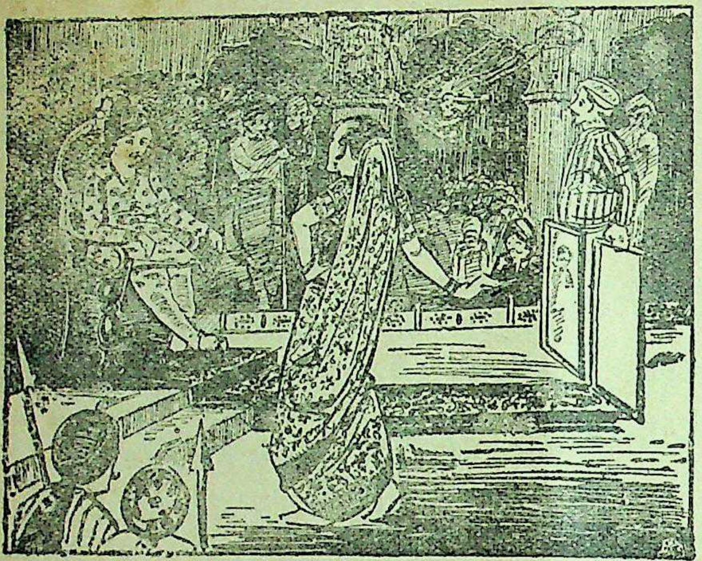

[वह मालवा-नरेश के सामने अकेले खड़ी थी !]

रूपमती

ऐतिहासिक कहानी

लेखिका, श्रीमती सुशीला कुमारी चौहान

[१]

बाहर गहरे नीले आसमान पर यदि चाँद-सितारे हँस रहे थे तो भीतर सारा महल हंसी से गूँज उठता था। तबला, सितार, सारङ्गी, मञ्जीर की एक साथ झङ्कार ने सबको शान्त कर दिया और उसका नृत्य प्रारम्भ हुआ।

एक-एक बार की घुँघरू की आवाज के साथ वाह-वाह का स्वर एक साथ गूँज उठता था। वह नाचते-नाचते थक गई पर नवाब का मन न भरा।

सोने-चाँदी के प्यालों पर प्याले सुरा से रीते होते जा रहे थे। एक से एक सुन्दरी नर्तकियाँ अपनी मुस्कानों को बादशाह पर न्योछावर करती थीं। लगता था कि स्वर्ग ने अपनी अप्सराओं को आज के इस राग रङ्ग में शरीक होने के लिये ही खास तौर से भेजा हो। सारा महल एक अजीब सुगन्ध से सुगन्धित था। इठलाती पवन के साथ यह सुगन्ध दूर तक फैल रही थी।

उसका नृत्य समाप्त हुआ। वह नवाब से विदा माँगने आई। उसका मस्तक अति विनम्रता से नवाब के समक्ष झुका था। नवाब ने सस्नेह पूछा—'तुम्हारा नाम......!'

'रूपमती।' उसका छोटा-सा उत्तर था।

निश्चय ही उसके शरीर से सौंदर्य की ज्योति फूटी पड़ती थी। उसकी बड़ी-बड़ी हिरनियों जैसी लजीली आँखें उसके सौन्दर्य में चार चाँद लगा रही थी।

नवाब क्षण भर निस्तब्ध होकर उसे देखता रहा।

अब तक उसने सबको जाने की आज्ञा दे दी थी। उस भरी महफ़िल में तबला, सितार, सारङ्गी के पास खड़े थे दो ही प्राणी—रूपमती और नवाब। रूपमती जानती थी कि नवाब कला का प्रेमी है। उसे सङ्गीत नृत्य से बेहद प्रेम है। वह संगीतज्ञों एवं नृत्य-विशारदों का उचित आदर-सत्कार करता है।

[२]

वह मालवा की एक प्रसिद्ध वेश्या की पुत्री थी। उसकी लालची माँ ने उसे सङ्गीत नृत्य कला की अच्छी शिक्षा दी थी। पर रूपमती संसार में पदा-

ण कर गार्हस्थ्य जीवन बिताने की अत्यन्त इच्छुक थी। माँ के आगे उसकी एक न चली और आज पहली बार वह नवाब के महल में नृत्य करने आई थी। अपने नृत्य की मधुर झंकारों से उसने नवाब को भी खींच लिया था। अब तक रूपमती स्थिर दृष्टि से नवाब के समक्ष झुकी खड़ी थी। नवाब ने मुस्कराते हुए कहा—'रूपमती !'...

'जी...!' रूपमती का स्वर कांप गया क्योंकि वह मालवा नरेश के सामने अकेले खड़ी थी। वह थी तो वेश्या की पुत्री पर उसके मन में विचार थे, एक सती नारी के। नवाब ने अत्यन्त स्नेह के स्वर से पूछा—'रूपमती क्या तुम इस पेशे को छोड़ गार्हस्थ्य जीवन भी बिताना चाहती हो ?'

डूबते को तिनके का सहारा मिला। उसे लगा उसके जीवन की डगमगाती नैय्या को किनारा मिलने का समय आ गया है। उसने आँखें ऊपर उठायीं और विनम्रता से बोली—

'यदि कोई मेरे मन की भावनाओं को पहचानने की चेष्टा करे तब न श्रीमान् ! लोग कहते हैं कि तुम्हारा जन्म वेश्या के गर्भ से हुआ है तुम पतित हो। पर मैं इस ख्याल को आने ही नहीं देती हूँ।' उसने उदास होते हुए कहा।

उसकी बड़ी-बड़ी आँखें सजल होकर नवाब की ओर कातरता से देखने लगीं जैसे मार खाया बच्चा माँ की ओर देखता है कि उसकी आँखों में दया आ जाये।

'और यदि मैं तुम्हें अपनी बेगम बना लूँ तब ?'

रूपमती निरुत्तर रह कर खड़ी रही। नवाब के समक्ष वह किस प्रकार स्वीकृत सूचक सिर हिलाये और कैसे उसको धन्यवाद दे। यदि नवाब उसकी कला पर मुग्ध था तो रूपमती उसकी दया और स्नेह शीलता की सरिता में सदा के लिये खो जाना चाहती थी।

[३]

यह वह समय था जब बैरम खां के अत्याचारों ने अकबर का ध्यान शासन की ओर आकृष्ट किया। उसने दिल्ली जाकर राज्य भार सम्भाला। अकबर अब तक कई राज्यों को जीत कर अपने राज्य में मिला उसे सुदृढ़ बना चुका था। अकबर इस ओर बड़ा सतर्क रहता था कि कब उसे कौन-सा राज्य जीतना है और कब उस पर आक्रमण करना होगा ? मालवा उसकी दृष्टि में चढ़ा था। उस समय अकबर में नया उत्साह था और हर कार्य में उसे एक नवीनता ही दिखाई पड़ती थी। उसे मालवा नरेश बहादुरशाह की भोग-विलासता का पता चल गया था और वह ऐसे सुअवसर की ताक में ही रहता था।

चाँद निर्मल स्वच्छ आकाश पर मन्द-मन्द मुस्करा रहा था। पेड़ों की पत्तियों से छन-छन कर धरती पर चाँदनी आ रही थी। रूपमती के प्रथम दर्शन में प्रणय बन्धनों में बंधे और तब विवाह सूत्र में बँध जाने की चर्चा मालवा के बच्चे बच्चे की जबान पर थी। रूपमती अपने इस जीवन से अत्यन्त सन्तुष्ट थी और वह नवाब को अपनी जिन्दगी से भी प्रिय वस्तु समझती थी। नवाब ने चारों ओर से हाथ खींच लिया था। शासन का भार उसके कंधों से उतरा प्रतीत होता था। ऐसे सुन्दर समय में नवाब ने रूपमती से कहा—'रूपमती एक गाना सुनाओ।'

नवाब का आदेश मात्र था कि रूपमती की नाजुक अँगुलियाँ सितार पर फिरने लगीं। सितार की झनझनाहट में उसके गीत के स्वर भी समा गये।

नवाब खो-सा गया। उस सुन्दर सुरीली स्वर लहरी में, वह अपने को भूल गया और कुछ समय के लिये अपने को दूसरी दुनियाँ का आदमी समझने लगा। उसकी जिन्दगी के दिन यों ही गुजरने लगे।

[४]

नवाब विलासिता का जो प्याला अधरों से लगा चुका था उसने उसके कर्तव्य पर पर्दा डाल दिया। नवाब शासन के काम से दूर रहने लगा। संसार की गतिविधि का ध्यान न रहा। यदि उसके लिये कुछ भी था तो था केवल सुरा का प्याला और थी रूपमती।

अहमद खाँ के नेतृत्व में अकबर की विशाल सेना ने एक दिन देखते-देखते मालवा को घेर लिया। नवाब का स्वप्न भंग हुआ। स्वर्ग से उतर कर दूसरी दुनियाँ में आया तो अवसर हाथ से जा चुका था। वह सचेत हुआ, सम्भलने की चेष्टा की। शासन की बागडोर पकड़ने की कोशिश की पर वह फुर से उड़ गई। घमासान युद्ध हुआ। मालवा की सेना टिक न सकी और नवाब रण क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। उसके आदेश से शाही हरम की सभी स्त्रियों को मौत की गोद में सुला दिया गया था। उसके सेवकों ने रूपमती को भी मृत समझ कर वहाँ से आगे बढ़ गये। रूपमती घायल थीं। रूपमती की सांसों का क्षीण स्वर और कराहने का आर्त नाद अब भी सुनाई पड़ रहा था।

रूपमती के सुन्दरता की कीर्ति देश-देश में फैल चुकी थी। अहमद खाँ उसके रूप पर मुग्ध था। उस का पता लगवा कर उसने उसे अपने पड़ाव में मँगवा भेजा। सैनिकों के द्वारा रूपमती को ले आया गया। अचेतन रूपमती ने जब निमीलित पलकों को उठा कर देखा तो वह क्षण भर के लिये विस्मित रह गई और अपने आस-पास खड़े चिकित्सों से कहा—

'तुम सब मेरी सेवा छोड़ दो, मैंने जिन्दगी का मोह त्याग दिया है। पति विहीन एकाकी जीवन न बिताऊँगी।' और उसने एक गहरी निःश्वास खींची।

पास खड़े अहमद खाँ का पत्थर का दिल पिघल पड़ा। विकल होकर बोला—'बहादुर शाह अभी जीवित हैं। केवल भाग गये हैं। अगर आप अच्छी हो जाइयेगा तो उनके पास आपको पहुँचा दिया जायगा।'

आशा एक ऐसी संगिनी होती है जो मरते दम तक मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती। प्यासा मनुष्य बन-बन छानता और आगे इस आशा से बढ़ता जाता है कि शायद आगे पानी का सोता मिल जाय। इस आशा से कि यदि अच्छी हो गई तो पति से पुनः भेंट होगी। रूपमती ने चिकित्सा का विरोध न किया, बल्कि लोगों की सेवा का पूर्ण रूपेण लाभ लेने लगीं। दिन गुजरते गये और साथ साथ रूपमती का बुझता हुआ जीवन प्रदीप पुनः जगमगा उठा।

रूपमती अब पूर्ण रूपेण स्वस्थ हो चुकी थी और तब उसने पति के पास जाने की इच्छा प्रगट की। उत्तर में उसे अहमद खां के इन शब्दों ने उसकी रही-सही आशा पर भी पानी फेर दिया।

'वह सम्राट अकबर का शत्रु है। जब तक वह स्वयम् आकर क्षमा-याचना न करेगा तब तक वह वहाँ नहीं जा सकती।'

जब जिन्दगी ही असन्तुष्ट रहेगी तब ऐसी कोई वस्तु नहीं जो उसे सुखकर बना सके। इतने सुन्दर महल में रहते हुए भी रूपमती अपने को कारागार का कैदी समझती रही। अहमद खां ने कई बार उससे शादी का प्रस्ताव रखा पर वह ठुकराती चली गई। इस नीरस जिन्दगी से मरना बेहतर समझने लगी। यह विचार उनके मन में धीरे-धीरे घर करने लगा।

एक दिन वह अपने महल में व्यथित हो लेटी थी तब एक कुटिल बांदी उसके कमरे में आयी और सलाम करके बोली—'आज मालवा के नये नवाब आपके भवन में पधार रहे हैं।'

रूपमती ने आन्तरिक रोष को दबाते हुए कुछ सोच-समझ कर कहा—'खाँ साहब से जाकर कह दो कि वे सहर्ष पधारें।'

बांदी चली गई। रूपमती उठी, शृङ्गार किया और विष का प्याला ले चारपाई पर लेट गई। विष को अधरों से गले में उतार वह चद्दर ओढ़ कर सदा के लिये सो गयी।

अहमद खाँ ने प्रसन्न हो निमन्त्रण स्वीकार किया और रूपमती के महल की ओर चल पड़ा। विजेता के-से गर्व से उसने सोई रूपमती के ऊपर से चादर का अवगुन्ठन उठाया। दीप था पर बुझा हुआ। चाँद था पर ज्योत्सना से हीन। मुस्कान थी पर जिन्दगी से दूर......!

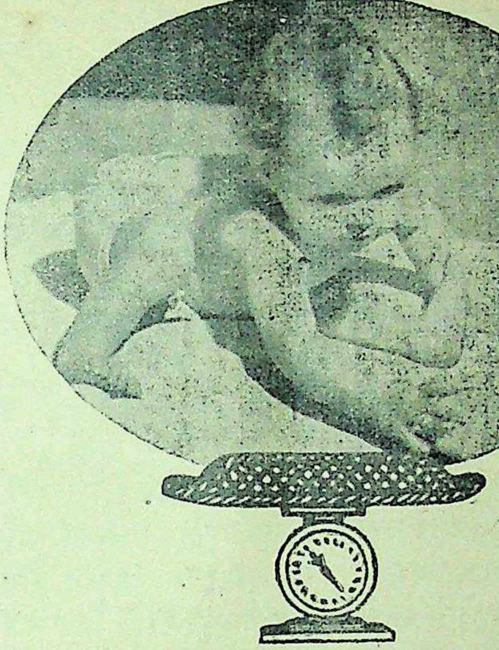

बच्चों का अनोखा अस्पताल

लेखिका, श्रीमती विमला गुप्ता (लन्दन से)

मेरा छोटा बच्चा लन्दन के एक स्कूल में पढ़ता है, वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है और कभी बीमार नहीं पड़ता। पर एक दिन जब वह स्कूल से लौटा, इस तरह मुँह बनाया जैसे उसे कोई बहुत तकलीफ हो। मैंने उसका मुख चूम कर पूछा—'प्यारे सुरेश! तुझे क्या हो गया है?'

'ममी मुझे बुखार चढ़ा है।'

मैंने उसका माथा छुआ बिलकुल गर्म नहीं था। मुझे लगा कि यह जरूर बहाना कर रहा है। मैंने कहा—'यों तो बुखार नहीं जान पड़ता, शायद हो। चलो कुछ खा-पी लो, फिर डाक्टर के यहाँ चलेंगे।'

इस पर वह उदास हो गया और कराहने-सा लगा।

'क्या हो गया है रे तुझे।' मैंने उसे गोद में उठा कर छाती से चिपटाते हुए पूछा।

'ममी बड़ा दर्द हो रहा है।'

'कहाँ।'

'सिर में, पेट में, तमाम बदन में।'

मैं कुछ घबराई—'अच्छा चलो अभी डाक्टर के यहाँ चलती हूँ।'

'नहीं ममी, मुझे तो 'ग्रेट आरमन्ड स्ट्रीट' ले चलो।'

यह नाम मैंने पहले कभी न सुना था। कई प्रश्न करके मैंने मालूम किया कि—'ग्रेट आरमन्ड स्ट्रीट' में बच्चों का अस्पताल है जो बच्चों के लिये इतना आकर्षक है कि उसमें जाने के लिये स्वस्थ बच्चे भी बीमारी का बहाना करते हैं।

मैंने इस अस्पताल को देखने और बेटे सुरेश को उसे दिखाने का इरादा किया। उस समय उसे फुसला कर टाल दिया परन्तु शीघ्र ही जब वह वास्तव में साधारण इन्फुयेञ्जा से पीड़ित हुआ मैं उसे ग्रेट आरमन्ड स्ट्रीट के इस अस्पताल में लेकर चली। अस्पताल के नाम से ही बच्चा इतना प्रसन्न हुआ कि मुझे लगा कि उसकी आधी बीमारी तो रास्ते में ही अच्छी हो गयी।

अस्पताल में बाहर के जो रोगी बच्चे आते हैं उनकी सबसे पहले सिस्टर ग्वेन लांग से भेंट होती है। ये बहुत ही मृदु स्वाभाव की प्रसन्नमुख महिला हैं। इन्होंने मेरे बच्चे का और मेरा एक अर्थ भरी मुस्कान से स्वागत किया और उस विशाल कमरे में बैठाला, जिसमें बाहर से आने वाले रोगी बच्चे जमा होते हैं। बड़ी-बड़ी खुली खिड़कियाँ चमकदार फर्श और सीढ़ियाँ, कहीं पर नाचता घोड़ा और कहीं पर मुस्कराती हुई गुड़िया कहीं पर तसवीरों की किताबें और रबड़ के गेंद इस कमरे में आनेवाले बच्चों को पूरी आजादी है कि वे चाहें तो नाचते घोड़े पर चढ़ें और गुड़िया या खिलौनों से खेलें।

यह कमरा इस प्रकार बना है कि बच्चों का शोर गुल दीवालें और छत खींच लेती हैं। मेजें और आलमारियाँ दीवालों से लगी हैं और कुर्सियों के पाये में रबर लगी है कमरे को इतना गर्म रखा जाता है कि बच्चे इसके अन्दर नंगे बदन और नंगे पाँव भी घूम सकते हैं। सिस्टर ग्वेन लांग ने मुझे बतलाया कि अस्पताल के इस भाग के निर्माण में २५०,०००) पौंड व्यय हुए हैं और वर्षों के प्रयोग के बाद यह अस्पताल इस रूप में विकसित हुआ है। इस अस्पताल की नर्सें और डाक्टरों का एक ही लक्ष्य है कि इस अस्पताल में जो बच्चे आवें उन्हें दवा या डाक्टर या चिकित्सा सम्बन्धी यन्त्रों का जरा भी भय न हो।

'तुम्हारे बच्चे ने जो इस अस्पताल में आने का हठ किया है यह इस दिशा में हमारी सफलता का प्रमाण है।'

सिस्टर ने मुझे बताया कि इस अस्पताल की एक विशेषता यह भी है कि बच्चों के साथ उनके माता-पिता में से कोई या घर का अन्य परिचित व्यक्ति उनके साथ अस्पताल के प्रत्येक भाग में जा सकता है। डाक्टर लोग बच्चों की इस तरह परीक्षा या चिकित्सा करते हैं कि बच्चों का ध्यान बीमारी की ओर से हट कर खेल-विनोद में लग जाता है। चिकित्सा के यन्त्रों में या और निरीक्षण के लैंपों में या चीड़-फाड़ के कमरों में रबड़ आदि के विचित्र पशु-पक्षी झुलाये जाते हैं।

उसी समय एक लड़की अपनी माँ के साथ आई जिसकी बांह में सिस्टर लाग को पट्टी बाँधनी थी। मैंने देखा कि सिस्टर लांग ने पहले एक गुड़िया की बांह में पट्टी बांधी फिर एक दूसरी गुड़िया को बांधी फिर उस लड़की को कुछ मिठाई और एक खिलौना दिया और तब कि लांग ने उसकी बांह में पट्टी बांध दी। सिस्टर ने मुझे बताया कि परीक्षा के प्रत्येक यन्त्र को प्रयोग से पहले बच्चे को दिखला दिया जाता है कि वह उसको छू कर समझ ले कि वह एक खिलौना मात्र है और उससे डरे नहीं।

प्रत्येक बच्चे को जो इस अस्पताल में आता है उसे बिना किसी भेद-भाव के कोई न कोई खिलौना घर ले जाने के लिये दिया जाता है। अक्सर ऐसा हुआ है कि अच्छे होने पर भी कितने ही बच्चे इस अस्पताल से जाना नहीं चाहते और जो जाते हैं उन्हें यह प्रलोभन दिया जाता है कि वे फिर जब चाहें आ सकते हैं। और जब वे आते हैं तब उन को यह कह कर टाला जाता है कि अभी 'बेड' खाली नहीं है'? अस्पताल में ऐसे लोग नियुक्त रहते हैं जो मिष्ट वाणी में बच्चों को सुन्दर कहानियाँ सुना सकते हैं जिससे की बच्चों का ध्यान बँटा रहे। मेरा अनुभव है कि बहुत-से बच्चे इस अस्पताल से जब घर ले जाये जाने लगते हैं तो बहुत रोते और चिल्लाते हैं, कारण यही है कि उन्हें यहाँ जो स्नेह मिलता है वह घर में प्राप्य नहीं होता। कितनी ही नर्सें और सिस्टरों को उन लड़कों से जो

अस्पताल में रह चुकते हैं काफी लम्बे समय तक स्नेह भरे पत्र मिलते रहते हैं जिसमें प्रायः यह लिखा रहता है कि वे चाहते हैं कि फिर बीमार पड़ें और अस्पताल में आवें।

इस अस्पताल ने लन्दन के बच्चों के मन पर ऐसा प्रभाव डाला है कि उनके लिये अस्पताल शब्द दुख-दर्द का नहीं सुख आनन्द और खेल का प्रतीक बन गया है। बच्चे यहाँ डाक्टरों और नर्सों को अपना मित्र समझते हैं और उन्हें पूरी स्वतन्त्रता रहती है कि वे अस्पताल के चाहे जिस हिस्से में जाएँ और चाहे जो देखें-भालें। जो बच्चे अपने घर में अकेलेपन का अनुभव करते हैं उन्हें यह अस्पताल और अधिक आकृष्टि करता है।

क्या अच्छा हो कि हमारे भारतवर्ष में भी कुछ इसी तरह से बच्चों के अस्पताल बनाये जायें।

पुत्री को पुत्र के बराबर हक

हिन्दू उत्तराधिकार बिल पर नियुक्त पार्लामेंट की संयुक्त समिति ने सिफारस की है कि पिता की सम्पत्ति में पुत्री को पुत्र के बराबर अधिकार प्राप्त हो। गत १६ सितम्बर को इस समिति की रिपोर्ट राज्य सभा और लोक सभा दोनों भवनों में कानून मन्त्री श्री एच० वी० पाटस्कर द्वारा उपस्थित की गई। पुत्र और पुत्री को समान अधिकार देने के साथ ही इस समिति ने यह भी सिफारिस की है कि उत्तराधिकार के सम्बन्ध में पुरुष या स्त्री उत्तराधिकारी में कोई भी भेद न माना जाय।

इस बिल में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ है कि यदि कोई पिता अपने लड़के के पक्ष में कोई 'विल' न छोड़ जाये तो उस लड़के की माता सम्पत्ति की उत्तराधिकारी नम्बर एक मानी जायगी और सम्पत्ति में अपना पूर्ण भाग पावेगी। जारज बच्चे भी अपने पिता की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी बनेंगे परन्तु ऐसे गैर कानूनी बच्चों का अधिकार उनके पिता की स्व अर्जित सम्पत्ति तक ही सीमित रहेगा।

समिति ने पुत्रियों के उत्तराधिकार का उल्लेख करते हुए कहा है कि पुत्री को पुत्र से पृथक् समझने में कोई न्यायोचित कारण नहीं है। पुत्री पुत्र और माता तीनों एक-एक भाग के अधिकारी होंगे। विधवा का, अथवा यदि किसी पुरुष की कई विधवाएँ हुईं तो उन सबका, एक भाग माना जायगा। यदि किसी पुरुष के कई पुत्र अथवा पुत्रियाँ हुईं तो सब पुत्रों को मिला कर एक भाग और सब पुत्रियों का मिलाकर एक भाग माना जायगा।

इस कानून के लागू होने के साथ ही प्रत्येक हिन्दू स्त्री की निजी सम्पत्ति पूर्ण रूप से उसी की मानी जायगी। इस समिति का एक महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि यह यदि किसी स्त्री के कोई सन्तान न होगी तो उसकी उसके पिता से प्राप्त सम्पत्ति उस के पिता के परिवार में चली जायगी और इसी प्रकार उसके पति या ससुर से प्राप्त सम्पत्ति पति या ससुर के परिवार में चली जायगी। परन्तु पुत्री का अपने पिता के रहने के घर में भाइयों के साथ हिस्सा बटाने का अधिकार सीमित कर दिया गया है। बहन अपने बाप के घर को तभी बँटा सकेगी जब भाई भी इसके लिये तैयार होंगे परन्तु हाँ उस घर में भाइयों के साथ उसका रहने का अधिकार सुरक्षित रहेगा।

इस समिति के सदस्यों द्वारा विरोध के ११ नोट लगाये गये हैं जिनमें मुख्य यह है कि गैर कानूनी बच्चों का पिता की सम्पत्ति में अधिकार देने से एक पत्नी व्रत को धक्का लगेगा और पुरुष कई विवाह करने अथवा रखेलियां रखने से नहीं हिचकेगा। दूसरा यह है कि पति अपनी पत्नी के सम्पत्ति का तभी अधिकारी हो सकेगा जब उस पत्नी से उस के कोई सन्तान होगी पर इसके विरुद्ध सन्तान हो अथवा न हो पत्नी पति की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी बन जायगी। नोट में इसे स्त्रियों का पक्षपात करने वाला कहा गया है।

श्री प्रेमचन्द लिखित कहानी

पैपुजी

हमारे समाज में वर पक्ष द्वारा कन्या के पिता का अपमान सामाजिक शिष्टाचार बन गया है। स्त्री की प्रतिष्ठा के लिये इसका दूर होना आवश्यक है। इस प्रश्न पर सन् १९३५ में स्वर्गीय प्रेमचन्द जी ने अपनी इस कहानी में बड़े कौशल से प्रकाश डाला था जिसे 'हिन्दी प्रचारक' से हम उद्धृत करते हैं।

[१]

सिद्धान्त का सबसे बड़ा दुश्मन है मुरौवत। कठिनाइयों, बाधाओं, प्रलोभनों का सामना आप कर सकते हैं दृढ़ संकल्प और आत्मबल से। लेकिन एक दिली दोस्त से बेमुरौवती तो नहीं की जाती, सिद्धान्त रहे या जाय। कई साल मैंने जनेऊ हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की थी कि अब कभी किसी के बारात में न जाऊँगा चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय। ऐसी विकट प्रतिज्ञा करने की जरूरत क्यों पड़ी; इसकी कथा लम्बी है और आज भी उसे याद करके मेरी प्रतिज्ञा को जीवन मिल जाता है। बारात थी कायस्थों की। समधी थे मेरे पुराने मित्र। बारातियों में अधिकांश जान-पहिचान के लोग थे। देहात में जाना था। मैंने सोचा, चलो दो-तीन दिन देहात की सैर रहेगी।

चल पड़ा, लेकिन मुझे यह देख कर हैरत हुई कि बारातियों की वहाँ जाकर बुद्धि ही कुछ भ्रष्ट हो गई है। बात-बात पर झगड़ा तकरार। सभी कन्या पक्ष वालों से मानों लड़ने को तैयार। यह चीज नहीं आई, वह चीज नहीं भेजी, यह आदमी हैं या जानवर? पानी बिना बरफ के कौन पियेगा। गधे ने बरफ भेजी तो दस सेर। पूछो दस सेर बरफ लेकर आँखों में लगायें या किसी देवता को चढ़ायें, अजब चिल-पों मची हुई थी। कोई किसी की न सुनता था। समधी साहब सिर पीट रहे थे कि यहाँ उनके मित्रों की जितनी दुर्गति हुई, उसका उन्हें उम्र भर खेद रहेगा।

वह क्या जानते कि लड़की वाले इतने गँवार हैं। गँवार, क्यों मतलबी कहिए। कहने को शिक्षित हैं, सभ्य हैं, भद्र हैं, धन भी भगवान की दया से कम नहीं, मगर दिल के इतने छोटे। दस सेर बरफ भेजते हैं। सिगरेट की एक डिबिया भी नहीं। फँस गया, और क्या।

मैंने उनसे बिना सहानुभूति दिखाये कहा—'सिगरेट नहीं भेजे तो कौन-सा बड़ा अनर्थ हो गया खमीरा तम्बाकू तो दस सेर भेज दिया है। पीते क्यों नहीं घोल-घोल कर।'

मेरे समधी मित्र ने विस्मय भरी आँखों से मुझे देखा, मानों उन्हें अपने कानों पर विश्वास न हो। ऐसी अनीति!

बोले—'आप भी अजीब आदमी हैं। खमीरा यहाँ कौन पीता है? मुद्दत हुई लोगों ने गुड़गुड़ियाँ और फर्शियाँ गुदड़ी बाजार में बेच डालीं। थोड़े से दकियानूस अब भी हुक्का गुड़गुड़ाते हैं, लेकिन बहुत कम। यहाँ तो ईश्वर की कृपा से सभी नयी रोशनी, नये विचार, नये जमाने के लोग हैं और कन्या वाले यह बात जानते हैं; फिर भी सिगरेट नहीं भेजे। यहाँ कई सज्जन आठ-दस डिबिया रोज पी जाते हैं। एक साहब तो बारह तक पहुँच जाते हैं। इतने आदमियों के बीच में पाँच सौ डिबिया भी न हो तो क्या हो। और बरफ देखी आपने! जैसे दवा के लिये भेजी है। यहाँ इतनी बरफ घर-घर आती है। मैं तो अकेला ही दस सेर

पी जाता हूँ। देहातियों को कभी अक्ल न आयेगी; पढ़-लिख कितने ही जायँ।'

मैंने कहा—'तो आपको अपने साथ एक गाड़ी सिगरेट और टन भर बरफ लेते आना चाहिए था।'

वह स्तम्भित हो गये—'आप भंग तो नहीं खा गये हैं?'

'जी नहीं, कभी उम्र भर में नहीं खाई।'

'तो फिर ऐसी ऊल-जलूल बातें क्यों करते हैं?'

'मैं तो सम्पूर्णतः अपने होश में हूँ।'

'होश में रहने वाला आदमी ऐसी बातें नहीं कर सकता। हम यहाँ लड़का व्याहने आये हैं। लड़की वालों को हमारी सारी फरमाइशें पूरी करनी पड़ेंगी, सारी। हम जो कुछ माँगें उन्हें देना पड़ेगा, रो-रोकर उन्हें देना पड़ेगा। दिल्लगी नहीं है। नाकों चने न चबवा दें तो कहियेगा। यह हमारा खुला हुआ अपमान है। द्वार पर बुला कर जलील करना है। मेरे साथ जो लोग आये हैं, वे नाई-कहार नहीं हैं। बड़े-बड़े आदमी हैं। मैं उनकी तौहीनी नहीं देख सकता। अगर इन लोगों की यह जिद है तो बारात लौट जायगी।'

मैंने देखा यह इस वक्त ताव में हैं। इनसे बहस करना उचित नहीं। आज जीवन में पहली बार, केवल दो दिन के लिये इन्हें एक आदमी पर अधिकार मिल गया है। उसकी गरदन इनके पाँव के नीचे है। फिर इन्हें क्यों न नशा हो जाय; क्यों न सिर फिर जाय। क्यों न उस पर दिल खोल कर रोब जमायें। वर पक्ष वाले कन्या पक्ष वालों पर मुद्दतों से हुकूमत करते चले आये हैं और उस अधिकार को त्याग देना आसान नहीं है। इन लोगों के दिमाग में यह बात इस वक्त कैसे आयेगी कि तुम कन्या वालों के मेहमान हो और वे तुम्हें जिस तरह रखना चाहेंगे रहना पड़ेगा। मेहमान को जो आदर-सत्कार चूनी-चोकर, रूखा-सूखा मिले उस पर उसे सन्तुष्ट होना चाहिए। शिष्टता यह कभी गवारा नहीं कर सकती कि वह जिनका मेहमान है, उनसे अपनी खातिरदारी का टैक्स वसूल करे। मैंने वहाँ से टल जाना ही मुनासिब समझा।

लेकिन जब विवाह का मुहूर्त आया, इधर से एक दर्जन ह्विस्की की बोतलों की फरमाइश हुई और कहा गया कि जब तक बोतलें न आ जायेंगी, हम विवाह संस्कार के लिये मंडप में न आयेंगे, तब मुझ से न देखा गया। मैंने समझ लिया, ये सब पशु हैं, इन्सानियत से खाली। इनके साथ एक क्षण रहना भी अपनी आत्मा का खून करना है। मैंने उसी वक्त प्रतिज्ञा की कि अब किसी बारात में न जाऊँगा, और अपना बोरिया-बकचा लेकर उसी समय वहाँ से चल दिया।

इसलिये जब गत मंगलवार को मेरे परम मित्र सुरेश बाबू ने मुझे अपने लड़के के विवाह का निमंत्रण दिया तो मैंने साहस को दोनों हाथों में पकड़ कर कहा—'जी नहीं, मुझे क्षमा कीजियेगा, मैं न जाऊँगा।'

उन्होंने खिन्न होकर कहा—'आखिर क्यों?'

'मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि अब किसी बारात में न जाऊँगा।'

'अपने बेटे की बारात में भी?'

'उसमें मैं खुद अपना स्वामी रहूँगा।'

'तो समझ लीजिये यह आप ही का पुत्र है और आप यहाँ अपने स्वामी हैं।'

मैं निरुत्तर हो गया। फिर भी मैंने अपना पक्ष न छोड़ा।

'आप लोग वहाँ कन्या वालों से सिगरेट, बर्फ, तेल, शराब आदि-आदि चीजों के लिये आग्रह तो न करेंगे?'

'भूल कर भी नहीं। इस विषय में मेरे विचार वही हैं, जो आपके।'

'ऐसा तो न होगा कि मेरे जैसे विचार रखते हुए भी आप वहाँ दुराग्रहियों की बातों में आ जायें और वे अपने हथकण्डे शुरू कर दें?'

'मैं आप ही को अपना प्रतिनिधि बनाता हूँ। आपके फैसले की वहाँ कहीं अपील नहीं होगी।'

दिल में तो अब भी कुछ संशय था, लेकिन इतना आश्वासन मिलने पर और ज्यादा अकड़ना असज्जनता थी। आखिर मेरे वहाँ जाने से यह बेचारे तर तो न जायेंगे। केवल मुझसे स्नेह रखने के कारण ही तो सब कुछ मेरे हाथों में सौंप रहे हैं। मैंने चलने का वादा कर लिया। लेकिन जब सुरेश बाबू विदा होने लगे तो मैंने घड़े को जरा और ठोंका—

'लेन-देन का तो कोई झगड़ा नहीं है ?'

'नाम को नहीं। वे लोग अपनी खुशी से जो दे देंगे वह हम ले लेंगे। माँगने न माँगने का अधिकार आपको रहेगा।'

'अच्छी बात है, मैं चलूँगा।'

शुक्रवार को बारात चली। केवल रेल का सफर था, और वह भी ५० मील का। तीसरे पहर के एक्सप्रेस से चले और शाम को कन्या के द्वार पर पहुँच गये। वहाँ हर तरह का सामान मौजूद था। किसी चीज को माँगने की जरूरत न थी। बारातियों की इतनी खातिरदारी भी हो सकती है, इसकी मुझे कल्पना भी न थी। बाराती इतने विनीत हो सकते हैं! कोई बात मुँह से निकाली नहीं कि एक की जगह चार हाथ बांधे हाजिर!

लग्न का मुहूर्त आया। हम सभी मंडप में पहुँचे वहाँ तिल रखने की जगह भी न थी। किसी तरह धँस-धँसा कर अपने लिये जगह निकाली। सुरेश बाबू मेरे पीछे खड़े थे। बैठने को कहीं जगह न थी।

कन्यादान संस्कार शुरू हुआ। कन्या का पिता एक पीताम्बर पहने आकर वर के सामने बैठ गया और उसके चरणों को धोकर उन पर अक्षत, फूल आदि चढ़ाने लगा। मैं अब तक सैकड़ों बारातों में जा चुका था, लेकिन विवाह संस्कार देखने का मुझे कभी अवसर न मिला था। इस समय वर के सगे-सम्बन्धी ही आते हैं। अन्य बाराती जनवासे में पड़े सोते हैं या नाच देखते हैं, या ग्रामोफोन के रेकार्ड सुनते हैं और कुछ न हुआ तो कई टोलियों में ताश खेलते हैं। अपने विवाह की मुझे याद नहीं, इस समय कन्या के वृद्ध पिता को एक युवक के चरणों की पूजा करते देख कर मेरी आत्मा को चोट लगी। यह हिन्दू विवाह का आदर्श है या उस का परिहास। जामाता एक प्रकार से अपना पुत्र है। उसका धर्म है कि अपने धर्म पिता के चरण धोये उस पर पान फूल चढ़ावे यह तो नीति-सङ्गत मालूम होता है। कन्या का पिता वर के पाँव पूजे, यह तो न शिष्टता है, न धर्म, न मर्यादा। मेरी विद्रोही आत्मा किसी तरह शान्त न रह सकी। मैंने झल्लाये हुए स्वर में कहा—'यह क्या अनर्थ हो रहा है, भाइयो! कन्या के पिता का यह अपमान! क्या आप लोगों में आदमीयता रही ही नहीं।'

मण्डप में सन्नाटा छा गया। मैं सभी आँखों का केन्द्र बन गया। मेरा क्या आशय है यह किसी की समझ में न आया। आखिर सुरेश बाबू ने पूछा—'कैसा अपमान और किसका अपमान? यहां तो किसी का अपमान नहीं हो रहा है।'

'कन्या का पिता वर के पांव पूजे यह अपमान नहीं तो और क्या है ?'

'वह अपमान नहीं भाई साहब प्राचीन प्रथा है।' कन्या के पिता महोदय बोले—'यह मेरा अपमान नहीं है मान्यवर, मेरा अहोभाग्य है कि आज यह शुभ अवसर आया। आप इतने ही से घबरा गये। अभी तो कम से कम एक सौ पैपुजी के इन्तजार में बैठे हुए हैं। कितने ही तरसते हैं कि कन्या होती तो वर के पांव पूज कर अपना जन्म सफल करते।'

मैं लाजवाब हो गया। समधी साहब पांव पूज चुके तो स्त्रियों और पुरुषों का एक समूह वर की तरफ उमड़ पड़ा और प्रत्येक प्राणी लगा उसके पांव पूजने। जो आता था, अपनी हैसियत के अनुसार कुछ न कुछ चढ़ा जाता था। सब लोग प्रसन्न चित्त और गद्गद नेत्रों से यह नाटक देख रहे थे और मैं मन में सोच रहा था—जब समाज में औचित्य ज्ञान का इतना लोप हो गया है और लोग अपने

[शेष पृष्ठ ५२६ पर देखिये]

वीरांगना सुभद्राबाई

भारत ने भूतकाल में रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीर महिलाएँ निर्माण की हैं जिन्हें इतिहास में सम्मान का स्थान प्राप्त है। किन्तु वर्तमान काल का भारत भी ऐसी वीरांगना पैदा कर सका है। इसका उदाहरण सागर की वीर महिला सुभद्राबाई हैं जिन्होंने गोवा सत्याग्रह में अपनी वीरता का परिचय देकर सारे देश को और संसार को चकित किया है और मध्य प्रदेश का और विशेष रूप से सागर का नाम अमर किया है।'

सागर से निकलते समय सुभद्राबाई के हाथ में तिरंगा झण्डा देख कर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्द ने उन्हें कहा था कि, 'सुभद्रा, झण्डे की इज्जत तुम्हारे हाथ है।' इसके उत्तर में सुभद्राबाई ने कहा था—'तुम सुन लियो।'

जैसा उन्होंने कहा वैसा ही गोआ में कर दिखाया। उनकी कीर्ति स्वामी कृष्णानन्द ने ही नहीं सारे भारत ने सुनी।

सुभद्राबाई का जन्म आज से ४० वर्ष पूर्व सागर जिले के एक बोथराई ग्राम में हुआ। आपके पिता निरदसिंह जी खेती से ही अपने कुटुम्ब का पोषण करते थे। वहां आजकल सुभद्रा की दो बहनें और एक भाई रहते हैं। बोथराई ग्राम दमोह तहसील में पथरिया रेल्वे स्टेशन से थोड़ी ही दूर है। विवाह के बाद सुभद्राबाई अपने ससुराल कर्रापुर ग्राम में आईं जो सागर तहसील में है और सागर से ११ मील पर है।

सन् ४२ के लगभग सुभद्रा के पति मुरलीधर की मृत्यु हो गई और तभी से सुभद्रा ने कांग्रेस के और अन्य सार्वजनिक कार्यों में ही अपना जीवन बिताना प्रारम्भ किया और आज तक वे उसी तरह जीवन बिता रही हैं।

सुभद्राबाई के पिता एक गरीब ग्रामीण किसान थे और वे आपकी शिक्षा आदि की व्यवस्था करने में असमर्थ थे। किन्तु सुभद्राबाई ने अपनी लगन से पड़ोसियों से पूछ-पूछ कर लिखने-पढ़ने में काफी प्रगति की। रामायण गीता आदि का पाठ वे करने लगीं। इसके बाद भी उन्होंने अपनी ज्ञान लालसा पूरी करने के लिये वाचनालय से पुस्तकें मँगाईं। इस प्रकार उन्होंने अपने प्रयत्न से अपने आपको शिक्षित एवम् सुसंस्कृत बनाया।

सुभद्राबाई कई वर्षों से कांग्रेस की ४ आने वाली सदस्या हैं। कांग्रेस का ऐसा कोई आन्दोलन नहीं है जिसमें सुभद्रा ने सक्रिय भाग न लिया हो। आप महात्मा गांधी के साथ नोआखाली में पैदल यात्रा में शामिल थीं। नमक कानून भी आपने तोड़ा, अकाल में बंगाल बिहार का दौरा किया। सागर जिले में तिनकुआ ग्राम के पास आपने जंगल सत्याग्रह किया। कांग्रेस के अधिवेशन में उपस्थित रहने का मोह आप संवरण नहीं कर सकतीं। आपने कई तीर्थों की यात्रा की है। कुम्भ के हर मेले में आपने यात्रा की है।

महिलाओं को हम अबला कहते हैं; किन्तु सुभद्राबाई ने अपने जीवन में कई बार इस कथन को गलत सिद्ध किया है। चलने में वे ३०–३० मील पैदल चल कर भी थकती नहीं हैं। सन् ४२ में उन्होंने कर्रापुर ग्राम में पुलिस को इतना तंग किया कि आखिर उन्हें जेल में भेज दिया गया। उस समय आपने पुलिस को एक दाना मिलना भी असम्भव कर दिया था। समय-समय पर आपने अपूर्व साहस का परिचय दिया है।

इधर कई वर्षों से सुभद्राबाई लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट काउंसिल और अब जनपद सभा की

सदस्या हैं। इस पद से भी आपने जन-सेवा का कार्य बड़ी लगन से जारी रक्खा है।

अभी गोआ की घटना में जो आपका जोश प्रत्यक्ष देखने को मिला, उसे देख कर पुरुष सत्याग्रही भी आश्चर्य-चकित हैं। दल के नेता ने कह रखा था कि अन्दर प्रवेश करने पर यदि पुर्तगाली पुलिस तुम पर गोली चलावें तो उसे बचाने के लिये लेट जाना। आपका दल सीमा पार कर गया। झण्डा श्री चितले के हाथ में था। पुर्तगाली पुलिस ने गोली चलाई। अन्य सब लोग लेटने की तैयारी में थे। किन्तु सुभद्राबाई का ध्यान झण्डे की ओर था। उन्होंने देखा कि चितले घायल होकर गिर रहे हैं और झण्डा भी अब गिरने ही वाला है। उस अवसर पर अपने प्राणों की भी पर्वा किये बिना उन्होंने झण्डे की लाज रखने के लिये आगे बढ़ कर 'भारत माता की जय' का घोष करके झण्डा अपने हाथ में ले लिया और उसे ऊँचा किये रही। पुर्तगालियों ने दूसरी बार गोली चलाई और सुभद्रा देवी घायल होकर गिर पड़ी लोगों का ख्याल था कि वे मर गयीं। किन्तु वे मूर्छित हुई थीं। मूर्छित अवस्था में ही उन्हें वापस लाया गया। अभी वे अस्पताल में ही हैं। कहते हैं गोली की चोट के कारण आपके हाथ का आपरेशन कर उसे काटना पड़ेगा। किन्तु फिर भी उनकी लगन देखिये। अस्पताल में उन्होंने कहा है कि अच्छी होने के साथ ही मैं फिर सत्याग्रह करूंगी। धन्य है सुभद्रा देवी! धन्य है आपकी वीरता !! (कर्मवीर से)

---

८ बच्चों का एक साथ जन्म

मनीला के पास हरिया नगर के एक युवती ने एक साथ ८ बच्चों को जन्म दिया है। जिनमें पाँच लड़के और ३ लड़कियाँ हैं। युवती और बच्चे जीवित हैं।

गीत

लेखिका, श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी एम० ए०

गीतों के स्वर अमर रहेंगे
मिट न सकेंगे प्राण ?

अभिनय की चिरता में झंकृत
मानव की अभिरुचि है।
नश्वर काया के अनुभव में
शाश्वत युग की गति है।

बीती घड़ियों की छाया में
छिपा यथाथ महान्।

संघर्षों के मधु को पी
वपु इनका है अभिसिंचित।
इनकी आत्मा में बिम्बित
विष क्रूर करों से अर्जित।

पी जायेंगे गरल बनेगा
अमृत वही महान्।

जिस रस में उर घुला
उसी का सर्जित यह उपमान।
स्वयम् उसी की आकृति
चर्चित स्वयम् उसी की तान।

मूल्यरहित कैसे होगा यह
नीलकंठ का मान।

अमर वाणी के वंध
जगा देंगे नर का अभिमान।
बन जायेंगे अमिट सुधा
देने वाले परमाणु।

चिर जीवन का दान जहाँ
हैं शत् - शत् स्वर्ग महान् !

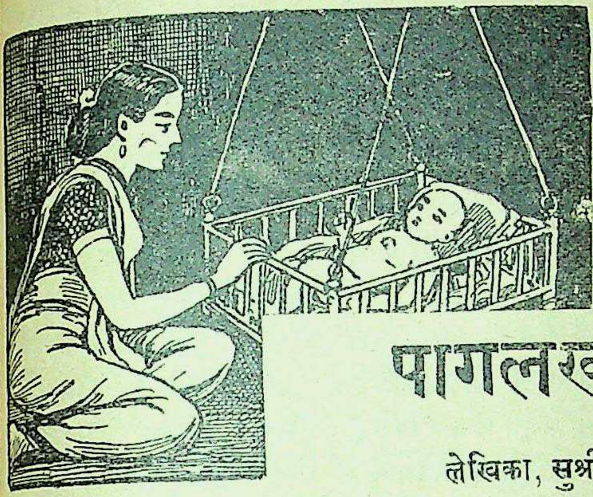

एक दुखान्त लघु-कहानी

पागलखाने में

लेखिका, सुश्री रमा पन्त

[१]

मेरे भैय्या पागलखाने के इञ्चार्ज हैं। अबकी छुट्टियों में जब मैं वहाँ गई तो उन्होंने कहा—'शैल ! अबकी एक ऐसा मरीज आया है, जैसा मैंने अपने आठ साल के यहाँ के जीवन में अभी तक नहीं देखा। चलना कल देखने।'

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं भैय्या के साथ पागलखाने गयी। एक पचीस-छब्बीस वर्ष की स्त्री के पास रुक कर भैय्या बोले—'यही है।'

वह बड़े प्रेम से बैठी हुई कोई लोरी गा रही थी, मानों किसी बच्चे को सुला रही हो। भैय्या को देखते ही उठ खड़ी हुई और सिर पर पल्ला रखते हुए शरमा कर बोली—'नमस्ते डाक्टर साहब ! एक तार दे दीजियेगा, मेरे कल रात बच्चा हुआ है।'

जब हम वहाँ से आगे बढ़े तो मैंने कहा—'भैया उसका बच्चा कहाँ है।'

भैया ने कहा—'अरी ! तुझे भी यहाँ का असर होने लगा क्या ? वह तो पागल है ? उसकी मातृत्व की अदम्य आकांक्षा ने ही उसे पागल बना दिया है। वह रोज प्रातःकाल मुझसे यही बात कहती है। मुझे तो उसके पति पर बड़ा क्रोध आता है कि सीधी-सादी नारी के हृदय को न पहचान पाया मूर्ख ! वह इतनी सीधी और शान्त है कि उसे पागल कहा ही नहीं जा सकता। मानस शिशुओं के द्वारा ही अपने नारी हृदय को तृप्त करती है जिसके लिये उसे पागल की संज्ञा मिली है।

[२]

जब वह कुमारी थी तब सोचा करती थी, मेरा विवाह होगा। मेरा पति मुझे खूब प्यार करेगा। मेरे बच्चे होंगे। मैं उन्हें खूब प्यार करूँगी। काश, अभागिनी भावी की काली घटाओं को देख पाती।

उसका विवाह हुआ पर उसकी आकांक्षा एक भी पूर्ण न हुई। विवाह वाली रात को भी उसका पति उसके पास न रहा, क्योंकि विधाता ने उसे सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा न बनाया था, किन्तु हृदय का असीम सौन्दर्य प्रदान किया था। पर हृदय को कौन देख सकता है ? वह उसके मुख का एक शब्द भी सुनने को तरस जाती, पर वह उसकी ओर आँख उठा कर भी न देखता। उसने उसे आदेश दे दिया था कि वह उसका भोजन ऊपर पहुँचा कर नीचे चली जाया करे।

उस बेचारी ने इस उपेक्षा का कारण जानने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु असफल रही। जीवन के तीन वर्ष उसने आशा और निराशा के झूले पर झूलते हुए बिता दिये। इन तीन वर्षों में उसने पति को मनाने के क्या-क्या उपाय नहीं किये। नित्य नवीन शृङ्गार करती, विविध भोजन बनाती, उस

वस्तुओं को क्रम से लगाती, पर वह उसके शृङ्गार को आँख उठा कर भी न देखता और शेष कार्यों को तो पत्नी का कर्तव्य समझता था।

एक बार वह बीमार पड़ी थी। ओह! उस समय वह पति के स्नेह स्पर्शों और रसभीने वचनों को सुनने के लिये कितना तरसी थी। वे डाक्टर की औषधि से अधिक काम करते। पर उस निष्ठुर ने तो मानों एक डाक्टर भेज कर अपना कर्तव्य पूरा कर लिया था। उस समय उसने यही कहा था—'हे भगवान अब तो मुझे उठा लो।' पर भगवान भी क्यों सुनने लगे।

पति की उपेक्षा और मातृत्व की मूक पुकार ने उसे पागल बना दिया। वह दिन प्रति दिन चिड़चिड़ी होने लगी। पति को देखते ही उसकी ओर झपटती—'तुम मुझे प्यार नहीं करते। तुम्हें करना पड़ेगा। मुझे एक बच्चा चाहिए।' डाक्टरों ने उसे पति से अलग रखने की सलाह दी और वह उसे यहाँ पागलखाने में छोड़ गया।

मालदार भिखारी

मद्रास में एक ऐसे भिखारी का पता लगा है कि जिसके पास चार हजार रुपये सेविंग बैंक में जमा हैं। साथ ही उसके पास एक शानदार बंगला भी है।

उस भिखारी की उमर ३६ वर्ष की है। वह पिछले ६ साल से भीख मांगने का काम कर रहा है।

बालों से परीक्षा

हाल ही में वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि स्त्रियों और पुरुषों के बालों में काफी अन्तर है। रिफ्रैक्टो-मीटर नामक यन्त्र की सहायता से व्यक्ति की लिंग और आयु का पता लगाया जा सकता है। वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के डाक्टर ऑलिवर एच० हगिन्स ने २० वर्षों के अध्ययन से इस बात का पता लगाया है।

औषधि विज्ञान

गठिया की दो नयी अचूक दवाएँ

'अमेरिकन रूमैटिज्म एसोसियेशन' को गठिया रोग की दो नयी प्रभावकारी औषधियों के बारे में जानकारी मिली है। ये 'कार्टिजोन' नामक औषधि से तीन या चार गुना अधिक गुणकारी बतलायी जाती हैं और इनके इस्तेमाल के बाद प्रतिकूल प्रभाव भी बहुत कम होता है। इन्हें ब्लूमफील्ड (न्यूजर्सी) के शैरिंग कार्पोरेशन ने तैयार किया है। इन नयी औषधियों को 'मैटाकारटैण्ड्रालोन' और मैटाकारटैण्ड्रोसिन' नाम दिये गये हैं।

तीन महीने तक एक रोगी का उपचार करने के बाद इनके जो सफल परिणाम निकले हैं उन्हें एक चलचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। चलचित्र में दिखाया गया है कि किस तरह बाजू एवम् टांगों की पीड़ा से ग्रस्त रोगी ठीक हो गया है। नयी औषधियों की खुराक की मात्रा भी कार्टिजोन से बहुत कम है और कुछ दशाओं में तो १० प्रतिशत मात्रा ही देनी पड़ती है। इस तरह प्रतिकूल प्रतिक्रिया का भय भी बहुत कम हो जाता है।

सन्तरे और नींबू के छिलकों से जुकाम का उपचार

चार अमेरिकी डाक्टरों ने 'अमेरिकन जर्नल ऑव् डाइजैस्टिव डिसीजेज' में हाल ही में यह प्रकट किया है कि विटामिन की तरह के कुछ रासायनिक तत्व सन्तरे और नींबू के छिलकों (फांकों के ऊपर के छिलके) में पाये जाते हैं, जो जुकाम तथा विषाणुओं वाले अन्य संक्रामक रोगों के उपचार में बहुत ही उपयोगी हैं। इनसे आंख का एक तरह का मोतियाबिन्द भी दूर हो जाता है।

इन तत्वों को 'वायोफ्लेवोनायड्स' या विटामिन-पी कहते हैं। ये तत्व शरीर में विद्यमान सूक्ष्म रक्त-कोषों की दीवारों को मजबूत बना देते हैं। इस तरह शरीर में शोथ-प्रतिशोध-क्षमता बढ़ जाती है।

जासूसी कहानी

अदृश्य-लेख

लेखक, श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०

उदय ने मानसिंह से कहा—'मान, जितनी उलझनें मैंने सुलझाई हैं उनमें से सबसे अधिक रहस्यपूर्ण भेद शायद रामेश्वर लाल मारवाड़ी का मामला था।

रामेश्वर के दो लड़के और एक लड़की थी। लड़कों में से एक ही जीवित था। दूसरा दुर्भाग्यवश पन्द्रह-सोलह साल की उम्र में ही मर गया था। उसके मौत का शोक रामेश्वर को बहुत अधिक था, जभी से रामेश्वर की तन्दुरुस्ती भी गिरती जा रही थी। वे मेरे पुराने मित्र थे। उनके लड़कों को मैंने बचपन से खेलाया-कुदाया था इसलिये उन पर एक प्रकार का स्नेह हो गया था। मुझे अपनी वकालत के बारे में और कुछ मालूम हो-न हो-परन्तु यह याद है कि मैं उन दिनों एटार्नी का काम करता था। रामेश्वर लाल का पहला वसीयतनामा मैंने ही प्रस्तुत किया था और उनके आज्ञानुसार अपने पास रक्खे हुए था। इसीलिये एक दिन जब उनके लड़के रामनाथ से यह पता चला कि उसके पिता अचानक बड़े भारी भक्त हो उठे हैं तो आश्चर्यचकित हुआ। अपने वसीयतनामें में उन्होंने अपनी विशाल सम्पत्ति का आधा रामनाथ को और बाकी आधे में से आधा लड़की सावित्री को और अवशिष्टांश में से विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं को सहायता देने का प्रबन्ध किया था।

रामनाथ की बातें सुन कर मैं रामेश्वर लाल के घर गया। रामेश्वर लाल कोई अपटूडेट आदमी न थे परन्तु फिर भी लड़कों के कारण एक कमरे को गोल कमरा के रूप में सज्जित कर रक्खा था। उस कमरे में एक पुराने जमाने का नीलाम से खरीदा हुआ सोफा, चन्द कुर्सियाँ, एक टेबुल और एक दो आलमारियाँ रहती थीं। उस दिन कमरे का रूप बदला हुआ था। उसमें से कुर्सी टेबुल लापता थे। फर्श धोकर सीमेन्ट के ऊपर गोबर का प्रलेप लगाया था जो स्पष्ट था। बीचोबीच में धूनी के लिये एक बड़े भारी नांद में आग सुलग रही थी। कमरा धूयें से पूर्ण था। एक ओर धूप धूना आदि सुगन्धियाँ जल कर केवल धूयें को ही नहीं बढ़ा रहे थे—बल्कि उसे सुगन्धित भी किये दे रहे थे।

फूल और पत्तियों का ढेर कई जगह लगा था। उनमें से कहीं-कहीं फूल पत्तियाँ सड़ कर एक ऐसी गन्ध उत्पादन कर रहे थे जिससे किसी पुराने मन्दिर के पिछवाड़े कूड़ा से सादृश्य था। वातावरण बड़ा ही गम्भीर तथा पवित्र लग रहा था। मगर बाहरी दिखावट भी किसी आदमी से छिप नहीं सकती थी। ऐसा लगता था, मानों पूजा से अधिक पद्धति तथा आडम्बर था। मैं तो घबराया। किधर से अन्दर जाऊँ, अन्दर जाऊँ अथवा न जाऊँ—इत्यादि चिन्ताओं में मैं डूबा हुआ था कि बाबा जी ने उच्च स्वर में मेरा आवाहन किया—'आओ बेटा! अन्दर आकर बैठो।'

उनके आवाहन से मेरी ओर ध्यान आकर्षण हुआ जिस व्यक्ति को उसे पहिचान कर मैं चकित हुआ। वे थे रामेश्वर लाल। मण्डित मस्तक! शिखा का एक गुच्छा वेणी की भाँति पीठ पर प्रसारित था। आँखों में विश्रान्ति की-सी खोई-खोई हुई निगाहें। एक सम्मोहन शक्ति के वशीभूत से वे मुझको लगे।

उन्होंने मुझे पहिचाना और आदर के साथ पास वाले कमरे में बिठाला। बोले—'वकील साहब यह संसार माया है। शास्त्र में ठीक ही लिखा है कि लड़के बाले कोई किसी का नहीं होता। यह दुनियां स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या आदि में उन्मत्त है। गुरू जी महाराज (इस वक्त उसने हाथ उठा कर उद्देश्य में नमस्कार किया) से जब से मैंने मन्त्र लिया है तब से हमारे हृदय में एक अजीब उथल-पुथल मची हुई है। मैं अनुभव करता हूँ कि मैंने अपना जीवन व्यर्थ में गँवाया है? मुझे जरा भी शान्ति नहीं है।'

'परन्तु मन्त्र लेने से तो अशांत मन शांत होता है?'

'होता तो है परन्तु मैंने बिजनेस में जिस उपाय से धन कमाया है वह तो घृणित था। जब तक वह धन मैं भोग करता रहूँगा तब तक मेरे मन में शांति कहाँ? इस पापार्जित धन को दूर हटाना है।'

'तो अपने बच्चों को दे दीजिये।' मैं बोला।

मुण्डा सर को दाहिने-बांये हिलाते हुए रामेश्वर लाल बोले—'वह तो स्वयम् भोग करने के समान है वकील साहब! इसे देवताओं के पूजन के लिये व्यय करने से शायद कुछ पाप कटे।'

'तो आप इसे मन्दिरों में दे दें—वहाँ खर्च होने से आपकी आत्मा शांत होगी।'

'अब जो कुछ गुरू जी महाराज करेंगे—वही होगा। उनके श्री चरणों में मैं यह कुल पाप का धन सौंप दूंगा—वे जैसे भी व्यय करें।'

'यह ख्याल आपके दिमाग में कहाँ से आया रामेश्वर जी? वे साधू महाराज हैं, रुपये के झमेले में उन्हें आप क्यों डाल रहे हैं?'

'आप सही कह रहे हैं—मगर महाराज मुझ पर अपार अनुकम्पा रखते हैं और उन्होंने स्वयम् मेरी इस मुसीबत में सहायता देने का आश्वासन दिया है। मैं नाम नहीं चाहता, प्रतिदान नहीं चाहता, वे गुप्त नाम से दान करेंगे—हमारा पाप भी कटेगा और मुझ में 'अहम' भाव भी नहीं आवेगा।'

मैं समझ गया कि साधू जी महाराज का असर बुड्ढे पर इतना प्रबल था कि अपनी सन्तान को भी वह वञ्चित करने पर उद्यत था। मैंने कहा—'मगर रामनाथ और सावित्री का क्या होगा? क्या उन्हें आप भीख माँगने को छोड़ जाइयेगा?'

मेरी बातों से पल भर के लिये एक छाया वृद्ध के शक्ल पर नजर आयी फिर वह दृढ़ स्वर में बोला, पाप की कमाई से बच्चों की भलाई कदापि नहीं हो सकती और न मैं कोई प्रयत्न करूँगा। बल्कि भीख मांगें वह भी अच्छा है मगर पाप के पैसे से वे पेट भरें यह मरने पर भी मैं नहीं सह सकूँगा।'

मैं रामेश्वर लाल के यहाँ से लौटा एक भारी-सा हृदय लेकर! मेरा मन रामनाथ और सावित्री की बातें सोच कर उदास था। वे दोनों बचपन से ही मुझे चाचा कहते थे और दोनों बड़े शान्त स्वभाव के थे। इसीलिये चाहे उनके पिता से मेरी पटे चाहे न पटे—उन दोनों को मैं बहुत चाहता था। मैं यह भी समझ गया था कि साधू बाबा अपने इस मूर्ख शिष्य के अनुशोचन तथा पश्चात्ताप का अनुचित लाभ उठाने पर तुले हुए हैं। मुझे उन सहाय-हीन बच्चों को बचाने का कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। मैं इसी फेर में पड़ा था। दस-बारह दिन बीत गये—कुछ समझ में नहीं आया कि क्या करूँ। इतने में एक दिन रामेश्वर लाल ने मुझे बुलवा भेजा। मैं गया तो देखा वे शय्या पर पड़े थे। बहुत ही दुर्बल हो गये थे। ऐसा लग रहा था मानों उनका अन्तिम समय आ गया था। मैंने साश्चर्य पूछा—

'क्या बात है रामेश्वर लाल जी? आप कब से बीमार हैं?' उनके जवाब देने से पहिले जवाब दिया उनके नौकर सनातन ने—'वकील साहब, खाना-पीना बिलकुल छोड़ कर इस उम्र में कोई जी सकता है? ये तो आत्म हत्या के बराबर है? आप ही समझाइये। अपने लिये न सही तो बच्चों के लिये तो कुछ दिन और जिन्दा रहें। एक पैसा भी उन्हें दे नहीं जाइयेगा तो कम से कम उन्हें कमाने के

लायक तो कर जाइये।' अन्तिम बातें उसने अपने मालिक से कहीं। आँखों से आंसुओं को उसने मुश्किल से रोका। इसका असर वृद्ध पर नहीं हुआ, उसका चेहरा निर्विकार रहा। फिर वे शान्त स्वर में बोले—'वकील साहब सनातन मूर्ख संसारी है! संसार के मायाजाल को काटना उसके साध्य की बात नहीं। मैंने आत्मा को अनुशोचना द्वारा शुद्ध किया था, शरीर को इस उपवास व्रत से पूत कर रहा हूँ। आपको कष्ट इसलिये दिया है कि मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मोक्ष प्राप्ति के दिन करीब हैं, मेरा पापार्जित धन का कलङ्क अभी मुझसे दूर नहीं हुआ। इसलिये बड़ी चिन्ता बनी रहती है कि कहीं मैं मर जाऊँ और मेरे लोभी सन्तान धन ऐश्वर्य की मोह में उपभोग न करना शुरू करें—तब तो मेरी कुल साधना व्यर्थ हो जायगी। आज आप मेरा नया वसीयतनामा तैयार कर दें।'

'अच्छा, आप मुझे अपनी इच्छा बता दें, मैं वसीयतनामे का मशविदा आपको शीघ्र ही भेज दूँगा।' मैंने कहा।

मगर वृद्ध आसानी से भूलने वाला न था, बोला—'मैंने एक मसविदा बनाया है, आप देख लें। रद्दोबदल करना हो तो कर दें। उसके बाद मैं उसी को वाटर मार्क पर नकल करके दस्तखत बना दूंगा। आप और सनातन मेरे साक्षी रहेंगे।' कह कर उसने जो मशविदा पेन्सिल से लिखा हुआ मुझे पढ़ने को दिया, उसका आशय था कि वह अपनी राजी-खुशी से अपनी कुल जायदाद, स्थावर तथा अस्थावर (मनकुला और गैर मनकुला) साधू हरद्वार बाबा को दे रहा है और साधू जी उसको जिस प्रकार चाहें व्यग्र कर सकते हैं। चूँकि सारी कमाई वृद्ध की थी, मैं समझ गया कि मैं बच्चों के लिये कुछ नहीं कर सकता।

मैंने मशविदा देख लिया तो वृद्ध ने सनातन को हुक्म दिया कि टेबुल के दराज में से कागज व कलम दे। सनातन ने दाहिने वाला दराज खोल कर कागज निकाला। फिर बायीं ओर वाले दराज को खोला। रामेश्वर लाल अपने उत्कट भजन तथा व्रत से कमजोर एवम् चिड़चिड़े मिजाज के हो उठे थे। बात ही बातों में चिढ़ उठते थे। सनातन को बांयें दराज में कलम खोजते देख कर घुड़के—'सनातन, जिन्दगी भर हमारे यहाँ रह कर भी तुम गधा रह गये। तुम्हें मालूम नहीं कि दाहिने वाले दराज में मैं कलम रखता हूँ।'

तब तक तो सनातन ने बांयें दराज से कलम निकाल कर उनको दे दिया था। वे मन ही मन गरज रहे थे। फाउन्टेन पेन दाहिने दराज में रखने के लिये हजार बार कह चुका हूँ मगर फिर भी बांयें दराज में रक्खा। ऐसा नौकर रहना न रहने के बराबर है। उसके बाद कागज पर उन्होंने वसीयतनामा के मशविदा को उतारा और दस्तखत किया। तब मैंने दस्तखत किया। फिर सनातन ने जाकर टेबुल पर कागज रख कर दस्तखत किया और मोड़ कर मुझे दिया। मैंने जेब से एक लिफाफा (जिस पर मेरे फर्म का नाम था) निकाल कर उस वसीयतनामा को रख कर जेब में रख लिया। सनातन दस्तखत करने के बाद पल भर भी वहाँ नहीं ठहरा।

मैं सनातन के दिल को समझ रहा था। जिन को उसने पाल-पोष कर इतना बड़ा किया था उसके लिये इस प्रकार निष्ठुर वसीयतनामा और फिर उसी को गवाह बनना पड़ा—इससे अधिक नृशंस और क्या हो सकता था। मैं लौट कर घर को जाने ही वाला था और सीढ़ी से जैसे ही नीचे उतरा कि सावित्री ने मुझे पकड़ा। 'चाचा जी, आप मेरी बनाई हुई मिठाइयों को बगैर खाये नहीं जा सकते। बाबू जी ने तो व्रत रखा है।'

उसके इस स्नेहमय अनुरोध को मैं टाल नहीं सका और उसके साथ-साथ कमरे के अन्दर घुसा। उस कमरे में बड़ी गर्मी थी क्योंकि पास वाले कमरे में ही चूल्हा जला कर सावित्री और रामनाथ अपने रन्धन कार्य में व्यस्त थे। मैं कोट उतार कर कमरे में छोड़ कर पास वाले रसोई घर में गया

और वहाँ सावित्री के दिये हुए पकवानों को रामनाथ के साथ बैठ कर खाया। इतनी सीधी, सरल तथा सुन्दर स्वभाव की बच्ची वह थी कि यह सोच कर मुझे कष्ट हो रहा था कि उनके पागल पिता ने क्या गजब किया।

थोड़ी देर बाद जब हम उस कमरे से निकले और पास वाले कमरे में आये तो देखा साधू जी महाराज चौंक कर बाहर को खिसके। यह कहते हुये गये—'सन्तान का यह धर्म नहीं है कि पिता के धर्म-कर्म में बाधा दे और व्रत में विघ्न उत्पन्न करने के लिये पकवानों को बना कर उसकी गन्ध फैलाये।' आज मैंने देखा कि दोनों असहाय बच्चे अपने घर में अपने पिता के रहते हुए भी किस प्रकार लांछना तथा अपमान सह रहे थे। मगर मैं क्या कर सकता था? चुपचाप कोट पहन कर मैं घर लौटा। दफ्तर गया। बन्द लिफाफे को जेब से निकाल कर सील करके अपने लोहे के सन्दूक में रख दिया।

जैसा मैंने सोचा था। इस घटना के महीने भर के अन्दर रामेश्वर लाल एक दिन एकाएक मोक्ष प्राप्त हो गये। अब मैंने जो उस लिफाफे को खोला तो उसके अन्दर से एक कोरा कागज निकला, जिस पर कि एक शब्द भी नहीं लिखा था।

इतना कह कर उदय चुप हुआ। मानसिंह बड़े मनोयोग से सुन रहा था। अब बोला—'तो तभी से तुम्हारा दिमाग जासूसी की ओर गया?'

'हाँ!' बोला उदय—'ऐसी ही दो एक घटनाओं ने मेरे दिमाग को जासूसी की ओर फेरा।' फिर थोड़ी देर चुप रह कर उदय ने कहना शुरू किया—'इसमें कोई सन्देह नहीं था कि यह काम मेरे दफ्तर में नहीं बल्कि रामेश्वर लाल के घर उसी दिन हुआ था। जिस समय रामेश्वर लाल ने उस वसीयतनामे पर दस्तखत किया था और उसके बाद जब तक मैं उस घर में था उसी बीच में यह काम किसी ने किया था। इसमें मुझे कोई सन्देह न था। जो लोग ऐसा कर सकते वे थे—(१) सनातन, (२) स्वामी जी महाराज, (३) रामनाथ, (४) सावित्री। पांचवें किसी ने उस लिफाफे को छुआ भी न था। अब इनमें से सनातन को बरी करना पड़ा क्योंकि उसने मेरे सामने दस्तखत किया था। उसके लिये दस्तखत करते समय मेरे व रामेश्वर की निगाह बचा कर कागज बदलना कठिन नहीं बल्कि पूर्णतया असम्भव था।

स्वामी जी महाराज यह काम कर सकते थे। परन्तु सवाल यह पेश होता है कि उन्हें ऐसा करने से कोई लाभ तो दरकिनार बल्कि क्षति थी।

वे भी बरी हुए। बाकी रह गये रामनाथ और सावित्री! मगर इन दोनों को लिफाफा छूने का मौका भी तो नहीं मिला था।

'मानसिंह तुम्हारा दिमाग काम करता है कुछ?' उदय ने पूछा।

मानसिंह ने सर हिलाया, 'नहीं।'

उदय थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला—'कभी-कभी मुझे दैवी सहायता मिल जाती है। इसमें भी ऐसा ही हुआ।'

इस घटना के तीसरे दिन होली थी और मेरे सबसे छोटे बच्चे ने मेरे कचेहरी जाते समय मुझ पर नीला रङ्ग डाल दिया। सारा कपड़ा खराब हो गया। होली के तीन दिन पहिले बाहर रङ्ग तो चलता है मगर अपने ही बैठके में मेरी यह दुर्दशा होगी यह मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। इसलिये उसकी मां से शिकायत करने चला। मगर जब उसकी मां के पास पहुँचा तो वसीयतनामे का भेद हल हो गया। बच्चे ने जो रङ्ग मुझ पर डाला था वह अदृश्य हो गया था। अब मैं समझ गया कि सनातन ने उन दोनों बच्चों को पाला-पोषा था और साधू जी की चक्रान्त को समझ कर फाउन्टेन पेन में अदृश्य होने वाली स्याही भर रक्खा था। लिहाजा थोड़ी देर बाद आप से आप वसीयतनामा सादा कागज बन गया था और किसी ने लिफाफे को बदला नहीं था।

फलित ज्योतिष सम्बन्धी लेख

प्रथम रजोदर्शन

लेखिका, श्रीमती शकुन्तला देवी पारिक, बीकानेर

इस लेख में प्रकट की गई भविष्य वाणियों से हम सहमत नहीं हैं तथापि प्राचीन ज्योतिष शास्त्र में इनका उल्लेख होने के कारण पाठिकाओं की जानकारी और मनोरंजन के लिये हम यह लेख प्रकाशित कर रहे हैं—'सं०'

प्राचीन धर्म और ज्योतिष शास्त्रानुसार कन्या की आठवें वर्ष में 'गौरी', नवें वर्ष में 'रोहणी', एवम् दसवें वर्ष में 'कन्या' संज्ञा होती है। दस वर्ष से अधिक आयु की कन्या की 'रजस्वला' संज्ञा होती है। दसवें वर्ष उपरान्त कन्या की धीरे-धीरे युवावस्था प्रारम्भ होती है। उसका (कन्या का) रजस्वला होना अर्थात् मासिक धर्म का प्रारम्भ होना युवावस्था का प्रथम लक्षण होता है।

मासिक धर्म का प्रारम्भ होना कन्या के बाल्यकाल की समाप्ति और यौवन के प्रारम्भ की सूचना होती है। कन्या के लिये अब युवती शब्द अधिक उपयुक्त हो जाता है।

सर्व प्रथम मासिक धर्म के प्रारम्भ होने का समय, काल, दिन-मास-नक्षत्र-तिथि आदि से प्राचीन फलित ज्योतिष शास्त्रों में युवती के भविष्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण फल लिखे है, जिनका नीचे सूक्ष्म में विवेचन किया गया है:—

(१) मास फल—चैत्र में वैधव्य कारक, वैशाख में सचरित्रता सूचक, ज्येष्ठ में सुख दायक, आषाढ़ में दुराचारिणी, श्रावण में पुत्र दायक, भाद्रपद में धन बृद्धि कारक, आश्विन में वैधव्य सूचक, कार्तिक में पर पुरुष गामिनी, मार्गशीर्ष में चरित्र हीना, पौष में सचरित्र वाली, माघ में सम्पत्ति एवम् धन नाश कारक, फाल्गुन में बहु संतति दायक।

(२) वार फल—रविवार को बाँझ, सोमवार को सचरित्र, मंगलवार को पति नाश कारक, बुधवार को पुत्र दायक, गुरुवार को शील स्वभाव सूचक शुक्रवार को बहु संतति दायक, शनिवार को दरिद्रता सूचक।

(३) तिथि फल—प्रतिपदा (एकम) को वैधव्य कारक, द्वितीया और तृतीया को सुख समृद्धि दायक, चतुर्थी को व्यभिचारिणी, पंचमी को पुत्रदायक, षष्ठी को पुत्र नाश कारक, सप्तमी को परम सुखी जीवन, अष्टमी को रोगिणी, दशमी को सुखी, एकादशी को पति-प्रिया, द्वादशी को वैधव्य सूचक, त्रयोदशी को सुखी जीवन, चतुर्दशी को व्यभिचारिणी, पूर्णिमा को पुत्र दायक।

चन्द्रोदय के दिन प्रथम मासिक धर्म का प्रारम्भ होना कुटुम्ब नाश का सूचक होता है।

(४) नक्षत्र फल—अश्विनी में वैधव्यता कारक, भरणी में पुत्र दायक, कृतिका में संतति नाश कारक रोहणी में सुख वृद्धि कारक, मृगशिरा में सुविधा प्रदान कारक, आद्रा में रोगिणी, पुनर्वसु में सुखी जीवन, पुष्य में राजसी सुखदायक, अश्लेषा में पुत्र मृत्यु दायक, मघा में पुत्र को सुखदायक, पूर्वा फाल्गुनी में भाग्य बृद्धि कारक, उत्तरा फाल्गुनी में आनन्द बृद्धि कारक, हस्त में श्रेष्ठ सुख दायक, चित्रा में साधारण सुख दायक, स्वाति में श्रेष्ठ कुटुम्ब बृद्धि कारक, विशाखा में वैधव्य कारक, अनुराधा में सुख समृद्धि दायक, उत्तराषाढ़ा में सुखी जीवन, श्रवण में उत्तम चरित्र द्योतक, धनिष्ठा में विविध सुखदायक शतभिषा में दरिद्रता सूचक, पूर्वा भाद्रपद में साहसी पुत्र दायय, उत्तरा भाद्रपद में ऐश्वर्य पूर्ण सुखी जीवन दायक, रेवती में सत्य-परायण एवम् पतिव्रता पत्नी सूचक।

(५) समय फल—मध्याह्न से पहले का और रात्री के प्रारम्भ का समय श्रेष्ठ है। मध्याह्न का और मध्य रात्री का समय साधारण शुभ है। मध्य रात्री से प्रातःकाल तक का समय, सायंकाल आदि शेष समय अशुभ है।

(६) प्रथम वार मासिक धर्म के समय रज की एक या दो बूँद होवे तो श्रेष्ठ एवम् शुभ है, दो से अधिक बूँदें अशुभ फल सूचक है।

स्त्रियों को प्रत्येक रजो दर्शन के उपरान्त स्नान आदि करके, पवित्र होकर सर्व प्रथम अपने पति के मुख का दर्शन करना चाहिए, किसी अन्य पुरुष या स्त्री के दर्शन करना निषेध है।

हास्य-विनोद

मद्य-निषेध की सभा हो रही थी। एक बहुत बड़े उपदेशक दूर से आये थे और सैकड़ों आदमी आदमी उनकी वक्तृता सुनने टाउनहाल में इकट्ठे हुए थे।

दो आदमियों को परस्पर एक दूसरे को सम्हाले डगमगाते पैरों हाल के अन्दर आते देख मैनेजर घबड़ाये हुए उनके पास पहुँचे। देखा तो वे दोनों उनके दोस्त ही थे। उन्होंने रास्ता रोक कर कहा—'अरे-अरे, यहाँ कैसे चले आ रहे हो! यह तो मद्य-निषेध की सभा है और तुम दोनों इतना छान कर आये हो कि पैर ठीक से नहीं पड़ते।'

उन दोनों ने जवाब दिया—'अजी हम दोनों की हालत क्या देखते हो! तुम्हारे उपदेशक भी तो हमारे ही साथ थे। वह भी पीछे-पीछे आ रहे हैं, जरा उनकी हालत देखना तब कहना!'

× × ×

एक युवती बड़ी शर्माती शर्माती एक डाक्टर-खाने में घुसी और कम्पाउण्डर से बोली—'आपके डाक्टर साहब कहाँ हैं?'

कोई नया मरीज समझ कर कम्पाउन्डर ने पास के कमरे की तरफ इशारा किया। युवती उस कमरे में आई और डाक्टर साहब से बोली—'डाक्टर साहब, आपकी बड़ी कृपा होगी यदि आप यह चिट्ठी पढ़ दें। यह मेरे पति ने मेरे पास भेजी है और वे भी एक डाक्टर हैं।'

नई किताबें

पुष्पलता—लेखक-श्री सुदर्शन, प्रकाशक–वोरा एण्ड कम्पनी पबलिशर्स लिमिटेड ३ राउंड बिल्डिङ्ग कालबा देवी रोड, बम्बई–२, पृष्ठ संख्या १७४, मूल्य २॥) आकार–डबल क्राउन सोलह पेजी।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री सुदर्शन की ग्यारह कहानियाँ संग्रहीत हैं, ये कहानियाँ सुदर्शन जी ने अठ्ठारह-उन्नीस वर्ष की अवस्था में लिखी थीं। ये वे कहानियाँ हैं जिन्होंने सुदर्शन जी के अन्तर में हलचल मचा दिया था और उनका कहानी लिखने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इन कहानियों के साथ ही उन की कहानी-कला समय के साथ विकसित होती गयी।

यद्यपि आज का समाज भूतकाल के समाज से आगे है पर इस पुस्तक की दो-चार कहानियाँ ऐसी हैं जो आधुनिक सभ्य समाज पर भी एक चुटीली चुनौती हैं। जैसे 'पतितोद्धार', भलाई का बदला, 'पाप का पैसा'।

यों तो इस पुस्तक की सभी कहानियाँ रोचक हैं परन्तु 'बैजू बावरा' और राजपूतनी का प्रायश्चित उत्तम कहानियाँ हैं जो मनुष्य के अन्तस्तल को झकझोर देती हैं और 'अब क्या होगा?' की उत्सुकता को जन्म देती हैं, 'राजपूतनी का प्रायश्चित' में एक स्त्री के मनोभावों को जिस खूबी के साथ सुदर्शन जी ने दर्शाया है वह प्रसंशनीय है।

'वीरम देव कलानौर के राजा हैं, अत्यन्त आदर्श पुरुष हैं उनकी स्त्री रूपवती है। वीरमदेव सफलगढ़ पर विजय प्राप्त करके प्रसन्नता पूर्वक अपने राज्य कलानौर को लौटे आ रहे थे। उनके सङ्ग एक वीर पठान जीतसिंह था जो कैदी था और बहुत बहादुरी के साथ वीरमदेव से लड़ा था। वीरमदेव ने उसे बादशाह से मुक्त करवा लिया था। बात ही बात में जीतसिंह को पता चला कि वीरमदेव विवाहित है तो उसे बड़ा क्रोध आया और उसने वीरम देव को बताया कि 'पहले मैं समझती थी कि मैं तुम से हार गई परन्तु अब मेरा सिर ऊँचा है। मैं तुम से कमजोर हूँ, तुम मुझसे नीच हो। युद्ध में हारना लज्जा की बात है, प्यार में धोखा देना डूब मरने की बात है।' उसने बताया कि वह उसकी बचपन की साथिनी सुलक्षणा है जिन दोनों ने छुटपन में प्रतिज्ञा की थी कि वह जनम-मरण के साथी बनेंगे।

वीरमदेव के राज्य का कलानौर के सैनिकों ने घेर लिया और वीरमदेव बन्दी बना कर अलाउद्दीन के कारागार में लाये गये। सुलक्षणा की आज्ञानुसार उनका सर कल प्रातः ही धड़ से अलग किया जायगा। वह सुलक्षणा का प्रेमी है। सुलक्षणा थी तो नारी जिसने आजन्म स्नेह और दया से भरा हृदय पाया है। सुलक्षणा रात में वीरमदेव के पास जाती है और उसे कारागार से मुक्त कर स्वयम् वहां बैठ जाती है। प्रातः जब सर बादशाह के पास लाया गया तो वह सुलक्षणा का सर था।

भाषा सरल और सुन्दर है। पुस्तक रोचक है मनोरञ्जक और साथ-साथ शिक्षाप्रद भी है।

अब्राहम लिंकन—लेखक-एमील लड्वीग, अनुवादक–वीरेन्द्र कुमार जैन, प्रकाशक–उपरोक्त, पृष्ठ संख्या–१७६, मूल्य २) आकार–डबल क्राऊन सोलह पेजी।

लिंकन अमेरिका के निर्माताओं में एक है। एक कृषक के घर में जन्म लेकर लिंकन किस प्रकार राष्ट्रपति के पद पर पहुँचा इसकी एक सुन्दर कहानी है। किस प्रकार उतरते-चढ़ते, गिरते-पड़ते उसकी जिन्दगी इतने उच्च स्तर पर पहुँची, इसकी इस पुस्तक में एक अच्छी झलक है।

उपन्यास के ढङ्ग पर लिखी गई यह पुस्तक अत्यन्त रोचक है। इसको पढ़ते-पढ़ते पाठक अपनी भावनाओं को पाते हैं। कहीं उन्हें लिंकन से

सहानुभूति आती है और कहीं पर राष्ट्रपति लिंकन पर हमें गर्व का अनुभव होता है।

लिंकन एक ऐसे व्यक्ति थे जो अनुवादक के शब्दों में 'अपनी वेदना में सबकी वेदना अनुभव करते थे।' विषम परिस्थित में लिंकन ने किस बुद्धिमानी से काम लिया यह प्रशंसनीय बात है। 'आफुट के माल से लदी नाव को दक्षिण की ओर प्रस्थान करने में कुछ सप्ताह लग जाते हैं। और यात्रा आरम्भ होते ही वह नष्ट होते-होते बच जाती है। सङ्गमान नदी के उस बड़े घुमाव पर से मोड़ लेते हुए नाव एक पनचक्की के बांध से जा टकराती है वह उलटते-उलटते आधी खड़ी-सी होकर बाँध पर टंग जाती है।

लिंकन उस कठिनाई से रास्ता निकाल लेता है वह दूसरी नाव मँगाने का बन्दोबस्त कर उसे अपनी नाव की बगल में लगवा देता है और अपनी नाव पर से बक्स और थैले उतार कर उस नाव पर रख देता है; आदि अनेक ऐसी साहसिक घटनाएँ हैं जो मनुष्य को परिस्थिति से हारना नहीं, बल्कि उस पर विजय के लिये अनवरत परीक्रम का पाठ देती हैं।

पाठक को नहीं लगता कि वह कोई जीवन-चरित्र पढ़ रहा है बल्कि ऐसा लगता है कि वह एक उपन्यास पढ़ रहा है जिसका नायक है, एब्राहम लिंकन जो एक साहसी, पराक्रमी उदार आदर्श आदि गुणों से ओत-प्रोत है। जिसके जीवन में दुख सुख दोनों हैं।

मेरी जीवन कहानी—लेखिका—डा० हेलन केलर, प्रकाशक—उपरोक्त, पृष्ठ संख्या १२०, मूल्य २) आकार—डबल क्राउन सोलह पेजी।

डा० हेलन केलर उन महिलाओं में हैं जो जन्मते ही नेत्र विहीन और बधिर हैं। किस लगन और साहस के साथ आपने विद्यापार्जन किया और डा० के पद से सुशोभित हुईं इस पुस्तक में इसका चित्रण है। इस पुस्तक में आपने अपने जीवन की गाथा लिखी है।

कहीं-कहीं बचपन के रोचक संस्मरण है जो मुख पर मुस्कान ला देते हैं जैसे आपने चाभियों का उपयोग सीखा तो उससे क्या किया?

'एक दिन मैंने मां को भंडार में बन्द कर दिया जहां उन्हें ३ घंटे बन्द रहना पड़ा। मां भीतर से किवाड़ पीटती रही और मैं बाहर पोर्च की सीढ़ियों पर बैठ कर किवाड़ हिलने के धक्के का अनुभव करती हँसती रही।'

अखण्ड विश्व—लेखक, श्री आदर्श प्रकाशन, आदर्श प्रकाशन मन्दिर दारागंज प्रयाग। पृष्ठ संख्या लगभग ६३। मूल्य १।) छपाई सफाई बहुत ही उत्तम।

श्री आदर्श जी हिन्दी के विख्यात कवि हैं। विश्व के मानवों को भारतीय कवि के रूप में शान्ति का सुन्दर सन्देश देने में जहाँ श्री मैथिलीशरण गुप्त आदि असफल हुए हैं, वहाँ आदर्श जी ने पूर्ण सफलता प्राप्त की है। श्री मावलंकर, सुनीतिकुमार चटर्जी, मोरार जी देसाई, रंगनाथ दिवाकर, श्री अनुग्रहनारायणसिंह आदि नेताओं ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। पुस्तक टैगोर की गीतांजली के समान बार-बार पठनीय है।

संध्या—लेखक, श्री चन्द्रानन्द जी वानप्रस्थी, प्रकाशक, शारदा सत्कार समिति, शारदा भवन अजमेर। पृष्ठ संख्या १३२, मू० १)

सुविख्यात लेखक और कार्यकर्ता श्री चाँद करण शारदा ने यह नवीन नाम धारण किया है। इस पुस्तक में आर्यों की दैनिक उपासना को सन्ध्या की विधि तथा उसके मन्त्रों को समझाते हुए बड़े सुन्दर ढङ्ग से प्रस्तुत किया है।

—सुशीला कुमारी चौहान

कुमारी सुचरिता भरतनाटयम की एक मुद्रा में

कुमारी सुचरिता की नृत्यकला

लेखक, श्री जयभाई

मद्रास के डा० रत्नविलू सुब्रह्मण्यम् की १२ वर्षीया सुपुत्री सुचरिता की नृत्य-कला सम्बन्धी आभा स्पष्ट ही है। भारत की प्राचीन नृत्य-कला को जिस कुशलता से उसने प्रदर्शित किया है वैसा तो केवल अधिक उम्र के कलाकार ही कर पाते हैं।

जब यह बालिका केवल ५ वर्ष की थी, तभी सुप्रसिद्ध नृत्य-शिक्षक श्री पण्डनल्लूर चोकालिंगम पिल्लई की देख-रेख में उसे नृत्य-कला सम्बन्धी शिक्षा मिली। सात वर्ष की आयु में नृत्य का प्रदर्शन करके उसने उसमें सफलता प्राप्त की। उसके पिता मैडिकल कालेज के अध्यापक और हृदय रोगों के विशेषज्ञ हैं। १९५१ में जब वे पहली बार ब्रिटेन के मेले में भाग लेने के लिये गये, तब कुमारी सुचरिता भी उनके साथ थीं। वहाँ इस बालिका ने बड़े-बड़े कलाकारों के साथ अपनी कला का प्रदर्शन किया।

नृत्य से अंग लचकीले और दिमाग तेज होता है। सुचरिता इसका प्रमाण है।

लेकिन उसे और शानदार सफलताएँ भी मिलनी थी। ३० अक्तूबर १९५४ को न्यूयार्क शहर के 'कार्नेगी हाल' में उसने नृत्य दिखाया।

उक्त अवसर उसे तब मिला, जब उसके पिता को वाशिंगटन में 'इण्टरनेशनल कांग्रेस आव कार्डियालौजी' में भाग लेने के लिये जाना पड़ा। उस समय भी वह उनके साथ अमेरिका गयी।

अमेरिका में तीन मास के अपने प्रवास में डा० सुब्रह्मण्यम् जिन शहरों में गये, वहाँ सर्वत्र ही जनता ने कुमारी सुचरिता से नृत्य दिखाने की जोरदार प्रार्थना की। वाशिंगटन के भारतीय दूतावास में जब कुमारी सुचरिता ने पहली बार नृत्य दिखाया, तब दर्शक उसे देख कर मुग्ध हो गये और उसकी दूर-दूर तक ख्याति फैल गयी। बाद में उसने बाल्टिमोर के तीन स्कूलों में नृत्य दिखाये।

'कार्नेगी हाल' में दोपहर के कार्यक्रम में 'दक्षिण पूर्वी एशिया के नृत्यों' की घोषणा की गयी थी। इस में भारत की ओर से कुमारी सुचरिता को नृत्य में भाग लेना था। नृत्य के उक्त कार्यक्रम का आयोजन प्रधान मन्त्री के बाढ़-सहायता कोष के लिये दक्षिण पूर्वी एशिया सम्बन्धी सहायता समिति ने किया था। कुमारी सुचरिता के भरत नाट्यम नृत्य की यहाँ दर्शकों ने बड़ी प्रशंसा की।

उसके नृत्य के कार्यक्रमों की माँग बढ़ने लगी। यह माँग इतनी अधिक थी कि उसके पिता के कार्यक्रम के साथ इसका निभना कठिन था। चूँकि उस के नृत्य सम्बन्धी संगीत का रेकार्ड मद्रास में ही टेप रिकार्डिङ्ग मशीन द्वारा भर लिया गया था, इस लिये बहुत-से नृत्यों का तेजी से आयोजन किया जा सका। बोस्टन, क्लीवलैण्ड, शिकागो, रोचैस्टर तथा प्रशान्त सागर में होनोलूलू में नृत्य दिखा कर उसने अमेरिकी लोगों के हृदयों को मुग्ध कर लिया। अमेरिका में नृत्य से होने वाली कुल आय उसने मद्रास के हृदय रोग सम्बन्धी कोष को भेंट कर दी।

अब वह अमेरिका से लौट कर अपनी स्कूल की सहेलियों में पहुँच गयी है। जितनी सफलता उसे नृत्य में मिली है, उतनी ही सफलता उसने स्कूल की शिक्षा में भी प्राप्त की है। उसकी स्कूल-अध्यापिका का कथन है कि 'पढ़ाई और खेलों में वह एक जैसी होशियार है।'

उसकी इस सब कुशलता का श्रेय सप्ताह में छः दिन तक शाम के समय एक घण्टे तक भरतनाटयम् के अभ्यास को है। नृत्य से अंग लचकीले हो जाते हैं और नृत्य की कठिन मुद्राओं को याद रखने के कारण दिमाग तेज और सचेत हो जाता है।

——

गीत

दीप की लौ रात भर जागी,
मगर तुम नहीं आये।
रात भर तारे जले,
उर जला, आँखें जलीं,
चाह डूबी सिसकियों में,
प्यार की पाँखें जलीं,
प्राण में जागी अमर आगी,
मगर तुम नहीं आये।
दीप की लौ रात भर जागी,
मगर तुम नहीं आये ॥१॥
वेणु टूटी, आस छूटी,
गीत मेरे मर चुके,
नयन के मोती धरा पर,
मीत अनगिन झर चुके,
पीर खेली रात भर फागी,
मगर तुम नहीं आये।
दीप की लौ रात भर जागी,
मगर तुम नहीं आये ॥२॥

—कृष्णा कुमारी 'मधुरिम

पाठिकाओं की टिप्पणियाँ

श्री राधारानी

कुछ महीनों से 'दीदी' में एक विद्वान् महाशय द्वारा लिखित 'श्री राधारानी' नामक धारावाहिक उपन्यास प्रकाशित हो रहा है।

राधा जी कृष्ण की प्रेयसी के रूप में ही जानी जाती हैं। कदाचित् इस उपन्यास द्वारा विद्वान् लेखक ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि राधा का प्रेम वासना-जन्य नहीं है एवम् वे सती हैं एवम् पतिव्रता हैं। मैं अपने को इस योग्य नहीं समझती कि एक विद्वान् पुरुष से तर्क करूँ परन्तु मैं विनम्रता से उन्हें यह पूछना चाहती हूँ कि उन्होंने अपने उपन्यास में राधा को सती प्रमाणित करने के हेतु नाटकीयता का अवलम्ब क्यों किया? वास्तव में उपन्यास इस परिच्छेद में अपना स्तर उच्च नहीं रख पाता। यह अनुभव होता है कि गोपा का गर्व नष्ट करने अथवा उसे अपमानित करने के हेतु ही कतिपय व्यक्तियों द्वारा षड्यन्त्र रचा गया। रायण का योग के द्वारा व्रज की उष्णता खींच लेने पर ही राधा का सहस्र छिद्रों वाले घड़े में यमुना जल लाना सम्भव हुआ। यह उचित है कि रायण राधा को सती समझते थे। पर जनमत को इसका विश्वास कराने के लिये छल का ही आश्रय लिया गया।

मुझे पूर्ण आशा है कि लेखक महोदय मुझे समुचित उत्तर देकर मेरे भ्रम को मिटाने में सहायक होंगे। —क्रान्ति

[उत्तर—जैसा कि मैं प्रारम्भ में ही निवेदन कर चुका हूँ मैं यह उपन्यास 'राधा' के सम्बन्ध में प्राप्त पौराणिक सामग्री के आधार पर ही लिख रहा हूँ। यह कथा पुराणों में वर्णित है। 'कल्याण के नारी अङ्क में भी राधा के पातिव्रत धर्म की परीक्षा की यही कथा है। —लेखक]

स्त्री-शिक्षा

विदेशी भाषा में बी० ए०, एम० ए० हो जाना कोई खास शिक्षा नहीं है। पराई भाषा सीख कर ही कोई स्त्री विदुषी नहीं हो सकती।

अतएव सद्गृहिणी होकर ही स्त्रियाँ विदुषी बनें ऐसी ही पढ़ाई की आवश्यकता है। स्त्री को घर की स्वतन्त्रता में जो आनन्द है, वह दफ्तर की क्लर्की में कहाँ? जिस शिक्षा से स्त्री के पवित्र मातृत्व के आधार स्वरूप सतीत्व पर कुठाराघात होता हो, वह तो शिक्षा नहीं कुशिक्षा है।

आज एक ओर सहस्रों ग्रैजुएट युवक जेबों में हाथ डाले घूम रहे हैं और दूसरी ओर सैकड़ों बी० ए०, एम० ए० की उपाधि से विभूषित युवतियाँ तितलियों की भांति एक पुष्प से दूसरे पुष्प पर मँडराती फिरती हैं। उनका तो चौके, चूल्हे के नाम से ही रंग काला हो जाता है। आय हो या न हो परन्तु फैशन में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आना चाहिए।

स्त्री शिक्षा-संस्थाओं तथा सञ्चालकों का कर्तव्य है कि वे शिक्षा-प्रणाली पर गम्भीरता से विचार करें। अन्य पाठ्य विषयों के साथ स्त्रियों के योग्य विषयों का जो उनके प्रति दिन के जीवन में उपयोगी हों उनका भी समावेश अवश्य करें। पाश्चात्य भाषा से रुचि हटाकर भारतीय भाषा से प्रेम बढ़ायें।

स्त्रियों के लिये गृह-विज्ञान की शिक्षा आवश्यक है। घर के प्रत्येक काम की जानकारी और काम करने की आदत उनके लिये आवश्यक है।

—बृजकुमारी मलहौतरा

ग्राहकों से निवेदन

ग्राहकों से निवेदन है कि कार्यालय से पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखा करें। जो ग्राहक नम्बर नहीं लिखेंगे उनके पत्रों पर कार्यवाही में विलम्ब होना अनिवार्य है।

—सञ्चालिका 'दीदी'

रसोई

मूली के पराठे

सामग्री—चार-पाँच मोटे जड़ की मुलायम मूलियां। गरम मसाला, हरी मिर्च, हरा धनिया, नमक (अन्दाज से), बेसन आध पाव। घी रुचि अनुसार।

विधि—मूलियों को कद्दू कश में कस कर उस का पानी निचोड़ लीजिये। एक बर्तन में घी गरम करके उसमें बेसन को इतना भूनिये कि उसका रंग गुलाबी हो जाय। इसके बाद कसी हुई मूलियों और पिसे हुए मसालों को उसमें छोड़ दीजिये। जब ये सब अच्छी तरह भुन जायें तब उतार लीजिये। मिर्च व हरा धनिया कतर कर मिला दीजिये।

आटे को घी और अन्दाज से नमक डाल कर गूँध लीजिये। लोइयों में ऊपर तैयार की हुई भुनी पीठी भर कर पराठे बेल लीजिये और तवे पर सेंक डालिये। ये पराठे खाने में भी बहुत स्वादिष्ट होते हैं और जल्दी हजम होते हैं।

भरवाँ टमाटर

सामग्री—अच्छे पके हुए लाल टमाटर, आलू, प्याज, हरी धनिया, हरा मिर्चा, बुका हुआ धनिया जीरा, गर्म मसाला, नमक।

विधि—पहले टमाटरों में एक छेद कर दीजिये, जिसमें उसका रस व बीजे निकल जायें। अब आलुओं को उबालिये। उबल जाने पर छील कर छोटे-छोटे टुकड़े कर लीजिये। कढ़ाई में घी छोड़कर प्याज को जीरे से बघार दीजिये। जब प्याज लाल हो जाय तो उसमें कटे हुए आलू व सब मसाला छोड़ कर भूनिये। जब सब चीजें भुन जायँ तो उस में गरम मसाला व हरी धनिया छोड़ कर उतार लें, ठंडा होने पर टमाटर में आलू भर दीजिये। चूल्हे पर तवा चढ़ा दें जब वह गर्म हो जाय तो उस पर टमाटर में नीचे की तरफ थोड़ा-सा घी लगा कर रख दीजिये। जब टमाटर पक जायँ बस उतार लीजिये। बहुत ही स्वादिष्ट लगेंगे।

—शशि तिवारी, शाहपुरा

कुम्हड़े का हलुआ

सामग्री—एक सेर पका कुम्हड़ा, आधा पाव चीनी, घी आधी छटांक, गरी, चिरौंजी, किशमिश।

विधि—कुम्हड़े को छील कर छोटे-छोटे टुकड़े काट लो और पानी से धोकर थोड़े से पानी में डाल कर पतीली में चूल्हे पर चढ़ा दो। जब वह उबल जाये तो उतार लो। फिर उसको खूब मसल कर एक समान कर दें तद् पश्चात् उसे निचोड़ कर उसका पानी फेंक दो। और उस घी को कढ़ाही में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दो। और उसी घी में कुम्हड़े को डाल दो। फिर धीमी आँच में भूनो जब वह भुनते-भुनते लाल हो जाये तो उसमें चीनी डाल कर चलाती जाओ जब चीनी और कुम्हड़ा एक सम हो जाये तो गरी आदि को छोड़ कर थोड़ा-सा चला कर उतार लो। यह बड़ा ही स्वादिष्ट होता है।

कुमारी इन्दुबाला शर्मा

चावल का भोभरा

कड़ाही में १ छटांक घी डाल दीजिये। धीमी आँच रखिये। अब तीन छटांक चावल धोकर भूनो जब बदामी रंग आ जाय उसमें ४ छटांक दूध डाल दो। खूब चावल पकने दो जिसमें दूध सूख जाय। १ छटांक चीनी मिला कर उतार लो। अब कढ़ाही में फिर १ छटांक घी डाल कर दूध में पकाये हुए चावल को डाल कर भून दो जिसमें कि पके हुए चावल अलग-अलग हो जायें। अब प्लेटों में रख कर इलायची की बुकनी छिड़क दो। नाश्ते के काम में लाओ। —कुमारी शकुन्तला, साही

सुखान्त सामाजिक कहानी

नींद की पुड़िया

लेखिका, कुमारी सरोज वार्ष्णेय, बरेली

[१]

सायंकाल की लालिमा आकाश पर छायी हुई थी। सुलेखा अपने कमरे में बैठी हुई टकटकी लगाये बादल के बिखरे हुए टुकड़ों को देख रही थी। उसके मस्तिष्क में एक तूफान हिलोरें ले रहा था। रह-रह कर वह सिहर उठती थी। मौसम बहुत ही सुहावना था परन्तु सुलेखा का मन तो किन्हीं और विचारों में ही खोया हुआ था।

भगवान ने सुलेखा को एक निर्धन के घर में जन्म दिया था। निर्धन होने के नाते सुलेखा का विवाह नहीं हो पा रहा था। कई स्थानों से बात चली परन्तु दहेज के मामले पर आकर बात अटक जाती थी। इन्हीं बातों में सुलेखा खोई हुई थी। एकाएक वह पुकार उठी—'क्या निर्धन होना पाप है। क्या भगवान भी निर्धनों से घृणा करते हैं।'

[२]

बाबू घनश्याम दास इनशोरैन्स कम्पनी में क्लर्क हैं। उन्हें १२५) माहवार मिलते हैं। इन रुपयों ही में उन्हें अपना, अपनी पत्नी रतना तथा दोनों लड़कियों का गुजारा चलाना पड़ता है। सुलेखा के विवाह की चिन्ता उन्हें अन्दर ही अन्दर घुलाये डाल रही है। आज आफिस से आते हुए उनके एक मित्र ने उन्हें एक लड़का दिखाया। बाबू घनश्याम दास लड़के को देख कर फूले न समाये। जल्दी-जल्दी घर पहुँच कर उन्होंने अपनी पत्नी रतना को यह समाचार सुनाया। लड़का बड़ा सुन्दर है। बड़ी-बड़ी आँखें। ऊँची नासिका, पतले अधर रङ्ग गोरा। कद लम्बा है और एम० ए० (फाइनल) में पढ़ता है। यह सब बाबू घनश्याम दास एक ही सांस में कह गये।

यह सब सुन कर रतना के मस्तिष्क में एक काल्पनिक लड़के का चित्र घूम गया जिसका अंग-अंग बाबू घनश्याम दास के विवरण अनुसार था। खुशी के मारे वे फूली न समायीं, परन्तु अकस्मात् दहेज का ख्याल आते ही वे सहम गयीं। उन्होंने पूछा कि लेन-देन के विषय में भी कुछ बात-चीत हुई। बाबू घनश्याम दास बोले—'अरे यही तो मैं भी बता रहा था कि लड़का दहेज प्रथा के बिलकुल विरोध में है और फिर अपनी सुलेखा इतनी सुन्दर है कि लड़का (प्रमोद कुमार) और उसके माता-पिता देखते ही सम्बन्ध कर लेंगे।' रतना बोली—'तो फिर शीघ्र ही उन्हें सूचना दे दीजिये कि वे लड़की देख लें।'

यह सब वार्तालाप सुलेखा ने भी सुनी। उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसका विवाह अब प्रमोद कुमार से अवश्य हो जायगा। उसकी आँखों में प्रमोद कुमार का काल्पनिक चित्र खिंच गया। चित्र देख कर सुलेखा के मुख पर लालिमा दौड़ गई और फिर वह खुद ही शर्मा गयी।

[३]

जिस दिन लड़के वाले सुलेखा को देखने आने वाले थे उस दिन सुलेखा ने अपनी छोटी बहिन सुधा से कहा कि जाकर मेरी सहेली मंजू को तो बुला ला। सुधा बोली—'वही मंजू जो मेरे लिये चाकलेट लाई थी, सुधा ने कहा हाँ-हाँ वही! जा जल्दी से बुला ला।'

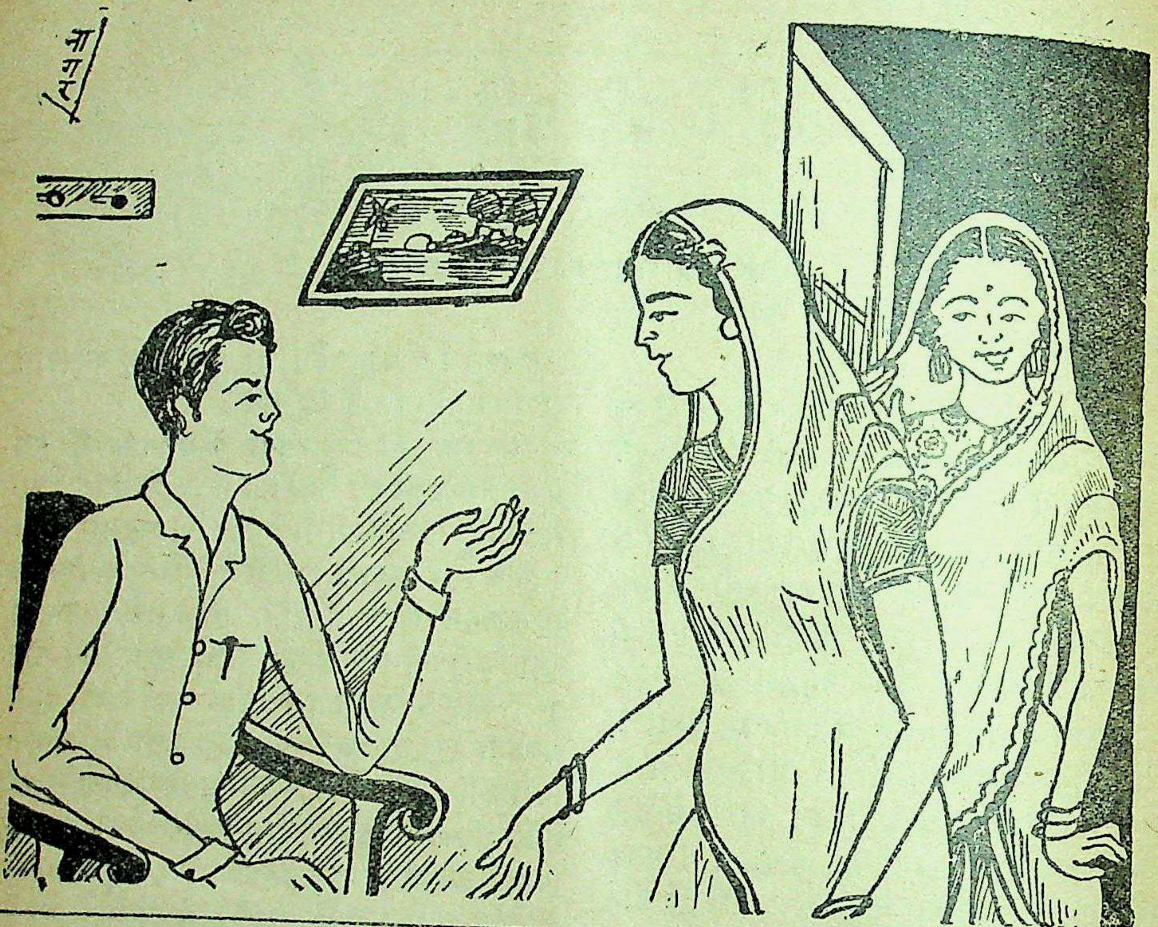

'आप यहां कैसे ?'

मंजू सुधा को देख कर बोली—'आज सुबह-सुबह कैसे आई सुधा।'

सुधा बोली—'देखो दीदी से नहीं कहना। आज मेरी दीदी को लड़के वाले देखने आयेंगे। यह सुन कर मंजू बहुत प्रसन्न हुई। उसने आते ही सुलेखा की चुटकी लेते हुए हँस कर पूछा, आज क्या बात है, बहुत प्रसन्न दिखाई दे रही हो।'

सुलेखा पहले ही समझ गई कि सुधा ने सब बता दिया होगा। वह मुसकरा कर बोली—'बहन जानते हुए भी अन्जान बन रही हो। मैं सब समझती हूँ। दोनों में इसी प्रकार बातें हो रही थीं कि सुधा की माता जी ने आकर कहा कि कुछ इसे खिलाये पिलायेगी भी या केवल बातें ही बातें करेगी।'

[४]

बाबू बिहारी लाल जी ने कहा—'हमें लड़की तो पसन्द है अब दूसरी बात भी हो जाये।'

दूसरी बात, दूसरी कौन-सी बात बाबू घनश्याम दास ने पूछा।

'ही-ही! ही-ही! आप तो ऐसे पूछ रहे हैं कि जैसे आज-कल के रीति-रिवाज जानते ही नहीं।' बाबू बिहारी लाल बोले।

यह सुन कर बाबू घनश्याम दास का दिल बैठ गया। उन्होंने अपने को बहुत सम्भाल कर कहा—'तो क्या आप अपने लड़के का सौदा कर रहे हैं।'

'सभी करते हैं, मैं कोई निराली बात कर नहीं रहा हूँ।' बिहारी लाल जी बोले।

रतना को और शब्द सुनना ही भारी पड़ गये वे वहाँ से उठ कर कमरे में चली गयीं। उनका जी भर आया और वे सोचने लगीं—'हे भगवान अब क्या होगा।' इधर आवेश में भरे, बाबू घनश्याम दास कहे चले जा रहे थे—'चाहे मेरी लड़की आजन्म क्वारी ही रहे परन्तु मैं लड़के बेचने वालों के यहाँ इसका विवाह नहीं करूँगा। क्या लड़के वालों के पास लड़कियाँ नहीं हैं? धन के लोभ में यह लोग अपनी इनसानियत भी खो बैठे हैं। वे कहते जा रहे थे। उन्हें यह भी न मालूम हुआ कब वे लोग उठ कर चले गये।

सुलेखा अपने कमरे में से यह सारी बात-चीत सुन रही थी। उसकी आँखों के आगे घोर अन्धकार छा गया। उस अन्धकार में वह भटक रही थी। उसे कोई रास्ता ऐसा नहीं मिल रहा था जिससे वह अपने माता-पिता के दुःख को कम कर सके, सुलेखा भटकती रही, इस घोर अन्धकार में।

आखिर में उसे रोशनी की एक किरण उस अन्धकार में दिखाई दी। वह बड़बड़ा उठी। बस यही एक रास्ता है जिससे मैं अपना तथा अपने माता-पिता का दुःख दूर सकती हूँ। उसके यह टूटे-फूटे शब्द सुधा ने सुन लिये परन्तु उसकी समझ में नहीं आया।

वह बोली कौन सा रास्ता दीदी तुम क्या कही रही हो। सुलेखा एकदम चौंक सी गई। वह बोल कुछ नहीं कुछ नहीं मैं तो एक कहानी की कुछ भूली हुई लाइनें याद कर रही थी। उसके मस्तिष्क ने फिर पलटा खाया। उसने सुधा को पास बुला कर पूछा, सुधा, मुझसे प्रेम करती है न सुधा सम्मत्ति सूचक सिर हिला दिया।

तो सामने वाले डाक्टर से कहना कि मेरी दीदी को रात में नींद नहीं आती। नींद लाने की दो तीन पुड़िये दे दीजिये। सुधा तुरन्त डाक्टर के पास गई। डाक्टर ने कहा कि नींद की पुड़ियों पर वैसे तो लाइसेन्स है परन्तु, तुम अपनी दीदी के लिये लेती जाओ। पुड़िये लाकर सुधा ने सुलेखा को दे दी। सुलेखा ने सुधा को एक गिलास पानी लाने को कहा। उसके जाते ही सुलेखा ने दरवाजे की चटकनी लगा दी। परन्तु जल्दी में एक दरवाजा जो कि पहले से भिड़ा था उसकी चटकनी लगाना भूल गई वह पुड़िया मुँह में उडेलने ही वाली थी कि किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया।

सुलेखा एकदम घबरा गई। उसने देखा कि प्रमोद कुमार ने उसके हाथ से पुड़िया ले ली। सुलेखा से कुछ कहते न बन पड़ा। उसके मुख से केवल यही निकला, आप, आप यहाँ कैसे।

मेरे रहते तुम आत्म हत्या नहीं कर सकतीं सुलेखा। मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं तुमसे विवाह करूँगा। अब मैं दहेज प्रथा के विरोध को साक्षात रूप दे दूँगा। यह मेरी बड़ी जीत होगी।

सुलेखा ने शर्मा कर पूछा परन्तु आप यहाँ आये कैसे। उसने कहा, जब सुधा डाक्टर की दुकान पर दवा लेने गई मैं वहीं पर था। नींद की पुड़िया ज्यादा खुराक में जहर हो जाती है। मुझे शक हुआ कि कहीं तुम आत्म हत्या न कर बैठो और मैं यहाँ चला आया।

सुधा जब पानी लेकर वापस आई तो दरवाजा बन्द पाया उसने आवाज दी दीदी परन्तु कोई उत्तर न पाकर वह घबरा गई और उसने अपनी माँ से जाकर सब सचसच बता दिया। नींद की पुड़िया का नाम सुन कर वह भी घबरा गई और सुधा के साथ आकर दरवाजा खुलवाया। प्रमोद कुमार को कमरे में देख कर वह सिटपिटा गई उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था परन्तु प्रमोद कुमार ने जल्दी ही उनकी शंका का समाधान करते हुये सारा वृतांत कह सुनाया यह सब सुन कर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई।

+ + +

दूसरे दिन बिहारी लाल जी ने समाचार पत्र मे बड़े बड़े अक्षरों में छपा देखा। श्री बिहारी लाल जी के सुपुत्र प्रमोद कूमार का शुभ विवाह कल रात श्री घनश्याम दास की सुलेखा रानी से हो गया।

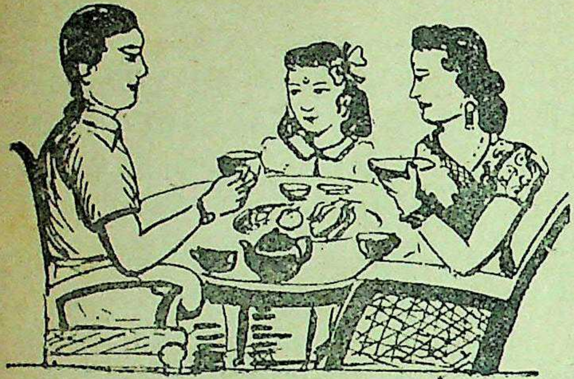

'दीदी' का ध्येय प्रत्येक मामले में पाठिकाओं को व्यक्तिगत सलाह देना भी है। इसलिये पाठिकाओं से निवेदन है कि यदि आपके सामने कोई ऐसी समस्या हो तो उत्तर के लिये =) के स्टाम्प से युक्त अपने पते का लिफाफा भेजें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार गुप्त रखे जाते हैं। श्यामाबाई मार्फत 'दीदी' कार्यालय,
इलाहाबाद—२

आपको कुछ पूछना है ?

ब्रोंकाइटिस

प्रश्न—मेरे बच्चे की अक्सर जुकाम से नाक बझ जाती है और सांस तेज चलने लगती है। लोग इसे ब्रोंकाइटिस कहते हैं। क्या करूँ ?

उत्तर—बच्चे की छाती में सरदी न लगने पावे नहलावें तो तुरन्त बदन पोंछ कर सूखे कपड़े पहनावें। यह ध्यान रखें कि लार या पानी से उसके वस्त्र छाती पर भीगने न पावें। उसे यह रोग न होगा। पर हो ही जाय तो उसकी छाती पर गरम-गरम कडुवा तैल मलें या डाक्टर की सलाह लें।

रसोंई का ज्ञान

प्रश्न—मेरे नैहर में रसोयादार है। मैंने अपने हाथ से खाना कभी नहीं बनाया और मेरी शादी एक ऐसे घर में हुई है कि वे लोग रसोइयादार का बनाया नहीं खाते हैं। वहाँ जाने पर मुझी को खाना बनाना पड़ेगा। मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि अब क्या करूँ ?

उत्तर—चाहे कोई कितना ही धनी हो, अपने हाथ से गृहस्थी का काम उसे आना चाहिए। अपने हाथ से भोजन कभी नहीं बनाया तो अब बनाना सीख लीजिये। कुछ मुश्किल नहीं और पाक शास्त्र पर अच्छी पुस्तकें लेकर ससुराल जाइये। आपका वक्त भी कटेगा और आप ससुराल वालों को तुष्ट भी कर सकेंगी।

मुँह पर बाल

प्रश्न—मेरी बच्ची जो कि दो साल की है, के मुँह पर बाल हैं। कृपया आप लिखें कि क्या लगायें जो ठीक हो जाय ?

उत्तर—मामूली उपटन जो बच्चों के मुख पर लगाया जाता है लगाती रहें। इसके अतिरिक्त इस की अभी कोई चिन्ता न करें। केवल यह सावधानी रखें कि बालिका स्वस्थ व प्रसन्न रहे। समय आने पर सब अपने आप ठीक हो जायगा।

आँखों में अलसर

प्रश्न—मेरी चार वर्ष की पुत्री को चेचक निकली थी। चेचक तो पूर्ण रूपेण ठीक हो गई है किन्तु दोनों आँखों में अलसर हो गया है। कृपया अलसर (छर) दूर करने की कोई औषधि बताइयेगा।

उत्तर—बालिका को ऐसी वस्तुओं का सेवन कराएँ जिसमें विटामिन 'ए' हो जैसे घी, मक्खन आदि और आँखों को प्रति दिन शीतल जल से धुलवाएँ या गुलाब जल मिश्रित पानी से आंखों में छींटे मारें। क्रमशः आंखों का स्वास्थ्य बढ़ने पर अलसर का निशान जाता रहेगा।

विविध-विषय

हिन्दी पत्र नारद का काम करें

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री डाक्टर सम्पूर्णानन्द ने हिन्दी समाचार पत्र सम्मेलन का उद्घाटन करते समय नारद मुनि की चर्चा करते हुये कहा कि हिन्दी समाचार पत्रों को उन्हें अपना आदर्श मान लेना चाहिये। उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि नारद जी के नाम से बहुत सी हास्यास्पद दंत कथाएँ संबद्ध कर दी गई हैं। सच यह है कि नारद जी का काम ही यह था कि वे उन सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचायें जिससे बुराई का नाश हो। जनतांत्रिक समाज में ये दो ऐसे जुड़वां कर्तव्य हैं जिनकी पूर्ति के लिये हिन्दी समाचार पत्रों को कटिवद्ध हो जाना चाहिए।

सोनपुर का मेला

इस वर्ष विहार का सोनपुरमेला नवम्बर में लगेगा। कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस मेले में सबसे अधिक भीड़ होती है, उस समय लाखों लोग नारायनी में स्नान करते हैं।

यह मेला देश में पशुओं का सबसे बड़ा मेला माना जाता है प्रत्येक वर्ष इसमें भारत के कोने-कोने से तीर्थयात्री; उद्योगपति व्यापारी, सरकारी कर्मचारी, किसान आदि आते हैं।

इस मेले की धार्मिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखते हुये विहार सरकार ने इसे और अधिक आकर्षक बनाने के लिये विशेष प्रबध किये हैं। इस अवसर पर एक पंच-वर्षीय योजना प्रदर्शिनी आयोजित की जायगी।

पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ का निर्माण

चंडीगढ़ नगर मशीनयुग की वास्तुकला का पहला नमूना है।

राजधानी के निर्माण का काय १९५०-५१ में हुआ था और इस साल मार्च तक इस पर ९ करोड़ रु० खर्च हो चुका है। चंडीगढ़ के निर्माण का पहला भाग १९५६ के अत तक पूरा हो जायगा। पहले भाग में १॥ लाख की जनसंख्या के रहने की व्यवस्था की जायगी। चंडीगढ़ की कल्पना एक सजीव शरीर के ढंग पर की गयी है।

जयपुर की भाँति चन्डीगढ़ भी चौपड़ की तरह फैलाया जायेगा और इसके ३० खंड होंगे। ये खंड चौकोर होंगे और इनमें अधिकतर इकमञ्जली और दुमञ्जली इमारतों की कतारें होंगी। पंजाब सरकार ने चपरासी के लिये ३२५० रु० के मकान से लेकर मुख्यमंत्री के २॥ लाख रु० तक के बंगले तक १२ प्रकार के मकान अपने कमचारियों के लिये बनवाये हैं। चपरासी के मकान में भी दो कमरे, दालान, रसोईघर, स्नानघर, नल और आंगन सब होंगे। भारत में पहली बार चपरासी की हैसियत के कर्मचारियों के लिये इतने अच्छे मकान बनवाये गये हैं।

निजी मकान बनवाने के लिये भी ५ मरला से १० कनाल तक के २०,२५१ टुकड़े हैं। इनकी विक्री पर्ची डालकर की जाती है।

नकली चाँद

वह दिन शायद बहुत दूर नहीं जब एक 'कृत्रिम चाँद इस भूमण्डल का चक्कर लगाता हुआ दीखेगा।

मेरिलैण्ड विश्व विद्यालय के डा० एस० एफ० सिंगर ने हाल में एक योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की है। इस योजना के अनुसार, एक बहुत छोटा राकेट तैयार किया जायेगा जो अपने साथ लगभग ४० पौण्ड वजन के ऐसे वैज्ञानिक उपकरण ले जा सकेगा, जो अन्तरिक्ष में पहुँच कर सूर्य की किन्हीं किरणों के सम्बन्ध में अंकन कर सकें और उनके बारे में पृथ्वी पर सूचनाएँ भेज सकें। यह 'चाँद' लगभग ३०० मील की ऊँचाई पर पहुँच कर प्रति दो घण्टों में एक बार पृथ्वी का चक्कर लगायेगा।

इस नकली चाँद से हम सूर्य पर होने वाली घटनाओं से परिचित हो सकेंगे और पृथ्वी पर बैठे-बैठे ही सूर्य के विषय में अप्राप्य समझी जाने वाली जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

मऊ में जनाना अस्पताल

उ० प्र० राज्य, सरकार ने मऊ, जिला आजमगढ़ में ६ शय्यों वाले एक जनाना अस्पताल के निर्माण के लिये ३८,००० रु० स्वीकार किये हैं। फिलहाल इस अस्पताल का नगर के सार्वजनिक अस्पताल की इमारत के एक हिस्से में खोला गया है। औषधियाँ, कपड़ा आदि के लिये ३००० रु० का वार्षिक अनुदान भी इस अस्पताल को दिया गया है।

जाली वोट

पोर्टोरिको में पिछली बार जब चुनाव हुआ तो जिसमें एक व्यक्ति दो बार वोट न दे सके इसके लिये अधिकारियों ने हरेक वोट देने वाले की उँगली में एक तरह की स्याही लगानी शुरू की जो जल्दी छूटती न थी। पर यारों ने इस स्याही को छुड़ाने की एक तर्कीब निकाल ही ली और फलस्वरूप हजारों ही जाली वोट पड़ गये। इस बार जब चुनाव हुआ तो वोटरों ने शुरू से ही स्याही का दाग मिटाने की तैयारी कर ली परन्तु अधिकारी भी होशियार हो चुके थे और उन्होंने ऐसी तर्कीब निकाली कि जिसका कोई इलाज ही न था। जो आदमी भी वोट दे लेता था उसके कान के पीछे का थोड़ा-सा बाल सेफ्टी रेजर से मूँड़ दिया जाता था और चूँकि बाल इतनी जल्दी उग नहीं सकते थे इसलिये इस बार कोई भी व्यक्ति दो दफे वोट दे न सका।

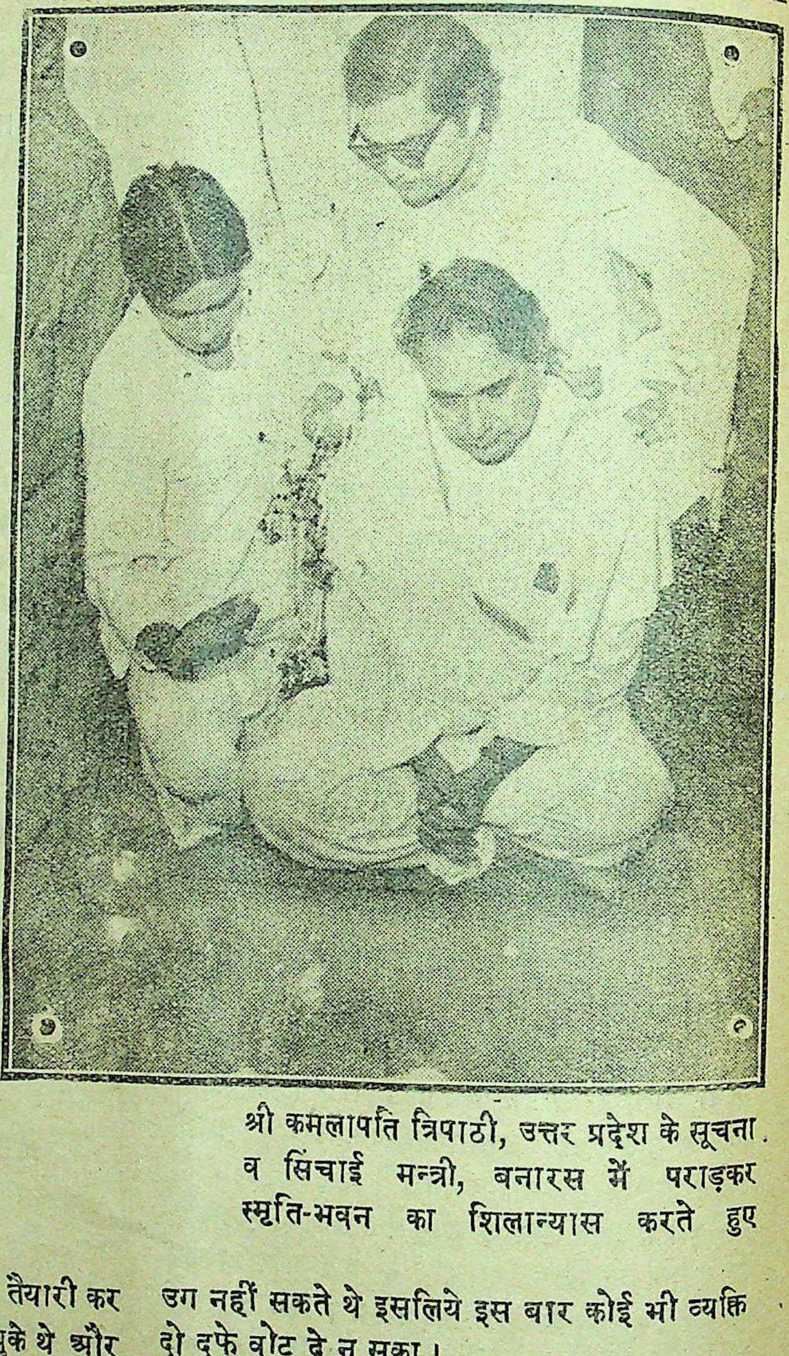

श्री कमलापति त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश के सूचना व सिंचाई मन्त्री, बनारस में पराड़कर स्मृति-भवन का शिलान्यास करते हुए

बच्चों का जन्म

संसार भर में एक घंटे में ५,४४० बच्चों का जन्म होता है। और ४,६३० मनुष्यों की मृत्यु होती है।

प्रमुख महिलाएँ

श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय
जिन्हें इस वर्ष राष्ट्रपति ने पद्म
भूषण की उपाधि दी।

डा० हेलेन केलर अपनी सेक्रेट्री के साथ

नीचे — श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

राजकुमारी अमृत कौर स्वास्थ
मंत्राणी भारत सरकार।

अपने विचार

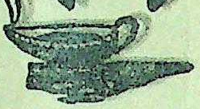

दूसरी पंचवर्षीय योजना

मार्च १९५६ में पहली पंचवर्षीय योजना की अवधि पूरी हो जायगी। अप्रेल १९५६ से दूसरी पंचवर्षीय योजना के अनुसार कार्य आरम्भ हो जायगा।

आइये पाठक, थोड़ा हम विचार करलें कि पहली पंच वर्षीय योजना से देश की क्या प्रगति हुई और दूसरी पचवर्षीय योजना से और क्या प्रगति होगी।

श्री गुलजारीलाल नन्दा ने हाल ही में 'दूसरी पंचवर्षीय योजना की तैयारी' नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिससे इन दोनों प्रश्नों पर प्रकाश पड़ता है।

इस पुस्तिका के अनुसार पहली पंचवर्षीय आयोजना में आर्थिक विकास के जो मुख्य लक्ष्य रखे गये थे वे पूरे हो चुके हैं। सन् १९५१ से १९५६ तक के पांच वर्षों में विकास-कार्य के ऊपर हमारा पूरा खर्चा करीब २० अरब रुपये होगा। सबसे ज्यादा तरक्की खेती के क्षेत्र में की गयी है। सन् १९५३-५४ में खाद्य का जितना उत्पादन हुआ वह आयोजना से पहले के उत्पादन से १ करोड़ १० लाख टन अधिक था, कपास की उपज में भी १० लाख गांठों से अधिक की वृद्धि हुई। सिंचाई के क्षेत्र में ७० लाख एकड़ का इजाफा हुआ और बिजली में १२ लाख किलोवाट का। कपड़ा, सीमेंट और शक्कर के उत्पादन में खास बढ़ती हुई।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में ४३ अरब के व्यय का अनुमान है जिसका प्रबन्ध सरकार सार्वजनिक ऋणों और बाहरी सहायता के अतिरिक्त १० अरब के अधिक नोट छाप कर और लगभग ८ अरब नये कर लगा कर पूरा करेगी।

इस दूसरी पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा नवम्बर सन् १९५५ तक तैयार हो जायगी और उस पर संसद और जनता में विचार प्रारम्भ हो जायगा।

इस योजना का लक्ष्य समाजवादी है जिससे समाज पर धन-सम्पन्न और अधिकार शाली वर्ग का प्रभाव कम हो और सभी नागरिकों को उन्नति का समान रूप से मौका मिले। इसके परिणाम स्वरूप सट्टेबाजी और बिना मेहनत मुनाफाखोरी मिट जायगी। बड़े और छोटे उद्योगों का विकास होगा, जनता की क्रय-शक्ति बढ़ेगी और बेकारी दूर होगी।

परन्तु सरकार का यह सुख स्वप्न तभी पूरा हो सकता है जब वह समस्त राजनैतिक दलों के सहयोग से सम्पूर्ण देश में इस योजना को कार्यान्वित करने की प्रबल इच्छा पैदा कर दे। प्रथम पंचवर्षीय योजना में इस सीमा तक जन सहयोग की कमी थी। आशा है इस द्वितीय योजना में यह त्रुटि न रहने पावेगी।

स्त्रियों के अभद्र चित्र

यह दुःख की बात है कि वस्त्रों और प्रसाधन आदि की सामग्रियों आदि के निर्माता अपनी वस्तुओं पर स्त्रियों के अभद्र चित्र प्रदर्शित करते हैं। फिल्म निर्माता तो इस दिशा में बहुत आगे बढ़ गये हैं। इसके परिणाम स्वरूप समूचे राष्ट्र का नैतिक स्तर बहुत गिर रहा है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए देहली की अनेक महिला संस्थाओं की एक गोष्ठी ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये हैं:—

(१) यह स्त्री सम्मेलन भारत के समूचे व्यापारी-वर्ग से अनुरोध करता है कि वह स्त्री जाति

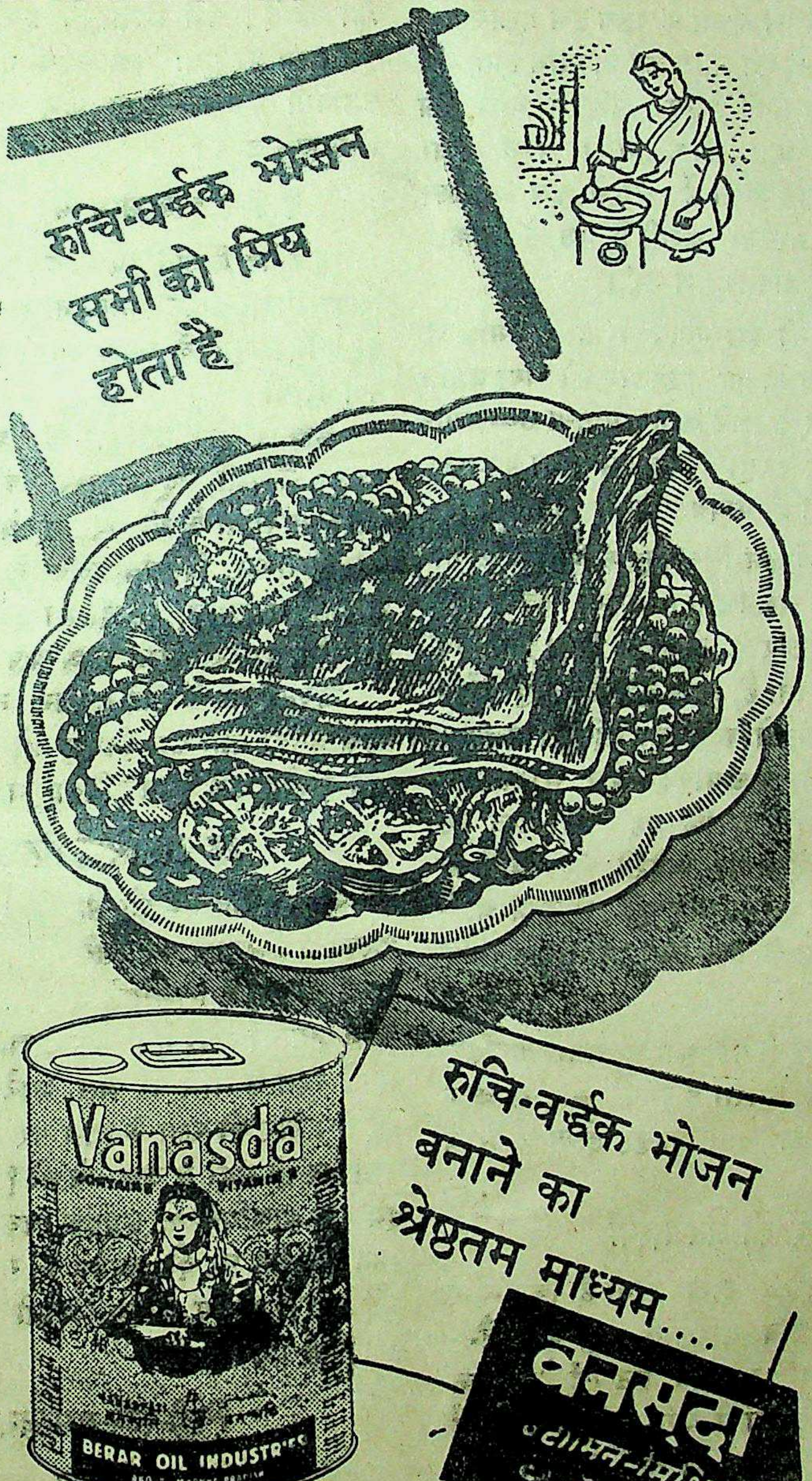
रुचि-वर्द्धक भोजन
सभी को प्रिय
होता है
दीदी अक्टूबर १९५५
Vanasda
CONTAINS VITAMIN
BERAR OIL INDUSTRIES
AKOLA MADHYA PRADESH
रुचि-वर्द्धक भोजन
बनाने का
श्रेष्ठतम माध्यम....
वनस्दा
विटामिन-मिश्रित
वनस्पति
ASP.V-2/55

बरार ऑयल इंडस्ट्रीज, अकोला

सम्बन्धी वस्तुओं को बेचने के लिये इस प्रकार प्रदर्शन न करें जिससे स्त्री जाति का अपमान होता है। आज-कल तो स्त्रियों के अन्दर पहिरने वाले वस्त्र भी, जैसे अंगियों आदि को दुकानदार बहुत लज्जास्पद ढङ्ग से प्रदर्शन करते हैं। बहिनें, इस सम्मेलन द्वारा भाइयों से प्रार्थना करती हैं कि इस प्रकार स्त्री जाति का वह अपमान न करें।

(२) भारत की इस पुण्य भूमि में महिला माता वा निर्माता है, वह इश्तहार की वस्तु नहीं। यह सम्मेलन देश के सारे उद्योग पतियों तथा व्यापारियों से आग्रह करता है कि इस प्रथा को छोड़ स्त्री सत्ता तथा स्त्री की पवित्र प्रतिष्ठा को बढ़ावें।

(३) यह सम्मेलन चिन्तापूर्वक अनुभव करता है कि आजकल के चल-चित्रों (सिनेमा फिल्म्स) में स्त्रियों को जिस प्रकार के अश्लील तथा अर्ध नग्न रूप में दिखाया जाता है, उसे देश के नवयुवकों में विषय शक्ति बड़े वेग से बढ़ती जा रही है। इसलिये यह सम्मेलन चल-चित्र उत्पादकों और भारत सरकार से प्रार्थना करता है कि वह बहुत जल्द इस प्रकार के अश्लील देशी या विदेशी चल-चित्रों का बनाना वा प्रदर्शन करना बन्द करें। साथ में चोरी डकैती तथा मारपीट के चल-चित्र भी तुरन्त बन्द कर दिये जायें।

स्त्री-सम्मेलन देहली को इन प्रस्तावों के लिये हम बधाई देते हैं। आशा है इनकी ओर सरकार और जनता दोनों का ध्यान आकृष्ट होगा और ये बुराइयाँ मिटेंगी।

इन्दौर की जैन स्त्रियाँ

हमें यह लिखते हुए दुःख होता है कि इन्दौर की लगभग ४००० जैन महिलाएँ वहाँ के ८ जैन-मन्दिरों के फाटकों पर इसलिये डट गई हैं कि उन मन्दिरों में हरिजन प्रवेश न करने पावें। जैन-धर्म सत्य अहिंसा और तपस्या का धर्म है। हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश न करने देना सबसे बड़ी अहिंसा है। पता नहीं ये देवियाँ किसके बहकावे में आ गई हैं। हमें आशा है, इन्दौर की जैन बहनें इस प्रश्न पर पुनः विचार करेंगी और ऐसे कदम उठावेंगी जिससे समस्त जैन मन्दिर हरिजनों के लिये खुल जायं।

डाक्टर अमरनाथ झा का स्वर्गवास

हमें यह लिखते हुए दुःख होता है कि प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री डाक्टर अमरनाथ झा का देहावसान हो गया। मृत्यु के समय उनकी अवस्था केवल ५६ वर्षों की थी।

डाक्टर झा अँग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी, बंगला, मैथिली, उर्दू, फारसी और संस्कृत आदि अनेक भाषाओं के भी विद्वान् थे। वे इलाहाबाद और बनारस विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन तथा नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रह चुके थे।

डाक्टर झा के कोई सन्तान नहीं है। १६ वर्ष पहले उनकी पत्नी का निधन हो गया और उसके बाद उन्होंने कोई दूसरा विवाह नहीं किया।

सेठ डालमियां गिरफ्तार

गत २५ नवम्बर को सेठ रामकृष्ण डालमियां दिल्ली में गिरफ्तार कर लिये गये। आप पर भारत बीमा कम्पनी के सिलसिले में दो करोड़ के गबन का चार्ज लगाया गया है। सेठ डालमियां बहुत दिनों से गो रक्षा के नाम पर जेल जाने की घोषणा कर रहे थे। खैर गो रक्षा के नाम पर न सही, गबन के नाम पर ही सही वे जेल गये तो ? इस अवसर पर हम सेठ डालयियां को हार्दिक बधाई देते हैं। पर इतने बड़े सेठ पर दो करोड़ के गबन का इलजाम कुछ नहीं है। कम से कम जितनी बीबियां हैं उतने करोड़ तो गबन करते।

चिट्ठी-कवि-सम्मेलन

हमें यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि प्रसिद्ध कवि श्री शान्ति स्वरूप 'कुसुम' ने चिट्ठी-कवि सम्मेलन का संयोजक होना स्वीकार कर लिया है।

नया ५०१

स्पेशल साबुन

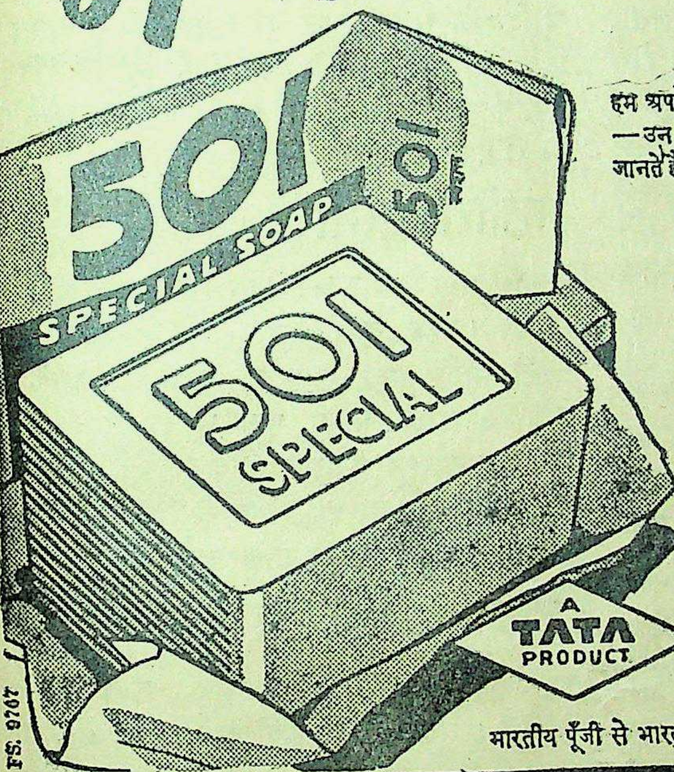

हम अपने उत्पादनों के सुधार की कोशिशों में बराबर लगे रहते हैं—उन उत्पादनों के सुधार की भी जिन्हें आप अच्छी तरह जानते हैं। इसके सुपरिणामस्वरूप आजकल हम इस उम्दा साबुन को

उत्कृष्टता की दृष्टि से—आसानी के साथ धुलाई के लिए,

बचत की दृष्टि से—अधिक समय तक चलने के लिए,

सेवा की दृष्टि से—नाजुक कपड़ों को सुरक्षित रखने के लिए,

पहले से और भी अच्छा बनाने लगे हैं।

५०१ स्पेशल साबुन धुलाई के सभी कामों के लिए उपयोगी है।

टाटा का उत्पादन

उत्कृष्टता, बचत और सेवा का प्रतीक

दी टाटा ऑइल मिल्स कं० लि०

भारतीय पूँजी से भारतीयों की व्यवस्था के अन्तर्गत भारत में ही बनाया जाता है।

सफेद कोढ़ के दाग

हजारों के नष्ट हुए और सैकड़ों के प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं। दवा का मूल्य ५) रुपया डाक व्यय १) रुपया, अधिक विवरण मुफ्त मँगाकर देखिये।

वैद्य—के० आर० बोरकर मु० पो० मंगरूलपीर
जिला आकोला (मध्य प्रदेश)

दुमंजिला मकान

बिकाऊ है

पानी के नल व बिजली से युक्त नं० ७३५ दारागंज—प्रयाग में बिकाऊ है। इच्छुक ग्राहक स्वतः समक्ष देखकर इस पते पर पत्र व्यवहार करें।

—श्री निवास पोतनीस बी० ए० एल-एल० बी०,
जनकगञ्ज, लश्कर—ग्वालियर (म० भा०)

भारत विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव द्वारा प्रस्तुत

रूपबिलास कम्पनी कानपुर की कुछ अनुभूत शक्तिशाली औषधियां

लक्ष्मण धारा जिस घर में लक्ष्मण धारा रहता है उस घर के लोग बेफिक्र और सुखी रहते हैं। लक्ष्मण धारा की ३-४ बूंदें पानी में डाल कर पीने से हैजा, कै, दस्त, जी मिचलाना, पेचिस, अतीसार, खट्टी डकारों का आना, बदहजमी, पेट फूलना, मंदाग्नि, कफ, खांसी, जुकाम, सर्वज्वर आदि अनेक रोग दूर होते हैं और इसी के लगाने से चोट, मोच, सूजन, दाद, खाज, फोड़ा फुन्सी, बात, दर्द, पसली का दर्द, भिड़ मक्खी, बर्र आदि के काटे का दर्द अच्छे होते हैं। लाखों गृहस्थ लक्ष्मण धारा का प्रयोग कर गृहस्थी सुखमय वना रहे हैं क्योंकि यह आकस्मिक दुर्घटना के कष्ट और रोगोंसे बचने के लिये जगत का अनुपम आविष्कार है।

लक्ष्मण धारा खरीदते समय पैकेट पर लक्ष्मण धारा व रूपबिलास कम्पनी का नाम अवश्य देख लें। यह हर जगह मिलता है। न मिलने पर हम से वी० पी० द्वारा मँगवा लें। मूल्य छोटी शीशी ॥।) बारह आना बड़ी शीशी २॥) दो रुपया आठ आना डाक खर्च पृथक।

बालको हर बच्चों का पोष्टिक और मीठा पेय है। बालको पर पलने वाले बच्चे नीरोग और प्रसन्न चित्त रहते हैं इसके पिलाने से खून की कमी दूर होकर निबल व कमजोर बच्चे हृष्ट-पुष्ट व तन्दुरुस्त बनते हैं। इसलिये हर माता को चाहिये कि दैनिक-कार्य में अपने प्यारे बच्चे को "बालको" पिलाना कभी न भूले। यह बच्चों को सूखा रोग से बचाता है और उनके दाँत निकलने में कष्ट नहीं होता है। मूल्य प्रति शीशी १) एक रुपया डाक खर्च अलग।

दमे की दवा नयी या पुरानी खांसी श्वांस दमा को दूर करने के लिये सुप्रसिद्ध है। यह दवा श्वांस की नली को साफ कर बलगम को बाहर निकाल कर दमे को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य प्रति शीशी ३≈) तीन रुपया दो आना डाक खर्च अलग।

रूपबिलास इसके लगाने से मुहांसे, झांई चेचक के काले काले दाग, रूसी, खुश्की, फुन्सी, बदरौनकी, झुर्रियां वगैरह दूर कर मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। विवाह आदि शुभ अवसरों पर वर वधुओं की सुन्दरता बढ़ाने के लिये वैज्ञानिक तत्वों के आधार पर निर्मित किये गये इस उबटन का दैनिक उपयोग करना चाहिये। मूल्य फी डिब्बा २) दो रुपया डाक खर्च अलग।

फकीरी सुरमा यह सुरमा मोती, ममीरा भीमसेनी कपूर आदि उत्तमोत्तम जड़ी बूटियों के सम्मिश्रण से घोंट कर तैयार किया जाता है, इसके लगाते ही यह तमाम जहरीले पानी को निकाल कर आंखों को ठण्डी निर्मल तथा साफ कर देता है। इसके लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नजला कीचड़ निकलना नाखून परवाल आदि दूर होते हैं और नजर की कमजोरी दूर होकर दृष्टि तीव्र हो जाती है। मूल्य प्रति शीशी ॥।) बारह आना डाक खर्च अलग।

चन्द्रोदय मकरध्वज वटी शक्तिक्षीणता और कमजोरी को दूर करके दिल व दिमाग को बल देकर शरीर में स्फूर्ति पैदा करती हैं। मूल्य ४० गोलियों के पैकेट का ७॥) सात रुपया आठ आना डाक खर्च अलग।

बन सुधा वन सुधा स्त्री रोगों की सुविख्यात गुणकारी महौषधि है। इसके सेवन से कमर व रीढ़ का दर्द शिर दर्द दुबलापन कमजोरी चक्कर आना आदि रोग जो कि अनियमितता के दोषों से उत्पन्न हो जाते हैं उन्हें दूर कर नारियों को हृष्ट-पुष्ट बनाने की श्रेष्ठ दवा है। मूल्य ३≈) तीन रुपया दो आना डाक खर्च अलग।

रूपबिलास हिम कुसुम तैल कठिन शिर दर्द को ५ मिनट में नष्टकर शीतलता प्रदान करता है मस्तिष्क व बुद्धि से काम लेने वालों को महान उपकारी है खुशबू भीनी है। मूल्य प्रतिशीशी ॥।) बारह आना डाक खर्च पृथक।

नोट—यदि आप किसी रोग से ग्रसित हैं तो अपने रोगका पूरा हाल लिखकर औषधि मंगवा लें। इस कंपनी में हर प्रकार की औषधियां तैयार होती है। विशेष जानकारी के लिये कम्पनी का सूची पत्र मुफ्त मंगाकर देखें।

दवा मँगाने का पता:—रूपबिलास कम्पनी नं० ११० भनकुट्टी कानपुर

चिट्ठी कवि सम्मेलन

हिन्दी के अधिक से अधिक पाठकों की राय से नई और पुरानी कविताओं का अभूतपूर्व संग्रह जो 'दीदी' के अतिरिक्त अङ्क के रूप में प्रकाशित होगा।

'दीदी' इलाहाबाद की ओर से इस अखिल भारतीय चिट्ठी कवि सम्मेलन की योजना की जा रही है। इसमें भाग लेने के लिये हम हिन्दी के समस्त पाठक-पाठिकाओं, लेखकों, कवियों, हिन्दी प्रेमियों और शुभचिन्तकों को सादर आमन्त्रित करते हैं।

इस चिट्ठी कवि सम्मेलन का उद्देश है:— हिन्दी जनता के सामने आधुनिक कवियों व प्राचीन तथा स्वर्गगत कवियों की श्रेष्ठ तथा प्यारी पंक्तियाँ प्रस्तुत करना।

इसके नियम ये हैं:—

(१) प्रत्येक सज्जन जो कवि हैं चार से बारह पंक्तियों तक की अपनी कोई सर्वथा नवीन कृति जो कहीं छपी न हो भेज सकते हैं।

(२) प्रत्येक सज्जन जो कवि नहीं हैं, हिन्दी के प्राचीन कवियों की या आधुनिक कवियों में से जो स्वर्गीय हो चुके हैं उनकी २ से ८ पंक्तियों तक की कोई कविता जो उन्हें बहुत ही प्रिय हो, भेज सकते हैं।

(३) प्रत्येक कविता के साथ चाहे वह दो पंक्तियों की हो चाहे ८ या १२ पंक्तियों की हो १) रुपया प्रवेश शुल्क आना चाहिए। यह शुल्क चाहे पोस्टल आर्डर से भेजें चाहे मनिआर्डर से।

(४) एक पुस्तक के अन्दर लेखक अथवा प्रेषक के नाम के सहित प्रकाशित की जायेंगी।

(५) प्रत्येक सज्जन जो कम से कम २५) रुपये मनिआर्डर से भेजेंगे इस चिट्ठी कवि सम्मेलन के संस्थापक सदस्य घोषित किये जायेंगे। उनके नाम संक्षिप्त परिचय व चित्र के साथ इस सम्बन्ध में प्रकाशित होने वाली पुस्तक के प्रारम्भ में छापे जायेंगे।

(६) संस्थापक सदस्य यदि अपनी या किसी अन्य की कोई रचना भेजना चाहें तो उन्हें प्रवेश-शुल्क भेजने की आवश्यकता नहीं है।

(७) पुस्तक दीपावली के अवसर पर प्रकाशित हो जायगी और दीदी के समस्त ग्राहकों को 'दीदी' के दीपावली अङ्क के साथ अतिरिक्त अङ्क के तौर पर भेजी जायगी। इसकी प्रतियाँ संस्थापक सदस्यों और इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले समस्त सज्जनों के पास, उनकी कविता इसमें छपे या नहीं, भेजी जायगी।

(८) यदि सफलता मिली तो यह चिट्ठी कवि सम्मेलन आगामी वर्ष भी जारी रखा जायगा।

(९) इस चिट्ठी कवि सम्मेलन के सम्बन्ध में संयोजक का निर्णय अन्तिम होगा।

रचनाएँ व रुपया भेजने का पता—

शान्ति स्वरूप 'कुसुम' संयोजक चिट्ठी कवि सम्मेलन,
छत्ता जम्बूदास, सहारनपुर

सफेद कोढ़ के दाग

ऐसे निकल जाते हैं कि वह कहाँ थे इसका पता भी नहीं लगता। हजारों अभिप्राय और कई इनाम मिले हैं। मूल्य ५) रुपया। विवरण पत्र मुफ्त मँगावें। नक्कालों से सावधान रहें।

वैद्य बी० आर० बोरकर, 'आयुर्वेद भवन'
मु० पो० मंगरूलपीर जि० आकोला (मध्य प्रदेश)

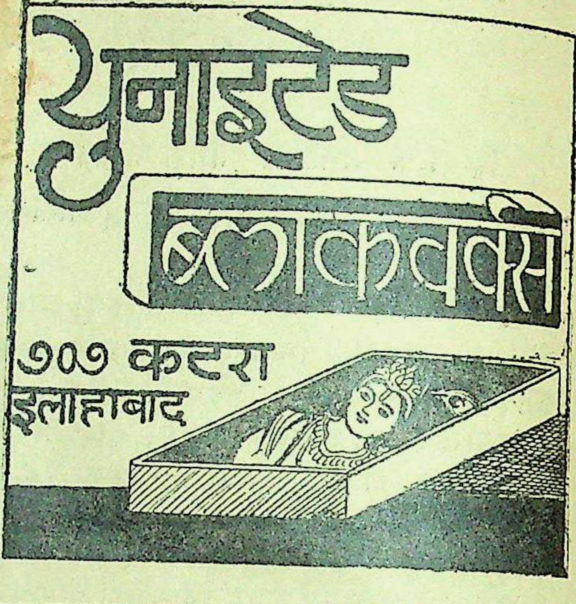

अलकपरी
केशों को बढ़ाने वाला केशतैल

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।
६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्

अलक परी
नया कटरा इलाहाबाद

भारतीय बालकों और माता-पिताओं तथा
शिक्षकों के प्रति एक अमर प्रयास
दक्षिण भारती
का
बाल-शिक्षण-विशेषांक

गत पांच वर्षों से 'दक्षिण भारती' ने हिन्दी ससार की एक अभूतपर्व सेवा की है। अब उक्त पत्रिका का बाल-शिक्षण-विशेषांक बहुत ही सज-धज के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस विशेषांक में देश ही नहीं वरन् समस्त विश्व के बाल-शिक्षण के उद्‌भट विद्वानों की सामग्री का सङ्कलन किया जा रहा है जो कि भारतीय बालकों, माता-पिताओं और शिक्षकों के प्रति एक सबल और रचनात्मक सकेत है।

वार्षिक मूल्य ६) पृष्ठ सख्या १५० इस विशेषांक का मूल्य १)

व्यवस्थापक—'दक्षिण भारती' अफजलगंज,
हैदराबाद दक्षिण
दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन
समिति द्वारा प्रचारित

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	"
३—कुमारी कमल सहाय, आरा	"
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया	"
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	"
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग	"
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१२८)
९—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता	१००)
१०—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई	"
११—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	"
१२—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	"
१३—श्रीमती निर्मला गोविल, आगरा	"
१४—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत, रावतसर	"
१५—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	"
१६—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	"
१७—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	"
१८—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	"
१९—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	"
२०—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	"
२१—श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून	"
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता	"

'दीदी' के नियम

(१) 'दीदी' मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ।।) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू कर जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका 'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) 'दीदी' हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि 'दीदी' आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका 'दीदी' इलाहाबाद लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना भय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक दीदी' इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायँगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) 'दीदी' में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावे। पर यह ध्यान रखें, 'दीदी' में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छा

DIDI -/8/- October 1955 Regd. No A—691

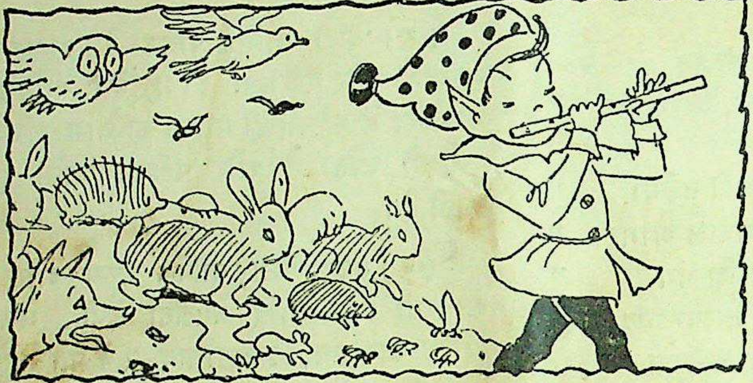

बालबोध वी० पी० से मँगाने में २।≡) देना पड़ेगा। इसलिये २) वार्षिक मूल्य मनिआर्डर से भेजें।

आपका बच्चा बहुत प्रसन्न होगा!

यदि आपकी डाक में उसे

बालबोध

की एक प्रति मिलेगी!

बालबोध, श्रीनाथसिंह द्वारा संस्थापित छोटे बच्चों का मासिक पत्र है। अपने प्यारे बच्चे के नाम प्रतिमास इसे डाक से पहुँचने दीजिये —

बालबोध का वार्षिक मूल्य सिर्फ २) है। यह रकम मनिआर्डर से भेज कर आप निश्चिन्त हो जाइये और शेष काम हमको करने दीजिये।

मैनेजर—'बालबोध',
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

१८९

[illegible] पत्रिका

दिसम्बर
१९५५

दीदी

।।)

१६-१२-५५

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

देशमुख-दम्पती

दीदी

प्रधान सम्पादिका
श्रीमती यशोवती तिवारी

सम्पादिका-समिति
महा माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित
रानी लक्ष्मीकुमारी रावतसर
श्रीमती रत्नकुमारी एम० ए०
श्रीमती कमला शिवपुरी बी० ए०, बी० टी०
श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए०
श्रीमती रजनी पनिकर एम० ए०
कुमारी विद्यावती साहित्य रत्न

प्रबन्ध सम्पादक—श्री श्रीनाथसिंह

पत्र व्यवहार का पता—
प्रेमलता देवी संचालिका 'दीदी' कार्यालय
इलाहाबाद नं० २

विषय-सूची

कहानियाँ

१—श्री राधारानी ६३०
२—आश्रय-हीना [श्री शारदाप्रसाद श्रीवास्तव 'विद्यार्थी'] ६३६
३—वीरबाला ग्रीजेल [सुश्री कुमुद] ... ६४०
४—तीन पीढ़ियां [श्री एम० एल० मुन्शी बी० ए०] ६४२
५—भिक्षा का बिनिमय [रानी कविता कुमारी देवी] ६४६
६—रत्न परीखा [श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०] ... ६५४
७—मुल्लनजी पानवाला [श्री श्रीनाथसिंह] ६६०

लेख

१—रूसी नेताओं का आगमन ... ६२६
२—कविता की छीछालेदर [श्री श्रीनाथसिंह] ६३३
३—भारतीय वाद्य संगीत ... ६४७
४—समाज कल्याण योजना ... ६५२
५—आपका दिसम्बर मास का भविष्य [श्री झुलईसिंह मुख्तार] ... ६५८
६—२—जिनेवा से वारसा [राजा बहादुर श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह बी० ए० एल-एल० बी०] ६६७

कविताएँ

१—गीत [डा० श्यामकिशोर वर्मा] ६२५
२—गीत [कुमारी उर्मिला राठौर, 'विशारद'] ६५३

फुटकर

१—मधुर मिलन [कु० उमा टन्डन] ६४६
२—बाल साहित्य ६७४

स्तम्भ

१—दृष्टिकोण ६२८
२—रसोंई ६६५
३—सिनेमा-संसार ६६६
४—आपको कुछ पूछना है ६६६
५—विविध-विषय ६७०
६—अपने विचार ६७६

दीदी

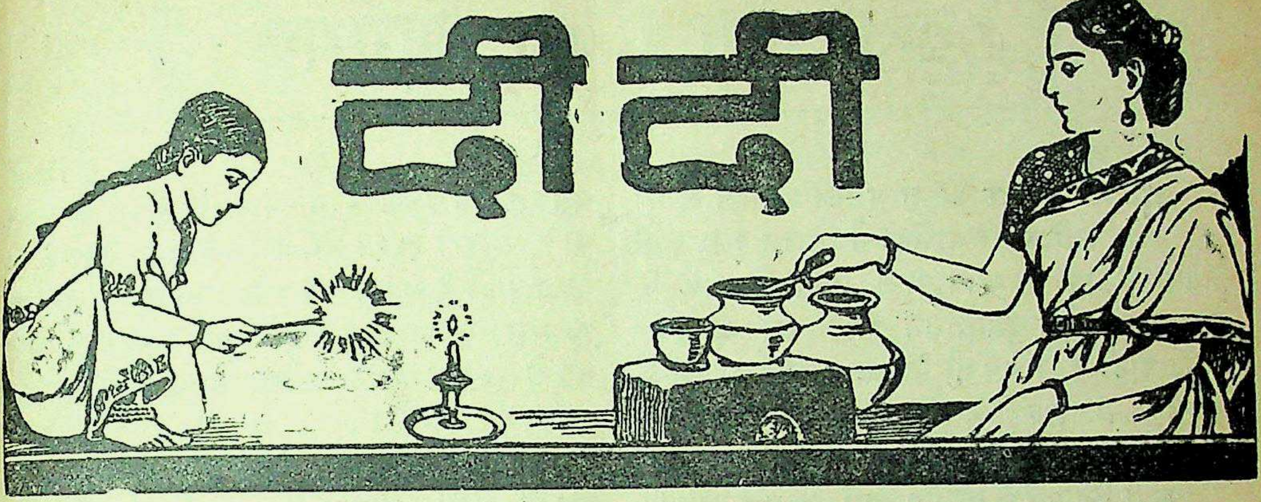

भारतीय स्त्रियों और कन्याओं की सचित्र मासिक पत्रिका
उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों द्वारा कन्याशालाओं के लिये स्वीकृत

साल १६ } इलाहाबाद, दिसम्बर १९५५ { संख्या १२

गीत

लेखक, डा० श्यामकिशोर वर्मा 'शेखर'

स्वप्न का संसार मैंने खो दिया।
रात कितनी घोर भीषण कालिमा,
मिट गयी है प्यार की मृदु लालिमा।
भाव की रानी कहीं रोने लगी,
वीन का सब तार मैंने खो दिया॥

तारकों की केलियाँ उन्माद से,
प्राण में कोमल छिड़ी थी रागनि।
रीत पर विपरीत सब होती गयी,
प्रीत का शृङ्गार मैंने खो दिया॥

काँपती - सी टिमटिमाती थी शिखा,
था जलन ही भाग्य में जिसके लिखा।
हास्य सारा अश्रु में बहने लगा,
रूप का उपहार मैंने खो दिया॥

स्वप्न का संसार मैंने खो दिया।

रूसी नेताओं का आगमन

गत २० नवम्बर की शाम को ५ लाख से भी अधिक नर-नारियों ने 'भारत और रूसी जनता की मैत्री जिन्दाबाद' के नारों से रूस के प्रधान मन्त्री श्री बुलगानिन और वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव श्री निकिता खुश्चेव का अभिनन्दन किया। दिल्ली के इतिहास में इतना भव्य स्वागत आज तक किसी भी विदेशी नेता का नहीं हुआ।

रूसी नेताओं के स्वागत समारोह के अध्यक्षपद से भाषण करते हुए प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि आज का दिन एक जमाने तक याद रहेगा और सोवियत नेताओं का भारत आगमन न केवल भारतवासियों बल्कि सारे संसार के लिये एक महत्वपूर्ण घटना है। श्री निकोलाई बुलगानिन ने अपने भाषण में कहा कि समानता और परस्पर लाभ के आधार पर भारत और रूस के आर्थिक सहयोग तथा व्यापार वृद्धि के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है, और शांतिकालीन प्रयोगों के लिये अणु-शक्ति के विकास, औद्योगिक निर्माण तथा भारत की अन्य योजनाओं में रूस सहायता देने को तैयार है। उन्होंने यह भी कहा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शान्ति की स्थापनार्थ हम दोनों कंधे से कंधा मिला कर काम कर रहे हैं। रूसी नेता पिछले शुक्रवार को दिल्ली पहुँचे थे और दो सप्ताह तक भारत में घूमेंगे और भिन्न-भिन्न योजनाओं तथा कल-कारखानों को देखेंगे। रूस के इन महान पुरुषों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

श्री बुलगानिन

निकोलाई आलेक्सांद्रोविच बुलगानिन सोवियत राज्य सत्ता के एक प्रमुख नेता, वी० आई० लेनिन के वफादार शिष्य और जे० वी० स्तालिन के सहयोगी हैं।

एन० ए० बुलगानिन का जन्म निज्नी नोवोगोरोद नामक शहर के जिसका नाम अब गोर्की है, एक दफ्तर के क्लक के परिवार में १८९५ में हुआ था। फरवरी १९१७ की क्रांति के बाद वह कम्युनिस्त पार्टी के सदस्य बने और उस समय से उन का सारा जीवन कम्युनिस्त पार्टी के साथ अभिन्न रूप से सम्बद्ध और श्रमिक जनता के हितों में पूर्णतः रत रहा है।

एन० ए० बुलगानिन सोवियत सङ्घ और रूसी सङ्घ की सर्वोच्च सोवियतों के सदस्य हैं। देश के प्रति उनकी सेवाओं के पुरस्कार-स्वरूप और महान् देश भक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान में सर्वोच्च कमान द्वारा उन्हें सौंपे गये कामों की सफल पूर्ति के लिये उन्हें समाजवादी श्रम के वीर की उपाधि और कई पदकों से विभूषित किया गया है।

उनकी साठवीं वर्ष गांठ के अवसर पर कम्युनिस्त पार्टी तथा सोवियत जनता के प्रति उनकी सराहनीय सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप सोवियत सङ्घ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मंडल के १० जून, १९५५ के आदेश द्वारा एन० ए० बुलगानिन को समाजवादी श्रम-वीर की उपाधि से विभूषित किया गया।

श्री खुश्चेव

निकिता सर्गेयेविच खुश्चेव (जन्म १७ अप्रेल १८९४), सोवियत सङ्घ की कम्युनिस्त पार्टी और सोवियत राज्य के प्रमुख नेता, वी० आई० लेनिन के वफादार शिष्य और जे० वी० स्तालिन के एक निकटतम सहयोगी, सोवियत सङ्घ की कम्युनिस्त पार्टी के अध्यक्ष मंडल के सदस्य सोवियत सङ्घ की कम्युनिस्त पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव और सोवियत सङ्घ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष-मंडल के सदस्य हैं।

एन० एस० खुश्चेव का जन्म कुर्स्क प्रान्त के कालिनोवका नामक गाँव में एक मजदूर वर्ग के परिवार में हुआ था (उनके पिता खानों में काम

करते थे।) उन्हें बहुत छोटी उम्र में ही काम शुरू करना पड़ा। उन्होंने भेड़ें चराने का काम किया और बाद में वह दोनबास की फैक्टरियों और खानों में फिटर रहे। १६१८ में वह कम्युनिस्त पार्टी में शामिल हुए। गृहयुद्ध के दिनों में एन० एस० खुश्चेव दक्षिणी मोर्चे पर लड़े। गृहयुध के बाद वह दोनबास की खानों में काम करते रहे और बाद में उन्होंने मजदूरों को फैकल्टो (क्रांति के बाद शुरू के वर्षों में प्रौढ़ों के लिये जो विशेष स्कूल सङ्गठित किये थे उनका यही नाम था) में शिक्षा प्राप्त की। मजदूरों की फैकल्टो में शिक्षा समाप्त करने के बाद एन० एस० खुश्चेव दोनबास में और उसके बाद कोव में एक प्रमुख पार्टी के कार्यकर्ता रहे।

आर्थिक विषयों में नेतृत्व करने और महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान में पार्टी तथा सरकार द्वारा सौंपे गये कामों को सफल पूर्ति में उनकी महान् सेवाओं की स्वीकृति स्वरूप एन० एस० खुश्चेव को तीन बार आर्डर आफ लेनिन, प्रथम और द्वितीय कोटि का आर्डर आफ सुवोरोव, प्रथम कोटि का आर्डर आफ कुतुजोव, प्रथम कोटि का आर्डर आफ पैट्रियाटिक वार, आर्डर आफ रेड बैनर आफ लेबर तथा तीन पदक दिये गये। उनकी साठवीं वर्ष गांठ के अवसर पर कम्युनिस्त पार्टी तथा सोवियत जनता के प्रति उनकी सराहनीय सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप सोवियत सङ्घ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मंडल के १६ अप्रैल सन् १९५४ के आदेश द्वारा एन० एस० खुश्चेव को समाजवादी श्रम-वीर की उपाधि से विभूषित किया गया।

* * *

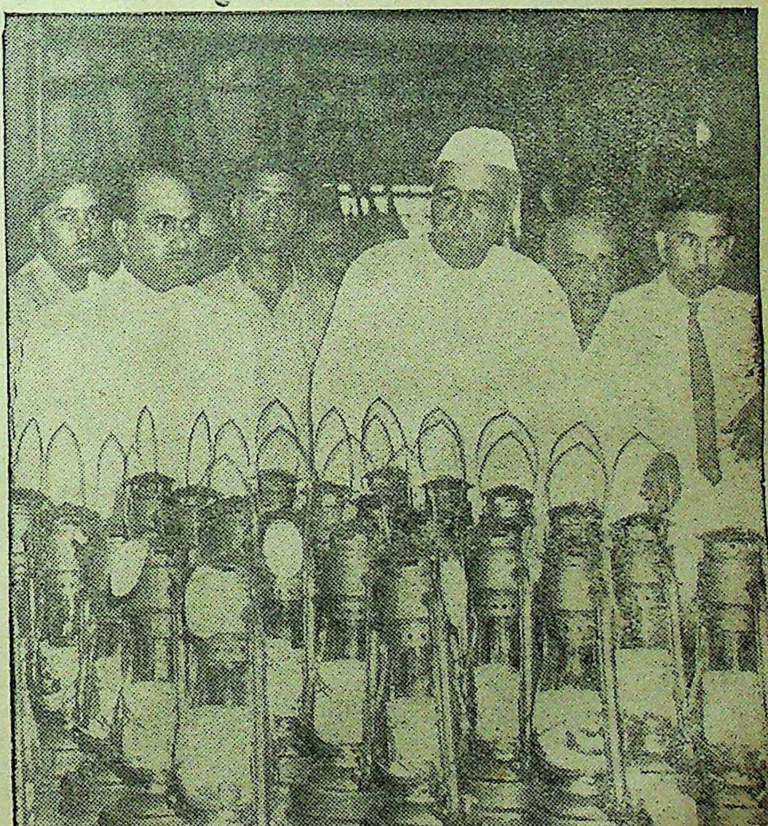

फरीदाबाद में लालटेनों का कारखाना। हाल ही में श्री गोविन्द वल्लभपन्त ने इसका उद्घाटन किया। चित्र में श्री पन्त जी श्री मेहरचन्द खन्ना के साथ हैं।

चित्र-संग्रह

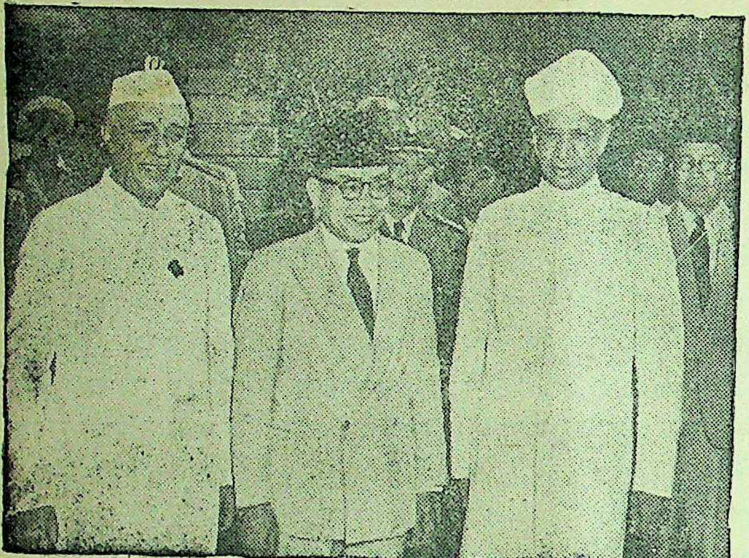

डाक्टर मुहम्मद हाता इन्डोनेसिया के उप-प्रधान जो हाल ही में भारत भ्रमण के लिये आये प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू और उप-राष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन के मध्य में।

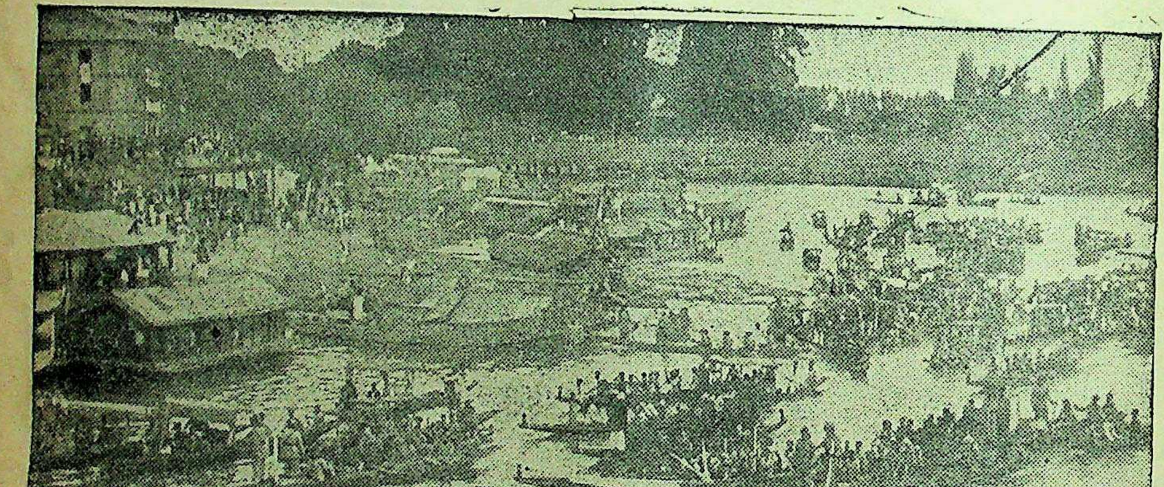

राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद श्रीनगर (काश्मीर) में झेलम पर नौका से भ्रमण कर रहे हैं।

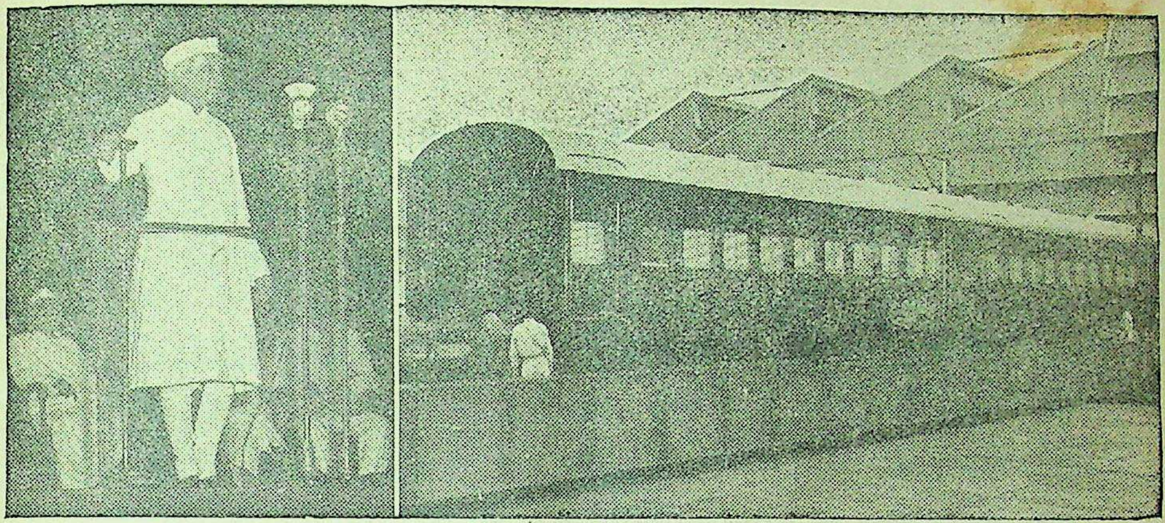

पेराम्बूर (मदरास) में रेल के डिब्बों का कारखाना। यह इस प्रकार के संसार के सर्वोत्तम कारखानों में एक है। एशिया में तो पहला है। इसका उद्घाटन गत २ नवम्बर को प्रधान मन्त्री ने किया।

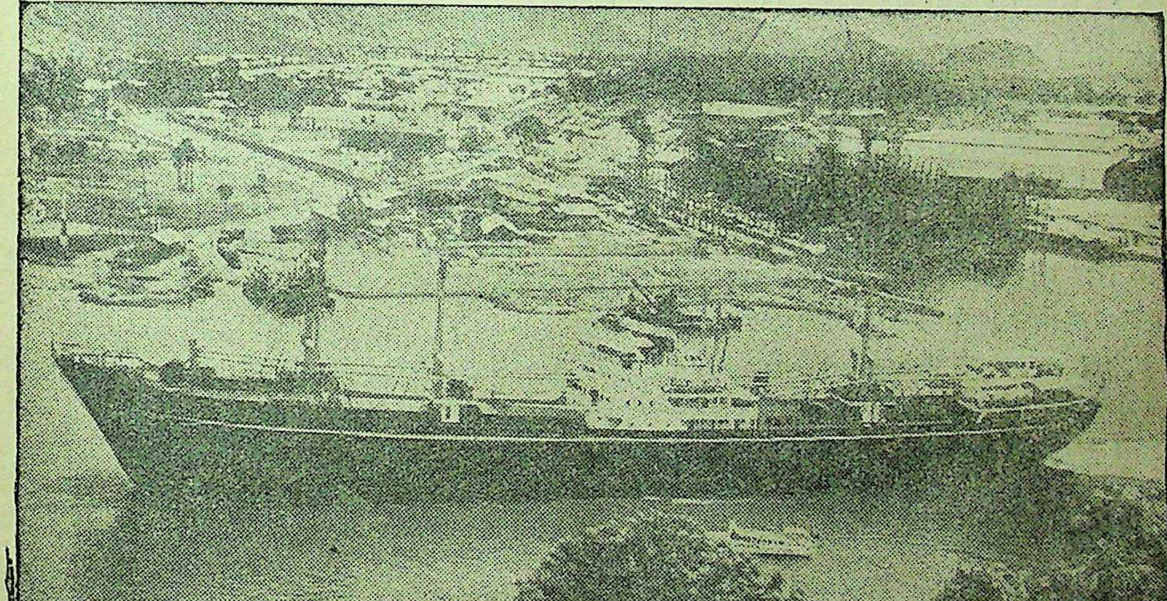

माल ढोने वाला जहाज पानी में उतारा जा रहा है। यह १३ वां जहाज है।

धारावाहिक पौराणिक उपन्यास

श्रीराधारानी

इस पौराणिक उपन्यास के पिछले परिच्छेदों में बताया जा चुका है कि किन परिस्थितियों में राधा का जन्म हुआ तथा किस प्रकार कृष्ण के साथ मथुरा पहुँच कर वे कंस-वध में सहायक हुईं और कृष्ण के द्वारका चले जाने पर वे अकेली रह गयीं। आगे की कथा इस प्रकार है--

११-उद्धव गोपी सम्वाद

ब्रजवासियों के लिये श्री कृष्ण जी अब साधारण मानव ही न रह गये थे। उन्हें वे परमब्रह्म परमेश्वर का साक्षात् अवतार मानने और उनकी पूजा करने लगे। ब्रज के छोटे बच्चों को वे वैसे ही पीताम्बर पहनाते जैसे श्री कृष्ण जी पहनते थे। उनके सिर पर वैसे ही मोर-मुकुट रखते जैसे श्री कृष्ण जी रखते थे। उनके हाथ में वैसे ही वशी पकड़ाते जैसे श्री कृष्ण जी पकड़ते थे और उन्हें वैसे ही नचाते जैसे श्री कृष्ण जी नाचते थे। इस प्रकार वे श्री कृष्ण जी के वियोग को भुलाने की चेष्टा करते थे। उन्हें सब देवी-देवता भूल गये। याद रह गये कृष्ण! केवल कृष्ण!!

गाँव-गाँव में रास मंडलियाँ कायम हो गयीं और छोटे-छोटे बच्चे पीताम्बर, मोर-मुकुट से युक्त होकर हाथ में वंशी लेकर कृष्ण बन कर ऊधम मचाने लगे। एक दूसरे के घरों से वे दूध-दही और मक्खन की चोरियाँ करने लगे और तरह-तरह के खेल और नाटक करने लगे। अपने बच्चों को कृष्ण का रूप धारण किये हुए देखते तो माता-पिताओं का उनके प्रति और भी प्रेम उमड़ता और वे इस रूप में उनकी बड़ी से बड़ी शरारतों को क्षमा कर देते।

क्रमशः यह समाचार श्री कृष्ण जी के पास द्वारका पहुँचा। ब्रज वासियों की अपने प्रति इस प्रेम और भक्ति की चर्चा सुन कर उनका हृदय उमड़ आया और उनके नेत्र सजल हो गये। उन्हें वे दिन याद आये जब वे ब्रज के गोप-गोपियों के साथ दिन को गौवें चराते और रातें नृत्य-विनोद में बिताते थे। परन्तु अब वे दिन लौट कर नहीं आ सकते थे, अब उन्होंने भारत भूमि में धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश करने का बीड़ा उठाया था। द्वारकापुरी के सुरक्षित समुद्री दुर्ग में स्वर्ण सिंहासन पर बैठे वे अपनी इसी नीति के सफल प्रसार का स्वप्न देख रहे थे।

परन्तु जब उन्होंने यह सुना कि ब्रजवासियों ने स्वयम् उन्हीं को भगवान मान कर पूजा आरम्भ कर दी है तब उन्हें चिन्ता हुई। उन्हें लगा कि भगवान की उपासना इस प्रकार नहीं हो सकती। परमेश्वर की प्राप्ति तो जीवन युद्ध में सफलता प्राप्त करना ही है। अतएव उन्होंने उद्धव को ब्रजवासियों को समझाने के लिये भेजा।

उद्धव की जीवनादर्श की प्रणाली सर्वथा भिन्न थी। वे योग को ही मोक्ष का साधन मानते थे। अतएव वे व्रजवासियों को अपना ही उपदेश सुनाने को चल पड़े। उन्हें मार्ग में ही वह ब्रह्मचारी मिल गया जो उन्हें व्रज से खोजने निकला था। उसने उन्हें बताया कि व्रज में उनके आश्रम का सर्वनाश हो गया है। यत्र-तत्र तपस्वियों के मृत शरीर पड़े हैं जिन्हें गिद्ध और शृगाल खा रहे हैं। रायण अपनी गुफा में जीवित हैं और राधा आपकी प्रतीक्षा करती हुई उसके द्वार पर बैठी हैं। व्रजवासियों में बड़ी निराशा है। जरासन्ध के आक्रमणों से चारों ओर की धरती में त्राहि-त्राहि मच गई है। गांव-नगर सब उजड़ गये हैं। कृषि व गोपालन सब काम बन्द पड़े हैं। मथुरा, व्रज सभी जगह भारी सङ्कट उपस्थित है।

यह सब सुन कर भरे हुए हृदय से उद्धव मथुरा आये और वहाँ एक दिन रह कर व्रज के अपने आश्रम में गये।

अपने आश्रम का इस प्रकार विनाश देख कर उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। जहाँ राधा अपने पति रायण को योग निद्रा से जागने की प्रतीक्षा में चिन्तित बैठी थीं, वहाँ वे पहुँचने भी न पाये थे कि गोपियों ने उन्हें घेर लिया और कृष्ण जी का कुशल समाचार पूछने लगीं। परन्तु किसी को कोई उत्तर न देकर उद्धव क्षण को समाधिस्त हो गये। अपने मन को एकाग्र करके उन्होंने दिव्य दृष्टि से देखा कि किस प्रकार से जरासन्ध ने उनके आश्रम का विनाश किया। उन्हें क्रोध आया कि उसी समय जरासन्ध को श्राप दें परन्तु तत्काल ही उन्हें विचार आया कि योगी को क्रोध में कोई कार्य नहीं करना चाहिए और मोह से सदा दूर रहना चाहिए। अतएव उन्होंने पुनः सांस खींची और क्षण भर में अपने चित्त को एकाग्र करके वीत राग हो गये।

अब उनका ध्यान सामने गोपियों से घिरी बैठी राधा की ओर गया। राधा और गोपियां पहले तो उद्धव के इस विचित्र योग-साधन से भयभीत-सी होकर आश्चर्य चकित उनकी ओर देखती रहीं। परन्तु जब उन्होंने आँखें खोलीं और गोपियों को लगा कि वे प्रकृतस्थ हो गये हैं तब वे रायण को योग निद्रा से जगाने और जागने पर उनको उपचार करने की विधि पूछने लगीं।

उद्धव ने संक्षेप में द्वारकापुरी का वर्णन किया और श्री कृष्ण जी के मार्ग को गलत बताते हुए उन सबको योग की दीक्षा लेने की सलाह दी।

गोपियों ने उत्तर दिया कि हमें योगाभ्यास करने की अब आवश्यकता नहीं है; क्योंकि जिस परमात्मा की प्राप्ति के लिये लोग योग का अभ्यास करते हैं वह परमात्मा तो हमें श्री कृष्ण जी के रूप में सहज ही प्राप्त हो गया है। उसको अब हम छोड़ नहीं सकतीं।

तब उद्धव हँसे। कहने लगे—'तुम सब कितनी मूर्ख हो। ब्रह्म असीम है, अनन्त है। श्री कृष्ण का या किसी का भी सीमित और नश्वर शरीर उसका प्रतीक नहीं हो सकता। वह तो शरीर को साधने और मन को एकाग्र करने से ही जाना जा सकता है।'

गोपियों ने कहा—'तुम ब्रह्म को इसी तरह जानो। इसमें हमारी तुम्हारी लड़ाई नहीं है। परन्तु हमें तो वह अपनी सम्पूर्ण असीमता समेटे श्री कृष्ण जी में सिमटा हुआ दिखाई पड़ रहा है अतएव हम तो अब श्री कृष्ण जी की ही पूजा करेंगी। श्री कृष्ण की पूजा ही ब्रह्म की पूजा है। आँख मूंद कर ध्यान लगा कर जिस ब्रह्म को तुम देखना चाहते हो वह हमें श्री कृष्ण जी के रूप में दिखाई देता है। अतएव उद्धव तुम हमें अब ठगो मत। योग की हमें आवश्यकता नहीं है।'

यह सुन कर उद्धव बोले—'हे गोपियो ! तुम सब जन्म और मरण इन दो बन्धनों से बँधी हो। ये बन्धन जब तक कटेंगे नहीं तुम बार-बार जन्म लेती और मरती रहोगी। योग के द्वारा ही तुम्हारे ये बन्धन कट सकते हैं।'

'कैसे ?' एक गोपी बोली।

उद्धव ने कहा—'सुनो ! योग के आठ चरण हैं। एक-एक चरण मनुष्य को मरमात्मा के निकट ले जाने वाले एक-एक द्वार के समान हैं। ये आठों द्वार पार करने पर जीव को ब्रह्मानन्द प्राप्त होते हैं और वह ब्रह्म में लीन हो जाता है।'

'क्या आप आठों द्वार प्राप्त करके ब्रह्म को देख आये हैं ?'

'क्यों नहीं ?'

'तब आप उस ब्रह्मानन्द को छोड़कर हम दुखी मानवों के बीच में क्यों आ जाते हैं। उसी में लीन क्यों नहीं रहते।'

'इसलिये कि मैं चाहता हूँ कि तुम भी उस ब्रह्मानन्द को प्राप्त करो।'

'महाराज आपकी हम पर बड़ी कृपा है। वे आठ द्वार कौन हैं ? जरा बताइये तो ?' एक गोपी बोली।

उद्धव कहते गये—'वे हैं, यम, नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि।'

यम का अर्थ है-ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन बिताना, अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलना। नियम है-शौच, स्नान, स्वाध्याय और ध्यान से तन और मन का बल बढ़ाना जिससे आगे बढ़ने में सहायता मिले। इतनी साधना हो जाने पर ही आसन की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। आसन का अर्थ है—शरीर को योगिक व्यायामों से दृढ़ बनाना और प्राणायाम का अर्थ है—आसन से सधे शरीर के अन्दर मन को एकाग्र करना। इसके पश्चात् प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि का नम्बर आता है। परन्तु वे योग की कठिन क्रियाएँ हैं। प्रथम चार का पहले तुम सब अभ्यास करो। इस प्रकार क्रमशः योग साधन से जब तुम समाधि में लीन हो जाओगी तब तुम सांसारिक बन्धनों से छूट जाओगी और तुम्हें परमात्मा की प्राप्ति होगी।'

'न महाराज ! हमसे यह कठिन साधना न होगी। और फिर ब्रह्म में हम इस तरह लीन होंगी तो हमारी गौएँ कौन चरायेगा और हमारे दूध-दधि को कौन धरे-उठायेगा। और रही यम, नियम की बात सो यम, नियम से तो हम रहती ही हैं। और मन भी हमारा श्री कृष्ण जी पर तत्काल एकाग्र हो जाता है। उनकी वंशी ध्वनि हमारे कानों में गूँज रही है, नील नभ, यमुना का नील सलिल, व्रज की नीलिमा मई सघन हरियाली, हमें उनके नील वर्ण का स्मरण दिलाती है। रवि शशि का प्रकाश हमें उनके पीताम्बर सा फैला दिखता है। सो महाराज श्री कृष्ण जी का चिन्तन करने में मन जैसा एकाग्र होता है वैसा किसी और प्रकार नहीं हो सकता।'

उद्धव बड़े सोच में पड़ गये। ये गोपियां क्या कह रही हैं ? उन्हें लगा कि युग बदल रहा है। योग और समाधि के दिन गये। दैनिक कर्म ही आने वाले युग में मनुष्य का सबसे बड़ा योगाभ्यास होगा। इस कर्म योग की शिक्षा कृष्ण इन्हें दे गये हैं। इसीलिये इन्होंने श्री कृष्ण को ही भगवान मान लिया है।

उन्होंने एकाएक ध्यानावस्थित होकर भविष्य को देखने की चेष्टा की।

तभी वहाँ गोपा आ पहुँची। उन्हें झकझोर कर बोली—'उद्धव ! रायण को……।'

'सोने दो।' उद्धव ने डांट कर कहा—'तुम मूर्खों के बीच में वे जीवित रह कर क्या करेंगे और मैं भी रायण के पास ही समाधिस्त होता हूँ। भागो ! भागो ! सब यहाँ से। खबरदार जो किसी ने रायण को या मुझको छुआ, और वे वहीं रायण के पास समाधिस्त हो गये।'

उस ब्रह्मचारी ने मिट्टी से गुफा का मुँह बन्द कर दिया और इस प्रकार उद्धव के आश्रम और उनकी योग-विद्या का अन्त हुआ। व्रज में श्री कृष्ण जी की पूजा और भी जोरों से चल पड़ी।

[नोट—१२ वां परिच्छेद राधा कृष्ण-मिलन जनवरी सन् ५६ में छपेगा।]

कविता की छीछालेदर

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हैं। हाल ही में भारत सरकार ने आपकी एक कविता-पुस्तक पर आपको ५ हजार का नक़द पारितोषिक प्रदान किया है। इस दृष्टि से आपकी यह कविता पुस्तक हिन्दी की सर्वोत्कृष्ट रचना और आप हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट कवि सहज ही सिद्ध हो गये।

मैंने सदा ही पंडित जी की रचनाएँ बड़े प्रेम से पढ़ी हैं। उनकी अपनी शैली है और उनकी कतिपय रचनाएँ बहुत ही रसपूर्ण और हृदय को आन्दोलित करने वाली हैं।

अतएव एक ऐसे समय में जब कि वे हिन्दी के सर्वोच्च कवि सिद्ध हो चुके हैं और उनके प्रति हिन्दी के पाठकों में श्रद्धा की गङ्गा लहरा रही है, वे कोई ऐसी कविता लिखें जिसे कविता की छीछालेदर कहना पड़े तो यह बड़े दुःख और आश्चर्य की बात होगी।

खेद है कि मुझे उनकी एक नवीनतम कविता की, जो 'सरस्वती' के दीपावली अङ्क में प्रकाशित हुई है कटु समालोचना करने को बाध्य होना पड़ा है। यह लेख पढ़ते समय पाठकों को 'सरस्वती' न खोजनी पड़े इसलिये मैं इस कविता को ज्यों का त्यों यहाँ उद्धृत करता हूँ:—

वीन और संगीन

सहज साँस क्यों ब्याल सा जग रहा है!
सुखी-स्वप्न अब बोझ-सा लग रहा है।
महल उठ रहे, झोपड़ी खो गई है,
कि ईमान ईमान को ठग रहा है।
बहारें थमीं क्यों गगन भेद खोले,
लहर से कहो दौड़ कर देख तो ले।

× × ×

गगन है, कहाँ हैं चपल पाँख मेरे?
कहाँ हैं सखा, सूझ गुस्ताख मेरे?
कहो किस दिशा में लुटा है सबेरा?
कि संकल्प किसने किये राख मेरे?
पथिक से कहो, सीस गंगा उठाये,
प्रकृति को पिये, चाँदनी में नहाये।

× × ×

उठा लायँ, उट्ठो, गगन से चुराकर,
अँधेरा उजेला बराबर बराबर।
प्रजातन्त्र है, प्राण हैं कोटि मेरे,
चलो प्राण-प्रतिमा निरख लें सजा कर।
जहाँ आज मीड़ों में संगीन बोले,
वहीं गोद में गूँजती बीन बोले!

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी

पाठकों से प्रार्थना है कि इस कविता को वे ध्यान से पढ़ें। एक बार में समझ में न आवे तो दो बार पढ़ें और सोचें कि यह कविता का उपहास है या नहीं।

पहली और दूसरी पंक्तियां शब्दों का बोरका ओढ़े दो पाकिस्तानी स्त्रियाँ-सी खड़ी हैं। और जान पड़ता है कि वे किसी प्रकार अपना रूप दिखाने को तैयार नहीं हैं। हो सकता है, सरस्वती के स्वनाम धन्य वर्तमान सम्पादक पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी ने अपने बुद्धि की बलिष्ठ बांह से बलपूर्वक यह बोरका खींच-खांच कर इन दोनों अप्सराओं को देख और पहचान लिया हो। परन्तु शेष पाठकों को इस बोरके के भीतर देख पाना असम्भव ही है। मैं तो इस प्रयत्न में सर्वथा असफल हुआ हूँ। पाठक

चेष्टा करें और कुछ समझें तो मुझे भी बतावें कि क्या देखा या समझा ?

दूसरी दो पंक्तियाँ इस प्रकार होतीं तो आज के युग में अधिक सार्थक होतीं—

> महल ढह रहे झोपड़ी जग गई है
> न इन्सान इन्सान को ठग सकेगा !

क्योंकि इस देश में महल उठाने वाले राजाओं का राज-पाट समाप्त हो गया है। बड़े-बड़े सेठ-साहूकार भी समाप्त होने जा रहे हैं। महल कौन उठावेगा ? और भारतवर्ष तो अभी भी झोपड़ियों का देश बना है। यहाँ कोई यह कहे कि झोपड़ी खो गई है तो वह अन्धा या पागल ही हो सकता है। हां झोपड़ियों में जागरण जरूर है। ईमान ईमान को कैसे ठगेगा ? यह समझ में नहीं आया ? इस तरह तो यह भी कह सकते हैं—आग आग को ठग रही है। नमक नमक को ठग रहा है। चीनी चीनी को ठग रही है। पर कैसे ? सत्य सत्य को कैसे ठग सकता है ? यह तो बड़ा भारी रहस्यवाद है। हाँ इन्सान इन्सान को ठगता आ रहा था। महल उठाने वाले झोपड़ी में रहने वालों को ठग रहे थे। अब महल ढह रहे हैं और यह ठगी कम हो रही है। आधुनिक युग में चतुर्वेदी जी को यह न दिखाई देकर उल्टा दिखाई दे रहा है, यह कैसे ? शायद वे अपनी बुद्धि और विवेक का चश्मा दिल्ली की उसी सभा में छोड़ आये जिसमें पांच हजार का पारितोषिक लेने गये थे।

तीसरी दो पंक्तियाँ इस प्रथम षटपदी के अन्तिम दो चरण हैं और किसी हद तक सुन्दर और सार्थक हैं। परन्तु उनके सहित पूरा छन्द ऐसा लगता है जैसे कोई मुर्दा पड़ा हो और अपने दोनों पैर चला रहा हो कि जिससे जान पड़े कि जिन्दा है।

अब दूसरी षटपदी को लीजिये। चतुर्वेदी जी कहते हैं—'गगन है' ठीक है। गगन के अस्तित्व को कौन अस्वीकार कर सकता है ? परन्तु जब वे पूछते हैं—कहाँ हैं चपल पांख मेरे ?...आदि-आदि।' तब आश्चर्य होता है ? क्योंकि युगों की दासता से मुक्त होकर आज 'भारतीय आत्मा' ने भी विश्व के विस्तृत गगन में पंख फड़फड़ाना आरम्भ किया है ? नव निर्माण की इस घड़ी में जागरण की इस बेला में, चतुर्वेदी जी ये निराशा भरे प्रश्न किससे पूछ रहे हैं ? भारतीय राष्ट्र ने युगों के बाद आज 'सबेरा' पाया है। किसमें सामर्थ्य है कि उसका यह सबेरा लूट ले और उसके संकल्प को राख कर दे ? कवि के प्रवचन को जनता के हृदय की धड़कन मानें तो भारतीय जनता का ऐसा कौन-सा संकल्प है जो राख हो गया है ? और फिर वह सकल्प ही क्या जो राख हो जाय ? कुछ समझ में नहीं आता। यह दूसरा षटपदी छन्द भी अधमरा-सा प्रतीत होता है और केवल अपनी टांगें हिला रहा है, पथिकों को प्रोत्साहन देने के लिये ? पर पथिक का काम तो अपने पथ पर बढ़ते जाना है न कि कहीं खड़े होकर प्रकृति की छटा देखना या चाँदनी में नहाना। परन्तु शायद चतुर्वेदी जी का संकेत यह है कि जब सकल्प ही राख हो गया तब पथिक के लिये भी यही उचित है कि वह पथ भ्रष्ट हो जाये ?

अब तीसरी षटपदी लीजिये। प्रथम पंक्ति बड़ी ओज पूर्ण है। उठने का आह्वान करती है। परन्तु जो उठ सकता है और उठ कर गगन को नाप सकता है उसे कोई चीज चुरा कर लाने की क्या आवश्यकता है ? और फिर कोई अँधेरा कैसे चुरा सकता है और अँधेरे को करेगा क्या ? खैर ! यह सन्तोष की बात है कि चतुर्वेदी जी को यह पता है कि यहाँ प्रजातन्त्र है और एक-एक कोटि-कोटि प्राण हैं। सुन्दर विचार हैं। यहाँ हम कह सकते हैं कि प्रथम दो छन्दों में उन्होंने काव्य के जिस मुर्दे को प्रस्तुत किया, इस तीसरे छन्द की प्रथम चार पंक्तियों के रूप में उसे अच्छा कफन उढ़ाया। परन्तु इस तीसरे छन्द की अन्तिम दो पंक्तियां ऐसी लगती हैं कि चतुर्वेदी जी ने जो सुन्दर कफन तैयार किया वे मुर्दे की टांगों को न ढक सकीं और टांगें खुली ही रह गयीं और उन टांगों का हिलना भी बेढंगा हो

गया। 'मीड़ों में संगीन का बोलना' और 'गोद में गूँजती बीन का बोलना' ऐसे प्रयोग हैं जिनको नौसिखिये ही कर सकते हैं, जिनको काव्य शास्त्र का ककहरा भी नहीं मालूम। सङ्गीन चलती है, काटती है, रक्त बहाती है, बोलती नहीं और बीन का गूँजना ही काफी है। तुक के लिये 'गूँजने' के साथ 'बोले' का भी प्रयोग करना पुनरुक्ति है जो काव्य में दोष है।

माना कि अपने-अपने स्थान पर सब पंक्तियाँ थोड़ी या बहुत सुन्दर हैं। परन्तु सम्पूर्ण कविता का क्या अर्थ है या वह किधर संकेत करती है यह कुछ समझ में नहीं आता है। ऐसा लगता है जैसे कोई पागल प्रलाप कर रहा हो। पागल के मुँह से निकले कोई-कोई वाक्य बहुत सुन्दर होते हैं परन्तु सम्पूर्ण वाक्य समूहों को एक साथ मिला कर देखने से ही उसका पागलपन प्रमाणित होता है। वैसे ही यह कविता भी है।

पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी ने जब 'सरस्वती' का सम्पादन कार्य अपने हाथों में लिया था तब घोषणा की थी कि स्वर्गीय महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती' से हटने के बाद यह पत्रिका अपने पुण्य प्रताप से चलती रही। यानी द्विवेदी जी के बाद जो सम्पादक हुए वे सब निकम्मे थे। उन्होंने कुछ न किया था। मैं भी लगभग १६–१७ वर्ष सरस्वती का सम्पादक रहा और जब चतुर्वेदी जी का इस आशय का नोट पढ़ा और उनके द्वारा 'सरस्वती' के सुन्दर सम्पादित अङ्क देखे तब अपनी तुच्छता पर बहुत शर्म लगी। वास्तव में पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी जी द्वारा इधर सरस्वती के जितने भी अङ्क निकले हैं वे सब सजीव और सुन्दर हैं। अतएव मैंने स्वयम् चतुर्वेदी जी की सेवा में उपस्थित होकर उनकी प्रशंसा की और अपनी तुच्छता को स्वीकार किया। परन्तु जब 'सरस्वती' का दीपावली अङ्क देखा और उसमें यह कविता पढ़ी तब बड़ा दुःख हुआ ? मैं पूछता हूँ कि क्या ऐसी ही निरर्थक और बेहूदी कविताएँ छाप कर पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी स्वर्गीय पंडित महाबीर प्रसाद द्विवेदी का नाम अमर करेंगे और उनकी परम्परा को कायम रखेंगे ? पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी कविता के अच्छे पारखी हैं। समझ में नहीं आता ऐसी थर्ड क्लास कविता उन्होंने उस 'सरस्वती' में क्यों छापी जिसको सँवारने को वे 'द्विवेदी जी' का नाम लेकर कटिबद्ध हुए हैं।

अन्त में श्रद्धेय पंडित माखनलाल चतुर्वेदी से भी मुझे एक निवेदन करना है। वे हिन्दी के माने हुए कवि हैं। हिन्दी के इतिहास में उनका स्थान सुरक्षित है। यदि वे विचार के साथ सुन्दर छन्द रचना नहीं कर सकते तो लेखनी को विश्राम दें। उनकी कोई हानि न होगी परन्तु यदि ऐसी ऊटपटांग रचनाएँ वे लिखते रहे और समाचार पत्रों में छपाते रहे तो मानों अपने ही हाथों अपने यश पर कारिख पोतेंगे।

सद्विचार

जो स्वयम् का ही सोचा करता है वह अपना शत्रु है और शत्रुओं से घिरा रहता है। जो अपने को भुला देता है वह अपना रक्षक है और मित्रों से घिरा रहता है।

प्रसिद्धि वीरोचित पराक्रम की सुगन्ध है —सु०

हमारा जीवन एक छोटी पुस्तक-सा है जिसे केवल विनोद के लिये कोई महान् व्यक्ति पढ़ रहा हो।

कुलीनता का सबसे सच्चा चिह्न दया है।

क्या तुम जीवन से प्रेम करते हो ? तो फिर समय को व्यर्थ नष्ट न होने दो क्योंकि वही तो जीवन तत्व है।

उषाकाल अपने हाथों में सोना लाता है।

सामाजिक कहानी

आश्रय-हीना

लेखक, श्री शारदाप्रसाद श्रीवास्तव 'विद्यार्थी'

[१]

रेलगाड़ी के उस डिब्बे में मेरे अतिरिक्त एक सज्जन और थे जो धनी सेठ प्रतीत होते थे। मैं गुसुलखाने में गया, किन्तु उसका किवाड़ा खोलने के साथ ही एक दम चौंक कर पीछे हट गया। देखा कि उसमें एक युवती छिपी बैठी है। मैं चिल्ला पड़ा—'कौन हो तुम ? क्यों छिपी बैठी हो ?'

वह डरती-डरती बाहर आई। बहुत ही सुन्दर तथा स्वस्थ थी। परन्तु कपड़े काफी गन्दे थे। मैंने डांट कर पूछा—'तू यहां क्यों आयी ? अभी पुलीस में देता हूँ।'

वह डर कर कांपने लगी। पुलीस का नाम सुनते ही मेरे पैरों पर गिर कर गिड़गिड़ाते हुए बोली—'साहब ! पुलीस को न बुलाओ। मैं बहुत दुखिया हूँ। मुझे दया की भिक्षा दो। गुन्डों ने मेरा पीछा किया था। उनसे जान बचाने के लिये यहां घुस आई हूँ।' कहते-कहते वह रो पड़ी। उसकी दशा पर दया हो आई।

'अच्छा ! अपना हाल सच-सच कहो।' मैंने कहा। वह कुछ कहने ही जा रही थी, कि मेरे सहयात्री आंख मलते हुए बीच ही में बोल पड़े—'क्या पता जनाब ! इसके साथ बदमाशों का गिरोह हो और यह मिल कर हम लोगों पर वार करा दे ? उनकी बात मुझे भी जंच गई। मैंने कड़कते हुए पुनः उससे कहा—'यदि तुमने एक शब्द भी असत्य कहा तो फौरन जेल में बन्द करा दूंगा। पर हां यदि तुमने सत्य भाषण किया तो अवश्य तुम्हारी सहायता की जायगी।'

वह सुबकते हुए मेरे पैरों में गिर पड़ी और कहने लगी—'भैया ! मैं उच्च कुल की हिन्दू कन्या हूँ। दुर्भाग्य से मातृ-पितृ हीन हो जाने से मैं दिल्ली आई। क्योंकि यहाँ मेरी एक बुआ रहती थीं। किन्तु बुआ को मैं भार स्वरूप प्रतीत हुई। नित्य ही वह ताने सुनाती रहतीं। एक दिन चन्द्र ग्रहण के पुण्य पर्व पर वह मुझे लेकर बनारस गईं और मैं कह नहीं सकती, जान-बूझ कर या कैसे अपार भीड़ में विलुप्त हो गयीं।

एक भीमकाय व्यक्ति ने मुझे सान्त्वना दी कि वह मुझे मेरी बुआ के पास पहुँचा देगा। उसके दो साथी भी थे। उनकी बातों से मुझे लगा कि वे पता नहीं मुझे कहाँ लिये जा रहे हैं।

मैं उनसे छुटकारा पाने का अनेक मार्ग ढूँढ़ती किन्तु वे लोग मेरे साथ छाया की भांति लगे रहते। उन तीनों ने मुझे कितने स्थानों का दर्शन कराया, मैं कह नहीं सकती। आज दोपहर से इसी स्टेशन पर थे, क्योंकि गाड़ी बदलनी थी। स्टेशन पर पता चला कि उनकी गाड़ी आने में दो घन्टे की देर है, पहिले बाम्बे मेल आवेगा। उनमें से दो आदमी बाजार की ओर चले गये। तीसरा पास बैठा था।

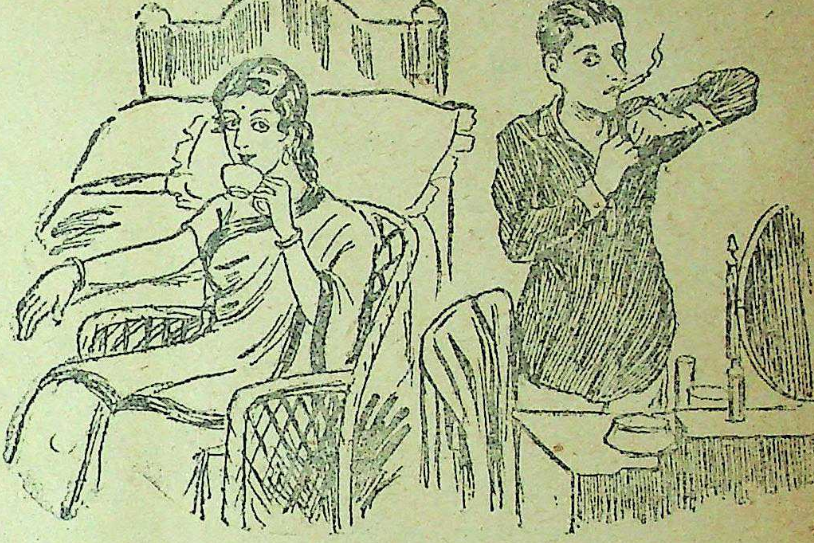

'जब इसी को घर में रखना था तो मुझे लाने की क्या आवश्यकता थी।'

मैंने रोकर उससे कहा—'पाखाना जाऊँगी। पेट में बड़ी पीड़ा है। वह बड़ी दूर तक मेरे साथ आया मैंने कहा—'तुम जाओ! मैं चली आऊँगी और मैं टट्टी में घुस गई। वह जब कुछ आगे बढ़ गया तो मैं चुपके-चुपके वहाँ से निकल कर यात्रियों की भीड़ में छिपती हुई इसी डिब्बे के पास आ पहुँची। फिर मैं उसकी दृष्टि बचा कर इसमें घुस आई। उस समय आप दोनों साहब नहीं थे। मैं जाकर पाखाने में छिप रही। और तब से यहीं बैठी हूँ। अब आप की शरण में हूँ।' दुख और भय के मारे वह फूट-फूट कर रोने लगी।

मुझे बड़ा तरस आया। मैंने कहा—'जब तुमने मुझे भाई कहा है तो चिन्ता न करो। तुम्हें अब कोई भय नहीं।' सेठ जी मुझे आश्चर्य-चकित नेत्रों से देखने लगे।

'क्या नाम है तुम्हारा ?' थोड़ी देर बाद मैंने पूछा। उसने बड़े ही विनीत स्वर में कहा—'शीला।' फिर मेरी आज्ञानुसार वह वहीं जमीन पर लेट गई। मुझे भी नींद आ रही थी। उस दुखिया लड़की की कारुणिक दशा को सोचते-विचारते न जाने कब मैं सो गया। मेल अपनी पूरी रफ्तार से भागा जा रहा था।

[२]

घर आकर शीला को मैंने अपनी माता के सुपुर्द कर दिया। माता जी शीला की देख-भाल करने लगीं। कभी-कभी वे उसकी बड़ी प्रशंसा करतीं—बड़ी भली लड़की है। कितना काम करती है।

एक दोपहर को मैं भोजन कर रहा था। मैंने कहा—'आज तो तुमने खाना बनाने में कमाल ही कर दिया अम्मा ?'

माता जी बोलीं—'बेटा! यह सब शीला की कारीगरी है।' मैं शीला की भोजन कला पर दंग रह गया। मैंने कहा—'बहुत चतुर हो शीला! तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं है इस नये घर में ?'

'भैया! मुझे एक ही कष्ट है—अब शीघ्रातिशीघ्र भाभी ला दो।' शीला ने मुस्कराते हुए कहा।

'अच्छा! तुम्हारे लिए पहले भाभी लाऊँ अथवा दूल्हा ?' मैंने कहा।

'हटो भी भैया! मुझे भाभी चाहिए।' शीला ने लजा कर सिर नीचे कर लिया।

...मेरी शादी की तिथि निश्चित हो गई। शीला की प्रसन्नता की सीमा न थी। नियत समय पर बड़ी धूम-धाम से मेरा ब्याह सम्पन्न हुआ। मेरी पत्नी शिक्षित तथा सुधरे हुए विचारों की है।

मैंने शीला के विषय में सारी गाथा प्रथम मिलन में ही बता दी थी। मैंने उससे यह भी प्रस्ताव किया कि वह उस असहाय युवती को अपनी शिक्षा-दीक्षा से सुयोग्य बना दे।

प्रसन्नता में दिन व्यतीत होने लगे। शीला अपनी भाभी के पीछे परछाईं की भांति डोलती फिरती। घर के सारे काम वह स्वयम् करती। किन्तु शीला का रहना उसे भला नहीं लग रहा था। बात बात में वह उसको फटकार देती थी।

एक दिन शाम को मैं दफ्तर से आकर चुपचाप अपने कमरे में लेट रहा। किसी को कुछ पता नहीं था। घर का वातावरण पूर्णतया शान्त था। सहसा मुझे शान्ति का कर्कश स्वर सुनाई पड़ा। वह कह रही थी—'मेरा घर अनाथालय तो नहीं? तू क्यों दूसरे के घर में बेहयाई के साथ अड्डा जमाये है? तेरा क्या रिश्ता है जो इतना प्रेम प्रदर्शित करती है? शीला रुआसी-सी होकर कह रही थी—'भाभी जी! आप क्रोधित न हों। वह मेरे भाई हैं। एक दीन-दुखिया बहिन पर उन्हें दया आयी। यदि आपको मेरा रहना बुरा लगता है तो मैं चली जाऊँगी। मैं आपको कष्ट नहीं देना चाहती।' शान्ति व्यंगात्मक स्वर में बोली—'बड़ी आई भाई वाली। टट्टी की ओट में शिकार? छः माह से शान्त देख रही हूँ। तू क्यों उनके पीछे छाया-सी लगी रहती है?

वह रोते-रोते बोली—'भाभी! कुछ भी कहो। किन्तु कलंक न लगाओ।...अच्छा भाभी! जा रही हूँ। क्षमा करना...। शीला ने शान्ति के चरण स्पर्श करके ज्योंही दरवाजे की डेहरी पर पैर रक्खा मुझ से न रहा गया। मैंने कड़कते हुए कहा—'खबरदार! शीला घर के बाहर पैर न रखना।'

शान्ति चौंकी और क्रोध पूर्ण मुद्रा में बोली—'जब इसी को घर में रखना था तो मुझे लाने की क्या आवश्यकता थी?' मैं तिलमिला उठा—'शांति तुम्हें शर्म नहीं आती अपने निम्न विचारों पर?' शीला अश्रु बहाते हुए कह रही थी—'भैया! मुझ अभागिन के कारण गृह लक्ष्मी को रुष्ट न करें। मैं कहीं भी परिश्रम करके उदर पूर्ति कर लूँगी।' फिर वह शीघ्रता से बाहर चली गई।

[३]

प्रायः नित्य ही मेरे नेत्र शीला को यत्र-तत्र खोजते। परन्तु सब व्यर्थ। शान्ति कभी-कभी चिढ़ कर कहती—'मुझे क्या पता था कि उस लड़की पर आपका इतना प्रेम है। है भी तो गजब की खूबसूरत।' मैं चीख पड़ता—'खामोश! मुझे उससे प्रेम नहीं। किन्तु ममता अवश्य है। जैसा कि एक भाई को अपनी बहिन से होना चाहिए। उस ममता की विशुद्धता को तुम्हारे शंका युक्त एवम् स्वार्थी नेत्र न देख सकेंगे।'

मुझे यही चिन्ता गलाये जा रही थी—'जिस असहाया को बदमाशों के चंगुल से मुक्त किया था, उसी को पुनः दर-दर की ठोकर खाने के लिये शांति ने घर से निकाल दिया और मैं एक बहिन की रक्षा न कर सका।'

[४]

एक दिन शान्ति ने चित्र देखने का प्रस्ताव किया। मैंने भी सोचा, दिल बहल जायगा और फिर शान्ति के साथ 'प्लाजा टाकीज' चल पड़ा। 'सूर्य कुन्ड नाका' के निकट सहसा मेरी दृष्टि एक युवती पर पड़ी—'वह शीला ही थी।' भीड़ तीव्र थी। मोटर से उतर कर मैंने इधर-उधर देखा। किन्तु पता नहीं कहाँ वह अदृश्य हो गई। फिर नहीं दिखी। मेरा मन सिनेमा में न लगा। शीला के प्रति ही सोचता रहा, तिस पर आज उसकी स्मृति ताजी हो गई थी। दूसरे दिन मैंने पूरे नगर में मोटर दौड़ाई। परन्तु शीला का पता न चला।

...एक दिन नौ बजे रात में शान्ति के साथ एक दावत में जा रहा था। खुल्दाबाद के आगे बढ़ने पर सहसा शान्ति चिल्ला पड़ी—'शीला! वह देखो, उस ऊंचे वाले मकान में घुस गई।' मैंने चौंकते हुए पूछा—'कहाँ?'

'तेजी से चलिये। बायें हाथ पीली बिल्डिङ्ग।' शान्ति ने कहा।

मैं अन्धाधुन्ध मोटर चलाने लगा। थोड़ी दूर जाने पर शान्ति के संकेतानुसार मैंने एक विशाल कोठी के सामने मोटर रोक दी। मोटर से उतरते ही देखा तीन व्यक्ति अँग्रेजी पोशाक में खड़े हैं। एक चिल्ला रहा है—'ओ सरदार जी! हमारी औरत हमें वापस कर दीजिये। हमें क्यों बिला वजह परेशान करने पर तुले हैं। मालूम होता है, सरदार जी मेरी 'वाइफ' पर आसक्त हो गये हैं।'

शान्ति को मोटर में ही छोड़ कर मैं उस मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। दूसरी मंजिल पर पहुँचने पर बगल वाले कमरे में बड़ा शोर हो रहा था। कोई कह रहा था—'नादान छोकरी! हमणे तुझे ऐसा नहीं समझा था। तुमणे हमें धोखा दिया हिन्दू बन कर तूणे हमारा खाना पकाया। हमारा धर्म नष्ट कर दिया। नीचे खड़ा क्रिश्चियन कह रहा है कि हमारा 'वाइफ' है। खैर! जाणे दो। हमारे ऊपर अब रहम करो, और जाओ यहाँ से।'

आवाज शीला की थी। वह रुँधे कण्ठ से कह रही थी—'सरदार जी! मुझे कत्ल कर दो। विष भले ही दे दो। पर घर से जाने की आज्ञा न दो। मैं सौगन्ध पूर्वक कहती हूँ कि मैं हिन्दू हूँ। नीचे खड़े लोग गुन्डे हैं। इनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। आपको चकमा दे रहे हैं।' एक तीव्र नारी स्वर प्रस्फुटित हुआ—'तू माफ कर बाबा! हम किसी शरीफ को गुन्डा कैसे समझें? जो भी हो, तुझे रख कर हम तूफाण नहीं मोल लेंगे।'

मुझे समझने को कुछ शेष न रहा। मैंने बरामदे में लगे 'काल-बेल' को दबाया। भीतर वही औरत चिल्लाई—'ठहर जाणा। समझकर खोलणा पता नहीं कौण है? किन्तु दरवाजा खुल गया। एक अधेड़ दढ़ियल सज्जन ने साश्चर्य कहा—'आप कौण हैं? और क्या काम है? मैंने अपना परिचय दिया। सरदार जी ने मुझे ससम्मान भीतर बुलाया। कमरे में पैर रखते ही शीला जो सिर नीचे किये कमरे की फर्श को भिगोने में व्यस्त थी, मुझे देख कर चौंकते हुए दौड़ कर मुझसे लिपट गई और सिसकती हुई वह बोली—'भैया तुम कहाँ?'

सरदार जी व उनकी पत्नी मुझे अवाक् देखने लगे। कुछ क्षणों के लिये वह लोग किंकर्तव्य-विमूढ़ से हो गये। फिर रुकते-रुकते दोनों एक स्वर से बोले—'क्या आप इसके भाई हैं?' मैंने गम्भीरता से कहा—'जी हाँ सरदार जी! यह मेरी बहिन है। घर से रुष्ट होकर चली आई थी। मैं खोजते-खोजते परेशान हो गया था, बड़ी मुश्किल से पता मिला। इसी के कारण आप लोगों के दर्शन का अवसर प्राप्त हुआ। भाग्य अच्छे थे, नहीं तो अभी और भी भटकना पड़ता।'

क्षमा करणा बाबू साव! हमणे नहीं जाणा था, वरणा आपको तकलीफ करने की जरूरत न पड़ती।' कहते हुए सारदार जी ने अपने फोन का रिसीवर उठा लिया और फिर मैंने देखा, सरदार जी नीचे खड़े सज्जनों से कह रहे हैं—'बाबू साव! आप लोग घबराइये नहीं। आपका 'वाइफ' अपना सामाण बांध रहा है। जाता है।'

मेरी और सरदार जी में फुसफुसाहट हो ही रही थी कि पुलीस का एक जत्था सरदार जी की कोठी पर आ उपस्थित हुआ। तीनों शरीफ बदमाशों को पकड़वा दिया गया कि यह लड़की भगाने वालों का गिरोह है।

मैं शीला को लेकर नीचे आया। शान्ति ने शीला को देखते ही गले से लगा लिया। शीला सुबुक पड़ी। किन्तु सम्भवतः वह हर्ष के आँसू थे।

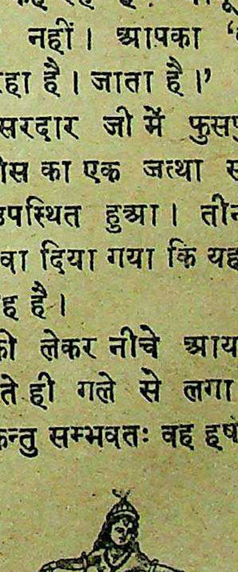

वीरबाला ग्रीजेल

एक अँग्रेज कुमारी की कहानी जिसने अपने पिता को फांसी से बचाया।

लेखिका, सुश्री कुमुद

पुरुष के वेश में अपनी पुत्री ग्रीजेल को जेल के फाटक पर देख कांकरेल को बड़ा आश्चर्य हुआ। कांकरेल को फाँसी की सजा सुनाई गयी थी। ब्रिटेन में तब जेम्स द्वितीय का शासन था, जो अपने अन्याय और अत्याचार के लिये काफी बदनाम था। उस समय जिस व्यक्ति को फाँसी की सजा सुनाई जाती उससे परिवार का कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता था। अधिकारियों को यह मालूम था कि कुमारी ग्रीजेल कांकरेल की पुत्री है और उनकी आँखों में धूल झोंकने के लिये उसका वेष-परिवर्तन आवश्यक हो गया था।

कांकरेल ने जब अपनी पुत्री को पहचाना तब उसकी आँखों से आँसू की धारा फूट चली। उसे भय था कि अधिकारी कहीं देख न लें और ग्रीजेल कहीं पकड़ न ली जाय। अतः आँसू रोकने की वह बार-बार कोशिश करता पर सफल नहीं हो पाता, कुमारी ग्रीजेल अपने पिता की अवस्था देख चुपचाप खड़ी थी। अन्त में उसने पूछा—'आपके बचने का कोई उपाय है?'

कांकरेल—'हाँ, यदि महाराज क्षमा-दान कर दें। पर यह सम्भव कैसे है। महाराज लन्दन में हैं और लन्दन यहाँ से इतनी दूर है कि जब तक वहाँ कोई पहुँच सकेगा तब तक तो मुझे फाँसी हो जायगी।'

ग्रीजेल बिना कुछ कहे वहाँ से लौट आयी। कांकरेल आँखों का आँसू पी कर रह गया। अपनी पुत्री के साहस पर उसे आश्चर्य हुआ, पर उसे बचाने में वह सफल हो सकेगी इस पर उसे विश्वास नहीं हुआ।

ग्रीजेल ने अपने भाई को समझाया कि वे महाराज से प्रार्थना कर पिता जी के लिये क्षमा-दान की याचना करें। उसका भाई इसके लिये तैयार था पर सामने यही प्रश्न था कि जब तक वह लन्दन पहुँचे तब तक पिता जी कहीं फाँसी पर न लटका दिये जायँ। उसने कहा भी कि अब जाने से लाभ ही क्या होगा। पिता जी को हम किसी भी हालत में बचा नहीं सकते। फिर भी ग्रीजेल अपनी जिद पर अड़ी रही और उसके भाई को प्रार्थना पत्र के साथ लन्दन के लिये रवाना होना पड़ा।

ग्रीजेल को चिन्ता थी कि अपने पिता की फाँसी रोकी कैसे जाय। फाँसी का दिन एक दम निकट था। उस समय रेल और विमान की व्यवस्था नहीं थी। केवल घोड़े की सवारी प्रचलित थी। उसके भाई को लन्दन जाकर वहाँ से लौटने में कम से कम एक सप्ताह का समय लग जाता। अन्त में उसने निश्चय किया कि डाकिये के हाथ से ही अपने पिता जी के प्राण-दण्ड के आदेश की चिट्ठी लेकर फाड़ दी जाय।

ग्रीजेल नियत दिन को डाकिये के मार्ग पर खड़ी हो गई। वह पुरुष के वेष में थी। घोड़े पर सवार थी और हाथ में एक भरी हुई पिस्तौल भी थी। डाकिया आया। ग्रीजेल ने उसे आगे बढ़ने से रोका और बाद में कड़क कर बोली कि सारी डाक मुझे दे दो। पर डाकिया इसके लिये तैयार नहीं था। उसके पास भी अपनी भरी पिस्तौल थी। उस ने वह ग्रीजेल पर चला दी। एक-एक कर उसने धांय-धांय कई गोलियाँ दाग दीं। ग्रीजेल सामने खड़ी हँसती रही। गोली उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी।

डाकिया डर गया। अपनी गोली के असफल होने की उसे कतई आशंका नहीं थी। ग्रीजेल ने तब डाक का थैला उसके हाथ से छीन लिया। उसे लेकर वहाँ से वह भाग चली। डाकिया कुछ नहीं

लाओस के युवराज भारत में

पिछले दिनों लाओस के युवराज अपनी पत्नी, पुत्री और लाओस के प्रधान मन्त्री के साथ भारत भ्रमण के लिये पधारे थे। आपने सारनाथ, बुद्धगया आदि बौद्ध तीर्थों को देखा। चित्र में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू नई दिल्ली में हवाई अड्डे पर आपका स्वागत कर रहे हैं।

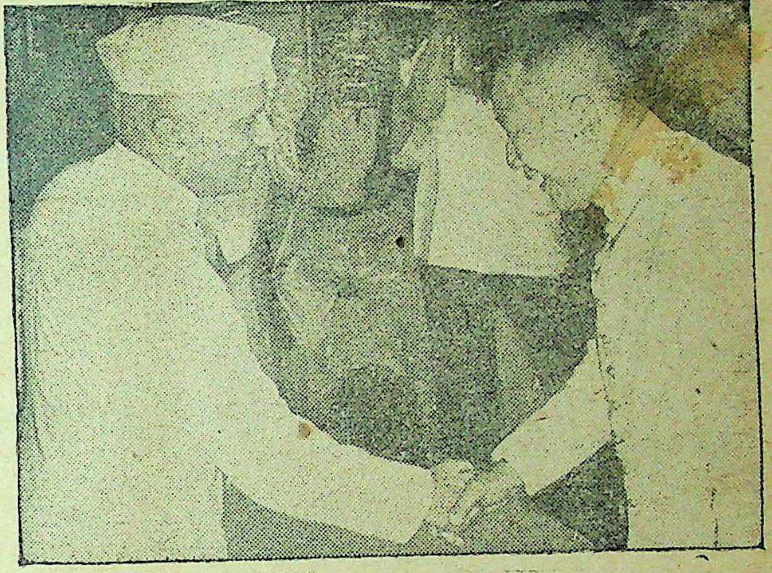

बोल सका। चुपचाप खड़ा देखता रहा कि वह किधर और कहाँ जा रही है।

ग्रीजेल ने रास्ते में थैला खोला। उसमें से उसने अपने पिता के प्राण-दण्ड के आदेश की चिट्ठी निकाल ली और बाकी चिट्ठियाँ थैले के साथ रास्ते में ही फेंक दीं। डाकिया भी धीरे-धीरे वहाँ पहुँचा और थैला उठा कर चलता बना। बाद में ग्रीजेल ने फाँसी का फरमान फाड़ कर जला डाला।

डाकिये के रास्ते में एक सराय पड़ती थी। वहीं पर वह अपनी रात गुजारता था। ग्रीजेल ने निश्चय किया था कि वहीं पर वह थैले से फरमान वाली चिट्ठी निकाल लेगी, पर वहाँ सफल नहीं हो सकी। डाकिया थैला अपने सिरहाने रख कर सोया था और उसके आस-पास कुछ अन्य व्यक्ति भी सोये हुए थे। वह वहाँ थैला छीनने का प्रयास करती तो सम्भव था कि हल्ला हो जाता और अपने प्रयास में वह विफल हो जाती। उसने वहाँ देखा कि डाकिया की पिस्तौल उसके हाथ के पास पड़ी हुई है उसने पिस्तौल उठा ली और उसमें की सारी गोलियाँ निकाल कर उसके स्थान पर झूठी गोलियां भर दीं। फिर उसे वहीं और उसी अवस्था में रख चली आयी थी। उसकी यह चाल सफल रही और दूसरे दिन डाकिया की पिस्तौल उस पर कोई काम नहीं कर सकी।

अधिकारियों के पास फाँसी का फरमान नहीं पहुँच सका। उन्हें फरमान आने तक के लिये फांसी की तिथि बढ़ा देनी पड़ी। दूसरी ओर ग्रोजेल का भाई प्रार्थना-पत्र लेकर महाराज के पास पहुँचा। उसने बड़े करुण स्वर में अपने परिवार की अवस्था उनके सामने रखी। जेम्स पिघल गये और उन्होंने क्षमा-दान कर दिया। कांकरेल जब जेल से बाहर हुआ और उसने यह सुना कि अपनी पुत्री की करामात से ही वह मृत्यु की गोद से निकल आया है तो फिर उसकी आँखों से आंसुओं की धारा फूट चली। पर यह आँसू किसी और तरह का था।

सुन्दर गुजराती कहानी

मूल लेखक, स्व० श्री रमणलाल व० देसाई एम० ए०

तीन पीढ़ियां

अनुवादक, श्री एम० एल० मुन्शी बी० ए०

[१]

विशाखा एक ऐसी युवती थी जिसके स्वभाव के बारे में पसन्दगी और नापसन्दगी के बारे में अन्दाज लगाना बड़ा मुश्किल था। वह छोटी थी तभी से उसके अनिश्चित बर्ताव और मनस्वी मानस की ओर सबका ध्यान गया था। कभी वह अपनी पाठ्य पुस्तकें पढ़ने में इतनी तल्लीन रहती कि देखने वालों को यही लगे कि विशाखा प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होगी। परीक्षा पास आये तब एकाएक चित्रकला का शौख इतना तीव्र हो जाता कि पढ़ना भूल कर वह चित्र ही बनाया करती। कभी नवरात्रि या दूसरे व्रत इतनी निष्ठा से करती मानो वह कोई योगिनी बनने के ही लिये पैदा हुई हो और अगर कभी वह नाटक या अन्य संगीत जलसों में हिस्सा लेने लगे तो खाना-पीना भूल कर उसी में मशगूल रहती।

यह तो ठीक, परन्तु अपनी सहेलियों के प्रति भी उसका ऐसा ही आचरण होता। एक महीने तक उषा के साथ इतनी गहरी दोस्ती होती कि और सबों को भूल जाती, और दूसरे महीने चित्रा से दोस्ती होती तो उषा का ख्याल तक न करती। अगर आसमानी रंग की साड़ी पहने तो मालूम पड़ता कि आसमान से परी ही उतर कर आई हो और जब उसका मन पीले रंग के वस्त्रों पर जा पड़े तो मानो चम्पा की रानी ही चल रही हो। ऐसा देखने वालों को लगता। किसी के साथ—युवक के साथ हँसना हो तो वह सरे-बाजार हँसने में जरा भी संकोच न करती, और न हँसना हो तो एकान्त में कोई बात करना चाहे तो भी न करे!

उसके पिता को तो विशाखा के लिये खास फिकर न थी परन्तु उसकी माँ विशाखा के लिये बहुत फिकर किया करती। जीवन की एक दिशा में झुक कर एकाग्र चित्त हो उस पहलू को पूरी तरह से देख कर और उसे निर्माल्य की तरह फेंक, दूसरे पहलू को देखने की वृत्ति कोई मानस अस्थिरता की सूचक होगी या व्यापक अनुभव लेने की वृत्ति होगी उसका ख्याल न तो विशाखा को था और न उस की मां को। जो भी हो परन्तु उसमें अस्थिरता का तत्व अवश्य था ऐसा उसकी माँ को विशाखा और उसके व्यवहार तथा बर्ताव को देख कर लगता।

विशाखा की वृत्ति जवान होने पर वही थी और युवकों के प्रति जब उसका स्वच्छन्द व्यवहार माँ की

नजरों पर पड़ता तब उसकी चिन्ता अधिक तीव्र हो उठती। बालक भले ही यह सोचते हो कि उन की चाल-चलन पर माता-पिता की नजर नहीं रहती, परन्तु माता-पिता तो बालक की मामूली से मामूली बात जानने की कोशिश करते हैं और हर एक बात की पूरी-पूरी छान-बीन करते हैं। माता-पिता की इच्छा थी कि विशाखा की मित्रता रमेश ऐसे अभ्यासी युवक से हो और वह मित्रता घनी होकर दोनों को लग्न-बन्धन में बांध दे। चार छः महीना रमेश के साथ उसकी गाढ़ी मित्रता रही परन्तु बाद में उसे छोड़ कर जब वह राकेश नाम के चित्रकार के साथ घूमने लगी तब उसकी माँ से पूछे बिना न रहा गया—'विशाखा! इधर कुछ दिनों से रमेश दिखाई नहीं पड़ता।'

'राम जाने! वह तो किताब का कीड़ा है। किताबों में ही सारा दिन आँख गड़ाये बैठा रहता उससे कौन बात करे?' विशाखा ने उत्तर दिया।

'मैं देखती हूँ कि तू आज-कल उस लम्बे बाल वाले, जुल्फी वाले राकेश के साथ बहुत घूमती है। उस लड़के का नाम अच्छे लड़कों में नहीं गिना जाता।'

'नहीं, माँ! वह जरा चित्र कला जानता है इस लिये मैं उसके पास जाती हूँ। मुझे मालूम है—वह बेकार आदमी है। उसके सिगरेट की गंध मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती।'

विशाखा ने मां को रूखे ऐसा जवाब दिया और कुछ ही दिनों में वह राकेश के साथ घूमती दिखाई नहीं पड़ी।

परन्तु माता को चिन्ता हो, इस तरह वह परेश नामक युवक के साथ ज्यादा-तर दिखाई पड़ने लगी उस समय के विद्यार्थी–युवक-युवतियों में परेश एक कवि के रूप से प्रसिद्ध था। उसकी कविता में गीत नहीं मात्र गुञ्जन था। उसकी कविता समझ में आये या न आये परन्तु कितने ही युवक-युवती परेश के भक्त बन गये और उसकी कविता की लगन विशाखा को भी लगी। विशाखा घर में बैठी हो तब भी परेश के छन्दों का गम्भीरता पूर्वक पाठ करती रहती और हफ़्ते में एक दिन तो वह कम से कम परेश को अपने घर बुला कर उसका सम्मान करती।

महाकवि परेश अपनी कविता-सृष्टि में ही मग्न रहता। कालेज की पढ़ाई की उसे चिंता न थी और इसलिये कालेज की परीक्षा और परिणाम भी उस की परवाह न करती। नतीजा यह हुआ कि महाकवि बनने वाले परेश ने सात-आठ साल तो कालेज ही में काटे। साहित्यकार और उसमें भी खास करके कवि-गण अपने को आत्म-बलिदान का सर्वोच्च दृष्टान्त मानते हैं, परीक्षा में उत्तीर्ण होने के आनन्द से अधिक आनन्द उन्हें मिलता है जब चार युवतियां और आठ युवक उनकी कविता पढ़ते हैं और परस्पर सुनाते हैं। परेश बी० ए० की डिग्री प्राप्त न कर सका, परन्तु कालेज जाना उसका चालू रहा; और उसके नसीब से विभिन्न वर्गों में से प्रशंसा करने वाले युवक-युवतियां मिल भी जाती। यद्यपि एक समय उसकी प्रशंसा करने वाले युवक-युवतियां कुछ ही महीनों में उसकी ओर देखती भी न थीं।

माता, विशाखा के कवि के प्रति के पागलपन से भयभीत हुई। कवि भी अगर कमाता हो या उस के कमाने की आशा भी हो तो मां-बाप अपनी बेटी का हाथ उसे सौंपने का विचार कर भी सकते हैं; परन्तु कवि के कारखाने में एक दो कविता के सिवाय और कोई उत्पादन न हो तो माता-पिता को कवि की ओर आकर्षित होने वाली पुत्री की चिन्ता होना अति स्वाभाविक है। कवि परेश कविता लिखने और कविता-पाठ करने के सिवाय मानव-जाति को, मानव-समाज को उपयोगी हो ऐसा कोई भी कार्य करता हो ऐसा मालूम नहीं पड़ता था।

माता ने अवसर देख कर विशाखा से पूछा—'विशाखा! कालेज में बेकार सालों को खराब करने वाले उस परेश को बार-बार क्यों घर बुलाती है?'

'मां, वह बहुत ही सुन्दर कविता लिखता है। उसकी कविता एक न एक दिन मानव समाज में

क्रान्ति उत्पन्न करेगी, ऐसा सब कहते हैं।' विशाखा ने कहा।

'देखा...देखा, क्रान्ति करने वाला! उसकी शक्ल देख! चार-चार साल में एक परीक्षा तक न पास कर सके, वह क्या क्रान्ति लावेगा?' जरा गरम होकर मां ने कहा।

कई बार माँ के गुस्सा होने पर भी विशाखा शांत रहती। उसने मां को शांति से समझाने का प्रयत्न किया।

'माँ! इसी को साहित्य-शहीदी कहते हैं। साहित्य के लिये, काव्य के लिये परेश ने अपनी पढ़ाई, अपनी कीर्ति और यहाँ तक कि अपने भावि की भी आहुति दे दी है और···देता जा रहा है. अभी उसने धनिकों के ऊपर सौ छन्द बना कर दिये हैं।'

'जहन्नुम में जाय उसकी आहुति। देखना इस में तेरी आहुति न दे दी जाय।' विशाखा की माता ने कहा।

उसी समय कवि परेश ने प्रवेश किया। विशाखा मां के पास से हँसती हुई दौड़ कर कवि का सत्कार करके उन्हें अन्दर ले गई। वहाँ साहित्य पर मर मिटने वाले शहीदों पर काफी देर तक चर्चा की।

विशाखा बी० ए० में पास हुई। उसके माता-पिता तथा अन्य कुटम्बी बहुत प्रसन्न हुए। पास होने की खुशी में उसके माता-पिता ने दूसरे ही दिन 'पार्टी' की। उसमें विशाखा के नये पुराने मित्र और सहेलियां—रमेश, राकेश, परेश तथा उषा, निशा, चित्रा, विचित्रा इत्यादि सब को आमन्त्रण दिया गया। विशाखा ने सब इन्तजाम ठीक से कर दिया था। जब मित्रों का आना शुरू हुआ तब खबर पड़ी कि विशाखा घर पर नहीं है।

अभी आयेगी, पास-पड़ोस के मकान में गई होगी, या दूर रहने वाले किसी मित्र को आमन्त्रण देने गई होगी या फिर पार्टी की बात भूल कर किसी से गप्पें लड़ाने लगी होगी—ऐसे-ऐसे विचार उसके माता-पिता तथा मित्रों व सहेलियों को आने लगे।

पन्द्रह मिनट हुआ, आधा घंटा बीता, एक घंटा गुजर गया परन्तु विशाखा दिखाई न पड़ी। मित्रों को चिन्ता हो परन्तु माता-पिता को तो उन से कहीं अधिक चिन्ता हो रही थी। कहाँ गई होगी? क्या हुआ होगा? अकस्मात् तो नहीं हुआ होगा? इत्यादि अनेक ऐसे अशुभ विचार माता-पिता के मन-मस्तिष्क में आये! पिता कपड़े पहन कर उसे खोजने बाहर जाने की तैयारी करने लगे, इधर मां के हृदय की धड़कन बढ़ने लगी। इतने में दूर से विशाखा को शृङ्गार किये हुए आते सबने देखा। विशाखा का साधारण रोज का पहनावा शृङ्गार के समान ही लगता परन्तु आज उसके वस्त्र और आभूषणों में अनोखी ही छटा और चमक थी। और उसके पीछे—वह कौन युवक आ रहा था? क्रिकेटर सुरेश तो नहीं है?··हाँ, हाँ, सुरेश ही उसके पीछे-पीछे आ रहा था। विशाखा और सुरेश को एक दूसरे से खास कोई परिचय हो या सुरेश को विशाखा के प्रति ममता हो ऐसी खबर किसी को आज तक न थी।

ऐसे साधारण परिचित को इतने दूर जाकर, समय बर्बाद करके तथा आमन्त्रित मित्रों और मेहमानों को छोड़ कर, वह बुला लायी और क्यों बुला लाई, यह किसी को समझ नहीं पड़ रहा था।

उधर विशाखा का मुख क्यों गम्भीर हो गया? उसकी चाल क्यों धीमी पड़ गई। हसमुख और बहादुर सुरेश के मुँह पर क्यों हवाइयां उड़ रही थीं? सब लोग उठ कर दरवाजे पर आये। कभी भी धीरे न चलने वाली विशाखा इस समय नीचे देख कर बहुत धीमी रफ्तार से कदम रख रही थी। दरवाजे पर सबसे आगे उसकी माँ खड़ी थी, माँ ने जरा गुस्से से पूछा—'ठीक वख्त पर कहाँ चली गई थी?'

'माँ, मुझे···हम दोनों को आशीर्वाद दो।'··· इतना कह कर घुटने के बल वहीं मां के पैरों के पास बैठ गई, और माँ के पैर पकड़ कर रोने लगी। माँ का दिल एक वख्त काँप उठा और मित्र मण्डली का हृदय जोरों से धड़कने लगा। विशाखा के पीछे-पीछे सुरेश आया और उसने विशाखा की माता को प्रणाम किया; अन्य उपस्थित आमन्त्रित अतिथियों को नमस्कार किया और इस अदा से मानो वह सौ रन करके मैदान से आया हो।

विशाखा और सुरेश दोनों के हाथ में पुष्पहार था। विशाखा के स्पश से जैसे जल गई हो इस प्रकार चौंक कर उसकी माँ बोली—'तो क्या तूने विवाह कर लिया ?···और हमें खबर तक न दी ?'

विशाखा की आँखों से आँसू गिरने लगे और माँ का पैर उसने जोर से पकड़ा। वह कुछ बोल न सकी। सुरेश ने धीरे से कहा—'जी, हम दोनों विवाह करके आ रहे हैं। खबर न दी उसके लिये क्षमा मांगते हैं और अब···आप आशीर्वाद दें।'

विशाखा की माता की आँखों से अग्नि बरसने लगी। विशाखा का हाथ वह अपने पैरों से झटकार कर अन्दर जाने लगी। उसी क्षण एक सुदृढ़ वृद्धा घर में से बाहर आयी। उसके गले में रुद्राक्ष की माला, एक हाथ में पाठ करने के लिये 'गीता' और दूसरे हाथ में देव-पूजा का पंच पात्र—जिसमें चावल, कुमकुम और पुष्प दिखाई पड़ते थे। वृद्धा के मुख पर एक सन्तोष की छाया झलकी। उसने विशाखा की माँ से कहा—'बेटी ब्याह करके आई है, द्वार-पूजा करके अन्दर बुलाओ! इस समय एक भी अपशब्द नहीं बोलना चाहिए। इस समय यह सुहागिन और कुमारिका दोनों होगी। कुमकुम अक्षत सिर पर छिड़क कर बेटी को बुलाओ! नहीं तो मुझे···एक विधवा को यह काम करना पड़ेगा।' वृद्धा ने कहा। वह वृद्धा विशाखा की तेजस्वी दादी थी।

विशाखा की मां ने क्षण भर अपनी सास की ओर देखा और नीचे देखते हुए सास के हाथ में से पंच-पात्र लेकर कुमकुम और अक्षत छींटा। सुरेश को भी इसी भांति सत्कार किया।

रोती हुई विशाखा उठ कर दादी के पैरों पर जा पड़ी। दादी ने उसे उठा कर गले से लगा लिया—'चल बेटी! पहले भगवान को पैर पड़ो। फिर यह सब एकत्रित मेहमान शादी के गीत-मंगल गीत गायेंगे।'

इतना कह कर दादी ने उपस्थित मेहमानों के बीच में से विशाखा और सुरेश को पूजा-घर की ओर ले गई और दोनों नास्तिकों ने भगवान को नमन किया। मित्र-मण्डली में वापस जाते-जाते विशाखा ने दादी के ये शब्द सुने—'बहू! इसमें इतना गुस्सा होने की क्या बात थी? जो तुमने किया था, वही तुम्हारी बेटी ने किया।'

[२]

उसी दिन रात को दादी ने विशाखा को उसके माता-पिता के लग्न की एक क्रांतिकारी कथा सुनाई, जिसका सार केवल इतना ही था कि अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धी तथा कुटुम्बियो की इच्छा के विरुद्ध विशाखा के माता-पिता ने विवाह किया था—अरे, विवाह करवाना पड़ा था! ठीक समय पर लग्न-मंडप से अदृश्य होने वाली विशाखा की माता मुक्ता, की खोज सब लोग करने लगे; और एकान्त तालाब के किनारे विशाखा की मां तथा विशाखा के पिता एक दूसरे का हाथ-पैर बांध कर डूबने की तैयारी कर रहे थे। कभी भी आत्महत्या कर ल, ऐसे लग्न स अच्छा तो मन पसन्द विवाह कर लें तथा दोनो की सलामती का ख्याल करके उनके पूर्वजों ने पचीस-तीस वर्ष पूर्व उनको स्नेह-लग्न करने दिया था। या उसके माता-पिता के स्नेह लग्न की कथा दादी ने सबको सुनाई।

थोड़ा बचा हुआ रोष व्यक्त करने के लिये विशाखा की माता मुक्ता ने जरा चिढ़ कर कहा—'हमारी बात तो सबको मालूम थी। यहां तो विशाखा ने किसी को खबर तक न दी। क्या हम उसे इच्छानुसार विवाह न करने देते?'

'माँ बाप का क्या ठिकाना ? मैं मेरी ही एक छोटी-सी बात कहूँ ! मुझे उठा कर बल जबरी से लग्न-मडप में बैठा कर विवाह करवाने की लोगों की तैयारी थी। मुझे वह विवाह नहीं करना था और इसलिये विशाखा के दादा ने मुझसे साजिश करके मेरा हरण किया और फिर लुक-छिप कर हमने विवाह किया। उससे मेरा या तुम्हारा जीवन बिगड़ा नहीं है। बल्कि आज मैं चौबीसों घंटे धर्म में व्यतीत करती हूँ, माला बिना एक क्षण भी नहीं जाता। आज से साठ वर्ष पहले तो 'मेरे हरण' के ऊपर गाने बना कर लोग गाते। वह तो जैसे होता आया है वैसे ही होगा ··· घर की परम्परा है।'

इतना कह कर दादी ने पास पड़ी हुई भागवत से कुछ कागज निकाले और विशाखा क हाथ में रक्खे। विशाखा ने देखा कि दादी के सुन्दर अक्षरों में लिखे हुए दादी के साठ वर्ष पूर्व के वे लग्न-गीत थे।

लघु-कथा

मधुर मिलन

लेखिका, कुमारी उमा टन्डन, शाहजहांपुर

[१]

सरोजनी एक अल्हड़ बालिका थी। उसके पिता शहर के एक प्रसिद्ध एडवोकेट थे। धीरे-धीरे उनमें कुछ ऐसे व्यसन आ गये जिनके कारण उन्हें अपने धन तथा मान दोनों से हाथ धोना पड़ा।

अभी-अभी सरोजनी सोकर उठी थी। उसने शहर के राजकीय कन्या पाठशाला से इसी साल मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। वह अब एक गरीब पिता की पुत्री था।

[२]

गिरीश शहर के प्रसिद्ध होटल मालिक दीपक का एकलौता पुत्र था। दीपक की साध्वी पत्नी साधना अपने जीवन के प्रारम्भ के दिनों में ही अपनी एक निधि दीपक को सौंप कर इस दुनियां से हमेशा के लिये चली गई। दीपक गिरीश को अपने प्राणों के समान प्यार करता। बेचारा गिरीश भी अपने पिता का बड़ा आदर करता था। वह इञ्जीनियरिंग लाइन के लिये खड़गपुर गया था।

सरोजनी तथा गिरीश का घर पहले पास ही पास था। दोनों ने अपने बचपन के दिन साथ ही साथ व्यतीत किये थे। धीरे-धीरे दोनों का यौवन-काल आ गया। अब भी दोनों परस्पर मिलते रहे।

[३]

आज भी, जब सरोजनो दुखी मन से बैठी अपने पिता के बारे में सोच रही थी कि उसके सपनों का राजा गिरीश उसके सामने साकार रूप में आया और सरोजनी को दुखी देख कर गिरीश ने उसके दुखी होने का कारण पूछा। उसने सब बातें सुना दीं। गिरीश ने उसको कुछ रुपये दिये और कहा कि वह शहर के प्रसिद्ध डाक्टर से उनका इलाज कराये और धन की चिन्ता न करे।

सरोजनी क माता चाहती थी कि वह अपने जीते जी सरोजनी का विवाह कर दे। गिरीश उस के पास ही बैठा था और दयनीय नेत्रों से सरोजनी की ओर देख रहा था। उसी समय माता ने गिरीश के हाथों में सरोजनी का हाथ देकर कहा—'गिरीश तुम मुझे वचन दो की सरोजनी को अपनी बना लोगे।' गिरीश ने उसे वचन दिया।

दीपक ने जब इस बात को सुना तो उन्हें दुख न होकर प्रसन्नता ही हुई, क्योंकि उसके पुत्र ने जो उचित समझा था वही किया। अतः जब गिरीश ने पिता को सम्मति मांगी, तो वे फौरन राजी हो गये और खूब धूम-धाम से विवाह की तैयारियां होने लगीं। इसी खुशी से दोनों का 'मधुर मिलन' हो गया और बचपन के प्रेमी अब पति, पत्नी के रूप में हो गये।

भारतीय वाद्य संगीत

भारत में सङ्गीत को ब्रह्म प्राप्ति का साधन माना गया है। पौराणिक गाथाओं में सङ्गीत का आरम्भ ब्रह्मा से ही माना जाता है। कई प्रकार के नृत्य, सङ्गीत और यहाँ तक की कई वाद्यों को भी देवी-देवताओं के साथ जोड़ा हुआ है।

रुद्र के सङ्गीत और नृत्य से तो सारे भारत वासी परिचित ही हैं। उनके नृत्य का भाव आध्यात्मिक है और विकास अथवा प्रलय का प्रतीक माना जाता है। रुद्र का डमरू भी 'आकाश तत्व' का प्रतीक है क्योंकि समावेश से ही सारी ध्वनि उत्पन्न होती है। कृष्ण रूप में विष्णु का ही नाम वशीधर या मुरलीधर है। इसी प्रकार सरस्वती का सङ्गीत और काव्य से अभिन्न सम्बन्ध है।

इन्द्रलोक के गंधर्व, किन्नर, नारद, विद्याधर और विश्ववसु इत्यादि सभी का सङ्गीत के किसी न किसी अंग से सम्बन्ध है। वाद्य-सङ्गीत और नृत्य की सृष्टि इन्हीं विभूतियों ने की है। भारत के लम्बे इतिहास में अनेक वाद्यों का आविष्कार हुआ है। और हर भारतीय वाद्य में पूरी मौलिकता और बुद्धि विलक्षणता का परिचय मिलता है। अलग-अलग बनावट और ध्वनि के साधारण से साधारण साज से लेकर बड़े-बड़े पेचीदा तक तार वाले अनुसार ६०० साज भारत में पाये जाते हैं। इनमें फूँक से बजने वाले तथा थाप से बजाये जाने वाले सब तरह के साज शामिल हैं। कुछ वाद्यों का चलन अब समाप्त प्रायः है। कुछ में समय के साथ परिवर्तन हुआ है और कुछ आज भी वैसे ही हैं, जैसे वे आज से सदियों पहले थे।

प्राचीन वाद्य

अम्बुज, अलापिनी, परिवर्धिनी, बिपंची, चित्रा कच्छमी और मत्कोकिला आदि का रूपान्तर ही आज के वीणा, सितार, गोट्टुवाद्यम, विचित्र वीणा, सरौद और सारङ्गी और इसराज आदि साज हैं। इसी प्रकार प्राचीन पटाहा, मराज, मरदला, भेरी, दुन्दभी आदि का नवीन रूप मृदगम् और तबला आदि हैं।

प्राचीन भारतीय वाद्यों का ज्ञान हमें अपने प्राचीन साहित्य और मूतिकला से मिलता है। सङ्गीत सम्बन्धी संस्कृत वाङ्मय, वैदिक ऋचाओं भागवत पुराण, बौद्ध-ग्रन्थों और जातक कथाओं में भी हमें प्राचीन वाद्यों का प्रचुर उल्लेख मिलता है। भरतमुनि का 'नाठ्यशास्त्र' और सारङ्गदेव का 'सङ्गीत रत्नाकर' आदि सस्कृत ग्रन्थों में वाद्यों का विस्तृत वर्णन है। इसी प्रकार कालिदास की सस्कृत रचनाओं और तामिल और तेलुगु के साहित्य में भी वाद्यों की चर्चा है। अबुल-फजल के प्रसिद्ध पारसी ग्रन्थ 'आइने-अकबरी' में मुगल कालीन वाद्यों का उल्लेख है।

नर्तक-नर्तकियों की प्राचीन मूर्तियों से भी भिन्न काल में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों का हमें पता चलता है। कौन-से साज खड़े होकर बजाये जाते थे और कौन-से बैठ कर, यह भी इन मूर्तियों की मुद्राओं से स्पष्ट है। अजंता की गुफाओं की चित्रकारी से भी प्राचीन भारतीय वाद्यों और उनके बजाने के ढङ्ग आदि का अच्छा परिचय मिलता है।

वाद्यों का उत्तम संग्रह

कलकत्ता के विचित्रालय में भारतीय साज़ों का अनुपम संग्रह है। कंठ सङ्गीत का भारत में सदा बहुत ऊँचा स्थान रहा है। पर इसका यह मतलब नहीं कि यहाँ कभी भी वाद्य सङ्गीत को नीची दृष्टि से देखा गया हो। हमारे यहाँ वाद्य केवल सङ्गत के लिये ही नहीं बल्कि स्वतन्त्र रूप से भी बजाये जाते थे और इनके बजाने की एक स्वतन्त्र कला

थी। भारतीय सङ्गीत में स्वर की मधुरता को प्रधानता दी गई है और पश्चिमी सङ्गीत में अनेक वाद्यों के स्वर ताल के मेल को। यही कारण है कि भारत में वाद्यवृन्द या 'आरकेस्ट्रा' जैसी कोई चीज विकसित नहीं हुई। पूजा आदि में अवश्य दो-चार साज एक साथ बजाये जाते थे। बुद्ध की 'शब्द पूजा' में वीणा, छोटी-छोटी ढोलकें, बांसरी आदि कुछ साज बजाये जाते थे। इस प्रकार का उल्लेख मिलता है कि जब सम्राट अशोक तीर्थ-यात्रा करने जाते थे तो वाद्य-वादकों की एक मंडली उनके साथ रहती थी। गुप्तकाल में युद्ध के समय वीणा, मृदङ्ग, पुष्कर, मुराज, तुरही, शङ्ख, दुन्दभी और घंटे आदि का प्रयोग किये जाने का उल्लेख मिलता है।

चीनी तथा अन्य विदेशी यात्रियों ने भी अपने लेखों में भारतीय वाद्यों को उल्लेख किया है। बाण ने अपने 'हर्ष चरित्' में लिखा है कि जब सम्राट हर्ष अपने स्नानागार में प्रवेश करते थे, उस समय 'शृङ्ग' (नरसिंहा) और वीणा, ढोल आदि से सङ्गीत बजाया जाता था।

मुगल काल में 'नौबत' का रिवाज था, जिसमें नौ लोग साज बजाते थे। वैसे नौबत में प्रायः नौ से अधिक गायक और साज बजाने वाले होते थे और यह शहरों और महलों के फाटकों की बुजियों में बजायी जाती थी। अकबर के नक्कार खाने में कुर्ग, नक्कारा, ढोल, सुरनई, नफीरी करना और शृङ्गफनी आदि साज थे।

आधुनिक युग में उदय शङ्कर ने भारतीय वाद्य वृन्द (आरकेस्ट्रा) बनाने की दिशा में काफी योग दिया है। अ० भा० रेडियो की ओर से रविशंकर और टी० के० जयराम अय्यर के निर्दशन में वाद्य वृन्द की रचना की गई है, जिससे सभी रेडियो श्रोता परिचित होंगे। पर देश में वाद्य सङ्गीत की उन्नति के लिये अभी बहुत से परीक्षण और काय करने होंगे तभी श्रोतागण इसके महत्व को समझ जायंगे।

दृष्टिकोण

एक पत्नी के दो पति

देवरिया जिले में तमकुही रोड स्टेशन के पास ऐहदिया गांव में एक औरत के दो पति मौजूद हैं, एक घर में। पहले पति से दो लड़के हैं जो कि मां से अलग हैं। दूसरा पति देवर होता था उस औरत का। दूसरा पति अपने बच्चों एवम् औरत को छोड़ कर इस औरत के घर रहने लगा है। पहले पति को कोई भी एतराज नहीं है। पर पहले पति के दोनों जवान लड़कों ने एतराज किया जिसके फल स्वरूप ये दोनों अलग हो गये। दोनों पति मिट्टी के काम करते हैं और बड़े प्रेम से सगे भाई की तरह रहते हैं।

—कुमारी शकुन्तला शाही

मेरी आप बीती

मैं एक अच्छे घर की कन्या हूँ। मेरे माता-पिता ने मुझे बहुत लाड़-प्यार से पाला-पोषा था। इसका नतीजा मुझे अब भुगतना पड़ रहा है। जब विवाह योग्य हुई तो मेरे मां बाप चिंतित हो गये। आखिर उन्होंने अच्छा घर व बर देख कर मेरी शादी ३०००) ठहरौनी में कर दी। कुल खर्च आखिर तक ५०००) करना पड़ा। फिर धूम धाम से मेरी शादी हो गयी। मेरी सास सौतेली हैं। सौतेली सास का बहू के प्रति जो कर्तव्य है उसका खूब उदाहरण मिला। मेरे कोई सन्तान नहीं हुई जिससे कि सास को व पतिदेव दोनों का व्यवहार मेरे प्रति सन्तोष जनक नहीं रहा। आखिर ऐसा समय आया कि मेरे पतिदेव ने इन्टर कोर्ट में सिविल मैरेज कर लिया। आखिरकार मुझे दूध में मक्खी जैसी अलग कर दिया। इस वक्त मैं अपने मैके में रहती हूँ। तीन बच्चों की मां हो चुकी हूँ। मैं

[शेष ६५१ पृष्ठ पर]

उड़िया भाषा की कहानी

भिक्षा का विनिमय

मूल लेखक, श्री राजा जगन्नाथ देव वर्मा,
डी० एस-सी०
अनुवादिका, रानी कविता कुमारी देवी,

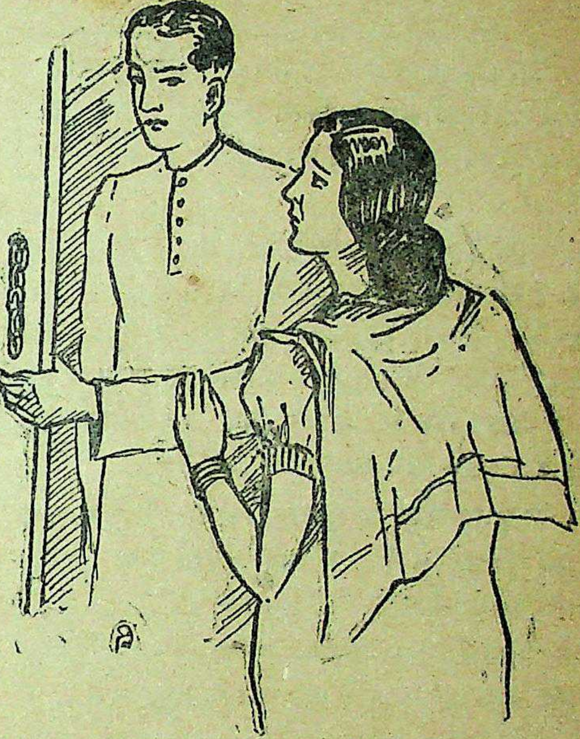

उस दुकान के पास आज प्रायः दस दिन से उस सोलह वर्षीय भिखारिणी को मैं देखता आ रहा हूँ। जलपान समाप्त कर फिरते समय रास्ते में भिक्षा पात्र दिखा कर मांगती थी। प्रतिवार उसके भिक्षा पात्र में एक पैसा डाल कर मैं फिरता।

उसके भिखमंगा जीवन के लिये मुझे दान वृत्ति धारण करनी पड़ी।

एक दिन क्या देखता हूँ कि मुझसे पैसा पाने के बाद वह दूसरे युवक के पास जाकर मांगने लगी—'बाबू भीख मुट्ठी।'

युवक कुछ न कह कर सिगरेट का धुआं इधर-उधर फूँ-फूँ छोड़ स्नेही के साथ गप कर रहा था।

पान वाले को दो पान के लिये आर्डर देकर मैं वहीं पर खड़ा-खड़ा यह दृश्य देख रहा था। युवक के भ्रूक्षेप से अभिमान का नग्न प्रकाशन प्रकट हो रहा था।

मैं खड़ा-खड़ा देखता रहा। देश की अवस्था, दुःखियों का क्षुधित जीवन, उनके प्रति सुखियों का यह कुत्सित व्यवहार। मुझे बड़ी ग्लानि हुई।

किन्तु वह मेरे लिये अपरिचित था। यदि परिचित होता तब उपयुक्त उपदेश देता। युवक उच्च कुलोत्पन्न जान पड़ता था। सुडौल शरीर, गौर वर्ण ताम्र केश, हाथ में एक रिवालवर लिये।

भिखारिणी ने विनीत कण्ठ से पुनः कहा—'बाबू एक मुट्ठी भीख !

दुरभिमानी तरुण नीरव खड़ा रहा। भिखारिणी ने चतुर्थ बार मांग की। युवक क्रोध में आकर जूतों से उस पर प्रहार करने लगा।

अकस्मात् मेरे मुख से निकल गया—पाषाण व्यवहार !

युवक ने मुझे घृणा से देखा। किन्तु कुछ कहा नहीं। भिखारिणी मूर्च्छित अवस्था में गिरी पड़ी थी। मैंने उसे पानी पिला दिया। उसने आँखें खोलीं। उसकी आँखों की कोरों पर दो बिन्दु आंसू उमड़ आये थे।

मैंने कहा—'उठो, तुम्हारे घर छोड़ आऊँगा।'

भिखारिणी ने उठते-उठते कहा—'मेरा घर सारी दुनिया है।'

मेरा दुःख और बढ़ गया। सोचा, घर में ले जाकर इसे आश्रय दूं, किन्तु सङ्कोच लगा। उसके हाथ पर चार पैसे रख कर सीधा पार्क में चला गया।

मेरे पैर मार्ग पर पड़ते रहे तथापि मन-सिन्धु में भावना-लहरी का अनन्त ज्वार उठ रहा था। अरक्षित भिखारिणी उसके प्रति यह निष्ठुर अत्याचार! दुनियां में इस तरह लाख-लाख लोग अपना मान महत्व खो कर कितना क्लिष्ट जीवन-यापन कर रहे हैं। इसके लिये कौन उत्तरदायी है?

भावना स्रोत को हठात् रोक कर पीछे से सहपाठी शिशिर ने पीठ पर मृदु थपकी देकर कहा—'क्यों भाई! किधर जा रहे हो?'

'पार्क की तरफ चलो—एक बार घूम आयेंगे।' दोनों मिल कर पार्क में एक बेंच के ऊपर बैठे।

पास के एक मकान में रेडियो खुला था। गीत आ रहा था—'आंखिया मिला के जिया भरमा के चले नहीं जाना।' शिशिर उसके साथ मिल कर गाने लगा। भिखारिणी की चपल दृष्टि से मेरी अंग-लता में लाई हुई सिहरन उस समय तक गई न थी। मालूम हुआ कि किसी ने मुझ पर अधिकार कर लिया है। मेरे दृष्टि पट पर उस भिखारिणी का शरीर खचित हो उठा। फटी धोती के भीतर से दीप्त यौवन का कनक केतन हिला कर मानों वह मेरे अविचार को जगा रही थी।

उसी समय गगन मार्ग में सघन मेघ माला खेल उठी। आशा का अवलम्ब पाकर तृषित चातक नाच उठे। वर्षा की जल-विन्दुओं को देखता रहा।

'विपिन, वर्षा हो रही है, भाई चलो, वापस जायेंगे।' मेरा मित्र बोला। दोनों चले, परस्पर हाथों में हाथ डाले।

लोगों की भीड़ से शिशिर और मैं किधर-किधर की बातें करते चल रहे थे। पानी झर-झर कर बरस रहा था। कोई दूकानों के भीतर को भागे, कोई बारामन्दों में रुके और कोई चलते रहे, आधा फर्लाङ्ग दूर था हम दोनों के घर जाने का रास्ता। शिशिर पश्चिम दिशा में और मैं पूर्व दिशा में धाये। वर्षा और जोरों से बढ़ गई। घर पहुँच कर कपड़े बदले, खूँटी में झूलता हुआ एक ढीला पायजामा पहिना शीशे के सामने केश सम्भाल सिगरेट लगा कर बैठा एक आराम कुर्सी पर। रसोईदार को भोजन तैयार करने के लिये फरमाइश दिया। टेबुल के ऊपर रखी पत्रिका उठा लाकर पन्ने उलटते-उलटते दृष्टि पड़ी, एक कविता पर। भाव सरल, सुपाठ्य थे। लेखक मेरे सहपाठी मित्र थे। जो श्यामलांगी छात्रा इस कविता की जन्मदात्री थी वह भी मेरी परिचिता थी। इसीलिये कविता के अन्तर्निहित भाव को ग्रहण करने में मैं समर्थ हुआ था। रसोइयादार ने पुकारा। मैं चला गया दो मंजिले के ऊपर खाने के लिये। वर्षा अभी भी अविराम गति से हो रही थी।

आधा खाना खाया था कि सुना—'बाबू मैं व्यभिचारिणी नहीं। एक मुट्ठी भात! नहीं देना हो तो 'नहीं' कह देओ। वर्षा रुकते ही मैं चली जाऊँगी। एक असहाय प्राणी को गाली देने में तुम्हारा यश है क्या?' एक करुण कपोती का आतुर स्वर था।

आधे खाने से ही हाथ धोकर नीचे आया। मुझे देख भिखारिणी निर्भीक भाव से मेरे आगे चली आयी। नौकर रोकने को गया, किन्तु मेरे कहने से वह दूर चला गया।

पूछा—'क्या हुआ?'

'कुछ नहीं, एक मुट्ठी भात खाने को दीजिये।'

रसोईदार को पुकार कर कहा—'मधु! भात ला दो तो।'

भिखारिणी ने पूछा—'समझती हूँ आप आधे खाने से ही चले आये हैं?'

'हाँ इसमें क्या है? मैं हाथ धोता हूँ।' वर्षा का पानी जो छत से गिर रहा था उसी में हाथ धोया।

भिखारिणी ने कहा—'रसोइया बाबू अपने खाना में से आधा लायेंगे शायद। मना करके आप अपने भोजन से जो बचा हुआ भात है मँगवा दीजिये। नहीं तो वह फेका जायगा।'

'हाँ वह ला देगा।'

रसोइयादार ले आया मेरा आधा खाया भात भिखारिणी ने उसे पेट भर खाया। एक धोती देकर कहा—'बदल डालो।'

सीढ़ी के ऊपर चढ़ कर दीवार की ओट में उस ने धोती बदली।

'बरसात खूब जोर हो रही थी। अभी किधर जाओगी? रात यहीं पर काटो।' इतना कह मैं चला सोने के कमरे में।

[२]

चार दिन बाद। आतिथ्य सत्कार विनिमय में प्रेम लतिका में मंजुल कलिका फूट उठी।

उस दिन रात प्राय शेष। नींद हठात् टूट गई। दीप धीमे-धीमे जल रहा था। मुँह धोकर दीप तेज करके बैठा एक खाता लेकर। सोचा भिखारिणी के जीवन के विषय में एक उपन्यास लिखूँगा। गत और वर्तमान जीवन सुन्दर रूप से वर्णित हो जायेंगे। किन्तु भविष्य किस प्रकार रचूँगा? इधर उधर सोचता-सोचता मन मेरा चंचल हो उठा। हठात् देखा आगे विकल नेत्री भिखारिणी। भाषा का आदान-प्रदान से पहले से अनुमान किया था वह एक सम्भ्रान्त कुल की कन्या थी। पूछा—'तुम्हारे बाप-माँ कहाँ पर हैं?

तरुणी की नीरव आंखों से दो धारा आंसू का मौन प्लावन। कम्पित कण्ठ से फिर पूछा—'कोई नहीं हैं?'

'ना……!'

'तुम्हारे पिता क्या करते थे?'

'वह सरकारी कर्मचारी थे। पचास रुपया मासिक अरजन करते थे। मैं जिस समय तीन वर्ष की बच्ची थी मां ने आंखें मूँद लीं। पिता भी दस वर्ष बाद चले गये स्वर्ग राज्य को। इस अभागिनी की दुःख-दुर्दशा देखने को वे लोग क्यों रहते?'

मेरी दृष्टि बुझती हुई दीप शिखा को तेज कर उसके आलोक में एक उपन्यास लिखने के लिये पकड़ी हुई लेखनी पर जम गई।

कक्षच्युता, सर्वहारा, पददलिता इस भिखारिणी की कहानी आज सुना है किसी ने?'

प्रकोष्ठ दीर्घ नि:श्वास से थर्रा उठा। पूछा—'तुम कुछ पढ़ी हो?'

'हां माइनर तक।'

'जाति?'

'कायस्थ।'

अवसर! कितना भयंकर! कितना हृदय विदारक! कुछ कह नहीं पाया। उसके आंसू पोंछने के लिये मैं और मेरे आंसू पोंछने के लिये वह, इस दुनिया में बढ़ गये।

हम दोनों के जीवन की अँधेरी रात सबेरे अरुणिमा लिये विकसित हो गई। हर्ष और शोक ने एक दूसरे को वरण कर लिया!

—मेरी आप बीती—

[पृष्ठ ६४८ का शेषांश]

जब कभी बीमार पड़ती हूँ तो तार देने पर मेरे पतिदेव आ जाते हैं। फिर कोई खबर नहीं लेते। पिता जी भी कई पत्र देते हैं व मैं भी लिखती हूँ तो लेकिन जवाब देने की फुरसत नहीं मिलती। इस तरह मेरी जीवन नैय्या डगमाती हुई चल रही है। मेरे पिता के रहते कोई तकलीफ नहीं है आगे भविष्य अन्धकार नजर आता है। इन्हीं सब चिन्ताओं से माता का दिमाग खराब हो गया है पिता जी भी वृद्ध हो गये हैं। मैं अपनी व्यथा किन शब्दों में बयान करूँ। अब मैं इस जिन्दगी से परेशान हो चुकी हूँ। कृपया बताइये अब मैं किस मार्ग का अवलम्बन करूँ?

—शान्ती देवी मिश्रा

समाज कल्याण योजना

दिल्ली से १७ मील दूर महरौली के पास एक गांव में दो उल्लेखनीय घटना हाल में हुई हैं। पहली यह कि ग्राम की स्त्रियों को चौपाल में जाने की छूट मिल गई है। अभी तक केवल पुरुष ही चौपाल में जाते थे।

दूसरी घटना फतेहपुर अरौला गांव में हुई। यहाँ १०० हरिजन परिवार और ३०० उच्च जाति के गूजर बसते हैं। यहाँ बालवाडी में हरिजन और उच्च जाति के बच्चे साथ-साथ स्कूल में पढ़ते, दस्तकारी का काम साथ-साथ सीखते और साथ मिलकर गाने गाते हैं।

कुछ समय पहले इन बातों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। किन्तु अब समाज कल्याण योजना के विस्तार के कारण यहाँ का वातावरण बदल गया है। फतेहपुर अरौला गाँव की भलाई के लिये सभी निवासी आपस में पूरा-पूरा सहयोग करते हैं। एक औषधालय और स्कूल बनवाने और एक नया कुआं खुदवाने के लिये वे धन और श्रम जुटा रहे हैं। योजना अधिकारियों ने भी इसके लिये कुछ धन दिया है।

पर्दा हट गया

एक दूसरे गाँव की बात सुनिये। करनाल (पंजाब) से ४० मील दूर उचाना गांव है। यहाँ की स्त्रियां पुरुषों से ही नहीं; बल्कि दूसरी महिलाओं से भी पर्दा करती थीं। यहां पर 'समाज कल्याण' का एक कार्यकर्ता आकर रहने लगा। ग्राम वासी उससे काफी हिल-मिल गये और कुछ ही समय बाद ग्राम वासियों ने पर्दा की प्रथा को दूर करने का निश्चय कर लिया। अब यहाँ से पर्दा हट गया है। स्त्रियां दस्तकारी के काम तथा सफाई आदि की बातें सीखती हैं।

दक्षिण भारत में सलेम से ४० मील दूर कोली कलाथम गांव में ग्राम वासियों ने प्रसूतगृह के एक छोटे केन्द्र के लिये पक्की इमारत खड़ी कर ली है। उन्होंने अनाथ, असहाय बच्चों के लिये एक पक्का स्कूल भी बना लिया है। यहां अब ३२ लड़कियां रहती हैं। इन्हें दस्तकारी, बुनाई, दर्जीगीरी आदि का काम सिखाया जाता है। यहां के लोगों में अब अब इतना उत्साह है कि उन्होंने अपने वार्षिक उत्सव की सारी आमदनी, जो लगभग सात हजार रुपये होती है, कल्याण केन्द्र के विस्तार के लिये खर्च करने का निश्चय कर लिया है। अब वे स्कूल को उच्च माध्यमिक स्कूल बनाने और औषधालय को पूर्ण रूप से सुसज्जित अस्पताल बनाने की सोच रहे हैं।

गांव में एक दिन डाक्टर

मैसूर राज्य का एक और उदाहरण लीजिये। बंगलौर से २० मील दूर कोदगहाली में समाज कल्याण केन्द्र है। ग्राम वासियों की उन्नति के लिये यहां केन्द्र के सङ्गठन कर्ताओं ने एक नया तरीका खोज निकाला है। प्रति रविवार को बंगलौर के कुछ अच्छे चिकित्सक यहां आधे दिन के लिये आकर गांव वालों की मुफ्त चिकित्सा करते हैं। इस प्रकार गांव के बीमारों को अच्छे डाक्टर की सलाह निदान आदि की सुविधा मिल जाती है। इसके अलावा यहां बच्चों को नित्यप्रति दूध का चूर्ण मुफ्त बांटा जाता है। यहां की एक लड़की लड़कियों को दस्तकारी आदि की शिक्षा देती है।

इन उदाहरणों से उस महान् काम की कुछ झलक मिल सकती है, जो २५६ कल्याण योजनाओं द्वारा समूचे देश में हो रहा है। इससे ग्राम वासियों को स्वेच्छा से काम करने की प्रेरणा

मिलती है। पहली पंचवर्षीय योजना की अवधि तक इन योजना केन्द्रों की संख्या ३३० होने की आशा है। तब देश के प्रत्येक जिले में एक कल्याण योजना केन्द्र हो जायगा।

प्रत्येक कल्याण योजना केन्द्र से लगभग २० गांवों की बीस हजार आबादी को लाभ पहुँचता है। हर केन्द्र पर अनुमानतः २५ हजार रुपया वार्षिक खर्च होता है। इसका आधा खर्च केन्द्रीय समाज कल्याण मंडल उठाता है। एक जीप कार देता है। बाकी खर्च ग्रामवासियों, राज्य के अनुदान और स्थानीय संस्थाओं द्वारा पूरा होता है। अनेक स्थानों में जिला बोर्डों तथा ग्राम पंचायतों ने इसके लिये काफी धन दिया है।

प्रारम्भ में इन केन्द्रों का कार्यक्षेत्र सीमित ही था। परन्तु जनता की मांग बढ़ने पर अब कला, दस्तकारी, समाज शिक्षा, छपाई, स्वास्थ्य आदि के अनेक काम चालू हो गये हैं।

इस योजना का एक महत्व पूर्ण पहलू यह है कि योजना का सारा काम गैर सरकारी स्वेच्छा पूर्ण तरीके से होता है। इसके लिये 'योजना अमल समतियां बनाई गई हैं। इनमें स्वेच्छा कल्याण समितियों के प्रतिनिधि रहते हैं।

गीत

लेखिका, कुमारी उर्मिला राठौर, 'विशारद'

प्रिय ! तुम जितने दूर दृगों से, उतने ही अन्तर के पास !
नीरव नभ के तिमिर पन्थ पर,
ऊषा आती है सोल्लास !
उतर किरण से मुस्का देते,
सुमन हृदय के कितने पास !
व्यथा भार से कोमल कवि उर, होता कितना सजल अधीर !
छवि छाया से तुम नयनों में झूम पिलाते आँसू नीर !
सरस-सुधा स्वर वीण तुम्हारी,
बजती मन के कितने पास !
प्रिय ! तुम जितने दूर दृगों से,
उतने ही अन्तर के पास !
निशीथिनी की भीगी पलकों से, झर उठती तम की धार !
सुप्त धरा से आकर करता, जब आकुल अम्बर अभिसार !
इन्दु रश्मियों के द्रुत पग धर,
आते मन के कितने पास !
प्रिय ! तुम जितने दूर दृगों से,
उतने ही अन्तर के पास !

जासूसी कहानी

रत्न परीखा

लेखक, श्री निशीथकुमार राय, बी० ए० एल-एल० बी०

उस दिन ज्यों ही उदय आकर अपने कमरे में बैठा कि बेयरा ने एक कार्ड लाकर पेश किया। उदय से राजकुमारी सुलेखा मिलना चाहती हैं। उदय ने उन्हें अन्दर बुलाने को कहा। एक युवती कमरे में घुसी। सुन्दर चेहरा उदास था। कपड़े कीमती पहिने थी। उदय ने प्रश्नभरी निगाहों से आगन्तुक की ओर देखा।

आगन्तुक ने बड़े संकोच के साथ कहा—'उदय जी, मेरी समझ में नहीं आता, मैं क्या कहूँ और कैसे कहूँ। मैं बड़ी मुसीबत में पड़ कर आपके पास आयी हूँ।'

उदय ने कोई उत्तर नहीं दिया। आगन्तुक को सोचने का समय दिया। आगन्तुक थोड़ी देर में सकुचा कर बोली—'उदय जी, हमारी स्टेट रूपनगर का नाम आपने सुना होगा।..मैं उसी स्टेट की होने वाली रानी हूँ। मुझसे प्रेम नगर के राजकुमार से काफी जान-पहिचान है। चूँकि मेरा कोई भाई नहीं है और कुल जायदाद मुझ ही को मिलेगी इसलिये प्रेम नगर के कुमार नरेन्द्रसिंह मुझसे विवाह करने को व्याकुल थे। मैं खर्चीली हूँ और इतना ज्यादा खर्च कर बैठी थी कि कर्जा हो गया था। पिता जी से रुपये मांग नहीं सकती थी क्योंकि वे मेरी फिजूल खर्ची से बड़े नाराज से थे। नरेन्द्र से कुछ कहना मौत के समान था। कर्जा देने वाले मुझे धमकी देते थे। इन्हीं दिनों एक दिन नरेन्द्र ने मुझे अपनी अंगूठी को दिया कि मैं अपने सोनार से उसका हीरा ठीक से जड़वा दूँ। ढीला हो गया था। मुझसे लालच सम्भाला नहीं गया। मैंने उस अँगूठी को गिरो रख कर अपना कर्ज अदा किया और एक बिलकुल उसी किस्म की अँगूठी बनवाकर नरेन्द्र को भिजवा दिया। उसके बाद मेरा साल गिरह आया और उस सिलसिले में मुझे तमाम भेंट मिले। उन भेंटों के रुपयों से मैंने उस अँगूठी को छुड़वा लिया। मगर अब प्रश्न है कि उस अँगूठी को मैं कैसे वापिस करूँ! अगर नरेन्द्र को राज का पता चल जाता है तो वह मुझसे नफरत करेगा। और हाल ही में मुझे नरेन्द्र कह रहा था कि वह उस अँगूठी को बेंच देगा। क्योंकि उसे पसन्द नहीं है। वह दूसरी अँगूठी बनवाना चाहता है। बेचते वक्त तो उसे अवश्य यह राज मालूम हो जायगा—ओह, तब मैं संसार को कैसे मुँह दिखाऊँगी?'

युवती आंखों पर रूमाल धर के रोने लगी। उदय ने कोमल स्वर में कहा—'आप घबराइये न! मैं आपकी सहायता करूँगा।'

आंसू पोंछ कर उसने ब्लाउज के नीचे से एक अगूठी निकाली। उस पर एक बहुत बड़ा-सा हीरा जड़ा था। उस हीरे की ज्योति से जैसे कमरा भी जगमगा उठा। उदय रत्न पहिचानता था। वह समझ गया कि अगूठी बहुत ही कीमती थी और पचास हजार रुपये से एक पैसे भी कम की न थी। उसने अगूठी को आगन्तुक युवती को वापस देते हुए कहा—'तो आप चाहती हैं कि किसी प्रकार यह अगूठी नरेन्द्रसिंह की उँगली पर पहुँच जाय और वह नकली अगूठी आपको वापस मिल जाय।'

'जी हां।' आग्रह पूर्ण स्वर में युवती ने कहा। थोड़ी देर रुक कर वह फिर बोली—'और यह काम तुरन्त होना चाहिये, वर्ना उन्हें पता चल गया तो मेरा सर्वनाश हो जायगा।'

'मगर इस काम में बड़ा खर्चा है। आपको पांच सौ रुपये खर्च लगेगा। काम कठिन है यह आप भी मानेंगी।'

'मैं राजी हूँ उदय जी! तो फिर यह अगूठी आप कब लीजियेगा मुझसे?' उसने पूछा।

'यह अगूठी तीन-चार दिन बाद मेरा सहकारी मानसिंह आपसे ले लेगा।' कह कर उदय ने कुमार नरेन्द्रसिंह के बारे में उससे पूछना शुरू किया।

'कुमार को किन-किन बातों का शौक है? जरा हमें बताइये।'

'कुमार को घोड़ा चढ़ना, शिकार करना, तेल मालिश करवाने का बहुत शौक है। वैसे वे अच्छे स्पोर्टसमैन भी हैं अभी कुछ दिनों से वे घोड़-सवारी से वंचित हैं। हाल ही में गिर पड़े थे। सारे शरीर में दर्द है। गनीमत है कि उनका हाथ-पांव नहीं टूटा-फूटा। घास पर गिरे थे।

'कच्चे घुड़-सवार होंगे।' बोला मानसिंह। अब तक वह चुपचाप एक ओर बैठ कर सुन रहा था।

'जी नहीं! घुड़-सवार तो पक्के थे। नया घोड़ा था। हाथी देख कर बिचका था।'

'उनके साथ हम परिचय कैसे करेंगे?' उदय ने पूछा। उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखायें स्पष्ट थीं। उसके प्रश्न को सुन कर युवती शुरू में चुप रही मगर थोड़ी देर बाद बोली—'यह तो बड़ा कठिन है। मगर मैं जान-पहिचान करवा सकती हूँ।' उस के स्वर में दुविधा स्पष्ट थी।

'खैर, आप इसकी चिन्ता न करें। धन्यवाद! आप परसों रेलवे स्टेशन पर आकर फर्स्ट क्लास वेटिंग रूम में मानसिंह को यह अगूठी दे दीजियेगा।' उदय ने शान्त स्वर में कहा।

आगन्तुक उठने ही वाली थी कि एकाएक उदय ने पूछा—'क्षमा कीजिये, एक बात पूछना भूल ही गया था। आपका सालगिरह कब था?'

'सालगिरह को बीते आज दस दिन हुए होंगे।' युवती ने उदय के प्रश्न के जवाब में कहा।

'आपने इतने दिनों तक इस अगूठी को लौटाने के बारे में क्यों नहीं सोचा?'

'मैं सोच तो रही थी मगर कोई राह नहीं सूझ रहा था। इसके अलावा हमारी शादी मेरे सालगिरह के सात दिन बाद होने को तै हुई थी। मैं सोच रही थी कि यदि शादी हो जायगी तो यह मामला भी आसानी से हल हो जायगा। मगर किसी वजह से पिता जी ने शादी को अगले वर्ष तक के लिये रोक दिया है।'

[२]

रामचरन कुमार नरेन्द्रसिंह को रोजाना तेल मालिश करने जाता था। उदय ने जब उसके हाथ बीस रुपये नकद रख दिये और कहा कि वह बीमारी के बहाने हफ्ते भर कुमार को मालिश न करे और हफ्ते भर के लिये अपनी एवज में उदय को अपना रिश्तेदार कह कर मालिश के काम पर लगा दे तो वह आसानी से राजी हो गया।

उदय की मालिश से कुमार बड़े प्रसन्न हुए। उसे तेल मालिश करने का वैज्ञानिक तरीका मालूम था इसलिये कुमार की सारी थकान जैसे दूर हो जाती थी। कुमार का दर्द भी उदय की मालिश ने खींच लिया। कुमार बड़े प्रसन्न हुए। उदय ने कहा, 'मालिक, अगर सँझवा के भी हमसे एक बेर मालिश करवाय लैं तो इ दर्द कुल पटाय जाई।' कुमार ने खुशी से सम्मति दे दी। और जिस समय शाम के वक्त कुमार के हाथों को उदय मालिश कर रहा था कि बिजली 'फिउज' हो गई और थोड़ी देर के लिये अन्धेरा छा गया और जैसे ही गैस की बत्ती लायी जा रही थी कि कुमार की अगूठी मालिश की वजह से फिसल कर गिर पड़ी। तुरन्त

गैस आ गया और उदय ने माफी मांगते हुए कुमार की अगूठी उन्हें पहिना दिया।

× × ×

निर्दिष्ट समय पर वही युवती आई। उदय अप ने दफ्तर में बैठा था। महिला को उसने आदर के साथ बैठने को कहा। वे बैठ गयीं।

'आप कामयाब नहीं हो पाये होंगे।' दुविधा पूर्ण स्वर में उसने उदय से पूछा। उदय मुस्कुरा कर बोला—'ना-कामयाबी शब्द तो हमने अपने शब्द-कोष से काट दिया है।'

'तो वह नकली हीरा आप लाये हैं?' उत्साहित युवती ने सहर्ष पूछा।

'जी हाँ।' प्रशान्त स्वर में धीरे से उदय ने कहा। वह कागज दबाने वाला शीशे का गोला अप ने ब्लाटिंग पैड पर नचा रहा था। उसके चेहरे का भाव सम्पूर्ण निर्विकार था।

'मुझे कृपया दे दीजिये।' युवती से अपना आग्रह छिपाये नहीं छिप रहा था। वह उतावली हो रही थी।

'पहिली मेरी फीस की रकम......।' उदय ने उसी प्रकार निर्विकार स्वर में कहा। युवती ने तुरन्त रुपये निकाले और उदय को देते हुए कहा—'मुझे माफ कीजियेगा। मुझसे भूल हो गई थी।'

'नहीं-नहीं, इसमें संकुचित होने की कौन-सी बात है? आखिर मुझे मेरी फीस मिल तो गई।'

उसके बाद उदय ने रसीद बही निकाल कर युवती को पांच सौ रुपये की रसीद दे दिया। उसके बाद उसने दराज खोल कर उसमें रुपये रक्खे और एक छोटा-सा पैकिट निकाल कर युवती को दिया। युवती ने पैकिट खोल कर देखा। उसके चेहरे पर संशय की छाया स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

उदय बोला—'मैं आपको एक कहानी सुनाऊँ। कुमार नरेन्द्रसिंह की परिचिता एक तालुकेदार की लड़की थी सुलेखा। उसके पिता राजा नहीं थे। यह बात तो 'इयर बुक' से मालूम हो सकती थी। यह सही था कि उसकी माली हालत खराब थी और वह शादी करना चाहती थी कुमार नरेन्द्रसिंह से। एक दिन नरेन्द्रसिंह ने उसे अपनी अगूठी के नग (जो कि एक बहुत ही कीमती हीरा था) उसे ठीक करवाने के लिये दिया। सुलेखा पहिले उस अगूठी को एक सोनार के यहाँ ले गयी—सोनार से नकली अगूठी बनवाने के बाद असली अगूठी मेरे पास लाई और दिखा गई ताकि मेरे दिल में उसकी बातों पर किसी प्रकार का सन्देह न हो। इसके बाद उस ने असली अगूठी कुँवर नरेन्द्रसिंह को वापिस कर दिया। वह स्वयम् बदल सकती थी उस अगूठी को। मगर उस हालत में उसके विवाह की बातें खतम हो जाने के अलावा उस पर मुकदमा भी चलने का अन्देशा था। इसलिये उसने यह जाल रचा। अगर मेरे आदमी द्वारा यह काम होता तो उस पर किसी का शुबहा न होता। उसने स्टेशन पर जल्दी बाजी में मुझे अगूठी दिया था। वह जान-बूझ कर देर से स्टेशन आई थी ताकि मुझे शीघ्रता में अगूठी देखने की फुरसत ही न मिले। मगर उसके दुर्भाग्यवश मैं रत्न परीखों से कम नहीं हूँ और एक नजर डालते ही मैं समझ गया कि मुझे दी हुई अगूठी नकली है! इसीलिये मैंने कुमार नरेन्द्रसिंह के हाथ में से असली अगूठी खुल जाने पर उसी असली को ही उन्हें फिर पहिना दिया, नकली नहीं। अगर बदल दिये होता तो शायद कुमार के लिये एक मामूली तेल मालिश करने वाले का पता लगाना सम्भव न होता और यदि होता भी तो सुलेखा पर कोई बात न आती।'

'आप शैतान हैं। मेरे पांच सौ रुपये वापस दीजिये।' क्रुद्धा युवती गर्ज उठी।

'आप खफा न हों—रुपये तो मेरे पांच दिन की फीस है जिन्हें मैंने आपके काम में बिताया है।'

'मेरे काम में खाक बिताया है...!' युवती निराशा के मारे उठ खड़ी हुई थी। उदय बोला—कतई आपके काम में श्रीमती जी! वर्ना मैं कुँवर की तेल मालिश क्यों करता? आपका काम भी किया है। नकली अगूठी ही तो चाहती थी न? सो मैंने

आपके हवाले कर दिया। मगर मेरी बात सुनिये, आप अभी नादान हैं। यह शायद आपका पहला प्रयत्न है। यह राह छोड़ दीजिये। इसी में आपकी भलाई है।'

युवती उदय की ओर एक तीव्र दृष्टि डालकर उठ कर चली गई। नकली अगूठी वहीं छोड़ गयी।

मानसिंह ने पूछा—'उदय तुम्हें शुबहा कब हुआ?'

'शुरू से ही! उसने परिचय झूठा दिया। कुँवर नरेन्द्रसिंह से उसके विवाह का प्रस्ताव किया गया था परन्तु कुँवर ने इन्कार कर दिया था। इस पर भी वह झूठ बोली थी। उसका सालगिरह मनाया ही नहीं गया था और जन्म दिन पर दस-पन्द्रह हजार रुपये पाना तो दरकिनार, उसके घर का खर्च चलाना भी आजकल दुश्वार हो रहा था बिना जांच पड़ताल किये कोई पचास हजार की अगूठी गिरो नहीं रखता। और अगर रखता भी है तो वह बात छिपी नहीं रहती। इसमें तो मुझे पता चला था कि वह अगूठी किसी दिन गिरो रखी ही नहीं गई थी। कुल राज जांच करने पर सोनार ने खोल दिया। मुझे कुँवर को सावधान करना है कि किसी सुन्दर मुख के चक्कर में पड़ कर वे इस किस्म की बहु मूल्य चीजों को दूसरों के हवाले न किया करें। .. मुझे सुलेखा के लिये दुःख होता है बेचारी ने अपने कुल बचे-खुचे रुपये को बटोर कर मुझे दिया था। वह इस अगूठी को पा जाने से बेंच कर अपना ठाट तब तक बनाये रहती जब तक कुँवर से उसकी शादी न होती। मगर बुरे काम का फल बुरा ही होता है। आओ मानसिंह सिनेमा देख आयें।'

◆

सन् १९५६ की छुट्टियाँ

उत्तर प्रदेश सरकार ने अगले कलेन्डर में ३७ दिन की सार्वजनिक छुट्टियां घोषित की हैं। ११ फरवरी को मौनी अमावस्या की छुट्टी को छोड़ कर शेष छुट्टियां सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में मनायी जायंगी।

छुट्टियों की सूची इस प्रकार है:—

नव वर्ष दिवस	१ जनवरी
गुरुगोविन्दसिंह का जन्म दिवस	२० जनवरी
गणतन्त्र दिवस	२६ जनवरी
मौनी अमावस्या	११ फरवरी केवल इलाहाबाद में
बसन्त पञ्चमी	१६ फरवरी
शिवरात्रि	१० मार्च
होली	२६ से २९ मार्च तक
गुडफ्राइ डे	३० मार्च
राम नौमी	१९ अप्रैल
भगवान महाबीर का जन्म दिवस	२३ अप्रैल
रमजान का आखिरी शुक्रवार	११ मई
इदुलफि	१२ मई
बुद्ध पूर्णिमा	२३ मई
अर्द्ध वर्षीय बैंकों की लेखा बन्दी	३० जून
इदुज्जुहा	१९ जुलाई
स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त
मोहर्रम	१७ और १८ अगस्त
रक्षा बन्धन	२१ अगस्त
जन्माष्टमी	२८ अगस्त
चेहलुम	२६ सितम्बर
महात्मा गांधी का जन्म दिवस	२ अक्टूबर
दशहरा	१२, १३, १४ अक्टूबर
बारावफात	१७ अक्टूबर
दिवाली	२ से ६ नवम्बर तक
कार्तिकी पूर्णिमा तथा गुरुनानक जन्म दिवस	१८ नवम्बर
क्रिसमस	२५ दिसम्बर
बैंकों की वार्षिक लेखा बन्दी	३१ दिसम्बर

आपका दिसम्बर मास का भविष्य

लेखक, श्री भुलईसिंह मुख्तार

अपनी जन्म राशि मालूम करके अपना भविष्य देखें। पुरुष के लिये जो स्त्री के बाबत फल लिखा है वह स्त्रियां अपने पति के लिये भी वही फल समझें।

मेष

शारीरिक तथा स्त्री कष्टकारी, धन का अपव्यय परन्तु आमदनी कुछ अच्छी रहेगी जिससे खर्च पूरा होता जायगा। मास के उत्तरार्ध में कष्टों में कमी, सुख शान्ति की ओर वातावरण अनुकूल होगा, नौकरी, व्यापार में भी उन्नति होगी। राजनैतिक कामों में सफलता, प्रतिष्ठा की वृद्धि तथा सफलता, १३, १४ तारीख विशेष खराब सावधान रहना चाहिए। १८, १९ सर्वोत्तम दिन है।

वृष

मन में अशान्ति, चितवृत्ति में स्थिरता न रहे, स्वास्थ्य गत मास से अच्छा, पराक्रम में सफलता, धन की आमदनी, शत्रुओं पर विजय, मुकदमा में कामयाबी, नवीन गृह निर्माण की इच्छा, स्त्री से मनमुटाव तथा विछोह भी सम्भव, शारीरिक सुख शांति के लिये यह मास अच्छा नहीं। तारीख १०, ११, विशेष खराब दिन है, सावधान रहना चाहिए।

मिथुन

मास के पूर्वार्ध में मानसिक अशान्ति, पुत्र कष्टकारी, विद्या में बिघ्न, उत्तरार्ध में वातावरण में सुधार, शत्र पर विजय, धन प्राप्ति अच्छी होते हुए फिजूल खर्च ज्यादा रहेगा, स्त्री से सुख शान्ति तथा पूर्ण सहायता मिलेगी, महीने की १३, १४ ता० खराब, १५, १६ सर्वोत्तम हैं।

कर्क

यह मास पूर्ण उत्तम होते हुए भी पूर्वार्ध शारीरिक सुखप्रद न होगा, माता को कष्टकारी, शत्रुओं में बृद्धि, पुत्र को कष्ट, विद्या में विघ्नकारी, उत्तरार्ध उत्तम, स्त्री से सुख, शत्रु शक्ति नाश, आमदनी अच्छी होते हुए भी जितना चाहिए उतना न होना महीने की १८, १९ तारीख सर्वोत्तम होगी तथा १०, ११ अनिष्टकारी है।

सिंह

प्राक्रम में सफलता, मान प्रतिष्ठा की वृद्धि पर उच्च पद प्राप्ति में विघ्न, शारीरिक सुख में बाधा, माता-पिता को कष्टकारी, उत्तरार्ध में शत्रु प्रबल हों जिससे धन-हानि की सम्भावना जिससे सतर्क रहना चाहिए। इस मास की ५, ६ ता० शुभ है।

कन्या

शारीरिक सुख, आमदनी में पिछले मास से कुछ उन्नति, स्त्री से चिन्ता, सन्तान से सुख, नेक धर्म कामों में मन लगे, राज दरबार में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी, नौकरी पेशा की तरक्की की सम्भावना। इस मास की १७, १८, १९ ता० शुभ है। १०, ११ नेष्ट हैं।

तुला

मान प्रतिष्ठा में बृद्धि, आमदनी अच्छी, राज दरबार से मान पर स्त्री के लिये कष्टकारी, चोरी का भय भी है, धन व्ययकारी भी सिद्ध होगा। पूर्वार्ध से उत्तरार्ध कुछ उत्तम बीतेगा। धन रक्षा का विशेष ध्यान, सतर्कता पूर्वक रखना चाहिए। १०, ११, १२, १३ तारीखों को सावधानी से रहना नेष्ट फलकारी है।

वृश्चिक

शारीरिक कष्टकारी, स्त्री कष्टकारी तथा शत्रु द्वारा धन का अपव्यय होगा, परन्तु बन्धु जन व पुत्रों से विशेष सहायता के कारण उपरोक्त कष्ट में

विशेष सहायता मिलेगी, शत्रु से तथा अपने स्वास्थ्य के लिये विशेष सतर्क रहना चाहिये। लाभ की दृष्टि से साधारणतः अच्छा रहेगा, भाइयों से आर्थिक लाभ भी होगा। ५, ६, १७, १८, तारीखें शुभ फलदायी हैं।

धन

आमदनी अच्छी, मान प्रतिष्ठा, राजनैतिक ख्याति, राजदरबार से मान, शत्रु पर विजय, परन्तु धन का खर्च तथा पराक्रम में विशेष सफलता न मिलेगी, मास उत्तरार्ध पूर्वार्ध से कुछ व्ययकारी सिद्ध होगा। १२, १३ ता० नेष्ट फलदाई है, ६, ७, उत्तम दिन है।

मकर

आमदनी अच्छी होगी, विशेष कर उत्तरार्ध यानी १६ दिसम्बर से लाभ के लिये उत्तम, व्यापार में लाभकारी, शारीरिक सुख के लिये भी उत्तम, पुत्र को कष्टकारी, विद्यार्जन में विघ्न, परन्तु नेत्र में कष्ट, आर्थिक दृष्टि से महीना विशेषकर १६ दिसम्बर से अति उत्तम रहेगा।

कुम्भ

चित्त में चिन्ता व अशान्ति, धार्मिक कामों में बाधा, नौकरी में झगड़े के कारण आपत्ति, शत्रु भय, धन का व्यय, परन्तु आखिर में शान्ति, सफलता, चित्त में प्रसन्नता प्राप्त होगी और माता-पिता के लिये कष्टकारी है। ६, ७ शुभकारी दिन है

मीन

इस राशि वाले को आमदनी अच्छी होगी। पराक्रम में सफलता, भाइयों को कष्ट, नौकरी तथा राजदरबार से मान होगा। शत्रु नाश होंगे, धर्म कार्य में बाधा होगी। महीने की १०, ११ तारीख अनिष्टकारी, १७, १८, १६ विशेष शुभकारी है।

——

नई पुस्तकें

निःश्वास—लेखक, श्री श्यामनारायण मिश्र 'श्याम'
प्रकाशक, भारती भण्डार डेरापुर,
कानपुर। पृष्ठ संख्या १००, मूल्य १=)

प्रस्तुत पुस्तक में ब्रजभाषा में कृष्ण के प्रति गोपियों का विरह वर्णित है। जिस प्रकार रत्नाकर के उद्धव शतक में उद्धव-गोपी सम्वाद है उसी प्रकार इस पुस्तक में भी है। इस पुस्तक में संग्रहीत रचनाओं में अधिकांश ऐसी हैं जो 'रत्नाकर' नहीं ब्रजभाषा के सभी श्रेष्ठ कवियों से टक्कर ले सकती हैं।

हमें यह जान कर दुःख हुआ कि कवि का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। हमारी कामना है कि वे नीरोग रह कर हिन्दी का भण्डार भरते रहें।

राजस्थान सरकार के प्रकाशन

राजस्थान सरकार के निम्नलिखित प्रकाशन हमें प्राप्त हुए हैं:—

१—राजस्थान में शान्ति व्यवस्था का प्रबन्ध।
२— " " विकास विस्तार कार्य की प्रगति।
३—जलकष्ट को चुनौती।
४—छठावन महोत्सव।
५—प्रकाशन की नई दिशा।
६—पन्द्रह अगस्त।
७—गण तन्त्र दिवस।
८—अल्प बचत योजना।
९—संयुक्त राजस्थान (मासिक पत्र)
१०—विकास (मासिक पत्र)

ये सभी प्रकाशन सुन्दर छपे हुए रंगीन आवरणों से युक्त, ज्ञातव्य बातों से भरे हुए हैं और प्रकाशन की विविध दिशाओं में सरकार की प्रगति और जनता के सहयोग की कथा सुन्दर ढङ्ग से अङ्कित करने में सफल हुए हैं। इनके सफल प्रकाशन के लिए हम सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय राजस्थान, जयपुर को हार्दिक बधाई देते हैं।

आधुनिक समाज की एक कहानी

भुल्लन जी पानवाला

लेखक, श्री श्रीनाथसिंह

[१]

हमारी इस कहानी के नायक हैं, भुल्लन जी पानवाला और आज जब कि हम उन्हें प्रथम बार पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने जा रहे हैं, वे इटारसी की धर्मशाला में अपनी रुपयों की थैली, या आधुनिक शैली में उसे 'पर्स' कहना अधिक उपयुक्त होगा, भूल कर चले जा रहे हैं।

इस 'पर्स' को बम्बई के जेबकटों से सावधानी के साथ बचाते हुए वे यहां तक ले आये। परन्तु स्नान के पश्चात् वस्त्र बदलते समय कुर्ते की जेब से निकाल कर उसे ताख पर रखा तो वह रखी ही रह गई। ताख पर से उठा कर नये स्वच्छ पहने हुए कुर्ते की जेब में रखना वे भूल गये। ताख के दोनों तरफ दो खूँटियां थीं जिनमें एक डोरी बँधी थी। भीगे तौलिये को सूखने के लिये उस डोरी पर डाला तो पर्स आँखों के ओझल हो गई।

कोठरी के आधे भाग में भुल्लन जी पानवाला का बिस्तर अधखुला पड़ा था। उस पर बैठे हुए सामने बक्स में रखी उन वस्तुओं को वे सहेज रहे थे, जिन्हें अपनी कन्या की शादी के लिये बम्बई से लेकर चले थे। साड़ियां, ब्लाऊज, शृङ्गार की विविध वस्तुएँ, कंघा, दर्पण। चांदी की चौखटे में कलापूर्ण ढङ्ग से निर्मित दर्पण बहुत ही आकर्षक था। उसे निकाल कर उसमें उन्होंने अपना प्रसन्न मुख देखा। बड़ी-बड़ी मूँछों में जो दो एक बाल सफेद हो रहे थे उन्हें नोचा। सिर के अँग्रेजी फैशन से कटे हुए बालों को सँवारा। ऊँची गांधी कैप सिर पर रखा। और अमल धवल खादी का पार्सी कोट पहना।

इन सब कामों में काफी देर लग गई और गाड़ी के आने का समय हो गया। उन्होंने जल्दी-जल्दी सन्दूक में ताला बन्द किया, बिस्तर बन्द में सूखे गीले कपड़े ठूँसे, उसे कस कर बांधा और सन्दूक पर उसे धर दिया।

अब वे धर्मशाला छोड़ देने के लिये सर्वथा तैयार थे। केवल एक कुली या मजदूर के आने भर की देर थी। उन्होंने उस अन्धेरी-सी कोठरी में एक बार फिर दृष्टि दौड़ाई।

अर्द्ध सफेद तौलिया वैसी ही दीवाल के साथ मिल कर इस तरह एकाकार हो गया था कि उन्होंने उसे बिल्कुल न देखा। जब इतना बड़ा तौलिया ही नहीं दिखाई पड़ा तब उसके पार ताख में पर्स पर कैसे दृष्टि पड़ती। कोठरी के दरवाजे को बन्द करके बाहर से जंजीर चढ़ा दी और धर्मशाला के मैनेजर को सूचना दी कि जा रहे हैं।

[२]

तभी उसके सामने लगभग १८, १६ वर्ष का एक दयनीय भूखा युवक आकर खड़ा हो गया। रूखे केश, मैला बदन, फटा कुर्ता, नंगे पांव।

'नौजवान आदमी हो भीख मांगते तुम्हें लज्जा नहीं आती ?' भुल्लन जी पान वाला ने उपेक्षा के साथ उसकी ओर देखते हुए कहा—

'मुफ्तखोरों के लिये मेरे पास पैसा नहीं है। परन्तु हां, यह सन्दूक और बिस्तर उठा कर स्टेशन के अन्दर तक ले चलो तो दो आने दूंगा।'

युवक तैयार हो गया। सन्दूक उठाने लगा। एक तो वह कई दिन का भूखा था दूसरे सन्दूक बहुत वजनी था। भुल्लन जी को भी हाथ लगाना पड़ा। बड़ी कठिनाई के बाद सन्दूक और बिस्तर को उस के सिर पर पहुँचाया। आगे-आगे उसे चलाया पीछे आप चले कि कुछ छूटने न पावे।

उत्तर को जाने वाली डाक गाड़ी आकर प्लेट फार्म पर खड़ी थी। इसी में भुल्लन जी पान वाला को चढ़ना था। थर्ड क्लास का एक ही डिब्बा था और उसमें ठूसमठूस मुसाफिर भरे थे। पर भुल्लन जी इससे भी अधिक भीड़भाड़ के अभ्यस्त थे। अनेक हिकमतों के पश्चात् खिड़की के रास्ते से वे स्वयम्, फिर बिस्तर बन्द, फिर बक्स तीनों पहुँच गये। डिब्बे के अन्दर ऐसा कोलाहल मचा जैसे सूखे चूने के शान्त पत्थर खडों पर एक घड़ा पानी पड़ गया हो।

डिब्बे के भीतर पहुँच जाने पर उन्होंने एक बार फिर इस जन कोलाहल की परवा न करते हुए अपनी अन्तर दृष्टि दौड़ाई कि धर्मशाला में कुछ भूल तो नहीं आये हैं। अब उनके मानस पटल पर ताक की दोनों ओर खूँटियों से बँधी डोरी पर झूलता तौलिया खचित हो गया। १।।) रुपये मूल्य का सर्वथा नवीन तौलिया था। उन्होंने इञ्जन की ओर देखा, अभी पानी ले रहा था। स्टार्टर सिंगनल की ओर देखा, झुका न था। गार्ड की ओर देखा, किसी से बातें करने में तल्लीन था। सोचा, गाड़ी के छूटने में कुछ देर है। एक छलांग मार कर तौलिया ले आऊँ। परन्तु डिब्बे से उतरने-चढ़ने की भगीरथ साधना उन्हें शक्ति से बाहर प्रतीत हुई। अतएव उन्होंने उस युवक से, जो उनका बोझा लाया था, जल्दी-जल्दी कहा—'देखो, उस कोठरी में जिससे यह सामान लाये हो, मेरा तौलिया रह गया है। उसे तुरन्त ले आओ। कोई रोके तो कहना मुसाफिर का है जो इसमें ठहरा था। हाँ, जाओ! तुम्हें एक आना और दूँगा।'

युवक जी छोड़ कर दौड़ा। भुल्लन जी पान वाला ने अपने विशाल शरीर से खिड़की से सटकर बैठे दो मुसाफिरों को चपेटते हुए खिड़की के बाहर सिर निकाला कि वह तौलिया लेकर लौटे तो उन्हें देख कर सीधा दौड़ा आवे और अन्य डिब्बों की ओर न भटके। वे दोनों मुसाफिर नीचे से भुल्लन जी पानवाला को चिकोटियों से नोचे डालते थे पर वे तो तौलिये के ध्यान में इतने तल्लीन थे कि उन्हें कुछ पता ही न चला।

[३]

तेजी से दौड़ता हुआ, मार्ग में दो एक व्यक्तियों को धक्का देता हुआ वह युवक धर्मशाले के अन्दर उसी कोठरी के द्वार पर जाकर रुका। मैनेजर ने पूछा—'कुछ भूल गया है, क्या रे।'... उत्तर में, 'जी महाराज।' कहता हुआ वह तत्काल अन्दर पहुँचा। तौलिया यथा स्थान झूल रहा था। उसने उसे उठा लिया। अरे! यह क्या? ताख पर बहुत ही सुन्दर प्लास्टिक का पर्स! युवक ने उसे उठाया। शायद यह भी उसी मुसाफिर का हो। तेजी से दौड़ कर जाने की उसकी इच्छा एक दम जाती रही। पर्स के भीतर क्या है? यह जान लेना उसने बहुत आवश्यक समझा। तत्काल उसने पर्स खोल डाला, सौ-सौ रुपये के एक दो तीन! हे भगवान पूरे २० नोट। दस-दस रुपयों के पांच और। इतने रुपये छूने की कौन कहे, उस दुखी युवक ने कभी देखे भी न थे। पर्स को उसने फटे कुर्ते की जेब में रखा और हाथ में तौलिया लिये हुए बाहर निकला।

'यह तौलिया था, महाराज।' मैनेजर से बोला

'ले जा।'

युवक मन्द गति से धर्मशाला के बाहर निकला गाड़ी अभी भी खड़ी थी। इञ्जन सीटी दे रहा था। गार्ड हरी झण्डी दिखा रहा था। भुल्लन जी पान वाला अपना आधा से अधिक शरीर खिड़की के बाहर निकाले अपनी सिकन्दरी भुजा हिला रहे थे।

परन्तु युवक जैसे नदी के चढ़ाव की ओर तैर रहा हो। चींटी की चाल से बढ़ रहा था। उसका

अन्तर तूफानी समुद्र की भांति लहरा उठा था और उसका शरीर उन विचार तरङ्गों के थपेड़े खाता हुआ मांझी-विहीन नौका-सा लुढ़क रहा था। उसके अन्तर में द्वन्द मचा था कि तौलिये के साथ वह मुसाफिर को उसका पर्स भी दे अथवा न दे। सहसा उसका ध्यान गाड़ी की ओर गया। वह गतिमान होने जा रही थी। एक बार फिर वह तेजी से दौड़ा। भुल्लन जी पान वाला के खिड़की से बाहर निकले अर्द्ध शरीर से टूट कर अलग हो जायगी, ऐसा प्रतीत होने वाली बांह में उसने तौलिया पकड़ा दिया।

और कहा—'पैसा महाराज।'

भुल्लन जी पानवाला जहाँ इस बात में सतर्क थे कि दौड़ कर आते हुए युवक के हाथ से तौलिया ले लें वहीं यह भूल गये थे कि उसे तीन आना देना भी है। उन्होंने जेब में हाथ डाला। बँधा रुपया निकला। फुटकर पैसे न थे। उन्होंने विचित्र मुँह बनाया। मानों प्लेट फार्म पर गाड़ी के साथ दौड़ते हुए युवक से अपराध की माफी मांग रहे हों।

युवक प्लेट फार्म पर खड़ा हो गया। उसकी सांस गाड़ी की चाल के समान ही तेज हो रही थी, उसका हृदय फटे कुर्ते की जेब में पड़ी पर्स का स्पर्श करके धड़क रहा था। बस गाड़ी आँखों से ओझल हुई और ये रुपये मेरे हैं। परन्तु तभी सत्य की अन्तर्प्रेरणा ने लोभ के मुँह-जोर घोड़ों की बाग-डोर खींची। नैतिकता ने इच्छा पर विजय पाई। विद्युत गति से उसने जेब से वह पर्स निकाल कर भुल्लन जी पान वाला को दिखाया—'यह आपका है?' और रेल के साथ दौड़ा।

डिब्बे के भीतर बैठे लोगों को जान पड़ा जैसे वह मुसाफिर पागल हो गया हो। एक हाथ से उन्होंने खतरे वाली जंजीर पकड़ी दूसरा हाथ शेष शरीर के साथ खिड़की के बाहर निकाला और वह झूल पड़े, जैसे वे आत्म हत्या करने जा रहे हों उन के नीचे दबते हुए उन दोनों मुसाफिरों ने भी जोर लगाया कि इस बार उन्हें खिड़की के बाहर ही कर दें।

कुछ दूर पर जाकर गाड़ी खड़ी हो गई। युवक उन्हें पर्स थमाता हुआ बोला—'रुपये सहेज लीजिये।' अब भुल्लन जी डिब्बे के अन्दर पूर्ण रूप से आये। डिब्बे के अन्दर समस्त मुसाफिरों को अब परिस्थिति का ज्ञान हुआ। और जब सबके सामने पानवाला ने अपने रुपये गिने, दो हजार पचास और कहा—'ठीक है।' तब सबने उस युवक को श्रद्धा, आदर और आश्चर्य चकित दृष्टि से देखा। उन दोनों मुसाफिरों ने तो जो भुल्लन जी से दबे जा रहे थे, खींच कर उसे अन्दर ही बिठा लिया।

तब तक गार्ड, स्टेशन मास्टर और कितने ही लोग वहाँ पहुँच गये। सबको बताया गया कि क्या मामला है। सबको वह युवक दिखाया गया। चारों ओर से इतनी प्रशंसा व सहानुभूति पाकर वह युवक किंकर्तव्य विमूढ़-सा डिब्बे के अन्दर ही बैठा रहा। इञ्जन ने पुनः सीटी दी। तब भी वह गाड़ी से न उतरा। उसे तो ऐसा लग रहा था मानों यह डिब्बा उसकी माता है—जिसकी गोद में वह अशक्त शिशु-सा अभी-अभी आया है।

[४]

तगति से भागती हुई रेल गाड़ी के उस डिब्बे में सब व्यक्तियों का ध्यान अब इन्हीं दोनों पर था, वह युवक और भुल्लन जी पानवाला। दोनों का परिचय पाने के लिये सब उत्सुक हो गये। युवक ने अपनी कथा इस प्रकार बताई—'मैं प्रतापगढ़ जिले में चिलबिला स्टेशन के पास अन्तरी गांव का रहने वाला हूँ।' अन्तरी नाम सुन कर भुल्लन जी चौंके। इसी गांव में उनकी कन्या की शादी तै हुई थी।

'तुम्हारा नाम?'

'त्रिभुवन।'

'जात?'

'जात बताने से लोग मुझसे घृणा करते हैं?'

'मैं उन आदमियों में नहीं हूँ।'

'तब सुनिये। मैं हरिजन हूँ।'

'तुम पढ़े भी जान पड़ते हो?'

'जी! मैंने मारकूट कर हाई स्कूल पास किया है। परन्तु गरीबी और हरिजन होना मार्ग में दो बड़ी रुकावटें हैं। प्रतापगढ़ से बम्बई तक छान डाला।'

डिब्बे में वर्तमान समय में देश में फैली हुई छुआछूत, शिक्षित नवयुवकों की बेकारी और वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर यथेष्ट चर्चा हुई। श्रम के महत्व पर भुल्लन जी का भाषण हुआ। इसी भाषण में उन्होंने बताया कि यद्यपि वे कुलीन ब्राह्मण हैं तथापि जाति की परवाह न करके उन्होंने बम्बई के होटलों में प्लेटें धोई हैं, सड़कों पर झाड़ू लगाई है, बाजारों में बोझा ढोया है, खेतों में हल चलाया है और अन्त में बम्बई में पान की एक दूकान खोली और आज बम्बई नगर में 'सेठ भुल्लन जी पान वाला' के नाम से विख्यात हैं। बड़े-बड़े सेठों की तरह उनका यह नाम दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो रहा है। पढ़-लिख कर जो क्लर्की और मास्टरी की सोचेगा वही इसी तरह मारा-मारा फिरेगा जैसे यह लड़का है। पर जो जाति का मिथ्याभिमान छोड़ कर हाथ से श्रम करेगा वह मेरी तरह सर्वसुख भोग करेगा। यह श्रम का युग है। उनका ध्यान फिर युवक की ओर गया। 'नहा-धोकर उज्जवल वस्त्र पहन ले तो यह किस ब्राह्मण क्षत्रिय से कम है। उन्होंने कहा—'बेटा मैं तुम्हें कुछ उपहार देना चाहता हूँ।' यह कहते हुए उन्होंने ५०) उसकी ओर बढ़ाये। किन्तु जिसने अपने हृदय पर काबू पाकर अपने आपको दो हजार के प्रलोभन से बचा लिया था उसके निकट ५०) का कोई मूल्य न था। उसने इतना ही कहा—'यदि आपकी मेरे ऊपर कृपा है तो मुझे कोई काम दिलावें।'

'अच्छा तो तुम मेरे गांव नरधामपुर तक चलो, कन्या का विवाह करके शीघ्र ही लौटना है। तब बम्बई में तुम्हें।'.....

गाड़ी यमुना पुल पर से पार हो रही थी। प्रयाग आ गया था। जन कोलाहल और खड़-खड़ की आवाज में आगे का स्वर विलीन हो गया।

[५]

नरधामपुर में भुल्लन के दरवाजे पर बड़ी चहल-पहल थी। जो कमी थी भुल्लन जी के आने से पूरी हो गई। भुल्लन जी ने त्रिभुवन को अपने बगल में चारपाई पर बैठाया और रास्ते का सब किस्सा बतलाया। कहा यह राम, कृष्ण, गौतम और गांधी का देश है। इस भूमि पर सच्चे त्यागी महापुरुष पैदा ही होते रहेंगे। परन्तु जब उसकी जाति बतलाई तब सब लोग शंकित-से हो उठे। पास ही खड़े हुए नाई ने कहा—'बराती यों ही बिगड़े हैं, दरवाजे पर हरिजन को चारपाई पर बैठा देखेंगे तो लौट ही जायंगे।'

'लौट जायं?' भुल्लन जी कह तो गये। पर सोचा यह बम्बई नहीं है। उस युवक से पूछा—'इस गांव के हरिजनों में तुम किसी को जानते हो?'

'जी, मेरे नाना-नानी यहां रहते हैं?'

'तो बेटा आज के दिन तुम उन्हीं के यहाँ ठहर जाओ।'

त्रिभुवन उसी दम वहाँ से उठ कर अपने नाना के घर आया। बुढ़िया नानी त्रिभुवन को देखते ही हर्ष से उन्मत्त-सी हो उठी। उसकी दशा पर दुख प्रकट करती हुई बोली—'यह नरधामपुर नहीं नराधमपुर है। ऊँची जाति के लोग हम हरिजनों का इसी प्रकार यहां अपमान करते हैं। तूने इतना बड़ा त्याग दिखाया पर तो भी उन्होंने तुझे इस लायक नहीं समझा कि अपने दरवाजे पर चारपाई पर बैठावें।

उधर बराती बहुत ऊधम मचा रहे थे। बिना ब्याह किये लौट जाने की धमकी दे रहे थे, अब क्या बात है? अब तो भुल्लन भी आ गये। अब रुपये क्यों नहीं देते हो?

भुल्लन जी ने उन रुपयों को ले जाकर समधी साहब के पांव पर धर दिया। उन्होंने रुपयों को गिना। बोले—'बस, दो हजार।'

'पंडित जी, मुहूर्त टला जा रहा है। कमायेंगे, आगे चल कर पूरा कर देंगे।'

'यही बम्बई में अब तक कमाते रहे हो। हम अन्तरी के कुलीन मिश्र। तीन हजार से एक पैसा भी कम न लेंगे।

भुल्लन जी ने अपनी टोपी उतार कर मिश्र महाराज के पैरों पर धर दी—'मेरी लाज रखें ?'

मिश्र जी क्रोध से उठ कर खड़े हो गये। टोपी में ऐसे लात मारा जैसे वह फुटबाल हो।

समाज सुधार के लिये, प्रगति शील विचारों के लिये, जन समाज में आहत भुल्लन जी पानवाला मिश्र जी के इस व्यवहार से तिलमिला उठे। क्षण भर कुछ विसूरते खड़े रहे। फिर बोले—'तो आप शादी के लिये तैयार नहीं हैं ?'

'नहीं, हजार बार नहीं ?'

दोनों ओर से कड़ी बातें होने लगीं। फौजदारी की नौबत आ गयी।

'यह जोराजामा और मौर उतार कर फेंक दो जी।' मिश्र जी ने अपने लड़के को आज्ञा दी।

वैवाहिक शुभ शकुन की सभी चीजें फेंक दी गयीं।

हतप्रभ भुल्लन जी ने नत मस्तक होकर भारी हृदय से सब चीजें सम्भालीं। जहाँ हर्ष का पारावार लहरा रहा था, भारी शोक छा गया।

यह समाचार जब त्रिभुवन की नानी ने सुना तब हर्ष से उसकी छाती फूल उठी। अपनी आँखों से भुल्लन की बेइज्जती देखने वह बाहर निकली। उसके पीछे त्रिभुवन भी था। तभी उसे भुल्लन ने पकड़ा—'बेटा! यह मौर तुम बांधो। तुम! हरिजन हो सही पर अपने को उच्च कहने वालों से तुम सब तरह श्रेष्ठ हो।'

'त्रिभुवन!' नानी चिल्लाई—खबरदार जो ब्राह्मण को छुआ, उसका धर्म चला जायगा।'

भुल्लन जी ने वे बीसों नोट त्रिभुवन की नानी की ओर बढ़ाते हुए कहा—'चाची! व्यङ्ग मत कसो। तुम्हारे नाती का कम मोल नहीं लगा रहा हूँ ब्याह होने दो। ये रुपये तुम लो।'

'मैं लूँ ?' बुढ़िया को लगा जैसे किसी ने उसे नर्क से निकाल कर एक दम स्वर्ग के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया हो।

'अरे तुम! त्रिभुवन की नानी तुम? ब्राह्मण की बेटी से अपना बेटा ब्याहोगी? बोटी-बोटी तुम्हारी काटी जायगी?' मिश्र जी ने क्रोध से दांत पीसते हुए कहा।

भुल्लन जी ने फेंका हुआ मौर त्रिभुवन के सिर पर रखा। परन्तु ··यह क्या? नाई उसे विवाह की बेदी पर ले जाने को तैयार न हुआ। बाजे बजने बन्द हो गये। स्त्रियाँ जो मङ्गल गाने को उत्सुक थीं, उठकर अपने-अपने घरों को चल पड़ीं।

उधर गालों पर लिपटी युगों की पंक अपने अश्रुओं से जैसे और भी गाढ़ी करती हुई त्रिभवन की नानी कहने लगी—'माफ करो महाराज! हमें नर्क का रास्ता मत दिखाओ।'

भुल्लन जी ने सब गांव वालों के बीच में घोषणा की—'कोई बात नहीं, आप लोग धीरज धारण करें। मैं इसी दम अपनी कन्या के साथ बम्बई जा रहा हूँ। और इस गांव में अब तभी लौटूँगा जब सुनूँगा कि इस गांव में बिना दहेज के, बिना जात-पांत के विचार के शादियां होने लगी हैं।'

——

याद रखने की बातें

१—गर्भावस्था में नित्य काफी आराम करना चाहिए। विशेषकर आठवें और नवें मास में। क्योंकि यही समय शिशु की विशेष वृद्धि का होता है।

२—गर्भिणी को दूध खूब पीना चाहिए। भोजन सादा और निश्चित समय पर करना चाहिए।

३—नित्य कोई भी फल खाने की आदत डालो।

—बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए० यल-टी०

रसोई

टमाटर सॉस

सामग्री—पांच सेर पके टमाटर, चीनी सेर भर, नमक छटांक भर, जीरा एक तोला, सोंठ एक तोला, सिरका एक कप, लाल मिर्च अन्दाज से।

विधि—किसी कलईदार बर्तन में टमाटरों के टुकड़े कर चूल्हे पर चढ़ा दें। गल जाने पर जाली के कपड़े से छान कर रस निकाल लें तथा उसे फिर चूल्हे पर चढ़ा दें। जब पक कर गाढ़ा हो जाये तब उसमें चीनी डाल कर फिर चलायें। तदोपरान्त भूना जीरा, सोंठ, लाल मिर्च इत्यादि बारीक पीस कर मिला दें। सिरका भी छोड़ दें। कुछ समय पश्चात् उतार लें तथा ठडा करके बोतलों में भर दें। यह चटनी स्वादिष्ट और पौष्टिक भी है।

—पुष्पलता सक्सेना एम० ए०

आलू की रसभरी

सामग्री—१ सेर आलू, १ छटांक मैदा, १ सेर चीनी, घी, इलायची अन्दाज से।

विधि—आलू उबाल कर सिल पर बारीक कर लीजिये। उसमें मैदा मिला कर फेंट लो। इलायची मिला दो। अब घी में धीमी आंच पर बड़े की तरह तल लो। पहले से ही एक तार की चाशनी तैयार कर रखो। उसमें तल कर बड़ों को डालती जाओ। जब उसमें रस सीझ जाय तब गुलाब जल के छींटे देकर इस्तेमाल करो।

—कु० शकुन्तला शाही

इमली की चटनी

थोड़ी इमली भिगो दीजिये। मथ कर पतली कर और पानी डाल कर छान लीजिये। थोड़ा तेल आंच पर चढ़ा कर हींग, जीरा, राई का बघार देकर उतार लीजिये। फिर छनी हुई इमली तिली भूनी हुई कूट कर थोड़ी-सी हल्दी रंग आवे जैसी चुटकी भर, फिर मूँगफली के दाने छिले सफेद और थोड़ा गुड़, हरी मिर्च कतर कर ४-५ सब डाल दो और पकने को रख दो। पकते-पकते गाढ़ी चटनी जैसी हो जाय तो उतार लो। अमृतवान में भर लो। ठंडा होने पर थोड़ा नमक डाल दो। यह चटनी गर्मी में आठ रोज सर्दी में १५-२० रोज ठहरती है।

—सरला कुमारी सुरौठ

नानखताई

पाव भर सूजी, पाव भर घी और पाव भर चीनी एक में मिला कर मल डालें। इसमें तीन माशे समुद्र फेन डालें। छोटा-छोटा पेड़ा बना कर लोहे के बर्तन में रख लें। ऊपर से लोहे की परात से ढक दें और नीचे ऊपर कोयलों की जलती आग रख दें; बीस मिनट में खताइयाँ खिल जायँगी। आग हटा कर खताइयां उतार लें।

सूरन का भरता

पके हुए सूरन को हथेली द्वारा खूब मसल कर महीन कर लें। उसमें फुटकी जरा भी न रहे। उस में बढ़िया सरसों का तेल, हरी मिर्च के टुकड़े, हरी धनिया की पत्ती, अमचुर, नमक, लहसुन डाल दो, फिर सबको मिला कर सान लीजिये, भरता तैयार हो गया।

——

सिनेमा-संसार

अभिनेत्रियाँ रुपयों का क्या करती हैं ?

अभिनेत्रियाँ बहुत रुपये पाती हैं। पर फिर भी उन्हें रुपयों की कमी बनी ही रहती है। इतने रुपये वे क्या करती हैं ? स्वयम् उनके मुख से सुनिये—

नलिनी जयवन्त

मैं एक औरत हूँ। औरतों में यह दोष होता है कि जब वे बाजार में निकल जाती हैं तब उनकी आँखों के सामने से जो भी चमकदार वस्तु गुजर जाती है, उसे वे चाहती हैं कि अपने लिये खरीद लें यही अवस्था मेरी भी है।

कार से मुझे विशेष रुचि है। मुझे एक कार पहले से थी। एक दिन मैं बाजार में निकली। देखा सामने से एक सुन्दर-सी कार गुजर गयी। मन में आया इसे खरीद लूँ और उसी दिन उसे खरीद भी लिया। कभी ऐसा नहीं सोचा कि नई कार लेने से पहले पुरानी को वेंच तो लें। अपनी यह मूर्खता मुझे बाद में समझ में आयी। इसी तरह एक बार मैं दिल्ली के लाल किले में गयी। वहाँ खादी भंडार में पहुँची और देखा कि काठियावाड़ी सोफे और कुर्सियाँ बिक्री के लिये रखी हैं। ये मुझे बड़ी अच्छी लगीं और मैंने उन्हें खरीद लिया, किन्तु जब घर पहुँची तब देखा कि घर में सामान इतने अधिक पड़े हुए हैं कि इन सोफों को रखने की कहीं जगह ही नहीं है।

मुझे रुपये की आय है अवश्य, पर मैं उसे बचा नहीं पाती और इसी तरह वे व्यय हो जाया करते हैं। मुझे पता नहीं रहता कि वे कहाँ चले गये।

निरूपा राय

सुन्दर कपड़े और गहने देख कर और औरतों की तरह मेरा मन भी एक बार मचल उठता है। पर मैं उन्हीं वस्तुओं को खरीदती हूँ जिनकी वस्तुतः मुझे आवश्यकता होती है। मैं चाहती हूँ एक जमीन खरीदूं और घर बनवाऊँ। मेरे पास जमीन है और घर भी है; पर वह पर्याप्त नहीं है। इन्हें खरीदने पर मुझे उतनी ही खुशी होती है जितनी अन्य औरतों को गहने खरीदने से होती है।

वस्तुतः मैं चाहती हूँ कि किसी तरह कुछ रुपये बचाऊँ, पर वह हो नहीं पाता।

गीता बाली

एक औरत के रूप में मैं चाहती हूँ कि तरह-तरह के सुन्दर कपड़े, गहने और शृङ्गार के अन्य प्रसाधन खरीदूं। एक विवेकशील रमणी की तरह मैं यह भी चाहती हूँ कि जमीन खरीदूँ, मकान बनवाऊँ, रुपये बचाऊँ और उनसे कुछ ठोस कार्य करूँ। पर वस्तुतः यह सब हो नहीं पाता। मेरे बहुत-से रुपये आयकर के रूप में ही सरकार के खजाने में चले जाते हैं।

मधुबाला

मैं मितव्ययी नहीं हूँ। इसका एक सीधा कारण यह है कि रुपये खर्च करने की कला मुझे मालूम नहीं है। कपड़े और गहने के प्रति मुझे कोई विशेष आकर्षण नहीं है। मैं यात्रा नहीं करती। बाजार में विशेष निकलती भी नहीं। ईश्वर की कृपा से वे सभी वस्तुएँ मेरे पास हैं जिनकी जीवन में आवश्यकता होती है। अतः मैं सुखी भी हूँ। मुझे अपने काम से प्रेम है और फिल्म ही मेरा जीवन है। अतः मेरा विशेष खर्च इन्हीं पर होता भी है। जब मैं स्वयम् फिल्मों में हूँ तब मेरे रुपये ही उससे कब बाहर जा सकते हैं ?

मेरी पहली विदेश यात्रा

२—जिनेवा से वारसा

लेखक, राजा बहादुर श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह बी० ए० एल-एल० बी०

जिनेवा से हम लोग ट्रेन पर सवार हुए। सामान हम लोगों ने स्वयम् गाड़ी में रखा। बड़े-बड़े पार दर्शक शीशे खिड़कियों में लगे थे जिससे ऐसा मालूम पड़ता था कि हम लोग खुले ही में बैठे हों। गतिमान ट्रेन के साथ अगल-बगल प्रकृति सुन्दरी थिरकती हुई चल रही थी।

हरे जंगल, नीलम झील, ऊँची-नीची पहाड़ियां कटी हुई फसलों के पीले ढेर और उस पीली कतारों की उस छोर पर कुछ छोटे-से घर जिनकी खिड़कियों में से लाल फूल झाँक रहे हों और ऊपर आकाश में बिखरे हुए फुटकर श्वेत बादल जिनकी चलती हुई छाया श्यामल धब्बे बन कर पहाड़ों की दूर हरियाली पर चढ़ती-उतरती हो। सपना नहीं तो और क्या था ?

प्रकृति की प्रत्येक छटा अनुभूति की एक रोमांचकारी लहर बन कर आती और ऐसे लहरों का तांता कभी टूटता नहीं था। प्रकृति ने वे रंगीनियाँ दिखाई जिनके रंगों से रंगीन कल्पना को भी रंगा जा सकता था। मुग्ध आह्लादित मैं उस काव्यमयी भूमि को तब तक निहारता रहा जब तक सध्या ने अपना धूमिल आवरण न डाल दिया। हम लोग ज्यूरिक पहुँच चुके थे।

ज्यूरिक से ट्रेन बदल कर हम लोग दस बजे स्टुटगाड पहुँचे। हाँ रास्ते में 'रेस्तरां-कार' में खाते समय पानी नहीं मिला...पानी की जगह 'सोडा' या 'बियर'।

स्टुटगार्ड की सड़कों से हम लोग जब गुजरे तो बिजली के रंगीन साइनबोर्ड जल रहे थे। दुकानों की जगमगाती हुई 'शो-विन्डो' से ऐसा प्रतीत हुआ कि दुकानें अभी खुली हैं, परन्तु वास्तव में वे बन्द थीं। रात में हम लोग भूमि के नीचे के एक होटल में टिके।

दूसरे दिन चेकोस्लेवेकिया के लिये हम लोग रवाना हुए। 'चेक' सीमा आने के पहले ही हम लोगों के एक दूसरे ट्रेन में बिठाया गया। भारत में जैसे 'एअर-कन्डिशन' डिब्बे होते हैं उसी तरह डिब्बों की बनावट। खिड़कियां अधिक बड़ी, फर्श पर कालीन तथा गद्देदार सीटों पर बढ़िया कपड़ा चढ़ा हुआ।

'चेक' सीमा के बाद ही पहले स्टेशन से हम लोगों का स्वागत शुरू हो गया। ट्रेन रुकते ही सैकड़ों छोटे-छोटे बच्चे फूलों का गुच्छा लिये हुए दौड़े, उनके पीछे लड़के-लड़कियां तथा अन्य नागरिक। बच्चों से लेकर वयोवृद्ध का समूह हजारों की संख्या में थी। विभिन्न देशों के झंडे स्टेशन पर फहरा रहे थे तथा स्वागार्थ बैन्ड बज रहा था। समूह में प्रत्येक के हाथ में कोई न कोई उपहार रहता था जिसे वे दौड़ कर बड़ी उत्सुकता से देते थे। उपहारों में विशेषतः फूल, सिक्के तक में आदि रहते थे। पर इनके साथ मानों वे अपना हृदय ही दे देते थे। बच्चे जो खिड़कों तक न पहुँच सकते थे वे अपनी माँ की गोद में आकर अपने नन्हें हाथों से बड़े चाव से भेंट देते थे।

न वे हमारी भाषा समझते थे न हम उनकी, पर उनके हँसमुख चेहरों पर कितना हर्ष था, उनकी आँखों में, कितनी मैत्री तथा उनकी चेष्टाओं में

अपने अतिथि का स्वागत करने की कितनी आकुलता थी इसे समझने में हम लोगों को तनिक भी देर न लगी। उन लोगों ने हमको मानव-जाति के प्रति एक नई आस्था दी।

उपहार देने के बाद शीघ्र ही लोगों ने अपने देश के नृत्य व गान शुरू कर दिया। नृत्य बड़े सरल थे। कुछ अश तो बच्चों के खेल ऐसे लगते थे—हाथ पकड़ कर गोलाकार वृत्त में गाते हुए दौड़ना, गान में लगभग पूरा समूह भाग लेता था सब अपनी-अपनी जगह से। नृत्य में केवल लड़के व लड़कियाँ भाग लेती थीं, कभी बुड्ढे भी आ जाते। उनके नृत्य और गान के बाद भारतीय नृत्य व गान पेश किया गया। इसके बाद सम्मिलित नृत्य होता था जिसका ढंग 'बाल-रूम डांस'-सा होता था और इसमें हम सबको शामिल होना शिष्टता के नाते अनिवार्य था, चाहे नाचना आता हो या नहीं। चलने के पहले हम लोग जब ट्रेन पर वापस आये तो सब लोग ट्रेन पर टूट पड़े...क्यों? न वे हमसे कुछ कह सकते थे न हमारी वे कुछ समझ सकते थे? न उनसे हम लोग कभी मिले थे न फिर शायद कभी मिलेंगे? पर इतना हर्षोन्माद कैसा?

तारीफ की बात है कि लड़कियों की स्काउट-टोली ने एक दूसरे का हाथ पकड़ कर एक लम्बी कतार बनाई और पूरे समूह को गाड़ी से हट कर एक निर्धारित सीमा के अन्दर रखा। उपहार लेकर जो आते वे ही इस सीमा का उल्लंघन कर पाते और ऐसे आने वालों की संख्या कम न थी। लड़कियों ने तो अपनी अगूठियाँ, चूड़ियाँ व गले की माला तक उतार कर दिया। हाँ एक चीज भूल ही गया, हम लोगों से एक मांग थी और वह थी हस्ताक्षर व पते के लिये। कितने पते हम लोगों ने दिये इसका पता हम लोगों का स्वयम् नहीं। रास्ते में हम लोगों को बड़े हो सज्जन सहायक रूप में द्विभाषिया मिलते थे जिनमें अधिकांश युवक-संस्थाओं के रहते थे। पत्र लिखने के लिये सचित्र पोस्ट-कार्ड दिये जाते थे।

रात को हम लोग 'प्राग' जिसे वहाँ 'प्राहा' कहते थे पहुँचे और वहाँ भी पुनः स्वागत हुआ।

सुबह हम लोग पोलैण्ड के प्रथम स्टेशन पर पहुँचे। रास्ते में खाने की इतनी चीजें दी जायं कि हम लोगों को आँख बचा कर बाहर फेंकना पड़े। पोलैण्ड का समूह अधिक रंगीन था क्योंकि अधिकांश अपने राष्ट्रीय पोशाक में थे जो नाना प्रकार के रंगों से पूरित है। यहाँ बैन्ड पर बालिकायें थी। स्वागत का ढंग चेकोस्लेवेकिया-सा ही था अस्तु वर्णन दुहराता नहीं। नृत्य और गान का रूप सामूहिक था तथा हर देश के झंडे बड़ी शान से लहरा रहे थे जिनमें हमारा तिरंगा भी था।

वारसा हम लोगों को तीन बजे पहुँचना था, किन्तु रास्ते में जो हम लोगों ने देखा वह हमारे हृदय-पट से कभी मिट नहीं सकता। खेत में काम करते हुए किसान, रेल की पटरियों पर काम करते हुए मजदूर, स्कूल जाते हुए बालक-बालिकायें, घर के सामने माँ की गोद में बैठे हुए नन्हें बच्चे सब हम लोगों की ट्रेन गुजरने पर स्वागतार्थ हाथ उठा कर हिलाते। कहीं ट्रेन रुकती तो दौड़ कर आते, कुछ कहने की कोशिश करते पर हम लोगों की समझ में न आता, पर उनकी खुशी सब कुछ कह देती। एक जगह हमारे एक साथी ने एक बालक को वह बिस्कुट का पैकेट दिया जो हम लोगों को खाने के लिये मिला था, उसने उसे यह कहते हुए लौटाया कि यह तो हमारे देश का है, हमें भारतीय चीज दीजिये। इस पर हमारे दूसरे साथी ने जो कुछ भारतीय मिठाइयां ले गये थे कुछ मिठाइयां निकाल कर दी, जिसे उसने खुशी से लिया। भारतीय वस्तुओं को प्रदान करने के जोश में हमारे दूसरे हम सफर ने एक 'अगर-बत्ती' जला कर एक व्यक्ति को दिया उसने उसे झट मुँह में लगा लिया—भारतीय सिगरेट समझते हुए।

रास्ते में स्टेशन झंडों तथा स्वागत सूचक चिह्नों से लदे रहते थे। हम लोग करीब तीन बजे वारसा पहुँचे।

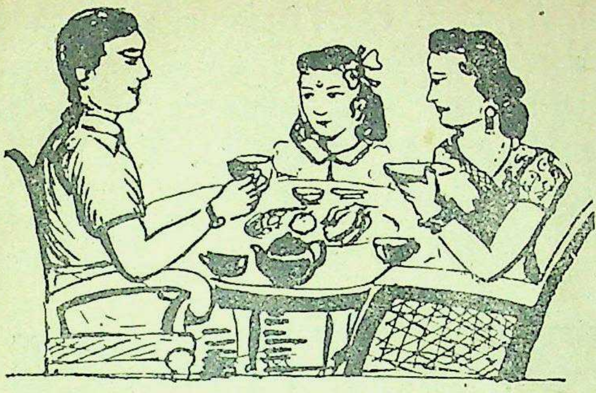

'दीदी' का ध्येय प्रत्येक मामले में पाठिकाओं को व्यक्ति गत सलाह देना भी है। इसलिये पाठिकाओं से निवेदन है कि यदि आपके सामने कोई ऐसी समस्या हो तो उत्तर के लिये =) के स्टाम्प से युक्त अपने पते का लिफाफा भेजें। इस सम्बन्ध में समस्त पत्र व्यवहार गुप्त रखे जाते हैं। श्यामाबाई मार्फत 'दीदी' कार्यालय,

इलाहाबाद—२

आपको कुछ पूछना है ?

तीन बहनों की समस्या

प्रश्न—हम तीन बहने हैं। श्रीवास्तव कायस्थ हैं। पिता जी एक बैंक में नौकर थे। बैंक फेल हो गई और वे अब बेकार हैं। हम तीनों विवाह-योग्य हैं। गत वर्ष पिता जी ने सबसे बड़ी बहन की शादी एक वृद्ध सज्जन से करके अपना बोझा कुछ हलका करना चाहा था परन्तु वे वृद्ध सज्जन स्वर्गवासी हो गये और बड़ी बहन पुनः हमारे बीच में आ गयीं। हम सब मध्यमवर्ग की स्त्रियां हैं। घर से बाहर निकल कर मेहनत मजदूरी करने में शर्म मालूम पड़ती है। सूझता नहीं कि क्या करें? कोई उपाय बतावें?

उत्तर—जीवित रहने के लिये कुछ न कुछ तो आप सबको करना ही है। आपके पिता जी पास-पड़ोस में छोटे बच्चों को पढ़ाने का काम कर सकते हैं या किसी दूकान में हिसाब-किताब लिखने का काम कर सकते हैं। आप सब बहनें साधारणतया पढ़ी हैं। छोटी लड़कियों को पढ़ाने का काम कहीं पावें तो कर लें। सरकार की ओर से समाज-कल्याण आदि के कार्यों में स्त्री-कार्य कत्रियों की आवश्यकता है, ग्राम-सेविकाओं की भी आवश्यकता है। अपने जिले के नियोजन अधिकारी व प्लानिंग अफसर से मिलें शायद वे आप बहनों की कुछ सहायता कर सकें। हमने आपके नगर की कतिपय भद्र महिलाओं को आपके बारे में लिखा है। उनसे मिलें। धैर्य से काम लें। मनुष्य वही है जो मुसीबत में अपना धीरज कायम रखे और जो कुछ कर सकता है वह करके सङ्कटों पर विजय प्राप्त करे। ईश्वर आप बहनों की सहायता करें।

प्रेम-विवाहिता

प्रश्न—मेरा व मेरे पति का प्रेम-विवाह हुआ था। उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में मैं आ गई थी और माता-पिता के मना करने पर भी उनके साथ चली गयी। अब उन्होंने मुझे छोड़ दिया है और दूसरा विवाह कर लिया है। पिता ने मुझे पुनः आश्रय दिया है पर मेरा मन यहाँ लगता नहीं। क्या मैं किसी प्रकार अपने पति का खोया प्यार पा सकती हूँ?

उत्तर—बड़ों की राय पर बिना अच्छी तरह बिचार किये शादी करने की आपको अच्छी सजा मिल चुकी। अब हमारी प्रार्थना है कि उस पुरुष को, जिसने आपको ठुकरा कर दूसरा ब्याह कर लिया है, भूल जायें और अपना स्वतन्त्र मार्ग निश्चित् करें। हमारा खयाल है कि आपको तलाक मिल सकता है। आप तलाक लेकर चाहें तो और आपके माता-पिता सहमत हों तो अपना दूसरा विवाह कर लें या अपनी जीविका का कोई और सहारा ढूँढ़ें।

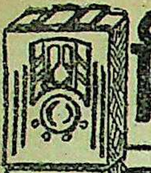

विविध-विषय

वनस्थली विद्यापीठ में राष्ट्रपति का भाषण

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने वनस्थली विद्यापीठ के बीसवें वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता करते हुए कहा—'महिलाओं के लिये हम उसी शिक्षा को उपयोगी कह सकते हैं, जो अन्य बातों के साथ-साथ उन्हें कुशल गृहिणी बनने की भी प्रेरणा दे।'

महिलाओं की शिक्षा के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए डा० राजेन्द्र प्रसाद ने आगे कहा कि 'वनस्थली विद्यापीठ' से मैं अपरिचित नहीं। मुझे अफसोस है कि इसके साथ मेरा सम्पर्क जितना चाहिए उतना घनिष्ठ नहीं हो पाया है। उसका कारण समय और सुअवसर का अभाव है। इस संस्था की कोई त्रुटि नहीं है। मेरा विश्वास है कि यह विद्यापीठ समाज की प्रशंनीय सेवा कर रहा है सादा जीवन, उच्च विचार, यह आपका आदर्श है। वनस्थली शिक्षाप्रणाली में पूर्वी और पाश्चात्य देशों की उचित बातों का ग्रहण तथा अनुचित बातों का त्याग है। 'मेरा वनस्थली जैसी संस्थाओं में बड़ा विश्वास है।' आपने कहा—'आप जो काम यहां कर रहे हैं वह सिर्फ चन्द व्यक्तियों के लिये नहीं वरन् सारे भारत के लिये हो रहा है। अन्त में राष्ट्रपति ने विद्यापीठ के लिये अपनी शुभ कामनाएँ देते हुए आशा प्रकट की कि यह विद्यालय दिनों दिन उन्नति करेगा और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बनाये रखेगा।'

हिन्दी प्रदर्शिनी

हाल ही में राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने नयी दिल्ली में एक हिन्दी प्रदशिनी का उद्घाटन किया। इसका सङ्गठन केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने किया था। इसका ध्येय यह है कि जनता को ज्ञात हो कि भारत की स्वाधीनता के पश्चात् हिन्दी प्रकाशन की कैसी प्रगति हुई है और सरकार हिन्दी की उन्नति के लिये क्या कर रही है।

चित्र में वे पुस्तकें दिखाई गई हैं जिन पर सरकार ने २०००) से लेकर ५०००) तक के पारितोषिक दिये हैं।

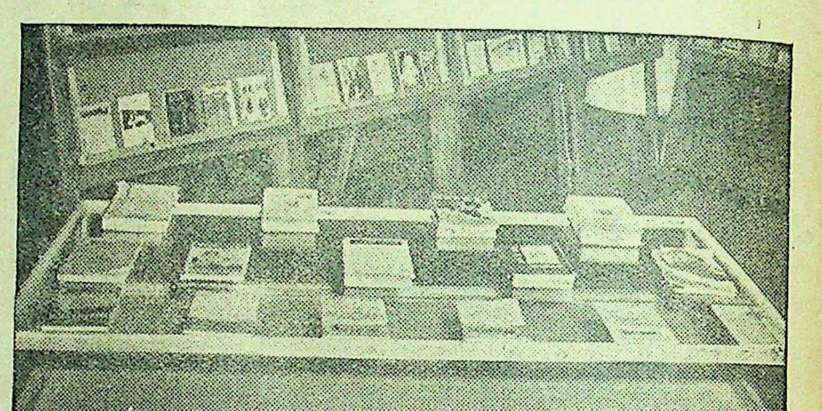

हिन्दी प्रदर्शिनी

घी में मिलावट की परीक्षा

घी में वनस्पति मिला है या नहीं, इसके परीक्षण का एक सहज उपाय है—

समान मात्रा में (१ चम्मच) घी तथा शुद्ध हाइड्रोक्लोरिक एसिड लें। घी को पिघला लें और एसिड में कुछ चीनी छोड़ दें। बाद में दोनों को मिला कर अच्छी तरह हिलायें। यदि घी में वनस्पति होगा तो मिश्रण गुलाबी रंग का हो जायगा।

बम्बई के श्रम तथा स्वास्थ्य मन्त्री श्री शान्तिलाल शाह को वनस्पति निर्माता सङ्घ ने उक्त बात बतायी है।

रेलवे स्टेशनों पर हिन्दी शब्द

रेलवे स्टेशनों पर जो तख्तियां लगाई जाती हैं उनके लिए रेलवे मंडल ने हिन्दी के शब्दों की एक सूची तैयार की है और उसे सब रेलों को

इस आदेश के साथ भेजा है कि भविष्य में देश भर में स्टेशनों पर इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाय।

सब रेलों को यह आदेश दिया गया है कि वे सब तख्तियों पर इन शब्दों को लिखवा दें। लिखने में गलती न हो। सूची नीचे दी जा रही है:—

अँग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द
स्टेशन मास्टर	स्टेशन मास्टर
असिस्टेंट स्टेशन मास्टर	सहायक स्टेशन मा०
बुकिंग आफिस	टिकट घर
बुकिंग आफिस थर्ड क्लास	टिकटघर तीसरा दर्जा
बुकिंग आ० सेकिण्ड क्लास	टिकटघर दूसरा दर्जा
बुकिंग आ० फर्स्ट क्लास	टिकटघर पहला दर्जा
बुकिंग एण्ड टेलीग्राफ आ०	टिकट और तार घर
टेलीग्राफ आफिस	तार घर
इन्क्वायरी	पूछताछ, यहाँ पूछिये
लगेज आफिस	सामान घर
लगेज एण्ड पार्सल आफिस	सामान और पार्सलघर
पार्सल आउटवर्ड	जाने वाले पार्सल
पार्सल इनवर्ड	आने वाले पार्सल
क्लार्क रूम लेफ्ट लगेज आफिस	अमानती सामान घर
गुड्स आफिस	माल घर
गुड्स क्लर्क	माल बाबू
चीफ गुड्स क्लर्क	मुख्य माल बाबू
वेटिंग रूम फर्स्ट क्लास	प्रतीक्षालय पहला दर्जा
वेटिंग रूम सेकिण्ड क्लास	प्रतीक्षालय दूसरा दर्जा
वेटिंग रूम (लेडीज)	प्रतीक्षालय (महिलाएँ)
वेटिंग रूम (जेंट्स)	प्रतीक्षालय (पुरुष)
थर्ड क्लास वेटिंग हाल	प्रतीक्षालय तीसरा दर्जा
रिफ्रेशमेंट रूम वेजिटेरियन	शाकाहारी भोजनालय
रिफ्रेशमेंट रूम नान-वेजिटेरियन	सामिष भोजनालय
वेदिंग प्लेस (लेडीज)	स्नान घर (महिलाएँ)
वेदिंग प्लेस (जेंट्स)	स्नान घर (पुरुष)
लैट्रीन (लेडीज)	शौचस्थान (महिलाएँ)
लैट्रीन (जेंट्स)	शौचस्थान (पुरुष)
एन्ट्रेंस	अन्दर
नो एन्ट्रेंस	इधर से अन्दर न जाइये
एग्जिट	बाहर
नो एग्जिट	इधर से बाहर न जाइये
नो एडमिशन	अन्दर आना मना है
स्पिटिंग प्रोहिबिटेड	थूकना मना है

भारत में सन्तानोत्पादकता की कुछ विशेषतायें

जन-गणना के प्रधान रजिस्ट्रार ने १९५२–५३ और १९५३–५४ में देश भर में नमूने के तौर पर जन्म और मरण की गणना की थी। इस गणना से विदित हुआ है कि भारत में स्त्रियों की सन्तानोत्पादकता की कुछ विशेषतायें हैं।

भारत में १५ से १९ वर्ष की तक की आयु में स्त्रियों के सन्तान कम होती हैं, परन्तु २० से २४ वर्ष तक की आयु में बहुत अधिक बढ़ जाती हैं और २५ से २९ वर्ष तक की आयु में भी काफी होती हैं।

जापान में १५ से १९ वर्ष तक की आयु में सन्तान बहुत कम होती है; अमेरिका और इङ्गलैंड में भी कम होती है। पर इन सब देशों में भी २० से २४ वर्ष तक की आयु में सन्तान संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है। अमेरिका में इस आयु-समूह में सबसे अधिक सन्तानें होती हैं। इङ्गलैंड और जापान में २५ से २९ वर्ष तक की आयु में कुछ और बढ़ती हैं और उसके बाद कम होने लगती हैं। २९ वर्ष तक की आयु के बाद भारत में सन्तान संख्या धीरे-धीरे कम होने लगती है, परन्तु अमेरिका, इङ्गलैंड और जापान में शीघ्रता से कम होती है। भारत में अन्य देशों की अपेक्षा ४० से ४४ वर्ष तक की आयु में और ४५ से ४९ वर्ष तक की आयु सन्तान अधिक होती है।

सन्तानों की संख्या

भारत में मातृत्वकाल में एक स्त्री ६ या ७ बच्चे पैदा करती है। परन्तु दूसरे देशों में यह औसत इससे बहुत कम है। जापान में यह ५ से ३, अमेरिका में ३ से ३ और इङ्गलैंड में केवल २ से ६ है।

सन्तानों की मृत्यु

भारत में सन्तानोत्पत्ति-काल समाप्त होने तक स्त्रियों के २० से ३३ प्रतिशत तक बच्चे मर जाते हैं। यह संख्या बहुत अधिक है और इससे विदित होता कि हमारे देश में मानव साधनों की कितनी क्षति हो रही है।

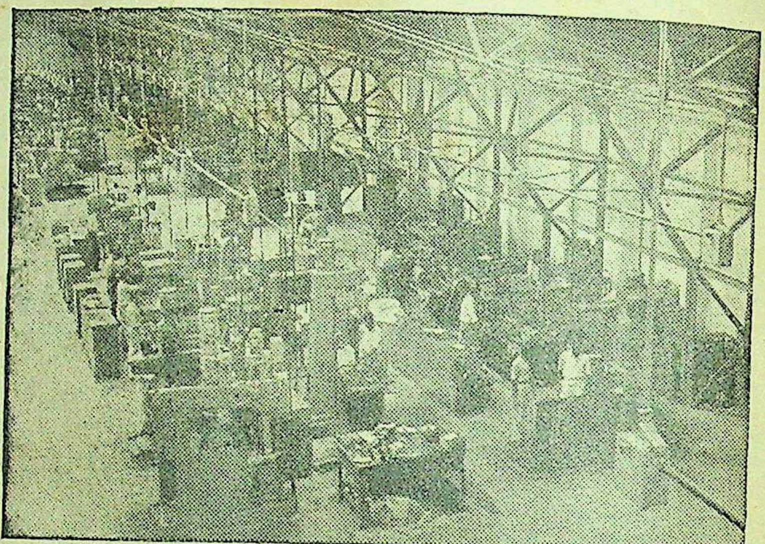

गत ६ आक्टोबर को प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने बंगलोर में मशीन-टूल कारखाने का उद्घाटन किया। यह कारखाना ३६० एकड़ भूमि में है और इसमें १२ करोड़ की लागत लगी है।

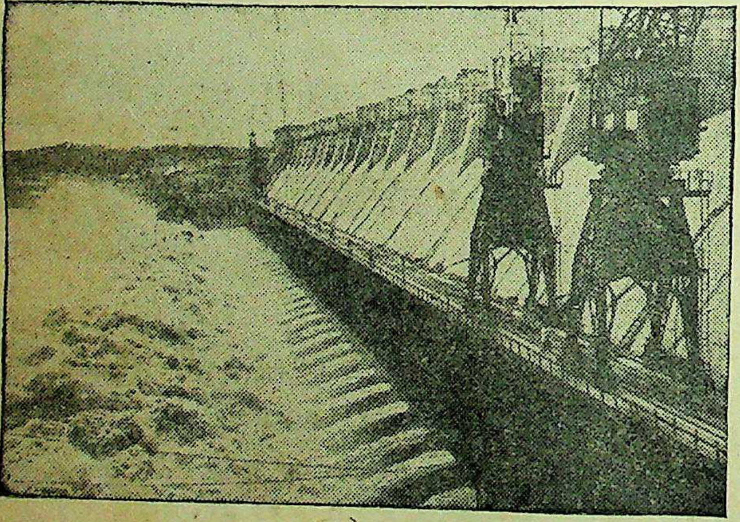

हीराकुण्ड बाँध का एक दृश्य। यह बाँध जून सन् १९५७ में पूर्णतया बन कर तैयार होगा। इस चित्र में इसका केवल एक भाग दिखाया गया है जो बन कर तैयार हुआ है।

'बेढब बनारसी' का जन्म दिवस

प्रसाद परिषद् के तत्वावधान में बनारस में हिन्दी के सुविख्यात कवि श्री बेढब बनारसी की ६०वीं वष गांठ मनाई गयी। यह समारोह मुख्य मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द के सभापतित्व में मनाया गया।

डा० सम्पूर्णानन्द ने कहा कि बेढब जी के मित्रों तथा प्रशंसकों द्वारा आयोजित यह समारोह साहित्यिक क्षेत्र में बेढब जी की सफलताओं का प्रतीक है। इसके पूर्व सूचना मन्त्री पंडित कमलापति त्रिपाठी ने हास्यरस के क्षेत्र में बेढब जी की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशसा की और कहा कि वे उच्चकोटि के कवि पत्रकार और अध्यापक हैं।

इस अवसर पर बेढब बनारसी ने अपना परिचय इस प्रकार दिया—

–बेढब बनारसी–

काशी अविनाशी का
अदना निवासी
एक।
कृष्णदेव नाम
मगर रंग
नहीं काला है।

सेवक
सरस्वती का
दास
दयानन्द का हूँ।
टीचरी में
निकला
दिमाग का दिवाला है।

काव्य लिखता हूँ
नहीं
हँसने की चीज निरी।
रचना में
व्यंग
औ
विनोद का
मसाला है।

पावन प्रसाद
'दीन' जी का मिला
'बेढब' है।
सूर हूँ
न तुलसी
पंथ मेरा
निराला है।

स्त्री-चिकित्सा में विशेषज्ञ
इलाहाबाद की नामी वैद्या
श्रीमती यशोदा देवी
का
स्त्रियों के लिये आयुर्वेदिक
स्त्री औषधालय

रोगी तथा सन्तानहीन स्त्रियां निराश न हों

पति-पत्नी को कोई भी रोग हो, तो औषधालय में आइये या पति-पत्नी रोग का पूरा हाल बन्द लिफाफे में रजिस्ट्री पत्र द्वारा भेजकर
घर बैठे रोग दूर कराइये
अबतक इलाज कराकर लाखों रोगी स्त्रियां आरोग्य हो चुकी हैं और हजारों सन्तानहीन स्त्रियां अनेक बच्चों की माता बन गई हैं।
पूरी जानकारी के लिये मुफ़्त
देश के कोने २ से आये हुए प्रशंसापत्रों में से प्रकाशित पत्रों की सचित्र "चिकित्सा-दर्पण" पुस्तक मंगाकर पढ़िये आयुर्वेदिक-चिकित्सा के श्रद्धालु सज्जन पुरुष और–
देश की देवियां क्या कहती हैं

किसी को निराश नहीं होना पड़ा

पता–यशोदादेवी आयुर्वेदिक स्त्री-औषधालय,
देवी-आयुर्वेद भवन नं० ३२ लौदर रोड, जार्जटाउन–इलाहाबाद

अध्यापिका चाहिए—दो छोटी बालिकाओं को पढ़ाने के लिए एक अध्यापिका चाहिए। गांव में रहना होगा और भोजन निवास के अलावा २५) जेब खर्च मिलेगा। पता 'क' मार्फत दीदी कार्यालय, इलाहाबाद–२।

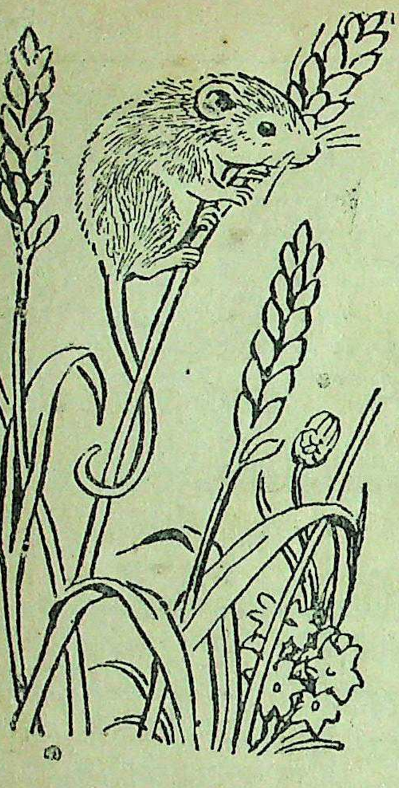

बाल-साहित्य

चूहा दुम से क्या काम लेता है ?

प्यारे बच्चो तुम सोचते होगे कि चूहे की दुम बेकार है। वह उससे कुछ काम नहीं लेता। पर नहीं ऐसा नहीं है। चूहा दुम से हाथ का काम लेता है।

एक बार मैंने गेहूँ के खेत में एक चूहा देखा। वह गेहूं के पेड़ पर चढ़ा जा रहा था। मैंने देखा कि वह दुम को पेड़ के डंठल में फँसा कर उसके सहारे उचकता हुआ चढ़ता है। चूहे को गेहूं के अधपके दाने बहुत पसंद हैं। उन्हीं को खाने वह इस प्रकार चढ़ता है।

घरों में कनस्टर के छेद में दुम डाल कर चूहा घी लगा लेता है और उसे चाटता है। इसी तरह बोतल में दुम डाल कर शहद या तैल पी जाता है। चूहे को उछलने व दौड़ने में भी दुम से बड़ी मदद मिलती है।

पहेलियाँ

(१)

मेरे तीन सींग लगे हैं, भाई,
चमड़ा छोड़, हड्डी खाँय लोग लुगाई।

(२)

पानी भरा है, हरिण खड़ा है।
पानी सूख गया, हरिण भाग गया॥

(३)

छोटे - छोटे दुर्गादास।
कपड़े पहने सौ - पचास॥

(४)

एक आँख उसमें भी जाला।
दिन में बन्द रात उजियाला॥

पहेलियों का उत्तर—

(१) सिंघाड़ा।
(२) तैल का दीपक।
(३) प्याज।
(४) चन्द्रमा।

भारत विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव द्वारा प्रस्तुत

रूपबिलास कम्पनी कानपुर को कुछ अनुभूत शक्तिशाली औषधियां

द्मण धारा जिस घर में लक्ष्मण धारा रहता है उस घर के लोग बेफिक्र और रहते हैं। लक्ष्मण धारा की ३-४ बूंदें पानी में डाल पीने से हैजा, कै, दस्त, जी मिचलाना, पेचिस, अती-, खट्टी डकारों का आना, बदहजमी, पेट फूलना, ग्न, कफ, खांसी, जुकाम, सर्व ज्वर आदि अनेक रोग होते हैं और इसी के लगाने से चोट, मोच, सूजन, खाज, फोड़ा फुन्सी, बात, दर्द, पसली का दर्द, भिड़ ी, बर्र आदि के काटे का दर्द अच्छे होते हैं। लाखों लक्ष्मण धारा का प्रयोग कर गृहस्थी सुखमय बना क्योंकि यह आकस्मिक दुर्घटना के कष्ट और रोगोंसे के लिये जगत का अनुपम आविष्कार है।

द्मण धारा खरीदते समय पैकेट पर लक्ष्मण धारा बिलास कम्पनी का नाम अवश्य देख लें। यह हर मिलता है। न मिलने पर हम से वी० पी० द्वारा लें। मूल्य छोटी शीशी ।।।) बारह आना बड़ी २।।) दो रुपया आठ आना डाक खर्च पृथक।

लको हर बच्चों का पोष्टिक और मीठा पेय है। बालको पर पलने वाले बच्चे नीरोग और चित्त रहते हैं इसके पिलाने से खून की कमी दूर निबल व कमजोर बच्चे हृष्ट-पुष्ट व तन्दुरुस्त बनते इसलिये हर माता को चाहिये कि दैनिक-काय में प्यारे बच्चे को "बालको" पिलाना कभी न भूले। च्चों को सूखा रोग से बचाता है और उनके दाँत ने में कष्ट नहीं होता है। मूल्य प्रति शीशी १) एक डाक खर्च अलग।

की दवा नयी या पुरानी खांसी श्वांस दमा को दूर करने के लिये सुप्रसिद्ध है। ा श्वांस की नली को साफ कर बलगम को बाहर कर दमे को जड़ से नष्ट करती है। मूल्य प्रति ३=) तीन रुपया दो आना डाक खर्च अलग।

रूपबिलास इसके लगाने से मुहांसे, झांई चेचक के काले काले दाग, रूसी, खुश्की, फुन्सी, बदरौनकी, झुर्रियां वगैरह दूर कर मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। विवाह आदि शुभ अवसरों पर वर वधुओं की सुन्दरता बढ़ाने के लिये वैज्ञानिक तत्वों के आधार पर निर्मित किये गये इस उबटन का दैनिक उपयोग करना चाहिये। मूल्य फी डिब्बा २) दो रुपया डाक खर्च अलग।

फकीरी सुरमा यह सुरमा मोती, ममीरा भीमसेनी कपूर आदि उत्तमोत्तम जड़ी बूटियों के सम्मिश्रण से घोंट कर तैयार किया जाता है, इसके लगाते ही यह तमाम जहरीले पानी को निकाल कर आंखों को ठण्डी निर्मल तथा साफ कर देता है। इसके लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नजला कीचड़ निकलना नाखून परवाल आदि दूर होते हैं और नजर की कमजोरी दूर होकर दृष्टि तीव्र हो जाती है। मूल्य प्रति शीशी ।।।) बारह आना डाक खर्च अलग।

चन्द्रोदय मकरध्वज वटी शक्तिक्षीणता और कमजोरी को दूर करके दिल व दिमाग को बल देकर शरीर में स्फूर्ति पैदा करती हैं। मूल्य ४० गोलियों के पैकेट का ७।।) सात रुपया आठ आना डाक खर्च अलग।

बन सुधा वन सुधा स्त्री रोगों की सुविख्यात गुणकारी महौषधि है। इसके सेवन से कमर व रीढ़ का दर्द शिर दर्द दुबलापन कमजोरी चक्कर आना आदि रोग जो कि अनियमितता के दोषों से उत्पन्न हो जाते हैं उन्हें दूर कर नारियों को हृष्ट-पुष्ट बनाने की श्रेष्ठ दवा है। मूल्य ३=) तीन रुपया दो आना डाक खर्च अलग।

रूपबिलास हिम कुसुम तैल कठिन शिर दर्द को ५ मिनट में नष्टकर शीतलता प्रदान करता है मस्तिष्क व बुद्धि से काम लेने वालों को महान उपकारी है खुशबू भीनी है। मूल्य प्रतिशीशी ।।।) बारह आना डाक खर्च पृथक।

ट—यदि आप किसी रोग से ग्रसित हैं तो अपने रोग का पूरा हाल लिखकर औषधि मंगवा लें। इस कंपनी में हर की औषधियां तैयार होती है। विशेष जानकारी के लिये कम्पनी का सूची पत्र मुफ्त मंगाकर देखें।

दवा मँगाने का पता:—रूपबिलास कम्पनी नं० ११० धनकुट्टी कानपुर

अपने विचार

दीदी का सोलहवाँ वर्ष समाप्त

इस अङ्क से 'दीदी' का सोलहवाँ वर्ष समाप्त हो रहा है। इस अवसर पर हमें यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि गत वर्षों की अपेक्षा हमारा यह हर्ष अच्छा बीता। बहुत अच्छा तो नहीं पर हाँ, कुछ अच्छा अवश्य बीता। यह सही है कि अच्छे आधुनिक प्रेस के अभाव में दीदी की हम सुन्दर रंगीन कला पूर्ण छपाई नहीं कर सके जैसा कि आधुनिक युग में दीदी जैसी पत्रिका के लिये उपयुक्त है परन्तु तो भी दीदी में हम सुन्दर सुपाठ्य, सुरुचिपूर्ण पाठ्य-सामग्री देने में प्रयत्नशील रहे और इसी कारण हमें पाठकों का पूर्ववत् स्नेह और सहयोग प्राप्त रहा। दीदी की ग्राहक संख्या में वृद्धि हुई। उत्तर प्रदेश और कतिपय अन्य राज्यों का सहयोग दीदी को प्राप्त हुआ आज जब कि हम इस वर्ष को बिदाई दे रहे हैं, हमारे हृदय में नव-हर्ष और नवीन आशा सञ्चरित हो रही है। यात्रा की इस मंजिल पर हम बजाय थकान के स्फूर्ति का अनुभव कर रहे हैं। इसीलिये इस वर्ष की सुख-समाप्ति पर आज हम दीदी के समस्त पाठकों और शुभचिन्तकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि उनकी कृपा दीदी पर इसी प्रकार बनी रहेगी और आगामी वर्ष में हम दीदी को और भी उपयोगी और आकर्षक बनाने में समर्थ होंगे।

नये वर्ष के आकर्षण

आगामी जनवरी मास में सदा की भाँति दीदी का नववर्षाङ्क प्रकाशित होगा। इसकी रूप रेखा का अनुमान पाठक आवरण के चौथे पृष्ठ पर छपे विज्ञापन से कर सकते हैं। सन् १९५७ में भारतीय स्वाधीनता-संग्राम का जो सन् १८५७ में छिड़ा था और जिसे विदेशी शासकों ने, सिपाही-विद्रोह कहा था, शताब्दी-महोत्सव मनाया जायगा। उसकी तैयारियां अभी से प्रारम्भ हो गई हैं। उन दिनों की इतिहास की घटनाएँ और उनके पीछे के तथ्य खोजे जा रहे हैं। विद्रोहियों में सबसे कुशल और वीर, जिनकी उनके विरोधियों ने भी प्रशंसा की है, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई थीं। सन् १९५६ में हम 'झांसी की रानी' शीर्षक से एक धारावाहिक उपन्यास प्रकाशित करने जा रहे हैं जिससे इस वीरांगना के जीवन पर अच्छा प्रकाश पड़ेगा। जनवरी सन् ५६ से दीदी सर्वथा नये टाइप में छपेगी और छपाई आदि में भी सुधार होगा।

देशमुख-दम्पती

'दीदी' के इस अङ्क में आवरण पृष्ठ पर हम देशमुख-दम्पती का चित्र प्रकाशित कर रहे हैं। स्वाधीनता के बाद भारत के नवनिर्माण में देशमुख दम्पती के महत्व को जितना अधिक आंका जाय, कम है। श्री चिन्तामणि देशमुख हमारे वित्त मन्त्री हैं। आपके नेतृत्व में भारत की अर्थ नीति सुदृढ़ हुई है और होती जा रही है। श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने आयोजना आयोग की सदस्या के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। इस समय वे केन्द्रीय समाज कल्याण मंडल की अध्यक्षा हैं।

बाल साहित्य

दीदी के इस अङ्क में अन्यत्र बच्चों के लिये भी पाठ्य सामग्री प्रस्तुत की जा रही है। यह क्रम आगामी वर्ष बराबर जारी रहेगा।

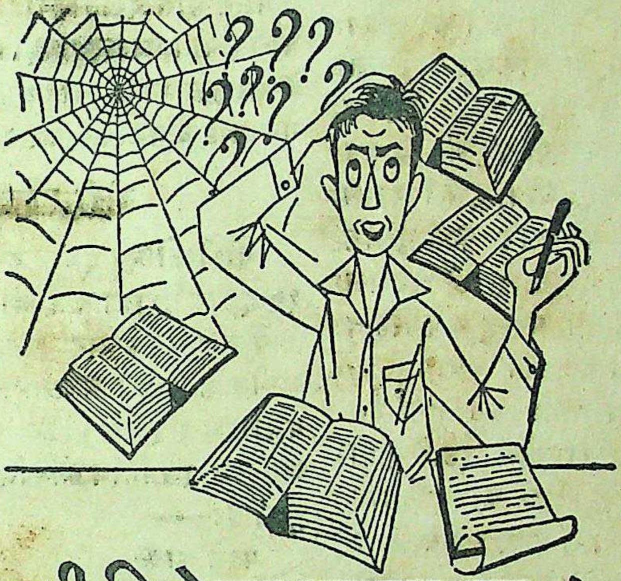

सभी विशेषण समाप्त हुए !

और उनको ढूँढनेमें हमें हार माननी चाहिये ! क्योंकि साबुनकी उत्कृष्टताका जो कुछ वर्णन किया जा सकता था वह पहलेही किया जा चुका है। अब अधिक प्रशंसाकी गुँजायशही नहीं रही।–हाँ, इतना ज़रूर उल्लेखनीय है कि हमाम नहानेका साबुन उत्कृष्ट काम देता है। वह न केवल आपकी त्वचाको स्वच्छ रखेगा, बल्कि स्नान करनेपर अजीब उत्साह भी पैदा करेगा। सुगंधयुक्त? – जी हाँ, ज़रूर। झाग? क्यों नहीं? भरपूर ! और कीमत? –वह तो सबोंके लिये अत्यंत किफायती।

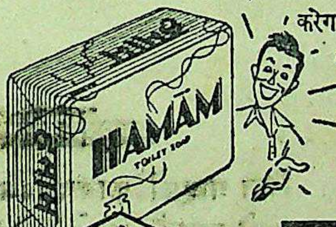

उत्साह प्राप्त कीजिये

टाटाका

हमाम

नहानेका साबुन

टाटा ऑयल मिल्स

भारतीय पूँजी तथा व्यवस्थासे भारतमेंही निर्माण किया हुआ।

SISTA'S TOM-I HIN.

दीदी कर्जकोष की स्थिति

'दीदी' प्रेस की उन्नति के लिये सहृदय पाठकों ने हमें जो कर्ज दिये थे, उसकी रकमों को हम वादे के अनुसार पाँच वर्ष के अन्दर अदा नहीं कर सके। उस समय न तो हमने सोचा था और न हमारे कर्ज दाताओं ने ही सोचा था कि उनकी रकमें अदा न हो सकेंगी तो क्या होगा? कारण यह था कि तब 'दीदी' तेजी से उन्नति कर रही थी। हमें विश्वास था कि हम कर्ज की रकमों को वादे के अनुसार अदा कर देंगे और हमारे कर्जदाताओं को विश्वास था कि उनका धन डूबेगा नहीं। परन्तु अब स्थिति सर्वथा बदल गई है। 'दीदी कर्जकोष' बजाय सहायता के दीदी पर एक बड़ा बोझ बन गया है। पिछले कई वर्षों से बराबर घाटा उठाते-उठाते दीदी कार्यालय धन शून्य हो गया है। हमें कागज उधार लेना पड़ा, उधार छपाई करानी पड़ी, कर्मचारियों को वेतन भी हम ठीक से न दे सके। इस तरह दीदी पर और भी कर्ज का बोझ लद गया। यह वर्ष इस रूप में अच्छा रहा कि वर्ष भर में १० महीने 'दीदी' अपना खर्च सम्भाल सकी। केवल २ महीनों का खर्च उधार कागज और छपाई से चलाना पड़ा। जब कि गत वर्ष लगभग ६ महीनों का ही खर्च हम सम्भाल सके थे और उससे पहले का वर्ष तो और भी खराब था।

इस तरह यह स्पष्ट है कि 'दीदी' के सम्भलने में देर लगेगी और कर्ज की रकमें अदा होने में भी देर लगेगी। कर्जदाताओं से हमारी प्रार्थना है कि वे हमारी स्थिति का खयाल करके थोड़ा और धैर्य रखें। उनकी रकमें और पिछले वर्षों के ब्याजों का विवरण हम तैयार करा रहे हैं। वह अलग से उन के पास भेजा जायगा।

सहायता की प्रार्थना

दीदी भारतीय महिलाओं की आदर्श पत्रिका है। इसका ध्येय एक मात्र नारी समाज की उन्नति है। इस ध्येय की पूर्ति में यह पूरी शक्ति से लगे और सफल हो, इसके लिये आवश्यक है कि यह आर्थिक सङ्कट से मुक्त हो। दीदी से जिन्हें प्रेम है और जो इसे सेवा के पथ पर और भी तेजी से अग्रसर होते देखना चाहते हैं उनसे प्रार्थना है कि वे सहायता का हाथ बढ़ावें। यह सहायता वे दीदी के संरक्षक बनकर या अपने अतिरिक्त अन्य नये-नये ग्राहक बनाकर कर सकते हैं।

दीदी सहायक निधि

दीदी को २४ हजार रुपयों की आवश्यकता है। १२ हजार पुराना कर्ज और ब्याज अदा करने के लिये और १२ हजार कलापूर्ण रङ्गीन छपाई की मशीन के लिये। यह सहायता पाठक गण दीदी के प्रचार में सहायक होकर सहज ही कर सकते हैं। अब तक इस निधि में निम्नलिखित धन प्राप्त हो चुका है:—

पहले का	१८)
कुमारी प्रतिभा चतुर्वेदी (तीन नये ग्राहक बनाये)	१८)
श्रीमती कमला जायसवाल (एक प्रति दीदी बेचा)	।।)
श्रीमती रमा सक्सेना (एक नया ग्राहक बनाया)	६)
कुल	४२।।)

ग्राहकों से निवेदन

जिन ग्राहकों का वार्षिक मूल्य इस अङ्क से समाप्त हो रहा है, उनसे निवेदन है कि वे आगामी वर्ष का वार्षिक मूल्य ६) मनिआर्डर से इस महीने के अन्दर भेज दें। इससे उनकी सेवा में नववर्षाङ्क प्रकाशित होते ही भेज दिया जायगा और वे डाक व्यय से भी बचेंगे। जिनका वार्षिक मूल्य इस मास के अन्दर न आया उनकी सेवा में जनवरी सन् ५६ का नववर्षाङ्क ६।≈) की वी० पी० से भेजा जायगा।

077689

दीदी काव्य कुसमाञ्जलि

[हिन्दी साहित्य की उत्कृष्ट प्राचीन तथा अर्वाचीन कविताओं का अनूठा संग्रह]

आगामी बसन्त पञ्चमी के अवसर पर 'दीदी' काव्य कुसुमाञ्जलि की प्रथम भेंट काव्यानुरागी पाठक-पाठिकाओं की सेवा में समर्पित की जायेगी जिसका उद्देश्य आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत में परिव्याप्त उदासीनता एवम् गति हीनता का परिहार करके हिन्दी कविता को एक अभिनव चेतना तथा समीचीन प्रतिष्ठा प्रदान करना रहेगा।

उक्त काव्य कुसुमाञ्जलि का चयन पत्र व्यवहार द्वारा सम्पन्न होगा। सभी काव्य प्रेमी महानुभाव स्वरचित अथवा स्वरुचि अनुसार किसी भी पूर्ववर्त्ती कवि की रचनायें (८–१० पंक्तियों की) १) सदस्यता शुल्क के सहित भेज सकते हैं। ऐसे सभी सदस्यों की सेवा में 'दीदी' काव्य-कुसुमाञ्जलि की एक-एक प्रति प्रकाशित होते ही बिना मूल्य प्रेषित की जायेगी। रचनाओं के चयन के सम्बन्ध में सम्पादक का मत सर्व मान्य रहेगा। रचनायें २६ जनवरी तक पहुँच जानी चाहिए।

उक्त प्रकाशन में सहयोग देने के उद्देश्य से जो महानुभाव २५) अथवा अधिक सहायता प्रदान करेंगे उन्हें सम्मानित सदस्य माना जायेगा। तथा उनका परिचय चित्र सहित उक्त संग्रह में प्रकाशित किया जायेगा।

इस काव्य संग्रह को हिन्दी काव्य का पूर्ण प्रतिनिधि संग्रह बनाने का प्रयत्न जारी है एवम् हिन्दी संसार के प्रायः सभी उच्च कोटि के कवि महानुभावों की रचनाएँ उक्त काव्य संग्रह के लिये प्राप्त की जा रही हैं।

शान्ति स्वरूप 'कुसुम' संयोजक
दीदी काव्य कुसुमांजलि
छत्ता जम्बूदास, सहारनपुर उ० प्र०

छः रुपये में मैट्रिक पास

माडर्न हिंदी इंग्लिश टीचर : इस किताब को प्रतिदिन एक घंटा पढ़ने से आप तीन महीने में ए. बी. सी. डी. से लेकर आवश्यक ग्रामर, ट्रांसलेशन, लेटर राइटिंग एसे राइटिंग, मुहावरों का इस्तेमाल सीख कर अंग्रेजी में फर्राटे की बातचीत करना सीख कर अंग्रेजी में मैट्रिक की परीक्षा पास कर सकते हैं। ४५० पृष्ठों की सजिल्द किताब का मूल्य छः रुपया है। ले० वीरेन्द्र त्रिपाठी एम ए।

रुपये कमाने का ढंग सिखाने वाली हिन्दी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तकें

पाक चयनिका (१००० तरह की खाने की चीजें बनाना सीखिये) ६) बिगड़े रेडियो ठीक करना सीखिये ५), पन्द्रह रुपये में रेडियो सेट बनाइये १॥), ३० दिन में अंग्रेज़ी बोलना सीखो २) सिलाई कटाई शिक्षा (सब तरह के कपड़े सीना सीखिये) ३॥). रंगभूमि फिल्म-मासिक-पत्र पिछले चौदह वर्ष से बराबर निकल रहा है। मूल्य आठ आना १०० पृष्ठ। सूचीपत्र मुफ्त मगायें।

पता :- रंगभूमि बुक डिपो, ('दी') दिल्ली-६

सफेद कोढ़ के दाग

हजारों के नष्ट हुए और सैकड़ों के प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं। दवा का मूल्य ५) रुपया डाक व्यय १) रुपया, अधिक विवरण मुफ्त मँगाकर देखिये।

वैद्य—के० आर० बोरकर मु० पो० मंगरूलपीर
जिला आकोला (मध्य प्रदेश)

छोटे बच्चे
श्रीनाथसिंह लिखित कहानियाँ व कविताएँ
बहुत पसन्द करते हैं और ये रचनाएँ
आपके प्यारे बच्चों को एक मात्र
बालबोध
में पढ़ने को मिलेंगी। अतएव बालबोध के ग्राहक बनिये। बालबोध छोटे बच्चों का मासिक-पत्र है। वार्षिक मूल्य केवल २) है। आज ही मनिआर्डर भेजिये। जनवरी सन् ५६ में सुन्दर विशेषांक निकल रहा है।

मैनेजर—'बालबोध'
'दीदी' कार्यालय, इलाहाबाद-२

सफेद कोढ़ के दाग

ऐसे निकल जाते हैं कि वह कहाँ थे इसका पता भी नहीं लगता। हजारों अभिप्राय और कई इनाम मिले हैं। मूल्य ५) रुपया। विवरण पत्र मुफ्त मँगावें। नक़ालों से सावधान रहें।

वैद्य बी० आर० बोरकर, 'आयुर्वेद भवन'
मु० पो० मंगरूलपीर जि० आकोला (मध्य प्रदेश)

बहनों, बेटियों और बहुओं को नये वर्ष में

दीदी

उपहार दीजिये !

'दीदी' सर्वोत्तम उपहार है जो आप नये वर्ष के उपलक्ष में जनवरी सन् १९५६ में दे सकते हैं। अपने जिस बहन, बेटी या बहू को यह उपहार देना चाहें उसके पते के साथ दीदी का वार्षिक मूल्य ६) मनिआर्डर से २५ दिसम्बर सन् १९५५ तक हमारे पास भेज दें। बस जनवरी सन् १९५६ से हम उस पते पर दीदी भेजना प्रारम्भ कर देंगे। इस प्रकार प्रत्येक मास में दीदी उस बहन, बेटी या बहू को आपके स्नेह का स्मरण दिलाती हुई साल भर तक उसकी सेवा करती रहेगी। साथ ही आपके नाम के साथ यह सूचना दीदी के जनवरी के नववर्षाङ्क में प्रकाशित की जायगी, जिससे उस बहन को पता हो कि यह उपहार आपकी ओर से है। मनिआर्डर सञ्चालिका दीदी कार्यालय इलाहाबाद-२ के पते पर भेजें और कूपन पर उस महिला का पता लिखें, जिसे यह उपहार देना चाहते हों।

सचित्र खास पुस्तक

विवाह के रहस्य तथा बर्थ कन्ट्रोल पर डा० हरिचन्द द्वारा रचित २६४ पृष्ठों तथा ४० विशेष चित्रों सहित सजिल्द अमूल्य पुस्तक हिन्दी अथवा उर्दू ३) वी० पी० द्वारा मँगवायें। विश्वास न हो तो ≈) के टिकट भेज कर रजिस्ट्री द्वारा सचित्र नमूना मुफ्त मँगवा लें।

पता—'शीला' द्वारा
मुलतानी बुक डिपु प्रकाशन
(D.A) पानीपत (भारत)

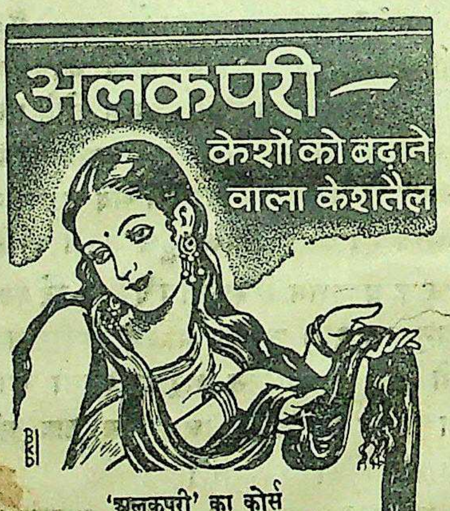
अलकपरी
केशों को बढ़ाने वाला केशतैल

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्

अलकपरी
नया कटरा इलाहाबाद

दीदी के संरक्षक

१—श्रीमती राजकुमारी ठोलिया, उज्जैन	२००)
२—श्री मुकुटबिहारीलाल श्रीवास्तव, बिरलापुर	”
३—कुमारी कमल सहाय, आरा	”
४—श्रीमती रतनदेवी सुखानी झुमरी तलैया	”
५—श्रीमती आकाश कामिनी अग्रवाल आगरा	”
६—श्रीमती कमला देवी गोयनका शिलांग	”
७—श्री हेमप्रभादेवी तापड़िया, जसवन्तगढ़	१५०)
८—श्रीमती सरलादेवी वृ० नागर बनारस	१२८)
९—श्री सेठ बल्देवदास मूँधड़ा, कलकत्ता	१००)
१०—श्रीमती स्नेहलता नेवाटिया, बम्बई	”
११—श्रीमती चन्द्रावती एस० कानोडिया, बम्बई	”
१२—श्रीमती सरलादेवी डागा, कलकत्ता	”
१३—श्रीमती निर्मला गोविल, आगरा	”
१४—श्री रानी लक्ष्मीकुमारी चूंड़ावत, रावतसर	”
१५—श्रीमती सावित्री बाँगड़, कलकत्ता	”
१६—श्री विन्दुवासिनीदेवी सकलानी, देहरादून	”
१७—श्रीमती कृष्णादेवी मन्त्री, बम्बई	”
१८—श्रीमती मोहिनी तापुड़िया, बम्बई	”
१९—कु० अरुणा कुमारी जायसवाल, हैदराबाद	”
२०—श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी करहल	”
२१—श्रीमती मुन्नीदेवी जैन देहरादून	”
२२—श्रीमती शकुन्तला देवी कसेरा कलकत्ता	”

‘दीदी’ के नियम

(१) ‘दीदी’ मासिक पत्रिका है। इसका वार्षिक मूल्य ६) और एक प्रति का ॥) है। वार्षिक मूल्य कार्यालय में पहुँचते ही ग्राहक का नाम रजिस्टर में दर्ज हो जाता है और पत्रिका जानी शुरू कर जाती है।

(२) रुपया पैसा, वार्षिक मूल्य और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र आदि प्रेमलता देवी संचालिका ‘दीदी’ कार्यालय, इलाहाबाद-२ के पते से भेजना चाहिये।

(३) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। पत्र-व्यवहार का पता यह है—संचालिका ‘दीदी’ कार्यालय, इलाहाबाद-२।

(४) ‘दीदी’ हर महीने में पहली तारीख को प्रकाशित हो जाती है। पहली तारीख के आस पास यदि ‘दीदी’ आपको न मिले तो आपको तुरन्त अपने डाक घर से पूछना चायिये। अगर पता न लगे तो १५ तारीख के भीतर संचालिका ‘दीदी’ इलाहाबाद लिखना चाहिये।

(५) यदि एक-दो मास के लिये पता बदलवाना हो तो डाकखाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिये। यदि साल भर या अधिक काल के लिये पता बदलवाना हो तो उसकी सूचना भय ग्राहक नम्बर के हमें देनी चाहिये।

(६) लेख, फोटो, बदले के पत्र, समालोचना के लिये पुस्तकें सम्पादक दीदी’ इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(७) न छपने की हालत में वे ही लेख वापस किये जायेंगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(८) ‘दीदी’ में विज्ञापन छपाना हो तो उसके नियम अलग से मँगावे। पर यह ध्यान रखें, ‘दीदी’ में अश्लील व झूठे विज्ञापन नहीं छा

DIDI -/8/- December 1955 Regd. No. A—6

दीदी का नववर्षाङ्क

जनवरी सन् १९५६ में प्रकाशित होगा !

यह विशेषाङ्क बहुत ही आकर्षक और उपयोगी होगा। इसके कुछ आकर्षण ये हैं :—

१—आज की स्त्री को क्या जानना चाहिए ?

२—प्राचीन और आधुनिक आदर्श महिलाओं का जीवन रहस्य।

३—स्त्रियों के पढ़ने योग्य आधुनिक और पौराणिक सुन्दर कहानियां।

४—सांवली स्त्रियां आकर्षक सौंदर्य कैसे प्राप्त कर सकती हैं ?

५—वन्ध्या रोग और उसका इलाज।

६—कढ़ाई, बुनाई, रसोई, शृङ्गार, शिशु पालन और गृह प्रबन्ध के नवीनतम इशारे।

और

श्री श्रीनाथसिंह लिखित

धारावाहिक उपन्यास—

झांसी की रानी

जो उस कथा पर आधारित है जो सन् १९२१ ई० में लगभग ८० वर्षीया एक सन्यासिनी ने लेखक को प्रयाग में सुनाई थी जो उस समय (सन् १९२१ ई० में) जीवित थी और अपने आपको झांसी की रानी की सेविका और दासी बताती थी।

दीदी का यह नववर्षाङ्क नये टाइप में, नये आकर्षणों के साथ छपेगा। यदि आप दीदी के ग्राहक नहीं हैं तो अब अवश्य बन जायँ ?

प्रेमलता देवी
सञ्चालिका दीदी कार्यालय
इलाहाबाद—२

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद

Certified
1999-2000